NS 4

३

३२ रा

रत्नाकरा सटीक

टीका मानसदीपिका रामायण के सथ २ २ ।
संपूरणता ग्रंथकी गौरीसुतके हाथ ॥ १ ॥

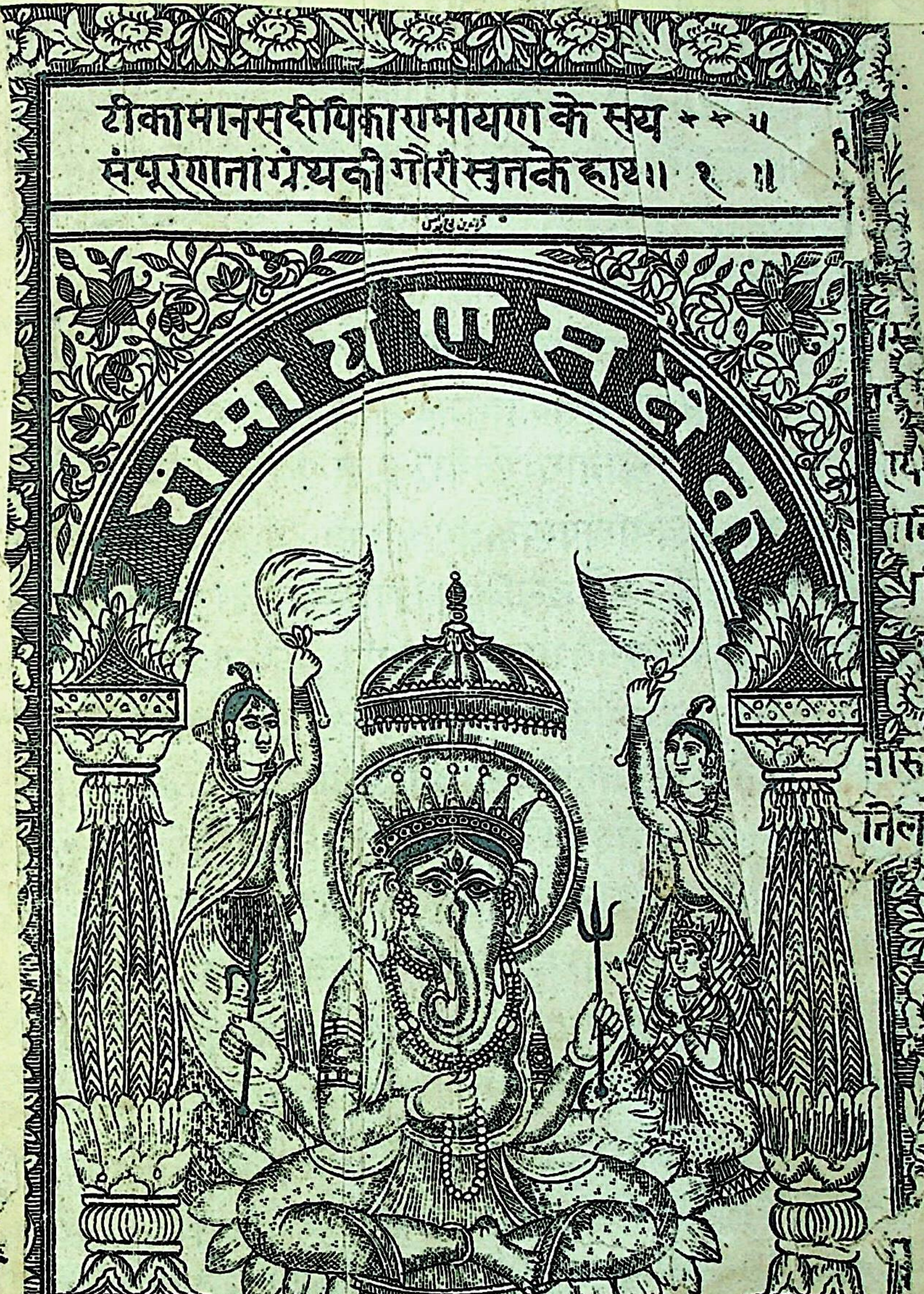

श्रीगणेशायनमः अथश्रीसीतारामपरमभक्तगोस्वामीतुलसीदा
सकृतस्यश्रीमत्श्रीरामायणस्यमानसदीपकासमाख्यायाटीका
याभू[illegible]का लिख्यते।आदौमंगलाचरणं दोहा परसुधरनसंपतिभरन
अवर[illegible]दरनगनेशाबिघ्नहरनमंगलकरनशरनकुशरनहमेश १ एकरदन
वर[illegible]दनसिद्धिसदनसुखदानि मदनकदननंदनजपहु जगबंदनगिरिजानि
सिंदु[illegible]रसहसिंधुरबदरदनबिशदद्युतिभाति अरकाविफलबेलोनिरखिरा
पवि[illegible]शबिदबिजाति अथसंक्षेपतोराजबंशवर्णनं।हरिपदछंद।परमतप
[illegible]जस्वीबरारिविमिश्रउजागरजोवेदबिदग्धनीयशुभसत्यसुयशाके
गर[illegible]४ गौतमगोत्रसात्रपेखिपदपंकजपैशिरधरकै स्येग्रामबसुबिशातिजि
को[illegible]नृपबनारछलकरकै ५ क्यौंछलकियोकौनखलकैसेकौनलह्योफलभा
[illegible]कुरिमिश्रजूकोभावअरुबंशावलीसुखार ६ यहसबकथाकहांलगि
[illegible]कहियैसुनहुसुजानसुखदानीकाशिराजचंद्रिकाग्रंथमेंसहबिस्तारबर
[illegible]प्रसंगसकहौंकहांतेबंशावलीअदूषितजाहिरहैजगमेंबिशे
[illegible]कियोबसनिजभूषित ८ बिदूमिश्रमुनीश्वरजूकेबंशमांहप्रगटेहैं
महाराजबरबंडसिंहजिन्हप्रबलप्रतीपठटेहैं ९ बोठनेपरशनेछानबेगनेघने
[illegible]नभाये तिन्हैंरखिनिजशरनशत्रुहनतकाशीराजकहाये १० कहौंसत्यसुन
कौंसतजनसवधानमनहूजौनृपबरिबंडसमानजगतमेंनृपबरिबंडनदूजो।
[illegible]तासुधर्मअरुराजदुहूंकोअधिकारीसुतसुंदरनृपमहीपनारायणप्रगट
[illegible]वतपुण्यमिशरर १२ तिनकेसुतभेतीनतीनिहूंनवप्रकारसबलायक जि
[illegible]यराजहनमेंजाहिरगानकरतगुनगायक १३ तिन्हमेंज्येष्ठश्रेष्ठका
[illegible]नृपतिउदितनारायन तदनुदीपनारायणबाबूपरमपुन्यपारायन।
प्रसिद्धजगतमेंबाबूश्रीप्रसिद्धनारायन १४ नदेनहरिध्यानधरतिगुन
नकरति[illegible]ण १५ अथातिसंक्षेप।। क्रमेणराजश्रीराजधानीराज
भाव[illegible]श्रीव[illegible]ीपतिनपतिकीअभिराजश्रीभातिरचितराज
[illegible]बदनीसर[illegible]ाति १६ सभाभूरिशोभाभरीभूषितप्रभाबिभाति
[illegible]रस्वी।बरंचिजनुरंचनबनीजानि १७ अथमुख्यप्रसंगबर्णनं हरिग्री
द।तिहिसभाबरबिचराजगादीसत्यबारीभ्राजतनृपउदितनारायण

रहेमनमुदितनित्यबिराजैंअतिसुभाँति प्रबलप्रताप सुजसकलापरु जो
गनधामसेजगमेंउजागरशीलसागररूपआगरकामसे १८ सहबंधुशो
भासिंधुबैठेएकदिनदिनमेंरहेजनुधर्मराजसभीमअर्जुनपेखिछबिसन
हीकहेंतहांदासतुलसीरचितरामायनकथाकेअर्थकोचलिभोप्रसंगरग
रुभायोसर्बअंगसमर्थको १९ इहिहेतअंगसमेतटीकोनिपरनोकोई
कैनेजिहिजगतसनमानैसुधीशकबीशवंदभलोभनै सुनिसभासदभैकं
गदगदगिरासुखप्रदमुदमयी कहिजयतिकाशीराजआज अनूपयह
बातोभई २० चौपाई बाबूश्रीप्रसिद्धनारायन भूसुरभक्तपुन्यपारायनकवि
कोबिदहिमहरसहायकभूपबंधुसबबिधिसबलायक २१ भूपतिकी
आशाअतिभारी अद्भुतअमितजगतहितकारी सुनतश्रवनानिजशिरपर
धारीसमुझिसुखदसुरतरुकीडारी २२ क्योंकितिलकछैनृपबिरचाये । २
जेअतिअद्भुतजगतकहाये पहलोतिलकरामलीलाबरजिहिलखिअण
घतनतिमिरकूपनर २२ सोरठादिदोहासमुदाईछंदअनेकरुचारुचेस्ता ।।
ताकोजहांअर्थहैजैसो लीलालखितलखावतितैसो २३ दूजोतिल
लमनभायो।रामायनसहचित्रलिखायो मूर्तिमंतजनुअर्थाबेराजैं जिहि
लखिअर्थकथनलाजिभाजै २५ यद्यपितिलकदियेदोऊ अतिप्रसन्न
तनतेंसबकोऊ तदपिसकलपुरनगरनिवासीजेहैंरामायनअभ्यासी २६
तिनहैंनसुलभसुलभहूजिनकोसोउनसदानसबथलतिनकौं तातेंसुलभ
सदाअरुसबथलतीजोतिलकबरनमयअतिभल २७ बनैभूपयह आश
कीन्हींबांछितअतिसंपतिजनुदीन्हीं इहितेसमुझिकामतरुडारी नगरी
तुरतनिजशिरपरधारी। २८। नबनिजभक्तिसमेतअनुजकहँपेखि सभा
प्रमुदितमनमहँ भूपती प्रमुदितकैनृपनीतिरीतिसतयोनिअमित
दानसबुधिसनमानदानभावानध्याननित रागरंगसतसंगअंगजुतमें
अभंगतहँपरमधर्मलागिजातकरतसर्बज्ञनृपतिकहँबहुबर्षअमलइ फलो
अतिहर्षसहितबीततभयेलखिनेमप्रेमप्रअेमनिजपूर्नतनरघुबी
दो· काशिराजनृपराजतबमनमेंकियोबिचार सबप्रकारसामर्थ्ययु
तभयोकुमार ३० बयलघुअलघुप्रतापअतिसुजसवंततगंभीर। सील

शोभाउदधिधर्मधुरंधरधीर ३१ दयावंतदानीबड़ोसतगुनवंतसुजान।
अस्त्रशास्त्रमेंबिशतरबरकतनराबलवान ३२ बहुबिधिबिद्यानिधिबिबिध
द्धिसमृद्धिनिधान सतसंगतिरतिसमुझिआनि नरपतिमुदितमहान ३३
दहिंकरिहरिचरननतेंदेहहुपरिखिअनित्य सुतहिनुरतयुवराजकै
भूपभयेकृतकृत्य ३४ छटपदीतदनंतर शुभकरनसुमरिगुरुचरनचा
रुनरसुनतदीहदुखदरनग्रंथगीतादिमुक्तिकर सकलसुबुध
सनमानसाधुगुनगानदानरत करतसनहरिध्यानधरतनहिंआनआचरन
कीनेसुनर्थबीतेजबहिंनवप्रकर्षहर्षहिलहौहै प्राप्तकामनिजनामक
रिपरमधामजैबोचह्यौ ३५ चौपाई अष्टादशशतद्विनवति १८९२ संव
तआनिपुनीतरविसौम्यगोलगति चैत्रशुक्लषष्ठीशनिबासर मध्यदि
वसलहिसमयशुभतर ३६ कवित्तलच्छन भगायकरिपरमसुलछ
ायबरबच्छनकीपूरनपननसों केसकैंबखानि अलकेशकीसी
नै हु काशिकेशउद्दितहैबेदबीभननिसों काशीमांहिबैठकमल
शासनपैआसनसमेटिकैसमाधिकीबननिसों सन्यासंधज
कैप्रबंधसुनिकैभगवद्भजनछोड़िछूटैबंधननिसों ३७
चौपाई नवजुवराजसमयलखिशुभतर राजतिलकलहिसुखस
खभाकर साजसभायसत्यबादीबर बैठेराजराजगादीपर ३८ क
वित्त बैठेराजईश्वरीप्रसादनारायनसिंह दीपतिदराजशुभसाजसजे
हैं बैरीगनओजनसोंहीनबिनफौजनहै भोजनबिहायबेगिभाजेबन
यहकाबिकोबिदसमूहजससाजेतिन बाजेबजेछाजेप्रजाबृंदछन
ायेजेपगनशीशजिनकेनगनपायमागेधनगनहैगेमंगनमगनहैं
नवमंगनगनमगनहै मौजेंपायबिशेष कियागौनजिनभौनप्राप्तिहै
शेषाअशेष ४० आशिषा यथा कवित्त राजूभूपईश्वरीप्रसादना
ासिंहराबरे प्रतापनकीपंगतिभगीरहै गंनकरिदशहूदिगंतरपारिजं
कांतसीसुकीरति अनंतउमगीरहै ईश्वरबिराजिराजकाजमेंपरम
मसोंनिबाहेंनीतिप्रेमसोंपगीरहै काशिराजसंजुतसमाजजाकोजु
जासोजगजीवनकीजीविकालगीरहै ४१ दोहा । बिद्यमान

मनुजेंद्रकाहूँजवसमेतनृपनीति राजकारनिग्रानिहर्षसोंकिनेबर्षगेबीते ४२ हरिगीतिकाछंद नवपरमधामनिवासकारी काशिराजनरेश। जुबिशेषग्राज्ञाशीशधारी ध्यायमूर्तिमहेशकी गुनिभूपबंधुसुजानशोभासिंधुसोईकहतभे बरबिद्यमाननरेशकाशीराजसुनिसुखलहतभे ४३ ग्रवधेशभक्तसुव्यक्तबिद्याजुक्तसतगुनसंचयी रघुनाथदासबुधेंद्रपैमनुजेंद्रकीग्राज्ञाभई तिनदासतुलसीरचितरामायनसुटीकानिर्मयीधरिनाममानसदीपिकासबदीपजोदीपितभई ४४ दोहा मुद्रितमुद्राग्रक्षरनिलक्षनस्वच्छसमेतदत्तनहेतसमस्तजनुग्रलयगिरानिकेत। सोरठा ईश्वरकाविकविरायभूरिभव्यरुयभूमिकाबिरचीग्राज्ञायायबिद्यमानमनुजेंद्रकी ४६ स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिराजश्रीईश्वरीप्रसादनारायणसिंहस्याज्ञानुगामिना काशिवासिमिश्रोपनामकेनईश्वराख्येनकविना।बिरचिता गोस्वामीतुलसीदासकृतश्रीमद्रामायणस्यमानसदीपिकासमाख्यायाटीकायाभूमिकासंपूर्णं॥ शुभमस्तु॥

मानसदीपिका

श्रीगणेशायनमः दोहा गणपति सियपति गौरिपति गौरि प्रभापति भानु। बंदौबंदनजगतकेचंदनलौंसुखदाय १ दुरितदोषदूषनदलनजासुनाम भवसेतु नाहिसुमिरिटीकारचितकाशिराजमुदहेतु २ [illegible] सभाने चारभयोपंडितग्ररुकाविनसों श्रीगोसाईंजीदासकृतरामायणग्रंथ बहुतबिख्यातहै ग्ररुयाकोतिलकबहुतमहात्मोंकियोहै ग्रद्ध मचरणदासजीग्रयोध्यासंतसिंहजीलहौरराजागोपालसरणसिकालो ग्ररुस्वामीजीमहाराजबर्तमानकाशीजेनेजगुरुश्रीबिद्यारायतोमें जीकेनामते रामायण परिचर्याबनायो सोग्रतिसंक्षेपते स नाहींहोत ताकीग्राशयख्यातकियोजाय ग्ररु प्रथम उपो

मेंरामायणकोछैप्रकारकोसंदेहबर्णनकियोचाहियेएकसत्यत्वमेंदूस
प्रसंगकेभेदनोंएकबाक्यतापूर्बककबूझेमोंआवैअरुस्मृतिश्रुतिग्रंथां
तरनतेप्रमानननलिख्योजायहेतुकियाग्रंथकोसबकोऊदेखेगोयातेंश्री
गोसांईजूकेग्रंथनकोप्रमानदियोजायअरुश्रीगोसांईजीअरुऔरहूमहा
त्मांकोसम्मतएहीहैकिरामभक्तिसंपुटमेंनामरत्नयारामायनमेंसिद्धांत
हैऔरहूरामायणबिबिधभांतिप्रसिद्धहैंरामायणसतकोटिअपाराअ
रुअर्थबिषैजोसरलरीतिअक्षरपरतेंप्राप्तसोइमुख्यसोछइआग्रहीजो
अर्थनहींहैसोकरिआपनअर्थनिकारतुहैंताहीतेमतनमोंअबऐसो
बिरोधहैकिजैसेएकबाक्यतासबदेवतनकेपरत्वमेंहोतहैसोऊव्या
प्तिअव्याप्तिकरकैभीमतनमेंख्यातहैकष्टतेअरुयहग्रंथमेंअतिआ
ग्रहनाहींराखततातेंयाकोसबग्रंथमानतहैंअरुमतग्रंथकेआचार्य
बड़ेबड़ेभएहैंवामेंजोबिचारकियोजायतोजास्थानपरसिद्धांतजानत
हैंकिएहीअर्थसत्यहैआग्रहसेजोसिद्धांतहैसोरहिजातहैसोपुराना
दिकसोंबिरुद्धभासतहैपरत्वसबपुरानमेंभिन्नहैपरंतुएकवाक्यता
होइसकैहैयथामतवारनसोंअरजयहीअपनेअपनेइष्टनकोतुमव्यापक
मानतहोकिनहींउ॰व्यापकमानोतौइष्टनमेंकतहूंनबैरबिरोधचाहिनाहिव्याप
कवहतोब्रह्ममेंजीवरसाआयरही १ कानिर्गुनकासगुनमतमेंरहैहैऐसोबा
तसहीसारभागसबहीकोबीजैरससेतजियेछाछमही २ सूराबारहसारनि
वारनीबोलगएअससारगहीबेदमंत्रदमगीकेकारणजिनबेचाकरिरहा
४ रांचेनचेतनकरैबिचारमतपरचारबिचारसारनाहिंसोचोपरयुप
नैंनवनीतनिद्यादधिमथिततजिवारिबिकारमानिमदिराअतिपा
येतेहोतसुमतमतवार ५ सतबिद्यासागरसमसोतलतारनीवारै
३ सुहृदनिकरहृदयस्थन्यागिकनबादरकारनपुकार ४ ऐसोईजो
हीजायवाकोकरतहैंअरुनदेखोजायताकोदेखतुहैंतातेंप्र
थनकेलक्षणसिद्धांतकछुदृष्टांतअरुद्वितीयवर्तमानकालमों
पंडितरहेसर्बशास्त्रअरुपुरानयाहीरामायनकेदृष्टांतहेतुआम
सर्कअर्थबिस्तरभयतेंनलिखोजायहैपरंतुअथेजोशब्द

वतेअरुजावतकाव्यंगलक्षणाबिंजनापूर्वकसहजनिकरैंसोसहजअर्थहै याहेतुतें कछुकाव्यंगहू अरु त्रितीयसर्बश्रेयभक्तिजोनाममूलहै श्रीरामायनकेतिलककोसरनीप्रसंगरीतिकरकैअरुयाहीमोंश्लोकनकेअर्थअरुनामनिरूपनमानसइत्यादिजहाँजहाँकलिष्टहोइतहांतहांस्पष्टअर्थप्रसंगकेअंतर्गतअरुचतुर्थनकोजनयामेंकहूंकहूंसंकाकरतहैंतातेंकछुमुख्यमुख्यसंकाकोसमाधानहू अरुपंचमजावतयामेंबिषमबिषमशब्दहैंताकोअर्थमुख्यएककोशकरिकैएपांचोंअंगयुक्तश्रीरामायणकोतिलकलिख्यो॥ ॥इतिश्रीमानसदीपिकायांउपोद्घातबर्णनेप्रथमःप्रकाशः१

॥श्रीगोसांईजीकह्योहैनानापुराणनिगमागमइत्यादितातेंकछुपुराणादिअंगलिखतहैं अथ प्रथमअंगदशलक्षणपुराननकेभागवतमेंकह्योहैसर्ग१बिसर्ग२स्थान३पोषण४ऊति५मन्वंतर६ईशानकथा७निरोध८मुक्ति९आश्रय१० प्रथमसर्गलक्षणमहाभूतआकाशादितन्मात्रापंचशब्दादिइंद्रीदशमहत्तत्वअहंकारएसबकोब्रह्मसेगुणवैषम्यकरिकैजोपरिनामवातेंबिराटस्वरूपअरुस्वरूपकरिकैजोजन्मवाकोनामसर्ग१बिराटसेजोभयोचराचरकोजन्मसोबिसर्ग२भगवानकेबिजयपूर्वकसृष्टिकोमर्यादापालनकरनेसेजोउत्कर्षसोस्थान३अपनेभक्तपरअनुग्रहसोपोषण४कर्मनकीबासनाअरुबर्णाश्रमरूपासोऊति५अनेकालपर्यंतएकएकमनुसतधर्मकोपालनकरतहैंसोमन्वंतर६ईशभवाःकोजोअनुचरितसोईईशानकथाअथवाईशजोसूर्यचंद्रबंशकेराजउन्हकीजोकथासोईईशानकथाकहिये७दुष्टनकोमारनोबाहिरकीजोगनिद्राकेशक्तिसहितजीवनकालयसोनिरोध८आरोपितकर्तृत्वादित्यागिकैशुद्धब्रह्मस्वरूपजोस्थितिसोमुक्ति९जगतकीउत्पत्तिरुबिनाशजातेंज्ञातहोतहैंसोआत्मापरब्रह्मसबहीकोआश्रय१०

अपरपुराणकेजोपंचलक्षणकहेहैंसोयाहीदशलक्षणकेअंतरगतअरुयेदशपांचोंकेअंतर्गतहैंसोपांचोंसर्ग१बिसर्ग२बंश३मन्वंत[illegible]शानुचरित५इतिपुराण ॐ अथशास्त्रषट्शास्त्रजोहैंबेदजानिवेकोताकोसिद्धांतबातकछूकछूपृथकपृथकलिखतहैं अथप्र

मीमांसा शास्त्रयाको आचार्य जैमिनिमुनि यामें यज्ञादिधर्म बिषयहै अरु धर्मज्ञानहीं प्रयोजनहै फलउद्देशकरि बेदप्रतिपाद्यजो अर्थ सोधर्म कहिये स्वर्गरूपफलको हेतु यज्ञकरिके अपूर्वको भावना करनो अरु भावनामों तीनअंशाकी अपेक्षाहै कारण १ कार्य २ इतिकर्तव्यता ३ कौनकारकैकरनो याकरणअंशकीअपेक्षाहै क्या करनो याकार्य अंशकी अपेक्षाहै कौन प्रकारतें करनो या इति कर्तव्यता अंशकी अपेक्षाहै अरु भावनाद्वैहैं एकआर्थीदूसरी शाब्दी अरु अपौरुषेयजोबाक्य सोबेदहै बेदपांचप्रकारकोहै बिधि १ मंत्र २ नामधेय ३ अर्थबाद ४ निषेध ५ भेदतें। संपूर्णबेद जाहैसोकोऊ साक्षाततें कोउपरंपरातें धर्मप्रतिपादकहै बिधि चारप्रकारकोहै उत्पत्ति १ बिनियोग २ अधिकार ३ प्रयोग ४ भेदतें। अग्निहोत्रकरनो उत्पत्ति १ अंगकीबोधकजो बिधिसो बिनियोग दधिकरकै होमकरनो इहां बिनियोगहै अंगद्वैहैं एकसिद्धदूसरोसाध्य दधिआदिसिद्ध प्रयाजादिसाध्य २ कर्मजन्यफलबोधकजो बिधिसो अधिकार ३ स्वर्गफलकेहेतुयज्ञकरनो यहां अंगकोक्रमबोधकजो बिधिसोप्रयोग ४ दसंपादनकरकै बेदीकरतहैं याके सहकारीभूतछ प्रमाणहैं श्रुति १ लिंग २ बाक्य ३ प्रकरण ४ स्थान ५ समाख्या ६ भेदतें निरपेक्षजो शब्द श्रुतिहै १ सामर्थजो अर्थकाबोधक होयसोलिंग २ एकअर्थको बोधक होयबिभागतें परस्पर आकांक्षा होयसोबाक्य ३ जहांदोऊको आकांक्षाहै सोप्रकरण ४ जहांदोऊमें एककोआकांक्षा होयसोस्थान ५ समाख्याकहीसंकेत ६ पुनः बिधितीनप्रकारकीहै अपूर्व १ नियम २ परिसंख्या ३ भेद ॥ अत्यंतअप्राप्तअर्थकीजो बिधिसो अपूर्व १ निहोत्रकरनो इहां॥ पक्षमोंप्राप्तजो बिधिनियम २ दधिकरिकै करनो इहां। स्वभावतें प्राप्तसंता पुनः जोबिधान सोपरिसंख्या पंचपंचनखाभक्ष्याइति। प्रसंसाबाक्यजोहैसो अर्थबादहै १ सोतीनहै गुणबाद १ अनुबाद २ भूतार्थबाद ३ भेदतें॥ प्रत्यक्षादिप्रमाणों बिरुद्धसे गुणबाद १ सूर्यखंभाहैसोप्रत्यक्षादि प्रमाणतेंज्ञातकौ बोधकजोसो अनुबाद २ बेनकीगलतेंउत्पत्ति भूतकालिक अर्थ

कोप्रतिपादक जो सो भूतार्थबाद २ इंद्रदेवतनमों श्रेष्ठतर है इनिअर्थनको जो संकेत नहि सिद्ध सो मंत्र ३ यत्तनको जो नाम सो नामधेय ४ इच्छातें अनिष्टमों प्रवृत्त पुरुषको निवृत्त करनो सो निषेध ५ कलंजको न खानो और उदय होते सूर्यको न देखनो इत्यां या रीतितें मीमांसा परिसोधित तर्कतें बेदके पाचों प्रकारकों जानिके यथोक्त कर्मके अनुष्ठान करकें पुरुषको परमपुरुषार्थको लाभ होतु है १ ॥

अथ द्वितीय बैशेषिकशास्त्र याको आचार्य कणादमुनि यामें पदार्थ बिषय है औ पदार्थतत्वज्ञान प्रयोजन है पदार्थ दोय एक भाव दूसरो अभाव भाव छह हैं द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ बिशेष ५ समबाय ६ षड्पदार्थके सामान धर्म अरु बिरुद्ध धर्म जानिवेतें अनेकपदार्थोंके अनेकधर्मको ज्ञान होतु है अनेकधर्मोंमे एक निवृत्ति धर्म है निवृत्तिधर्मतें उत्पन्न जो आत्मा साक्षात्कार तातें मोक्ष होत है अभाव चार हैं प्रागभाव १ प्रध्वंसाभाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ अरु द्रव्यत्व १ गुणत्व २ कर्मत्व ३ ई तीन जातिरूप धर्म हैं सामान्यत्व १ बिशेषत्व २ समबायत्व ३ अभावत्व ४ ई चार उपाधिरूप धर्म हैं पृथिवी १ जल २ तेज ३ बायु ४ आकाश ५ काल ६ दिशा ७ आत्मा ८ मन ९ ई नव द्रव्य हैं अरु पृथिवीत्व १ जलत्व २ तेजत्व ३ बायुत्व ४ आत्मत्व ५ मनस्त्व ६ ई छह जातिरूप धर्म हैं आकाशत्व १ कालत्व २ दिशात्व ३ ई तीन उपाधिरूप धर्म हैं रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ बिभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७ दुख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार २४ ई चौबीस गुण हैं अरु रूपत्वादिक चौबीसों जातिरूप धर्म हैं पृथवीमें रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ बिभाग ९ परत्व अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व संस्कार १४ ई चौदह गुण हैं जलमें रूप १ रस २ स्नेह ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ बिभाग ८ परत्व ९ अपरत्व गुरु द्रवत्व १३ संस्कार १४ ई चौदह गुण हैं तेजमें रूप १ स्पर्श २ संख्या ३ ४ पृथक्त्व ५ संयोग ६ बिभाग ७ परत्व ८ अपरत्व ९ द्रवत्व १० संस्कार

ई ग्यारह गुण हैं वायुमें स्पर्श १ संख्या २ परिमाण ३ पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ परत्व ७ अपरत्व ८ संस्कार ९ ई नव गुण हैं आकाशमें शब्द १ संख्या २ परिमाण ३ पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ ई छह गुण हैं कालमें अरु दिशामें संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४ विभाग ५ ई पांच गुण हैं जीवात्मामें संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४ विभाग ५ बुद्धि ६ सुख ७ दुःख ८ इच्छा ९ द्वेष १० प्रयत्न ११ धर्म १२ अधर्म १३ संस्कार १४ ई चौदह गुण हैं मनमें संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४ विभाग ५ परत्व ६ अपरत्व ७ संस्कार ८ ई आठ गुण हैं ईश्वरमें ज्ञान १ इच्छा २ प्रयत्न ३ संख्या ४ परिमाण ५ पृथक्त्व ६ संयोग ७ विभाग ८ ई आठ गुण हैं पृथ्वी १ जल २ वायु ३ तेज ४ ई चारों द्वै प्रकारके हैं एक परिमाणरूप दूसरो सावयव घटादिरूप अरु आकाश १ काल २ दिशा ३ आत्मा ४ ई चारों व्यापकरूप हैं मन अणुरूप सावयव अनित्य हैं बाकी सब नित्य हैं सावयवके तीन भेद हैं शरीर १ इंद्रिय २ विषय ३ मनुष्यलोकमों मिट्टीको शरीर है वरुणलोकमों जलको सूर्यलोकमों तेजको वायुलोकमों वायुको अरु घ्राण इंद्री पृथ्वीको रसना इंद्रिय जलको चक्षु इंद्रिय तेजको कर्ण इंद्रिय आकाशको पृथ्वीमों सातों रूप रहत हैं जलमों स्वच्छ रूप तेजमों प्रकाश रूप अरु पृथ्वीमों छवों रस रहत हैं जलमों मधुर रस रहत है अरु पृथ्वीमों दूनो गंध रहतु हैं कर्म पांच हैं ऊर्द्धक्रिया १ अधोक्रिया २ संकोच ३ विस्तार ४ गमन ५ ई पांचो कर्म द्रव्यमों रहतु हैं अरु सामान्य कहैं जाति जाति तीन हैं व्याप्य १ व्यापक २ व्याप्यव्यापक ३ सत्ता जाति व्यापक है द्रव्य गुण कर्म तीनोंमों रहतु हैं घटत्व जाति व्याप्य है द्रव्यत्व जाति व्याप्यव्यापक है नित्य होय एक होय अरु अ-

कमों रहै सो जाति अरु नित्य द्रव्यमों रहै नित्य द्रव्यमों परस्पर भेद है तिसो विशेष है समवाय कहिये नित्य संबंध अरु कार्यके पूर्व जो अ-

प्रागभाव १ कार्यको जो नाश सो प्रध्वंसाभाव २ तीनो कालमों जो अ-

सोंत्यंताभाव ३ परस्पर जो अभाव सो अन्योन्याभाव ४ अरु प्रमाण हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ अरु शब्द ३ औ उपमान ई सोऊ अनुमानमों गनायो है

तीय न्याय तर्कशास्त्र ॥ याके आचार्य मुनि गौतम याभें सोरह

पदार्थ बिषय हैं सोरह पदार्थका ज्ञान प्रयोजन है वे प्रमाण १ प्रमेय २ सं
शय ३ प्रयोजन ४ दृष्टांत ५ सिद्धांत ६ अवयव ७ तर्क ८ निर्णय ९ बाद १० ज
ल्प ११ बितंडा १२ हेत्वाभास १३ छल १४ जाति १५ निग्रहस्थान १६ ए सोरह प
दार्थ हैं याके तत्त्वज्ञानमें मोक्ष होतु हैं मिथ्याज्ञानके नाशतें दोषको नाश दोष
के नाशतें प्रवृत्तिको प्रवृत्तके नाशतें जन्मको जन्मके नाशतें दुखको दुख नाशें
मोक्ष है अरु प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ शब्द ४ ए चारि प्रमाण हैं इंद्रिय अरु
अर्थके संबंधतें उत्पन्न जो ज्ञान सो प्रत्यक्ष है जाके प्रत्यक्षज्ञानके अनंतर अनु
मिति होय सो अनुमान २ जाके सादृश्यज्ञानके अनंतर उपमिति होय सो उपमान
३ यथार्थज्ञानको जो उपदेश सो शब्द ४ ॥ आत्मा १ शरीर २ इंद्रिय ३ अर्थ ४ बुद्धि ५
मन ६ प्रवृत्ति ७ दोष ८ प्रेत्यभाव ९ फल १० दुःख ११ मोक्ष १२ ए बारह प्रमेय हैं इ
च्छा १ प्रयत्न २ ज्ञान ३ द्वेष ४ सुख ५ दुख ६ ए छह आत्माके लक्षण हैं २ चेष्टा १
इंद्रिय २ सुख ३ दुख ४ ए चारों जामें रहें सो शरीर २ अरु घ्राण १ रसना २ चक्षु ३
त्वक ४ कर्ण ५ ए पांच इंद्रिय हैं सो भूतनतें उत्पन्न हैं ३ पृथ्वी १ जल २ तेज ३ वायु
४ आकाश ५ ए पांच भूत हैं गंध पृथ्वीको गुण रस जलको गुण स्पर्श वायुको
गुण शब्द आकाशको गुण गंध घ्राणको बिषय रस रसनाको रूप चक्षु
को स्पर्श त्वचाको शब्द कानको बिषय बिषय जो है सो अर्थ है ४ बुद्धि
कहिये ज्ञान ५ एक कालमों एक आत्मामें अनेक ज्ञानकी उत्पत्ति नहीं है
एतो हेतुतें अणुत्व मनको लक्षण है ६ अरु बाणी १ बुद्धि २ शरीर ३ ए
तीनका जो प्रयत्न सो प्रवृत्ति ७ प्रवृत्ति होय जातें सो दोष ८ सो दोष प्रीति
द्वेष मोह रूप है अरु मरिकै जन्म लेनो प्रेत्यभाव है ९ प्रीति द्वेष मोहतें
सुख दुखका जो साक्षात्कार सो फल है १० दुख कहिये पीड़ा ११ दुः
नाश मोक्ष है १२ एकमें अनेक बिरुद्ध धर्मको जो ज्ञान सो संशय ३ ध
के हेतु प्रवृत्ति होय सो प्रयोजन ४ बादी अरु प्रतिबादीका जो अर्थ बद्ध
रोध न होय सो दृष्टांत ५ सिद्धांत चार हैं सर्वशास्त्र १ एकशास्त्र २ त फलो
अधिकरण ४ जाके सिद्धिके अनंतर और अर्थकी सिद्ध होय से भे
करण सिद्धांत है ६ अवयव पांच हैं प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण
य ४ निगमन ५ पर्वतमों बह्नि है ई ज्ञान प्रतिज्ञा है १ धूमतें

ज्ञानहेतु २ जहाँ धूम तहाँ बह्नि जैसे रसोई घरमों ई उदाहरण ३ रसोई के घर सादृश्य पर्बत है ई ज्ञान उपनय ३ धूमज्ञानतें पर्बतमों बह्नि है ई ज्ञान निगमन है ७ अरु कार्य अरु कारण का बिचार सो तर्क ८ निर्णय कहिये निश्चय ९ सिद्धांततें अविरुद्ध जो बादी प्रतिबादी का दूषण भूषण सो बाद १० छलादिकनतें जो साधन में दूषण सो जल्प ११ अपने पक्ष के स्थापन मों हीन जो दूषण सो बितंडा १२ हेत्वाभास पाँच हैं व्यभिचारी हेतु १ बिरोधी २ सत्प्रतिपक्ष ३ असिद्ध ४ बाधित हेतु ५ १३ छल तीन हैं बाक १ सामान्य २ उपचार ३ बक्ता के अभिप्रायतें अन्य अर्थ की जो कल्पना सो बाकछल १ जाति बिषयक जो छल सो सामान्य २ मुख्यार्थ में लक्षणातें जो छल उपचार १४ सामान धर्मतें अरु बिरुद्ध धर्मतें जो दूषण कथन सो जाति १५ बादी का बिरुद्धार्थ के चुप रहना सो निग्रहस्थान १६ ३ +

अथ चतुर्थ योगशास्त्र याके आचार्य पातंजलि मुनि यामों चित्तवृत्ति को रोकनो योग मों बिषय है वृत्ति पाँच हैं प्रमाण १ बिपर्जय २ बिकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति भेद तें ॥ प्रमाण तीन हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ आगम ३ भेद तें बिपर्यय कहिये मिथ्याज्ञान जैसे रस्सी में सर्पज्ञान २ शब्दज्ञानतें पाछे होय अरु अर्थतें शून्य होय सो बिकल्प ३ जैसे खपुष्पादि अभावज्ञान बिषयक वृत्ति निद्रा है ४ अनुभूत बिषय को न भूलना स्मृति है ५ अभ्यासतें अरु बैराग्यतें पांचों को रोकनो समाधि द्वै हैं एक सबीज दूसर निर्बीज ईश्वर की भक्तितें समाधि सिद्ध होनु है क्लेश १ र्म २ कर्मफल ३ बासना ४ इ चारोंने रहित जो पुरुष बिशेष सो ई र है प्रणव के जपने अरु ईश्वर की भक्तितें समाधि का लाभ अरु बिघ्न ाश होत है व्याधि १ सत्कर्मत्याग २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ ग्य ६ भ्रम ७ जड़ता ८ अनवस्थता ९ ए बिक्षेप चित्त मों नाहीं रहत चित्त की चंचलता २ अंगकंप ३ पूरक रेचक श्वास ४ ए बिक्षेप के ाके दूर करने के हेतु ईश्वर मों चित्त भली भांति लगावनो काहू हैं न माननो बिषय के निवृत्ति होने संतो अरु बिचार तें अरु प्राणा तें एकाग्र होत है या उपायतें स्थिर चित्त में परमाणु ने लेके

आकाशपर्यंतसबबस्यहोतहैं याकेअनंतरजबबिचारतें शुद्धचित्तहै
तबस्थिरचित्तहै स्थिर चित्तमोंसत्ययुक्तप्रज्ञाहोतहै ताप्रज्ञातें सब को
देखतुहै ईसबीजसमाधिहै याकेरोकनेतें निर्बीज समाधि होतहैं वा
कालमें पुरुषमात्ररहतुहै व्रत १ मंत्रजप २ ईश्वरबिषै फलकामनात्यागि
सर्बसमर्पन ३ एतीनक्रियायोगहै अरुक्रियायोगतें समाधिमें चित्तलगतु
है अरुक्लेशकमहोतहैं अविद्या १ अहंकार २ राग ३ द्वेष ४ आग्रह ५ ए
पाँचक्लेशहैं अविद्याकहियेअज्ञान १ पुरुषअरुअंतःकरणकी एक
ता अहंकार २ सुखमेंतृष्णाराग ३ पूर्वअनुभूतदुःखस्मरणतेंबिरोध
वृत्तिद्वेष ४ शरीरआदिबस्तुकेस्थिरतामोंतृष्णाआग्रह ५ स्थूलसूक्ष्म
क्लेशनका अरुताक्लेशनकी सुखदुःखमोहरूपवृत्तिनका ध्यानतें त्याग
करनो अरुक्लेशजन्यअशुभकर्मकोफलयाजन्ममों है वाजन्मांतरमोंहै
बिबेकीकोसबदुःखहीहै बुद्धिअरुपुरुषकाजोसंयोगसोसंसारको
हेतुहै भोगअरुमोक्षकीउत्पादकबुद्धिहै पुरुषचेतनमात्रहै अरुबुद्धि
रूपदर्पणमों प्रतिबिंबसंबंधस्वरूपआत्माहै एकबिबेकीपुरुष को
अविद्यानष्टहोनेतें औरसबपुरुषोंमें अविद्यानष्टनहीं होत बुद्धिअरुपुरु
षका अबिबेक अज्ञानतें होतहै अरुबिबेकज्ञानतेंअज्ञानका नाशहोतहै
याहीपुरुषकीमुक्तिहै अरुबिबेकज्ञानतें पुरुषकेसबीज समाधि पर्यंत
सातप्रज्ञाउत्पन्नहोतहैं हमसबपदार्थजान्यो १ हमारेअविद्यादिक्लेशनाश
भयो २ त्यागकोउपायजान्यो ३ हमकोबिबेकज्ञानभयो ४ मेरीबुद्धिकृ
तार्थभई बुद्धिवृत्तिअपनेकारणमोंलयह्वैगई पुनःउत्पन्ननहींहोयगी ५ ह
मारेस्वाधीनसमाधिहै ६ अबनिर्बिकारस्वरूपभयो ७ ईसात प्रज्ञा
हैं संयोगकरनेतेंक्लेशक्षयहोतहैं अरुज्ञानको प्रकाश होतहै यम
यम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समा
ईआठयोगांगहैं अहिंसा १ सत्य २ अचौर्य ३ ब्रह्मचर्य ४ असंग्रह ५ ई प
यमहैं सौच १ संतोष २ तप ३ मंत्रजप ४ ईश्वरनिष्ठा ५ ई पाँच नियम है
रसुखआसनहै आसनतें सुखदुःखादिद्वंद्वकोनाश होतुहै स्वा
सस्वासकाजोगतिबिच्छेद सो प्राणायामहै सोयातें चित्तमों प्रकाश

है ४ इंद्रियनके बिषयतें निवृत्त करके चित्तमों लगावनो प्रत्याहार है ५ नासिकाके अग्रभागमों अरु नाभिचक्रादिबस्तुबिशेषमें चित्तका स्थिर करना धारणा है ६ चित्तका ध्येयबिषयक जो वृत्तिप्रवाह सो ध्यान है ७ वृत्तिआदिभेद स्वरूप अर्थमात्रका भान होय जेहिमों सो समाधि है ८ धारणा ध्यान समाधि ए तीनों एकमों होंहि सो संजम है अरु शब्दके संयमतें सब प्राणीका शब्दज्ञान होतहै अरु संस्कार संजमतें संस्कार साक्षात्कार करनेसे पूर्वजन्मको ज्ञान होतहै परचित्त बिषें संजमतें परचित्तका ज्ञान होतहै अरु शरीरके रूपमें संयमतें योगी अंतर्धान होतहै पुरुषमें संयमतें पुरुषको ज्ञान होतहै अरु प्रकृति १ बुद्धि २ अहंकार ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ स्पर्श ७ शब्द ८ चक्षु ९ रसना १० कर्ण ११ नासिका १२ त्वचा १३ बाक १४ पाणि १५ पाद १६ पायु १७ उपस्थ १८ मन १९ पृथ्वी २० जल २१ तेज २२ पायु २ आकाश २४ पुरुष २५ ई पचीस तत्त्व हैं अरु प्रकृतितें बुद्धिकी उत्पत्ति बुद्धितें अहंकार अहंकारतें रूपतें लेके मनलों सोरहकी उत्पत्ति हैं गंधतें पृथ्वी रसतें जल रूपतें तेज स्पर्शतें वायु शब्दतें आकाशकी उत्पत्ति है अरु अपने निरुपाधिक स्वरूपमें जो स्थिति सो मोक्ष पदार्थ है ४ ॥ अथ पंचम सांख्यशास्त्र याके आचार्य कपिलमुनि: यामें प्रकृतिपुरुषको बिबेक बिषय है अरु अत्यंत दुःखत्रयकी निवृत्ति प्रयोजन है पचीस तत्त्वके ज्ञानतें बिबेक होतहै पुरुष १ प्रकृति २ बुद्धि ३ अहंकार ४ रूप ५ रस ६ गंध ७ स्पर्श ८ शब्द ९ चक्षु १० जिह्वा ११ नासिका १२ त्वचा १३ कर्ण १४ बाक १५ पाणि १६ पाद १७ गुद १८ उपस्थ १९ मन २० पृथ्वी २१ जल २२ तेज २३ बायु २४ आकाश २५ ई पचीस तत्त्व हैं प्रकृतितें बुद्धिकी उत्पत्ति बुद्धितें अहंकार अहंका

तें रूप १ रस २ गंध ३ स्पर्श ४ शब्द ५ ई पंचतन्मात्राकी अरु चक्षु १ जिह्वा २ ना

का ३ त्वचा ४ कर्ण ५ बाक ६ पाणी ७ पाद ८ गुद ९ उपस्थ १० मन ११ ई ग्यार

यहकी उत्पत्ति है अरु पंचतन्मात्रातें तेज १ जल २ पृथ्वी ३ बायु ४ आका

ई पंच स्थूल भूतनकी क्रमतें उत्पत्ति है अरु दिशा १ काल २ आकाशतें

हैं [illegible]क अहंकारतें एकादश इंद्रियकी अरु तामस अहंकारतें पंचतन्मा

सब इंद्रिय अहंकारतें उत्पन्न हैं भूतनसें नहीं हैं अरु शरीर पुरुष नहीं है

पुरुषको भोग हेतु शरीर है अरु जाग्रत १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ ई तीन अवस्था बुद्धिनिष्ठ है पुरुष इनको साक्षी है जन्म १ मरण २ सुख ३ दुख ४ बंध ५ मोक्ष ६ ई सब पुरुषके भिन्न भिन्न अवस्थातें पुरुष बहुत हैं अरु पुरुषमें कोई धर्म नहीं रहतु पुरुष प्रकाशस्वरूप है अरु असंग है ईश्वर नहीं है जो ईश्वर मानेंगे तो ईश्वर बद्ध है बद्ध भयो तो मूढत्वमें सृष्टिकर्तृत्वका असंभव होइगो जो मुक्त मानोगे तो भी रागद्वेषके अभावतें सृष्टिकर्तृत्वका असंभव है यातें ईश्वर नहीं है अरु ईश्वर प्रतिपादक जे तो श्रुतिस्मृति हैं सो सब मुक्त पुरुषके प्रसंसापर हैं अरु सत्व १ रज २ तमोगुण ३ इनकी जो समान अवस्था सो प्रकृति है प्रकृति अति सूक्ष्म है अरु परिणामी है अति सूक्ष्मत्वमें प्रकृति प्रत्यक्ष नहीं है किंतु बुद्ध्यादिकार्यतें अनुमेय है बुद्ध्यादि सृष्टि पुरुषके भोग मोक्षके हेतु है प्रीतितें सृष्टि होत है अरु बैराग्यतें मुक्ति होत है यज्ञादिकातें मोक्ष नाहीं होत मोक्ष प्रकृति पुरुषके बिबेकतें होत है बुद्धितें ज्ञान १ बैराग्य २ धर्म ३ ऐश्वर्य ४ ई चार उत्पन्न होत हैं अरु पश्वादिककी बुद्धि रजतमके संबंधतें बिपरीत होत है यातें पश्वादिकके बुद्धिमों अधर्म १ अज्ञान २ अबैराग्य ३ अनैश्वर्य ४ ई चारों धर्म रहतु हैं अरु सूक्ष्ममें महाभूत उत्पन्न होत हैं महाभूततें शरीर अरु काहूके मतमों पंचभूतको शरीर है काहूके आकाश रहित चारभूतको काहूके पृथ्वी १ जल २ तेज ३ तीन भूतको काहूके पृथ्वी जल २ द्वै भूतको काहूके केवल पृथ्वीको शरीर है अरु पंचभूतको स्वाभाविक चैतन्य धर्म नहीं है अरु प्रत्येकमें भी चैतन्यधर्म नहीं यातें सूक्ष्म शरीरतें दुख सुख जानि परत है जबलों बिबेक ज्ञान नहीं होत तबलों सूक्ष्म भूतमें आरंभकत्व रहत है असत्की उत्पत्ति नाहीं होत सत्की उत्पत्ति होत है अरु कारणमें जो लय सो नाश कहावत है सृष्टिकालमों धर्म अधर्म दोऊतें पुरुष बद्ध होत है प्रलयमें धर्म अधर्म दोऊतें पुरुष बद्ध होत है प्रलयमें धर्म अधर्म दोऊ सूते रहत हैं अरु सृष्टिकालमें पुनः फलोन्मुख होइकै अधर्म धर्म दोऊ शरीरका आरंभ करत हैं अरु मुक्तकालमें धर्म अधर्मका नाश होइ जात है सच्चिदानंद ई आत्माका रूप है आत्मा है ई सब जानत हैं और चिदंशमें भी काहूको संदेह नहीं होत आनंदांशमें सबको संदेह है।

सांख्यके अभ्याससे क्रमतें झटिति आनंदलाभ होयजानहै कोई ऐसा मानतहैं सांख्यशास्त्रमें आदिमें अथशब्दका प्रयोगहै यातें सांख्यमतमें ईश्वरनित्यसिद्धहै ५ *

अथषष्ठमबेदांतशास्त्र ॥ याके आचार्य बेदव्यासमुनि यामेंजीवब्रह्मैक्यशुद्धचैतन्यबिषैहै अज्ञाननिवृत्ति आनंदप्राप्तिप्रयोजनहै अरु साधन चार बैराग्य १ बिबेक २ शमादिषट् ३ मुमुक्षुता ४ ब्रह्मादि आदिलोकके सुखको काकबिष्टावत जाननो बैराग्य १ ब्रह्मनित्य औरसब अनित्य यह बिबेक २ अरु शम १ दम २ उपराति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ सदबासनाकात्यागसोशम १ बाह्यइंद्रियनकाबिषयतें निरोधदम २ बिषयतें पीठउपराति ३ शीतउष्णसहन तितिक्षा ४ गुरुबेदांतबाक्यमों बिश्वास श्रद्धा ५ चित्तएकाग्रता समाधान ६ संसारबंधनतें कबमैं छुटिहौं यह दृढ़ निश्चय मुमुक्षुता ७ एसबसाधनयुक्तशांतचित्त जितेंद्रिय श्रद्धावान् याको अधिकारीहै बस्तुमें अबस्तुको आरोपसो अध्यारोपहै जैसे रज्जुमों सर्पको आरोपहै तैसेही ब्रह्ममों जगतको सच्चिदानंद ब्रह्मबस्तुहै अज्ञानादि सकलजड़ समूह अबस्तु है सत् असत् करके अकथनीय त्रिगुणात्मक ज्ञानका बिरोधी भावरूप होयसो अज्ञान कहिये सो अज्ञान व्यष्टि अभिप्रायतें अनेकहैं अरु समष्टितें एकहै व्यष्टि कहिये अनेक प्रकार समष्टि कहिये समूह जैसे बनमों व्यष्टि अभिप्रायतें अनेक वृक्ष ई व्यवहार होतहै अरु अनेक वृक्षमें समष्टि अभिप्रायतें बन तैसें अनेकत्व करिकै भासमान जो जीवनको अज्ञान बाकै नानात्व करिकै अनेकत्व व्यवहार होत है अरु जीवनको जो अनेक अज्ञान बामें समूहत्व अभिप्रायतें एकत्वव्यवहार होतहै समष्टि उत्कृष्ट उपाधि करिकै शुद्धसत्वप्रधान जो चैतन्य है सो सर्बज्ञ सबको नियामक अंतर्यामी जगतको कारन ईश्वरहै याको आनंदमय कोश सुषुप्तिहै अरु कोश पांचहैं ५ अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ बिज्ञानमय ४ आनंदमय ५ व्यष्टि निकृष्ट उपाधि करिकै मलिनसत्वप्रधान जो चैतन्य है सो अल्पज्ञ अनीश्वर प्राज्ञहै याकेहू आनंदमय कोश सुषोप्ति है अरु सुषोप्तिकालमों चैतन्य करिकै प्रकाशित जो अतिसूक्ष्म अज्ञानवृत्ति ना

करिकै ईश्वर अरु प्राज्ञ ए दोऊ आनंदका अनुभव करत हैं जैसे बनका वृक्षका अभेद तैसे समष्टि व्यष्टि को अभेद है अरु जैसे बनके आकाश को अरु वृक्षके आकाशको अभेद है तैसे समष्टि उपाधि विशिष्ट ईश्वर को अरु व्यष्टि उपाधि वसिष्ट प्राज्ञको अभेद है अज्ञान अरु अज्ञानोपाधि विशिष्ट चैतन्य ए दोऊका आधार जो उपाधि रहित चैतन्य सो तुरिय है अज्ञानकी द्वै शक्ति हैं एक आवरण दूसरी विक्षेप जैसे अल्प मेघ सूर्य मंडलको आवरण करत है तैसेई अज्ञान आत्माको आवरण शक्ति विशिष्ट जो आत्मा है वाको कर्तृत्व भोक्तृत्व सुखदुःखादि संसारका संभव है जैसे अपने अज्ञानतें ढांपी जो रस्सी है वामें सर्पको संभव है १ अरु जैसे रस्सीको अज्ञान अज्ञानसों ढांपी जो रस्सी है वामें विक्षेप शक्तिनें सर्पका उत्पादक है जैसेई अज्ञान अज्ञानतें ढांपे आत्मामों विक्षेप शक्तितें आकाशादि प्रपंचको उत्पादक है २ अरु तमः प्रधान जो विक्षेप शक्ति विशिष्ट अज्ञान तद्विशिष्ट जो चैतन्य तातें आकाश उत्पन्न होत है आकाशतें बायु बायुतें अग्नि अग्नितें जल जलतें पृथ्वी ३ इहीं आकाशादि सूक्ष्म भूतनतें पंचमहाभूत और सूक्ष्म शरीरकी उत्पत्ति है सूक्ष्म शरीर जो है सोई लिंगशरीर यामें सतरह १७ अवयव रहत हैं पांच ज्ञानेंद्रिय ५ पांच कर्मेंद्रिय ५ पंचप्राणदि बुद्धि १६ मन १७ निश्चयात्मक अंतःकरणकी जो वृत्ति सो बुद्धि है संकलपात्मक जो अंतःकरणकी वृत्ति सो मन है चित्तको बुद्धिमें अंतर्भाव है अहंकारको मनमें अंतर्भाव है १ बुद्धि अरु मन आकाशादिकोंके मिलित सात्विक अंशतें उत्पन्न हैं ई जो बुद्धि है सो ज्ञानेंद्रियके संयुत विज्ञानमय कोश होत है २ अरु विज्ञानमय कोश जो है सो कर्तृत्व भोक्तृत्व का अभिमानी है यह लोक परलोकगामी है सो व्यवहारमें जीव कहावत है अरु मन ज्ञानेंद्रियके सहित मनोमय कोश होत है ३ अरु प्राण बायु पांच हैं प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ हृदयको बायु प्राण गुदाको अपान सब शरीरको व्यान कंठको उदान नाभिको समान पांचो प्राण कर्मेंद्रिय सहित प्राणमय कोश होत है ४ आनंदमय कोशमें ज्ञान अरु कर्तृत्व है मनोमय कोशमें इच्छा अरु कर्णत्व है प्राणमय कोशमें क्रिया अरु कर्मत्व है ई

तीनोंको सूक्ष्मरूप कहावत है सूक्ष्मरूपसमूहमें एकबुद्धि बिषयत्व करिकै वनसादृश्यसमष्टि है अरु सब सूक्ष्मशरीरमें अनेकबुद्धिबिषयत्व करिकै व्यष्टि है अरु समष्टिउपाधिबिसिष्ट जो चैतन्य है सो सूत्रात्मा अरु हिरण्यगर्भ कहावतु है तहांज्ञान १ इच्छा २ क्रिया ३ ई तीनोंशक्ति है विज्ञानमयादि कोश तीन जो हैं सो जाग्रत अवस्थाके वासनातें स्वप्न है स्वप्नकालमें सूत्रात्मा जो है सो मनके वृत्तितें सूक्ष्म विषयको अनुभव करत है आकाशमें शब्द वायुमें शब्दस्पर्श तेजमें शब्दस्पर्शरूप जलमें शब्दस्पर्शरूपरस पृथ्वीमें शब्दस्पर्शरूपरसगंध हैं अरु पंचभूततें भूर्लोक १ भुव २ स्वर ३ महर ३ जन ४ तप ६ सत्य ई सातलोक ऊपरके उत्पन्न होत हैं अरु अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ ई सातलोक नीचेके उत्पन्न होत हैं एतत्समूहोपाधिबिसिष्ट चैतन्य बिराट है अरु स्थूलशरीर जो है सो अन्नको बिकार है यातें अन्नमें कोश है सो स्थूलभोगतें जाग्रत है स्थूलदेहको जो अनेक उपाधि तद्बिसिष्ट जो चैतन्य सो बिश्व है अरु अज्ञानबिसिष्ट जो चैतन्य सो जीव है ज्ञानबिसिष्ट चैतन्य ईश्वर है भागत्यागलक्षणातें अज्ञानका त्याग करो अरु ईश्वरलक्षणमेंते ज्ञानको त्याग करो तो शेष चैतन्य एक है ब्रह्म सत्य है और सब मिथ्या है ऐसी दृष्ट समुझतें जीव है सो ब्रह्म है। इति शास्त्र॥ अथ वेद ॥ सो वेद अनादि सर्व पुराण शास्त्र संहितादि औ यावत व्यवहार परिमाणको मूल है अरु सब आस्तिकसंमत अपौरुषेय अगाध आशय अनंत है तेहि हेतु कछु संक्षेपसे लिखा वेदके भेद चार ऋग्वेद १ यजुर्वेद २ सामवेद ३ अथर्वणवेद ४ ऋग्वेदकी मुख्य शाखा आठ सो साकल १ बाष्कल २ ऐतरेय ३ ब्राह्मणारण्य ४ सांख्यायन ५ मांडूक ६ कौषीतकीय ७ आरण्यक ८ औ आठ स्थान हैं चर्चा १ श्रावक २ चर्चक ३ अश्रवणीयपार ४ क्रमपार ५ क्रमपद ६ क्रमजटा ७ क्रमदंड ८ आठ स्थानका क्रमसें अर्थ चर्चा कहिये अध्ययन १ अध्ययन सुनावै सो गुरु श्रावक २ चर्चक कहिये शिष्य ३ वेदकी समाप्ति सो अश्रवणीयपार ४ क्रमपार संज्ञा कहिये संहिता ५ संहिताका पदच्छेद जो पदनामसें ख्यान सो क्रमपद ६ संहिता की जटा सो क्रम

जटा १ संहिताका दंड सो क्रमदंड ८ क्रम पारादि चार स्थानके चार पारायण हैं १०५८० ऋचाका एक पारायण होत है संहिताका १ औ पदका २ ई दुइ प्रणाली पारायण जटाका १ औ दंडका २ ई दुई विकृति पारायण विकृति नव हैं ९ क्रम १ जटा २ माला ३ शिखा ४ लेखा ५ ध्वज ६ दंड ७ रथ ८ घन ९ इनके लक्षण संहिताके पदनको अनुलोम विलोम पढना सो क्रम १ दुइ पदको वा तीन पदको आदि औ अंतमों अनुलोम अरु मध्यमों संधि सहित विलोम पढना सो जटा २ जटा कहिये उसके आगेके पदको एकबार उच्चारन कर तीन पद ससंधिक विलोम पढके पुनः अंतमों तीनों पद अनुलोम पढना सो घन ३ इत्यादि ॥ ऋग्वेदके अध्याय ६४ मंडल १० मंडल कहिये खंड बर्ग २००६ सूक्त १०१७ पद १५३१९२ इति ऋग्वेद ❁

अथ यजुर्वेद । यजुर्वेदकी शाखा ८६ वे चरक १ आह्वारक २ कठ ३ प्राच्यकठ ४ कापिष्ठलकठ ५ आसपणीय ६ वासपणीय ७ वार्तान्तरेय ८ श्वेत ९ श्वेततर १० औपमन्यव ११ मैत्रायणीय १२ कासव १३ माध्यंदिनीय १४ इत्यादि मैत्रायणीय शाखाके भेद ७ मानव १ दुंदुभेय २ चैकेय ३ वाराह ४ हारिद्रवेय ५ श्यामा ६ श्यामायनीय ७ ॥ वाजसनेय शाखाके भेद १७ काण्व १ माध्यंदिनीय २ शापीय ३ स्थापायनीय ४ कापिल ५ पौंड्र ६ कात्यायनीय ७ इत्यादि ॥ वाजसनेय शाखाके मंत्र ॥ १९०० याहीको शुक्लयजु औ कृष्णयजु कहत हैं मंत्रसे चौगुन ब्राह्मण भाग है ॥ तैत्तरेय शाखाके भेद २ ॥ औख्य १ कांडिकेय २ कांडिकेयके भेद ५ ॥ आपस्तंबी १ बौधायनी २ सत्याषाढी ३ हिरण्यकेशी ४ औधेयी ५ तैत्तरेय शाखाके कांड ७ प्रश्न ४४ अनुवाक ६५१ पनाशी २१९८ पद १९२९० अक्षर २५३८६८ ब्राह्मण विषे वाक्यकी संख्या १९४८० अध्याय ४४ यह तैत्तरेय संख्या है एही रीतिसे और सब का भेद भाष्यसे जाने ॥ इति यजुर्वेदः २ ॥

अथ सामवेद ॥ सामवेदकी शाखा १००० देशकाल कलह आदि निमित्तसें बहुत शाखा लोपसी है गयीं जो बचीं सो कहत हैं आसुरायणीय १ वासुरायणीय २ वार्तान्तरीय ३ प्रांजल ४ ऋग्वैनविधि ५ प्राचीनयोग्य ६ ज्ञानायणीय ७ इत्यादि राणायर

नीयशाखाकेनवभेदराणायणीय १ शाट्यायनीय २ शात्यमुग्ल ३ खल्वल ४ महाखल्वल ५ लांगल ६ कौथुम ७ गौतम ८ जैमिनीय ९ इन्हसोरहशाखामों तीनशाखाविख्यातहैं सो प्रसिद्धनहीं हैं गुजरातदेशमों कौथुमी शाखाप्रसिद्धहैं १ कर्नाटकदेशमों जैमिनीशा॰ प्र॰ २ महाराष्ट्रदेशमों राणायनीयशा॰ प्र॰ ३ कौथुमी शाखाके भेद ६। कौथुम १ आसुरायण २ बातायन ३ प्रांजलि ४ प्राचीनयोग्य ५ नैगमनीय ६ इति ॥ आग्नेयमंत्र १८० पावमानमंत्र १०४ ऐंद्रमंत्र ६ आषसुपर्णप्रैत्यशाखासहित बालखिल्यशाखाभेद ९० आरण्यक उपनिषदसहितओसुपर्णप्रैत्य अरु बालखिल्यसहित सर्वसूक्तकेभेद ९५०० ई सबसाम समूहकेहैं सामके आचार्य १३ इति सामबेद ॥ ३ ॥ अथअथर्वनबेद ॥ अथर्वनकेशाखानवहैं पैप्पल १ सांत २ प्रदांत ३ स्तौत ४ औत ५ ब्रह्मदा ६ शौनकी ७ देवदर्शी ८ चरणबिघ ९ सबशाखाकेमंत्र १२००० कल्पपांचहैं नक्षत्रकल्प १ बिधानकल्प २ संहिताबिधिकल्प ३ अभिचारकल्प ४ शांतिकल्प ५ इति अथर्वन। ४। कर्म उपासना २ ज्ञान ३ तीनकों बेद प्रतिपादन करतहै एहीसेबेदत्रिकांड। बिधिऔनिषेध भागतें मुख्यफलमोक्ष अरु अवांतरफल स्वर्गादिसुखकहतहैं। बेदध्यान पांचवीताका अरुन शरीर कमलनेत्र ऋग्बेद १ चारहाथका दीरघ ताम्ररंग शरीर दूबरकनकनेत्र कपालीयजुर्बेद २ मालादंडधारी शांतदांत पवित्र बसन रविसमलोचन पांचहाथ शरीर सामबेद ३ तीछन सुभाव कामी क्रोधी जगतप्रिय सातहाथकातनु अथर्बन ४ ऋग्बेदका अत्रिगोत्र ब्रह्मादेवता गायत्रीछंद: १ यजुभारद्वाजगोत्र महादेवदेवता त्रिष्टुप्छंद: २ सामका काश्यपगोत्र बिष्णुदेवता जगती छंद: ३ अथर्बनका बैतायन गोत्र इंद्रदेवता अनुष्टुप्छंद: ४ चारोंबेदकेअंग ६॥ शिक्षा १ गृह्यसूत्र २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ छंदशास्त्र ५ ज्योतिष ६ चारबेदके चार उपबेद। ऋग्बेदका आयुर्बेद उपबेद सो चिकित्साशास्त्र १ यजुर्वेदका धनुर्बेद उ॰ सो युद्धशास्त्र २ सामबेदका गांधर्वउपबेद उ॰

सोसांगीतशास्त्र २ अथर्वनका अर्थशास्त्र ३ सोसिल्पशास्त्रसहित नीतिशास्त्र ४ इतिनिगमसंक्षेपः॥ ॥अथतंत्रशास्त्र। याकेकर्तामहादेव अनेक छंद देवतासहित मंत्रयंत्रादि शब्दार्थसृष्टियामें प्रतिपाद्यविषयहै धर्म १ अर्थ २ काम ३ मोक्ष ४ प्रयोजनहैं फलकामनायुत याकोअधिकारीहै शिवके निर्गुण औसगुण स्वरूपज्ञानतें मोक्षहोतुहैं प्रकृतिसेंपरेसोनिर्गुण १ प्रकृतियुतसगुण २ सृष्टिदुइहैं अकार उकार मकार नाद बिंदु ईशब्दसृष्टि १ रुद्रादिअनेक देवता औरचराचर जगत ई अर्थसृष्टि २ याकोक्रम परब्रह्मतें शक्तिभई शक्तितेंनाद २ नादतेंबिंदु ३ शिवशक्तितें सूक्ष्मशब्द होतहै एहीकोशब्दब्रह्म कहतहैं पराशक्तिहीशरीरमों कुंडलनी नाड़ीरूपसों शब्दब्रह्मरूपहोयकैपरा १ पश्यंती २ मध्यमा ३ वैखरी ४ चारविधिबाणी होतहै अकारादिशकारांत पचासबर्णकुंडलनी रूप पराशक्तितें ही होतुहैं शिवशक्तितें महतत्व १ महत्तत्वतें अहंकार २ अहंकारतीनिबिधि सात्विकआदिभेदतें सात्विकअहंकारतें दशइंद्रियनके दशदेवता वे दिशा १ पवन २ सूर्य ३ बरुन ४ आदिराजसअहंकारतें दशइंद्रिय १० तामसअहंकारतें तन्मात्राद्वारा पंचमहाभूत शब्दतें आकाश १ स्पर्शतें बायु २ रूपतें तेज ३ रसतें जल ४ गंधतें पृथ्वी ५ आकाशस्वच्छरूप १ बायुश्याम २ तेजलाल जलशुक्ल ४ पृथ्वीपीत ५ पांचभूतनके पांचमंडलहैं षट्बिंदुयुतगोल मंडल आकाशको १ बायुकात्रिकोणस्वस्तिकेचिह्नयुत २ अग्निका अर्द्धचंद्राकार ३ जलकाकमलके आकार ४ पृथ्वीकाबज्रचिह्नयुतचौरस ५ पंचभूतनकी पंचकला निवृत्ति १ प्रतिष्ठा २ विद्या ३ शांति ४ शांत्यतीता ५ चराचरजगत पांचभूतरूपहै अचरपर्वतवृक्षादिभेदसों अनेकबिधि १ चरतीनभेदकोकृमिकीटादि स्वेदज १ सर्पपक्षीआदिअंडज २ मनुष्यादिजरायुज ३ मातृकाके अक्षरनतें सब मंत्रनकी उत्पत्ति मंत्र बिबिधपुरुष १ स्त्री २ नपुंसक ३ पुनः मंत्रकेचारभेद ४ सिद्ध १ साध्य २ सुसिद्ध ३ अरि ४ मंत्रनकेदोष ५४ छिन्न १ रुद्ध २ शक्तिहीन ३ पराङ्मुख ४ बधिर ५ नेत्रहीन आदिदोषयुतमंत्रतें फलनाहींहोत मंत्रनके संस्का

१० जनन १जीवन२ताडन३शोधन४अभिषेक५ विमलीकरण६आप्यायन७तर्पन८दीपन९गुप्ति१०मातृकासेमंत्रकाउद्धारसोजनन १ प्रणवयुतजपसोजीवन२ मंत्राक्षर लिख चंदनजलसे मारिप्रअक्षर छिरकनोसोताडन३ इत्यादि ६ इस संस्कारसे अवश्य मंत्रसिद्ध होतुहै कूर्म चक्रतें सिद्ध औ साध्यादि भेद बिचारकरनो मंत्रजपके स्थान तीर्थ नदी तीर पवित्र बन देवता मंदिर आदि। गुरुलच्छन कुलीन सर्बागम शास्त्रको तत्व जानै जितेंद्रिय सत्यवादी आदि। शिष्यलच्छन कुलीन शुद्ध मन पुरुषार्थयुत बेदपठित जितेंद्रिय आदि। तंत्रशास्त्रमों दीक्षाको ग्रहण मुख्य इष्टदेवताका गुरुसे मंत्रोपदेश सो दीक्षा। पापनाशकरि दिव्यज्ञान देतहै यातें दीक्षानाम भयो याके भेद ४ चार क्रियामयी१ वर्णमयी २ कलामई ३ वेधमई ४ चारोंके कर्ता गुरु नित्यकर्म कुंड मंडपादि करनो क्रियामई १ शिष्यदेहमों वर्णादिन्यास २ निवृत्यादि पांचकलाकों तेहि ३ अंगनमों योजनकरी· ३ शिष्यशरीरमों चेतनशक्तिका व्यापक ध्यानसो वेधमयी दी· ४ अध्वाषट्हैं कलाध्वा १ तत्वाध्वा २ भुवनाध्वा ३ वर्णाध्वा ४ पदाध्वा ५ मंत्राध्वा ६ अध्वा कहिये रास्ता गुरुको ई षट् अध्वाका सोधन उचित है देवता पूजाका सात वा पांच आवरण हैं एही सब रास्तासें जीवको मोक्ष होतहै ॥ इति तंत्रशास्त्रसंक्षेपः॥

॥ इति मानसदीपिकायां पुराणादिशास्त्रनिगमागमवर्णने द्वितीयः प्रकाशः २

अथ काव्य अंग ॥ या रामायणमों श्रीगोसाईंजी तावत काव्यके अंग धरे हैं अरु बिना काव्य जाने बहुतजन बहुत ठौर शंका करतु हैं तातें लक्षण और और काव्यके ग्रंथनके अरु उदाहरण या रामायणके सरल रीतिसे लिखे जाते हैं ॥ अथ काव्य लक्षण ॥ शब्द अर्थ सुंदर गुणयुत दोषरहित अथ काव्य प्रयोजन जस संपत्ति आनंद दारिद्र्यनाश चातुरता संसार अरु रामबस होवो अथ काव्यको कारण चित्त याके कारण तीन शक्ति १ बितपत्ति २ अभ्यास ३ शक्ति स्वरूपा यथा जेहि पर कृपा करहिं जन जानी कवि उर अजिर नचावहिं बानी १ बित्पत्ति पठन यथा गुरु गृह गए पढन रघुराई २ अभ्यास करे सिद्ध होय २ यथा उलटा नाम जपत जग ना। सो काव्य ३ भांति उत्तम १ मध्यम २ अधम ३ अथ उत्तम जीवं व्यंग प्रधान ॥

यथा नीकरीन हरि सुंदरताई १ टी· नीककौ बुरो समझनो लक्षणा तातें नारदको अनुचित व्यंग अथ मध्यम व्यंग बच्य बराबर यथा कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा २ टी· इनकौ तेज देखाय रामको तेज सूचित कर संदेह दूर होवो व्यंग अथ अधम जामों व्यंग नहीं सो द्वै भांति एक शब्द चित्र यथा मारु मारु धरु धरु धरु मारू १ दूसरो अर्थ चित्र यथा नीलसरोरुह नील मनि नील नीरधर श्याम टी· उपमातें चमत्कार अर्थ है। अथ शब्द अर्थ निर्णय सुनाय सो शब्द बुझाय सो अर्थ सो शब्द द्वै भांति धुन्यात्मक बाजातें १ वर्णात्मक सुरवतें २ सो तीन भांति बाचक १ लछक २ व्यंजक ३ अरु अपरस्याव चारि भांति प्रभुसंमित बेदादि १ मित्रसम्मित स्मृत्यादि २ कांतासम्मित पुराणादि सर्बोपकारक आगम ४ अथ बाचक जो सुनतहीं जानै यथा जल तें पानी को बोध सो चारि भांति जाति १ देवादि इच्छा २ भैया आदि गुन ३ श्यामादि क्रिया ४ खरारि आदि अथ लछक सूधे शब्द मों रहै भाव यथा धिक धर्मध्वज धंधक धोरी टी· है ऊंचो पैनी को बोध कहै। अथ व्यंजक अधिक अर्थ बोधतें यथा मोर मनोरथ जानहु नीके बसहु सदा उर पुर सब ही के टी· उर पुरतें सब के हृदय मों हमारी ऐसी भक्ति रहै। अथ अभिधा लक्षण बहुन अर्थ के शब्द मों योगादिकनतें एक अर्थ प्रतीति होय यथा काकपक्ष शिरतें जुलुफ माधवको अरु भालतिलकतें ललाटको अथ लक्षना लक्षन मुख्यार्थ त्यागि और अर्थ करै सो द्वै प्रकार एक निरूढी ध्वनिरहित यथा राम गवन मंडपतब कीन्हा टी· मंडपरूढि अथ योगरूढि यथा पंकज कोक लोक सुखदाता टी· पंकज योगरूढि है अथ जौगिक यथा जापक जन प्रह्लाद जिमि पाल हि दलसुर साल जापक जौगिक लक्षना निरूढि रूढै मों होत है अथ दूजै प्रयोजनवतीया में धुनि होय यथा व्याकुल नगर देखि तब आयेउ बालि कुमार टी· नगरतें नगरबासी सो प्रयोजनवती छ प्रकार की प्रथम उपादान परगुन लीन्हे यथा नब चले बान कराल टी· चलावनहार को गुन लीन्हो। अथ लछित २ जिन लक्षन और देइ यथा बीच बास करि जमुनहिं आए टी· जमुनातें यमुनातट अथ सारोपा और पापिये और को यथा चिंता

सांपिनिकोनाहिंखाया टी॰ चिंताकोसांपिनिमें आरोप अथसाध्यवसाना ४ उपमानतेंउपमेयकाबोध यथा मुकुरमलिनअरुनयनबिहीना ॥ टी॰ मुकुरमननयनज्ञानबैराग्य अथगौनीसारोपा ५ गुनलखिआरोपतें यथा रामचंद्रमुखचंद्रछबिलोचनचारुचकोर टी॰ मुखचंद्रकेआरोपतें सारोपा अरु चंद्रमाके प्रकाशत्वगुनतें गौनी अथगौनीसाध्यवसाना ६ केवलउपमान यथा अरुनपरागजलजभरिनीके टी॰ अरुनपराग सिंदूरजलजहाथ अथव्यंजना जोशब्दअर्थतें अधिकअर्थव्यंगमें सोद्वैभांति कीशाब्दी १ आर्थीसोशाब्दी २ अभिधामूल ३ लक्षनामूल २ अथअभिधामूलव्यंग बहुतअर्थकेशब्दमों एककी प्रतीति सो संयोग १ बियोग २ प्रसंग ३ बिरोध ४ देश ५ समयइत्यादितें अरुलच्छनाको फल लच्छना मूलव्यंगमों अथसंयोगतें यथा जनकपाटमहिषीजगजानी टी॰ महिषीअनेकार्थजनकअयोगतेंरानी १ बियोगतें यथा कहेउरामबियोगतबसीता टी॰ सीताअनेकार्थरामबियोगतेंजानकी २ प्रसंगतें यथा हरिहितसहितरामजबजोहे टी॰ हरिअनेकार्थप्रसंगतें बाजी ३ बिरोधतें यथा मत्तनागतमकुंभबिदारी शशिकेशरीगगनबनचारी टी॰ सिंहबिरोधतेंहाथी ४ देशतें यथा जीवनमुक्तिहेतुजनुकाशी टी॰ मुक्तिअनेकार्थकाशीदेशतेंमोक्ष ५ समयतें यथा चकईसांझसमयजनुमोही टी॰ चकईअनेकसांझसमैतें चकवाकी ६ साहचर्यतें यथा एहिबिधिआइबिलोकीबेनी सुमिरतसकलसुमंगलदैनी टी॰ बेनीअनेकार्थसुमिरतमंगलदेनीसाहचर्यतेंतीरथबेनी ७ उचिततें यथा घनपयस्रवहिंनयनजलछाये टी॰ पयअनेकार्थघनउचिततेंदूध ८ सामर्थतें यथा तनमहंप्रबिसिनिसिरसरजाहीं टी॰ अनेकार्थप्रबिसनिसिरसामर्थतेंबान ९ चिह्नतें यथा कामकुसुमधनुसायकलीन्हे टी॰ कामअनेकार्थकुसुमधनुचिह्नतेंमन्मथ १० अथलच्छनामूलद्वैभांति एकछिप्योगूढव्यंगयथा तुमरहिंभागरामबनजाहीं टी॰ तुम्हरेपरतेंगौरहिद्भुजनाकोसुखस्वार्थबाधशेषमों लच्छनाभारउतारवो व्यंगगूढ दूसरो अगढ़व्यंगयथा रघुबंशिनकरसहजसुभाऊ टी॰ रघुबंशिनकीबड़ाई प्रगटहैव्यंगहैयातें अगूढ अथतीनोंशब्दनेव्यंगबाचकतें यथा बरअनुहारबरातनभाई

टी॰ बरकीकुरूपता बरानिनकी सुंदरताव्यंग १ लच्छकते यथा कहुँअंग
द सलज्जमनमाहीं टी॰ सलज्जतें निर्लज्जताव्यंग २ व्यंजकते यथा सेव
ततोंहिसुलभफलचारी टी॰ देवीकी स्तुतिमें कृपाकराइवो व्यंग आप
नो कारजसाधनो दूजोव्यंग इतिशाब्दी अथ अर्थव्यंजक व्यंजकते जो अर्थ
अधिक होइताको भेद बक्ता बोधव्यादिबक्ता यथा कतसिखदेहु हमहिं
कोईमाई टी॰ बक्ता मंथराबचनतें रामराजनाशकरिवो क्रिया छपावति
है बोधव्यतें यथा पुनिआउब यहि बेरिआँ काली टी॰ आउबजानकी पय
बोधव्यव्यंग है काकु यथा बालमरालकि मंदिर लेही टी॰ काकु प्रगटे है
अरु बाक्यबसिष्ठ प्रस्तावबसिष्ठ अन्यसन्निधि देश समय चेष्टा इत्यादि
बहुत हैं इति व्यंग अथ ध्वनि मूललच्छना मूढव्यंग प्रधान होय सो ध्वनि है
द्वैभांति अबीबच्छत १ बिबाच्छित २ अथ अबिबच्छत करुवैया न चाहै
आपुहितें ध्वनि होय यथा कहहिं सुसेवक बारहिबारा। अरु सबसे
वकगनगरहिं गलानी टी॰ गलानि अबिबच्छत बाक्य है। अबिबच्छ
त मों भेद द्वै एक अर्थांतर संक्रमत बाच्य ध्वनि जो अर्थ औरसें मिलके रहै
यथा जनुजुगजामिक प्रजाप्रानके टी॰ एक प्रजाप्राण भरत दूजो रकार
मकार दूजो अत्यंत तिरस्कृत बाच्य ध्वनि व्यंग की अधिकाई कहिवेको
बाचक अपनो अर्थ छोड्यो यथा कुंदकली दाड़िम दामिनि। इन्होंसे अरु
हर्षसकल पाइ जनुराजू टी॰ हरषकैवो असंभव बाचकने अपनो अर्थ
छोड्यो अरु तिहारे बैरिनको हर्ष हमतें नाहीं सह्यो जातु यह ध्वनि इति
लच्छनामूल ध्वनि अथ अभिधायमूल ध्वनि विवच्छितजामें इच्छित
अर्थ ध्वनित होय यथा बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू बिबच्छत मों भेद
द्वै असंलच्छक्रम १ संलच्छक्रम २ असंलच्छ ध्वनिमें रसभावा
दिक अनेक प्रकार अरु संलच्छ मों भेद तीन शब्दशक्ति १ अर्थशक्ति २
शब्दार्थशक्ति ३ यथा इहां कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं जो तरजनी देखि
मरिजाहीं टी॰ इहां व्यंग सब बिना सहाय जानो जातु है अरु क्रम नाहीं
यातें असंलच्छक्रम अरु अलंकार जहाँ और परम घाम होय अरु रस
मुख्य होइ तो रसवत अलंकार और जहाँ भाव अंग होइ मुख्य और होय तहाँ

षित अलंकार अरु जहां भाव अंग होय मुख्य और होय तहां उर्जस अलंकार अरु जहां भाव सांतिकादिक अंग होय मुख्य और होय तहां समाहित अलंकार रसन कहिये जाने रस ध्वनि है ए गुनी भूत व्यंग है सो मध्यम के प्रसंग मों उदाहरन कहैंगे अब रस को स्वरूप कहत हैं रस को मूल भाव है तातें प्रथमहि भाव को लच्छन कहियतु है भाव सबतें बड़ो है बासना रूप जानिये सो चार प्रकार बिभाव १ अनुभाव २ संचारी ३ अस्थाई ४ प्रस भावभेद सों सात्विक भाव जो है सो अनुभाव ही मों गनिए अथ बिभाव लछन जातें अस्थाई भाव होइ सो बिभाव १ अथ अनुभाव लक्षण थिर भाव को प्रगटै जो सो अनुभाव अरु संचारी ले सब रस में संचरै सो बिभाव द्वै भांति आलंबन १ जो थिर भाव को स्थान यथा सीतहिं पहिराए प्रभु सादर। दूसरो उद्दीपन सुधि आएतें लखे सो द्वै भांति देवी यथा नव पल्लव फल सुमन सुहाए मानुषी २ यथा पट उरलाइ सोच अति कीन्हा यथा बोलवो देखवो टेढो अरु सात्विक भाव जे नो है अरु अलिंगन चुंबन इत्यादि यथा भाषे लषन कुटिल भै भौंहैं रदपट फरकत नयन रिसौहैं अरु सात्विक प्रकार ८ आठ अस्तंभ १ यथा रहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी स्वेद २ यथा श्रम बिंदु सुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी रोमांच ३ यथा स्यामल गात रोम भये ठाढे स्वरभंग ४ यथा पुलकित तनु मुख आवन बचना कंप ५ यथा थर थर कांपहि पुर नर नारी बिबरन औस्त भये भूप धनु टूटे ६ अश्रु ७ तासु दशा देखी सखिन्ह पुलक गात जल नैन भले ८ व्याकुल राउ सिथिल सब गाता केचित मत जंभा यथा लरिका श्रमित उनीद बस सयन करावहु जाइ अथ संचारी भाव ३३ निर्वेद १ यथा सब परिहर रघुबीरहिं भजो भजहिं जेहि संत ग्लानि २ भई ग्लानि मेरे सुन नाही संका ३ शिवहिं बिलोकि ससंकेउ मारू असूया ४ जिन्हहिं सोहाइन अवध बधावा ५ जग जोधा को मोहि समाना श्रम ६ द्वंद जुद्ध देखहु सकल श्रमित भये अति बीर आलस ७ रघुबर जाइ सयन तब कीन्हा दीनता ८ आपनि दारुन दीनता कहेउ सबहि सिर नाइ चिंता ९ चिंता कवन कहु बात करनात करिय जनि मोर मोह पुन अति बिकल मोह—

मतिनाठीस्मृति ११ सुधिनतातसीताकैपाई धृति १२ सबप्रकारप्रभु
पूरणकामा लाज १३ गुरुजनलाजसमाजबड़िदेखसीयसकुचानि आवेग
१४ कादेखायचहकायदेखावा चपलता १५ मंदिरनेमंदिरहादिधाई
जड़ता १६ मुनिमग मांझअचलहोइबैसा हर्ष १७ जानिगौरिअनुकूल
सियहियहर्षनजाइकहिगर्म १८ भुजबलभूमिभूपबिनुकीन्ही बि
षाद १९ रामरामरटबिकलभुआलू निद्रा २० नेइसीयरामसाथरीसो
ए।अमर्ष २१ कंदुकइवब्रह्मांडउठावौ औत्सुक्य २२ बेगचलियेप्रभु
आनियेभुजबलखलदलजीति अपस्मार २३ गईमूर्छा रामहिंसुमिर
नृपफिरकरवटलीन्ह स्वप्न २४ दिनप्रतिदेखहुंराजकुसपने बोध २५
बिगतनिसारघुनायकजागे उग्रता २६ जिनहुसुरासुरनबअमनाहीं नरवान
रकेहिलेखमाहीं प्रानमगनतामरन २७ रामबिरहसागरमहँभरतमगनमन
होत स्यान २८ उपजाज्ञानबचननबबोला व्याधि २९ देखीव्याधिअसाधि
नृप अवहित्था   लाजर्ते हर्षशोकछिपे ३० ननसकोचमनपरमउछा
ह गूढप्रेमलखिपरइनकाहू उन्माद ३१ लछमनसमुझायेबहुभांती
पूछतचलेलतातरूपांती त्रास ३२ भानिरासउपजीमनत्रासा तर्क ३३
लंकानिसिचरनिकरनिवासा इहांकहांसज्जनकरबासा इतिसंचारी ॥
अथस्थाईलछन।स्थाईभावबड़ोहै अरुरसस्वरूपकोहेतुहै रति १।
हांसी २ सोक ३ क्रोध ४ उत्साह ५ भय ६ ग्लानि ७ आचर्य ८ अरु अनु
भावबिभावसंचारीएसबजबथाईभावके अर्थअनुकूल होंइगे तहांपूर
नतारसकीजानीजातुहै।अरु शृंगार १ हास्य २ करुना ३ रौद्र ४ बीर ५ भया
नक ६ बिभत्स ७ अद्भुत ८ इतिनाटकमते नवमसांतिरस ९ कोउकवि
मानतहैं तहांथाई निर्बेद अथ प्रथम शृंगाररसकोदेवताकृष्ण अरु बर
नहूकृष्णहैसोदेवनमों श्रेष्ठयातें यहरसनमों एजोहै अरुसकल बिभ
चारियामों चरितार्थ होतुहैं सोशृंगार द्वैप्रकार एकसंयोग यथा सीतहि
पहिरायेप्रभुसादर अरु दूसरो बियोगसो पांच प्रकार पूर्बानुराग १ यथा
एककहहिंनृपसुतनेआली इहांलेरसलागिलोचनअकुलाने इहीं
नकप्रवास २ कोमलचितकृपालरघुराई अरु अरु हनाथमोहिनिपट बि

सारीइहांनकबिरह ३ यथा दुसहबिरहअबनाहिंसहिजाई असूया४
यथा शिवसंकल्पकीन्हमनमाहीं स्वाप ५ गौतमनारीशापबस उपल
देहधरिधीर जहांमिलैबेकीआस सोबियोगशृंगार अरुजहांनमिलवे
कीसोकरुना अरुकहूंबिभावना संचारीभावन्यारेहूंरसप्रगटतुहैं परंतु
पूरनता बिलमोंहै अथबिभावकोरस यथा दादुरधुनिचहुंदिशासोहाई इहांलौनवपल्लवभयबिटपअनेका इहांतक अथअनुभावकोरस यथा
माषेलषनकुटिलभईभौंहैं संचारीहौलिखोपूर्वहै भ्रममूर्छा इत्यादि
अथहाँसरस २ जहांअजोगकोजोग उलटोकाम अरुबुरोदेषिबो अरु
स्वर बाजा ऊंचोनीचो होवो हास्यकेहेतु होतहै प्रमथदेवता श्वेतरंग
यथा शिवसमाजजबदेखनलागे बिडरिचलेबाहनसबभागे अथ
करुनारस ३ मित्रकोदुखमृतकआपभाई अंधोदारिद्रीरोदन कंपरो
म षडो अनुभाव मोहमूर्छादीनता संचारी सोकाव्यंग होइतबकरुना रसयम
देवताकपोतरंग यथा मुखसुखाहिंलोचनस्रवहिंसोकनहृदैसमाहिं मनहुं
करुनरसकटकईउतरीअवधबजाइ अथरौद्ररस ४ गर्बतेंबोलिबो शत्रु
हथियारकाढिबोदेष क्रोधहोवो एबिभाव टेढोभौंहै आखैंलाल होठ
फरकबो ए अनुभावगर्भचपलता इत्यादिसंचारी रुद्रदेवता अरुनरंग
यथा जोशतशंकरकरहिंसहाई तदपिहतवरघुबीरदोहाई ठ॰ इहां
इन्द्रजीत बिभावभुजादिफरकनअनुभावगर्भसंचारीक्रोधथाई तातें
रौद्रअथबीररस ५ थाईउत्साहसोचारप्रकार युद्ध १ दान २ दया ३ धर्म ४
शत्रुकोबल समर एबिभाव अरुजोउग्रजीवहैं बचनउग्रबदनलाल अंग
प्रफुल्लित अनुभाव गर्भउग्रता असूया संचारी इंद्रदेवता पीतरंग समन
कीसुधिलौबीर समसुधभूलेतेंरौद्र इनमेंभेद इतनो यथा युद्धबीर
एतनाकहतनीतिरसभूला रनरसबिटपपुलकमिसफूला दानबीरजो
संपतिशिवरावनहिंदीन्हदियेदशमाथ सोइसंपदाबिभीषनहिंसकुच
दीन्हरघुनाथ दयाबीर औरकोदुखदेखिबौ बिभाववाकोदूरकरिबो
अनुभाव गर्भधीरज संचारी यथा सुनिसेवकदुखदीनदयाला फरकिं
उठीद्वौभुजाबिशाला धर्मबीर यथा शिवदधीचिबलिजोकछुभाषा

तनधनतजेउबचनपनराषा अथभयानकरस ६ भयबिभावकंपरोमांच प्रस्वेद अनुभाव मोहमूर्छादीनता संचारीभाव बिष्णुदेवता श्वेतरंग यथा डरपेगीधबचनसुनिकाना अथबिभत्सरस ७ ग्लानिबिभाव निषिद्धवर्जकोदेषिबो अनुभाव निंदाकरिबोरोमकंपदुःखअस्यासंचारी महाकालदेवता नीलरंग यथा मज्जहिंभूतपिशाचबेताला अरु जंतुबनसीखेलहिंचितरथे दुहांतक अथअद्भुतरस ८ आश्चर्यदेषि अनहोनीबिभाव बचनकंपरोमांचअनुभाव हर्षउरमोहसंचारीब्रह्मदेवता पीतरंग यथा देषरावामातहिनिजअद्भुतरूपअखंडरोमरोमप्रतिलागेकोटिकोटिब्रह्मंड अथसांतरस ९ सिद्धनकीमंडलीतपोबनकथा संसारतुच्छए बिभाव समताज्ञान अनुभाव धीरजहर्षसंचारीबिष्णुदेवता स्वेतरंग यथा परिहरसकलभरोसरामहिंभजहिंतेचतुरनर अरु औरहूतीनरसगनाये हैं हास्य १ सख्य २ बात्सल्य ३ दास्य यथा चरणकमलचांपत बिधिनाना सख्य यथा सषानीतितुमनीकबिचारी बात्सल्य यथा भइया कहहुकुशलदोउबारे अथरसनतेंरसउत्पत्ति शृंगारतेंहास्य करुनातेंरौद्रबीरतें अद्भुत बिभत्सतेंभय अथरसशत्रुमित्र शृंगाररिपु बिभत्सबीररिपुभय अद्भुतरिपुरौद्रकरुणारिपुहास्य अरु इनहीकेबिपरीतनतें मित्रताजानो इतिरसध्वनिः अथभावध्वनि संचारीतेंव्यंग देवराजरति इनकीजहां प्रधानता होइ तहाँभावध्वनि अथसंचारीभावध्वनि यथा घनघमंडनभगर्जतघोरा। प्रियाहीनडरपतमनमोरा अथदेवरति यथा प्रनवौंपवनकुमारखलबनपावकज्ञानघन अथराजरतियथा सुनहुमहीपतिमुकुटमनितुमसमधन्यनकोउ रामलषनजाकेतनय बिश्वबिभूषनदोउ अरु ऐसही मुनिपुत्रस्नेहतें भावध्वनि अथरसाभास भावाभास रसअनुचिततें रसाभास अरु भावअनुचिततें भावाभास अथरसाभास यथा अनुजछमनपहँबहुरिपठाई अथभासाभास यथा हृदयबिचारतिबारहिंबारा कवनभांतिलंकापतिमारा टी॰ इहांचिंताअनुचितहै अथभावोदय यथा समाचारतेहिसमयसुनि सीयउठीअकुलाय जाइसासुप

पदकमलजुगबंदिबैठिसिरुनाइ टी· इहांसंकाभावकोउदय अथभाव
संधि यथा सकुचनकहिनसकतगुरुपाहीं पितुदरसनलालच मनमाहीं
टी· इहांलाजहर्षकीसंधिहै अथभावसबलता दूतबचनरचनाप्रियला
गी प्रेमप्रतापबीररसपागी अथभावसांति यथा जनकलहेउसुखसोच
बिहाई पैरतथकेथाहजनुपाई टी· संकाभावकोसांतिरस सबठौर प्र
धानबड़ोहै अरुकहूंभावोगुरुतापावतुहै जैसो सेवककेघर स्वामीन
य यथा शंभुगणकुंभजऋषिमाहीं इतिअसंलक्ष्यक्रमध्वनि ॥ शब
अर्थहोजातमांइसी घनी तिव्यंगहोतुनेहिसाथहीं जहांक्रमध्वनि अलं
कारवस्तुव्यंगशब्दतेशब्दध्वनि अथशब्दतेंअलंकार यथा निसि
चरअधममलायतनताहिदीन्हनिजधाम अरु इहांइनशब्दनकेअ
र्थनव्याजस्तुतिव्यंगहै यथा धर्महेतुअवतरेहुगोसांई मारेहुमोहिव्या
धकीनांई अथशब्दतेंबिरोधाभासव्यंग जहांशब्दसोंव्यंगहोइ बस्तुसे
बस्तुध्वनिहै यथा गुरुबिबेकसागरजगजाना तिनहिंबिश्वकरबदरस
माना टी· गुरुबिबेकसागरबिश्वकरबदरशब्दनतें व्यंगहोतुहै कि ऐसो
गुरुइनकीकाकहिये एबड़ेहैं यहबस्तु अथअर्थध्वनि अर्थशक्तितें बारह
प्रकारस्वतःसंभवीतेंबस्तुअलंकार चारिप्रकार अरु कविप्रौढोक्तितें
चारिभांति अरुकविनिबद्धतें चारियोंबारहभेद अथबस्तुलक्षण ॥
सूधोकहनाउततेअलंकारनढहरैताकोबस्तुकहिये अथस्वतःसंभवी
लक्षन। ख्यातअर्थतेंउचितव्यंगहोइ अथस्वतःसंभवीबस्तुतेंबस्तु १
यथा सूरसमरकरनीकरहिं कहिनजनावहिंआप बिद्यमानरणपाइरिपु
कायरकरहिंप्रलाप टी· सूरकोअपनेमुखबड़ाईनकरनोस्वतःबस्तु
बस्तौ अरुकायरताजनाइबो परशुरामकोदूसरोंव्यंग अथस्वतःसंभवीबस्तु
तेंअलंकार २ यथा जहांरामरघुबंशमनिसुनियमहामहिपाल भंजेउचा
पप्रयासबिनुजिमिगजपंकजनाल टीका· भंजिवोप्रयासबिनुबड़ा
ईबस्तुतेंउत्प्रेक्षाव्यंगहै अथअलंकारतेअलंकार ३ यथा देखाभ
रनबिसाल अतिनिसिचरमनअनुमानि बिनुफरसायकमारेउचाप
अवनलगितानि टी· अनुमानतेंदूसरोबिभावनाव्यंग अथ अलंकारते

बस्तु ४ यथा चंदकिरनरसरसिकचकोरी रविरुषनयनसकैकिमिजोरी। टी० इहां दृष्टांतअलंकारतें सुकुमारताबस्तु अथ कविप्रौढोक्तिबस्तातें बस्तु यथा नवपल्लवफलसुमनसोहाए। निजसंपतिसुररूखलजाये टी० सोहाइबोबस्तु दूसरीवस्तुव्यंग्या विप्रौढोक्तिकरसुररूखकोलजाइबो अथबस्तातें अलंकार ६ यथा लताभवनतेप्रगटभेतेहिअवसरदोउभाइ निकसेजनुजुगबिमलबिधु जलदपटलबिलगाइ टी० लतातेप्रगटहोबोबस्तुकरिउत्प्रेक्षाव्यंग युगससिकाविकल्पित अथ अलंकारतें अलंकार ७ यथा आश्रमसागरसांतरसपूरनपावनपाथ सैनमनहुकरुनासरित लियेजानरघुनाथ टी० इहांरूपकतें उत्प्रेक्षालंकार अथ अलंकारतेबस्तु ८ यथा नृपभुजबलबिधुशिवधनुराहू गुरुअकठोरबिदितसबकाहू। टी०। समनरूपरूपककरिकठोरतासूचनकराइबोबस्तु शशिराहुकाविकल्पित अथ कविनिबद्धबस्तातेबस्तु ९ यथा चरनकमलबंदौतिन्हकेरे पूरहुसकलमनोरथमेरे टी० बंदनाबस्तुतेमनोरथपूरवबस्तु चरणकमलकविनिबद्ध अथबस्तातें अलंकार यथा शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी रामचरितमानसकवितुलसी टी० इहांहुलसबोबस्तु रामचरितमानसरूपकव्यंग अरुअलंकारतें अलंकार ११ यथा अरुनचरनपंकजनषजोती कमलदलन्हबैठेजनुमोती टी० समरूपकतेउत्प्रेक्षाव्यंग अथ अलंकारतेबस्तु १२ यथा करिमुनिचरनसरोजप्रनामा आयसुपाइकीन्हबिश्रामा टी० इहांमुनिचरणसरोजसमरूपकालंकार आयसुपाइबिश्रामकरिबोबस्तु अथ शब्दार्थमूलव्यंग शब्दअर्थदोउ शक्तिमिलव्यंगकढ़ै याहूको उभयशक्तिहूकहतहैं यथा कवितबिबेकएकनहिंमोरे सत्यकहौंलिखकागदकोरे टी० इहांशब्दार्थकेचमत्कारतें अपनीनवनताव्यंग अरुध्वनिके ५१ भेदहुवहैं औरगुनेतेबहुतहोतहैं सबभेदमों संकरसंसृष्टबिस्तरभयानहींलिख्यो इति उत्तमकाव्य अथमध्यमगुनीभूतव्यंगप्रकार ८ जहांबाच्यकोचमत्कारतेव्यंगप्रधाननहोइ अगूढ़ १ अपरंग २ तुल्यप्रधान ३॥

अस्फुट ४ काकु ५ बाच्यसिद्धांगु ६ संदिग्ध ७ असुंदर ८ अथ अपरां
गको अंग रसवत अलंकार यथा कृपाबारिधर रामखरारी पाहिपाहि
प्रनतारति हारी टी॰ इहां बीरको अंग करुना रस है सो राजरति भाव अं
ग है अथ भावको अंगरस यथा श्रीरघुबीर प्रतापतें सिंधुतरे पाषान
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन टी॰ इहां देव रति भावको
अंग सांतिरस है अथ भाव अंग यथा आवा कपि लंका जेहि जारी।
टी॰ बैरिनको चिंता राजरति भाव अंग है अथ रसाभास उरजस अलं
कार यथा कपिबल बिपुल सराहन लागा टी॰ शत्रु बड़ाई करिबो
अनुचित भावसों बीररस अंग है अथ भावको अंगभास भागे भालु
बलीमुख जूथा टी॰ बीरको भागबो अनुचित भावको अंग भाव
सांति अथ समाहित अलंकार यथा देत चाँप आपुहि चलिगयेऊ
परसुराम मन बिस्मय भयेऊ टी॰ इहां गर्बकी शांति अथ भावको अंग
भाव उदय यथा रावन आवत सुनेउ सकोहा देवन्ह तके मेरुगिरि
षोहा टी॰ त्रासको उदय अथ भावको अंग भावसंधि यथा उभय समा
ज हिय हरष बिषादू टी॰ हर्ष बिषादकी संधि अथ भावको अंग भाव
सबलता यथा चले भागि कपि भालु भवानी बिकल पुकारत आरतबा
नी बिकलता आरत इन भावनको सबलता है सो राजरतिको अंग है
अरु अर्थहि देइ बनाइ सो बाच्य सिद्धांग व्यंग कहावै यथा असकस
कारु कुमान मन ऊना सुखसुहाग तुमकहँ दिनदूना टी॰ इहां शब्दश
क्ति बारि आक्षेपको पोषक है अथ अस्फुट व्यंग लक्षना कबि मित्रहू क
ठिन सो लषे यथा चकृत चितव मुंदरी पहिचानी हर्ष बिषाद हृदय अकु
लानी टी॰ इहां कठिनतातें व्यंग अधिक बिचारतें किलकिंचित हाव अथ
संदेही व्यंग यथा की मैनाक कि खगपति होई टी॰ इहां एक जाने बिना सं
देह प्रधानतें व्यंग अथ तुल्यप्रधान जहां बाच्य व्यंग बराबर यथा तोहि देषि
सीतल भई छाती पुनि मो कहँ सो दिन सो राती टी॰ इहां दिन राति सोको
ते व्याकुलता ध्वनि बाच ध्वनि बराबर है अथ काक पीछे कहि आए अथ
असुंदर जहँ ध्वनितें बाच्यनिको होय यथा का बर्षा जब कृषी सुखा

ने समय चूकि मुनि का पछितानें टी॰ फेर चाँप टूटे मैं सो समय न मिलेगो व्यंग सो बाच्य तें सुंदर नाहीं इति मध्यम काव्य अथ दोष लछन शब्द अर्थ के अधिकपता से रसन बूझि परै अंगन हीन रस यति भंग अर्थ अपार्थ वर्न प्रयोगन कारन कटु पुनरुक्ति अंधा बिरोधी बधिर पंगु नगन मृतक औरहू दूषन के प्रभेद बहुत हैं ई रामचरित्र है सुहृद् माति ते दूषन नहीं है अथ गुन लछन। रसको उत्कर्षता रचना सो गुन तीन भांति माधुर्य १ ओज २ प्रसाद ३ अथ माधुर्य जामें कटु बर्न न होइ मन रंजन करै यथा कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि अथ ओज जामें संयोगी अच्छर होइ अरु समास बड़ो यथा चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं इत्यादि अथ प्रसाद जहां सुनत ही अर्थ जानो जाय अरु सब गुन मों रहत है यथा ज्ञानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार केहि कै लोभ बिडंबना कीन्ह न यहि संसार अथ तीन वृत्ति गुन तें होतु है उपनागरिका मधुर गुन १ परुषा उध्धत २ कोमला प्रसाद गुन ३ अब गुनालंकार को भेद कहतु हैं दूनो ते बड़ाई होत है अरु बिसरन हां होत यामें गुन को अरु अलंकार को भेद कैसो जानै रस को बढ़ावै अनुप्रास उपमादि दै अलंकार सुभ अथ नायका जाति पद्मिनी अति सुकुमारी १ चित्रनी उपभोगन में रुचि ते २ शंखिनी दया रोषना हीनें ३ हस्तिनी उदर भरि भोजन चाबते ४ अथ नायका भेद स्वीया स्वामी मों अनुरागते १ परकिया छिपाय परपुरुष अनुरागते २ सामान्या धन लोभतें ३ अथ स्वीया त्रिधा मुग्धा अंकुरित जोबना १ मध्या समान लज्जा कामते २ प्रगल्भा केलिकला प्रवीन पतिमें ३ अथ मुग्धा भेद द्वै ज्ञात १ अज्ञात २ अरु नवोढ़ा लज्जा भय पराधीन रतितें १ बिस्रब्ध नवोढा पति में कछु बिश्वासतें २ मध्या प्रगल्भा मानवस्था मों तीन प्रकार धीरा व्यंग कोप प्रकाशिका १ अधीरा कोप अव्यंग प्रकाशिका २ धीराधीरा व्यंगाव्यंग कोप प्रकाशिका ३ अरु ज्येष्ठा कनिष्ठा अधिक न्यून प्रीति ते धीरादि भेद एहि मों होत है अथ परकिया भेद कन्या अनब्याही परपुरुष अनुरागतें १ परोढ़ा जो परनें बिवाहलयो २ अथ सुरतगुप्ता तीनि भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ ते विदग्धा दै बचना चातुरी ते बचनाबिदग्धा १ क्रियाचतुरी ते क्रियाबिदग्धा २ लछिता लछ

ननामेतेकुलटाजोचाहैबहुनायकनेअनुसयना कोतीनभेद संकेतनासहोवेते १ संकेतनाशहोनिहारतें २ संकेततेनायकाहैआयोआपनगईपछिताय ३ मुदितालछन नामेते इतिअरुगनिकालछनपूर्वलिखआएहैं अथसाधारणनायकाभेद अन्यसंभोगदुखिता वक्रोक्तिगर्विताभेद प्रेमगर्विता रूपगर्विता अरुमानवतीभेदतीन लघु मध्यम गुरुमानते इनसबकीलछन नामेते प्रथम कहिजोनायका कहिआएहैं सोसबआठप्रकारहोतीहैं औरबिरहनीभेदतीन प्रोषितपतिका १ जाकोकंतबिदेशगयो प्रोष्यतपतिका जाकोपतिबिदेशजायगो २ प्रोषितपतिकाजाकोपतिबिदेशकोचलतुहै ३ अरुआगतपतिकालछननामेते एहकोकोऊबिरहनीमानतुहै परयहैनहीं खंडिता अन्योपभोगचिह्नितपतिदेखतेऔरकालहंतरिताअपमानकारिपीछेपछितायबिप्रलब्धासंकेतमेंपतिनमिलतेव्याकुलहोइउत्कंठितालछननामेतेबासकसज्जाआजुहमारेपतिआवेंगेजानिरतिसामिग्रीतेप्यारकरेतेस्वाधीनपतिकालछननामेतेअभिसारिकाअपनेजाययापीयबोलावेते इतिअष्टनायिकाअथउत्तमा मध्यमा अधमानायिकातीनोकालछन नामेतेअरुअभदिव्य अदिव्य दिव्यादिव्यबिचारलिखतुहौं दिव्यइन्द्रानीआदि अदिव्यनरतियदिव्यादिव्यद्रोपदीआदि इन्हतेभेदकियेबहुतभेद होतुहैं इतिनायकासखीप्रीयन २ मादिसिखावनधर्महूतीचुरहारिनिगोसाइनिआदि अथनायकभेद पति १ उपति २ बैसिक ३ इन्हकोलछननामहैतेसखाभेदचार पीठमर्द १ बीट २ चेटक ३ बिदुषक ४ अथदरसनचारिभांतिश्रवन १ प्रत्यक्ष २ स्वप्न ३ चित्र ४ इतिनायकमिलाइबोचारिभांतिसाम १ दाम २ दंड ३ बिभेद ४ अथहावदशप्रकारलछन तरुनिनकेंअंगनते प्रगटजे भाव होतुहैं ताहीकोहावकहतुहैं प्रथमलीलाहावलछन बोलनिचलनिचितवनिमों सब भांतिअनुरागकरैनायका १ बिलासल० पियदेखतमनहरिवेकीभावकरै २ बिछित्तिल० थोरोकियेसिंगारपरशोभाअधिकहोइ ३ बिभ्रमलछन।

नामहिते ४ किलकिंचितल· उरहँसिरोमरुषैएकैबारहोइ ५ मोटाइतल· पियकथामिलनकीसुनचाहहोइ ६ कुट्टमितल· अधरउरजकेशनिकोधरै रुठीरूषीहोइहियमेंसुखपावै ७ बिब्बोकल· आदरआदरनकरैललितल· अंगअंगभूषनसोहै ९ विहितल· लाजतेनबोलिसकै १० अथशब्दालंकार छेकानुप्रास यथा भयेप्रगटकृपाला परमदयाल कौशिल्याहितकारी अथवृत्यानुप्रास एकबरनबहु यथा कहिजयजय जयरघुकुलकेतु अथलाटानुप्रास एकपदबहुतबेरआवै यथा भवभव बिभवपराभवकारिनि बैदरभी गौनी पंचाली एहरीति क्वचित् मनेहै अथ यमक एकशब्दद्वैबारआवै यथा भयेबिदेहबिदेहबिशेषी अरुऔरयमकभेदचारोंचरनअर्धअर्धकोअर्धइत्यादि अथअर्थालंकारजाकोबरनयसोउपमेयजाकोउपमादेइसोउपमान समता कारकबाचकधर्मदूजो मोजोरहै चारों होइतहां पूरनउपमा यथा तरुनअरुनअंबुजसमचरना अरुएकैद्वैतीनलुप्ततेआठभेद अथबाचकलुप्ता यथा नवअंबुजअंबकछबिनीकी अथबाचकधर्मलुप्ता यथा बिधुबदनीमृगशावकलोचनि अथबाचकधर्मउपमानलुप्ता यथा जूथजूथमिलिसुमुखिसुनैनी इत्यादिलुप्ता अथअनन्वै। उपमेयउपमाएक यथा इनसमयेइउपमाउरआनी अथउपमानोउपमेय परस्परलगै यथा रामकथामुनिबर्यबखानी सुनीमहेशपरमसुखमानी रिषिपूछीहरिभगतसोहाई कहीशंभुअधिकारीपाई अथप्रतीपप्रकार पांचउपमानेकोउपमेयकरै यथा उतरिनहायेयमुनजलजोशरीरसमश्याम १ अथउपमेयकोउपमानतेआदरनहोइ २ यथानाथहिंखगअनेकबारीशा सुनहोहिंतेसुनुसठकीसा अथउपमानकोउपमेयतेआदरनहोय ३ यथा सियमुखसमतापावकिमिचंदबापुरोरंक अथउपमाजहांसमतानकरै ४ यथा सीयबदनसमहिमकरनही अथउपमानजहांवृथाहोइ ५ यथा कोटकामउपमालघुसोऊ। अथरूपकद्वैभांति एकतदरूप १ अभेद २ आधिक्य १ न्यून २ सम ३ दोउनके तीनतीनभेदहोतुहैं अथअधिकतद्रूप यथा बिषबारुणीबंधुप्रियजेहीकहियरमासमकिमिबैदेही अथन्यूनतद्रूप यथा राममात्रलघु

नामहमारा परसुसहितबड़नामतुम्हारा। अथसमरूप यथा लषनउ
तरआहुतिसरिस इत्यादि। अथअधिकअभेदरूपक यथा नवबिधुबि
मलतातजससतोरा रघुबरकिंकरकुमुदचकोरा उदितसदा अथइहिकबहू
घटिहिनजगनभदिनदिनदूना। अथन्यूनअभेद यथा। अतिषलजेबिषईबक
कागा अथसमअभेद यथा संपतिचकईभरतचक मुनिआयसुखेलवार
तेहिनिशिआश्रमपिंजरा राखेभा भिनुसार। अथपरिनाम उपमान क्रिया
करै उपमेयको यथा मामवलोकयपंकजलोचन अथउल्लेखहै भांतिकहु
नकैएकैउल्लेख यथा रहेअसुरछलछोनिप्रवेशा। तिन्हप्रभुप्रगटकालसमदे
खा। पुरबासिन्हदेखेदोउभाई नरभूषनलोचनसुखदाई दूसरो यथा जयर
घुबंशबनजबनभानू गहनदनुजकुलदहनकृशानू। अथस्मरन १ भ्रम
संदेह ३ इनकोनामतेलछन स्मरन यथा सियमुखसरिसदेखिसुख
पावा भ्रमयथा बहुरिआयदेखासुतसोई हृदयकंपमन धीरनहोई सं
देह यथा कीतुम तीनदेवमहंकोई नरनारायणकीतुमदोई अथसुद्धाप
न्हुति औरकीआरोपकरि सांचोधर्म छिपावै बंधुनहोयमोरयहकाला। अ
थहेत्वापन्हुति जुक्तितें छिपावैवस्तु यथा देखियतप्रगटगगनअंगारा॥
अवनिनआवतएकोतारा अथपर्जस्तापन्हुति आनकेगुनआनमेंआरोपै
यथा सुकृतनहोंहिभूपगुनचारी अथभ्रांतापन्हुति भ्रमदूरकरै यथा कह
प्रभुहंसिजनिहृदयडेराहू लूकनअसनिकेतनहिंराहू एकिरीटदशकंध
रकेरे आवतबालितनयकेप्रेरे अथछेकापन्हुति जुक्तिसो जहांबातदुरावै
परसो यथा कछुनपरीछालीह्नगोसांई कीन्हप्रनामतुम्हारीहिनाईं अथकै
तवापन्हुति एककोबनाकरिबनैंआन यथा लखानरेशबातसबसांची॥
तियामिसुमीचुसीसपरनाची अथउत्प्रेक्षासंभावना भांतितीनवस्तुहेतु
फल ३ अथवस्तो १ यथा छत्रमेघडंबरसिरधारी सोजनुजलदघट
अतिकारी हेतुते २ यथा प्रभुकहगरलबंधुससिकेरा अतिप्रियनिजउर
दीन्हबसेरा फलते ३ यथा चारुचरननखलेखतिधरनी नूपुरमुखरमधुर
कविबरनी मनहुंप्रेमबस बिनतीकरहीं हमहिंसीयपदजनिपरिहरहीं अ
थअतिसयोक्तिरूपकजहांउपमानतें। उपमेयप्रगटै यथा सिरससुमनका

बेधअहीरा। अथअपन्होक्ति औरकोगुन औरपरठहरावै यथा तव मूरति बिधुउरबसत सोइस्यामताभास अथभेदकांति औरै पदजहांहोय यथा महिंसरसागरसरगिरिनाना सबप्रपंचतहंआनैआना अथसंबंधातिसयोक्ति अजोगकोजोगनादेइ यथा धवलधामऊपरनभचुंबत अथदूसरो वाके बिपरीत यथा नवपल्लवफलसुमन सुहाये निजसंपतिसुररूषलजाए अथक्रमातिसयोक्ति कारनकाजसंगमोहोइ यथा संधानेउप्रभुबिशिखकराला उठीउदधिउरअंतरज्वाला अथचपलातिसयोक्ति कारनते होतुनामैकाज यथा बिमलकथाकरकीन्हअरंभा सुननसाइकाममदंभा अथअत्यंतातिसयोक्ति पूर्बापरक्रम नाही यथा कहुकापैमुनिगुरुदछिनालेहू पाछेहमहिंमंत्रतुम्हदेहू अथत्रिबिधितुल्यजोगता समसुभावहितअहित यथा निंदास्तुतिउभयसमइत्यादि दूसरो बहुमें एकेबान यथा गतिबिलोकिखगनायकलाजे तीसरो बहुसो समतागुनकारि यथा प्रभुसमरथसर्बज्ञ शिवसकलकलागुनधाम जोगज्ञानबैराग्यनिधिप्रनतकल्पतरुनाम अथदीपक निजगुनतेबर्नै इतर यथा भलोभलाईपैलहैलहैनिचाईनीच अरुशब्दअर्थदूनोकेफेरेतीन अथप्रथमशब्दवृत्ति यथा हे बिधिमिलैकवनबिधिबाला अथअर्थावृत्ति यथा कूजहिंकोकिलगुंजहिंभृंगा अथपदार्थावृत्ति यथा रामसाधुतुम्हसाधुसयाने अथप्रतिबस्तुउपमाजहांदूनोबाक्यबराबर यथा राजनरामअतुलबलजैसे तेजनिधानलषनपुनितैसे अथदृष्टांतालंकारजहांबिंबप्रतिबिंबहोय यथा उभयबीचसियसोहतिकैसी ब्रह्मजीवबिचमायाजैसी अथत्रिबिधिनिदरसना प्रथमजहांबाक्यअर्थदूनोसम यथा संतहंसगुनगहहिंपयपरिहरिबारिबिकार दूसरोआनमों आनबस्तुआरोपै यथा असकहिफिरिचितएतेहिओरा सियमुखशशिभयेनयनचकोरा तीसरो कारजदेषभलोबुरोफलकहै यथा रामानुजलघुरेखखिचाई सोउनहिंनांघेउअसिमनुसाई अथसहोक्ति सबएकैसाथबरनै यथा बलप्रतापबीरताबड़ाई नाकपिनाकहिसंगसिधाई अथव्यतीक गुनदायगनि समतातजिएकव्यंगबरनै यथा कालकूटमुखपयमुख

नाहीं अथ द्विविध विनोक्ति नीक वा निकाम कछु दुरावै नहीं यथा राम कहा सब कौसिक पाहीं सरल सुभाव छुवा छल नाहीं दूसरो यथा बिधुबदनी सब भांति सवारी सोहन बसन बिना बर नारी अथ समासोक्ति जहां प्रस्तुत में अप्रस्तुति को ज्ञान होय यथा सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आप अथ परिकर विशेषन मों अभिप्राय यथा पति देवता सुतीय महं मानु प्रथम तव रेख अथ परिकरांकुर साभिप्राय बिशेष जहं यथा गुनहि लषन कर हम परतोषू अथ श्लेष बहुत अर्थ एक शब्द मों होय यथा साधु चरित सुभ चरित कपासू निरस बिसद गुनमय फल जासू अथ अप्रस्तुत प्रशंसा सो द्वै प्रकार एक बरन प्रस्तुति दूसरो प्रस्तुति अंस प्रथम यथा चहुं जुग तीन काल तिहुं लोका भए नाम जपि जीव बिशोका दूजो यथा कबि कोबिद अस हृदय बिचारी गावहिं हरिजस कलिमल हारी अथ ब्याजउक्ति कौ द्वै भेद बात रचना ते करे अरु मन भावतो काम बहाने तें साधिवो प्रथम यथा तिन्ह कहें कहिय नाथ किमि चीन्हे देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे दूसरी यथा लषन हृदय लालसा बिशेषी जाइ जनकपुर आइय देखी अथ ब्याजस्तुति अस्तुति मिस निंदा यथा कोटि बिप्रबध लागहिं जाहू आए सरन तजौं नहिं ताहू अथ ब्याजनिंदा निंदा मिस बड़ाई यथा जननी तू जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ अथ आक्षेप तीन प्रकार एक निषेधाभास गुन दोष समता तें दूसरो यह ले आप कहे पुनि ताको फेरे तीसरे निषेध को बिधि बचन तें छिपावैं प्रथम यथा राम करहु सब संजम आजू जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू दूसरो यथा जदपि कबित रस एकौ नाहीं राम प्रताप प्रगट एहि माहीं तीसरो राज देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेश तुम्ह बिनु भरतहिं भूपतिहिं प्रजहिं प्रचंड कलेश। अथ बिरोधाभास नाम लक्षन यथा धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम अथ बिभावना षट् प्रकार बिना कारन कारज होइ १ यथा आनन रहित सकल रस भोगी दूसरो हेतु अपूरन तें कारज पूरन होय २ यथा काम कुसुम धनु सायक लीन्हे सकल भुवन अपने बस कीन्हे तीसरो प्रतिबंधक, जद्यपि तउ कारज की पूरता ३ यथा रखवारे हति बिपिन उजारा देखत तोहि अछै जेहि मारा चौथो अहेतु तें काज होय ४ यथा भए उतान निसि

परकुलभूषण पांचवों कौनों कारननें काज बिरुद्ध ५ यथा जे हितरु रहौं बारत सो पीरा छठयों काहू काजतें कारन होय यथा शंभु बिरंचि बिष्णु भगवाना उपजहिं जासु अंसतें नाना अथ बिशेषोक्ति कारन होते काज न होइ यथा नमकि ताकि तकि शिवधनु धरहीं उठइ न कोटि भांति बल करहीं अथ असंभावना अनहोवे लायक कारज कहे फल सिद्धितें यथा हृदय बिचारत बारहिं बारा काज अरु कारन न्यारे जहां होइ १ और ठौर करै और ठौर को काम २ हित करते अहित को लाभ होइ ३ प्रथम परहित हानि लाभ जिन केरे उजरे हरष बिषाद बसेरे दूसरो जोई जोई मन भावै सोई लेहीं मन मुख मेलि डारि कपि देहीं तीसरो करत नीक फल अनइस पावा अथ त्रिबिधि बिषम अनमिलन को संग १ कारन कारज भिन्न होइ २ भलो करते बुरो ३ प्रथम यथा कठिन भूमि कोमल पद गामी दूसरो यथा स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान तीसरो यथा भलेउ कहत दुख रौरेहि लागा अथ त्रिबिधि सम रोज अनुरूपतें १ कारज मों कारन मिले २ बिना श्रम में कारज सिद्ध होइ ३ प्रथम यथा जस दूलह तस बनी बराता दूसरो यथा का आचरज भरत अस करहीं नहिं बिष बेलि अमिय फल फरहीं तीसरो यथा दुंदुभि अस्थि ताल देखराए बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए अथ बिचित्र उलटे फल को जतन करनो ॥ यथा राम कहेउ रिसि तजिअ मुनीसा कर कुठार आगे यह सीसा । अथ द्विबिधि अधिक जहां आधारतें आधेय अधिक १ आधेयतें आधार अधिक २ प्रथम यथा सुनि पानी सुल के दोउ भ्राता अधिक सनेह समात न गाता दूसरो यथा ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद सो अज प्रेम भक्ति बस कौशिल्या के गोद अथ अल्प सूक्ष्म आधेयतें अति सूक्ष्म आधार । यथा रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड अथ अन्योन्या परस्पर उपकारतें यथा मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला अथ त्रिबिधि बिशेष बे आधार आधेय १ थोरे करतें सिद्ध बहु २ ॥ एक को अनेक ठौर बरनै ३ प्रथम यथा गहि गिरि निसि नभ धावत भएउ दूसरो यथा मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब तीसरो यथा सती दीख कौतुक मग जाता ॥

आगेरामसहितश्रीभ्राता फिरिचितवापाछेंप्रभुदेषा अथव्याघात
द्विविधि औरकाजतें औरकाजकरै १ बिरोधीतेकारजहोइ २ प्रथमय
था देखहुतातबसंतसोहावा प्रियाहीनमोहिभयउपजावा दूसरो यथा
राखिअऔधजु अवधिलगिरहतजानिअप्रान दीनबंधु सुंदर सुखदसील
सनेहनिधान अथकारनमाला उत्तरउत्तरहोयपूरबकाज यथा बिनुसतसं
गबिबेकनहोई रामकृपाबिनुसुलभनसोई अथएकावलीजंजीराजोरपर
दौर यथा बिनुगुरुहोइकिज्ञानज्ञानकिहोइबिरागबिनु अथमालादीपकदीप
कएकावलिमिलके यथा जयजगरामरामजपजेही अथसार एकतें एक
अधिक यथा सबतेंअधिकमनुजमोहिभाये अरुजिन्हमहँनिगमधर्मअ
नुसारी इत्यादि अथन्यूनसार यथा एकमैंमंदमोहबसकुटिलहृदय
अज्ञानपुनिप्रभुमोहिबिसारेउदीनबंधुभगवान अथयथासंख्यबरनन
बिषैबस्तुअनुक्रमतें यथा बंदौरामनामरघुबरको हेतुकृशानुभानुहिमक
रको अथद्विविधिपर्याय अनेककोक्रमतेंआश्रयएक २ पुनः एककोआ
श्रयअनेक प्रथमयथाजनकलहेउसुखसोचबिहाई दूसरो यथा नामअ
नंतअनंतगुणअमितकथाबिस्तार अथप्रवृत्ति कछुकछुकोबदलो
यथा ताराबिकलदेखरघुराया दीन्हज्ञानहरलीन्हीमाया अथपरसं
ख्या एकठौरबरजिकैदूसरेठौरठहरे यथा मनिमानिकमुक्ताछबिजैसी॥
अहिगिरिगजसिरसोहनतैसी। नृपकिरीटतरुनीतनपाई लहहिंसकल
सोभाअधिकाई अथबिकल्पयहकैकिवह यथा कीतनप्रानकिकेवलप्रा
ना अथद्विविधिसमुच्चैभाव बहुतएकठौरगुंथेहोइ १ एककाजचाहैअने
कअंगहोय २ प्रथम यथा चकितचितवमुंदरीपहिचानी हर्षबिषादहृदै
अकुलानी दूसरयथा अबमैंकुसलमिटेभयभारे देषिरामपदकमलतु
म्हारे अथकारकदीपक एकमोंक्रमतेंअनेकभाव यथा बारबारमुख
चुंबतिमाता नयननेहजलपुलकितगाता अथसमाधिऔरहेतुमिलक
रजसुगमहोइ यथा बचनसुननकपिमनमुसुकाना भईसहायसारदमैं
जाना अथकाव्यार्थपतियहकियोवहक्या यथा जिनेउसुरासुरतबश्रम
नाहींनरबानरकेहिलेखेमाहीं अथकाव्यलिंगयुक्तितेंअर्थसमर्थनहोय॥

यथा सोनरक्योंदसकंधबालिबध्योजेहिएकसर अथअर्थांतरन्यास स
मानबिशेषदृढतें यथा रामएकतापसतियतारी इहांतेनामप्रसादसोच
नहिंसपने इहांलौ अथबिकस्वरजहांबिशेषहोइ पुनिसमानबिशेष यथा
सुमिरिपवनसुतपावननामू अपनेबसकरराखेउरामू अपतअजामिलगज
गनिकाऊ भएमुकतहरिनामप्रभाऊ अथप्रौढोक्ति बरननमें अधिकाई अ
धिकार यथा कामकलभकरिभुजबलसीवां अथसंभावनाज्यौं अयसा
होइतौ अयसाहोय यथा जौंछबिसुधापयोनिधिहोई यरुप्रसंगभर अथ
मिथ्याध्यौंसित झूठहिंकथेझूठीरीति यथा बारिमथेघृतहोइबरुसिकता
तेबरुतेल अथललितजो कहोचाहै ताहीकोप्रतिबिंब यथा पियतुम
ताहिजितवसंग्रामा जाकेदूतकेरयहकामा अथत्रिबिधिप्रहर्षन बिनुज
तनइच्छाफलहोइ १ इच्छातेंअधिकफलबिनाश्रममिलै २ जाकोजतन
सोधेसोहाथमिलै ३ प्रथम यथा चितवतपंथरहेउदिनराती अबप्रभुदे
खिजुड़ानीछाती दूसरो यथा धरहुधीरहोइहैंसुतचारी त्रिभुवनबिदित
भक्तभयहारी अथतीसरो एहिबिधिमनबिचारकरराजा आइगएकपि
सहितसमाजा अथबिषाद चितचाहेतेंउलटाजोहोय यथा लिखत
सुधाकरगालिखिराहू अथउल्लास गुनऔगुनऔरकोऔरधरै यथा
परदुखदुखसुखसुखदेखेपर अथअवज्ञा औरकोगुनदोषनलगै यथा
ऊषरबरषैंतृननहिंजामा अथलेस गुणमेंदोषदेखै १ दोषमेंगुनदेखै २
यथा मोहिदीन्हसुखसुजससुराजू कीन्हकैकईसबकरकाजू दूसरो
यथा जोनहिंहोतमोहअतिमोही मिलतेउंतातकवनबिधितोही अथअनु
कैदोषैगुनमाने यथा रामहिचितवसुरेससुजाना गौतमशापपरमहितमा
ना अथमुद्रा प्रस्तुतपदबिषै औरैअर्थप्रकासै यथा पूछेउगुनिन्हरेख
तिन्हखांची भरतभुआलहोंहिंयहसांची अथरत्नावली प्रस्तुतबिषै
औरनामक्रमतें यथा बहुरिबच्छकहिलालकहिरघुपतिरघुबरतात ॥
अथतद्गुण आपनोगुनछोड़ि औरकोलेइ यथा धूमौतजैसहजकरुआई ॥
अगरुप्रसंगसुगंधबसाई अथपूर्वरूप द्विबिधि संगतिकोगुनलेइतजै
पुनः अपनोगुनलेइ १ जहांगुनमिटैजतनहूंकिएतें २ प्रथम यथा

खलउकरहिंभलपाइसुसंगू मिटइनमलिनसुभावअभंगू दूसरो यथा राकापतिषोडशउअहिंतारागनसमुदाय सकलगिरिन्हदवलाइअबिनुरबिरातिनजाय अथअतद्गुनआनकेसंगहुगुनलेइनआनको यथावायसपालहिंअतिअनुरागा होहिंनिरामिषकबहुंकेकागा अथअन्यगुन अपनोगुनऔरकेसंगबढ़ावै यथा मज्जनफलदेखियततकालाकाकहोंहिंपिकबकउमराला।अथमिलितसमताते दूजोनलखाइ यथाबेनुहरितमनिमयसबकीन्हे सरलसपर्बपरहिंनहिंचीन्हे अथसमानभिन्नौरूपसौंबिशेषनपाइये यथा रामलषनसरिहोंहिकिनारी अथउनमिलनसादृश्यतेभेदकैसोखुलै यथा बयबपुबरनरूपसोइआली सीलसनेहसरिससमचाली बेषुनिसोसखि सीयनसंगा।आगेचलीअनीचतुरंगा अथगूढोक्तिअभिमायसेउत्तरदेइ यथा अबकहुकुसलबालिकहंअहई बिहंसिबचनतबअंगदकहई दिनदसगएबालिपहंजाई बूझेउकुसलसखाउरलाई।अथप्रश्नोत्तर प्रश्नउत्तरजामोहोइ यथा कहदसकंठकवनतैंबंदर मैं॰रघुबीरदूतदसकंधर अथचित्रप्रश्नउत्तर एकपदसोंहोय यथा कावरषाजबकृषीसुखाने समयचूकिपुनिकापछताने अथसूक्ष्मकवनोभावतेंमनकीबातजानै यथासीतहिंसभयदेखिरघुराई कहाअनुजसनसैनबुझाई अथपिहितछिपीबातजनाइदेइ यथा अंगदनामबालिकरबेटातासोंकबहुंकिभईहिभेटा अथव्याजोक्ति आकार छिपाय और बिधिकहै यथा जिन्हहिंबिरचिबड़भयउबिधाना महिमाअवधिरामपितुमाता।अथगूढोक्तिऔरकेबहानेऔरकोउपदेशकरै यथा बहुरिगौरिकरध्यानकरेहुभूपकिशोरदेखकिनलेहु अथबिवृतोक्तिश्लेषमोंछिपेको प्रकाशकरै यथा प्रीतिबिरोधसमानसन करियनीतिअसिआहिजौमृगपतिबधिमंडुकनिभलकिकहैकोउनाहि अथयुक्तिक्रियाकरिबरनछिपावै यथा बहुरिबदनबिधुअंचलढांकीपियतनचितइभौंहकरिबांकीखंजनमंजुतिरीछेनयननि निजपतिकहेउतिन्हहिंसियसयननि।अथलोकोक्तिकछुबचनतेप्रवादलेइ यथा मासदिवसमहंनाथनआवा तौपुनिमोहिजियतनहिंपावा बक्रोक्तिसूधीबातमोंटेढोभाव २ ॥ ॥

यथा मैं सुकुमार नाथ बन जोगू तुम्हहि उचित तप मो कहुं भोगू अथ
सुभावोक्ति जहां सुभाव बरनो जाइ भोजन करत चपल चित इत उत अ
वसर पाइ भाग चले किलकात मुख दधि ओदन लपटाय अथ भाविक
भूत भविष्यादि जहां प्रत्यक्ष लखाय यथा भयउ न अहइ न अब होनिहारा भू
प भरत जस पिता तुम्हारा अथ उदात्त अथ लछन अधिकाई सो धियै य
था बालिन कबहुं गाल अस मारा मिलि तपसिन्ह तैं भएउ लबारा अथ अत्यु
क्ति बहुत बढ़ाय कै कहै यथा जौं संपदा नीच गृह सोहा सो बिलोकि सुर
नायक मोहा अथ निरुक्ति जहां योग तें नाम को औरै अर्थ कल्पै यथा नाम
तुम्हार प्रताप दिनेसा सत्यकेतु तव पिता नरेसा अथ प्रतिषेध जहां निषे
ध को बखानै यथा मुकुत न होंहि भूप गुन चारी अथ बिधि फेर कै अर्थ सा
धै यथा याको फल पावहुगे आगे बानर भालु चपेटन लागे अथ हेतु द्वि
विधि कारज कारन एक संग होइ कारन कारज बरनै एकै २ प्रथम यथा उपउ
अरुन अवलोकहु ताता पंकज कोक लोक सुखदाता दूसरो यथा सकल
अमानुष करम तिहारे केवल कौसिक कृपा सुधारे इति अर्थालंकार अथ
संकर संसृष्टि एक छंद मों जहां बहुत अलंकार परैं तिल तंदुल न्याय यथा चलि
साइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी नवसन साजे सुंदरी सब मत्त कुंज
रगामिनी कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं मंजीर नूपुर क
लित किंकिनि ताल गति बर बाजहीं टी· कुंजरगामिनी मों रूपक ध्यान संग मो
अन्योक्ति लाजहिं तीनरी प्रतीप अथ संकर दो तीन अलंकार मिले तें छीर नीर
न्याय यथा जिन के जस प्रताप के आगे ससी मलीन रवि सीतल लागे टी·
यामो यथा शेष प्रदीप को संकर है एक सुक अगे तें समन हो प्रधान अरु क
हूं संदेह तें संकर को तीन प्रकार और अलंकार बहुत हैं बिस्तार काव्य के ग्रंथ
न मों देखि लेंगे अथ कछु पिंगल यातें कि काव्य शरीर छंद हानि ही है अ
थ गुरु लघु बिधि संयोगी के आदि गुरु यथा सत्य अरु बिसर्ग यथा कः अरु
दीर्घ मात्रा बिंदु युक्त यथा काकी कूवो को कौ कं अरु पाद अंत मों बिकल्प ए
पांचो बिधि गुरु अथ लघु मात्रा रहित लघु अरु उ मात्रा लगे हूं लघु अरु का
हूं आदि संयोगी के लघु को लघु ही रहत है भारन परै तैं जैसे नाम प्रेम पीयूष हृद

हृद्या।

टि॰ अथ प्रस्तार मात्रावृत्तको मात्रावृत्तके गन पांच हैं टगन छकल ठगन पांचकल डगन चारिकल ढगन तीनकल णगन द्वैकल अथ प्रस्तार रीति मात्राको नवमैं गुरुके नीचे लघु बनावै पुनः समपांति करै उबरै जो गुरु लघु तें पूरण करै सब लहु ह्वै तो अथ पांचौं मात्रा गन षट्कल लौं उदाहरण अथ बरण प्रस्तार रीति प्रथम गुरुके तरे लघु धरे फिर अंतको पाती बराबर करै जो घटै तो गुरु हीते पांति पूरन करै न ब प्रस्तारको अंत जानै अरु बरनके प्रस्तारमें बरनकी गिन्ती होत है अरु मात्रा प्रस्तारमों कला गनती एतनो ही भेद है यथा मात्रावृत्त संज्ञा बरन न ल लघु ग गुर आयुध पंचकल तुरग चारकल करन द्वै गुरु द्विजबर चारि लघु प्रिय द्वै लघु धुज लघु गुर हार एक गुरु दंड एक कल लघु बरन वृत्त गन नाम संज्ञा म नयम सुगन र स ज त कुगन अथ गन बिचार संज्ञा मगन नगन मित्र यगन भगन दास जगन तगन उदासीन रगन सगन शत्रु दुगन फलाफल मित्र मित्र सिद्धि मित्र दास बिजय मित्र उदास गोत दुःख मित्र शत्रु प्रियनास दास मित्र सिद्धि दास दास हानि स उदास पीड़ा दास शत्रु हारि उदास मित्र अल्प फल उदास दास दुःख उदास उदासि फल उदास शत्रु सुख हानि शत्रु मित्र फल सून्य शत्रु दास तियनाश शत्रु उदास संका शत्रु शत्रु फलाफल नाश इति गनागन अथ षट्चरचा न दउ दिषा

णगन २	ढगन ३	डगन ४	ठगन ५	टगन ६
ऽ	।ऽ	ऽऽ	।ऽ।	ऽऽऽ
।।	ऽ।	।।ऽ	।ऽ।ऽ	।।ऽऽ
	।।।	।ऽ।	।।।ऽ	।।।।
		ऽ।।	ऽऽ।	ऽ।।ऽ
		।।।।	।।ऽ।	।।।।।ऽ
			।ऽ।।	।ऽऽ।
			ऽ।।।	।ऽ।ऽ।
			।।।।।	।।।ऽ।
				ऽऽ।।
				।।ऽ।।
				।ऽ।।।
				ऽ।।।।
				।।।।।।

अथ बरण प्रस्तारको उदाहरण

बरण ३ रूप	गन देव	फलगन
ऽऽऽ मगन	भूमि	मंगल सुख
।ऽऽ यगन	जल	वृद्धि बुद्धि
ऽ।ऽ रगन	अग्नि	अंगदाह हानि
।ऽऽ सगन	पवन वा काल	उच्चाट मीच
ऽऽ। तगन	आकाश	फल सून्य
।ऽ। जगन	भानु	रोग
ऽ।। भगन	चंद	कीरति
।।। नगन	नाग	बुद्धि सुख

टि॰ अथ मात्रावृत्ति नष्ट लक्षण जपकलामों जितनो भेद पूछै तेतो कला

कलालियेतापरदूनोअंकधरैजैसोएकद्वैतीनद्वैतीनपाचतीनपांच आठऐसोक्रमतेंपुनःपूछेअंककोअंतअंकमोंघटाइकैजोउबरैजाको औरअंकलिखेयोंघटाइकैताकेनीचेअगली कलालेकैगुरुकरैजैसेसप्तकलामोंदशमोभेद प्रश्नताकोउत्तरयथाप्रथममात्राउद्दिष्टलिखकर पूछेतापरदूनोअंकधरैलघुकेमाथेपरअरुगुरके ऊपरनीचेगुरमाथेकोअंकजोरिकैअंतकेअंकमोंघटावैजोबचैसोभेदकहैय थाप्रथममात्रामेरुप्रयोजनजोजानोचाहैकिइतनेकेप्रस्तारमेंकैइकगुरके दुगुरकेतिगुरपरैंगेइत्यादिप्रश्नहेतुमेरुहैताके लच्छणप्रथमद्वैद्वैकोठाबनावैबराबरतबअंतमें कोठनमोंएकअंकलिखिआवैअरुआदिकोठन मोंएकएककोठाबीचदैइकैएकएकअंकलिखआ वैएकएककेखालीमोंद्वैसेगिनतीलिखेतबजोखालीकोठाहैतामोंअंक धरैयाक्रमतेंकिमाथेपरकेअंकताकेमाथेकोपरअंकलेइकैदूनोजोरिभरि देइ॥इतनअरुखंडमेंरुकीखचाइवेमोंभेदहैअंककरीतिएकैहैप्रथममात्रा

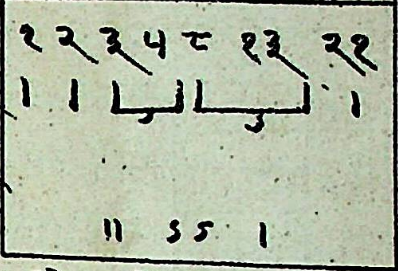

१ २ ३ ८ २१
। । ऽ ऽ ।
५ १३
दशयोभेद

मेरूरूपयथाप्रथममात्रापताकाप्रयोजनजोपूछैकिइतने केप्रस्तारमेंइकगुरद्विगुरतिगुरादिकौयेकौथे स्थानपररहैंताहेतुहैताकेलच्छनजैकलाको पताकाबनायोचाहैतैईकलाकोमेरुको खंडअलगकरिकैताहीसंख्यातेकोठा बनावैतबप्रथममेंउद्दिष्टअंककीरीतिऊपरकेकोठाभरिआवैतबअंतअंक अंतकेकोठाकोतातेंएकएकघटाकेएकगुरपंक्तिदुइदुइअंकतेंघटैसोदुगुरपं क्तिमोंलिखेएहीरीतितेजहांलौचाहै॥अथमात्रापताकारूपयथाप्रथममात्रा मर्कटीप्रयोजनजोपूछैइतनेप्रस्तारमोंकितनेवृत्तिभेदमात्रावरनलघु गुरुहैताकेहेतुहैयाकेलच्छनछपंक्तिकोठाखड़ालियेप्रथमवृत्तिभेदमात्रावर णलघुगुरक्रमतेंकोठाकेबाहरलिखैपुनःआदिकोठनएकएकलिखिजा यगुरठिगशून्यलिखेफिरचौड़ाईवृत्तिकोठनमोंदुइआदिगिनतीअंकभरै

२	१	१			
३	२	१			२
४	१	३	१		३
५	३	४	१		५ ८
६	१	६	५	१	१३
७	४	१०	६	१	२१
	गु॰३	गु॰२	गु॰१	ल॰	

१	३	८	२१
२	२५	१३	
४	६	१६	
५	७	१८	
गु·३	१०	१९	
	११	२०	
	१२		
	१४		
	१५		
	१७		
	गु·२		

अरु भेदको घरनमें उदिष्ट अंक भरै पुनः वानि भेद गुरु करि मात्रा पंगतिमों भरै पुनः लघु पंक्तिमें जो एक अंक है सो गुरु पंक्ति स्तम्भके आगे लिखे ताहीको मात्रा पंक्तिमें घटाय ताका बरण कोठामें भरै सोई बरन पंक्तिमें घटाय बाकी लघु पंक्तिमों भरै पुनः ताहीको गुरु पंक्तिमें आनके घटाइवो फिर याही रीतसे जितनी चाहै तितनो बनावै अथ मात्रा मर्कटी समकलको यथा अथ मात्रा सूची प्रयोजन जो पूछै प्रस्तारमें कि कितने भेद पर लघु लघु गुरु अंत है ताके हेतु है ताके लक्षण जितने अंक पर प्रस्तारको अंत है ताके पाछेको अंक लघु अंत ताके पाछेको अंक गुरु अंत सूची यथा बरण वृत्ति नष्ट पूछेको आधा करै सम आवै तो लघु लेआवै विषम आवै तो

गुरु	१ २ ३ ५ ८ १३ २१	ति
लिपि	गु·अं· ल·अं·	रि

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७
बरन	१	३	७	१५	३०	५८	१०९
लघु·	१	२	५	१०	२०	३८	७१
गुर	०	१	२	५	१०	२	३८

एक मिलाय भागे ऐसही क्रमते करतो जाय यथा पांच बरण प्रस्तारमें तेरहां नष्ट अथ उदिष्ट बरण वृत्तिको जो पूछै लिखकै ता पर दूने दूने क्रमतें अंक धरै जैसो जो १ २ ४ ८ १६ ३२ अंक लघु सिर पर होर

ऽ ऽ ।। ऽ

ताको जोरिकै और एक मिलाइकै जितना होइ सोइ भेद जानो यथा बरण मेरु लक्षण प्रथम द्वै कोठा पुनः चारि ऐसी रीतसे बनावै तब आदि अंतके कोठनमें एक एक अंक लिखआवै तब मांथेके अंकतें अंक जोरि जोरि कै खाली कोठा भरै यथा अथ बरण पताका लक्षण प्रथमै उदिष्ट के समान बरण मेरुत अंक धरि आवै पुनः सबके अंक लेइकै भरै पर अंकतें अरु आयो अंक न आवै अथ बरण पताका यथा अथ बरण मर्कटी लक्षण छ कोठा बनावै आदिमों क्रमतें अंक एक द्वै तीन चारि इत्यादि दूसरे मों उदिष्ट रीति अरु पहले कोठामें दूसरे तें गुन करिकै

१	२	४ ८	१६
ऽ	ऽ	।।	ऽ

२	१	१	१				
४·	१	२	१	२			
८	१	३	३	५	३		
१६	१	४	६	४	२	४	
३२	१	५	१०	१०	५	१	५

गु·५ गु·४ गु·३ गु·२ गु·१ ल·

चौथे कोठामों भरै तब चौथे कोठाकै आधा पंचएं छठएं कोठामों लिखि देइ तब पांचयें अरु चौथे कोठानें जोरिकै तीसरामों अंक धरि देइ यथा अथ वर्णसूची लक्षण जितने अंक पर प्रस्तारको अंत होत है ताके आधे पर गुरु अंत तितनोई लघु अंत है॥

दे	२	४	८	१६	३२
गु.५	३	६	१२	२४	लं॰
	५	७	१४	२८	
यथा	९	१०	१५	३०	अथपस्धा
न्हर	१७	११	२०	३१	आठह

१ जर	१३	२२	घउगा ४ रव ५
गु४	१८	२३	गु१
भ६ध७	१९	२६	र८ और कावि
लोका	२१	२७	और हूं धरे हैं।
अथछंद	२५	२९	
	गुरु	गुरु	

वृ.	१	२	३	४	५	६	७
मे	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
मा.	३	१२	३६	९६	२४	५७६	१३४४
व	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६
ल	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८
गु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८

रीति। श्री गोसाईं तुलसीदासजू या रामायणमों १३ प्रकारके छंद कहे हैं तिनहीको लक्षण लिखतु हों तिनहु छंदमों नानावृत्तिके ६ प्रकार अरु वर्णवृत्तिके सात प्रकार अथ मात्रावृत्ति छंद लक्षण प्रथम दोहा लक्षण प्रथम तुक तेरह मात्राको दूसरो ग्यारह ऐसेई पुनः तेरह ग्यारह करै तुक चारलों यथा बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय बिशाल १ अरु दोहाके तेरहनमों एक एक कला घटायेतें दोहरा छंद होत है अरु द्वै द्वै बढावेतें दोहा होतु है दोहरा यथा तात चरण गहि मांगों राखहु मोर दुलार सो

१	२	४	८	१६	गु.अं. ३२
		लघु.अं.			

तादेहु राम कहें अरि तन होइ तुम्हार॥ अरु कहूं कहूं दोहामों कला एक घट बढ होतु है पार अंत बिकल्प करि घट यथा सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ जेहि बिधि उतरै कपिकटक तात सो कहहु उपाय अथ बढ यथा रैनप बालक कालबस बोलत तोहि न संभार धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार। अथ सोरठा लक्षण। दोहाको उलटो पढ़े ग्यारह तेरह करि सोरठा होतु है यथा भरत कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि बचन अमिय जनु बोरि

रेतउचितउत्तरसबाहिं २ अथरूपचौपाईलछन रूपचौपाईसोरह
१६कलाकीयात्राजबतेरामव्याहघरआये निततनवमंगलमोदबधा
ए नाहीमें बिद्युन्माला चंपकमाला पाईकुलिकाभ्रमर बिलसतादिसब
होतुहैं एकघटाय पंद्रह १५ मात्राकीमेंआदिचौपईहंसीउज्जलादिना
महोतहिंएकबढ़ाय १७ सत्रहकीमैंधारीबालादिनामहोतहै ३ अथ
त्रिभंगीछंदलक्षण प्रथम यथा दशमात्रापर बिश्राम फेरआठपर पुनः
छःमात्रापर यथा परसतपदपावन १० सोकनसावन ८ प्रगट भईतप ६
पुंजतही ६ । ४ । अथचौपैयाछंदलक्षन दशमात्राप्रथमपुनःआठ पुनःबा
रहसबकला ३० यथा भयेप्रगटकृपाला १० परमदयाला ८ कौसल्या
हितकारी १२ इत्यादि अथहरिगीतछंदलक्षण अंतगुरुसबमिलि
मात्रा अठ्ठाईस २८ को यथा मनजाहिंराचोमिलहि ७ सोबर ४ सहज
३ सुंदर ४ सांवरो ५ ॥६॥ इत्यादि अथबरणछंदलक्षण प्रथमनगस्वरू
पिनी आठअक्षरलघुगुरुक्रमतें यथा नमामि भक्तवत्सलं कृपालसील
कोमलं १ इत्यादि अथतोमरछंदलछन सगनएकजगनद्वैनवअक्षर
कोरूप ।।ऽ।ऽ।।ऽ। यथा महिमाउदारअपार २ इत्यादि। अथतोटकछं
दलछन चारिसगनबारहअक्षरको ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ यथा जयराम सदा
सुखधाम हरे । रघुनायकसायकचापधरे ३ अथ भुजंगप्रया
तलछन चारि मगन अक्षरबारहको ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यथा नमा
मी शमीशा ननिर्बा नरूपं॥ बिभुंव्यापकंब्रह्मबेद स्वरूपं ॥४॥
इत्यादि । अथअनुष्टुपलक्षण पंच वा बरण लघु चारों चरण
मों छठयांगुरु सतमो लघु नेम दूसरे चौथे चरणमों पहले तीसरे
चरणमों सतया गुरु अक्षर आठ यथा योददातिसतांशंभुः कैवल्यम
पिदुर्लभं खलानांदंडकृद्योसौ शंकरःशंतनोतु मे ५ अथशार्दूलविक्री
डितलक्षन प्रथम मगन सगन जगन सगन तगन द्वै अंतमों अंत एक
गुरुअक्षर १९ को ऽऽऽ।।ऽ।ऽ। ऽऽ।ऽऽ।ऽ यथा शांतंशाश्वतमप्रमेयमन
घंगीर्बाणशांतिप्रदं ब्रह्माशंभुफणीन्द्रसेव्यमनिशंबेदांतवेद्यं बिभुम्।
रामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिं बंदेहंकरुणाकरं।

रघुवरं भूपालचूड़ामणीं ६ अथवसंततिलकलक्षण तगन भगन जगन द्वै गुरु है अंतमों अक्षर चौदह ऽऽ।ऽ॥ ।ऽ। ।ऽ। ऽऽ यथा नानास्पृहा रघुपते हृदये स्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा १ इत्यादि ॥ इतिपिंगलमत ॥ अथ चित्र चित्रको भेद बहुत है कछु या रामायणके भेद चित्र उदाहरन देखावतु हौं ॥ चित्रमों प्रथम निरोष्ठ जामें ओठ न लगे यथा अगजगजीवनागनरदेवा नाथसकलजगकालकलेवा अथ अंतर्लापिका जाको अर्थ छंदके भीतरही निकरै यथा छप्पै कह गनपतिपितुनाम देव अर्पित का कहिये सज्जन को का कहत कौन हिय आनंद रहियै कौन चरित सुख देइ कहांते सरजू आई छंदबंधको करत रामजस भाषा गाई यामों यह चौपाई निकसतु है शंभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी रामचरितमानस कवि तुलसी इति अंतर्लापिका अथ बहिर्लापिका जो अर्थ बाहरते आवै यथा कहो नाम विपरीत के जामें भयो प्रसिद्ध सो अनादि सम द्वै गयो जान लेडु करि सिद्ध यामों यह चौपाई उलटा नाम जपत जग जाना बालमीक भये ब्रह्म समाना अथ चित्र अश्वगति बंध नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शील कोमलं भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं अथ सीपबंध अरुन पराग जलज भरि नीके ससिहि भूष अहि लोभ अमीके ॥ ॥

न	पा	मि	शी	क्त	को	त्स	लं
भ	का	मि	नां	प	धा	बु	दं
कृ	पा	लु	भ	ल	व	म	लं
अ	जा	मि	ते	स्व	दां	म	जं

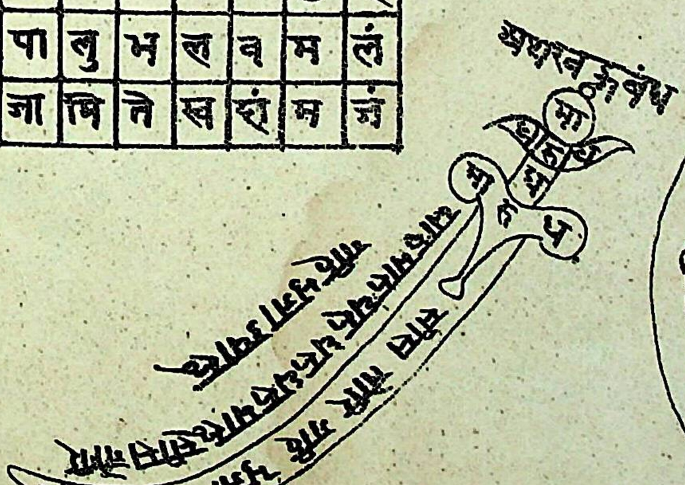

यथा

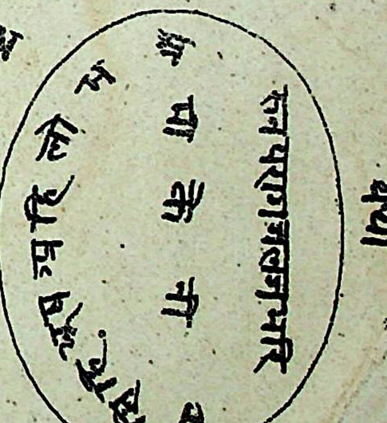

अथचमालबंध

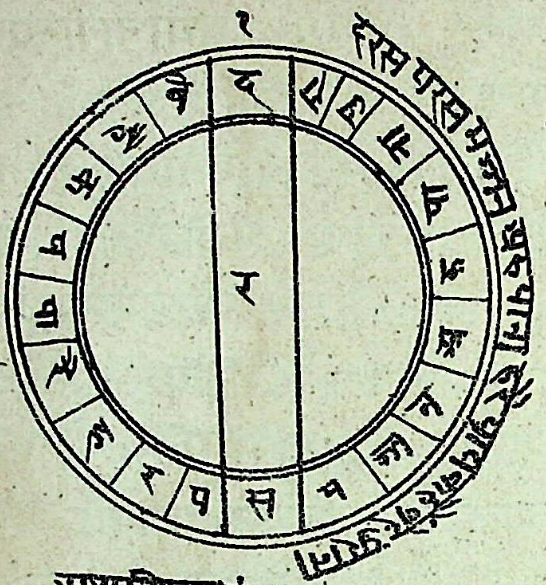

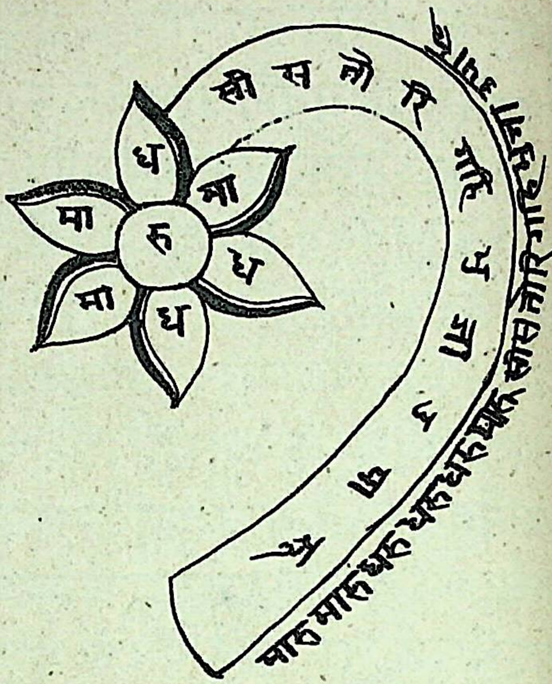

अथत्रिशूलबंध

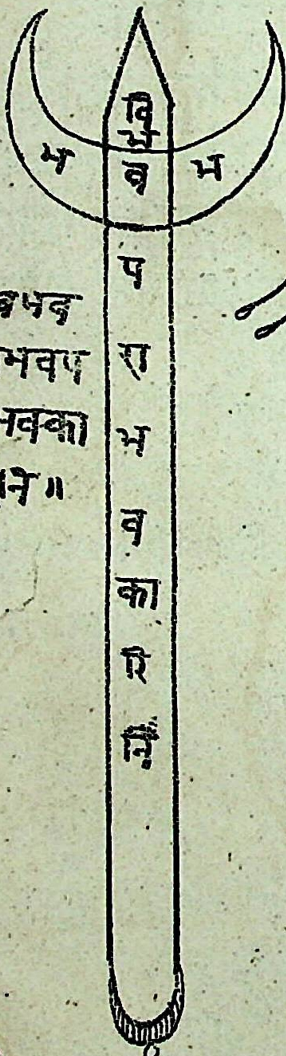
वि
भ
व
भ
भ
प
रा
भ
व
का
रि
नि

भवभव
विभवप
राभवका
रिनि ॥

नागबंध

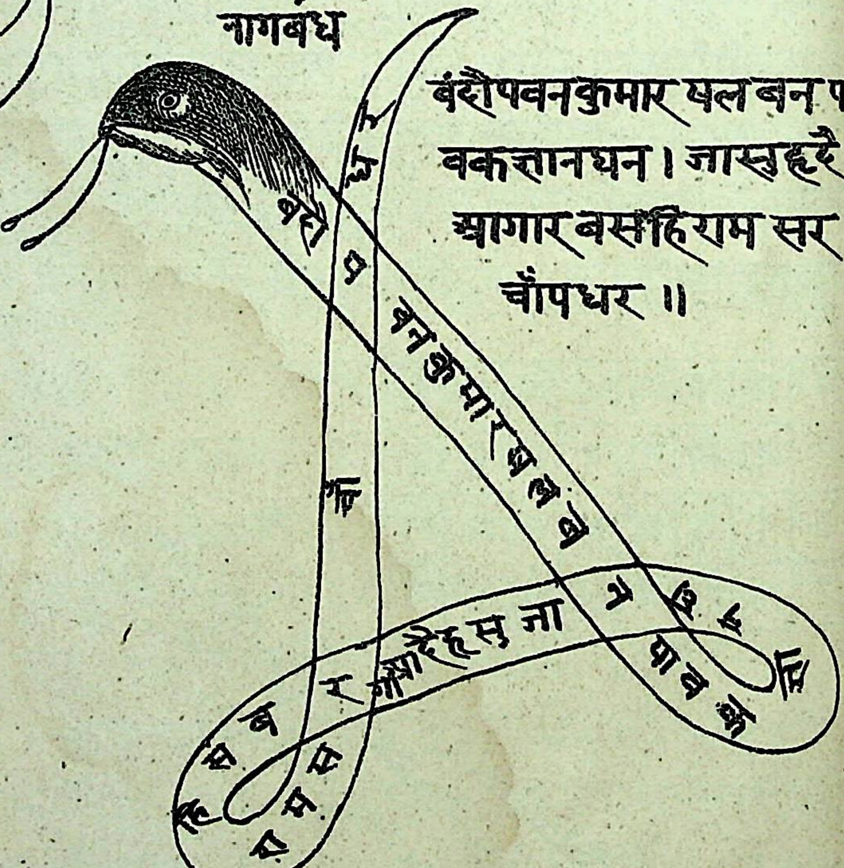

बंदौंपवनकुमार षल बन पावकज्ञानघन। जासुहृदै
आगारबसहिराम सर
चाँपधर ॥

गुरु
घंगी
रामार

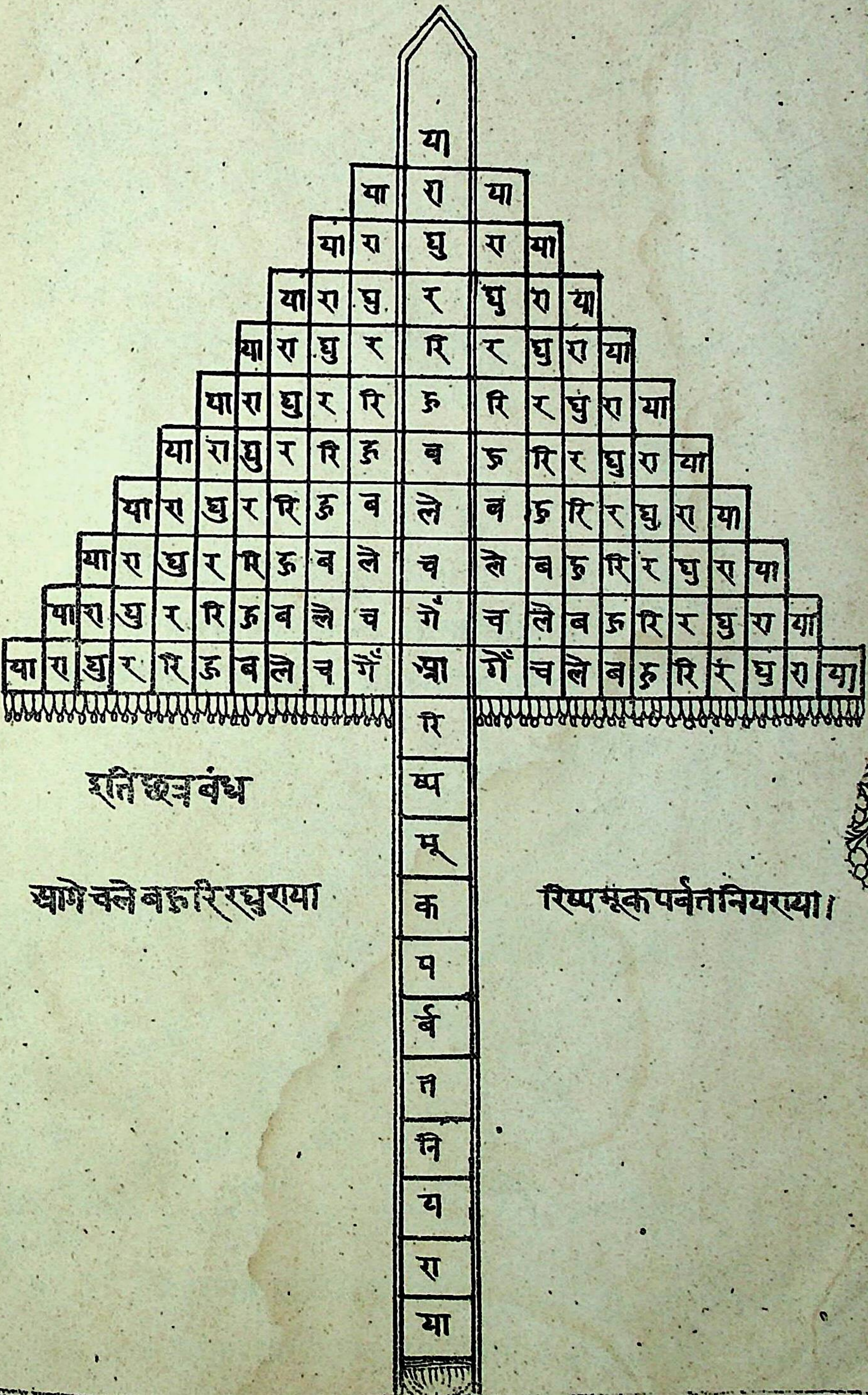

या

या रा या

या रा घु रा या

या रा घु र घु रा या

या रा घु र रि र घु रा या

या रा घु र रि हु रि र घु रा या

या रा घु र रि हु ब हु रि र घु रा या

या रा घु र रि हु ब ले ब हु रि र घु रा या

या रा घु र रि हु ब ले च ले ब हु रि र घु रा या

या रा घु र रि हु ब ले च गें च ले ब हु रि र घु रा या

या रा घु र रि हु ब ले च गें आ गें च ले ब हु रि र घु रा या

रि

ष्य

मू

क

प

र्व

त

नि

य

रा

या

इति छत्रबंध

आगे चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्वत नियराया।

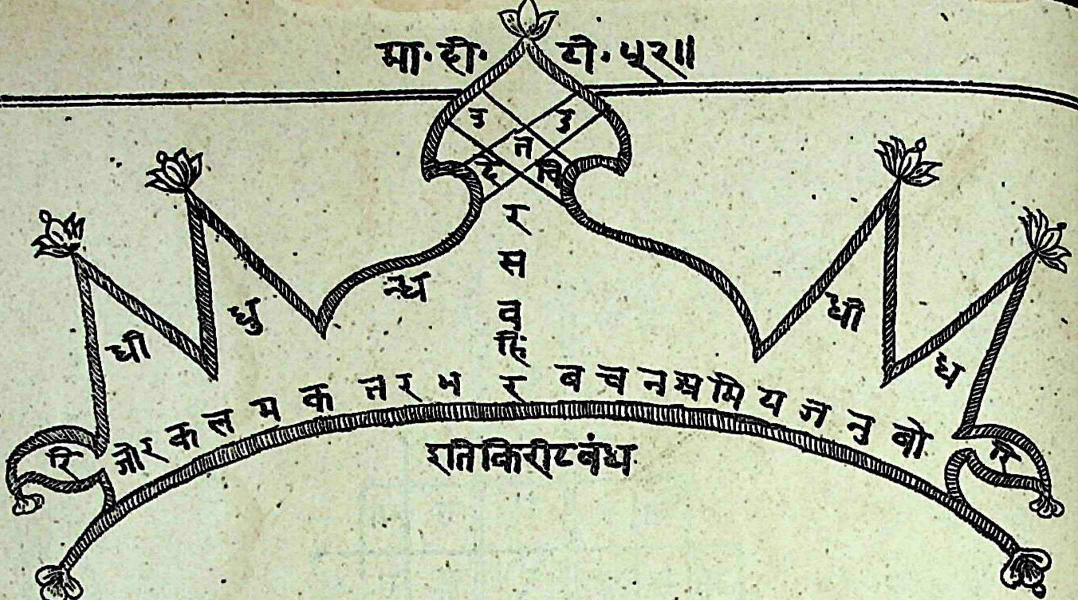
उ उ
त
दे वि
र
स
ब
हिं
धी धु रं
धी ध
रि जोर क ल म क त र भ र ब च न अ मि य ज नु बो रे

इतिकिरीटबंध

भरतकमलकरजोरि धरम धुरंधर धीर धर बचन अमिय जनु बोर देत

उचितउतरसबहि

जगकारन तारन भव भंजन धरनी भार ।

कीतुम अखिल भवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥

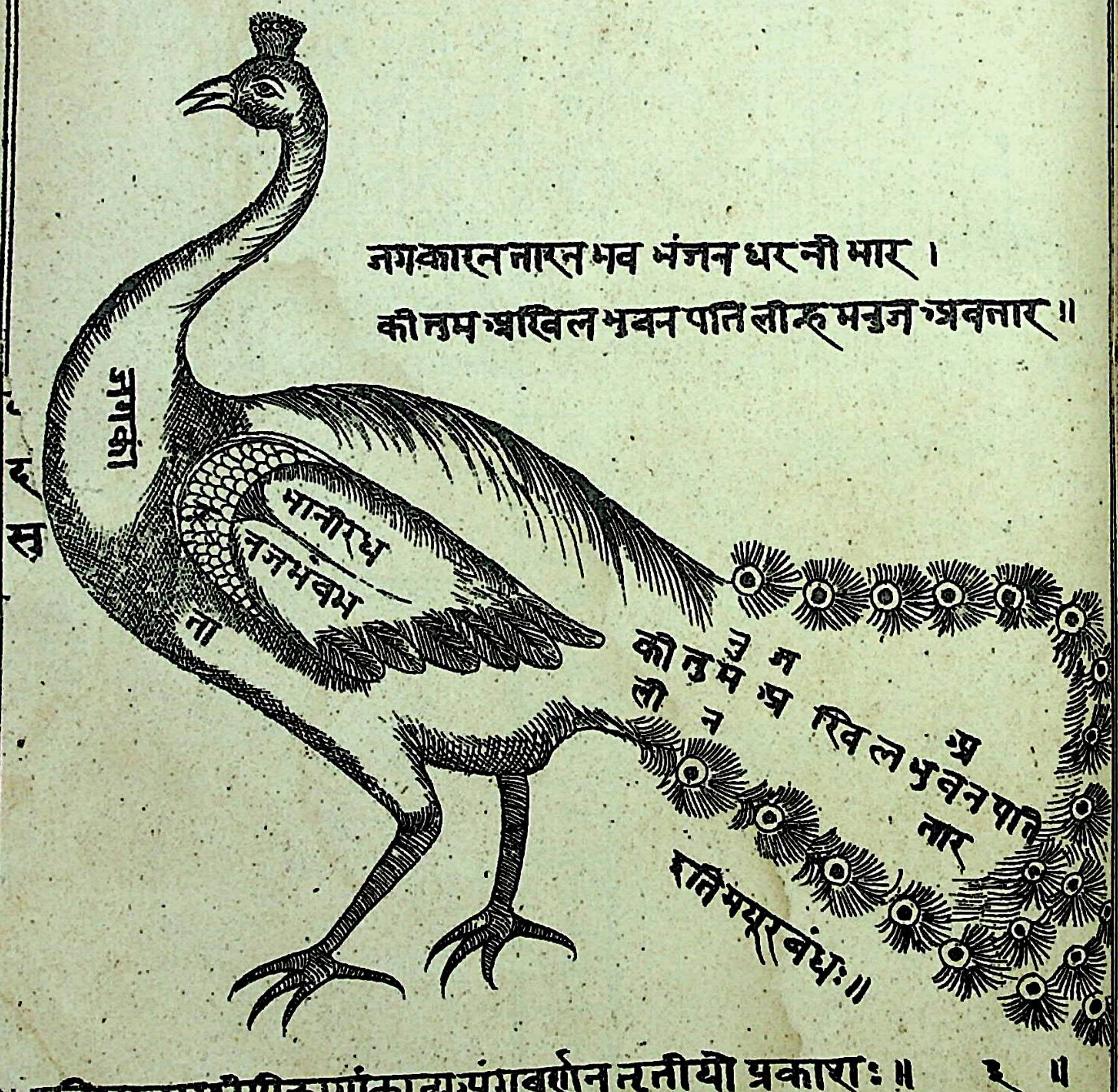
र
स
जगका
भानीरध
नजभंवम
ता
कीतुमम
उ म
ली न
अ
खिल भुवन पति
नार

इति मयूरबंधः॥

॥ इतिमानसदीपिकायांकाव्यअंगबर्णन तृतीयो प्रकाशः ॥ ३ ॥

अब आगे पर्याय की तरह हाँसिये पर टीका लिखी जायगी ॥

रामायण बालकाण्ड १

यह मूर्त्ति तुलसीदासकी श्रोतासहित

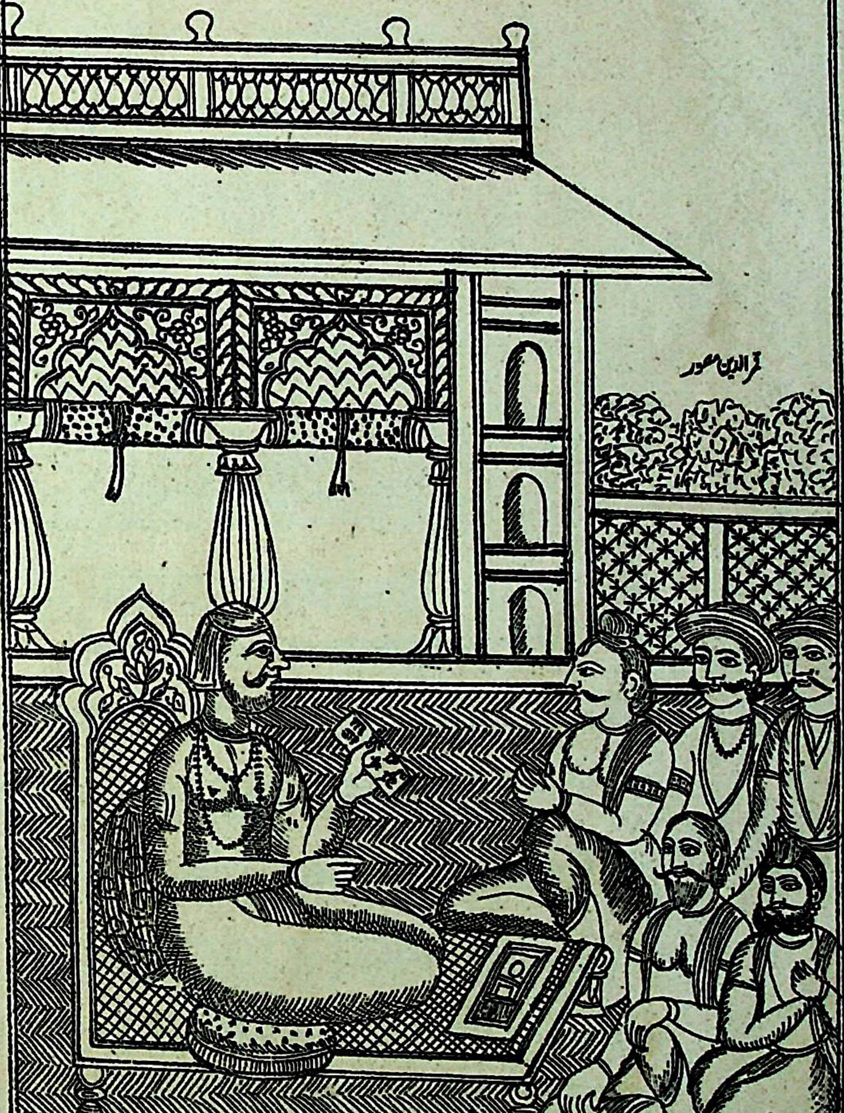
قمرالدین مصور

मतबअ़ हिंदप्रेस में लाला प्यारेलाल के
एहतमामसे शहर देहली में छापी गई॥

[illegible]

कथनकोभावशक्तिलक्षणाव्यंजनाआदिकरलेअक्षुनहोनहै ध्वनिसबकोअर्थ
संबंकोशृंगारादिरसकोलक्षणअरुभेदप्राणवर्णनकाव्यांगमें कियेजानेंवि
स्तारलीकियोवर्णाविचारनसाकेकर्तागुरुव्यासरस्वतीअरुमंगलकेस्वरूप

ठि० टी० १
भवानीशंकरकी
[illegible]

टी·
रा·बा·
१

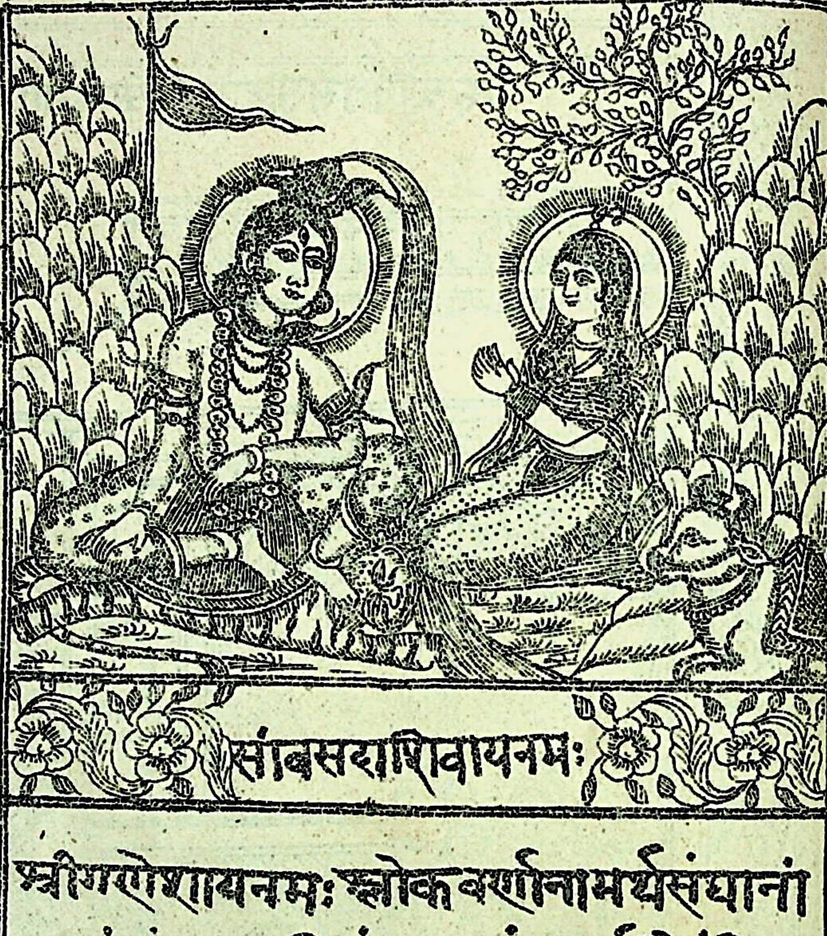

सांबसदाशिवायनमः

श्रीगणेशायनमः श्लोक वर्णानामर्थसंघानां
रसानांछंदसामपि मंगलानांचकर्त्तारौवंदे वा
णीविनायकौ १ भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वा
सरूपिणौ याभ्यांविनानपश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थ
मीश्वरं २ वंदेबोधमयंनित्यंगुरुंशंकररूपिणं।
यमाश्रितोहिवक्रोपिचंद्रः सर्वत्रवंद्यते ३

[illegible]

रा० टी० ३ ।ज्ञाननिधिअविनाशीशंकररूपगुरुकोवंदनहौजिनके
आश्रयतेंकुटिलहूचंद्रवंदनयोग्यभयोहै कुटिलचंद्रकोदृष्टांतनेंनिजकृत
कवितांकोप्रन्यत्ववरनावलिकारिकविनेरचनाकियो ॥ २ ॥

[illegible]

द्वि॰ टी॰
कवीश्वरवाल
मीकजीकपीश्वर
हनुमानजीके
नकेविशुद्धज्ञानसी
तारामगुणग्रामकी
हरिश्रुतिनमें
जुक्तिकरिपनिश्च
सोविचारतकुंजि
कोनाममैंदोऊ
कैप्रसन्नहेविन
रचुरामचरितमा
नसकैआचार्यत्वकी
विचारकरनाथी
सोकरनकवी॥
द्वि॰ टी॰ ४।

शास्त्रवचनसाधुसंमतकाविसंप्रदायसंमतसानुभवहूलेइकैभाषामोंनिबंधतु
लसीकरतु है अतिमंजुलरेय देशकीनीकीनाकीभाषातुनिकैबहुतसुख स्वां
तः सुखाय सोनिजपांडित्यख्यातिआदि प्रयोजन हेतुनाहीं किंतु दिनदिनमों

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौवंदे
विशुद्धविज्ञानौकवीश्वरकपीश्वरौ ४ उद्भवस्थि
तिसंहारकारिणींक्लेशहारिणींसर्वश्रेयस्करींसी
तांनतोऽहंरामवल्लभां ५ यन्मायावशवर्तिविश्वम
खिलंब्रह्मादिदेवासुरायत्सत्वादमृषैवभातिसक
लंरज्जौयथाहेर्भ्रमः यत्पादप्लवमेवभातिहिभवां
भोधेस्तितीर्षावतांवंदेऽहंतमशेषकारणपरंरामाख्य
मीशंहरिं ६ नानापुराणनिगमागमसंमतंयद्रामा
यणेनिगदितंक्वचिदन्यतोपि स्वांतः सुखायतु
लसीरघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुल
मातनोति ॥७॥ अथसोरठा भाषायाम्।

जिहिसुमिरतसिधिहोइगणनायककरिवरबदन
करौअनुग्रहसोइबुद्धिराशिशुभगुणसदन १
मूकहोइवाचालपंगुचढ़ैगिरिवरगहन ॥
जासुकृपासुदयालुद्रवौसकलकलिमलदहन
नीलसरोरुहश्यामतरुणअरुणवारिजनयन
करौसोममउरधामसदाक्षीरसागरसयन ३

शंखकेकपोलमोंलगतहीवक्ताभएअरु पंगुअरुणवायमलार्जुनवृक्ष
पुनः नलकूबरदेहधारिगहनपर्वतचढ़ो २ अरुकमलापतिमोंअभेदत्वक्षीर
सागरकोभावक्षीरसागरशुद्धधर्मकोस्वरूपहैतैसोई हमारोउरबनारकैवसो ३

उद्भवस्थितिपाल
नसंहारगुनीन
कैकारनहरिरूप
अविद्याअस्मि
तारागद्वेष४
अभिनिवेश५ पां
चौक्लेशनकेसव
कर्मलोकपलो
कदुखदेनहारि
रामवल्लभाराम
कोअनन्यप्रेमा
सीताजीसीताजी
वंदतहौं
॥५॥

गीता
प्रपंचोदृश्या
आयुष्यहीनजो
यश्रुतिपवतारी
मानतेमनुष्यजन्म
जोसफलताजोर
चितकेजानतमत
झलकहैहैं ये
भ्रमहैं ७ औरहै
कारीकेजोतुमर

❖

टी॰
रा॰ बा॰
३

सियराग्रणपन
शुभगदवनकेलोग
रणाद्दिकोस्वामी
राणानुमंगलकेसु
सोअमृतजानके
कैर्णा १ ऊरु
श्रीमनारायण
जीअनंतशक्ति
श्रीमधवणपाल
सर्वकालमें
पंचजन

द्वि॰ टी॰ गणेशजी
श्रीअग्रगण्य
औरहूगणनिकी
श्रीमहादेवजीप्रभु
श्रीरजाकीअनेक
स्मृतिअनुमति
भावनहैं
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वासुदेवजी
कविदेवतानी
धर्मकेआकाल
श्रीकृष्णआदिमा
कंपनऔरबाल
अमनतरलबडे
गुनेनगमबडे
गनाइरानापथ
६
द्वि॰ टी॰
सबमूलवाल
कैलासतिनि
विभावतित्रसुर
मायाकालमें
हितहौंजोपार
देवरामराज
रनादिजगत
देवसिवनैकी
नेरोगायत

श्री.
सो० टी०
श्रीशंकरगुरुप्र
समजोमलकृत
इंदुसमउज्वल
आह्लादकोनाप्र
हरकलकप्रहीन
इंदु४तसबही
कौप्राथनाकीयो
४ पुंबमणो.
दो० बंदौगुरुप
दिकंजमहामोहह
नमवंदकेनाशको
दैवेकोजनकेभ्र
गस्हर्षकिरणसमू
हैतेदिवाकरा
सागरगुरुकेपद
कमलवंदताहोंनर
रूपहरिहैंमौनंद
रूपबालवरान
दायीहौंहरिगोसाई
जोकेगुरुकोनाम
महीहोयकरेवा
दाहहैनकेनासी
रूपपदकेआइते
गुरुनामलीयोहरु
सिहाजुरुनाम
लैनौपाबमेनेबंधे

कियोअरुशुद्धभयेनषरूपअरुजावतरचनादृष्टिहोगीभावपरमोचारि
गुनहैंरुचिबासरससरंगएसबगुनपरागमेंहैंभवरुजभवरोगकेपरिवारका
मारिकोउत्तरकांडमोंकहेहैंउघरहिंनषअरुणाईसूर्यकीउपमामनमोराषि
कैमहकहतेहैंरातकोसोवनमेंहैसोदुखस्वपनआदियथासुअंजनजैसे

बंदउंधुसमदेहउमारमणकरुणाअयन ॥
जाहिदीनपरनेहकरौकृपामर्दनमयन ॥४
बंदौगुरुपदकंजकृपासिंधुनररूपहरि
महामोहतमपुंजजासुबचनरविकरनिकरि ५

चौ० बंदौगुरुपदपदुमपरागा। सुरुचिसुबाससरसअनुरागा।
अमियमूरमयचूरणचारू। शमनसकलभवरुजपरिवारू।
सुकृतशंभुतनबिमलबिभूती। मंजुलमंगलमोदप्रसूती॥
जनमनमंजुमुकरमलहरनी। कियेतिलकगुणगणवशकरनी
श्रीगुरुपदनखमणिगणज्योती। सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती॥
दलनमोहतमसोसुप्रकासू। बड़ेभागउरआवहिंजासू १॥
उघरहिंबिमलबिलोचनहीके। मिटहिंदोषदुखभवरजनीके।
सूझहिंरामचरितमणिमाणिक। गुप्तप्रगटजहँजोजेहिलायक॥

दो० यथासुअंजनआंजदृगसाधकसिद्धसुजान।
कौतुकदेखहिंशैलबनभूतलभूरिनिधान १॥

गुरुपदरजमृदुमंजुलअंजन॥ नयनअमियदृगदोषबिभंजन॥
तिहिकरिबिमलबिबेकबिलोचन। बरनउंरामकथाभवमोचन॥
बंदौप्रथममहीसुरचरणा। मोहिजनितसंशयसबहरना।

सिद्धांजनलगायेसेजलथलकेवादूरकेदेशकेआड़नाहीरहतगड़ेगड़
येधनबिनाखोदेदेखपरतहैंजैसेहीआंखनमेंजलगायेसेमायाकीआ
उरहसकतनाही॥ १चौ० ३दो० गुरुपदरजमृदुअरुबंदौसंतस
माजलौं०

टी०
रा० बा०
४

गुरुपदकाआरंभ
कहतहैंगुरुप्रकार
कहतहैंरजकोनहार
स्तनाकोसरला
प्रकृबालपनसमकी
कमूकृपदप्रथमकी
गुरुमानावाहिहि
चाहिकेपदतेंजास
कामप्रबकाथकौं
नमरूपाप्रबतान
कर्मोंसमथप्रथम
कर्मजाविधमादि
कौमलीनताहैसा
नाश्रयनकोसाघु
निधरिरूपधारा
कैधरासाकीविवे
तोंईमलजलरीदूर
कौनहीयातेंसरबास
सरसंगपारुरूपता
धान्नेश्रेहगुरुकेश्रे
जानाघहसर्वज्ञ
पैद्श्रेगुरुरुजानें
कछुजानेवाकामाने
टी० १ दो० १
बंदौगुरुपदपदुम
वासमंजननहीं० १
गुरुकमलवरजसना
नोरूपवंद

सुजनसमाजसकलगुणखानी । करौंप्रनामसप्रेमसुबानी ॥
साधुसरससुभचरितकपासू । निरसबिसदगुनमयफलजासू ॥
जोसहिदुखपरछिद्रदुरावा । बंदनीयजेहिजगजसपावा ।
मुदमंगलमयसंतसमाजू । जोजगजंगमतीरथराजू ॥
रामभगतिजहँसुरसरिधारा । सरस्वतीब्रह्मबिचारप्रचारा
बिधिनिषेधमयकलिमलहरनी । करमकथारबिनंदनिबरनी ॥
हरिहरकथाबिराजतबेनी । सुनतकथामुदमंगलदैनी ॥
बटबिस्वासअचलनिजधर्मा । तीरथराजसमाजसुकर्मा ॥
सबहिंसुलभसबदिनसबदेसा । सेवतसादरसमनकलेसा ॥
अकथअलौकिकतीरथराऊ । देयसद्यफलप्रगटप्रभाऊ ॥

सुनिसमुझहिंजनमुदितमन मज्जहिंअतिअनुराग
लहहिंचारफलअछततनु साधुसमाजप्रयाग ।

मज्जनफलपेखियततकाला । काकहोहिंपिकबकउमराला
सुनिआचरजकरैजिनिकोई । सतसंगतिमहिमानहिगोई ॥
बालमीकनारदघटजोनी ॥ निजनिजमुखनकहीनिजहोनी
जलचरथलचरनभचरनाना । जेजड़चेतनजीवजहाना ॥
मतिकीरतिगतिभूतिभलाई । जबजिहिंजतनजहाँजिहिपाई
सोजानबसतसंगप्रभाऊ । लोकहुबेदनआनउपाऊ ॥
बिनुसतसंगबिबेकनहोई । रामकृपाबिनुसुलभनसोई ।
सतसंगतमुदमंगलमूला । सोईफलसिधिसाधनसबफूला
सठसुधरहिंसतसंगतिपाई । पारसपरसिकुधातुसुहाई ॥

बिबेकनेनिम लकरिप्रद धमब्जलनकी चनहिलनकोटि सोअरुसंतसमा जकोआनंदनोनिमी त्पकरि मु० सा धुचरितसामा धुकाप्रथमनव सनुभकर्मतीक पापनकोओर कपासकेसमानच रितकपासरसमगल तोरहितसाधुबिम परसरहितर्दू श्रीसाधुश्रीमल रहितकपास गुनमयफलअछी नरहैंचितोर्दू सोसबमहतआर हीहैमपरतुहै साधुपरमार्थनः परगुणकारहैंअव कारनहींईश्री गनकेहैअपछिद्र

टी०
रा० बा०
५

औरसाधुपरदोष छिपावतहैंमन हिंअंतर्मुखकाना पमसज्जन मु० काकहोंहिंपिक बकअसुचिभव नकर्मकबकनऊ अतिप्रकाकधर्म रसालभोजनप्रिय कंवलमंगलगति श्रीपितृधर्महरा कागबकासन अमृतकेबिंब कोसंत ॥

बिधिबससुजनकुसंगतिपरहीं फनिमनिसमनिजगुनअनुसरहीं
बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी कहतसाधुमहिमासकुचानी
सोमोसोंकहिजातनकैसे ॥ साकबनिकमनिगुनगनजैसे

बंदौंसंतसमानचितहितअनहितनहिंकोइ
अंजलिगतसुभसुमनजिमिसमसुगंधकरदोइ
संतसरलचितजगतहितजानिसुभाउसनेहु।
बालबिनयसुनिकरिकृपारामचरनरतिदेहु।

बहुरिबंदिखलगनसतिभाएँ जेबिनुकाजदाहिनेहुबाएँ॥
परहितहानिलाभजिन्हकेरे उजरेहरषबिषादबसेरे॥
कहतसुनतपरअघनअघाहीं ज्यौंपृथुरोषसरसजगमाहीं
हरिहरजसराकेसराहुसे परअकाजभटसहसबाहुसे
जेपरदोषलखहिंसहसाखी परहितघृतजिनकेमनमाखी
तेजकृसानुरोषमहिषेशा। अघअवगुनधनधनीधनेशा
उदयकेतुसमहितसबहीके कुंभकरणसमसोवतनीके॥
परअकाजलगितनपरिहरहीं जिमिहिमउपलकृषीदलगरहीं
बंदौंखलजसशेषसरोषा। सहसबदनबरनैपरदोषा।
पुनिप्रनवौंपृथुराजसमाना। परअघसुनैसहसदसकाना
बहुरशक्रसमबिनवौंतेही संततसुरानीकहितजेही।
बंदौंजगनरशक्रसमाना कारिहिउपायकार्यजेहिहना
बचनबज्रजेहिसदापियारा सहसनयनपरदोषनिहारा

उदासीनअरिमीतहितसुनतजरहिंखलरीति

पंक्ति ८ चौपाई
१३ दो॰ १ बहुरि बंदि
खल अरु कहौं
निगमि बखौं॰

दो॰
रा॰ बा॰
६

कृपापूर्वक
लिखनकोबदला
किया॥ * ॥

जानिपानिजुगजोरिजनबिनतीकरइसप्रीति

मैंअपनीदिसिकीन्हनिहोरा	तिन्हनिजओरनलाउबभोरा
बायसपालिअहिंअतिअनुरागा	होहिंनिरामिषकबहुंकिकागा
बंदौसंतअसज्जनचरना ॥	दुखप्रदउभयबीचकछुबरना
बिछुरतएकप्रानहरिलेहीं	मिलतएकदुखदारुनदेहीं
उपजहिंएकसंगजलमाहीं	जलजजोंकजिमिगुनबिलगाहीं
सुधासुरासमसाधुअसाधू	जनकएकजगजलधिअगाधू ॥
भलअनभलनिजनिजकरतूती	लहतसुजसअपलोकबिभूती
साधुसुधाकरसुरसरिसाधू	गरलअनलकलिमलसरिब्याधू
गुनअवगुनजानतसबकोई।	जोजेहिभावनीकतेहिसोई।

दो॰ भलोभलाईपैलहैलहैनिचाईनीचु ॥
सुधासराहीअमरतागरलसराहीमीचु ॥

खलअघअगुनसाधुगुनगाहा	उभयअपारउदधिअवगाहा
तेहितेंकछुगुनदोषबखानें	संग्रहत्यागनबिनपहिचानें
भलेउपोचसबबिधिउपजाये	।गनिगुनदोषबेदबिलगाये
कहहिंबेदइतिहासपुराना ॥	बिधिप्रपंचगुनअवगुनसाना
दुखसुखपापपुन्यदिनराती	साधुअसाधुसुजातिकुजाती
दानवदेवऊंचअरुनीचू ॥	अमिअसुजीवनमाहुरमीचू
मायाब्रह्मजीवजगदीसा।	लछिअलछिरंकअवनीसा।
कासीमगसुरसरिक्रमनासा	मरुमालवमहिदेवगवासा
सरगनरकअनुरागबिरागा	निगमअगमगुनदोषबिभागा

पंक्ति ६ दो॰
छं॰ चौ॰
बंदौसंतअस
ज्जनचरनासब
दुखप्रदउभय
बालौंबीचकछु
बरननकी
आवश्यकता
॥ दी॰
सं॰ ॥
रा॰ बा॰
७

दो· जड़चेतनगुणदोषमय बिश्वकीन्हकरतार
संतहंसगुनगहहिंपय परिहरबारिबिकार

असबिबेकजबदेहिबिधाता तबतजिदोषगुनहिंमनराता
कालसुभावकर्मबरिआई भलेउप्रकृतिबसचुकइभलाई
सोसुधारिहरिजनजिमिलेहीं दलिदुखदोषबिमलयशदेहीं
खलउकरहिंभलपायसुसंगू मिटहिनमलिनसुभावअभंग
लखिसुबेषजगबंचकजेऊ बेषप्रतापपूजियततेऊ॥
उघरहिंअंतनहोयनिबाहू। कालनेमिजिमिरावणराहू।
कियेकुबेषसाधुसनमानू जिमिजगजामवंतहनुमानू
हानिकुसंगसुसंगतिलाहू लोकहुबेदबिदितसबकाहू
गगनचढैरजपवनप्रसंगा। कीचहिंमिलइनीचजलसंगा
साधुअसाधुसदनसुकसारी सुमरहिंरामदेहिंगणगारी॥
धूमकुसंगतिकारिखहोई लिखियेपुराणमंजुमसिसोई
सोइजलअनलअनिलसंघाता होइजलदजगजीवनदाता॥

ग्रहभेषजजलपवनपट पाइकुयोगसुयोग॥
होइकुबस्तुसुबस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग
समप्रकाशतमपाखदुहु नामभेदबिधिकीन्ह
शशिपोषकशोषकसमुझि जगयशअपयशदीन्ह
जड़चेतनजगजीवजुत सकलराममयजानि॥
बंदौसबकेपदकमल सदाजोरिजुगपानि॥
देवदनुजनरनागखग प्रेतपितरगंधर्ब २॥

बंदौंकिंनररजनिचरकृपाकरहुअबसर्ब॥

आकरचारिलाखचौरासी। जातिजीवनभजलथलबासी।
सियाराममयसबजगजानी करौंप्रनामजोरिजुगपानी॥
जानिकृपाकरिकिंकरमोहू सबमिलिकरहुछाड़िछलछोहू
निजबलबुधिभरोसमोहिनांही तातेंबिनयकरउसबपाहीं॥
करनचहौंरघुपतिगुणगाहा लघुमतिमोरिचरितअवगाहा
सूझनएकौअंगउपाऊ ४॥ मनमतिरंकमनोरथराऊ ४॥
मतिअतिनीचऊंचरुचिआछी चहियेअमियजगजुरैनछाछी
छमिहहिंसज्जनमोरिढिठाई सुनिहहिंबालबचनमनलाई
जौंबालककहैतोतरिबाता सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता
हंसिहहिंकूरकुटिलकुबिचारी जोपरदूषणभूषणधारी॥
निजकबितकेहिलागननीका सरसहोउअथवाअतिफीका
जोपरभणितिसुनतहरषाहीं तेबरपुरुषबहुतजगनाहीं
जगबहुनरसरिसरसमभाई जेनिजबाढबढहिंजलपाई॥
सज्जनसुकृतसिंधुसमकोई देखिपूरबिधुबाढहिंजोई॥

दो॰ रा॰ बा॰ ८

दो॰ भागछोटअभिलाषबड़ करउएकबिस्वास
पैहहिंसुखसुनिसुजनजन खलकरिहैंउपहास

खलपरिहासहोइहितमोरा काककहहिंकलकंठकठोरा
हंसहींबकदादुरचातकही। हंसहिंमलिनखलबिमलबतकही।
कबितरसिकनरामपदनेहू तिन्हकहंसुखदहासरसएहू
भाषाभणितिमोरिमतिथोरी। हंसिबेयोगहंसेनहिखोरी।

पंक्ति १०।१० चौ०
१ छंद २ दो १०।
एहिमहरघुपति
अस्यामसरण
सो. नामकेमहा
त्मसेंसबकामन
दो.
रा. बा.
१०
कौसलन ॥
नाथो ॥

प्रभुपदप्रीतिनसमुझिनीकी तिन्हहिंकथासुनलागहिफीकी
हरिहरपदरतिमतिनकुतरकी तिन्हकहँमधुरकथारघुबरकी
रामभक्तिभूषितजियजानी सुनहहिंसुजनसराहिसुबानी
कविनहोउँनहिंचतुरप्रवीना। सकलकलासबविद्याहीना।
आखरअर्थअलंकृतनाना। छंदप्रबंधअनेकविधाना॥
भावभेदरसभेदअपारा कवितदोषगुणविविधप्रकारा।
कवितविवेकएकनहिंमोरे सत्यकहौंलिखकागदकोरे

भणितमोरसबगुणरहितवि[illegible]विदितगुणएक
सोबिचारिसुनिहहिंसुमतिजिन्हकेविमलविवेक

एहिमहरघुपतिनामउदारा अतिपुरणपावनश्रुतिसारा
मंगलभवनअमंगलहारी। उमासहितजेहिजपुत्रिपुरारी
भणितविचित्रसुकविकृतजोऊ रामनामबिनुसोहनसोऊ।
विधुबदनीसबभांतिसवारी सोहनबसनबिनाबरनारी॥
सबगुणरहितकुकविकृतबानी रामनामयशअंकितजानी॥
सादरकहहिंसुनहिंबिधुताही मधुकरसरससंतगुणग्राही
जदपिकविनगुणएकोनाही रामप्रतापप्रगटएहिमाही॥
सोइभरोसमोरेमनआवा ॥ कौनसुसंगबड़ापनपावा ॥
धूमौतजैसहजकरुआई। अगरप्रसंगसुगंधबसाई॥
भणितभदेशबस्तुभलबरणी रामकथाजगमंगलकरणी।

छं. मंगलकरनिकलिमलहरनितुलसीकथारघुनाथकी
गतिकूरकवितासरितकीज्योंपरमपावनपाथकी॥

पंक्ति० ९ चौ० ९ दो० १० १८ मणिमान कम्हृदअनु तालिकधरौं: स्थानविधि काव्यमर्याद बतायौ॥

प्रभुसुयशसंगतिभणितभलिहोइहिंसुजनमनभावनी।
भवअंगभूतमसानकीसुमिरतसुहावनिपावनी २॥
दो· प्रियलागतमम सबहिंअतिभणितरामयशसंग
दारुबिचारकिकरइकोइबंदियमलयप्रसंग २॥
श्यामसुरभिपयबिशदअतिगुणदकरहिंसबपान।
गिराग्राम्यसियरामयशगावहिंसुनहिंसुजान॥

मणिमाणकमुकताछबिजैसी अहिगिरिगजशिरसोहनजैसी
नृपकिरीटतरुणीतनपाई। लहहिंसकलशोभाअधिकाई
तैसहिंसुकबिकबितबुधकहहीं उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं
भक्तिहेतुबिधिभवनबिहाई। सुमिरतशारदआवतधाई॥
रामचरितसरबिनुअन्हवाये। सोश्रमजाइनकोटिउपाये।
कबिकोबिदअसहृदयबिचारी गावहिंहरियशकलिमलहारी
कीन्हेप्राकृतजनगुनगाना॥ शिरधुनिगिरालगतपछताना
हृदयसिंधुमतिसीपसमाना। स्वातीशारदकहहिंसुजाना
जोबरषैबरबारिबिचारू। होहिंकबितमुक्तामणिचारू

युक्तिबेधिपुनिपोहियेरामचरितबरताग॥
पहिरहिंसज्जनबिमलउरशोभाअतिअनुराग

जोजनमेंकलिकालकराला करतबबायसबेषमराला।
चलतकुपंथबेदमगछाड़े। कपटकलेवरकलिमलभांडे
बंचकभक्तकहाइरामके॥ किंकरकंचनकोहकामके।
तिनमहँप्रथमरेखजगमोरी। धिंकधर्मध्वजधंधकधोरी।

दो· रा· बा· ११

पंक्ति १७ १२ चौ० १ दो० १२ जेजन्मेअरु कारधृष्टलौं कलिपाखंडमत कौ अपनी हीन ताकियेचरित्र वर्ननमांडयौ दिखायौ॥

पंक्ति ९०
चौ० ५
श्रो० ३
दो० ॥ ६
अज्ञानत्यागह
अपनेऊसाधेनौ
हरिचरित्रबरन
नकोहेतुभजन
प्रभावईश्वर
एकअनलर्य
हैसोअवतार
भजनहेतुनै
नाकौमुनीश्वर
नजाभांति ब
रघुनाथकीयो
नाहिअनुकूल
श्रीगोसाईजी
अपनोमनइनो
कहिदीनताप्रग
रघुनाथचरित्र
वर्णनकोधीर
करनको अरु
चौ०
१० बा०
१२
सारदशारदा
नहिंअपनीदमलं
आपनेहरिचरित्र
अरुनाममहिमा
कौमहत्तवोध
कियो ॥

जोअपनेअवगुणसबकहऊं बाढैकथापारनहिंलहऊं॥
तातेमैंअतिअलपबखाने थोरेमहँजानिहहिंसयाने।
समुझिबिबिधबिधिबिनतीमोरी कोउनकथासुनिदेइहिखोरी।
एतेहुपरकरिहहिंजेशंका मोहितेअधिकतेजड़मतिरंका।
कबिनहोउंनहिंचतुरकहाऊ मतिअनुरूपरामगुणगाऊ।
कहंरघुपतिकेचरणअपारा कहांमतिमोरिनिरतसंसारा
जेहिमारुतगिरिगगनउड़ाहीं कहहुतूलकेहिलेखेमाहीं
समुझतअमितरामप्रभुताई करतकथामनअतिकदराई

दो॰ शारदशेषमहेशबिधिआगमनिगमपुरान
नेतिनेतिगुणजासुकहि करहिंनिरंतरगान।

सबजानतप्रभुप्रभुतासोई तदपिकहेबिनुरहानकोई।
तहांबेदअसकारणराखा॥ भजनप्रतापभांतिबहुभाषा
एकअनीहअरूपअनामा अजसच्चिदानंदपरधामा॥
व्यापकविश्वरूपभगवाना। तेहिधरिदेहचरितकृतनाना॥
सोकेवलभक्तनहितलागी परमकृपालप्रणतअनुरागी
जेहिजनपरममताअतिछोह जेहिकरुणाकरिकीनकोह
गईबहोरिगरीबनिवाजू सरलसबलसाहिबरघुराजू
बुधबरनहिंहरियशअसजानी करहिंपुनीतसफलनिजबानी
तेहिबलमैंरघुपतिगुणगाथा कहिहौंनाइरामपदमाथा॥
मुनिन्हप्रथमहरिकीरतिगाई तेहिमगचलतसुगममोहिभाई

दो॰ अतिअपारजेसरितबरजोंनृपसेतुकराहिं॥

चढिपिपीलिकापरमलघु बिनुश्रमपारहिंजाइ

एहिप्रकारबलमनहिंदेखाई॥ करिहौंरघुपतिकथासुहाई
ब्यासआदिकविपुंगवनाना। जिन्हसादरहरिचरितबखाना
चरणकमलबंदौंसबकेरे॥ पुरवहुसकलमनोरथमेरे
कलिकेकविनकरौंपरिणामा। जिन्हबरणोरघुपतिगुणग्रामा
जोप्राकृतिकविपरमसयाने। भाषाजिन्हहरिचरितबखाने
भयेजेअहहिंजेहोइहैंआगे। प्रणउंसबहिकपटछलत्यागे
होउप्रसन्नदेहुबरदानू॥ साधुसमाजभणितिसनमानू
जोप्रबंधनहिंबुधआदरहीं सोश्रमबादिबालकविकरहीं
कीरतिभणितिभूतिभलिसोई सुरसरिसमसबकहँहितहोई
रामसुकीरतिभणितिभदेसा असमंजसअसमोहिंअंदेसा
तुम्हरीकृपासुलभसोउमोरे सिअनिसुहावनिटाटपटोरे
करहुअनुग्रहअसजियजानी बिमलयशहिंअनुहरहुसुबानी

टी· रा· बा· १३

दो·सरलकवितकीरतिबिमलसोइआदरहिंसुजान
सहजबयरबिसरायरिपुजोसुनिकरहिंबखान॥
सोनहोइबिनुबिमलमतिमोहिंमतिबलअतिथोर
करहुकृपाहरियशकहौंपुनिपुनिकरहुनिहोरि॥
कविकोविदरघुबरचरितमानसमंजुमराल॥
बालबिनयसुनिसुरुचिलखिमोपरहोहुकृपाल
सो॰बंदौमुनिपदकंजरामायणजिननिर्मयो॥
सखरसकोमलमंजुदोषरहितदूषणसहित॥

बंदौचारौंबेदभवबारिधिबोहितसरस ॥ ॥
जिनहिंनसपनेहुखेदबरणतरघुपतिबिमलयश।
बंदौबिधिपदरेणुभवसागरजिन्हकीन्हजहँ
संतसुधाशशिधेनुप्रगटेखलबिषबारुणी ॥
दो॰ बिबुधबिप्रगुरुबुधचरणबंदिकहौंकरजोरि
होइप्रसन्नपुरवहुसकलमंजुमनोरथमोरि ॥

पुनिबंदौसारदसुरसरिता जुगलपुनीतमनोहरचरिता
मज्जनपानपापहरएका। कहतसुनतएकहरअबिबेका
गुरुपितुमातुमहेशभवानी प्रणऊंदीनबंधुदिनदानी ॥
सेवकसखास्वामिसियपीके हितनिरुपधसबबिधतुलसीके
कलिबिलोकिजगहितहरगिरजा शावरमंत्रजालजिनसिरजा
अनमिलआखरअरथनजापू प्रगटप्रभावमहेशप्रतापू।
सोउमेशमोपरअनुकूला। करौंकथामुदमंगलमूला।
सुमिरिशिवाशिवपाइपसाऊ। बरणौंरामचरितचितचाऊ
भणितिमोरिशिवकृपाबिभाती शशिसमाजमिलिमनहुसुराती
जोयहकथासनेहसमेता॥ कहिहहिंसुनिहहिंसमुझसचेता
होइहहिंरामचरणअनुरागी कलिमलरहितसुमंगलभागी

दो॰ सपनेहुंसांचहुमोहिपरजौहरगौरिपसाउ।
तौफुरहोउजोकहउसबभाषाभणितिप्रभाउ ॥

बंदौअवधपुरीअतिपावनि सरजूसरकलिकलुषनसावनि
प्रणऊंपुरनरनारिबहोरी। ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी

टी॰
रा॰ बा॰
२४

पंक्ति २०।
चौ॰ २८ सो॰ २
दो॰ १। २८।
बंदौअवधपुरी
अरुगिरापूर्थ

चौं॰ श्रीअयोध्या
सरजूपुलाहि
[illegible]बंदना।
प्रभुहिंजिनपरछु
नायकोगृहस्नेहसीता
जनकोनिंदकाजनका
नाहकौनिरपराध
कियाग्रह

सियनिंदकअघओघनसाए लोकबिसोकबनाइबसाए।
बंदौंकौशिल्यादिशिप्राची कीरतिजासुसकलजगमांची।
प्रगटेउजहँरघुपतिशशिचारू बिश्वसुखदखलकमलतुषारू
दशरथराउसहितसबरानी। सुकृतिसुमंगलमूरतिखानी
करौंप्रणामकरममनबानी करहुकृपासुतसेवकजानी
जिनहिंबिरचिबड़भयउबिधाता महिमाअवधिरामपितुमाता।

बंदौंअवधभुआलसत्यप्रेमजेहिरामपद ॥
बिछुरतदीनदयालप्रियतनतृणइवपरिहरेउ

प्रणवौंपरिजनसहितबिदेहू जाहिरामपदगूढसनेहू।
योगभोगमहँराखेउगोई रामबिलोकतप्रगटेउसोई
प्रणवौंप्रथमभरतकेचरणा जासुनेमब्रतजाइनबरणा।
रामचरणपंकजमनजासू लुब्धमधुपइवतजैनपासू
बंदौंलक्ष्मणपदजलजाता सीतलसुभगभक्तसुखदात
रघुपतिकीरतिबिमलपताका। दंडसमानभयोयशजाका।
शेषसहस्रसीसजगकारण सोअवतरेउभूमिभयटारन
सदासोसानुकूलरहुमोपर कृपासिंधुसौमित्रिगुणाकर
रिपुसूदनपदकमलनमामि सूरसुशीलभरतअनुगामी
महाबीरबिनऊंहनुमाना रामजासुयशआपुबखाना।

सो॰ बंदौंपवनकुमारखलबनपावकज्ञानघन
जासुहृदयआगारवसहिंरामसरचापधर ॥

कपिपतिऋक्षनिशाचरराजा। अंगदादिजेकीससमाजा।

स्त्रुगोन्हि
कौशिल्याकी
मित्रा स्त्री
रथ ८ लक्ष्य
कथा प्रजा प
रिवार गुरुश्च
भरतादि
भ्राता श्रु
हनुमान २
सुग्रीव बि
भीषन अंगद
हितवेंकीय
अस्तेमभके
भास्तनकादि
नारदादि
ऋषिनके
अनस्त्रीराम
जानकीजन्मों
अभेदनिरूपन
कियोबिनकी
टी॰
रा॰ बा॰
१५
मानराज्जिनाम
प्रथ्वै
१८

निधानसो राम नाम ज्ञान वैराग्य आदि गुनकी निधि है मानि जापक लोग मुमा शखपरत है २ मू॰ महामंत्र टी॰ जो है महामंत्र को मंत्रराज यज पत हैं अरु काशी ऐसे सिद्धपीठमों अनेक जीवन को मुक्ति हेतु है या को प्र॰ मानराभनापनो पनि बस्में हैं ३ मू॰ महिमा जासु टी॰ जो है नाम की महिमा को गणेशजू जानतु हैं नाम महिमा के प्रतापतें सबन में प्रथम पूजा पावत हैं यह कथा सब कोऊ बिग्रह है ताते ब्रह्मा तें पूछो अब पूज्य कौन ब्रह्मा कहो जो सर्वभुवन के परि

बंदौं सबके चरण सुहाये अधम शरीर राम जिन पाये १ ॥

रघुपति चरण उपासक जेते	खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
बंदौं पद सरोज सब केरे ।	जो बिनु काम राम के चेरे २॥
शुक सनकादि आदि मुनि नारद	जे मुनिबर बिज्ञान बिशारद ॥
प्रणऊं सबहिं धरणि धर सीसा	कर हु कृपा जन जानि मुनीसा ॥
जनकसुता जगजननि जानकी	अतिशय प्रिय करुणा निधानकी
ताके युग पद कमल मनाऊं	जासु कृपा निर्मल मति पाऊं ४॥
पुनि मम बचन कर्म रघुनायक	चरण कमल बंदौं सब लायक
राजिवनयन धरे धनु सायक	भक्त बिपत्ति भंजन सुखदायक

दो॰ गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ॥
बंदौं सीताराम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न १ ॥

बंदौं राम नाम रघुबर के १ ॥	हेतु कृशानु भानु हिमकर के ॥
बिधि हरि हर मय बेद प्राण से	अगुण अनूपम गुण निधान सो
महामंत्र जो जपत महेसू ॥	काशी मुक्ति हेतु उपदेसू २॥
महिमा जासु जान गणराऊ	प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदि कबि नाम प्रतापू ॥	भयउ शुद्ध करि उलटा जापू ॥

णा प्रथम करि आवै तब सब धाए गणेश जू गैल भारी अरु मूषा बाहन बिचारि राम लिखि प्रदक्षिणा कियो ताते प्रथम पूज्य भए यह कथा बिस्तार पद्मपुरान मों ४ मू॰ जान आदि कबि टी॰ का। आदि कबि बालमीक जू नाम प्रताप जानतु हैं मरा मरा जपि शुद्ध भए यह कथा बिस्तार पूर्वक अध्यात्म के अयोध्याकांड मों ॥ ५ ॥

दी॰
रा॰ बा॰
१६

चौ॰ कि॰ १ मू॰ सहसनाम टी॰ याको प्रमाण पद्मपुराण शिव [illegible] भोजन कियो ८

अरु सावन अरु भादौं मास हैं भाव यह कि सावन भादौं बरषा के बारह मास मों सार हैं तैसे ही भक्ति को सार दोनों अक्षर ९ मू॰ आखर मधुर॰ टी॰ अब दोउ अक्षरन को गुन कहत हैं दोउ आखर मधुर उचार में अरु फल में मनोहर गुन तें अरु अर्थ तें । बरनन टी॰ । इन जिय मों जो बिचारि देखु ये दोऊ आखर सब अक्षरन के बिलोचन हैं आठौं वर्ग के वर्ण सरस्वती के अष्टांग हैं चरनन के क्रम में रकार मकार दोऊ नेत्र स्थान में हैं या ही तें बरन बिलोचन कहे १० सुमिरत टी॰ कैका नाम मंत्र जप में कठिन जैसे काकुत्स्थ अरु ए दोऊ सुमिरत सुलभ हैं गायत्री आदि मंत्र में सब को अधिकार नहीं राम नाम में जाति पांति को भ्रम नहीं एहि हेतु तें सुखद सब काहू काहीं कै कर्म अलोक में लाभदाई ए दोउ लोक में धन यश सुखदाता अरु परलोक मों निबाहु कहे बिषय कथा अरु नाहू येना आदि कथा ॥ ११ ॥

सहसनाम सम सुन शिवबानी । जपि जेइ शिव संग भवानी ।
हरषे हेतु हेरि सबही को ॥ किय भूषन तिय भूषन ती को ।
नाम प्रभाव जान शिव नीको । कालकूट फल दीन्ह अमी को ।

दो॰ बरषा ऋतु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
रामनाम बर बरण युग श्रावण भादौं मास २ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ ॥ बरण बिलोचन जन जिय जोऊ ।
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू । लोक लाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके । रामलषन सम प्रिय तुलसी के ।
बरणत बरण प्रीति बिलगाती । ब्रह्मजीव सम सहज संघाती ।
नरनारायण सरिस सुभ्राता । जगपालक बिशेष जनत्राता ॥

कहत सुनत टी॰ तौ प्रिय भासतु हैं परंतु समझ में फल निषिद्ध ए दोउ अक्षर कहत अरु सुनत अरु अर्थ के समुझत अति नीके हैं अरु मो कों तौ रामलषन सम प्रिय हैं १२ बरनत टी॰ रा अरु म दोऊ अक्षर तिनके स्थान प्रयत्न आकार अर्थ ए सब भिन्न २ बरनन की प्रीति परस्पर छूटी सी देखातु है परंतु हैं तौ दोऊ ब्रह्म जीव की नांई निरंतर प्रेमी जैसे ब्रह्म बिना जीव नाहि रहि सकत अरु ब्रह्म बिनु जीव हेतु ए यह नाम शब्द को है म यह नाम अर्थ ज्ञान को है ए दोऊ अर्थ अरु शब्द बिलग कबहूं नहिं देखे तैसे दोऊ आखर सहज सुभाव बिलगन हीं हैं १३ नरनारायण टी॰ जैसे नरनारायण दोऊ भाई सदा एक जगह रहिके असुरन को मार धर्म बल तें जगत की रक्षा करतु हैं अरु जप तप के बल तें साधुन को बिशेष रक्षा करतु हैं तैसे ई रकार मकार धर्म के बल तें सब जग पालक अरु जापक जन के बिशेष रक्षक हैं ॥ ॥ १४ ॥ ॥ ॥

मू॰ हर्षे टी॰ [illegible] देखि रामनाम [illegible] पार्वती को [illegible] कै तिया को प्राण भूषन कियो [illegible] कहैं शिव के भूषन [illegible] तिय भूषन [illegible] को भूषन [illegible] ७

टी॰ रा॰ बा॰ ९

मू॰ कालकूट टी॰ प्रमाण मत्स्य पुराण समुद्र मथन बिष प्रगट भयो ताकी ज्वाला तें [illegible]

[illegible]

[illegible] मू॰ जगत

हितहेतु जगत

हितविमलबिधु

अरुरवीहैंदोय

चरणकौपद

सतोगुणबढावैरि

जगतकोपालै

तहँजैसेहीरवि

रमकारविमल

बिशेषराको

भावराऊधर

नादरहिमति

मलबढ़दूरेवो

प्रकाशवोबाढ़े

करोनामके

टी॰ रा॰ बा॰ १८

प्रतापकाकाल

कौमलबाधान

शंकरमु ॐ

मू॰ स्वादतोष

टी॰ जैसेअमृत

स्वादअरुतोष

सारहेतावको

अधपायासगाय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्वादहिअरुतोष

रसाके

को

जीभजसोदाकेश्रीकृष्णबलरामसमप्रियहैंहरिहलधरलेंबौवसापालन जसलोभकृपादिजसोदाकेभएतैसहीरहाजानौं १७ दो॰ टी॰ एकछत्र॰ छत्रजैसेमाथेपरराजतहैतैसेहीरकारसबअक्षरकेमाथेपरअरुमकारमुकुटमणिजैसेबिंदुरूपतैंसबपरसोहतहै प्रथमवंदौंअवधपुरीइत्यादिलेइकैधामअरुरूपबंदनाकरिपुनःबंदौंनामरामरघुबरकेइत्यादिनामबंदनारंभकियोनाममंत्रकोअर्थकह्योपुनःमहेशगणेशआदिभक्तनकोधारणनाममहात्मकोपुनःआखरमधुरमनोहरदोऊइत्यादिप्रकारतेंदोऊअक्षरकोलोकपरलोकसाधकत्वकह्योअरुनामअरुनामीकेसबभावकोसबउपासनाग्रंथनकेअविरोधअर्थकहतहैंअरुनिर्गुणसगुणदोऊअक्षरतेंनामकीअधिकताकहतहैं १८ समुझत॰ टी॰ जोसमुझकैदेखैतोनामअरुनामीकोदोनोंबरारूपईदोनोंसमहैंकैसेनामीमेंजोगुणहैंतेईगुणनाममेंहैंयातेंसदृशजानियेंअरुदोऊकीपरस्परप्रतिसयप्रीतिनामबिनुनामीअरुनामीबिनुनामएकौ

भक्तिसुतियकलकरणविभूषण। जगहितहेतुबिमलबिधुपूषण॥
स्वादतोषसमसुगतिसुधाके। कमठशेषसमधरबसुधाके॥
जनमनमंजुकंजमधुकरसे। जीहजसोमतिहरिहलधरसे॥

एकछत्रएकमुकुटमणिसबबरणनपरजोउ॥
तुलसीरघुबरनामकेबरणबिराजतदोउ २॥

समुझतसरिसनामअरुनामी। प्रीतिपरस्परप्रभुअनुगामी॥
नामरूपदोईईशउपाधी॥ अकथअनादिसुसामुझसाधी॥
कोउबड़छोटकहतअपराधू। सुनिगुणभेदसमुझिहैंसाधू॥
देखियरूपनामआधीना। रूपज्ञाननहिंनामबिहीना॥
रूपबिशेषनामबिनुजानें। करतलगतनपरहिंपहिचानें।

क्षणबिलगनाहींरहतअरुअतिप्रीतिकोलक्षणपरस्परदोऊप्रभुअनुगामीहैंकोऊसमअरुनामअरुकोऊसमैंनामीनामअनुगामीनामरूपदोऊ टी॰ नामअरुरूपएदोऊईसकहीसंसारतेंपारकरैसमर्थएहीसबउपासनाग्रंथनकोनीकसिद्धांतउपाधीअकथदोऊमेंपरस्परन्यूनअधिकभावउपाधिकहैकौनचाहीहैतुदोऊअनादिहैंनामपहलेवारूपईवातकोऊनहींकहिसकतएहिवातैंबेरषुरुषआदिसमुझकैसाधीहै। २०। कोबड़छोट॰ टी॰ दोऊमेंबड़छोटकहियेमहाअपराधएहीरीतितेंबास्तविकशास्त्रसिद्धांतकहैकोअबकेवलभक्तनकेउपासनाअनुसारअरुकलिमेंनामीतेंनामकोप्रभावअधिकसमुझनिजभावकेअनुकूलसिद्धांतकहतुहैंसुनगुन टी॰ नामीतेंनामकेअधिकगुनसुनके २१ देखिय टी॰ हैंतोदोऊसमानपरंतुलोकमेंनामकोहिकेबोलावेतोरूपचलोआवतुहै दूसरेनामकोअर्थजानेबिनारूपकोज्ञान

चारुअरुमंजुमयमिटैतौषदोऊकेरूपसेगंधारवरहै॰ मू॰ कमठशेष॰ टी॰ सबकोआधारबसुधापृथ्वीताहिकोआधारकमठशेषजैसेहैंतैसेहीसबजगतकाआधारधर्मीतिनकोआधाररकारमकारहैं १६ मू॰ जनमन॰ टी॰ जननकेमनरूपसुन्दरकमलपरलोभीभ्रमरजैसेदोऊअक्षररहतहैंभावकंजकेशोभाभ्रमरतेंजैसेहीकमलनकेशोभानामतेंजन

पं.१ सुमिरियटी० रूपजदपिनहींदेखोतदपिबिशेषसनेहतेनामकेसुमरतरूपचलोआवतुहैहृदयमेंवानाममेंरूपकोविशेषसनेहहैताते नामकेसुमरतरूपचलोआवतहैमंत्रकेआधीनदेवतायहबातमंत्रशास्त्रमेंअरुमीमांसामेंप्रसिद्धहैअरुलोकमेंतोप्रत्यक्ष २३ नामरूपटी० जदपिनामअरुरूपदोउकेगुनकीकथाकहिवेसोंनहींआवतसमुझमेंसुखदहैतपपिनाममोंअधिकगुन २४

अगुन [illegible] गुनटी० निर्गुणसगुन [illegible] कोनाम [illegible] भाषी [illegible] टी०

जीवब्रह्मकीएकतायोगकहावतहैलोमससनकादिज्ञानीभक्त २७ जानीचहहिंटी० गूढगतिकहींब्रह्मस्वरूपकीजोजानोचहतहैंतेजोजिज्ञासुभक्तजीहतेनामजपिजानतहैंगूढगतिकहींसबमेंउपगम्लृगतौधातुभावमेंप्रत्ययगतिशब्दब्रह्मस्वरूपवाचकहैइहांउद्धवआदिजिज्ञासुभक्तकहे २८ साधकटी० जिनअर्थसाधकअर्थार्थीभक्तहुलयलगायेनामजपिअणिमामहिमाआदिसबसिद्धपाइकेसिद्धहोतहैंइहांसुग्रीवबिभीषणादिअर्थार्थीभक्तकहे २९ जपहिंनाम टी० आरतभक्तकोनामजपतहैंतिन

सुमिरियनामरूपबिनुदेखे। आवतहृदयसनेहबिशेषे॥
नामरूपगतिअकथकहानी। समुझतसुखदनपरैबषानी॥
अगुनसगुनबिचनामसुसाषी उभयप्रबोधकचतुरदुभाषी॥

दो. राममाममणिदीपधरुजीहदेहरीद्वार॥
तुलसीभीतरबाहरहौंजोचाहतउजियार २१॥

नामजीहजपिजागहिंजोगी। बिरतिबिरंचिप्रपंचबियोगी॥
ब्रह्मसुखहिंअनुभवहिंअनूपा। अकथअनामयनामनरूपा॥
जानाचहहिंगूढगतिजेऊ। नामजीहजपिजानहिंतेऊ॥
साधकनामजपहिंलयलाये। होंहिसिद्धअणिमादिकपाये॥
जपहिंनामजनआरतभारी। मिटहिंकुसंकटहोंहिंसुषारी॥
रामभक्तिजगचारप्रकारा॥ सुकृतीचारिउअनघउदारा॥
चहूंचतुरनकहँनामअधारा। ज्ञानीप्रभुहिंबिशेषपियारा॥
चहुंयुगचहुंश्रुतिनामप्रभाऊ। कलिबिशेषनहिंआनउपाऊ॥

केभारीकुसंकटमिटतहैंअरुसुखीहोतहैंइहांगजेन्द्रद्रोपदीआदिआरतभक्तकहे ४ एहिबिधितेरामभक्तचारप्रकारकेहैंचारोंसुकृतीअरुपापरहितउदारचतुरहैंचारिउकोनामहीकोअधारहैतिनमेंज्ञानीभक्तप्रभुकोअतिप्रियहैंप्रभुकोगीतामेंज्ञानीअधिकस्वरूपतअरुप्रयोजनअन्यसबात्मदृष्टिआपरहनामनारायणहैंतातेंअधिकप्रियकह्यौ। कलिबिशेषटी० कलिमेंनामकोप्रभावबडोआनउपाययोगजज्ञजपतपआदियथार्थनहींबनतअथवाचारोंयुगकोव्यवस्थालिखीहैऔरचारोंवेदोंनामसंमतसमानआयोकलिपायमयजोगनकोबिशेषनामहीभयजनायोअर्थातसर्वकाठिन्यत्यादिकलिकेपरत्वसूचनाकियोपरंतुसोकालकोसमानजानिवोउत्तमहैयातेंअधर्मकीव्यापतातेबचतहै ३०

ताजनायेयातेंमनिदीप कह्यो २६ अबज्ञानीजिज्ञासुअर्थार्थीआरतप्रेमीचाविधिभक्तनकेरामनामहीतेंसबप्रयोजनकीसिद्धिअरुअतएवजिनकेनामपरायणतागावतहैनामजीहटी० बैराग्यबलकरिविधिरचितसंसारतेंवियोगीजोजोगीज्ञानीहैंतेऊजीहतेनामजपिभवनिसामेंजागतहैंअरुनामकेप्रसादसुखस्वरूपब्रह्मकोअनुभवकरतहैंअनूपआदिविशेषण [illegible] ज्ञानीकोना

[illegible] रथात्मजको [illegible] रामः [illegible] बाधकहैं [illegible] रामनाम [illegible] टी० हृदयमें [illegible] रामनाम [illegible] दीपक [illegible]

जोदोउनकोकोउनजानतोअरुनदोउहाथलगतुआशंकानहुकापिल
व्यासजैमिनिआदिकआचार्यनकोउचितनुमतोभाषतकविकेगौवनु
म्हारोसबतेबिलक्षणमतअनुचितसमाधान ॥ ३३ ॥ प्रौढ़ि
सुजन टी॰ सुजनलोगदासकीप्रौढ़िकहीनबरईमहत्वजानेमोरेमन
कीनाममोऐसीप्रतीतिप्रीतिरुचिभईहैसोकहतुहौंदेखावस्वभाव
प्रतीतिगुरुउपदेशतेंप्रीतिरुचिपूर्बजन्मकेसुकृततेंभैमनवारोनाहिं
श्रीगोसांईजूकोदैन्यघाटहैतातेंमोरमनकोअर्थयहीकरनोसुजनैसे
सकलसाधनहीनदीनजीवनकेसम्मतमोंनामदोऊनतेंबड़ोहैयहसि
द्धांतसंदेहनाहीं।अबप्रथमनिर्गुणतेंनामअधिक ३४ एकदारुगत॰
टी॰ दोउब्रह्मकोबिबेकहिनिर्णयअग्निकेसमएकआगिगुप्तकाष्ठ

दो॰ सकलकामनाहीनजेरामभक्तिरसलीन ॥
नामसुप्रेमपियूषह्रदतिनहुँकियेमनमीन॥

अगुणसगुणदोउब्रह्मस्वरूपा।अकथअगाधअनादिअनूप

मोरेमनबड़नामदुहूंते * ॥
प्रौढ़िसुजनजनजानहिंजनकी
एकदारुगतदेखियएकू ॥
उभयअगमयुगसुगमनामतें
व्यापकएकब्रह्मअबिनासी
असप्रभुहृदयअछतअविकारी
रामनिरूपणनामयत्नतें * ॥

कियेजेहियुगनिजबसनिज
कहहुप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी
पावकयुगसमब्रह्मबिवेकू
कहहुनामबड़ब्रह्मरामतें ॥
सत्चेतनघनआनंदरासी * ॥
सकलजीवजगदीनदुखारी
सोउप्रगटतजिमिमोलरतनतें

मोएकअग्निप्रत्यक्षघरमोंदेखियतुहैदूनोंनामैतेमिलसकतुहैंतैसेई
नामबिनदोउब्रह्मअगमअरुनामतेंदोऊमिलसकतुहैं ३५ व्यापकएक
टी॰ व्यापकआदिविशेषणयुक्तब्रह्मकेहृदयमोंरहतुबिनजानेसबजी
वदीनदुखारीनामनिरूपनतेंनामकोअर्थसमुझेतेंअरुनामकेजपनतेनि
रन्तरजपनेसोऊआनंदरूपब्रह्मप्रगटतहैजैसेरतनकोमोलरतनैमोंअलख
रहतपरंतुजबरतनकोनामकहैंऔररतनमेंमिलायतौलतेजआदिग
ननतेदेखेतबताकोमोलप्रगटतहै ॥ ३६ ॥

टी॰ सबलय॰ श्रुति [illegible] रहितमोक्षबल राममक्तिरसको लयलीनतैदोउ नैमिषहेप्रेमभयो अमृतकुंडतिषुमन कीमानकुंडतेले [illegible] प्रेमीभक्तमेंहैहै महाबीरआदि हैगीताकेमङउ कुलप्रपन्नचारम कहलतेप्रेमी भक्तसबनहीं लिखेहेतुयहअ करादृगीताको अर्थातहैंगीतामें सुखचारपचम उत्तमसोईतीनमध्य कारविचारणियो उत्तममुसरतो देकामोंसानीच भरतबौधयहस लकोव्याख्याम वकारान्प्रभक्तो दियहपंचमक तीप्रमआपनो

दो॰ रा॰ बा॰ २०

पंचविधभक्तपद यहसमपनदिंहम हीनापुनःकामना नउदयातेरामयुग कीचाहकामनाहो वैराग्यप्रेमके दासगुणहोजआ तोनामकीआदि कनाकहतेहैं॥ कोसमब्रह्मटी॰मोरे मतमोंनामदुहुँ ब्रह्मतेंबड़ोहै जेननामनिजबल मेदोउब्रह्मकोब शकीनारामध्रुव नामप्रभावनेकेव बातेंसत्वहितेक [illegible] आयुनब्रह्मकोनाथ कारामतेंसबनहत रामएहिबिधिअथ कैवलतेयोगद लिकारनिर्गुनब्र तनबाधककथरत सैनामपुनाब्रह्म कोमबरकीआनो नामराब्रह्म नतेनो

दोहाटी० निर्गुनतेंइ०या भांतिनिर्गुनतेंना मबड़ाकह्योसगुन रामतेंबड़ानिजवि चारनिजअनुसार कहतउक्तिजैसी भांतिनामकी नामयांकहेंहैं २ रामभक्तटी०राम केभक्तनकेहितनर तनुधारिकेअनेक संकटसहसाधुसु खीकियेअरुनाम कोसज्जनजपतेंनाम अनायासभक्तलोग मुदमंगलको बासहोतहैजैसि ऋषिअपनाकोश्रा पदेनतनधरन अनेकसंकटभन गवनुआदिकौसहि रहीनामसोंजपतेंस कहेबिनाअनायास अनेकजीवनको उद्धारकियेरामरत बिस्वासपदचाहिए

विशेषता।प्रथमऋषिदूसरेगुरुसंबंधीजेव्याहसाधकताड़काएक
सुनयोरिकाप्रनऊइतामोहिंमारीचबचिगयोयाहेतुगोसांईजीविवाकी
महत्वोलिषतीजैसेउईवारोमारीचबाकीरहगयोयहध्वनिनामप
रमोंदासअरुताड़कातेंआगेनामअनेकदुराशाकेउत्रअनेकदुख
सेनअरुरविजैसेअनायासनास २ भंजेउ टी० उहांआपबेभ्रमतें
भवमहादेवकोचापभंगकियेइहांआनिदुस्तरसंसारभयतापप्रताप
मनुआपनामयहाबिसेषदंडकबनइहांएकजनकेअनेकमनबन

दो·निर्गुनतेंइहिभांतिबड़नामप्रभावअपार
कहहुंनामबड़रामतेंनिजबिचारअनुसार २॥ दो

रामभक्तहितनरतनुधारी सहसंकटकियेसाधुसुख
नामसप्रेमजपतअनयासा भक्तहोहिंमुदमंगलबासा
रामएकतापसतियतारी। रामकोटिखलकुमतिसुधारी
ऋषिहितरामरामसुकेतसुताकी सहितसेनसुतकीन्हबिबा चौ
सहितदोषदुखदासदुरासा। दलइनामजिमिरविनिसिनास
भंजेउरामआपभवचापू। भवभयभंजननामप्रतापू॥
दंडकबनप्रभुकीन्हसुहावन जनमनअमितनामकियपावन
निसिचरनिकरदलेरघुनंदन॥ नामसकलकलिकलुषनिकंद

शबरीगीधसुसेवकनिसुगतिदीन्हरघुनाथ॥
नामउधारेअमितखलबेदबिदितगुणगाथ

निसिचरनिकरखरदूषणआदिराक्षसवंदरामजूमारेतरुपिबहुतरह
गणनामतोकालिकेसकलपापकोनासकरैहैं ॥ ४ ॥ शबरीगीध·
टी० उहांसुंदरसेवककअरुगिनतीमोंद्वैइहांखलअरुअनेकबेदमों
इत्यादिनामकीअनंतकथाप्रसिद्धहै ॥ २४ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥

रामभएअग्रराम एकतापसतिय तारीइहांबिलवैं कहलरामतेंनाम बड़ाईहैतनक तेविचारकरवाके अर्थकोविचारहै प्रथमकेईचरण मांनामकौजान हैयहबातहैलहत बुद्धिमानजानैं १ रामएकटी०इहांतो यहइहांकहलइहां [illegible] कजुगौतमकहि विशेष २ टी० सोबिहिगा टी० विश्वामित्रकै हितहेतुउरामजी सुकेतयक्षकी बेटीताड़का कोबीनाड़कातो सेनाअरुमारीच सुबाहुउनमाहि नबिबाधकीये इहांनामखलनकौ [illegible] [illegible] बनबाहिरहतें कैसेरविकुलनाथ [illegible]

दो॰ टी॰ ब्रह्मतें अरु रामजूतें याही विधि नाम बड़ो है बरदायक ब्रह्मादिक देवता तिनहू को बरदेन हार नाम है अरु रामचरित सत कोटि को जीन सार रामयश नाम है ऐसो ज्ञान के महेशजू तीनों लोक मों बांट कै यही दो अक्षर आप लिये तेंतीस तेंतीस कोट प्रथम बांटे पुन: तीनों लोक मों ३३ ।।।। लक्ष आने ही एही रीतसे ३ अक्षर शिव आप लिये से समुझो २५ दो॰ ब्रह्मतें नाम बड़ो कह्यो अब पुन: भक्तन द्वारा नाम को महत्व कहतु हैं १ नाम प्रसाद टी॰ शिवजू नाम कर तें अविनासी कही अमर भए अरु छार समीन रकपाल गज चर्म धतूर आदि अमंगल की राशि सब सामिग्री मंगलराशि भई रकार मकार संबंध तें छार आदि साज धारना किये शुकस्वयुवान

रामसुकंठ विभीषण दोऊ ॥ राखे सरण जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे । लोक बेद बर बिरद बिराजे ।
राम भालु कपि कटक बटोरा । सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ।
नाम लेत भव सिंधु सुखाहीं । करहु बिचार सुजन मन माहीं
राम सकुल रण रावण मारा । सीय सहित निज पुर पगु धारा
राजा राम अवध रजधानी । गावत गुण सुर मुनि बर बानी
सेवक सुमिरत नाम सुप्रीते । बिनु श्रम प्रबल मोह दल जीते
फिरत सनेह मगन सुख अपने । नाम प्रसाद सोच नहिं सपने ॥

दो॰ ब्रह्मनाम तें राम बड़ बरदायक बरदानि ॥
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेश जिय जानि

राम प्रसाद शंभु अविनासी । साज अमंगल मंगल रासी ॥
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी । नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी ।
नारद जानेउ नाम प्रतापू । जगप्रिय हरि हर हरि प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू । भक्त सिरोमणि भे प्रहलादू ।

अवस्था ग ककी निसदा समीप तो को छल में नाहीं आवत नातें प्रथम नाम कह्यो या ग कन ते रके बालपन रहे वासनका रिक बरमांगत तें पाछि गनाय ब्रह्मसुख ब्रह्मानंद में लयलीन २ जगप्रिय टी॰ जगत के प्रिय तो हरि हर अरु विष्णु शिव के प्रिय नारद विष्णु प्रिय प्रसिद्ध शिव प्रिय मों प्रमाण आते प्रिय जानि महेश सिषाए प्रह्लाद भक्त सिरोमणि प्रथम पाण्डव गीता प्रह्लाद नारद धारा

टी॰
रा॰ बा॰
२२

५

प्रधाननाकहतुहैं २ ध्यानप्रथमजुग टी॰ सतजुगमोंध्यानप्रधानत्रेतामों
विधिपूर्वकयज्ञकरनोद्वापरमोंपूजातेंप्रभुकापरतोषकलिमेंकेवलनाम
कोआधारहैसोहैकलिआपमलिनऔरनकेपापकोमूलजडपापकेसमुद्र
मोंमनमीनऐसेकरालकलिमेंनामसबमनोरथपूरेकरेकोकल्पवृक्षहैअस
सुमिरेतेसबसंसारबंधनकानेहारोअरुवांछितदाताहितपरलोकहूको
मित्रअरुयहलोकमेंतोपितुमातासुखपालक ३ नहिंकलि टी॰ कलिमों
सांगोपांगकर्मनाहींअनतुनवधा१प्रेमा२परा३तीनोंभक्तिदुर्लभहैतुमनावि
षैलंपट बि बेकजथारथआत्मबोधसोज्ञानाहींहैतुगुरुशिष्यदोउरागीता
नेएकेरामनामआधारआसंकाबेरखोतीनोंकाउमिसेनामपरभीकलिका
लविघ्नकरैगोसमाधानकपटनिधानकलिकालनेमीअसुरहैताकेनासकोरवै

ध्रुवसगलानिजपेउहरिनामू । पायेउअचलअनूपमठामू
सुमिरपवनसुतपावननामू । अपनेबसकरराखेउरामू ॥
अपतुअजामिलगजगणिकाऊ । भएमुक्तहरिनामप्रभाऊ ॥
काहउकहांलगिनामबड़ाई ॥ रामनसकहिंरामगुणगाई

रामनामकोकल्पतरुकलिकल्याणनिवास ।
जोसुमिरतभयेभांगतेंतुलसीतुलसीदास २ ॥

चहुंजुगतीनकालतिहुंलोका । भएनामजपिजीवबिशोका ।
बेदपुराणसंतमतएहू २ ॥ सकलसुकृतफलनामसनेहू
ध्यानप्रथमजुगमखजुगदूजे । द्वापरपरितोषनप्रभुपूजे ॥
कलिकेवलमलमूलमलीना । पापपयोनिधिजनमनमीना
रामनामतरुकालकराला । सुमिरतशमनसकलजगजाला
रामनामकलिअभिमतदाता । हितपरलोकलोकपितुमाता
नहिंकलिकर्मनभक्तिबिबेकू । रामनामअवलंबनएकू २ ॥
कालनेमिकलिकपटनिधानू । नामसुमतिसमरथहनुमानू ॥

रामनामनरकेसरीकनककशिपुकलिकाल ॥
जापकजनप्रह्लादजिमिपालहिंदलसुरसाल ।

रामनामसमर्थहनूमानहै ८ दो॰ टी॰ नरकेसरीनरसिंहजूकनककशि
पुसुरसालसुरनकेसालवेवारोयहहिरण्यकशिपुकोबिशेषणकलिहै
विधितेंजीवनकोमारतहैकपटतेंऔरनिसंकअत्यन्तहोतोहिहैतुहैरूपक
२७ औरमंत्रतेंइहांन्यासध्यानादिनियमनाहीं॥ ॥ ॥

ध्रुवसगला
नि टी॰ ध्रुवकी
ऐमातानिजमा
तासुनीतिअरु
खिभिमातातें
कियाअपमान
तागलानितेंध्रुव
नामजपअचल
हरिधामपायो
अरुपवनसुतप
बिननामजापु
रामजूकोबसकी
कोप्रमाणविनय
पत्रकाहूसों
नकछुरिनिया
होंधनकजपत्र
लिखाअंशरती
प्रपातिपतितम
यहांतेंरहितप
तितअजामिल
आदि ।। रामन
सकहिंरामगुन
गाई। टी॰।
रामजूनातिया
लकैहिंदगुरा
नामकीमहिमा
अनंतकहतहैं
बेदकीमर्यादा
कैसेलोंडेवानि

जनामकीप्रसंसामें
अमृतकहिलगाहिं
बनहूवारामजीन
कैरानसंकीनकों
रामअगुनकेहैं
कोसामर्थनहीं ।।
दोहा । अवनाम
कैअर्थीभलाईके
तनकैनामप्राय
नैतुलसीदासभांग
तैंतुलसीभयाद्रव
औकोतिभाव
भांगस्वगाहु
सेपूज्यपावन
मैंबोधभयेन
गोविंदनगाउ
भौ २६ ॥
कैहुग टी॰
तीनकालमें
भांतिभलबन
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पंक्ति ८

भवकुभाव टी॰

[illegible]

॥ २ ॥

टी॰ ॥ [illegible]

पहिचानकेसुकबिकुकबिकीभनितग्रामनरमूढ़आदिकनकीभगति गनीअरुउजागरनकीनतिनअरुनागरीबआदिकीदशायहसामान्य राजाकोस्वभावहोतुहैकोसलरावतोगानकारनकेसिरोमनिहैंअवश मेरीबिनयसुनैहैंगेअरुप्रीतिपहिचानकृपाकरहिंगे * रीझत॰टी॰ रामअजदपिनिसोनकहीनिरालप्रेमतेंरीझतहैंअरुमोतेंजदपिअधिकमतिमंदअरुमलिनमनजगमेंकोईनाहींतदपिमैंसबसेवक

भायकुभायअनखआलसहू नामजपतमंगलदिशिदशहू

सुमिरिसोनामरामगुणगाथा करौंनाइरघुनाथहिंमाथा ॥

मोरिसुधारहिंसोसबभांती जासुकृपानहिंकृपाअघाती ॥

रामसुस्वामिकुसेवकमोसे निजदिशिदेखदयानिधिपोसे

लोकहुबेदसुसाहेबरीती बिनयसुनतपहिचानतप्रीती

गनीगरीबग्रामनरनागर पंडितमूढ़मलीनउजागर * ॥

सुकबिकुकबिनिजमतिअनुसारी नृपहिंसराहतसबनरनारी

साधुसुजानसुसीलनृपाला ईशअंशभवपरमकृपाला ॥

सुनिसनमानहिंसबहिंसुबानी भणितभक्तिमतिगतिपहिचानी

यहप्राकृतमहिपालसुभाऊ जानिशिरोमणिकोशलराऊ ॥

रीझतरामसनेहनिसोते * ॥ कोजगमंदमलिनमतिमोते ॥

सठसेवककीप्रीतिरुचिरखहहिंरामकृपालु * ॥
उपलकियेजलजानजेहिंसचिवसुमतिकपिभालु
होंहुकहावतसबकहतरामसहतउपहास * ॥
साहबसीतानाथसेसेवकतुलसीदास ४४ * ॥

होंमेरीप्रीतिअरुरुचिरामकृपालअवश्यराषहिंगे।उदाहरण।जेआपबू अरुआनकोबारेतेपाषाणसमुद्रपारजहाजकियेअरुकपिभालुसुमतिअरुमंत्री कियअरुमैंरामदासकहावतुहौंअरुसबलोगएहीबातकहतुहैंपरंतुरामजूमें हेतुउपहाससहतेहैंकैसेसीतानाथजैसोनोसुसाहिबअरुतुलसीदासकुसेव

[illegible] रघुनाथकीगाथा [illegible]

टी॰
रा॰ बा॰
२४

[illegible]

॥ ६ ॥ टी॰ [illegible]

॥ ७ ॥ [illegible]

[illegible]

ऊंचेडारनपरऐसेनिर्बुद्धिमूढ़नकोहेप्रभुआपसमानकियोजैसेरामजसगा
यनरभवसागरपारजायनैसाहिबानरजसयहआपसमएहोतेनीकेआगे
पराकिरामसमशीलनिधानसाहिबदूसरोनहीं ९ टी० हेरामआपकी

अतिबड़िमोरिढिठाईखोरी। सुनिअघनरकहुनाकसकोरि
समुझिसहममोहिअपडरअपने सोसुधरामकीन्हनहिंसुपने
सुनिअवलोकिसुचितचखुचाही भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही
कहतनसाइहोइअतिनीकी॥ रीझतरामजानजनजीकी॥
रहतनप्रभुचितचूककियेकी करतसुरतसैबारहियेकी
जेहिअघबधेउव्याधजिमिबाली फिरसुकंठसोइकीन्हकुचाली
सोइकरतूतिबिभीषणकेरी। सपनेहुसोनरामहियहेरी॥
तेभरतहिंभेटतसनमाने२॥ राजसभारघुबीरबखाने॥

दो० प्रभुतरुतरकपिडारिपरतेकियआपुसमान॥
तुलसीकहूनरामसेसाहिबशीलनिधान२॥
रामनिकाईरावरीहैसबहीकोनीक२२॥
जोयहसांचीहैसदातौनीकोतुलसीक२२॥
एहिबिधिनिजगुणदोषकहसबहिबहुरिसिरनाइ॥
बरनौंरघुबरबिशदयशसुनिकलिकलुषनसाइ

चौ० याज्ञवल्क्यजोकथासुहाई भरद्वाजमुनिबरहिसुनाई॥
कहिहौंसोइसंबादबखानी सुनहुसकलसज्जनसुखमानी
शंभुकीन्हयहचरितसोहावा बहुरिकृपाकरिउमहिसुनावा

भलाईतेंसबकोभलोहैसोयहबातसत्यहैतोस्वामीकीभलाईतेंतुलसीहूके
नीकअवश्यहोइगोएहिबिधियहरीतिसेस्वामीकेगुनऔरआपनेदोषक
हिपूर्वजेबंदनकियेतिन्हसबनकोबहुरिबंदरघुबरजसबरनतहैं
॥ ॥२५॥ ॥ ॥

[illegible]

[illegible]

दो॰
गंगाजीसोरें
घाटजलभरा
॥ अवतार ॥
श्रो ॥
भवसरिता
दो॰ मानस
केहेतुराम
कथाकोप्रगं
भवकुछबात
नहींभारिनाहें
निर्वाहकथा
मोगेथानों
॥
गौहै ॥

पंक्ति १८
अचलछमासी
दो॰ अचलपर्वत
जैसेधराधरछ
मापृथ्वीजैसे
जगतकोधारेहै
॥ ॥
॥ ॥
दी॰ ॥ ॥
रा॰ बा॰ ॥
२६

सोशिवकाकभुसुंडिहिदीन्हा। रामभक्तिअधिकारीचीन्हा।
तेहिसनयाज्ञवल्क्यपुनिपावा। तिन्हपुनिभरद्वाजप्रतिगावा।
तेश्रोताबकतासमसीला॥ समदरसीजानहिंहरिलीला।
जानहिंतीनकालनिजज्ञाना। करतलगतआमलकसमाना।
औरौजेहरिभक्तसुजाना॥ कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधनाना

मैंपुनिनिजगुरुसनसुनीकथासुसूकरखेत॥
समुझनहींतसुबालपनतबअतिरहेउँअचेत॥
श्रोताबकताज्ञाननिधिकथारामकीगूढ़॥
किमुसमुझैयहजीवजड़कलिमलग्रसितबिमूढ़

तदपिकहीगुरुबारहिंबारा। समुझिपरीकछुमतिअनुसार
भाषाबंधकरबमैंसोई॥ मोरेमनप्रबोधजेहिहोई॥
जसकछुबुधिबिबेकबलमोरे तसकहिहौंहियहरिकेप्रेरे।
निजसंदेहमोहभ्रमहरणी। करौंकथाभवसरितातरणी।
बुधबिश्रामसकलजनरंजनि रामकथाकलिकलुषबिभंजनि
रामकथाकलिपन्नगभरणी। पुनिबिबेकपावककहअरणी
रामकथाकलिकामदगाई. सुजनसजीवनमूरिसुहाई।
सुखसुधानलसुधातरंगिनि भवभंजनिभ्रमभेकभुअंगिनि
असुरसैनसमनरकनिकंदिनि साधुबिबुधकुलहितगिरिनंदिनि
संतसमाजपयोधरमासी॥ बिश्वभारधरिअचलछमासी
यमगणमुहमसिजगजमुनासी जीवनमुक्तहेतुजनुकासी॥
रामहिंप्रियपावनतुलसीसी तुलसिदासहितहियहुलसीसी
शिवप्रियमेकलशैलसुतासी सकलसिद्धिसुखसंपतिरासी
सदगुणसुरगणअंबअदितिसी रघुबरभक्तिप्रेमपरमितिसी

दो॰ रामकथामंदाकिनीचित्रकूटचितचारु॥
तुलसीसुभगसनेहबनसियरघुबीरबिहारु

पंक्ति ९ मं. दो० प्रनामसुमहो कथाश्रीमति मंगलकरणप्राय धीकोप्रथय मानिकछुवाय सोविषहलैं रामचरिततो तातनउरातसे ४४॥ ४४. चौं० ९ दो०

रामचरितचिंतामणिचारू संतसुमतितियसुभगसिंगारू
जगमंगलगुणग्रामरामके दानमुक्तिधनधर्मधामके॥
सद्गुरुज्ञानबिरागयोगके विबुधबैदभवभीमरोगके॥
जननिजनकसियरामप्रेमके बीजसकलव्रतधर्मनेमके॥
शमनपापसंतापशोकके। प्रियपालकपरलोकलोकके
सचिवसुभटभूपतिबिचारके कुंभजलोभउदधिअपारके॥
कामकोहकलिमलकरिगणके केहरिशावकजनमनबनके॥
अतिथिपूज्यप्रीतमपुरारिके कामदघनदारिददवारिके॥
मंत्रमहामणिबिषयव्यालके मेटतकठिनकुअंकभालके॥
हरणमोहतमदिनकरकरसे सेवकशालिपालजलधरसे।
अभिमतदानिदेवतरुवरसे। सेवतसुलभसुषदहरिहरसे॥
सुकविशरदनभगणउड़गणसे रामभक्तिजनजीवनधनसे॥
सकलसुकृतफलभूरिभोगसे जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे
सेवकमनमानसमरालसे। पावनगंगतरंगमालसे २॥

कुपथकुतर्ककुचालिकलिकपटदंभपाखंड॥
दहनरामगुणग्राममइमि इंधनअनलप्रचंड २॥
रामचरितराकेशकरिसरिससुषदसबकाहु॥
सज्जनकुमुदचकोरचितहितबिशेषबड़लाहु॥

कीन्हप्रश्नजेहिभांतिभवानी जेहिबिधिशंकरकहाबखानी
सोसबहेतुकहबमैंगाई॥ कथाप्रबंधबिचित्रबनाई॥
जिनयहकथासुनीनहिंहोई जनिआश्चर्यकरैसुनिसोई॥
कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी नहिंआश्चर्यकरैंहिअसजानी
रामकथाकीमितिजगनाहीं॥ असप्रतीतितिनकेमनमाहीं
नानाभांतिरामअवतारा॥ रामायणशतकोटिअपारा॥
कल्पभेदहरिचरितसुहाये भांतिअनेकमुनीशनगाये॥

जागवलिकजी कथाअकथराम अनंतअनंतगुन लौं ३३ अथम संवाद शिवपार्वती कागभसुंड गरुड़जागबलिक भरद्वाजगोसाईं जसबोधधवास जनउपकारार्थ ३० अन्य हरिकथा

टी॰
रा॰ बा॰
२७

महात्म्यअनेक बिधि ३१ अष्ट यामोत्तरकांडसे हत्यादोनचारिये अंतमंगलगाय आदिमध्यकिम की काकोउचिता ॥ ३३ ॥

कथाप्रारंभ
बंदनाकरिकै
अरुचराचरको
औअसंगसुमरि
भुजश्रीशंकरजु
श्रीशिवीकरनि
रिलीलाअपार
सपदहरकारि
श्रीगोसाईंजी
मानसमेंहिलौं
कंपप्रभुअन्त
हरिबिहरब
२ दो॰ ३४
१ चौ॰ ०
पंक्ति ८

श्रीअयोध्या
पुरीमेंसंवत
१६३१ चैत्रमा
सशुक्लनौमी
मंगलवारको
श्रीसरजू
श्रीअयोध्या
क्रमसमस्त
कथामहात्म्य

कहियनसंशयअसउरआनी। सुनियकथासादररतिमानी।

दो॰ रामअनंतअनंतगुणअमितकथाबिस्तार।
सुनिआश्चर्यनमानहहिंजिनकेबिमलबिचार॥

एहिबिधिसबसंशयकरदूरी सिरधरगुरुपदपंकजधूरी॥
पुनिसबहींबिनवौंकरजोरी करतकथाजेहिलागनखोरी।
सादरशिवहिंनाउअबमाथा बरणौंबिशदरामगुणगाथा
संवतसोरहसैइकतीसा। करौंकथाहरिपदधरिसीसा।
नौमीभौमबारमधुमासा अवधपुरीयहचरितप्रकासा
जेहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं तीरथसकलतहांचलिआवहिं
असुरनागखगनरमुनिदेवा आयकरहिंरघुनायकसेवा।
जन्ममहोत्सवरचहिंसुजाना करहिंरामकलकीरतिगाना॥

टी॰
रा॰बा॰
२८

दो॰ मज्जहिंसज्जनबृंदबहुपावनसरजूनीर +॥
जपहिंरामधरिध्यानउरसुंदरश्यामशरीर॥

कथा ″
३५ ″ ″
″ ″ ″
″ ″ ″

दरशपरसमज्जनअरुपाना हरैंपापकहैंबेदपुराना +॥
नदीपुनीतअमितमहिमाअति कहियनसकैशारदाबिमलमति
रामधामदपुरीसुहावनि। लोकसमस्तबिदितअतिपावनि
चारिखानिजगजीवअपारा अवधतजेतनुनहिंसंसारा॥
सबबिधिपुरीमनोहरजानी सकलसिद्धिप्रदमंगलखानी
बिमलकथाकरकीन्हअरंभा सुनतनसाइकाममददंभा॥
रामकथामानसयहनामा सुनतश्रवणपाइयबिश्रामा
मनकरिबिषयअनलबनजरई होइसुखीजोयहिसरपरई॥
रामचरितमानसमनभावन बिरचेउशंभुसुहावनपावन॥

पंक्ति१स
१चौ०५है०
मानसरोवरकी
रचनाकहिवतेहैं
शंभुप्रसादसुम
तिप्रकाशहों०।
तुलसिदासमानस
रचनांकहकसुवता
रामचरितरतुन
मेंजलधकवर्णन
कियाहनसबनको
अर्थलिखतुहों।
शंभुकृतमानसको
निजहृदयमोंभरष
धरनशिवन
जासोंमैंनेनरा
भाषामनसहहैं
यासोंकहतहैं
शंभुप्रसाद टी०
रामकनालाशिव
जगणकोंहसता
हतातेंसुमतिहि
यमोंतुलसीवातें
तुलसीकविप्रथा
यथामतिसुधारौहैं
नमानसजानतहैं

टी० रा० बा० २५

लीला टी० सगुनब्रह्मकीजोलीलासाधुकहतहैंसोईजलकीस्वच्छताजलअरुलीलादोऊनिजस्वच्छतामेंशरीरअरुमनमलकोदोऊदूरकरतहैं। प्रेमभक्ति० टी० प्रेमभक्तिकोबर्णनसोईसुजसजलमांमधुरताअरुशीतलतागुनहैकैसीहैप्रेमाभक्तिजाकीदशाबरनेमोंनहीआ

त्रिविधदोषदुखदारिददावन कलिकुचालिकलिकलुषनसावन
रचिमहेशनिजमानसराखा। पाइसुसमयसिखावनभाषा।
तातेंरामचरितमानसबर। धरेउनामहियहेरिहरषिहर
कहौंकथासोइसुखदसुहाई सादरसुनहिंसुजनमनलाई

दो० जसमानसजेहिविधिभयउजगप्रचारजेहिहेतु
अबसोइकहौंप्रसंगसबसुमिरिउमावृषकेतु॥

अथमानसरोवर॥

शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी रामचरितमानसकबितुलसी
करौंमनोहरमतिअनुहारी। सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी
सुमतिभूमिथलहृदयअगाधू बेदपुराणउदधिघनसाधू॥
बरषहिंरामसुयशबरबारी मधुरमनोहरमंगलकारी
लीलासगुणजोकहहिंबखानी सोइस्वच्छताकरैमलहानी
प्रेमभक्तिजोबरणिनजाई। सोईमधुरताशीतलताई॥

वतुवासुषकोप्रेमीहीजाननभरहैंकाहेनहिंसकतुआनकोकहै
प्रथमसाधारणजलदृष्टितेंमधुरगुणकहेहहांमेघजलदृष्टितेंबि
शेषमधुरताकहेतातेंपुनरुक्तिदोषनाहींप्रेमदशावारेहूकोमिठाई
तेंआठबंदबोलनहींसकतअरुनेत्रजलतेंसबसंतापकीहानितेंसी
तलताहैंतुहैतातेंजलमौंप्रेमाभक्तिमोंसेउगुनसमजानब॥ ५॥

॥ ॥ ॥ ॥

जहँलगिकछुमलनहीं
साधुलोगइनको
सबतेंअधार
लखबाउविनमों
दृशतितेंधारतक
रखअनपुवारत
मानसकोसावयव
रूपकालंकारकौ
कहतेहैं॥ ५॥
सुमति० टी० राम
जसवरषयार्थहद
श्रीनकसुयशनवें
धौरामकरिवारी
मानितरामकोगा
उभमिहैंऔरग
औरहियकज्ञ
आधारगहिंस
गहै॥
बेदपुराण० टी०
धनजैसेबादलहि
कोमोतबालहुन
गैहैंसेंताईअगा
प्रामबहैंकिमग
लौकिनाहकैंअपने
कउहिंगुनजन
करबहैसाधुन
गरामसुजसजगत
अमबोंमधुरघाहै
विराषसाजलह
तबहैंकै

जल। दोहा। सुठिसुंदर॰ टी॰ एहिबिधिसेमानसभरिकेघाटनिबि
नानद्दगजलकेप्राप्तिदुर्घटजानिअबघाटरचनाकरतुहैंबुद्धिअरुबि
चारदोऊकारीगरनेअतिसुंदरबिरचेजेउत्तमचारिसंबादतेईयहसु
भगसरकेमनोहरचारिघाटहैंतेसंबादकौनप्रथमगोसाईंजूकोअरु
संतनकोसंबादहैसोघाट १ द्वितीययाज्ञवलकिभरद्वाजकोकर्मघा
ट २ तृतीयशंकरपार्बतीकोज्ञानघाट ३ चतुर्थभुसुंडिगरुड़कोउपा
सनाघाट ४ संबादनकेस्वरूपकोउदाहरणक्रमतेंयथाकहौंकथासोइ
सुखदसुहाईसादरसुनहुसुजनमनलाई। २। कहौंजुगलमुनिबर्यकरि
मिलनसुभगसंबाद २ कहौंसुभातिअनुहारिअबउमाशंभुसंबाद २

सोजलसुकृतिसालिहितहोई रामभक्तजनजीवनसोई॥
मेधामहिगतसोजलपावन सिमिटिश्रवनमगचलेउसुहावन॥
भरेउसुमानससुथलथिराना सुखदसीतरुचिचारुचिराना॥

दो॰ सुठिसुंदरसंबादबरबिरचेउबुद्धिबिचार
तेइयहपावनसुभगसरघाटमनोहरचार॥

कहौंभुसुंडिबखानिसुनाविहगनायकगरुड़ ४ सोसंबादअबक्रम
तेंचारोंघाटकोउदाहरणयथाअतिबड़िमोरिढिठाईखोरीसुनिअ
घनरकहूंनाकसकोरीहमारिहैसोघाट १ भरद्वाजसुनुजाहिजब
होतबिधाताबाम मेरुधूरिसमजनकजमताहिव्यालसमदाम इति
कर्मघाट २ रजतसीपमहँभाससिमिजथाभानुकरबारि जदपि
मृषातिहुंकालसोईभ्रमनसकैकोउटारि इतिज्ञानघाट ३ सेवक
सेव्यभावबिनुभवनतरियउरगारि इत्यादिउपासनाघाट ४। ३६
घाटबांधेपरभीसीढ़ीबिनासरजलदुर्लभसमुझिकेअबसीढ़ी
कीरचनाकरतुहैं ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥

शं॰ को॰ १
स॰ सोजल।
टी॰ सोमेघ
जलतौपाली
श्रमकोशुद्ध
करतहैश्र
सबजनको
जीवनरामभग
सजलतेंउत्त
नसालीबढ़त
हैंश्रुकरामभ
कैसीतावैभ
निपतीतनाहीं
स॰ मेधामहि
टी॰ सोपद
जलमेंधारण
मुनिप्रदाय
होइकैबढ़िरहै
श्रवनद्वारह्वैके
राखैबलौसु
असभ्ररजल
बनोसुहावनो
भावप्रथममेध
नैक्रमतद्वारा को
समीपभूमिमर
गतहैतबबढ़
रिकैपानीकै
राखतैंतलाव
मैंभरतहैतैसे

तहजानीमधु
रामस्वरूपको
बरीबुद्धिसद
कानकेसमीप
खड़ारहतु
श्रीअंगद्वार
अवनप्रकार
वदकोधारण
कौबारसमान
कापड़वानाते
श्राहिंबिधि
सुन्दरमानसकौ
तासुथलपाइकै
१ जलथिराजौकै
नाहिंजलसमृगत
तैंसुखबदाईसीतल
रुचिबढ़ैकोचारुहै
अफांसुदरचिराना
जथामांजलनख
सुदंशतुमांपुरा
दिनसिलिलमांत
सानंगसीतनपाल
कोचाउरबासनको
सबतुइअसवस्त्र
घाभैनसोईनीवर
कौटालविर

सप्तप्रबंध॰ टी॰ सातकां [illegible] सोपानसीढी हैं ज्ञाननयनसों [illegible] देखनको [illegible] सुकृतमनसुखी होभावसातों सीढीरामसुजस जलतें दूरिणा [illegible] बिना उनकोपायपाइकैं सम्पूर्णतातें ज्ञाननयनतें सातोंसीढीलखिकै जानामनमानें [illegible] कैसोंसीताराम कांडमासीसाई संयोगनहीं सारभूतवरण अयोध्याकांड २ अरण्य ३ [illegible] रघुपतिनामसा किष्किंधाकांड ४

जलमोंअमृतसममाधुर्यगुणकह्योइहांतौसरीबारजलमधुरतालिये सोसंदेहनहीं तीनकोटिपीछेलिखचुकेनव १ सुरान २ चिरान ३ उपमा बीचि॰ टी॰ उपमाआदिसबअलंकारएईजलमोंतरंगनकोपरस रिवो है॥ ॥ पुरइनि॰ टी॰ चारुसुंदरचौपाईएईसरकेसघनपुरइन छायरही है भावजैसेपुरइनसघनतैसेचौपाईसघनएईहेतुचौपाई रामायणकहावतुहै अमारापुरइनसघनओटजलबेगनपाइयतअस यातेंपुरइननेरामसुजसजलकोछायराख्योहैशीघ्रब्याहकोऊनहीं पावत। सुगति॰ टी॰ सुन्दरकविताईसीपतामोंजुक्तिसुंदरमुक्ता मनि॥ मू॰ ।छंदसोरठा। टी॰ छंदसोरठादोहाएसबबहुरंग केकमलवृंदमोंसोहईयहग्रंथमोंसबतेरह १३ जातिकेछंदहैंसो काव्यअंगमोंवियोगएभावसबपुरइनसमीपकमलनहींहोतता

सप्तप्रबंधसुभगसोपाना। ज्ञाननयननिरखतमनमाना।
रघुपतिचरनउपासकजेते सोईसुकृतीसुरमज्जहिंतेते।
रघुपतिमहिमाअगुणअबाधा। बरणबसोइबरबारिअगाधा।
रामसीययशसलिलसुधासम उपमाबीचिबिलासमनोरम
पुरइनसघनचारुचौपाई। युक्तिमंजुमणिसीपसुहाई।
छंदसोरठासुंदरदोहा॥ सोबहुरंगकमलकुलसोहा।
अरथअनूपसुभावसुभाषा। सोइपरागमकरंदसुबासा।

तें आठवां सो चौपाईपाससोरठाआदिकमलअरुकमलनमेंपरागआ दिइहांवाच्यार्थपरागपदनवसुंदरभावमकरंदसंस्कृतअरुनानाविधि कीभाषासोसुबासकहीसुंदरकमलगतसुगंधहैभावपरागकमलके कछुपरवरिनकेभीतरमकरंदअंतरगुप्तसुगंधदूरतेंमहकातुहैयथासं ख्यसुन्दरलगायससुन्दरकमलनकेसोभागअर्थअबेअलिऔरमराल कहतुहैं॥ ✕ ॥ ✕ ॥ ✕ ॥

टी॰
रा॰ बा॰
३९

[illegible] भाव प्रबंको सातें ६ उत्तर ७ सोपान ऐसो हैंभवनमनमानैं। रघुपति॰ टी॰ पूर्वबाधारहित ऐसेरघुपतिकी महिमाकोवर्णनसो अथाहजलकैं [illegible]

मिलावनहीं उत्तम गहरामनजसमें भावसुबनीसों नहींजुगकरिबो हैकि [illegible] हैं॥ अगाधहै सुंदरगुणको भावहसागरमें सममहिमाहै जलमांहदेखा सुखमिलिबोको अगाधमें [illegible] रघुपतिकी [illegible]

सुकृत॰

टी॰ पं॰ १

सुकृतीलोगनकौ
सुकृतकेपुंज
भँवरपांतिहैअरु
अहोलोगनकौमन
बिरागबिबेकहै
सोहैसुकृतअरु
अलिकौरसपा
नभरिसादस्य
कैसोरंगनहींगो
नआदिअरुअ
गतकौसुद्ध
अबिनरंगअरु
सत॰प्रसन्नकौ
सादृश्यबिबेकौ
लेखतीनजाति
कै हेतुगारहु
मोलिखहै
तातेंग्यानादिबि
चक्रकहेअरसकौ
आलतौकमल
नरबैठेसभार
गुलकैसेबिक

टी॰
रा॰ बा॰
१२

चारकौसकी १ भारती २ आरभटी ३ सात्विकी ४ इन्हकौ वृत्तिभी कहतहैं ते
जाति सहरी मीनहैं सिमिटिकै नंरकौ वंदचलतुहैं जलतें कछुतरे इत्यादि धु
नि आदिसबके लक्षण बिशेषतें काव्यांगमों लिषोगयो ॥ ३ ॥ अर्थधर्म
टी॰ अर्थादि फलचारि ४ रसश्रृंगारादि ८ वाशांत मिलि ९ वा वात्स
ल्य आदितीन मिलायेतें १२ जपतपयोगबिराग ४ ज्ञानपरोक्ष बिज्ञान अ
परोक्ष २ एसन उन्नीस १९ इन्हां जे आगे वर्णन करेंकोहैं ते सब सुंदर चक्र आमें
मगर घरि आदि जलचर जीव हैं ॥ सुकृती॰ । टी॰ इह ग्रंथमों सुकृति अरु

सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला ज्ञानबिरागबिचारमराला
धुनिअवरेखकबितगुणजाती मीनमनोहरतेबहुभांती ॥
अर्थधर्मकामादिकचारी कहबज्ञानबिज्ञानबिचारी ॥
नवरसजपतपयोगबिरागा तेसबजलचरचारुतड़ागा ॥
सुकृतीसाधुनामगुणगाना तेबिचित्रजलबिहँगसमाना ॥
संतसभाचहुंदिशिअमराई श्रद्धारितुबसंतसमगाई ॥
भक्तिनिरूपणबिबिधबिधाना छमादयाद्रुमलताबिताना ॥

साधुरामनाम ईतीनहुंके गुनको अनेक बिधि निरूपण नेई अनेक च
क्रवाक जलकुक्कुट आदि जलबिहंग हैं क्रमतें तीन उं यथा को सुकृती
हंससरिस बिशेषी १ इत्यादि सुकृती षट्बिकार जित अनघ अकामा
इत्यादि साधुगुन रामनाममहिमा सुरकसुरहीं २ इत्यादि नामगुन । संतस
भा॰ टी॰ संतसभा सोई चारों दिशामों या मानससरके आमको बाग है
सोऊ परोपकारी अरु अमृत फल साधुसभा अमराई के प्रफुल्लित करै
को श्रद्धा बसंत ऋतु सम है नवधा प्रेमा पराभक्ति का अरु छमा दया
दमकहीं इंद्रिय निरोध आदि सबका जो साधु सभामें निरूपण है सोई
अमराई को लता बितान छाए हैं ॥ ७ ॥

सोमानसताकौरूप
कैगनातेकमललिये
तेकमलकेरेतेनहीं
तातेंसुकृतनअरुनर
ग्रन्थसकलतनअनन्त
बिधमीनमानत
धुनि॰ टी॰ १
धुनिपाठनसब
तेजड़अरुकब्ब
कातरअलिबल
तेहअनिलसम
काव्यआमोसम
रचनानरवंडानवध
कोहूँसूधेबचानर
अस्नालागातेन
हांसअर्थनवेनउलट
अबहलोअकबरेन
नामपानहुवाले
चलतहैसिरधूध
कोयथापनकथा
कालबिरपकहारी
इत्यादिरामकथा
कुंचाइहैकालिबिरप
कोकोपदअरुनब
सोंअर्थनवनलहेअरु
काव्यगुनतीनअसा
इआदितेंचहुला
मोनेंचमकनबी
अरुअर्थनकारहलहै
अस्लकाबित
जाति

संजम॰ टी॰
सम्जमसम्भवास
नाम्यागजमस्रहि
सत्यक्रादियं
व चाहयनियम
आनंदतोषआदि
पांचवादस्यादेस
कुमआदिकेफल
हैं ज्ञानफलयमी
निजआतवा
आनफलमास
कुकाजत्ते ओर
आनंदपुराणादि
क्षकीकथाजम
इतिहासप्रसंग
हैं सुभगासुक
काकिलआदिपक्षी
इतरागकेपहंते
संतसभाहेतें
इहेकेफुलकबाट
कादेहानन
सबबस्तमानस
बाहरकीतीअम
रसआदिकेसरके
भमाहेतुनाहिं
रहतुहैं॥ ॥

नेईचतुरासिरोमनियासरकेरखवारेहैं सदानेमतेंजेनरनारीआदर
सहितरामचरितसुनतहैं नेईउत्तमरवनामानसरकेयोग्यअधिकारीहैं
अबअनाधिकारी ८ पं॰ ७ अतिखल॰ टी॰ बाहिरसुबेषभीतरक
पटीबकभीतरबाहिरमलिनाबिषयीनेकागतेअभागीयासरके

व आ

संजमनियमफूलफलज्ञाना । हरिपदरतिरसबेदबखाना
औरौंकथाअनेकप्रसंगा । तेइसुकपिकबहुबरणविहंगा

दो॰ पुलकबाटिकाबागबनसुखसुबिहंगबिहारु
मालीसुमनसनेहजलसींचतलोचनचारु + ॥

जोगावहिंयहचरितसंभारे । तेइएहितालचतुररखवारे
सदासुनहिंसादरनरनारी॥ । तेइसुरबरमानसअधिकारी
अतिखलतेबिषयीबककागा । इहसरनिकटनजाइअभागा
संबुकभेकसिवारसमाना। । इहांनबिषयकथारसनाना
तेहिकारणआवतहियहारे । कामीकाकबलाकबिचारे
आवतइहिसरअतिकठिनाई । रामकृपाबिनुआइनजाई + ॥

दो॰ टी॰ पं॰ ३
सरकेचहुंओर
फुलवारिआदि
अस्थसम्बंति

टी॰
रा॰ बा॰
२३

धर्मावृफुलवारि
कामविनेंअधिक
धर्मावृबागट्टि
सतीनांतरमंवि
वैरागिधर्मपुत्री
बिहरकेया
महाप्रभावजमा
लोसनेहजलते
लोचनपातभारे
उद्यबाटिकाइज
इकोभावतहैं
॥ ३२

निकटकबहुंनहिंजाननहांहेतुघोंघाभेंगुकासिवार समान बिष
षयरसकीकथाउनकाअहारइसरसमेंइहांनहींनातेंहियमेंहार
मै,घरमेंबैठरहतुहैंइहांआवतेनहिंजातेंकामकेमारेबिचारेहैंअति
कठिनाईजोपीछेकहसोनाहीकोस्पष्टकहतुहैं ॥ १० ॥
॥ ॥ ॥ ॥

बारिनकोशंभा रबोहै
हैं पहवरही
मंगआदिबेस
गनकोबिचारय
अरसमका
ओपरस्पर
मनहेसुद
लोकमनप्रब
ग्रंधमोहैप्र
कलगीवहत
धाहुलीकेप
निगमागमप
दो॰ गनापुरा
पं॰ प्रेमाबी

एऽ टी० ध
ध्रं ॥ श्र गह
कपदेतो ॥
बैकमांसाह
सांबिबधाव
हैरेकैराता है
धारैर्त्यर्ष
उझबबन का
गहेबलनको
गैड्यार्गेर्त
श्रुपरहेता
क्षांगाति
लनकोऊहो
कोहैन टी०
श्रीमे १

के अंगकाको
धे अध्रबल्ला
ओ है लोगन के अ.
कगोल ते श्री
उकावि सालपर्व
तमाहि सरिस धा
उजहि मैं मदधर
बिधा आदि को
मानजाति जल
आदिकोई सब
घोर बन ग्राम
बिधि कुतर्क

श्री० रा० बा० ३५

जोकदाचितकोऊबिषयीबलकष्टकरिजाइतौजातेहींनिंद्राजूड़ीहोतु
हैनींदकदाचितनआवैतौमूढ़ताजाड़ाकेउरमेंलगेतेकथाश्रवन
स्नानमानससरमोंनहींपावतहेतुअभागाभाग्यहीनरहताजाड़ातेश्र
वनस्नानअरुस्तुनिकोधारनपानहोइनाहींनकरिजातऔरोंअभि

कठिनकुसंगकुपंथकराला। तिनकेबचनबाघहरिब्याला।
ग्रहकारजनानाजंजाला। तेअतिदुर्गमशैलबिशाला।
बनबहुबिषममोहमदमाना। नदीकुतर्कभयंकरनाना॥

जेश्रद्धाशंबलरहितनहिंसंतनकरसाथ ॥
तिनकहंमानसअगमअतिजिन्हहिंनप्रियरघुनाथ

जोकरिकष्टजाइपुनिकोई जातहिंनींदजुड़ाईहोई॥
जड़ताजाड़बिषमउरलागा गयहुनमज्जनपायअभागा
करिनजाइसरमज्जनपाना फिरिआवैसमेतअभिमाना
जोबहोरिकोउपूछनआवा सरनिंदाकरिताहिबुझावा

मानमैलसमेतफिरिआवतुहै जोमज्जनपानहोततौदुनोंनन
मनमैलजातसोतोनहोंसरनिंदाउहांहमगए पनि काठबन
भरिलैआवा इत्यादि पानी अरुकठौना निघार इन्हकी कथा
सुनी ऐसन भाषा चौपाई हजारन हम बनाय सकतु हैं उहां
वृथागए इत्यादि अनेक कुतर्कनतें रामकथाकी निंदा ॥

॥ ॥ ९ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥

यंका न है पर
लादि किसन को
आसकथा
भावे कहत है
कपाकुततको
जिमानपाउ
लोगरगयो है
पार्वकुतन को
भ० ७ कला
टी० ० पसन्स
धाविको गन
सुख्य साधन
तीनउमें जहां
तक्कोन होति कृ
कोमानस प्राप्ति
प्रीति आगमन अथ
तुपादा स होउ
लोगनाज को नर
भीतिनको संग है
असत्यारामको
भरोसा ३। ३८
पूर्वोक्त प्रतिबंध
यदेतं प्रथम गाइ को
अतिकाठिन

पंक्ति १
सकल॰ टी॰
रामविमुख वि
घ्नोंकलनकी
अनेक विघ्न
श्रु रामजी
सदाहि तिनकौ
जो मार्ग है
रामविघ्न
कामादिक
सब घातक
चीरत अनमें
अभ्यास हैं अरु
महाघोर तीन त
पते जहां जगत्
अधिज भूतानज
ताने मंत्र
हैं तउ तम भाव
कारी वासा पि
त्सर कों नहीं
लगत अरु जो
ताहु बचभां नहीं
कों चाहते मनले
गाय सतसंगकी
यहसबबाधन

शालि है तदपि सरजू हरिनेत्रजा है ध्वनितें सो भाव जनायो अरु वीए हिरीनतें तासों कहीता मानससरतें सुभग कविता नदी चली सो नदी निर्मल राम जस जलतें पूरण सो होत है सरयू नाम यह नाम करण किये नदी के द्वै कूल इहां वेद मत औ चाकूल कविता सरजू के धारा एही और है लोक मत भी चाकूल इधर प्रवाह क्रम वेद कूल यथा वेद विहित काहि सकल विधाना इत्यादि लोक कूल यथा लोक रीति जननी करहिं वर उ

सकलविघ्नव्यापहिंनाहितेई रामकृपाकरिचितवहिंजेई।
सोईसादरसरमज्जनकरहीं महाघोरत्रयतापनजरहीं
तेनरयहसरतजहिंनकाऊ जिनकेरामचरितभलभाऊ
जोनहायचहइहसरभाई सोसतसंगकरौमनलाई।
असमानसमानसचषचाही भैकविबुद्धिविमलअवगाही।
भयोहृदयआनंदउछाऊ। उमगेऊप्रेमप्रमोदप्रभाऊ
चलीसुभगकवितासरितासो। रामविमलयशजलभरितासो।
सरजूनामसुमंगलमूला। ॥ लोकवेदमतमंजुलकूला।
नदीपुनीतसुमानसनंदिनि कलिमलतृणतरुमूलनिकंदिनि

छाहन सकुचाहिं इत्यादि दोऊ नदी पुनीत अरु सुंदर मानस सरकी बेटी सुनंदिनि विशेषण ते पिता संबंध जनायो जैसे कालिंदजा वह सरजू तटके तरु मूलतें उखाड़ति है यह कलिमल तट तरु को मूल समेत नाश करति है मूल पदतें पुनः पाप को अभाव जनायो ॥

॥ ॥ ॥ ॥

कौतुकेउपस्थाके
श्री ॥ ॥ ॥
अरु मानस॰ टी॰
शुभमति भूमिथल
इत्यादि सुबोलि
जुकहि कबेरति
मानस कों मानस
कब मान बैंगए
लेन चाह कोऊ गम
ले जैंद हलकै
कौतुक बिहार

कौतीवाय
कीवीनासरद
तैपीसनहीं
धारबतीकै
तै नर जो सारद
अंड रामांबेकु
भावसराह
प्रवाह उमगउ
अतिहरिकी
जातंत्रेम प्रबंकी
जै उत्साह भयो
आनंद तैरुद
नव हृदय मों
निर्मल मते
अभ्यास तके

पंक्ति ८
इहां टी०
अनादि बिपुल
बै त्रिपुर बै
बयो अरु प्रमान
तैं जीवन पुञ्ज
अरु बिमपीवीन
बिधि जीवन को प
गंग को बेना स
यकै इड नदय
उत्पत्ति नगर तय
हैं उराज्य घरलो
कै तार हबीसलो
लो बिस्व पौ स्रोता
अमल बल रहे
महीतार हथरहे
कैकै सो लो ग्राम
सोपुन्दु श्रोता
सोपुरात ग्राम बड़
नहद रहत है
सतघर तें है कै
सहस्र लौ नगर
सोपुल श्रोता
गावत अचल
सबिधि तेउनम
त्रिबिध श्रोतनतें
बिल हराकेवल
रमा अनूप अनुरा
गी सतति कौ

टी०
रा० बा०
३८

भक्तिगंगामें मिली अवतारको मुख्यकारण मनु भक्ति कथा हृदय भक्ति भक्ति सारंगपानी इत्यादि लछमन सहित जो राघोको समर जो सोइ महानद सोनभद्र गंगाते मिल्यो यथा पावकसरसिवाहु पुनि जारा अनुज निशाचर कटक सिंहारा इत्यादि ॥ ५ पं० टी० युगबिच० इहां बाएं सरयू दहने सोनभद्र बीचमें गंगाकी धारा सो हति है इहां कानि तारु अरु समर जसके बीचमें भक्ति कैसे जैसे ज्ञान अरु सुबिरति सहित भक्ति सो हति है सुबिरति कहे बैराग्य ॥ ॥ पं० ६ टी० त्रिबिध० तिमुहानी तीन

दो० श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुं कूल
संत सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल।

रामभक्ति सुरसरित हि जाई।	मिली सुकीरति सरजु सुहाई
सानुज सहित समर यश पावन	मिलेउ महानद शोण सुहावन
युग बिच भक्ति देवधुनि धारा	सोहति सहित सुबिरति बिचार
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी	रामस्वरूप सिंधु समुहानी।
मानसमूल मिली सुरसरही	सुनत सुजन मन पावन करही

मुखबारे तीनऊ प्रवाह बहति मुहानी समुद्रके सन्मुख संगम हित चली यह रामस्वरूप सिंधुके सन्मुख निरंतर चलो है यथा वह शोभा समाज सुख कहत न बनै मंगेश इत्यादि कहत न बनै ध्वनि तें अगाध अकथ रामरूप कह्यो अब संगमको फल कहतु हैं ॥ ॥ पं० ७ मानस० टी० मानस है मूल जाको ऐसी कविता सरजू भक्तिगंगा ते मिलके सुनतें सुजन मन को पावन करतु है प्रथम सरजू और गंगाको संगम कहि पुनः समुद्र संगम कहे फिर संगम फल कह्यो अब केवल सरजू बरनन करत हैं॥ ॥

कमा अनूप अयोध्या
उह भावत रिस
मानस सर तें सरयू
का अनूप प्रगान
अयोध्या ले ल सरयू
रह कविता सरयू
का नाथ्य प्रयोजन
संत समाज भाव महा
जो सरयू का नाम है
नम अनु वमो
नैसो अनुनाम सों
कैसे संतन समा में
जो रामकथा हि सो
करते ना हि सुकाल
सुमंगल को मूल
कलन का अरु अनुभव
५ ॥ ६ ॥
पं० ३ राम भक्ति
टी० बलीरतिहर
अरु रामभक्ति सुर
सरिता गंगा मों जाइ
कै मिली अयोध्या
तैं चली कै सरयू
दुइ पास गंगा मों
मिली तासों है कीर्ति
नाम सुरसरि की अरु
बल कै अनुभव
पानको

पंक्ति २ कथाबिच० टी० बिचबिचमेंनाना भांतिअनेकविचि त्रकथाविभागजोहैं तेनदीकेतीरतीर बनऔबागहैं यथा सिवविवाह हरिजन्मरघुनाथ आदिजनककथा बहुतकथाबन औरबाग० ॥ पं० ३ उमामहेश० टी० जलचरजे [illegible] जलउपासकास्त्र मीनतंहकूर्मादि सुरबरातीदूल्हे मगरम्हादिजल चरतंहनाना तनुमन्तकनादि ॥ बराती ॥ पं० ४ रघुबर० टी० रघुबरकेज नमकथा [illegible]

पं. ६ टी० सीयके सुहाई स्वयंबर कथाकाविना सरजूके शोभा छाय
रहीहै ॥ पं. ७ टी० नदीनाव० पटुबिचारपूर्वकप्रश्नवापटुलोगन
के प्रश्ननदीपरनावसहित बिबेकउत्तरसोई कुसलचतुर केवट सुनिसु
निकेपरस्पर बारंबार मननकरैवारे पथिकेसमाजएहैंतेनदीपर सोहत
हैं। पं. ८ घोरधार० टी० भृगुनाथ परसुरामकोरिस सबकेमानभंग
करैको घोरधारा है यथा भृगुपतिसुनिसुनिनिर्भयबानीरिसतनु

बिचबिचकथाबिचित्रबिभागा। जनुसरितीरतीरबनबागा॥
उमामहेशबिबाहबराती॥ तेजलचरअगणितबहुभांती॥
रघुबरजन्मअनंदबधाई॥ भवरतरंगमनोहरताई॥

दो. बालचरितचहुंबंधुकेबनजबिपुलबहुरंग॥
नृपरानीपरिजनसुकृतमधुकरबारिबिहंग॥

सीयस्वयंबरकथासुहाई। सरितसुहावनिसोछबिछाई
नदीनावपटुप्रश्नअनेका॥ केवटकुशलउतरसबिबेका॥
सुनिअनुकथनपरस्परहोई पथिकसमाजसोहसरिसोई
घोरधारभृगुनाथरिसानी। घाटसुबंधरामबरबानी॥
सानुजरामबिवाहउछाहू सोसुभउमगसुखदसबकाहू
सुनतकहतहरषहिंपुलकाहीं तेसुकृतीजनमुदितनहाहीं

जरै होतबलहानी इत्यादि॥ पं. १० सानुज० टी० अनुजसहितराम
बिवाहउछाहसबकाहूकेसुखदाईनदीकेसुभगउमगहैंबरषातेनदी
उमगतुहै ताते यथा हियहरषीसीदुंदुभीप्रभुपरबरसाहिंफूल इ
॥ ॥ त्यादि यहबरषा ९०॥ ॥

टी०

शीघ्रकोउनिकारि नहींसकतुहैंमी यथा कौटककी [illegible] पत्रजभलाहत्या रिगलाहलबधाई भ्रमादिमंगलपुंज पं. ४ दो० बाल बालचरित० टी० चारिभाइनकेबार रिसकेकोरिख बेलकोबरणा सुकृतसोकमल [illegible]

[illegible] उपमाकहनामे मुकताहैइत्यादि बीरहैबरखा नानाभांतिकेकुसुम पक्षिमादिकबे आपहुरंगिरवा हैंउरकालागन्य हैंस्पावनरमा हैंकरुबरानी ८ इत्यादिपुरवासी [illegible] भोगीपरिजनकेसु [illegible] हैंबैकुंठवनकोते तीवकेबड़े कुकुमादि ६०

पं॰ १ रामतिलक॰ टी॰
रामजीको तिलक
निमित्त मंगल
साजि सोई और
लोककर्ष मानो
परबजोग अब
बस्या संक्रांति
आदि बामल
बारुणी आदि
पर्व महं अनेक
लोगनको समाज
बडो है यथा
जौनगजोमकु
आभूषका इत्या
दि नदी के कोई
पर पाव परै
नवबको धारे
अंधकूप दजागे
इहां कैकेयी
कुमति वर्णन
सोई काई है ता
को फल बिपत
घनेरी यथा
सुनि है अनराम
हि बन बास राम
दे ॥

टी॰ ॥
रा॰ बा॰
३८

सुहावनि नाहीं यह कीरति सरयू छहूं रितु में रूरी कहे सुरना ऊपर सबै समय मों सुहावनि अरु बहुत पावनि है ॥ पं॰ ६ हिम हिम॰ टी॰ हिमशैल सुता और शिवको ब्याह हिम रितु है हिम रितु तें रितु को आरम्भ सब तें मुख्य सम्भु के गीता मों अग्रहन परमेश्वर रूप लिख्यो है यानर्थ मथरी अग्रहन पूस हिम रितु माघ फागन सिसिर सो भोजनादि सब बिधि तें सुखद अरु जैसे सोई प्रभु को जन्मोत्सव सुखद बरनब॰ रामके बिवाहको समाज बरात सजब आदि सोई हर्ष मंगल बहुत जामों और बसंत रितु है। वसंत मों सब तरु फूलत हैं तैसई अथत आदि जेठ असाढ ग्रीषम अरु रामगमन दोऊ दुसह यथा सकल सकै रघुबर बिरह आगी वे

रामतिलक हित मंगल साजा।	परब जोग जनु जुरेउ समाजा ॥
काई कुमति केकई केरी।	परी जासु फल बिपति घनेरी

दो॰ शमन अमित उत्पात सब भरत चरित जप याग
कलि अघ खल अवगुण कथन ते जल मल बक काग

कीरति सरित छहूं रितु रूरी	समय सुहावनि पावनि भूरी
हिम हिम शैलसुता शिव ब्याहू	शिशिर सुखद प्रभु जनम उछाहू
बरनब राम बिबाह समाजू।	सो मुद मंगल मय रितु राजू
ग्रीषम दुसह राम बनगमनू	पंथ कथा खर आतप पवनू
बरखा घोर निसाचर रारी।	सुरकुल सालि सुमंगल कारी
रामराज सुख बिनय बड़ाई।	बिशद सुखद सोइ शरद सुहाई

लोग सब ब्याकुल भागी इत्यादि ग्रीषम मों तीव्र घाम और पवन सोई इहां ग्राम व धुनकारि क्लेश औ रघुबर के पंथ की कथा यथा जो जगदीस इहांहि बन दीन्हा कासन सुमन मय मारग कीन्हा इत्यादि बर्षा सावन भादों बर्षा रितु सो घोर निशाच ग्राम वर्णन यथा बाण बिंदु भइ ब्यापि अपारा इत्यादि कैसी है बर्षा देवकुल धान को पोषन हारी। पं॰ १० । रामराज॰ टी॰ रामराज सोई कुआर कातिक शरद रितु उहां रामराज को सुख इहां रितु सुखद उहां बिनय बिषेष नीति इहां रितु विसद उज्वल उहां बड़ाई इहां सुहाई रामराज लौं मुख्य रामायण कथा आगे उत्तरचरित्र एहि हेतु समुझि बालमीकि मुनिराज गादि लौं रामायण समाप्त कियो सोई भाव बिचारि गुसाईं जू हिम रितु तें आरंभ कियो और सरद रितु मों षट्‌ रितु की समाप्त करी अब स्वच्छता आदि जल के गुन कहत हैं ॥ ॥ ॥

पं॰ ३ दोहा।
टी॰ शमन अमित
कउत्पात यातना को
को भरत को चरित्र
सोई जाप यज्ञ है
जप औ यथा काक
वो है यथा सोक
सिंधु अवगाहु
तम अवगुन कथन
इत्यादि कलि अघ
अघका कथन
उत्तरकाण्ड मों उ
लग अकेन ग्रसि
यथा जग जन सं
कलिकाल कराल
इत्यादि बालमी
अरु उत्तरकांड मों
भरत मति अमल
बहुत जनकगुरु
कामक्रोध लहरि
बक काक मन है
काग ४१ पं॰ ५ कीरति
टी॰ सुयश रूप छह
रितु में

पंक्ति ९ सतीसिरोमनि टी० पतिब्रता स्त्रियनमेंसिरो मनिसीताजी तिनकेगुनकी कथारामजस जलमेंअनूपम छवितागुनहै यथा कोहिविधिसुधा सिंधुगुनमनहि स्याहिभरतको स्वभावबरनं सोईजलमेंसुगन्ध शीतलजलगुन यथानाथभरत काकुपूछनकहहीं प्रश्नकरतमन सकुचतअहहीं स्याहिकोभरत स्वभावसराहक सदैवकहतमोत सुभावतु ॥ दो० रहा। पं० ३ चारिउभाइनकी परस्परप्रीतिमें लोकिनआदि भलायपयुगल अंजुगुनकोम टी० रा० बा० ३९

अद्भुतहैभावसुनतेज्ञानबैराग्यआदिगुनकारीअरुबिषयपिआस अरुकामादिमनोमलहारीहैं ॥ पं० ७ रामसुप्रेमहि टी० रामविषय जासुप्रेमबिरवाकोयहपानीपोषककरतुहै वहपानीस्नानतेंगलानिहरतुहै यहकलिकलुषगलानिकोहरतुहै वहश्रमदूरकरतहै यहसंसारश्रमको दूरिकारिसंतोषकोपुष्टकरतहै। समननासक दुरितपाप ॥ ॥

सतीसिरोमणिसियगुणगाथा। सोईगुणअमलअनूपमपाथा।
भरतसुभावसोसीतलताई सदाएकरसबरणिनजाई।

दो० अवलोकनिबोलनिमिलनिप्रीतिपरस्परहास
भायपभलिचहुंबंधुकीजलमाधुरीसुबास ॥

आरतबिनयदीनतामोरी ॥ लघुताललितसुबारिनथोरी
अद्भुतसलिलसुनतगुनकारी आसपियासमनोमलहारी।
रामसुप्रेमहिपोषतपानी। हरतसकलकलिकलुषगलानि
भवश्रमशोषकतोषकतोषा शमनदुरितदुखदारिददोषा
कामक्रोधमदमोहनसावन बिमलविवेकबिरागबढ़ावन
सादरमज्जनपानकियेतें। मिटहिंपापपरितापहियेतें
पैठ
जिनबारिनमानसधोये ॥ तेकायरकलिकालबिगोये

पं० १० सादरमज्जन टी० श्रद्धायुक्तसुनिकै प्रेमसहितनोसोमज्जन धारनकरणासोपान बिपरीतभावमोंहंड कहतुहैं ॥ ॥ पंक्ति ११ जिनयह टी० एहिजलसोजिनलोगनमनकोनाहिं धोवातेकायरकलिकालठगनेठगेअरुतेबिषयी ॥ ॥ ॥

अगाधतागुनहै ॥ पं० ५ आरति टी० श्रीभरतजी दीनता १ बिनय २ लघुता ३ ललित सुन्दरजलमें गुनहै लघुताकहिलघुता सुबोलनाअपनी कहनुमहि भावअपन मुनिकाअपनीहठ लगुसाकीअपनाहठ कोटिकाहिबोबड़ी कैसेसहजही तैसहजा बहुतहैपिलाईकी ताकीबड़ाई बड़ीबड़ाई कहिकैनलको लघुताकीहीहै आरतिकेगुनतें तैसेबड़ेमनमें ताकोजलमें सेबारति प्रियसमें मोहिअनुपम मानसुख देखबसभी बनकेसुगन्धिकेआगे ध्यानहिविषय मनकोसबकोइ विश्राम थलसुबो मरुपुलते अस्वोवलित

पंक्ति२ टी॰
रपिणः तेभव
रवाकिलोगौ
उत्पन्नभयाग्नौ
बाग्निबिषप्रया
रह्माजलतोहिलौ
हैषप्रानित्यबिन
हदैनौध्याजिमि
सपरडभारीश्रमि
नाभिरहिगे ॥
पुं॰मातिश्रतहामि
टी॰ टीका।
रामजसमुनाव
मेंतौगुनगनमै
परैतमें मोति
भुउहारिकछु
उनकैश्रवन्त
हिजलमेंमन
श्रीमृकदेवायनौ
श्रीभवानीशंके
५ अस्युरामा
घरणाकेश्राचार्य
तिरकोउमरि
कैकाविसरहन
तिरामकथाके

दो॰
रा॰ बा॰
५०

हालै प्रथमराम
चरितमानसकहि
तुलसीयहउपजै
महांकावकथा
सहाईयहउपबं
सराकिय ॥
चौ॰
पं॰ ६ टी॰
अबरघुपति टी॰
अबपदतेरामाय
अबपदतेसुमा
एकोमुरमुग्रा
रम्रहौतैलहके
जनाएरघुपतिपदते
प्रारम्भमोनिजहष्ठ
देवकेबंदनाकी
मानरथकताम्र
जनकरीपाइप्रसा
पदतेकाव्य
कौदेवराक्तिनीमु
व्यताजनाएजग
जनुगलमुनिया
नलकिभरद्वाज
र्भमुनिवर्य्यश्रे
कर्मघाटकेप्रा
ख्यतयहजनाए
उन्मातीन

कांड कर्मकांडने प्रथम अंतःकरण शुद्ध तब भगवन स्वरू
पज्ञानता पाछे उपासना यह सनातन बेद मर्यादा राखी ४३

त्रषितनिरषिरविकरभवबारी फिरहिंमृगाजिमिजीवदुखा

मतिअनुहारिसुबारिबरगुणगुंनिमनअन्हवाइ
सुमरिभवानीशंकरहिंकहकविकथासुहाइ
भरद्वाजजिमिप्रश्नकियेयाज्ञबल्क्यमुनिपाइ
प्रथममुख्यसंबादसोइकहिहौंहेतुबुझाइ॥
अबरघुपतिपदपंकरुहहियधरिपायप्रसाद
कहौंजुगलमुनिबर्य्यकारिमिलनसुभगसंबाद

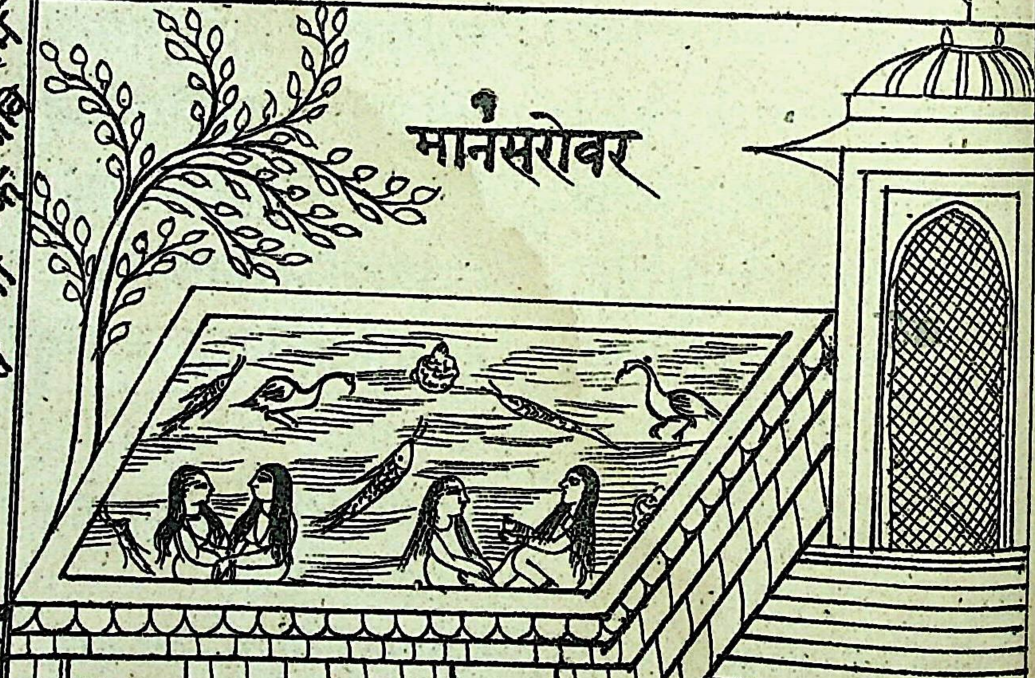

पं॰ १ चौ॰ ३२ दो॰ ८ भरद्वाजमुनि बसहिंप्रय कहांसोमतिप्र उत्तरलो॰ ४७ भरद्वाजसबको सिभ्रमधर्मकेउ दुपअनतप्रसुन कुनकोपरुकर कृतापर्वक जानतिहरिप्र चाणोनेवास रहोजहांसंतत मकरसंक्रांतिमें ऋषिनकोप्रस्तुत हरिकथाकहनसु नहानछ्योवल निरूपनबरनतथा ब्रह्मधर्मबिधिपूर्व मीमांसातत्वबिभा गसांख्यभक्तिकोना रदपांडस्यसतकरा त्यज्ञगर्मबाराष्ट्र दोग्यशास्त्रमें ७ योगशास्त्रकनमय रस्यादिकोलनकृ ज्ञानबालिकमोक्ष श्रीकालिकमोक्ष

भरद्वाजमुनिबसहिंप्रयागा। जिनहिंरामपदअतिअनुरागा।
तापससमदमदयानिधाना। परमारथपथपरमसुजाना।
माघमकरगतरबिजबहोई तीरथपतिहिंआवसबकोई
देवदनुजकिन्नरनरश्रेणी सादरमज्जहिंसकलत्रिबेणी
पूजहिंमाधवपदजलजाता। परसिअक्षयबटहर्षिंतगाता।
भरद्वाजआश्रमअतिपावन परमरम्यमुनिबरमनभावन
तहांहोइमुनिऋषयसमाजा जाहिंजेमज्जनतीरथराजा
मज्जहिंप्रातसमेतउछाहा कहहिंपरस्परहरिगुणगाहा

दो॰ ब्रह्मनिरूपणधर्मबिधिबरनहिंतत्वबिभाग
कहहिंभक्तिभगवंतकीसंयुतज्ञानबिराग॥

दो॰ रा॰ बा॰ ४१

इहिप्रकारभरिमकरनहाहीं पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं
प्रतिसंबतअसहोइअनंदा। मकरमज्जगवनहिंमुनिवृंदा
एकबारभरिमकरनहाये सबमुनीसआश्रमनिसिधाये
याज्ञबल्क्यमुनिपरमबिबेकी भरद्वाजराखेउपदटेकी॥
सादरचरणसरोजपखारे अतिपुनीतआसनबैठारे॥
करिपूजामुनिसुयशबखानी बोलेअतिपुनीतमृदुबानी
नाथएकसंशयबड़मोरे॥ करतलबेदतत्वसबतोरे
कहतमोहिलागतभयलाजा। जोनकहौंबड़होइअकाजा।

दो॰ संतकहहिंअसनीतिप्रभुश्रुतिपुराणमुनिगाव
होइनबिमलबिबेकउरगुरुसनकियेदुराव।

जेहितनमेंआत्म बिनयपूर्वकया भांतिप्रश्नकिया किरामनामको व्याख्यानकरना आत्मज्ञानकोदेना औरकोऊ याके उत्तरमेंधर्मवि बैकीप्रमितिभरद्वा जगुरुकोसन्मु नकरिश्रीरामके छिपानेसेही गौकोप्रश्न करतहैं पं॰ ३ आठ मकरगादि ईठ अंतर्गत देख

एकबारत्रेता
दो०॥
४७ चौ०५
४६
दो० ४
चौ० ३१८
गलानमहदेवी
कहमहाकालके
अवतारलीलाव
रामकथाचाली
गा॥ दो०॥
सकलमुनिपाई
अवतारकेहेतु
मनत्रैपरस्री

असबिचारिप्रगटौनिजमोहू। हरहुनाथकरिजनपरिछोहू
रामनामकरअमितप्रभावा। संतपुराणउपनिषदगावा॥
संततजपतशंभुअविनाशी। शिवभगवानज्ञानगुणराशी
आकरचारजीवजगअहहीं। कासीमरतपरमपदलहहीं
सोपिराममहिमारघुराया। शिवउपदेशकरतकरिदाया
रामकवनप्रभुपूछौंतोही। कहहुबुझायकृपानिधिमोही
एकरामअवधेशकुमारा। तिनकरचरितबिदितसंसारा
नारिबिरहदुषलहेउअपारा। भयेउरोषरणरावणमारा।

प्रभुसोइरामकिअपरकोउजाहिजपतत्रिपुरारि
सत्यधामसर्बज्ञतुमकहहुबिबेकाबिचारि॥

जैसेमिटैमोहभ्रमभारी॥ कहहुसोकथानाथबिस्तारी
याज्ञबल्क्यबोलेमुसकाई। तुमहिबिदितरघुपतिप्रभुताई
रामभक्ततुममनक्रमबानी। चतुराईतुम्हारिमैंजानी॥
चाहहुसुनैरामगुणगूढा। कीन्हेउप्रश्नमनहुअतिमूढा
तातसुनहुसादरमनलाई। कहउँरामकीकथासुहाई
महामोहमहिषेशबिसाला। रामकथाकालिकाकराला
रामकथाशशिकिरणसमाना। संतचकोरकरहिंतेपाना॥
एसेसंसयकीन्हभवानी॥ महादेवतबकहाबषानी

कहौंसोमतिअनुहारिअबउमाशंभुसंबाद॥
भयउसमयजेहिहेतुजेहिसुनमुनिमिटहिंबिषाद

एकबारत्रेतायुगमाहीं॥ शंभुगएकुंभजऋषिपाहीं॥

जुगमाहिंअ
प्रथमहिंकोहि
अंसावधरित
लौं०।शंभुस
गौसंयुतअगस्त
मुनिसमागम
पुनःहरिलीला
अवलोकिअरु
शिवजीकोप्रेम
अनन्दलखिगाये
देखिसतीकेभ्रम
कर्संशयतेमोह
टी०
रा० बा०
४२
कौशवल्लतातिअ
बलारभाकीदृढता
नमाईश्रीजानकी
जीकोरूपपरीक्षि
षीधारिसना
शिवनहृदयतें
सतीत्यागकीन्हो
सतीदुःखानि
मदाउरवसागर
मोंपरतालहि
समयपिनाभ
सनयत्तलगि
शिवउपदेशन
सुनिजाइतलु
लागकोही
तहांकीभद
जाद्यकबिधा
सकीकोसब
को

विधिवतफल दियोपुनःशिव करहुप्रीतिसंग हिमाचलगृह जन्मपार्वतीनाम पयोअस्रगनौ गिरिगृहमें श्रीसिद्धिबिभ वविभूतिकी अधिक्यतामें तहांनारदजबगनौ हर्षसकाउसानौ असगिरिदेवति कोपुनःउपदेश दयासिवानि चिंतनपकी कठिनतासें आकाशबाणी सुनिपरमानंद कोप्रापमये उहांशिवजू बैरागपद्मासें नहांश्रीराम

संगसतीजगजननिभवानी। पूजेऋषिअखिलेश्वरजानी
रामकथामुनिबर्यबखानी। सुनीमहेशपरमसुषमानी
ऋषिपूछाहरिभक्तिसोहाई कहीशंभुअधिकारीपाई॥
कहतसुनतरघुपतिगुनगाथा। कछुदिनरहेतहांगिरिनाथा।
मुनिसनबिदामांगित्रिपुरारी चलेभवनसंगदक्षकुमारी।
तेहिअवसरभंजनमहिभारा हरिरघुबंशलीन्हअवतारा॥
पिताबचनतजिराजउदासी दंडकबनबिचरतअविनासी

दो० हृदयबिचारतजातहरकेहिबिधिदर्शनहोइ।
गुप्तरूपअवतरेउप्रभुगयेजानसबकोइ + ॥

सो० शंकरउरअतिछोभसतीनजानेमर्मसोई।
तुलसीदर्शनलोभमनडरलोचनलालची॥

रावणमरणमनुजकरजाचा। प्रभुविधिबचनकीन्हचहसांचा
जोनहिंजाउरहैपछितावा। करतबिचारनबनतबनावा
एहिबिधिभएसोचबसईसा तहीसमयआइदससीसा।
लीन्हनीचमारीचहिसंगा। भएउतुरतसोइकपटकुरंगा
करिछलमूढहरीबैदेही। प्रभुप्रतापउरबिदितनतेही
मृगबधिबंधुसहितप्रभुआए आश्रमदेखिनयनजलछाये
बिरहबिकलनरइवरघुराई। खोजतबिपिनफिरतदोउभाई
कबहूंयोगबियोगनजाके। देखाप्रगटबिरहदुषताके॥

अतिबिचित्ररघुपतिचरितजानहिंपरमसुजान
जेमतिमंदबिमोहबसहृदयधरहिंकछुआन

शंभुसमयतेहिरामहिदेषा। उपजाअतिहियहर्षबिशेषा

टी०
रा० बा०
४३

बचनअंगीकार कियोपुनः ब्रम्हादिकउमा परीक्षालेंहिमा चलकोभेजे पार्वतीरहेगमन उहांश्रीशंकर समाधिमेंभए तारकअसुरतें सुरबिकलदिन नाहिबिपद उपदेशतें

भरिलोचनछबिसिंधुनिहारी कुसमयजानिनकीन्हिचिन्हारी
जयसच्चिदानंदजगपावन असकहिचलेमनोजनसावन
चलेजातशिवसतीसमेता पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता
सतीसोदशाशंभुकीदेखी। उरउपजासंदेहबिशेषी॥
शंकरजगतबंद्यजगदीशा॥ सुरनरमुनिसबनावहिंसीसा
तिननृपसुतहिकीन्हपरनामा कहिसच्चिदानंदपरधामा॥
भयेमगनछबितासुबिलोकी अजहुंप्रीतिउररहतिनरोकी

दो० ब्रह्मजोव्यापकबिरुजअजअकुलअनीहअभेद
सोकिदेहधरिहोइनृपजाहिनजाननबेद ५०॥

बिष्णुजोसुरहितनरतनुधारी सोउसर्बज्ञयथात्रिपुरारी
खोजनसोकिअज्ञइवनारी ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी
शंभुगिरापुनिमृषानहोई शिवसर्बज्ञजानसबकोई
अससंशयमनभयउअपारा होइनहृदयप्रबोधप्रचारा।
यद्यपिप्रगटनकहेउभवानी हरअंतरजामीसबजानी।
सुनहुसतीतवनारिसुभाऊ संशयअसनधरियउरकाऊ
जासुकथाकुंभजऋषिगाई भक्तिजासुमैंमुनिहिसुनाई
सोइममइष्टदेवरघुबीरा। सेवतजाहिसदामुनिधीरा

छं० मुनिधीरयोगीसिद्धसंततबिमलमनजेहिध्यावहीं।
कहिनेतिनिगमपुराणआगमजासुकीरतिगावहीं
सोईरामव्यापकब्रह्मभुवननिकायपतिमायाधनी
अवतरेउअपनेभक्तिहितनिजतंत्रनितरघुकुलमनी।

कामकौब
नर्ईनहिंकाम
कौगौरिशौ
कौबरधुनं
सप्तऋषि
दाराविवाह
कौपतिअल
अरुबरातबि
वाहबिधिनह
बन्योअरु
पार्बतीपुन
कैलाश
आवनहं
षट्मुखजन्म
तारकअसुर
मरतयाभांति
यागबलिकाज
उपदेशकीयै
अरुभरद्वाज
अरुकौशिवअरु
यामेंअभेद

टी०
रा० बा०
५४

बोधजानिअस
नहोउभयचलि
तभएराघव
मायाजानकी ॥

सो॰ लागनउरउपदेशयदपिकहेउशिवबारबहु
बोलेबिहँसिमहेशहरिमायाबलजानिजिय

जोतुमरेमनअतिसंदेहू। तोकिनजाइपरीक्षालेहू।
तबलगिबैठरहौंबटछाहीं जबलगितुमऐहहुमोहिपाहीं
जैसेजाइमोहभ्रमभारी ॥ करहुसोयतनबिबेकबिचारी
चलीसतीशिवआयसुपाई करहिंबिचारकरौंकाभाई
इहांशंभुअसमनअनुमाना दक्षसुताकहँनहिंकल्याना
मोरेहुकहेनसंशयजाहीं। बिधिबिपरीतभलाईनाहीं
होइहैसोइजोरामरचिराखा कोकरितर्कबढ़ावहिशाखा
असकहिलगेजपनहरिनामा। गईसतीजहँप्रभुसुखधामा

दो॰ पुनिपुनिहृदयबिचारिकरिधरिसीताकररूप
आगेहोइचलिपंथतेहिजेआवतसुरभूप ॥

लक्ष्मणदीखउमाकृतबेषा। चकितहृदयभ्रमभयउबिशेषा
कहिनसकतकछुअतिगंभीरा प्रभुप्रभावजानतमतिधीरा
सतीकपटजानेउसुरस्वामी समदरसीसबअंतरजामी
सुमिरतजाहिमिटैअज्ञाना सोईसर्बज्ञरामभगवाना ॥
सतीकीन्हचहतहँहुदुराऊ। देखहुनारिसुभावप्रभाऊ
निजमायाबलहृदयबखानी बोलेबिहँसिराममृदुबानी
जोरिपाणिप्रभुकीन्हप्रणामू पितासमेतलीन्हनिजनामू
कहेउबहोरिकहाँबृषकेतू बिपिनअकेलीफिरहुकेहिहेतू

दो॰ रामबचनमृदुगूढ़सुनिउपजाअतिसंकोच

सतीसभीतमहेसपहँचलीहृदयबड़सोच।

मैंसंकरकरकहानमाना॥ निजअग्यानरामपरआना।
जाइउतरअबदेहूँकाहा॥ उरउपजाअतिदारुणदाहा
जानारामसतीदुखपावा निजप्रभावकछुप्रगटजनावा।
सतीदीखकौतुकमगजाता। आगेरामसहितसियभ्राता।
फिरिचितवापाछेप्रभुदेखा। सहितबंधुसियसुंदरबेषा।
जहँचितवहितहँप्रभुआसीना। सेवहिंसिद्धमुनीशप्रबीना
देखेशिवबिधिबिष्णुअनेका। अमितप्रभावएकतेएका॥
बंदतचरणकरतप्रभुसेवा। बिबिधबेषदेखेसबदेवा॥

दो॰सतीबिधात्रीइंदिरादेखीअमितअनूप ॥
जेहिजेहिबेषअजादिसुरतेहितेहितनुअनुरूप

देखेजहँतहँरघुपतिजेते ॥ शक्तिनसहितसकलसुरतेते
जीवचराचरजेसंसारा ॥ देखेसकलअनेकप्रकारा
पूजहिंप्रभुहिदेवबहुबेषा रामरूपदूसरनहिंदेखा॥
अवलोकेरघुपतिबहुतेरे। सीतासहितनबेषघनेरे॥
सोइरघुबरसोइलक्ष्मणसीता। देखिसतीअतिभईसभीता
हृदयकंपतनसुधिकछुनाहीं। नयनमूंदिबैठीमगमाहीं॥
बहुरिबिलोकेउनयनउघारी कछुनदीखतहँदक्षकुमारी
पुनिपुनिनाइरामपदसीसा। चलीतहाँजहँरहेगिरीसा।

दो॰गयीसमीपमहेशतबहँसपूछीकुशलात।
लीनपरीक्षाकवनबिधिकहहुसत्यसबबात

पंक्ति २८ सोरठा। जलपय दृ० दृष्टांतमें मिला जल दूध कैसा न बिके बात है यह दूध की भलाई ॥ 〃 〃 〃 〃 〃 〃

सतीसमुझिरघुबीरप्रभाऊ। भयबशशिवसनकीन्हदुराऊ
कछुनपरीछालीनगोसांई कीन्हप्रणामतुम्हारिहिनाईं
जोतुमकहासोमृषानहोई मोरेमनप्रतीतिअतिसोई॥
तबशंकरदेखेउधरिध्याना। सतीजोकीन्हचरितसबजाना।
बहुरिराममायहिसिरुनावा। प्रेरिसतीहिजेहिझूठकहावा।
हरिइच्छाभावीबलवाना। हृदयबिचारतशंभुसुजाना।
सतीकीन्हसीताकरबेषा। शिवउरभयेउबिषादबिशेषा।
जौअबकरौंसतीसनप्रीती मिटैभक्तिपथहोइअनीती।

परमप्रेमनहिंजाइतजि कियेप्रेमबड़पाप॥
प्रगटनकहतमहेशकछु हृदयअधिकसंताप

तबहिंशंभुप्रभुपदशिरनावा। सुमिरतरामहृदयअसआवा।
इहितनुसतीहिभेटमोहिनाहीं शिवसंकल्पकीन्हमनमाहीं
असबिचारिशंकरमतिधीरा चलेभवनसुमिरतरघुबीरा
चलतगगनभैगिरासुहाई। जयमहेशभलिभक्तिदृढ़ाई
असप्रणतुमबिनुकरैकोआना। रामभक्तिसमरथभगवाना।
सुनिनभगिरासतीउरसोचू। पूछाशिवहिसमेतसकोचू
कीन्हकवनप्रणकहहुकृपाला। सत्यधामप्रभुदीनदयाला।
यदपिसतीपूछाबहुभांती। तदपिनकहेउत्रिपुरआराती

दो· सतीहृदयअनुमानकियसबजानासर्बज्ञ।
कीन्हकपटमैंशंभुसननारिसहजजड़अज्ञ॥
सो· जलपयसरिसबिकाइदेखहुप्रीतिकिरीतिभल

बिलगहोइरसजाइकपटषटाईपरतही

हृदयशोचसमुझतनिजकरणी चिंताअमितजाइनहिंबरणी
कृपासिंधुशिवपरमअगाधा प्रगटनकहेउमोरअपराधा
शंकररुषअवलोकिभवानी प्रभुमोहितजेउहृदयअकुलानी
निजअघसमुझनकछुकहिजाई तपैअवाइवउरअधिकाई॥
सतीहिससोचजानिवृषकेतू कहेउकथासुंदरसुखहेतू
बरणनपंथबिबिधइतिहासा बिश्वनाथपहुंचेकैलासा
तहँपुनिशंभुसमुझप्रणआपन बैठेबटतरकरिकमलासन
शंकरसहजसरूपसंभारा लागिसमाधिअखंडअपारा

टी॰ रा॰ बा॰ ५८

दो॰ सतीबसहिंकैलाशतबअधिकसोचमनमांह
मर्मनकोऊजानकछुजुगसमदिवससिराहिं

नितनवशोचसतीउरभारा कबजैहौंदुखसागरपारा।
मैंजोकीन्हरघुपतिअपमाना पुनिपतिबचनमृषाकरिजाना
सोइफलमोहिंबिधातादीन्हा जोकछुउचितरहासोकीन्हा
अबबिधिअसबूझियनहितोही शंकरबिमुखजिआवहुमोही
कहिनजाइकछुहृदयगलानी मनमहँरामहिंसुमिरसयानी
जोप्रभुदीनदयालकहावा आरतिहरणबेदयशगावा
तौमैंबिनयकरौंकरजोरी। छूटैबेगदेहअबमोरी॥
जोमोरेशिवचरणसनेहू। मनक्रमबचनसत्यव्रतएहू

दो॰ तौसमदर्शीसुनियप्रभुकरोसोबेगिउपाइ
होइमरणजेहिबिनयश्रमदुस्सहबिपत्तिबिहाइ

इहिबिधिदुखितप्रजेशकुमारी अकथनीयदारुणदुखभारी

बीतेसंबतसहस्रसतासी तजीसमाधिशंभुअबिनासी
रामनामशिवसुमरनलागे जानेउसतीजगतपतिजागे
जाइशंभुपदबंदनकीना॥ सन्मुखशंकरआसनदीना
लगेकहनहरिकथारसाला। दक्षप्रजेशभयेतेहिकाला
देखाबिधिबिचारसबलायक दक्षहिकीन्हप्रजापतिनायक
बड़अधिकारदक्षजबपावा अतिअभिमानहृदयतबआवा
नहिंअसकोउजन्मेउजगमाहीं प्रभुतापाइजाहिमदनाहीं

दो॰ दक्षलियेमुनिबोलसबकरणलगेबड़याग।
नेवतेआदरसकलसुरजेपावतमखभाग॥

चौ॰ किन्नरनागसिद्धगंधर्बा बधुनसमेतचलेसुरसर्बा
बिष्णुबिरंचिमहेशबिहाई चलेसकलसुरयानबनाई
सतीबिलोकेगगनबिमाना। जातँसुंदरबिधिनाना +॥ चले
सुरसुंदरीकरहिंकलगाना। सुनतश्रवणछूटहिंमुनिध्याना
पूछेउतबशिवकहेउबषानी पितायज्ञसुनिकछुहरषानी
जोमहेशमोहिंआयसुदेही कछुदिनजाइरहौंमिसएही
पतिपरित्यागहृदयदुखभारी कहैननिजअपराधबिचारी
बोलीसतीमनोहरबानी॥ भयसंकोचप्रेमरससानी

दो॰ पिताभवनउत्सवपरमजोप्रभुआयसुहोइ।
तौमैंजाउँकृपायतनसादरदेखनसोइ २॥

कहेउनीकमोरेमनभावा। यहअनुचितनहिंनेवतपठावा

टी॰
रा॰ बा॰
५५

दत्तसकलनिजसुताबुलाई हमरेबैयरतुम्हेंबिसराई।
ब्रह्मसभाहमसनदुषमाना तेहितेंअजहुंकरहिंअपमान
जौंबिनुबोलेजाहुंभवानी रहैनसीलसनेहनकानी।
यदपिमित्रप्रभुगुरुपितुगेहा जाइयबिनुबोलेहुंनसंदेह
तदपिबिरोधमानजहँकोई तहांगयेकल्याननहोई।
भांतिअनेकशंभुसमुझावा। भावीबसनज्ञानउरआवा।
कहप्रभुजाहुजोबिनहिंबुलायें नहिंभलिबातहमारेभायें।

दो॰ कहिदेखाहरयतनबहु रहैनदत्तकुमारि
दियेमुख्यगणसंगतब बिदाकियेत्रिपुरारि

पिताभवनजबगईभवानी। दत्तत्रासकाहुनसनमानी
सादरभलेहिंमिलीएकमाता भगिनीमिलीबहुतमुसुका
दत्तनकछुपूछीकुशलाता सतीहिंबिलोकिजरेसबगा
सतीजाइदेखेउतबयागा। कतहुंनदीखशंभुकरभाग
तबचितचढेउजोशंकरकहेऊ प्रभुअपमानसमुझिउरदहेऊ
पाछिलदुषनहृदयअसब्यापा जसयहभयेउमहापरिताप
जद्यपिजगदारुणदुषनाना सबतेंकठिनजातिअपमान
समुझिसोसतीहिंभौअतिक्रोधा बहुबिधिजननीकीन्हप्रबोध

शिवअपमाननजाइसहि हृदयनहोनप्रबोध॥
सकलसभहिंहठिहटकितब बोलीबचनसक्रोध।

सुनहुसभासदसकलमुनिंदा कहीसुनीजिन्हशंकरनिंद
सोफलतुरतलहबसबकाहू भलीभांतिपछितायपिता

संतशंभुश्रीपतिअपबादा। सुनियजहांतहंअसमर्यादा।
काटियतासुजीभजोबसाई श्रवणमूंदिनतुचलियपराई
जगदातमामहेशपुरारी। जगतजनकसबकेहितकारी
पितामंदमतिनिंदतितेही दक्षशुक्रसंभवयहदेही॥
तजिहौंतुरतदेहतेहिहेतू उरधरचंद्रमौलिवृषकेतू।
असकहियोगअगिनितनुजारा भयउसकलमखहाहाकारा।

सतीमरणसुनिशंभुगणलगेकरणमखखीस
यज्ञबिध्वंसबिलोकिभृगुरक्षाकीन्हमुनीस।

समाचारजबशंकरपाये॥ वीरभद्रकरिकोपपठाये।
यज्ञबिध्वंसजाइतिन्हकीन्हा सकलसुरन्हबिधिवतफलदीन्हा
भइजगबिदितदक्षगतिसोई। जसकछुशंभुबिमुखकीहोई
यहइतिहाससकलजगजाना तातेंमैंसंक्षेपबखाना॥
सतीमरतहरिसनबरमांगा जन्मजन्मशिवपदअनुरागा।
तेहिकारणहिमगिरिगृहजाई जन्मीपारवतीतनुपाई।
जबतेंउमाशैलगृहआई॥ सकलसिद्धिसंपतितहंछाई
जहंतहंमुनिनसुआश्रमकीन्हे उचितबासहिमभूधरदीन्हे

सदासुमनफलसहितसबद्रुमनवनानाजाति
प्रगटीसुंदरशैलपरमणिआकरबहुभांति

सरितासबपुनीतजलबहहीं खगमृगमधुपसुखीसबरहहीं
सहजबैरसबजीवनत्यागा गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा
सोहशैलगिरिजागृहआयें जिमिजनरामभक्तकेपायें

दो॰
रा॰ बा॰
५१

टी·
रा·बा·
५२

नितिनूतनमंगलगृहतासू ब्रह्मादिकगावहिंजसजास
नारदसमाचारसबपाये। कौतुकहिंगिरिगेहसिधाये
शैलराजबड़आदरकीन्हा पदपखारिबरआसनदी
नारिसहितमुनिपदसिरनावा चरणसलिल[illegible]भवनसिचा
निजसौभाग्यबहुतगिरिबरणा सुताबोलिमेलीमुनिचरणा

दो· त्रिकालज्ञसर्वज्ञतुम गतिसर्वत्रतुम्हारि
कहहुसुताकेदोषगुणमुनिबरहृदयबिचारि

कहमुनिविहसिगूढ़मृदुबानी सुतातुम्हारिसकलगुणखानी
सुंदरिसहजसुशीलसयानी नामउमाअंबिकाभवानी
सबलक्षणासंपन्नकुमारी होइहिसंततपियहिपियारी
सदाअचलएहिकरअहिवाता एहितेयशपैहहिंपितुमाता
होयपूज्यसकलजगमांही एहिसेवतकछुदुर्लभनाहीं
एहिकरनामसुमिरसंसारा त्रियचढिहहिंपतिव्रतअसि
शैलसुलक्षणासुतातुम्हारी सुनहुजेअबअवगुणदुइचारी
अगुणअमानमातपितुहीना उदासीनसबसंशयछीना

दो· जोगीजटिलअकाममननगनअमंगलभेष
असस्वामीइहिकाहिंमिलिहिपरीहस्तअसरेष

सुनिमुनिगिरासत्यजियजानी दुखदंपतिहिउमाहरषानी
नारदहूयहभेदनजाना ॥ दशाएकसमुझतबिलगाना
सखीसकलगिरिजागिरिमयना पुलकशरीरभरेजलनयना
होइनमृषादेवऋषिभाषा। उमासोबचनहृदयधरिरा

उपजेउशिवपदकमलसनेहू मिलनकठिनमनयहसंदेहू
जानिकुअवसरप्रीतिदुराई सखीउछंगबैठिपुनिजाई
झूठनहोइदेवऋषिबानी सोचहिंदंपतिसखीसयानी
उरधरिधीरकहैंगिरिराऊ कहहुनाथकाकरियउपाऊ

दो॰कहमुनीशहिमवंतसुनुजोबिधिलिखालिलार
देवदनुजनरनागमुनिकोउनमेटनहार॥

नदपिकहौमैंएकउपाई होयदैवजोकरैसहाई।
जसबरमैंबरणेउतुमपांही मिलिहिउमहिंकछुसंशयनाहीं
जेजेबरकेदोषबखाने। तेसबशिवपहँमैंअनुमाने
जोबिवाहशंकरसनहोई। दोषौगुणसमकहसबकोइ
जोअहिसेजसैनहरिकरहीं बुधकछुतिनकहँदोषनधरहीं
भानुकृशानुसर्बरसखाहीं तिनकहँमंदकहतकोउनाहीं
शुभअरुअशुभसलिलसबबहहीं सुरसरिकोउअपावनकहहीं
समरथकहँनहिंदोषगुसांई रविपावकसुरसरिकीनांई

दो॰जोअसहिंईर्षाकरहिंजड़बिबेकअभिमान
परहिंकल्पभरनरकमहिंजीवकिईससमान

सुरसरिजलकृतबारुणिजाना कबहुनसंतकरहिंतेहिपान
सुरसरिमिलेसुपावनजैसे। ईशअनीशहिअंतरतैसे॥
शंभुसहजसमरथभगवाना इहिबिवाहसबबिधिकल्यान
दुराराध्यपैअहहिंमहेसू। आसुतोषपुनिकियेकलेसू
जोतपकरैकुमारितुम्हारी भावीउमेटसकैत्रिपुरारी॥

यद्यपिबरअनेकजगमाहीं इहिकहंशिवतजदूसरनाहीं
बरदायकप्रणतारतिभंजन कृपासिंधुसेवकमनरंजन।
इच्छितफलबिनुशिवआराधें लहइनकोटियोगजपसाधें।

असकहिनारदसुमिरिहरि गिरजहिंदीन्हअसीस
होइहिअबकल्याणसबसंशयतजहुगिरीस

कहिअसब्रह्मभुवनमुनिगयेऊ आगिलचरितसुनहुजसभ
पतिएकांतपायकहमैना। नाथनमैंसमुझेउमुनिबयना
जोघरबरकुलहोयअनूपा करियबिबाहसुताअनुरूपा
नतुकन्याबररहौंकुमारी। कंतउमाममप्राणपियारी।
जोनमिलहिबरगिरिजहियोगू गिरिजड़सहजकहहिंसबलोगू
सोबिचारिपतिकरहुबिबाहू जेहिनबहोरिहोइउरदाहू।
असकहपरीचरणधरसीसा बोलेसहितसनेहगिरीसा
बरपावकप्रगटैशशिमाहीं नारदबचनअन्यथानाहीं

प्रियासोचपरिहरहुसबसुमिरहुश्रीभगवान
पारवतीजिननिर्मयोसोइकरहिंकल्यान॥

अबजोतुमहिसुतापरनेहू तौअसजाइसिखावनदेहू
करोसोतपजेहिमिलिहिमहेसू आनउपायनमिटहिंकलेसू
नारदबचनसगर्भसहेतू। सुंदरसबगुणनिधिवृषके
असबिचारितुमतजिसबसंका सबहिंभांतिशंकरअकलंक
सुनिपतिबचनहर्षमनमाहीं गईतुरतउठिगिरिजापाहीं
उमहिंबिलोकिनयनभरिबारी सहितसनेहगोदबैठारी॥

बारहिंबारलेतउरलाई ॰। गदगदकंठनकछुकहिजाई
जगतमातुसर्बज्ञभवानी। मातुसुखदबोलीमृदुबानी

सुनहुमातुमैंदीखअससपनसुनाऊंतोहि॥
सुंदरगौरसुबिप्रबरअसउपदेशेउमोहि॥

करहुजाइतपशैलकुमारी नारदकहासोसत्यबिचारी
मातुपितहिपुनियहमतभावा। तपसुखप्रददुखदोषनसावा।
तपबलरचैप्रपंचबिधाता। तपबलबिष्णुसकलजगत्राता
तपबलशंभुकरहिंसंहारा तपबलशेषधरहिंमहिभारा
तपअधारसबसृष्टिभवानी करहुजाइतपअसजियजानी
सुनतबचनबिस्मितमहतारी सपनसुनायेउगिरिहिहंकारी
मातुपितहिंबहुबिधिसमुझाई चलीउमातपहितहरषाई
प्रियपरिवारपिताअरुमाता। भयेबिकलमुखआवनबाता

बेदशिरामुनिआयतबसबहिंकहासमुझाइ
पारबतीमहिमासुनतरहेप्रबोधहिपाइ॥

उरधरउमाप्राणपतिचरणा। जाइबिपनलागीतपकरणा
अतिसुकुमारिननतपयोगू पतिपदसुमिरितजेउसबभोगू।
नितनवचरणउपजअनुरागा। बिसरीदेहतपहिमनलागा।
संबतसहस्रमूलफलखाये शाकखाइशतबर्षगंवाये
कछुदिनभोजनबारिबतासा। कियेकठिनकछुदिनउपवासा
बेलपातमहिपरेसुखाई तीनिसहस्रसंबतसोखाई
पुनिपरिहरेउसुखानेउपर्णा उमानामतबभयेउअपर्णा

देखिउमहितपछीनशरीरा। ब्रह्मगिराभइगगनगंभीरा

दो· भएउमनोरथसुफलतवसुनुगिरिराजकुमारि
परिहरुदुसहकलेशसबअबमिलहहिंत्रिपुरारि

असतपकाहुनकीनभवानी भयेअनेकधीरमुनिज्ञानी।
अबउरधरहुब्रह्मबरबानी। सत्यसदासंततसुचिजानी।
आवैपिताबुलावनजबहीं हठपरिहरघरजायहुतबहीं
मिलहिंतुमहिंजबसप्तऋषीशा जानेउतबप्रमाणबागीशा
सुनतगिराबिधिगगनबषानी पुलकगातगिरिजाहरषानी
उमाचरितमैंसुंदरगावा। सुनहुशंभुकरचरितसुहावा
जबसेसतीजाइतनुत्यागा तबतेंशिवमनभएउबिरागा
जपहिंसदारघुनायकनामा जहँतहँसुनहिंरामगुणग्राम

री
रा·बा·
५६

दो· चिदानंदसुखधामशिवबिगतमोहमदकाम
बिचरहिंमहिधरिहृदयहरि सकललोकअभिराम

कतहुंमुनिनउपदेशहिंज्ञाना कतहुंरामगुणकरहिंबषान
यदपिअकामतदपिभगवाना भक्तबिरहदुखदुखितसुजान।
एहिबिधिगएउकालबहुबीती नितनवहोइरामपदप्रीती।
नेमप्रेमशंकरकरदेखा। अविचलहृदयभक्तिकीरेख
प्रगटेरामकृतज्ञकृपाला। रूपशीलनिधितेजबिशाल
बहुप्रकारशंकरहिंसराहा तुमबिनुअसव्रतकोनिरबाह
बहुबिधिरामशिवहिंसमुझावा पारबतीकरजनमसुनावा।
अतिपुनीतगिरिजाकीकरणी बिस्तरसहितकृपानिधिबरणी

दो॰ अबबिनतीममसुनियप्रभुजोमोपरनिजनेहु
जाइबिवाहहुशैलजहिंयहमोहिमांगेदेहु।

कहशिवयदपिउचितअसनाहीं नाथबचनपुनिमेटनजाहीं
सिरधरिआयसुकरियतुम्हारा परमधरमयहनाथहमारा
मातपितागुरुप्रभुकीबानी बिनहिबिचारकरियसुभजानी
तुमसबभांतिपरमहितकारी आज्ञासिरपरनाथतुम्हारी
प्रभुतोषेउसुनिशंकरबचना भक्तिबिबेकधर्मयुतरचना
कहप्रभुहरतुम्हारप्रणरहेऊ अबउरराखेउजोहमकहेऊ।
अंतरध्यानभयेअसभाषी शंकरसोईमूरतिउरराखी।
तबहिंसप्तऋषिशिवपहँआए बोलेप्रभुअसबचनसुहाए।

पारबतीपहँजाइतुमप्रेमपरीक्षालेहु॥
गिरिहिप्रेरिपठयेहुभवनदूरकरेहुसंदेहु

ऋषिनगौरिदेखीतहँकैसी मूरतिवंततपस्याजैसी॥
बोलेमुनिसुनशैलकुमारी करहुकवनकारणतपभारी
केहिआराधहुकातुमचहहू हमसनसत्यमर्मसबकहहू
सुनतऋषिनकेबचनभवानी बोलीगूढमनोहरबानी।
कहतमर्ममनअतिसकुचाई हँसिहहुसुनिहमारिजड़ताई
मनहठपरानसुनैसिखावा चहतबारिपरभीतिउठावा
नारदकहासत्यसोइजाना बिनुपंखनहमचहहिंउड़ाना
देखियमुनिअबिबेकहमारा चाहतपतिशंकरअबिकारा

दो॰ सुनतबचनबिहँसेऋषयगिरिसंभवतवदेह

नारदकरउपदेशसुनिकहहुबसेकोगेह॥

दक्षसुतन्हउपदेशिनजाई। तिनफिरिभवननदेखाआई
चित्रकेतुकरघरउनघाला। कनककशिपुपुनिकरिअसहा
नारदसिषजुसुनहिंनरनारी। अवशिभवनतजिहोहिंभिखा
मनकपटीतनसज्जनचीन्हा। आपुसरिससबहीचहकीन्
तेहिकेबचनमानविश्वासा। तुमचाहहुपतिसहजउदासा
निर्गुणनिलजकुबेषकपाली। अकुलअगेहदिगंबरब्याली।
कहहुकवनसुषअसबरपाए। भलिभूलिहुठगकेबौराए
पंचकहेशिवसतीबिवाही। पुनिअवडेरिमराइनताही।

अबसुखसोवतसोचनहिंभीखमांगिभवखाहिं
सहजएकाकिनकेभवनकबहुंकिनारिषटाहिं

टी॰
रा॰ बा॰
५८

अजहुंमानहुकहाहमारा हमतुमकहंबरनीकबिचा
अतिसुंदरसुचिसुषदसुसील। गावहिंबेदजासुयशलील
दूषणरहितसकलगुणरासी। श्रीपतिपुरबैकुंठनिवासी
असबरतुमहिमिलाउबआनी। सुनतबिहंसिकहबचनभवा
सत्यकहहुगिरिभवतनएहा हठनछूटछूटैबरुदेहा॥
कनकोपुनिपषाननतेहोई जारेउसहजनपरिहरसोई
नारदबचननमैंपरिहरऊं बसौभवनउजरैनहिंडरऊं
गुरुकेबचनप्रतीतिनजेही सपनेहुसुगमनसुषसिधितेही

महादेवअवगुणभवनबिष्णुसकलगुणधाम
जेहिकरमनरमजाहिसनताहिताहिसनकाम॥

जौ तुम मिलितेउ प्रथम मुनीसा। सुनतेउ सिष तुम्हारि धरि सीसा।
अब मैं जन्म शंभु हित हारा। को गुण दोष हिं करै बिचारा
जौ तुम्हरे हठ हृदय बिशेषी। रहि न जाइ बिनु किये बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं। बर कन्या अनेक जग माहीं
जन्म कोटि लगि रगरि हमारी। बरौं शंभु न तु रहौं कुमारी।
तजौं न नारद कर उपदेसू॥ आपु कहहिं सत बार महेसू
मैं पा परौं कहै जगदंबा॥ तुम गृह गवनउ भयउ बिलंबा
देषि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी। जय जय जय जगदंब भवानी

तुम माया भगवान शिव सकल जगत पितु मात
नाइ चरण सिर मुनि चले पुनि पुनि हर्षित गात

जाइ मुनिन हिमवंत पठाये। करि बिनती गिरजहि गृह ल्याए
बहुरि सप्तऋषि शिव पहँ जाई। कथा उमा की सकल सुनाई
भये मगन शिव सुनत सनेहा। हर्ष सप्तऋषि गवने गेहा।
मन थिर करि तब शंभु सुजाना। लगे करण रघुनायक ध्याना।
तारक असुर भयेउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिशाला
अजरु अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि बिबिध लराई
तेहि सब लोक लोकपति जीते। भये देव सुष संपति रीते॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे। देखे बिधि सब देव दुखारे

सब सन कहा बुझाय बिधि दनुज निधन तब होइ
शंभु शुक्र संभूत सुत एहि जीते रण सोइ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईश्वर करिहि सहाई

टी
रा॰ बा॰
५९

रहौं ॥ कामसें के लिये उभ्या मो हरपरी अपकारि ६ ध्रुव नाशन मो॰ रंगहो लोभहरिचन्द ग्रमोरागेन दो॰ असतुल तदपिकारव पंक्ति १०

सतीजोतजीदक्षमखदेहा जनमीजाइहिमांचलगेहा
तेहितपकीन्हशंभुपतिलागी शिवसमाधिबैठेसबत्यागी
यदपिअहैअसमंजसभारी तदपिबातएकसुनहुहमारी
पठवहुकामजाइशिवपांही करैक्षोभशंकरमनमांही
तबहमजाइशिवहिशिरनाई करवाउबबिवाहबरिआई
इहिबिधिभलेहिदेवहितहोई मतिअतिनीककहैसबकोई
अस्तुतिसुरन्हकीन्हअतिहेतू प्रगटेउबिषमबाणझषकेतू

सुरन्हकहीनिजबिपतिसबसुनिमनकीन्हबिचार
शंभुबिरोधनकुशलमोहिबिहँसिकहेउअसमार

टी॰
रा॰ बा॰
६०

तदपिकरबमैंकाजतुम्हारा श्रुतिकहपरमधर्मउपकारा
परहितलागितजैजोदेही॥ संततसंतप्रशंसहिंतेही
असकहिचलेउसबहिसिरनाई सुमनधनुषकरसहितसहाई
चलतमारअसहृदयबिचारा शिवबिरोधध्रुवमरणहमारा
तबआपनप्रभावबिस्तारा। निजबसकीन्हसकलसंसारा
कोपेउजबहिंबारिचरकेतू क्षणमहँमिटेसकलश्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्यब्रतसंयमनाना॥ धीरजधर्मज्ञानबिज्ञाना
सदाचारजपयोगबिरागा सभयबिबेककटकसबभागा

छं॰ भागेबिबेकसहाइसहितसोसुभटसंयुगमहिमुरे
सद्ग्रंथपर्बतकंदरनमहिजाइतेहिअवसरदुरे॥
होनिहारकाकरतारकोरखवारजगखरभरपरा
दुइमाथकेहिरतिनाथजेहिकहँकोपिकरधनुशरधरा

दो॰जेसजीवजगअचरचरनारिपुरुषअसनाम
तेनिजनिजमर्यादतजिभयेसकलबसकाम

सबकेहृदयमदनअभिलाषा। लतानिहारिनवहिंतरुशाखा।
नदीउमगिअंबुधकहँधाईं संगमकरहिंतलावतलाई
जहँअसदशाजड़नकीबरणी। कोकहिसकैसचेतनकरणी
पशुपक्षीनभजलथलचारी भयेकामबससमयबिसारी
मदनअंधव्याकुलसबलोका। निसदिननहिंअवलोकहिंकोका
देवदनुजनरकिन्नरव्याला। प्रेतपिशाचभूतबैताला।
इनकीदशानकहेउबखानी सदाकामकेचेरेजानी॥
सिद्धबिरक्तमहामुनियोगी। तेपिकामबसभयेबियोगी

छं॰भयेकामबशयोगीशतापसपामरनकीकोकहै
देखहिंचराचरनारिमयजेब्रह्ममयदेखतरहै
अबलाबिलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयं
दुइदंडभरिब्रह्मंडभीतरकामकृतकौतुकअयम्
सो॰धरीनकाहूधीरसबकेमनमनसिजहरे॥
जेहिराखेउरघुबीरतेउबरेतेहिकालमहँ॥

उभयघरीअसकौतुकभयऊ जबलगिकामशंभुपहँगयऊ
शिवहिंबिलोकिसशंकेउमारू भयेउयथाथितसबसंसारू
भयेतुरतजगजीवसुखारे जिमिमदउतरगयेमतवारे
रुद्रहिंदेखिमदनभयमाना। दुराधर्षदुर्गमभगवाना॥
फिरतलाजकछुकरिनहिंजाई मरणठानिमनरचेसिउपाई

प्रगटेसितुरतरुचिररितुराजा। कुसुमितनवतरुराजिबिराजा।
बनउपबनबापिकातड़ागा। परमसुभगसबदिसाबिभागा।
जहँतहँजनुउमगतअनुरागा। देषिमुयेउमनमनसिजजागा।

छं॰ जागेउमनोभवमुयेमनबनसुभगतानपरैकही॥
सीतलसुगंधसुमंदमारुतमदनअनलसषासही।
बिकसेसरन्हबहुकंजगुंजतपुंजमंजुलमधुकरा॥
कलहंसपिकसुकसरसरवकरिगाननाचहिंअपसरा
दो॰ सकलकलाकरिकोटिबिधिहारेउसेनसमेत॥
चलीनअचलसमाधिशिवकोपेउहृदयनिकेत॥

देषिरसालबिटपबरसाषा। तेहिपरचढेउमदनमनमाषा
सुमनचापनिजशरसंधाने। अतिरिसताकिश्रवणलगिताने
छाडेबिषमबिशिखउरलागे छूटिसमाधिशंभुतबजागे।
भयेउईशमनक्षोभबिशेषी नयनउघारिसकलदिशिदेषी
सौरभपल्लवमदनबिलोका भयेउकोपकंपेउत्रयलोका
तबशिवतीसरनयनउघारा चितवतकामभयेउजरिछारा
हाहाकारभयेउजगभारी। डरपेसुरभयअसुरसुषारी
समुझिकामसुषसोचहिंभोगी भयअकंटकसाधकयोगी

छं॰ योगीअकंटकभयेपतिगतिसुनतिरतिमूर्छितभई
रोदतिबदतिबहुभांतिकरुणाकरतिशंकरपहँगई ×
अतिप्रेमकरिबिनतीबिबिधबिधिजोरकरसन्मुषरही
प्रभुआसुतोषकृपालशिवअबलानिरषिबोलेसही

सो· अबतेंरतितवनाथकर होइहिनामअनंग।
बिनवपुब्यापिहिसबहिपुनिसुनिनिजमिलनप्रसंग

जबयदुबंशकृष्णअवतारा होइहिहरणमहामहिभारा
कृष्णतनयहोइहिपतितोरा बचनअन्यथाहोइनमोरा॥
रतिगवनीसुनिशंकरबानी कथाअपरअबकहौंबषानी
देवनसमाचारसबपाये॥ ब्रह्मादिकबैकुंठसिधाये।
सबसुरबिष्णुबिरंचिसमेता। गयेजहाँशिवकृपानिकेता।
पृथकपृथकतिन्हकीन्हप्रसंसा भयेप्रसन्नचंद्रअवतंसा॥
बोलेकृपासिंधुबृषकेतू। कहहुअमरआएहुकेहिहेतू
कहबिधितुमप्रभुअंतरजामी तदपिभक्तबसबिनवउस्वामी

सकलसुरन्हकेहृदयअसशंकरपरमउछाह॥
निजनयनन्हिदेषाचहहिंनाथतुम्हारबिबाह

यहउत्सवदेषियभरलोचन। सोकछुकरियमदनमदमोचन
कामजारिरतिकहँबरदीन्हा कृपासिंधुयहअतिभलकीन्हा
सासतिकरिपुनिकरहिंपसाऊ नाथप्रभुनकरसहजसुभाऊ
पारबतीतपकीन्हअपारा॥ करहुतासुअबअंगीकारा
सुनिबिधिबचनसमुझिप्रभुबानी ऐसोईहोउकहासुषमानी
तबदेवनदुंदुभीबजाईं॥ बरषिसुमनजयजयसुरसाईं
अवसरजानिसप्तऋषिआये। तुरतहिंबिधिगिरिभवनपठाये
प्रथमगयेजहँरहीभवानी। बोलेबचनमधुरछलसानी

दो· कहाहमारनसुनहुतबनारदकरउपदेश॥

अबभैंझूठतुम्हारप्रणजारेउकाममहेश॥

सुनिबोलीमुसुकायभवानी उचितकहेउमुनिवरबिज्ञानी
तुम्हरेजानकामअबजारा। अबलगिशंभुरहेसबिकारा
हमरेजानसदाशिवयोगी अजअनवद्यअकामअभोगी
जोमैंशिवसेयेउअसजानी प्रीतिसमेतकर्ममनबानी
तौहमारप्रणसुनहुमुनीसा करिहहिंसत्यकृपानिधिईशा
तुमजोकहाहरजारेउमारा सोअतिबड़अबिबेकतुम्हारा
तातअनलकरसहजसुभाऊ, हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ
गयेसमीपसोअवसिनसाई असमनमथमहेशकीनांई

टी·
रा·बा·
६४

हियहरषेमुनिवचनसुनिदेखिप्रीतिबिश्वास
चलेभवानीनाइशिरगयेहिमाचलपास।

सबप्रसंगगिरिपतिहिसुनावा मदनदहनसुनिअतिदुखपावा
बहुरिकहेउरतिकरबरदाना सुनहिमवंतबहुतसुखमाना
हृदयबिचारिशंभुप्रभुताई सादरमुनिवरलियेबुलाई
सुदिनसुनखतसुघरीसुचाई बेगबेदबिधिलगनधराई।
पत्रीसप्तऋषिनसोईदीन्ही गहिपदबिनयहिमाचलकीन्ही
जाइबिधिहितिनदीन्हजोपाती बाचतहृदयनप्रीतिसमाती
लगनबांचअजसबहिसुनाई हरषेमुनिसबसुरसमुदाई
सुमनवृष्टिनभबाजनबाजे मंगलकलशदशहुंदिशसाजे

लगेसवारनसकलसुरबाहनबिबिधबिमान।
होंहिसगुणमंगलसुभगकरहिंअप्सरागान॥

शिवहिंसंभुगणकरहिंसिंगारा जटामुकुटअहिमौरसँवारा
कुंडलकंकणपहिरेब्याला तनबिभूतिपटकेहरिछाला
शशिलिलाटसुंदरसिरगंगा नयनतीनउपवीतभुजंगा
गरलकंठउरनरशिरमाला अशिवबेषशिवधामकृपाला
करत्रिशूलअरुडमरुबिराजा चलेसबहिचढिबाजेहिबाजा
देखिशिवहिंसुरत्रियमुसकाहीं बरलायकदुलहिनिजगनाहीं
बिष्णुबिरंचिआदिसुरब्राता चढिचढिबाहनचलेबराता
सुरसमाजसबभांतिअनूपा नहिबरातदूलहअनुरूपा

बिष्णुकहाअसबिहसितबबोलसकलदिसिराज
बिलगिबिलगिहोइचलहुसबनिजनिजसहितसमाज

टी॰
रा॰ बा॰
६५

बरअनुहारबरातनभाई। हँसीकरैहहुपरपुरजाई॥
बिष्णुबचनसुनिसुरमुसकाने निजनिजसेनसहितबिलगाने
मनहीमनमहेशमुसकाई हरिकेब्यंगबचननहिंजाई
अतिप्रियबचनसुनतहरिकेरे भृंगीप्रेरसकलगणटेरे॥
शिवअनुशासनसुनिसबआए प्रभुपदजलजसीसतिननाये
नानाबाहननानाभेषा॥ बिहँसेशिवसमाजनिजदेषा
कोउमुखहीनबिपुलमुखकाहू बिनुपदकरकोउबहुपदबाहू
बिपुलनयनकोउनयनबिहीना रिष्टपुष्टकोउअतितनछीन

छं॰ तनखीणकोउअतिपीनपावनकोउअपावनतनधरे
भूषणकरालकपालकरसबसद्यसोणिततनुभरे
खरस्वानसुअरशृगालमुखगणभेषअगणितकोगने

बहुजिनसप्रेतपिशाचयोगिनिभांतिबरनतनहिंबनै
सो॰ नाचहिंगावहिंगीतपरमतरंगीभूतसब।
देखतअतिबिपरीतबोलहिंबचनबिचित्रबिधि

जसदूलहतसबनीबराता कौतुकबिबिधहोंइमगुजात
इहांहिमाचलरचेउबिताना अतिबिचित्रनहिंजाइबखान
शैलसकलजहँलगिजगमाहीं लघुबिसालनहिंबरनिसिराह
बनसागरसबनदीतलावा हिमगिरिसबकहँनेवतप
कामरूपसुंदरतनुधारी। सहितसमाजसहितबरनारी
गयेसकलतुहिमाचलगेहा गावहिंमंगलसहितसनेह
प्रथमहिंगिरिबहुग्रहसवराये यथयोगजहँतहँसबछाये
पुरशोभाअवलोकिसुहाई। लागैलघुबिरंचिनिपुणाई

छं॰ लघुलागिबिधिकीनिपुणताअवलोकिपुरशोभासही
बनबागकूपतड़ागसरितासुभगसबसककोकही
मंगलबिपुलतोरणपताकाकेतुगृहगृहसोहहीं॥
बनितापुरुषसुंदरचतुरछबिदेखिमुनिमनमोहहीं
दो॰ जगदंबाजहँअवतरीसोपुरबरनिनजाइ ॥
ऋद्धिसिद्धिसंपतिसकलनितिनूतनअधिकाइ

नगरनिकटबरातजबआई पुरखरभरशोभाअधिकाई
करिबनावसजिबाहननाना। चलेलेनसादरअगवाना॥
हियहरषेसुरसेननिहारी हरिहिंदेखिअतिभयेसुखारी
शिवसमाजजबदेखनलागे बिडरिचलेबाहनसबभागे।

धरिधीरजतहांरहेसयाने बालकसबलेजीवपराने॥
गयेभवनपूछहिंपितुमाता करहिंबचनभयकंपितगाता।
कहियकहाकहिजाइनबाता। यमकरधारकिधौंबरयाता।
बरबौराहबरहअसवारा। ब्यालकपालबिभूषणछारा।

छं· तनछारब्यालकपालभूषणनगनजटिलभयंकरा।
संगभूतप्रेतपिशाचयोगिनिबिकटमुखरजनीचरा।
जोजियतरहिहिंबरातदेषतपुन्यबड़तिहकरसही।
देखिहिसोउमाबिवाहघरघरबातअसलरिकनकही।

दो· समुझिमहेशसमाजसबजननिजनकमुसकाहिं
बालबुझाएबिबिधबिधिनिडरहोहुडरनाहिं॥

लैअगवानबरातहिआये दियेहिसबहिजनवाससुहाये
मैंनाशुभआरतीसवाँरी संगसुमंगलगावहिंनारी
कंचनथारसोहबरपानी। परिछनचलीहरहिंहरषानी।
बिकटभेषजबरुद्रहिदेषा। अबलनउरभयभयउबिशेषा।
भागिभवनपैठीअतित्रासा। गयेमहेशजहाँजनवासा।
मैनाहृदयभयउदुषभारी। लीनाबोलिगिरीसकुमारी
अधिकसनेहगोदबैठारी श्यामसरोजनयनभरिबारी।
जेहिबिधितुमहिंरूपअसदीन्हा तेहिजड़बरुबाउरकसकीन्हा

छं· कसकीन्हबरबौराहबिधिजेइतुमहिंसुंदरतादई
जोफलचहियसुरतरुहिंसोबरबसबबूरहिंलागई
तुमसहितगिरितेंगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहँपरौं

घरजाउअपजसहोउजगजीवतबिबाहुनहींकरं
दो· भईबिकलअबलासकलदुखितदेखनरनारि
करिबिलापरोदतिबदतिसुतासनेहुसंभारि॥

नारदकरमैंकहाबिगारा॥ भवनमोरजिनबसतउजारा
असउपदेशउमहिंजिन्हदीन्हा बौरेबरहिंलागितपकीन्हा
साँचेहुउनकेमोहनमाया उदासीनधनधामनजाया
परघरघालकलाजनभीरा बाँझकिजानप्रसवकीपीरा
जननीबिकलबिलोकिभवानी बोलीयुतबिबेकमृदुबानी
असबिचारसोचहुमतिमाता सोनटरैजोरचैबिधाता।
करमलिखाजोबावरनाहू तोकतदोषलगाउबकाहू
तुमसनमिटहिंकिबिधिकेअंका मातुव्यर्थजनिलेहुकलंका

छं· जनिलेहुमातुकलंककरुणापरिहरहुअवसरनहीं
दुखसुखजोलिखालिलारहमरेजावजहँपाउबेतहीं
सुनिउमाबचनबिनीतकोमलसकलअबलासोचहीं
बहुभांतिबिधिहिलगायदूषणनयनबारिबिमोचहीं
दो· तेहिअवसरनारदसहितऔऋषिसप्तसमेत
समाचारसुनितुहिनगिरिगवनेउतुरतनिकेत।

तबनारदसबहींसमुझावा। पूरबकथाप्रसंगसुनावा।
मयनासत्यसुनहुममबानी जगदंबातवसुताभवानी।
अजाअनादिशक्तिअविनासिनि सदाशंभुअरधंगनिवासि
जगसंभवपालनलयकारिणि निजइच्छालीलाबपुधारिणि

जनमीं प्रथम दच्छगृह जाई नाम सती सुंदर तनु पाई
तहँउ शती शंकरहि बिबाही कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं
एक बार आवत शिव संगा ॥ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा।
भयउ मोह शिव कहा न कीना भ्रम बस बेष सीय कर लीना

छं· सिय भेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी
हर बिरह जाइ बहोरि पितु के यज्ञ योगानल जरी
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुण तप किया
अस जानि संशय तजहु गिरिजा सर्बदा शंकर प्रिया

दो· सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद
छण महँ व्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद ॥

तब मयना हिमवंत अनंदे पुनि पुनि पारबती पद बंदे
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना सजे सबहि हाटक घट नाना
भांति अनेक भई जेवनारा सूपशास्त्र जस कछु ब्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बखानी बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती ॥ बिष्णु बिरंचि देव सब जाती
बिबिध पांति बैठी जेवनारा लगे परोसन निपुण सुआरा
नारि वृंद सुर जेवत जानी ॥ लगीं देन गारी मृदु बानी।

छं· गारी मधुर सुर देहिं सुंदरि व्यंग बचन सुनावहीं
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सुँ[illegible] पावहीं रव
जेवत जो बढ्यो अनंद सो मुख कोटिहू न परै कह्यौं।

गनेसपूजा ॥ गनैपातीं ॥ गौरीपूजा ॥ मंडपमध्य ॥ सन०६० ॥ मुनिअनुशासन ॥ पंडितमंत्र

अँचवायदीन्हेपानगवनेबासजहँजाकोरह्यौ।
दो· बहुरिमुनिनहिमवंतकहँलगनसुनाईआइ
समयबिलोकिबिवाहकरपठयेदेवबुलाइ।

बोलिसकलसुरसादरलीन्हे सबहिंयथोचितआसनदी
बेदीबेदबिधानसवारी ॥ सुभगसुमंगलगावहिंना
सिंहासनअतिदिव्यसुहावा। जाइनबरणिबिरंचिबनावा।
बैठेशिवविप्रनसिरनाई॥ हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुरा
बहुरिमुनीसनउमाबुलाई करिशृंगारसखीलैआई॥
देखतरूपसकलसुरमोहे बरनैछबिअसजगकबिको
जगदंबिकाजानिभवभामा सुरन्हमनहिंमनकीन्हप्रणाम
सुंदरतामर्यादभवानी॥ जाइनकोटिहुबदनबखानी

छं· कोटिहुंबदननहिंबनैबरणतजगजननिशोभामहा
सकुचहिंकहतश्रुतिशेषसारदमंदमतितुलसीकहा
छबिखानिमातुभवानिगवनीमध्यमंडपशिवजहाँ।
अवलोकिसकहिंनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहाँ
दोहा।मुनिअनुसासनगणपतिहि पूजेशंभुभवानि॥
कोउसुनिसंसयकरैजनि सुरअनादिजियजानि

जसबिवाहकीबिधिश्रुतिगाई महामुनिनसोसबकरवाई।
गहिगिरीशकुशकन्यापानी शिवहिंसमर्पिजानिभवानी
पाणिग्रहणजबकीन्हमहेशा हियहरखेतबसकलसुरेसा
बेदमंत्रमुनिवरउच्चरही। जयजयजयशंकरसुरकरहीं

पंक्ति ५ कतबिधि० दृ० बालअवस्थामें पिताकेअधीन तरुनाईमें पतिके बुढ़ापेमें पुत्रके अधीन ॥ — ॥ — ॥ — ॥

बाजहिंबाजनबिबिधबिधाना सुमनबृष्टिनभभैबिधिनाना
हरगिरिजाकरभयउबिबाहू। सकलभुवनभरिरहाउछाहू
दासीदासतुरंगरथनागा। धेनुबसनमणिबस्तुबिभागा
अन्नकनकभाजनभरिजाना। दाइजदीन्हनजाइबखाना।

छं· दाइजदियोबहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो हे
कादेउंपूरणकामशंकरचरणपंकजगहिरह्यो २॥
शिवकृपासागरससुरकरपरितोषसबभांतनकियो
पुनिगहेउपदपाथोजमयनाप्रेमपरपूरणहियो॥
दोहा। नाथउमाममप्राणसमगृहकिंकरीकरेउ
छमहुसकलअपराधअबहोइप्रसन्नबरदेउ॥

टी· रा· बा· ७१

बहुबिधिशंभुसासुसमुझाई गवनीभवनचरणसिरनाई
जननीउमाबोलितबलीन्ही लैउछंगसुंदरसिषदीन्ही
करहुसदाशंकरपदपूजा नारिधर्मपतिदेवनदूजा॥
बचनकहतभरिलोचनबारी बहुरिलाइउरलीन्हकुमारी
कतबिधिसिरजीनारिजगमांही पराधीनसपनेहुसुषनाहीं
भैअतिप्रेमबिकलमहतारी धीरजकीन्हकुसमयबिचारी
पुनिपुनिमिलतपरतिगहिचरणा परमप्रेमकछुजाइनबरणा
सबनारिनमिलिभेंटभवानी जाइजननिउरपुनिलपटानी

छं· जननीहिबहुरिमिलिचलीउचितअसीससबकाहूदई
फिरिफिरिबिलोकतमातुतनतबसखीलैशिवपहँगई
याचकसकलसंतोषशंकरउमासहितभवनहिंचले।

सबअमरहरषेसुमनबरषेनिसाननभबाजहिंभले
दो· चलेसंगहिमवंततबपहुंचावनअतिहेतु।।
बिबिधभांतिपरितोषकरिबिदाकीन्हवृषकेतु।।

तुरतभवनआयेगिरिराई सकलशैलसरलियेबुलाई
आदरदानबिनयबहुमाना सबकरबिदाकीन्हहिमवाना
जबहिंसंभुकैलासहिंआए सुरसबनिजनिजलोकसिधाए
जगतमातुपितुसंभुभवानी तेहिंशृंगारनकहौंबखानी
करहिंबिबिधबिधभोगबिलासागणनसमेतबसहिंकैलास
हरगिरिजाबिहारनितनयऊ इहिबिधिबिपुलकालचलिगय
तबजनमेंषटबदनकुमारा तारकअसुरसमरजिनमारा
आगमनिगमप्रसिद्धपुराना षट्मुखजन्मकर्मजगजाना

छं· जगजानषट्मुखजन्मकर्मप्रतापपुरुषारथमहा।
तेहिहेतुमैंवृषकेतुसुतकरचरितसंछेपहिंकहा।
यहउमासंभुबिवाहजेनरनारिकहहिंजेगावहीं।
कल्याणकाजबिवाहमंगलसर्बदासुखपावहीं।
दो· चरितसिंधुगिरिजारमणबेदनपावहिंपार
बरणौतुलसीदासकिमिअतिमतिमंदगवाँर।।

शंभुचरितमुनिसरससुहावा भरद्वाजमुनिअतिसुखपाव
बहुललालसाकथापरबाढ़ी नयननीररोमावलिठाढ़ी।
प्रेमबिबसमुखआवनबानी दशादेखिहरषेमुनिज्ञानी
अहोधन्यतबजन्ममुनीशा तुमहिंप्राणसमप्रियगौरीश

शिवपदकमल जिन्हहिं रति नाहीं रामहि ते सपनेहुँ न सुहाहीं
बिनु छल बिश्वनाथ पद नेहू । रामभक्त कर लच्छन एहू ॥
शिवसम को रघुपति ब्रतधारी । बिनु अघ तजी सती असि नारी
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढाई । को प्रिय शिव सम रामहि भाई

प्रथमहि मैं कहि शिवचरित बूझा मरम तुम्हार ॥
सुचि सेवक तुम राम के रहित समस्त बिकार ॥

मैं जाना तुम्हार गुण शीला । कहौं सुनहु अब रघुपति लीला
सुनि मुनि आजु समागम तोरे । कहि न जाय जस सुख मन मोरे
रामचरित अति अमित मुनीशा । कहि न सकहिं शत कोटि अहीशा
तदपि यथाश्रुति कहौं बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी
सारद दारुनारि सम स्वामी । राम सूत्रधर अंतरजामी ॥
जेहि पर कृपा करहिं जन जानी । कवि उर अजिर नचावहिं बानी
प्रणवौं सोइ कृपाल रघुनाथा । बरणौं बिशद तासु गुणगाथा
परम रम्य गिरिबर कैलासू । सदा जहाँ शिव उमा निवासू

सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किंनर मुनिबृंद ॥
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं शिव सुखकंद

हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं । ते नर तहँ सपनेहु नहिं जाहीं ।
तेहि गिरि पर बट बिटप बिशाला । नित नूतन सुंदर सब काला ।
त्रिबिध समीर सुसीतल छाया । शिव बिश्राम बिटप श्रुति गाया
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ
निज कर डासि नागरिपु छाला । बैठे सहजहिं शंभु कृपाला ।

दो॰
रा॰ बा॰
७३

रख्याति १०७ कल्पतरु य न सरनागत बनिधाप्रन उक्तिअरुन अर्थ्यादिकोनै तुम्पनकथा सौजन्य है श्री वामभाग अस्मानुगती आरहरि धुरंधरार्थ अपुरपकारी अनपाइनी प्रसन्नता

कुंदइंदुदरगौरसरीरा॥ भुजप्रलंबपरधनमुनिचीरा
तरुणअरुणअंबुजसमचरणा नखदुतिभक्तहृदयतमहरणा
भुजंगभूतिभूषणत्रिपुरारी आननशरदचंद्रछबिहारी

जटामुकुटसुरसरितसिरलोचननलिनबिशाल
नीलकंठलावण्यनिधिसोहबालबिधुभाल

बैठेसोहकामरिपुकैसे॥ धरेशरीरशांतरसजैसे॥
पारवतीभलअवसरजानी गईशंभुपहँमातुभवानी॥
जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा बामभागआसनहरदीन्हा
बैठीशिवसमीपहरषाई। पूरबजन्मकथाचितआई
पतिहियहेतुअधिकअनुमानी बिहँसिउमाबोलीप्रियबानी
कथाजोसकललोकहितकारी सोईपूछनचहैशैलकुमारी
बिश्वनाथममनाथपुरारी त्रिभुवनमहिमाबिदिततुम्हा
चरअरुअचरनागनरदेवा। सकलकरहिंपदपंकजसेवा

प्रभुसमर्थसर्बज्ञशिव सकलकलागुणधाम
योगज्ञानबैराग्यनिधि प्रणतकल्पतरुनाम

जोमोपरप्रसन्नसुखरासी जानियमोहिसत्यनिजदासी
जोप्रभुहरहुमोरअज्ञाना कहिरघुनाथकथाबिधिनाना
जासुभवनसुरतरुतरहोई सहकिदरिद्रजनितदुखसोई
शशिभूषणअसहृदयबिचारी हरहुनाथमममतिभ्रमभारी
प्रभुजेमुनिपरमारथबादी कहहिंरामकहँब्रह्मअनादी
शेषसारदाबेदपुराना। सकलकरहिंरघुपतिगुणगाना

री॰ रा॰ बा॰ ७४ पंक्ति ९६ ३२ चौ॰ ४ दो॰

जौ मोपर प्रसन्न अरु मानध्यान दौ॰ १२१ सताउक्ति कहै लतातेजौ शरह मैभ्रम भई सो जानिन्यागत करव अस्तपर राघवहूल ताको बार्ही तान पूर्वकाल हुपन कौ धार बड़ोता सनका हिनादिगन सो पूर्णता बि श्रावनयुत पर ब्रह्मरामहै सोईहाथ्यस्त कैवा स्तौ पर

कोऊ अज
अलखगति न्या
रे हैं जो नृपसुत
तो ब्रह्म नहीं हैं
काहु हैं तुम्ह रे
ज्ञानादि भ्रष्ट बि
कारस्थ हैं राम
नारि बिरह मन
और सुनत ब्रह्म हैं
श्रीमुखादि संबंधी
नहीं अरु यह न आदि
चरित्र तो हैं
और खिन्नतें
देखो और
महिमा सुनी
समोन रहे
मानहुं याते
मति भ्रमत है
१०८ जो नृप
सुत राम तो किं
नारी को उनि
गुण ब्रह्म वषा
नंद्र स्पस्या का
षादि में व्यापक

तुम्ह पुनि राम नाम दिन राती सादर जपहु अनंग अराती
राम सो अवध नृपति सुत सोई की अज अगुण अलख गति कोई

जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरह मति भोरि
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमत बुद्धि अति मोरि मि

जौं अनीह ब्यापक बिभु कोऊ कहहु बुझाय नाथ मोहि सोऊ
अग्य जानि रिस जनि उर धरहू जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं बन दीख राम प्रभुताई ॥ अति भय बिकल न तुम्हहि सुनाई
तदपि मलिन मन बोध न आवा सो फल भली भांति मैं पावा ॥
अजहूं कछु संसय मन मोरे । करहु कृपा बिनऊं कर जोरे ॥
प्रभु तब मोहि बहु भांति प्रबोधा नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा
तब कर अस बिमोह मोहि नाहीं रामकथा पर रुचि मन माहीं
कहहु पुनीत राम गुण गाथा भुजगराज भूषण सुरनाथा

बंदौं पद धरि धरणी सिर बिनय करौं कर जोरि
बरणौ रघुबर बिशद यश श्रुति सिद्धांत निचोरि

यदपि योषिता नहि अधिकारी दासी मन क्रम बचन तुम्हारी
गूढौ तत्व न साधु दुरावहिं । आरत अधिकारी जहं पावहिं
अति आरति पूछौं सुरराया रघुपति कथा कहौ करि दाया
प्रथम सो कारण कहहु बिचारी निर्गुण ब्रह्म सगुण बपु धारी
पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी बिबाहा राज तजा सो दूषण काहा
बन बस कीन्हेउ चरित अपारा कहहु नाथ जिमि रावण मारा

अजो को है
प्रसन्न की व्यापक
आदि उभसनी
रामसों है बुद्धी
तो श्रवण भक्ति
हैं वा सब पुरा
वे अमृत नाहें की
तो भी मलीन मन
बौध न भया राम
कथा सकल ठ
बिका भाव न
गैबा कां मोह
नहिं कीन्ह तो
गनकै रूपकारी
श्री उनका भाव
बिषा बिकार
संपुत ग्रंथ हैं
सपर्गि रवि बांधे
बेनाब दूमांये
तो अपनी बि
धर्म की दावे
कोहित रखैं

रामबैठकीशोभाबहुलीला । सकलकहहुशंकरसुभशीला

बहुरिकहहुकरुणायतनकीन्हजोअचरजराम
प्रजासहितरघुबंशमणिकिमिगवनेनिजधाम

पुनिप्रभुकहहुसोतत्वबखानी । जेहिबिज्ञानमगनमुनिज्ञानी
भक्तिज्ञानबिज्ञानबिरागा । पुनिसबबरणहुसहितबिभागा
औरौरामरहस्यअनेका ॥ कहहुनाथअतिबिमलबिबेका
जोप्रभुमैंपूछानहिंहोई ॥ सोउदयालुराखहुजनिगोई
तुमत्रिभुवनगुरुवेदबखाना । आनजीवपामरकाजाना ।
प्रश्नउमाकीसहजसुहाई । छलबिहीनसुनिशिवमनभाई
हरहियरामचरितसबआये । प्रेमपुलकिलोचनजलछाये
श्रीरघुनाथरूपउरआवा । परमानंदअमितसुखपावा

मगनध्यानरसदंडयुगपुनिमनबाहिरकीन्ह ।
रघुपतिचरितमहेशतबहरषितबरणैलीन्ह

झूठौसत्यजाहिबिनुजाने । जिमिभुजंगबिनुरजुपहिचाने
जेहिजानेजगजाइहेराई ॥ जागेयथासपनभ्रमजाई ॥
बंदौबालरूपसोईरामू ॥ सबबिधिसुलभजपतजसना
मंगलभुवनअमंगलहारी ॥ द्रवौसोदशरथअजिरबिहारी
करिप्रणामरामहिंत्रिपुरारी । हरषिसुधासमगिराउचारी
धन्यधन्यगिरिराजकुमारी । तुमसमाननहिंकोउउपकारी
पूछेउरघुपतिकथाप्रसंगा । सकललोकजगपावनिगंगा
तुमरघुबीरचरणअनुरागी । कीन्हेउप्रश्नजगतहितलागी

श्रीमनमें आया १९ १८ चतुर्थ ३० पत्तिसे शंका श्रा २५ द्वौ २ द्वं० ॥ रूप असत्य कुरामकथातें जानयाते भ्रान्ति क्यों नहि सच्चिदानंदके ज्ञान विना मिथ्या प्रपंच सत्य कौन है भासतु है जैसे रस्सीको पहिचान विना सर्प सत्य भ्रम जैसे जलके ज्ञान विन जगत भ्रम उठि जात है तो नाश भ्रम भ्रम वंकि बालरूप कैसे होय राम पदकै तव

रामकथा नें पार्बती सपनेहु नव मन माहि
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहि

तदपि अशंका कीन्हुहु सोई । कहत सुनत सब कर हित होई
जिन हरिकथा सुनी नहिं काना । श्रवण रंध्र अहि भवन समाना
नयनन संत दरस नहिं देखा । लोचन मोर पंख कर लेखा
ते शिर कटु तूमरि सम तूला । जे न नमत हरि गुरु पद मूला
जिन हरिभक्ति हृदै नहिं आनी । जीवत शव समान ते प्रानी
जो नहिं करहिं राम गुण गाना । जीह सो दादुर जीह समाना
कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु राम कर लीला । सुर हित दनुज बिमोहन शीला

रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दान ॥
संत सभा सुरलोक सम को न सुनै अस जान ॥

रामकथा सुंदर करतारी ॥ संशय बिहग उड़ावन हारी ॥
रामकथा कलि बिटप कुठारी । सादर सुनि गिरिराज कुमारी
राम नाम गुण चरित सुहाये । जन्म कर्म अगणित श्रुति गाए
यथा अनंत राम भगवाना ॥ तथा कथा कीरति गुण गाना
तदपि यथा श्रुति निज मति मोरी । कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाये । सुखद संत संमत मोहि भाये
एक बात नहिं मोहि सुहानी । यदपि मोह बस कहेउ भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गान धरहिं मुनि ध्याना

दो॰ कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जो मोह पिशाच

रा॰ बा॰ ७७

लिखत यथा श्रुतमें अमृत ११२ जो हरिकथामृत गीतन को कमल दुर्बल है अस्तको नकहै तिनकी श्रीमहादेव सम इत्यादि कृत सत्र अधम है मनकाम कोधादि रहित देवी स्वयं प्रतिप्रवार अस्तु तम

दोहा ब नारि रास हमकोहित रामकथा श्रुपरती रामकथाप्रश्न पं॰ ३ श्री॰ ५ १८ श्री॰ २० १२ ११ प्रति ११ करिके पिशाच मानात्म अहह अनुपम

पाषंडी हरिपद बिमुख जानहिं झूठ न सांच ॥

अग्य अकोबिद अंध अभागी। काई बिषय मुकुर मन लागी।
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी। सपनेउं संत सभा नहिं देषी।
कहहिं ते बेद असंमत बानी। जिनहिं सूझ लाभ नहिं हानी।
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना। राम रूप देषहिं किमि दीना।
जिनके अगुण न सगुण बिबेका। जल्पहिं कल्पित बचन अनेका।
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं।
बातुल भूत बिबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन संभारे।
जिन कृत महामोह मद पाना। तिन कर कहा करिय नहिं काना।

सो॰ अस निज हृदय बिचारि तज संसय भज रामपद
सुनि गिरिराजकुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम

सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण बुध बेदा।
अगुण अरूप अलख अज सोई। भक्त प्रेम बस सगुण सो होई।
जो गुण रहित सगुण सो कैसें। जल हिम उपल बिलग नहिं जैसें।
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तिहि किमि कहिय बिमोह प्र
राम सच्चिदानंद दिनेशा ॥ नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा।
सहज प्रकास रूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिज्ञान बिहा
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना। जीव धर्म अहमिति अभिमान
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानंद परेश पुराना ॥

पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि प्रगट चराचर नाथ।
रघुकुलमणि मम स्वामि सोइ कहि शिव नायउ माथ

बिबेकरहित
सतअसतको
बातजानते
हैंवहीग्र
कहतेकोअौर
सुनतेहैंपर
अंधा॥ अरथ
हैं॥ अज्ञानी
मूर्खअंधे
गावतहैंदुख
गोतिकोहै
अमितपाषंड
हैंप्रगटप्रभाव
सुवर्णकाध्या
ताबनाको
गुरसम्बन्धा

१२४ अज्ञानी अ
पंडित ज्ञानीस्थ
जिनजाबिनतापर
मन्दर्पणमोबिष
यकीकाईलगी
तानतैरापनेह
हिनहींदेषहृदय
कैसेदेषैंजोअगुन
सगुनदोउकेदेब

टी॰

करतेनहिंजानन
मनमेंकल्पितअनेक
कहतेहैंअविद्या
बायुतें बातुलको
मायावशतेंउन्मत
महामोहमदिरा
मतवारेकामना
अग्रहीभ्रमतम
कैसूयकारनको
भ्रमबचनरबि
किरण ११५

लमाकल्यासो
दिगुनिपंडितजे
अगुनसगुनबिब
कवारअरूप हैं
सोईभक्तनके
प्रेमबससगुन
होतेहैंतातेंदेख
प्रभेदहैंजैसे
जलपालाबर्नोरी
सोभेदनहींअरुजैसे
सर्वव्यापक
रून

स्पृजलरूपी आदिभ्रमभृत औसबबढाईहै परंतुरवीदितवो क्षीनलबडाईके कूपश्रादिस्थल कौंभलनहींहैष्र्थ परन्तुतैसोनिगुन कलसबकौरव्या एकभक्तनकैभग्न नव्यापारतेंप्रेमबस हदकैसबबिरहानंद घनपिंगाकार हदधारीहोतहै जैसेप्रदहारके अमनंतसंभातिन सिंहरूपधरी तैसाईरघुनाथ हदपंचभूतको नहींचिदानंदमय ग्यानप्रमाणवि दानआदिहत रूपीश्रवणम अंधकारकोनाश

टी॰
ए॰ बा॰
७९

निजभ्रमनहिंसमुझहिंअज्ञानी प्रभुपरमोहधरहिंजड़प्रानी॥
यथागगनघनपटलनिहारी। झांपेउभानुकहहिंकुबिचारी
चितवतलोचनअंगुलीलायें प्रगटयुगलशशितेहिकेभाये
उमारामबिषयकअसमोहा नभतमधूमधूरिजिमिसोहा
बिषयकरणसुरजीवसमेता सकलएकतेएकसचेता॥
सबकरपरमप्रकाशकजोई रामअनादिअवधपतिसोई।
जगतप्रकाश्यप्रकाशकरामू मायाधीशज्ञानगुणधामू॥
जासुसत्यतातेंजड़माया॥ भाससत्यइवमोहसहाया॥

रजतसीपमहँभासजिमियथाभानुकरबारि
यदपिमृषातिहुंकालसोइभ्रमनसकैकोउटारि

एहिबिधिजगहरिआश्रितरहई यदपिअसत्यदेतदुखअहई
जौंसपनेसिरकाटैकोई + बिनजागेदुखदूरनहोई +॥
जासुकृपाअसभ्रममिटजाई गिरिजासोइकृपालरघुराई।
आदिअंतकोउजासुनपावा मतिअनुमाननिगमअसगावा
बिनुपदचलैसुनैबिनुकाना करबिनुकर्मकरैविधिनाना
आननरहितसकलरसभोगी बिनुबाणीबक्ताबड़योगी
तनबिनुपरसनयनबिनुदेखा ग्रहैघ्राणबिनुबासअशेषा
असिसबभांतिअलौकिककरणी महिमाजासुजाइनहिंबरणी

जेहिइमिगावहिंबेदबुधजाहिधरहिंमुनिध्यान
सोइदशरथसुतभक्तहितकोशलपतिभगवान

कासीमरतजंतुअवलोकी जासुनामबलकरौंबिसोकी

कौनकौनाशहदै हैगजमौखानसुखान हदकल्पनामात्रहैं हदअधप्रकाशहद हदक्रियाहिनगाति सबकहबदलाहि सबकैविश्वमानतें हिदैश्रैसं नैपुर्णहितौंबाबार हितसप्रेमकी दमपाडानगतें श्रुतनैसेसहु रिउपमाहिमा हदैशकैमासत तैसेकहैंप्रमा कोरागनयनमें श्रविद्याउपाधि नैईतिमहं स्पादिशहत भ्रमैश्रौपर चलतिभ्रम हैसारवली

ज्ञानव ११८ शिवजूकेनाममहात्मइत्यादिकहवेतें दारुणअसंभाव
नादशरथात्मजब्रह्मनहींसोजागरही अरु पार्वतीजीकीसात्विकश्रद्ध

सोइप्रभुमोरचराचरस्वामी। रघुबरसबउरअंतरजामी॥
बिबसहुँजासुनामनरकहहीं। जनमअनेकरचितअघदहहीं॥
सादरसुमिरनजोनरकरहीं। भवबारिधिगोपदइवतरहीं॥
रामसोपरमातमाभवानी। तहँभ्रमअतिअबिहिततवबा॥
असंसंशयआनतउरमाहीं। ज्ञानबिरागसकलगुणजाहीं॥
सुनिशिवकेभ्रमभंजनबचना। मिटिगईसबकुतर्ककीरचना॥
भइरघुपतिपदप्रीतिप्रतीती। दारुणअसंभावनाबीती॥

दो॰ पुनिपुनिप्रभुपदकमलगहिजोरिपंकरुहपानि
बोलीगिरिजाबचनबरमनहुँप्रेमरससानि॥

शशिकरसमसुनिगिरातुम्हारी। मिटामोहशरदातपभारी॥
तुमकृपालसबसंशयहरेऊ। रामस्वरूपजानिमोहिपरेऊ॥
नाथकृपाअबगयेऊबिषादा। सुखीभइउँप्रभुचरणप्रसा॥
अबमोहिआपनकिंकरिजानी। यदपिसहजजड़नारिअयानी॥
प्रथमजोमैंपूछासोइकहहू। जोमोपरप्रसन्नप्रभुअहहू॥
रामब्रह्मचिन्मयअबिनासी। सर्बरहितसबउरपुरबासी॥
नाथधरेउनरतनकेहिहेतू। मोहिसमुझायकहहुवृषकेतू॥
उमाबचनसुनिपरमबिनीता। रामकथापरप्रीतिपुनीता॥

स्याकीप्राप्तहोबोजतभई ११९ दं॰ १०। चौ॰ ६ सो॰ १ दो॰ शशिकर
अरु लोहितरनामप्रपालौं॰ कृपारकेधाम जैसो मोह चंद्राकिरन

रसोबानीसुन
कैजातभयोअर्थ
रघुनाथसबखा
पकाविनमयप्रश्न
कैयामांसंदेहन
हींपरतुनरतनको
कहुहपाप्रबकाल
हिय ॥ २० ॥
दो॰ २ चौ॰ ३२
छं॰ ७ सो॰ २ ॥
सुनुगिरिजाअर्थ
कोरामगुणगाय
चौ॰ हरिअवता
कोलहिहेत
कैहेयहनहीं

दो॰ हियहरषेकामारितबशंकरसहजसुजान ॥
बहुबिधिउमहिंप्रशंसितबबोलेकृपानिधान ॥

सो॰ सुनुशुभकथाभवानिरामचरितमानसबिमल
कहाभुशुंडिबखानिसुनाबिहगनायकगरुड़॥
सोइसंबादउदारजेहिबिधिभाआगेकहब॥
सुनहुरामअवतारचरितपरमसुंदरअनघ।
हरिगुणनामअपारकथारूपअगणितअमित
मैंनिजमतिअनुसारकहौंउमासादरसुनहु।

सुनुगिरिजाहरिचरितसुहायेबिपुलबिशदनिगमागमगाये
हरिअवतारहेतुजेहिहोई॥ इदमित्थाकहिजातनसोई॥
रामअतर्कबुद्धिमनबानी। मतहमारअससुनहुभवानी
तदपिसंतमुनिबेदपुराना जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना
तसमैंसुमुखिसुनावउंतोही समुझिपरैजसकारणमोही
जबजबहोइधर्मकीहानी॥ बाढ़हिंअसुरअधमअभिमानी
करहिंअनीतिजाइनहिंबरणी सीदहिंबिप्रधेनुसुरधरणी
तबतबप्रभुधरिबिबिधशरीरा हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा

असुरमारिथापहिंसुरहिंराखहिंनिजश्रुतिसेतु
जगबिस्तारहिंबिशदयशरामजन्मकरहेतु॥

सोईयशगायभक्तभवतरहीं कृपासिंधुजनहिततनुधरहीं
रामजन्मकेहेतुअनेका॥ परमबिचित्रएकतेएका।
जन्मएकदुइकहौंबखानी सावधानसुनुसुमतिभवानी

समकतप्रकृतिरा
उनकीतनपाटता
तंमतहमारयह
कहैआगमगाबोति
कसनाहलहैकै
कर्मप्रधानतबनत
भयाकिजनव
धर्मकाघाराही
लुहेतहिअवतार
कापुरहतहलहै
असुरनकोमार
सुरनकोथापित
ही
रा॰ बा॰
८१
कैयहसबजानी
कमानमानो १२१
रामजन्मकेहेतु
कोनतेअनेकहेतु
एकद्वैबहीतीन
बरपालबैकुंठ
कैरनकाहिन
कैशापतेयहके
भ्राकोबिहार
भागवतमें ८

कैवयइत्यादि
हींबनमें हि
सिसुपाल
गौबरोठ
भई १२३
हैवापालहि
हिंपवकाइसु

धरनी धराए हिरण्याक्ष गह स्नह द्यागो हे भगवान गोति देवतात ले ताको गहे धर्म तेहिं दे गाहे तिनावैं गये पाताल कंतेनावौ प्रहलाद मे. कैमारि कै भैहु जुराप कैश्यपको के हिरण्यकश्य हिरणाक्ष

कि धरउद्धारेश्रा कामने गिराधो कि धरति बाधे प्रवेशाकार भै स्वाया धाभाले बढनो पालिव्रत रायेजनवर नाम्बो तिभै यप तानहीं तिव्रसाप दयौं बातें प्रभु

टी॰

रा॰ बा॰

८३

द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ जय अरु बिजय जान सब कोऊ
बिप्र श्राप तें दोनों भाई ॥ तामस असुर देह तिन पाई
कनककसिपु अरु हाटकलोचन जगत बिदित सुरपति मद मोचन
बिजयी समर बीर बिख्याता धरि बराह बपु एक निपाता
होइ नरहरि पुनि दूसर मारा जन प्रहलाद सुयश बिस्तारा

भये निशाचर जाइ ते महाबीर बलवान ॥
कुंभकरण रावण सुभट सुर बिजयी जग जान।

मुक्त न भयेउ हते भगवाना । तीन जन्म द्विज बचन प्रमाना।
एक बार तिन के हित लागी धरेउ शरीर भक्त अनुरागी ॥
कश्यप अदिति तहां पितु माता। दशरथ कौशिल्या बिख्याता
एक कल्प यहि बिधि अवतारा चरित पवित्र किये संसारा।
एक कल्प सुर देखि दुखारे। समर जलंधर सन सब हारे
शंभु कीन्ह संग्राम अपारा॥ दनुज महाबल मरै न मारा।
परम सती असुराधिप नारी तेहि बल ताहि न जीत पुरारी।

छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह
जब तेइ जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह।

तासु श्राप हरि कीन्ह प्रमाना कौतुकनिधि कृपाल भगवान
तहां जलंधर रावण भयेऊ रण हति राम परम पद दयेऊ
एक जन्म कर कारण एहू जेहि लगि राम धरी नर देहू
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी सुनि मुनि बरणी कबिन घनेरी
नारद श्राप दीन्ह इक बारा ॥ कल्प एक तेहि लगि अवतार

शालिग्राम भये बृन्दा के श्राप कोपतिविलास वृन्दापतिव्रत नारिष्ठ कोहके रूपको भई मनोरथ नारद शापसे एकबार जलंधरसों सकल देव संयोग करि नारायण के

जाग्या अति चकित भई सब निन कहै को सकवै कहै यह भावतो वै अवश्य यामो गनउद्याप्रव हजनाई ॥

टीकि ८ २ं चौं० ४ छं० १ सो० ॥ हिमगिरिगुहा सुरराजकोकल्प ताहिहनुमन्तो सुमिरतहरिहि शापगतिबाधी नारदजूकोछल प्रजापतिकोशाप है दंडघड़ीतक एकस्थानमों नमनरहोंग अमोरहिहो शापपकीग तिभजनप्रता पतेंपूरगई नारदजूके प्रसंगमेंमोह कीप्रबलता परमाया

गिरिजाचकितभईसुनिबानी। नारदबिष्णुभक्तपुनिग्यानी
कारणकौनशापमुनिदीन्हा। काअपराधरमापतिकीन्ह
यहप्रसंगमोहिकहहुपुरारी। सुनिमुनिमोहस्रोअचरजभारी

बोलेबिहँसिमहेशतबग्यानीमूढनकोय ॥
जेहिजसरघुपतिकरहिंजब सोतसतेहिछणहोइ
सो॰ कहौंरामगुणगाथ भरद्वाजसादरसुनहु ॥
भवभंजनरघुनाथ भजतुलसीतजिमानमद ॥

हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि बहसमीपसुरसरितसुहावनि
आश्रमपरमपुनीतसुहावा। देखदेवऋषिमनअतिभावा।
निरखिशैलसरिविपिनविभागा भयेउरमापतिपदअनुरागा
सुमिरतहरिहिशापगतिबाधी सहजबिमलमनलागसमाधी
मुनिगतिदेखिसुरेसडराना। कामहिबोलिकीन्हसनमाना
सहितसहायजाहुममहेतू। चलेउहरषिहियजलचरकेतू
सुनासीरमनमहँअतित्रासा चहतदेवऋषिममपुरबासा
जोकामीलोलुपजगमाहीं कुटिलकाकइवसबहिडराहीं

दो॰ सूखहाडलैभागुसठस्वानिनिरखिमृगराज
छीनलेइजनिजानिजड़ तिमिसुरपतिहिनलाज

तेहिआश्रमहिमदनजबगयेऊ निजमायाबसंतनिर्मयेऊ
कुसुमितबिबिधबिटपबहुरंगा कूजहिंकोकिलगुंजहिंभृंगा
चलीसुहावनित्रिबिधबयारी कामकृशानुबढावनहारी
पसरी
रंभादिकसुरनारिनवीना। सकलअसमसरकलाप्रवीना

टी॰
रा॰ बा॰
८३

१८ गानव ॥ प्रसंगों आख्या कौ विषमपद गनायो श्रु श्रुवनार हैं अद्भुता श्रु

करहिंगानबहुतानतरंगा। बहुबिधिक्रीडहिंपानिपतंग
देषिसहायमदनहरषाना। कीन्हेसिपुनिप्रपंचबिधिनान
कामकलाकछुमुनिहिनब्यापी। निजभयडरेउमनोभवपापी
सीमकिचापिसकैकोउतासू बड़रखवाररमापतिजासू

सहितसहायसभीतअतिमानहारिमनमैन॥
गहेसिजाइमुनिबरचरणकहसुठिआरतबैन

भयउननारदमनकछुरोषा। कहिप्रियबचनकामपरितोष
नाइचरणशिरआयसुपाई। गयेउमदनतबसहितसहा
मुनिसुशीलताआपनिकरणी। सुरपतिसभाजाइसबबरणी
सुनिसबकेमनअचरजआवा। मुनिहिंप्रशंसिहरहिंसिरनाव
तबनारदगमनेशिवपाहीं। जीतकामअहमितिमनमाह
मारचरितशंकरहिंसुनावा। अतिप्रियजानिमहेशसिख
बारबारबिनवौंप्रभुतोही। जिमियहकथासुनायहुमो
तिमिजिहहरिहिसुनावहुकबहूं चलेउप्रसंगदुरायउजबहूं।

शंभुदीन्हउपदेशहितनहिंनारदहिंसुहान ॥
भरद्वाजकौतुकसुनहुहरिइच्छाबलवान॥

चौ॰ रामकीन्हचाहैंसोहोई॥ करैअन्यथाअसनहिंकोई
शंभुबचनमुनिमनहिंनभाये तबबिरंचिकेलोकसिधाये
एकबारकरतलबरवीणा। गावतहरिगुणगानप्रवीणा
क्षीरसिंधुगवनेमुनिनाथा। जहँबसश्रीनिवासश्रुतिमा
हरषिमिलेउठिरमानिकेता बैठेआसनऋषिहिंसमेता।

बोलेबिहँसिचराचरराया बहुतदिनहिंकीन्हीमुनिदाया।
कामचरितनारदसबभाषे यद्यपिप्रथमबरजिशिवराखे
अतिप्रचंडरघुबरकीमाया जेहिनमोहअसकोजगजाया

रूषबदनकरिमृदुबचनबोलेश्रीभगवान।
तुम्हरेसुमरणतेमिटहिंमोहमारमदमान।

सुनिमनमोहहोइमनताके ज्ञानबिरागहृदयनहिंजाके
ब्रह्मचर्यब्रतरतमतिधीरा तुमहिंकिकरैमनोभवपीरा
नारदकहेउसहितअभिमाना कृपातुम्हारिसकलभगवाना
करुणानिधिमनदीखबिचारी उरअंकुरेउगर्बतरुभारी
बेगिसोमैंडारिहौंउपारी प्रणहमारसेवकहितकारी
मुनिकरहितममकौतुकहोई अवशिउपायकरबमैंसोई।
तबनारदहरिपदसिरनाई। चलेहृदयअहमितिअधिकाई
श्रीपतिनिजमायातबप्रेरी सुनहुकठिनकरणीतेहिकेरी

दो· बिरचेउमगमहँनगरतेहिशतयोजनबिस्तार
श्रीनिवासपुरतेंअधिकरचनाबिबिधप्रकार

बसहिंनगरसुंदरनरनारी। जनुबहुमनसिजरतितनुधारी
जेहिपुरबसैशीलनिधिराजा अगणितहयगयसेनसमाजा
सतसुरेशसमबिभवबिलासा रूपतेजबलनीतिनिवासा
बिश्वमोहनीतासुकुमारी श्रीबिमोहजेहिरूपनिहारी
सोहरिमायासबगुणखानी शोभातासुकिजाइबखानी
करैस्वयंबरसोनृपबाला। आयेतहँअगणितमहिपाला

टी·
रा· बा·
८५

सुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ पुरबासिनसबबूझनभयऊ
सुनिसबचरितभूपगृहआये करिपूजानृपमुनिबैठाये।

आनिदेखाइनारदहिंभूपतिराजकुमारि ॥
कहहुनाथगुणदोषसबएहिकरहृदयबिचारि

देखिरूपमुनिबिरतिबिसारी बड़ीबारलगिरहेनिहारी।
लक्षणतासुबिलोकिभुलाने हृदयहर्षनहिंप्रगटबखाने
जोइहिबरैअमरसोहोई ॥ समरभूमितेहिजीतनकोई
सेवहिंसकलचराचरताही बरैशीलनिधिकन्याजाही।
लक्षणसबबिचारउरराखे कछुकबनायभूपसनभाषे
सुतासुलक्षणीकहिनृपपाहीं नारदचलेसोचमनमाहीं
करौंजाइसोयतनबिचारी। जेहिप्रकारमोहिबरैकुमारी
जपतपकछुनहोइतेहिकाला हेबिधिमिलेकवनबिधिबा

एहिअवसरचाहियपरमशोभारूपबिशाल
जोबिलोकिरीझैकुवँरितबमेलेजयमाल॥

हरिसनमांगौसुंदरताई। होइहिजातगहरुअतिभाई
मोरेहितहरिसमनहिंकोऊ एहिअवसरसहायसोहोऊ
बहुबिधिबिनयकीन्हतेहिकाला प्रगटेउप्रभुकौतुकीकृपाला
प्रभुबिलोकिमुनिनयनजुड़ाने होइहिकाजहियेहरषाने।
अतिआरतकहिकथासुनाई करहुकृपाहरिहोहुसहाई
आपनरूपदेहुप्रभुमोही॥ आनभांतिनहिंपावउंओही
जेहिबिधिनाथहोहिहितमोरा करौसोबेगिदासमैंतोरा।

निजमायाबलदेषबिशाला हियँहँसबोलेदीनदयाला

जेहिबिधिहोइहिपरमहित नारदसुनहुतुम्हार
सोइहमकरबनआनकछु बचननमृषाहमार।

कुपथमांगरुजब्याकुलरोगी बैदनदेहिसुनहुमुनियोगी
एहिबिधिहिततुम्हारमैंठयऊ कहिअसअंतरहितप्रभुभयऊ
मायाविबशभयेमुनिमूढ़ा। समुझनहींहरिगिरानिगूढ़ा
गवनेतुरततहांऋषिराई। जहांस्वयंबरभूमिबनाई।
निजनिजआसनबैठेराजा बहुबनावकरिसहितसमाजा
मुनिमनहर्षरूपअतिमोरे मोहितजिआनबरिहिनहिभोरे
मुनिहितकारनकृपानिधाना दीन्हकुरूपनजाइबखाना
सोचरित्रलषिकाहुनपावा नारदजानिसबहिसिरनावा

दो·रहेतहांदुइरुद्रगणतेजानहिंसबभेव॥
बिप्रबेषदेषतफिरहिंपरमकौतुकीतेउ ५ ॥

जेहिसमाजबैठेमुनिजाई हृदयरूपअहमितिअधिकाई
तहँबैठेमहेशगणदोऊ ५ । बिप्रबेषगतिलखैनकोऊ
करहिंकूटनारदहिंसुनाई नीकदीन्हहरिसुंदरताई॥
रीझहिंराजकुंवरिछबिदेखी इनहिंबरहिहरिजानबिशेषी
मुनिहिमोहमनहाथपराये हँसहिंशंभुगणअतिसचुपाये
यदपिसुनहिंमुनिअटपटिबानी समुझिनपरैबुद्धिभ्रमसानी
काहुनलखासोचरितबिशेषा सोस्वरूपनृपकन्यादेषा॥
मरकटबदनभयंकरदेही॥ देषतहृदयक्रोधभातेही॥

टी·
रा·बा·
८७

दो·सखीसंगलैकुँवरितबचलिजनुराजमराल
देखतफिरैमहीपसबकरसरोजजयमाल॥

जेहिदिशिबैठेनारदफूली॥ सोदिशितेहिनबिलोकीभू
पुनिपुनिमुनिउसकहिंअकुलाहीं देखिदशाहरगणमुसका
धरिनृपतनतहँगयेउकृपाला कुँवरिहरषिमेलिउजयमा
दुलहिनिलैगेलच्छिनिवासा नृपसमाजसबभयेउनिरा
मुनिअतिबिकलमोहमतिनाठी मणिगिरिगईछूटिजनुगांठ
तबहरगणबोलेमुसकाई॥ निजमुखमुकुरबिलोकहु
असकहिदोउभागेभयभारी बदनदीखमुनिबारिनिहा
भेषबिलोकिक्रोधअतिबाढ़ा तिन्हहिंश्रापदीन्हअतिगा

होहुनिशाचरजायतुमकपटीपापीदोउ॥२
हँसेहुहमहिंसोलेहुफलबहुरिहँसेउमुनिकोउ

पुनिजलदीखरूपनिजपावा तदपिहृदयसंतोषनआवा।
फरकतअधरकोपमनमाहीं सपदिचलेकमलापतिपा
देहौंश्रापकिमरिहौंजाई जगतमोरउपहासकराई।
बीचहिंपंथमिलेदनुजारी। संगरमासोइराजकुमारी
बोलेमधुरबचनसुरसाईं मुनिकहँचलेबिकलकीना
सुनतबचनउपजाअतिक्रोधा मायाबसनरहामनबोधा
परसंपदासकहुनहिंदेखी तुम्हरेईर्षाकपटबिशेषी।
मथतसिंधुरुद्रहिबौरायेउ सुरनप्रेरिबिषपानकराये

दो·असुरसुराबिषशंकरहिंआपुरमामणिचारु।

स्वारथसाधककुटलतुमसदाकपटब्यवहार

परमस्वतंत्रनसिरपरकोई भावैमनहिकरहुतुमसोई॥
भलेहिमंदमंदहिंभलकरहू बिस्मयहर्षनकछुहियधरहू
डहकिडहकिपरचेसबकाहू अतिअशंकमनसदाउछाहू
कर्मशुभाशुभतुमहिनबाधा अबलगितुमहिनकाहूसाधा
भलेभवनअबबायनदीन्हा पावहुगेफलआपनकीन्हा
बंचेउमोहिजवनिधरिदेहा। सोइतनुधरहुश्रापममएहा
कपिआकृतितुमकीन्हहमारी करिहहिंकीससहायतुम्हारी
ममअपकारकीन्हतुमभारी नारिबिरहतुमहोबदुखारी

श्रापसीसधरिहरषिहियप्रभुबहुबिनतीकीन्ह
निजमायाकीप्रबलताकरषिकृपानिधिलीन्ह

टी. रा. बा. ८५

जबहरिमायादूरिनिवारी नहिंतहँरमानराजकुमारी
तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा गहेपाहिप्रणतारतिहरणा
मृषाहोउममश्रापकृपाला ममइच्छाकहँदीनदयाला॥
मैंदुर्बचनकहेउबहुतेरे॥ कहमुनिपापमिटहिंकिमिमेरे
जपहुजाइशंकरशतनामा होइहिहृदयतुरतबिश्रामा
कोउनहिंशिवसमानप्रियमोरे असप्रतीतित्यागेउजनिभोरे
जेहिपरकृपानकरहिंपुरारी सोनपावमुनिभक्तहमारी॥
असउरधरमहिबिचरहुजाई अबनतुमहिंमायानियराई॥

बहुबिधिमुनिहिप्रबोधप्रभुतबभयेअंतर्ध्यान।
सत्यलोकनारदचले करतरामगुनगान * ॥

हरगणमुनिहिजातपथदेषी। बिगतमोहमनहर्षबिसेषी॥
अतिसभीतनारदपहँआये। गहिपदआरतबचनसुनाये॥
हरगणहमनबिप्रमुनिराया। बड़अपराधकीन्हफलपाया॥
श्रापअनुग्रहकरहुकृपाला। बोलेनारददीनदयाला॥
निशिचरजायहोहुतुमदोऊ। बैभवबिपुलतेजबलहोऊ॥
भुजबलबिश्वजितबतुमजहिया। धरिहहिंबिष्णुमनुजतनुतहिया॥
समरमरणहरिहाथतुम्हारा। होइहहुमुक्तिनपुनिसंसारा॥
चलेजुगलमुनिपदसिरनाई। भयेनिशाचरकालहिंपाई॥

दो॰ एककल्पएहिहेतुप्रभुलीन्हमनुजअवतार।
सुररंजनसज्जनसुषदहरिभंजनभूभार ४ ॥

एहिबिधिजन्मकर्महरिकेरे। सुंदरसुषदबिचित्रघनेरे॥
कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतरहीं। चारुचरितनानाबिधिकरहीं॥
तबतबकथामुनीशनगाई। परमबिचित्रप्रबंधबनाई॥
बिबिधप्रसंगअनूपबखाने। करहिंनसुनिआश्चर्यसयाने॥
हरिअनंतहरिकथाअनंता। कहहिंसुनहिंबहुबिधसंता॥
रामचंद्रकेचरितसुहाये॥ कल्पकोटिलगिजाहिंनगाये॥
यहप्रसंगमैंकहाभवानी। हरिमायामोहहिंमुनिज्ञानी॥
प्रभुकौतुकीप्रणतहितकारी। सेवतसुलभसकलदुषहारी॥

सो॰ सुरनरमुनिकोउनाहिंजेहिनमोहमायाप्रबल।
असबिचारिमनमाहिंभजियमहामायापतिहिं॥

अपरहेतुसुनशैलकुमारी। कहौंबिचित्रकथाबिस्तारी॥

प्रभुअवतर्यो कल्पकीकथा कहतेहैं अथा बाल्मीकिप्रा शोकोकसातो कांडकोमूलग्र न्थसबकांडनमो आपकातैसे देख [illegible] कथाप्रसंगनिकलै [illegible]

टी॰ रा॰ बा॰
९०

कीकथाकहतेहैं कहैंसपप्रकार सोप्रमेकासंदे सोबिराधजानि परतुहैं सासव प्रस गसकावलीसो सहतोबिसतरैभयंते नहोहिंबिचारना रानीबड़कलसा प नारकराजपत [illegible]

[illegible]

प्रश्नपार्वतीमें
अनुमहाराज
कीन्हेंशीततैं
तपलिख्यो
हैहठकीन्हैं
उचितनाहीं
अरुहैमाता
हमनैंजान्यो
आपकेअलौकि
कचरित्रकहैसो
मेरेअनुग्रहतें
कबहूंनमिटै
गोआसका
ऐसाबिबेक
प्रभुकैसुनाने
लगलगाकै
तुमअलाहि
ननकाआदि
भवनतेंप्रसंग
ऐलोहतुव
इतहैंहोमन
नलपकैसुब्व

जेहिकारणअजअगुणअनूपा। ब्रह्मभयेकोसलपुरभूपा।
जोप्रभुबिपनफिरततुमदेखा। बंधुसमेतकियेमुनिबेषा।
जासुचरितअवलोकभवानी। सतीसरीररहिउबोरानी॥
अजहुनछायामिटततुम्हारी। तासुचरितसुनभ्रमरुजहारी।
लीलाकीन्हजोतेहिअवतारा। सोसबकहिहौंमतिअनुसारा।
भरद्वाजसुनिशंकरबानी। सकुचिसप्रेमउमामुसकानी।
लगेबहुरिबरनैवृषकेतू। सोअवतारभयउजेहिहेतू।

दो॰ सोमैंतुमसनकहौंसब सुनमुनीशमनलाइ।
रामकथाकलिमलहरनि मंगलकरणसुहाइ।

स्वायंभूमनुअरुसतरूपा। जिनतेभैनरसृष्टिअनूपा॥
दंपतिधरमआचरणनीका। अजहुंगावस्रुतिजिनकीलीका।
नृपउत्तानपादसुतजासू। ध्रुवहरिभक्तभयेसुतजासू।
लघुसुतनामप्रियव्रतताही। वेदपुराणप्रशंसतजाही॥
देवहूतिपुनितासुकुमारी। जोमुनिकर्दमकीप्रियनारी।
आदिदेवप्रभुदीनदयाला। जठरधरेउजेहिकपिलकृपाला।
सांख्यशास्त्रजेहिप्रगटबषाना। तत्वबिचारनिपुणभगवाना।
तेहिमनुराजकीन्हबहुकाला। प्रभुआयसुबहुविधिप्रतिपाला।

सो॰ होइनबिषयबिराग भवनबसतभाचौथपन।
हृदयबहुतदुखलाग जन्मगयेहरिभक्तिबिन॥

बरबसराजसुतहितबदीन्हा। नारिसमेतगवनबनकीन्हा।
तीरथबरनैमिषबिख्याता। अतिपुनीतसाधकसिधिदा

टी॰ रा॰ बा॰ ५१

गामगुणमनदेरा
हैउजनायो॥
॥ ५२ ॥

बसहिंतहाँमुनिसिद्धसमाजा। तहँहियहरषचलेमनुराजा
पंथजातसोहहिंमतिधीरा। ज्ञानभक्तिजनुधरेशरीरा
पहुँचेजाइधेनुमतितीरा ॥ हरषिनहानेनिर्मलनीरा।
आएमिलनसिद्धमुनिज्ञानी। धर्मधुरंधरनृपऋषिजानी
जहँजहँतीरथरहेसुहाये ॥ मुनिनसकलसादरकरवाये
कृशशरीरमुनिपटपरिधाना संतसभानितसुनहिंपुरा

दो॰ द्वादशअक्षरमंत्रबरजपहिंसहितअनुराग।
बासुदेवपदपंकरुहदंपतिमनअतिलाग ॥

करहिंअहारशाकफलकंदा सुमिरहिंब्रह्मसच्चिदानंद
पुनिहरिहेतुकरनतपलागे। बारिअहारमूलफलत्यागे
उरअभिलाषनिरंतरहोई ॥ देखियनयनपरमप्रभुसोई
अगुणअखंडअनंतअनादी जेहिचिंतहिंपरमारथबादी
नेतिनेतिजेहिबेदनिरूपा। चिदानंदनिरुपाधिअनूपा
शंभुबिरंचिबिष्णुभगवाना। उपजेहिंजासुअंशतेनाना।
ऐसेउप्रभुसेवकबसअहहीं भक्तहेतुलीलातनुगहहीं
जौंयहबचनसत्यश्रुतिभाषा। तौहमारपूजिहिंअभिलाषा

दो॰ एहिबिधिबीतेबर्षषट्सहसबारिआहार।
संबतसप्तसहस्रपुनि रहेसमीरअहार॥

बर्षसहसदशत्यागेउसोऊ ठाढ़रहेएकपददोऊ * ॥
बिधिहरिहरतपदेखिअपारा। मनुसमीपआयेबहुबार
माँगहुबरबहुभाँतिलुभाये। परमधीरनहिंचलहिंचलाये

अस्थिमात्रहोयरहेशरीरा॥ तदपिमनागमनहिंनपीरा
प्रभुसर्वज्ञदासनिजजानी॥ गतिअनन्यतापसनृपरानी
मांगुमांगुबरभैनभबानी। परमगंभीरकृपामृतसानी
मृतकजिआवनिगिरासुहाई श्रवणरंध्रहोइउरजबआई
हृष्टपुष्टतनभयेउसुहाये। मानहुअबहिंभवनतेआये

दो० श्रवणसुधासमबचनसुनिपुलकप्रफुल्लितगात
बोलेमनुकरिदंडवतप्रेमनहृदयसमात १॥

दो० रा० बा ५३

सुनुसेवकसुरतरुसुरधेनू॥ बिधिहरिहरबंदितपदरेनू
सेवकसुलभसकलसुखदायक प्रणतपालसचराचरनायक
जौंअनाथहितहमपरनेहू। तौप्रसन्नहोइयहबरदेहू
जोसरूपबसशिवमनमाहीं जेहिकारणमुनियतनकराहीं
जोभुसुंडिमनमानसहंसा। सगुणअगुणजेहिनिगमप्रशंसा
देखहिंहमसोरूपभरिलोचन कृपाकरहुप्रणतारतिमोचन
दंपतिबचनपरमप्रियलागे मृदुलबिनीतप्रेमरसपागे
भक्तबछलप्रभुकृपानिधाना। बिश्वबासप्रगटेभगवाना॥

दो० नीलसरोरुहनीलमणिनीलनीरधरश्याम॥
लाजहिंतनशोभानिरखिकोटिकोटिशतकाम

शरदमयंकबदनछबिसींवा चारुकपोलचिबुकदरग्रीवा
अधरअरुणरदसुंदरनासा। बिधुकरनिकरबिनिंदकहासा।
नवअंबुजअंबकछबिनीकी चितवनललितभावतीजीकी
भृकुटीमनोजचापछबिहारी तिलकललाटपटलदुतिकारी

कुंडलमकरमुकुटसिरभ्राजा कुटिलकेशजनुमधुपसमाज
उरश्रीवत्सरुचिरबनमाला पदकहारभूषणमणिजाला
केहरिकंधरचारुजनेऊ॥ बाहुबिभूषणसुंदरतेऊ॥
करिकरसरिससुभगभुजदंडा कटिनिषंगकरशरकोदंडा

तडितबिनिंदकपीतपटउदररेखबरतीनि॥
नाभमनोहरलेतजनुयमुनभवरछबिछीन।

पदराजीवबरणिनहिंजाईं। मुनिमनमधुपबसहिंजेहिमा
बामभागशोभतिअनुकूला। आदिशक्तिछबिनिधिजगमूल
जासुअंशउपजहिंगुणखानी अगणितउमारमाब्रह्मानी
भृगुटिबिलासजासुजगहोई रामबामदिशिसीतासोई॥
छबिसमुद्रहरिरूपबिलोकी एकटकरहेनयनपटरोकी॥
चितवहिंसादररूपअनूपा। तृप्तिनमानहिंमनुशतरूपा
हर्षबिबशतनदशाभुलानी परेदंडइवगहिपदपानी॥
सिरपरसेप्रभुनिजकरकंजा। तुरतउठायेकरुणापुंजा॥

दो· बोलेकृपानिधानपुनिअतिप्रसन्नमोहिजान
मांगहुबरजोइभावमन महादानिअनुमान॥

सुनिप्रभुबचनजोरियुगपानी धरिधीरजबोलेमृदुबानी
नाथदेखिपदकमलतुम्हारे अबपूजेसबकामहमारे॥
एकलालसाबडिमनमाहीं सुगमअगमकहिजातसोना
तुमहिंदेतअतिसुगमगुसांई अगमलागुमोहिनिजकृपना
यथादरिद्रबिबुधतरुजाई बहुसंपतिमांगतसकुचा

तासुप्रभावनजानैसोई॥ यथाहृदयममसंशयहोई॥
सोतुमजानहुअंतरजामी पुरवहुमोरमनोरथस्वामी
सकुचिबिहाइमांगनृपमोही मोरेनहिंअदेयकछुतोही

दानिशिरोमणिकृपानिधिनाथकहौंसतभाव
चाहौंतुमहिंसमानसुत प्रभुसनकवनदुराव

देखिप्रीतिसुनिबचनअमोले एवमस्तुकरुणानिधिबोले
आपसरिसखोजौंकहँजाई नृपतवतनयहोबमैंआई॥
शतरूपहिबिलोकिकरजोरे देविमांगवरजोरुचितोरे॥
जोबरनाथचतुरनृपमांगा सोइकृपालमोहिअतिप्रियलागा
प्रभुपरंतुसुठिहोतिढिठाई यदपिभक्तहिततुमहिसुहाई
तुमब्रह्मादिजनकजगस्वामी ब्रह्मसकलउरअंतरजामी
असमुझतमनसंशयहोई कहजोप्रभुप्रमाणपुनिसोई
जोनिजभक्तनाथतवअहहीं जोसुखपावहिंसोगतिलहहीं

सोइसुखसोइगतिसोइभगतिसोइनिजचरणसनेह
सोइबिबेकसोइरहनिप्रभु मोहिकृपाकरिदेहु

सुनिमृदुगूढरुचिरबररचना कृपासिंधुबोलेमृदुबचना
जोकछुरुचितुमरेमनमाहीं मैंसोदीन्हसबसंशयनाहीं
मातुबिबेकअलौकिकतोरे कबहुनमिटिहिअनुग्रहतोरे
बंदिचरणमनुकहेउबहोरी अवरएकबिनतीप्रभुमोरी
सुतबिषयकतवपदरतिहोऊ मोहिबरमूढकहैकिनकोऊ
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनुमीना ममजीवनतिमितुमहिअधीना

टी॰
रा॰ बा॰
८५

अंकित ८५ क्षे॰
५६ ग्रा॰
१४ दौ॰
उतिमुनि
कथा अस
अगोनहपी
उताखलौ॰
१६॥
अपर भाउ
प्रताप प्रसंग
मैं प्रभु प्रभुत
अरु रावन
इत्यादि को
जन्म हेतु
अवतार
क्यो॥
॥१७॥

पी॰
रा॰ बा॰
५६

असबरुमांगिचरणगहिरहेऊ। एवमस्तुकरुणानिधिकहेऊ
अबतुममममअनुशासनमानी। बसहुजाइसुरपतिरजधानी

सो॰ तहँकरिभोगबिलासतातगयेकछुकालपुनि।
होइहहुअवधभुआलतबमैंहोवतुम्हारसुत

इच्छामयनरभेषसँवारे॥ होइहौंप्रगटनिकेततुम्हारे
अंसनसहितदेहधरिताता। करिहौंचरितभक्तसुखदाता
जेसुनिसादरनरबड़भागी। भवतरिहहिंममतामदत्यागी
आदिशक्तिजेहिजगउपजाया। सोउअवतरिहिंमोरियहमाया
पुरउबमैंअभिलाषतुम्हारा। सत्यसत्यप्रणसत्यहमारा।
पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना। अंतरध्यानभयेभगवाना+॥
दंपतिउरधरिभक्तिकृपाला। तेहिआश्रमनिवसेकछुकाला
समयपाइतनुतजिअनयासा। जायकीन्हअमरावतिबासा

यहइतिहासपुनीतअतिउमहिकहेउबृषकेतु।
भरद्वाजसुनुअपरपुनिरामजन्मकरहेतु॥

सुनिमुनिकथापुनीतपुरानी। जोगिरिजाप्रतिशंभुबखानी
बिस्वबिदितइककेकयदेसू। सत्यकेतुतहँबसेनरेसू+॥
धर्मधुरंधरनीतिनिधाना। तेजप्रतापशीलबलवाना
तेहिकेभयेयुगलसुतबीरा। सबगुणधाममहारणधीरा
राजधनीजेठसुतआहीं॥ नामप्रतापभानुअसताहीं
अपरसुतहिअरिमर्दननामा। भुजबलअतुलअचलसंग्रामा
भाइहिभाइहिपरमसमीती। सकलदोषछलबर्जितप्रीती

जेठसुतहिं राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवन बन कीन्ह

दो॰ जग प्रताप रबि भयेउ नृप फिरी दुहाई देश॥
प्रजापाल अति बेद बिधि कितहुँ नहिं अघलेश।

नृप हितकारक सचिव सुजाना। नाम धर्मरुचि शुक्र समाना
सचिव सयान बंधु बलबीरा। आपु प्रतापपुंज रणधीरा॥
सेन संग चतुरंग अपारा॥ अमित सुभट सब समर जुझार
सेन बिलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गहगहे निसाना।
बिजय हेतु कटकाइ बनाई। सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई
जहँ तहँ परीं अनेक लराईं। जीते सकल भूप बरिआईं।
सप्तद्वीप भुजबल बस कीन्हे। लैलै दंड छाडि नृप दीन्हे॥
सकल अवनि मंडल तेहि काला। एक प्रताप भानु महिपाला।

दो॰ स्वबस बिश्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रवेश।
अर्थ धर्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश २२॥

भूप प्रताप भानु बल पाई॥ कामधेनु भै भूमि सुहाई।
सब दुख बर्जित प्रजा सुखारी। धर्मशील सुंदर नर नारी॥
सचिव धर्मरुचि हरिपद प्रीती। नृप हित हेतु सिखावत नीती
गुरु सुर संत पितर महिदेवा॥ करै सदा नृप सब की सेवा
भूप धर्म जे बेद बखाने॥ सकल करै सादर सुख माने
दिन प्रति देय बिबिध बिधि दाना। सुनै शास्त्र बर बेद पुराना॥
नाना बापी कूप तड़ागा॥ सुमन बाटिका सुंदर बागा
बिप्र भवन सुर भवन सुहाये। सब तीरथन बिचित्र बनाये

जहँलगिकहेपुराणश्रुति एकएकसबयाग
बार सहस्रसहस्रनृप कियेसहितअनुराग

हृदयनकछुफलअनुसंधाना। भूपबिबेकीपरमसुजान
करैजोधर्मकर्ममनबानी। बासुदेवअर्पितनृपज्ञानी
चढ़िबरबाजिबारइकराजा। मृगयाकरसबसाजिसम
बिंध्याचलगंभीरबनगयऊ मृगपुनीतबहुमारतभयऊ
फिरतबिपिननृपदीषबराहू। जनुबनदुरेउशशिहिग्रसरा
बड़बिधुनहिंसमातमुषमाहीं मनहुँक्रोधबसउगिलतना
कोलकरालदसनछबिगाई तनुबिशालपीवरअधिका
घुरघुरातहयआरवपायें चकितबिलोकतकानउठाये

नीलमहीधरसिखरसम देषिबिशालबराह
चपरचलेउहयसुटुकिनृप हाँकिनहोइनिबाह

आवतदेषिअधिकरवबाजी। चलाबराहमरुतगतिभाजी
तुरतकीन्हनृपशरसंधाना। महिमिलिगयउबिलोकतबा
तकितकितीरमहीशचलावा करिछलसुअरशरीरबचाव
प्रगटतदुरतजायमृगभागा रिसबसभूपचलेउसंगला
गयउदूरिघनगहनबराहू। जहँनाहिंगजबाजिनिबाहू
अतिअकेलबनबिपुलकलेसू तदपिनमृगमगतजैनरेसू
कोलबिलोकिभूपबड़धीरा। भागपैठगिरिगुहागंभीरा
अगमदेषिनृपअतिपछिताई फिरेउमहाबनपरेउभुला

खेदखिन्नछुधिततृषितराजाबाजिसमेत॥

खोजतव्याकुलसरितसरजलबिनुभयेउअचेत

फिरतबिपिनआश्रमएकदेषा। तहँबसनृपतिकपटमुनिबेषा।
जासुदेशनृपलीन्हछड़ाई॥ समरसेनतजिगयेउपराई॥
समयप्रतापभानुकरजानी। आपनअतिअसमयअनुमानी॥
गयेउनगृहमनबहुतगलानी। मिलानराजहिनृपअभिमानी॥
रिसिउरमारिरंकजिमिराजा। बिपिनबसैतापसकेसाजा।
तासुसमीपगवननृपकीन्हा। यहप्रतापरबितेहितबचीन्हा
राउतृषितनहिंसोपहिचाना। देषिसुबेषमहामुनिजाना
उतरितुरंगतेकीन्हप्रणामा परमचतुरनकहेउनिजनामा

भूपतितृषितबिलोकितेहिसरबरदीन्हदेखाइ
मज्जनपानसमेतहयकीन्हनृपतिहरषाइ॥

गैश्रमसकलसुखीनृपभयेऊ निजआश्रमतापसलैगयेऊ
आसनदीन्हअस्तरविजानी पुनितापसबोलामृदुबानी
कोतुमकसबनफिरहुअकेले सुंदरयुवाजीवपरहेले×॥
चक्रवर्तिकेलक्षणतोरे। देषतदयालागिअतिमोरे
नामप्रतापभानुअवनीशा तासुसचिवमैंसुनहुमुनीशा
फिरतअहेरहिंपरेउभुलाई बड़ेभाग्यदेषेउपदआई॥
हमकहँदुर्लभदर्शनतुम्हारा जानतहौंकछुभलहोनिहारा
कहमुनितातभयेउअँधियारा योजनसत्तरनगरतुम्हारा

निशाघोरगंभीरबनपंथनसूझसुजान×॥
बसहुआजुअसजानितुमजायेहुहोतबिहान

तुलसीजसभवितव्यतातैसेमिलैसहाइ॥
आपुनआवैताहिपैकैताहितहाँलैजाय

भलेहिनाथआयसुधरिसीसा। बांधितुरगतरुबैठमहीशा
नृपबहुभांतिप्रसंसेउताही। चरणबंदिनिजभाग्यसराही
पुनिबोलेमृदुगिरासुहाई॥ जानिपिताप्रभुकरौंढिठाई
मोहिमुनीशसुतसेवकजानी। नाथनामनिजकहहुबखानी
तेहिनजाननृपनृपहिसुजाना। भूपहृदयसोकपटसयाना
बैरीपुनिछत्रीपुनिराजा॥ छलबलकीन्हचहैनिजकाजा
समुझिराजसुखदुखितअराती। अवाअनलइवसुलगैछाती
सरलबचननृपकेसुनिकाना। बयरसंभारिहृदयहरषान

दो॰कपटबोरिबाणीमृदुलबोलेउजुगुतिसमेत॥
नामहमारभिखारिअबनिर्धनरहितनिकेत

कहनृपजेबिज्ञाननिधाना। तुमसारिखेगलितअभिमा
सदारहहिंअपनपौदुरायें। सबबिधिकुशलकुबेषबनायें
तेहितेकहहिंसंतश्रुतिटेरे। परमअकिंचनप्रियहरिके
तुमसमअधनभिखारिअगेहा। होतबिरंचिशिवहिंसंदेहा
योसियोसितवचरणनमामि। मोपरकृपाकरियअबस्वामी
सहजप्रीतिभूपतिकीदेखी। आपबिषैबिश्वासबिशेषी
सबप्रकारराजहिंअपनाई। बोलेउअधिकसनेहजनाई
सुनिसतभावकहौंमहिपाला। इहांबसतबीतेबहुकाला

दो॰अबलगिमोहिनमिलेउकोउमैंनजनायउँकाहु

लोकमान्यताअनलसमकरतपकाननदाहु।
सो· तुलसीदेखसुबेषभूलैमूढनचतुरनर॥
सुंदरकेकीपेखिबचनसुधासमअसनअहि।

तातेंगुप्तरहौंजगमाहीं॥ हरितजिकिमपिप्रयोजननाहीं
प्रभुजाननसबबिनहिंजनायें कहहुकवनसिधिलोकरिझाये
तुमसुचिसुमतिपरमप्रियमोरे प्रीतिप्रतीतिमोहिपरतोरे॥
अबजौंतातदुरावौंतोही॥ दारुणदोषबढैअतिमोही
जिमिजिमितापसकथैउदासा तिमितिमिनृपहिंहोहिबिश्वासा
देखास्वबशकर्ममनबानी॥ तबबोलातापसबकध्यानी
नामहमारएकतनुभाई॥ सुनिनृपबोलेउपुनिसिरनाई
कहहुनामकरअर्थबखानी मोहिसेवकअतिआपनजानी

टी·
रा· बा·
१·१

आदिसृष्टिउपजीजबैंतबउतपतिभइमोरि॥
नामएकतनुहेतुतेहिदेहनधरीबहोरि॥

जनिआश्चर्यकरहुमनमाहीं सुततपतेदुर्लभकछुनाहीं
तपबलतेंजगसृजैबिधाता तपबलबिष्णुभयेपरित्राता
तपबलशंभुकरहिंसंहारा। तपतेअगमनकछुसंसारा।
भयउनृपहिंसुनिअतिअनुरागा कथापुरातनकहैसोलागा।
कर्मधर्मइतिहासअनेका॥ करैनिरूपणबिरतिबिबेका
उद्भवपालनप्रलयकहानी। कहेसिअमितआश्चर्यबखानी बख
सुनिमहीशतापसबसभयऊ आपननामकहनतबलयऊ
कहतापसनृपजानौंतोही कीन्हेउकपटलागभलमोही

सो॰ सुनिमहीसअसनीतिजहँतहँनामनकहहिंनृप
मोहितोहिपरअतिप्रीतिपरमचतुरतानिरखितव

नामतुम्हारप्रतापदिनेशा सत्यकेतुतवपितानरेशा
गुरुप्रतापसबजानियराजा। कहियनआनहिंजानअकाज
देखितातनवसहजसुधाई प्रीतिप्रतीतिनीतिनिपुण
उपजिपरीममतामनमोरे कहेउकथानिजबूझेउतोरे
अबप्रसन्नमैंसंसयनाहीं मांगुजोभूपभावमनमाहीं
सुनिसुबचनभूपतिहरषाना। गहिपदबिनयकीन्हबिधि
कृपासिंधुमुनिदरसनतोरे चारिपदारथकरतलमोरे
प्रभुहितथापिप्रसन्नबिलोकी मांगिअगमबरहोउंअशोकी

जरामरणदुखरहिततनसमरनजीतैकोउ
एकछत्ररिपुहीनमहिराजकल्पशतहोउ

कहतापसनृपऐसेइहोऊ। कारणएककठिनसुनसोऊ
कालौतवपदनाइहिसीसा। एकबिप्रकुलछाड़िमहीसा
तपबलबिप्रसदाबरियारा तिनकेकोपनकोउरखवा
जोबिप्रनबसकरहुनरेसा तौतवबसबिधिबिष्णुमहे
चलेनब्रह्मकुलसेबरिआई। सत्यकहौंदोउभुजाउठाई।
बिप्रशापबिनुसुनुमहीपाला। तोरनाशनहिंकवनेहुंकाल
हर्षेउराउबचनसुनितासू। नाथनहोइमोरअबनासू॥
तवप्रसादप्रभुकृपानिधाना। मोकहसर्बकालकल्याना।

एवमस्तुकहिकपटमुनिबोलाकुटिलबहोरि॥

मिलवहमारभुलावनिजकहहुतोमोरिनखोरि

ताते मैंतोहिबरजौंराजा॥ कहेकथातवपरमअकाजा।
छठेंश्रवनयहपरतकहानी नाशतुम्हारसत्यममबानी
यहप्रगटेअथवाद्विजश्रापा। नाशतोरसुनुभानुप्रतापा॥
आनउपायनिधनतवनाहीं जौंहरिहरकोपहिंमनमाहीं
सत्यनाथपदगहिनृपभाषा द्विजगुरुकोपकहहुकोराषा।
राषैगुरुजोकोपबिधाता। गुरुबिरोधनहिंकोउजगत्राता।
जौंनचलबहमकहेतुम्हारे। होइनाशनहिंसोचहमारे॥
एकहिडरडरपतिमनमोरा। प्रभुमहिदेवश्रापअतिघोरा।

होहिंबिप्रबसकवनबिधिकहहुकृपाकरिसोउ
तुमतजिदीनदयालनिजहितूनदेखौंकोउ॥

सुनुनृपबिबिधयतनजगमाहीं कष्टसाध्यपुनिहोहिंकिनाहीं
कहैंएकअतिसुगमउपाई। तहांपरंतुएककठिनाई
ममआधीनयुक्तिनृपसोई मोरजावतवनगरनहोई॥
आजुलगेअरुजबतेभयेऊं काहूकेगृहग्रामनगयेऊं
जौंनजावतबहोइअकाजू बनाआयअसमंजसआजू
सुनिमहीपबोलेमृदुबानी नाथनिगमअसनीतिबषानी
बड़ेसनेहलघुनपरकरहीं। गिरिनिजसिरनसदातृणधरहीं
जलधिअगाधमौलिवहफेनू संततधरणिधरतसिरेणू

असकहिगहेनरेशपदस्वामीहोहुकृपालु॥
मोहिलागिदुखसहियप्रभुसज्जनदीनदयालु

जाननृपहिंआपनआधीना। बोलातापसकपटप्रवीना।
सत्यकहौंभूपतिसुनतोही। जगमहँनाहिंदुर्लभकछुमो
अवशिकाजमैंकरिहौंतोरा। मनक्रमबचनभक्ततैंमोरा।
योगयुक्तितपमंत्रप्रभाऊ। फलैतबहिंजबकरियदुरा
जोनरेशमैंकरउरसोई॥ तुमपरसहुमोहिजाननको
अन्नजोजोईजोईभोजनकरई। सोईसोईतवआयसुअनुस
पुनितिनकेगृहजेवँजोई॥ तवबसहोइभूपसुनसो
जायउपायरचहुनृपएहू। संबतभरिसंकल्पकरे

दो॰ नितिनूतनद्विजसहस्रशतबरेउसहितपरिवार।
मैंतुम्हरेसंकल्पलगिदिनहिंकरबजेवनार॥

एहिबिधिभूपकष्टअतिथोरे। होइहिंसकलबिप्रबसतोरे।
करिहहिंहोमबिप्रमखसेवा। तेहिप्रसंगसहजहिंबसदेव
औरएकतोहिकहौंलखाऊ। मैंय[illegible]भेषनआउबकाऊ।
तुमरेउपरोहितकहँराया। हरिआनबमैंकरिनिजमाय
तपबलतेहिकरआपुसमाना। रखिहौंइहाँबरषपरिमान
मैंधरतासुभेषसुनराजा। सबबिधितोरसवारबकाज
गैनिशिबहुतशयनअबकीजै। मोहितोहिभूपभेटदिनतीजे
मैंतपबलतोहितुरगसमेता। पहुँचैहौंसोवतहिनिकेता।

दो॰ मैंआउबसोइभेषधरि पहिचानेउतबमोहि।
जबएकांतबुलाइसब कथासुनाऊंतोहि॥

शयनकीन्हनृपआयसुमानी। आसनजाइबैठछलज्ञानी।

प्र

अमितभूपनिद्राअतिआई सोकिमिसोचसोचअधिकाई
कालकेतुनिशिचरतहँआवा जेहिसूकरहोइनृपहिभुलावा
परममित्रतापसनृपकेरा। जानेसोअतिकपटघनेरा॥
तेहिकेशतसुतअरुदशभाई खलअतिअजयदेवदुखदाई
प्रथमहिंभूपसमरसबमारे बिप्रसंतसुरदेखिदुखारे
तेहिखलपाछिलबयरसंभारा तापसनृपमिलिमंत्रबिचारा
जेहिरिपुक्षयसोइरचेसिउपाऊ भावीबसनजानकछुराऊ।

दो॰ रिपुतेजसीअकेलअपिलघुकरिगणियनताहु।
अजहुँदेतदुखरविशशिहिशिरअवशेषितराहु।

तापसनृपनिजसखहिनिहारी हरषिमिलेउउठिभयेऊसुखारी
मित्रहिकहिसबकथासुनाई यातुधानबोलासुखपाई॥
अबसाधेउँरिपुसुनहुनरेशा। जोतुमकीन्हमोरउपदेशा।
परिहरिसोचरहहुतुमसोई बिनुऔषधहिब्याधिबिधिखोई
कुलसमेतरिपुमूलबहाई। चौथेदिवसमिलबमैंआई
तापसनृपहिबहुतपरितोषी चलामहाकपटीअतिरोषी
भानुप्रतापहिबाजिसमेता पहुंचायेसिसोवतहिनिकेता
नृपहिनारिपहँशयनकराई हयगृहबांधेसिबाजिबनाई

दो॰ राजाकेउपरोहितहिहरिलैगयेउबहोरि॥
लैराखेसिगिरिखोहमहँमायाकरिमतिभोरि

आपुबिरचिउपरोहितरूपा पराजाइतेहिसेजअनूपा॥
जागेउनृपअनभयउबिहाना देखिभवनअतिअचरजमाना

मुनिमहिमामनमहँअनुमानी उठेगवहिंजेहिजाननरानी
काननगयेउबाजिचढितेही पुरनरनारिनजानेउकेही
गयेयामयुगभूपतिआवा घरघरउत्सवबाजिबधाव
उपरोहितहिदेखजबराजा। चकितबिलोकिसुमरसोइक
युगसमनृपहिगयेदिनतीनी कपटीमुनिपदरहमतिलीन
समयजानिउपरोहितआवा नृपहिमतेमहँकहिसमुझा

नृपहरषेपहिचानिगुरुभ्रमबसरहानचेत॥
बरेतुरतशतसहसबरबिप्रकुटुंबसमेत॥

उपरोहितजेवनारबनाई॥ छरसचारिविधिजसश्रुतिगा
मायामयतेहिकीन्हरसोई व्यंजनबहुगनिसकैनकोई॥
बिबिधमृगनकरआमिषरांधा तेहिमहँबिप्रमांसुखलसा
भोजनकहसबविप्रबुलाये। पदपखारिसादरबैठाये॥
परसनलागुजबहिंमहिपाला भइप्रकाशबाणीतेहिकाल
बिप्रबृंदउठिउठिगृहजाहू। हैबडिहानिअन्नजनिखाह
भयउरसोईभूसुरमांसू॥ सबद्विजउठेमानिबिश्वास
भूपबिकलमतिमोहभुलानी भावीबसनआवमुखबान

बोलेविप्रसकोपतबनहिंकछुकीन्हविचार
जाइनिशाचरहोहुनृपमूढसहितपरिवार॥

क्षत्रियबंधुतेबिप्रबुलाई। घालैलियेसहितसमुदाई
ईश्वरराषाधर्महमारा॥ जैसहिंतेंसमेतपरिवारा॥
संबतमध्यनासतवहोई जलदानानरहिहिंकुलकोई

टी·
रा· बा·
१०६

नृपसुनिशापबिकलअतित्रासा भइबहोरिबरगिराअकासा
बिप्रहुशापबिचारनदीन्हा नहिंअपराधभूपकछुकीन्ह
चकितबिप्रसबसुनिनभबानी भूपगयेजहँभोजनखानी
तहँनअसननहिंबिप्रसुआरा फिरेउराउमनशोचअपारा
सबप्रसंगमहिसुरन्हसुनाई त्रसितपरेउअवनीअकुलाई

भूपतिभावीमिटैनाहियदपिनदूषणतोरि॥
कियेअन्यथाहोइनहिंबिप्रशापअतिघोर

असकहिसबमहिदेवसिधाए समाचारपुरलोगनपाए॥
सोचहिंदूषणदैवहिंदेहीं। बिरचितहंसकाककियेजेहीं
उपरोहितभवनपहुंचाई असुरतापसहिंखबरजनाई
तेहिखलजहँतहँपत्रपठाये सजिसजिसेनभूपसबधाये।
घेरेन्हिनगरनिशानबजाई। बिबिधभांतनितहोवतलराई॥
जूझेसकलसुभटकरकरणी बंधुसमेतपरेनृपधरणी॥
सत्यकेतुकुलकोइनबाचा बिप्रशापकिमिहोइअसांचा
रिपुहिजीतनृपनगरबसाई निजनिजपुरगयेजयजशपाई।

भरद्वाजसुनजाहिजबहोतबिधाताबाम।
धूरिमेरुसमजनकजमताहिव्यालसमदाम

कालपाइमुनिसुनुसोइराजा भयउनिशाचरसहितसमाजा
दशशिरताहिबीसभुजदंडा रावणनामबीरबरबंडा॥
भूपअनुजअरिमर्दननामा भयेउसोकुंभकर्णबलधामा
सचिवजोरहाधर्मरुचिजासू भयेउबिमात्रबंधुलघुतासू

पंक्ति ७
१० दो०
८ चौ० १
छं० १ सो०
चौ० ६ बिबिध
नपप्रकरणते
गनाइ प्रगीत
चौ० १८३॥
रावन कुंभकरण
बिभीषनादिकों
पुलस्त्यकुलतें
जन्म प्रकरनपते
बलपौरुष प्रक
मयकन्यादि कन्याहि
परिवार सम्हृ
जनायो प्रक
लंका प्राप्ति
कुबेर भगादिको
निलयप्रक बेद
गौतें धर्म की
अथकथानगरि
॥ १८३॥
दो०
रा० बा०
१८

नामबिभीषणजेहिजगजाना। बिष्णुभक्तिबिज्ञाननिधाना।
रहेजेसुतसेवकनृपकेरे॥ भयेनिशाचरघोरघनेरे॥
कामरूपखलजिनसअनेका। कुटिलभयंकरबिगतबिबेका
कृपारहितहिंसकसबपापी बरनिनजाइबिस्वपरितापी

उपजेयदपिपुलस्त्यकुलपावनअमलअनूप॥
तदपिमहीसुरश्रापबसभयेसकलअघरूप।

कीन्हबिबिधतपतीनोंभाई परमउग्रसोबरणिनजाई॥
गयेउनिकटतपदेखिबिधाता। मांगहुबरप्रसन्नमैंताता॥
करिबिनतीपदगहिदशसीसा। बोलेबचनसुनहुजगदीसा।
हमकाहूकेमरहिंनमारे॥ बानरमनुजजातिदुइबारे।
एवमस्तुतुमबड़तपकीन्हा मैंब्रह्मामिलितेहिबरदीन्हा
पुनिप्रभुकुंभकर्णपहँगयऊ तेहिबिलोकिमनबिस्मयभय
जौयहखलनितकरबअहारा। होइहिसबउजारिसंसारा।
सारदप्रेरितासमतिफेरी। मांगसिनींदमासषटकेरी

गयेउबिभीषणपासतबकहापुत्रबरमांगु।
तेहिमांगेउभगवंतपदकमलअमलअनुरागु।

तिन्हहिंदेइबरब्रह्मसिधाये हरषिततेअपनेगृहआये
मयतनुजामंदोदरिनामा। परमसुंदरीनारिललामा॥
सोइमयदीन्हरावणहिआनी। भइसोयातुधानपतिरानी॥
हर्षितभयेउनारिभलिपाई पुनिदोउबंधुबिबाहेसिजाई
गिरित्रिकूटइकसिंधुमझारी बिधिनिर्मितदुर्गमअतिभारी

सोइमयदानवबहुरिसँवारा। कनकरचितमणिभवनअपारा।
भोगवतीजसअहिकुलबासा। अमरावतिजसशक्रनिवासा।
तिन्हतेंअधिकरम्यअतिबंका। जगबिख्यातनामतेहिलंका।

खाइसिंधुगंभीरअति चारिउदिशिफिरआव।
कनककोटमणिखचितदृढ़बरणिनजाइबनाव
हरिप्रेरितजेहिकल्पजोइजातुधानपतिहोय॥
सूरप्रतापीअतुलबलदलसमेतबससोइ॥

रहेतहांनिशिचरभटभारे। तेसबसुरनसमरसंघारे॥
अबतहंरहहिंशक्रकेप्रेरे। रक्षककोटियक्षपतिकेरे
दशमुखकतहुंखबरअसपाई सेनसाजगढ़घेरेसिजाई
देखिबिकटभटबड़िकटकाई। यक्षजीवलेगयेपराई॥
फिरिसबनगरदशाननदेखा। गयेउसोचसुखभयउबिशेषा।
सुंदरसहजअगमअनुमानी। कीन्हतहांरावणरजधानी॥
जेहिजसयोगबांटगृहदीन्हे। सुखीसकलरजनीचरकीन्हे
एकबारकुबेरपरधावा॥ पुष्पकयानजीतलेआवा

कौतुकहीकैलाशपुनिलीन्हेसिजाइउठाइ॥
मनहुंतौलिभटबाहुबलचलाअधिकसुखपाय

सुखसंपतिसुतसेनसहाई। जयप्रतापबलबुद्धिबड़ाई।
नितिनूतनसबबाढ़तजाई। जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई
अतिबलकुंभकर्णअसभ्राता। जेहिकहुंनहिंप्रतिभटजगजाता।
करिमद्यपानसोवषट्मासा। जागतहोहितिहुंपुरत्रासा॥

जौदिनप्रतिअहारकरसोई विश्वबेगसबचौपटहोई।
समरधीरनहिंजाइबखाना तेहिसमअधिकनकोउबलव
बारिदनादजेठसुततासू भटमहप्रथमलीकजगजा
जेहिनहोइरणसन्मुखकोई सुरपुर[illegible]नितहिपरावनहो

कुमुखअकंपनकुलिशरदधूमकेतुअथिकाय
एकएकजगजीतिसकऐसेसुभटनिकाय॥

कामरूपजानहिंसबमाया सपनेहुजिनकेधर्मनदाय
दशमुखबैठिसभाइकबारा देखिअमितआपनपरिवार
सुतसमूहजनपरिजननाती गनैकोपारनिशाचरजाती
सेनबिलोकिसहजअभिमानी बोलाबचनक्रोधमहँसान
टी॰
रा॰बा॰
११०
सुनहुसकलरजनीचरयूथा। हमरेबैरीबिबिधबरूथा।
तेसन्मुखनहिंकरहिंलराई देखिसकलरिपुजाहिंपरा
तिनकरमरणएकबिधिहोई कहौंबुझायसुनहुसबसो
द्विजभोजनमखहोमसराधा सबकरजायकरहुतुमबा

क्षुधाहीनबलहीनसुरसहजहिंमिलहहिंआइ
तबमारिहोंकिछाडिहौंभलीभांतिअपनाइ।

क्षेपक
नारदमिलेकहसिमुसुकाई रवकहामुनिरवदिखाई
सुनतअनघनारदनहिंभावा सेनदीयतेहितुरतपठावा
सागरउतरपारसोइगयऊ। नारिवृंदतहँदेखतभयऊ
तिनसनकहेउपानिहुपाहिजाहु करेउकिआवानिशिचरन
तबमैंतिन्हैजीतिसंग्रामा॥ लैजैहोंतुमकहुंनिजधाम

सुनतबचनइकजरठरिसानी धाइचरनगहिगगनउड़ानी
गईअंबरधरिधरिरुककोरा डारिसिसिंधुमध्यअतिजोरा

गयेउपतालअचेतहोइ मरैनाबिप्रप्रसाद ॥
सावधानुउठिगर्जमुनि दियेनहर्षबिषाद ॥

जीतेसिनागनगरसबमारी गयेउबहोरिबलिलोकसुरारी
बामनरावनआवतजाना ॥ कियेखेलऋषिसनअभिमाना
खेलनदेहुनगरशिशुनाना निजबलतिहुहिंदीनभगवाना
धाइधरातिहपुरलैआये । नगरनारिनरदेखनधाये ।
बीसबाहुदशकंधरजाई । बिधिहयमकनिकहंदेआई
रखेउनिबांधलजावहिनारी बामनकहैसहैबकुमारी ॥
बामनदेखबहुतसुकचाना तबछुड़ायदियेकृपानिधाना
चलातुरंतनिशाचरनाहा लाजशंककछुनहिंमनमाहा
तबतुरंतपंपापुरआवा । बालिनामकपिपतिजेहिठावा
दीषजायकससरबरशोभा जेहिमनमहामुनिनकरछोभा
जहांकपीसकरैनिजध्याना आरसैसंध्यामनमाना ॥
जाइठाढनहँभारजनीसा । ढोकेउबाहुगईभुजबीसा
तबकपीसचितवामुसुकाई ध्यानकेअवसररिसबिसराई
तबरावणबोलाकरिक्रोधा बकध्यानीकपिसुनसठबोधा

मोहिजीतेबिनुसमरसुनु नकरुध्यानकपीस
अंजलिदेइनपांयहठ संपथकरौंअजईस ॥

तबबालीबोलामुसकाई । बलतुम्हारऐसेहैभाई ॥
रविकिअंजलिमैंदेउसप्रीती । ठाढहोहुजायेउमोहिजीती

तबनिशिचरपतिउठेरिसाई। हेकपियुद्धछाड़कदराई॥
तबहिकौसपतिमनहिविचारा। द्विजबरदीन्हमरहिनहिमारा
हेदशकंधरजाहुविचारी॥ अजयतुम्हारछत्रभुजचारी
बहुभांतीबालीसमुझावा। कौनिहुभांतिबोधनहिंआव
तनसकोपहोइउठाकपीसा। धरितेहिंकांखचापदशसीस
अंजलिदीन्हरविहिमनमानी अंचेउसप्तउदधिकैपानी॥
जपेउआदित्यमंत्रमनजानी। तेहिछिनसंध्यानंदसिरानी

आवाघरहिकपीसतबकारनरहेउलंकेश॥
एहिबिधिबीतेमासषट् पावाबहुतकलेश॥

बहुप्रसेदकरखरीमहुजाना। अतिकुबासताकहुंभैधाम
कलमलाइरिसदसननकारा। काचकारजीवमनहुभ्रमछाए
एकदिवसरविअंजुलिसाजा। कखनेनिसरिमहाधुनिगाजा
सोपुनिधरिकपीसतेंबाधा। लेआयेउअंगदकेराधा॥
बीसभुजादशसीससुधारा। चरनहुऔपुनिधरिउरमारा
धरिसमेरइमरसमकीन्हा। बांधसेजपरशोभादीन्हा॥
अंगदखेललालनसिरमारा। किलकिलाइकिलकैकिलका

ताराचीन्हेउरावनहिंतेहिखनदीन्हछोराइ॥
जाहुतुरतलंकेशगृहबहुरिधरहिंकपिराइ॥

सुनिरावनआयेउतेहिठांई। सहसबाहुतहँरासबनाई॥
जलक्रीडाकारैसंगसबनारी। त्रिबिधभांतिशोभाअतिभार
आइरवामंडलजलरेवा॥ सुरनरनागकरहिंसबसेवा।

जायदीखरावनसुखनाना हर्षसमेतहृदयसुखमाना।
तहँलंकेशजाइशिवदेखा रचेकुबेरंचिमनहुबहुरेखा।
तुलसीअर्कपत्रसबआना। बिलपत्रअरुपुष्पप्रमाना।
जाइजलेछोभेउदशसीसा थांभेउमंत्रसुमिरिगौरीशा॥

दो॰ जबप्रचंडजलछोभेउबूड़ेउसबैसमाज*॥
सहसबाहुमनशंकअतिसकलत्रियैउरलाज॥

नवराजासनबोलहिंनारी अतिसुंदरसबराजकुमारी
सुनुनरपतिआएउकोउगाढ़ा आकसमातमहानदबाढ़ा
सुनिराजहिंभाक्रोधअपारा जसत्रिनेत्रत्रिपुरकहँजारा
जाइदीखरावनतहँठाढ़ा। जासुमंत्रबलजलनिधिबाढ़ा
धायाप्रबलमहाबलभारी लंकेश्वरकहँधरसिअवारी
लेइपुनिबांधिगयेत्रियपासा गढ़निरेषसबपरमहुलासा
करिअशनानपूजिगौरीशा हयशालाबांधेदशसीसा

कहभुसुंडिखगपतिसुनोअबयहकथारसाल
हयशालालेबांधउबीसभुजादशभाल*॥

सकलआइदेखहिंनरनारी मारहिंलातहँसैदैतारी॥
नामनकहैहैसकुचाना बहुबिधिपूछतनृपतिसुजाना
नृत्यकराहिंरंभादिकनारी दशाकुमाथदशदीपकबारी
कछुकमासएहिभांतिगमाव सोपुलस्त्यमुनिजाइछुड़ाव
चलातुरंतमहाअभिमानी नलकूबरकेश्रापनियरानी
मारगजातदेखिबिबुधारी अतिसुंदरीअनूपमनारी॥

चंदनपुष्पपत्रकरधारी। पूजनचलीजाइत्रिपुरारी
देखिउर्बसीमनसकुचानी तबरावनबोलेमृदुबानी

निकटजाइदशकंधनबगहीअंकभरिलीन
पुत्रहिबधूकुबेरकेनहिंबिचारकछुकीन

चीन्हतियहिमनविस्मयभयऊ लंकेश्वरलंकामहगयऊ
चलिगउर्बसीआईतहां ।। अलकापुरिनलकूबरजहां
समाचारसबपतिहिसुनावा सुनीकथामनहूंदुखपावा
दीन्हशापकरिक्रोधअपारा रावनबंशहोइक्षयकारा।
चलीशापलंकामहँआई। दशकंधरबैठेउजेहिठाई।।
आगेआइठाढ़भयाशापा तबलंकेश्वरअतिभयकांपा
सउरसकोपचितवतेहिओरा नलकूबरकशापअतिघोरा

शापहिंअंगीकारकरिमनमहुँकीन्हबिचार
ऋषिनदेउनहिंदोइहेउरोखेउलंकभुआर

दूतचारितेहिपठएभवानी भरद्वाजमुनिकथाबखानी
आएदूतऋषिनकेगेहा ।। देखतसबहिभएउसंदेहा।
पूछहिंरिषियकहांपगुधारा अहहिंकुशललंकेशभुआरा
तातकुशलसबभईबिपरीता तुमसनमांगेहिदेउअभीता
देहोदेउअसकहेउरिसाई कैगिरिकंदरजाहुपराई।
सुनिअसबचनसबहिदुखपावा तुरतबेगिएकपात्रमंगावा
सबमिलकरबिचारएकठाए भरिघटरुधिरऋषियलेआए
दूतनकहैंसौंपोमुनिज्ञानी होइसकोपबोलेमृदुबानी

घटउघरतत्तयहोशहि सकलसहितपरिवार
होइहतजन्हआयऊ नहंलंकेशभुआर २॥

आगेआयधराघट रिखसकललंकापतिधारी। भारी
बोलेहिबचनकहौहैभाई सकलकथानिहुनृपहिसुनाई
राहिघटतेलंकापतिनासा। सबदूतनअसबचनप्रकासा
राहिघटलेउत्तरदिशिजाहू जतनसमेतदेहुलैकाहू।
सुनिनृपबचनचलेसबकैसे जनकरायकेदेशहिपैसे।
होत्रकुंभधरिचलेबिचारी तहांप्रगटभईदिव्यकुमारी
जगजननीकोबरनैपारा। राजाजनकतहांपगुधारा
कन्यादेखिअनूपभवानी। सुताभांतिराजागृहआनी
नामजानकीपरमपुनीता। नारदआनिकहेउपुनिसीता

सकलकथानृपजनकसोंनारदकहाबषानि
सकलसुलच्छणालच्छिगुणजगदंबामनजानि

टी॰
रा॰ बा॰
२२५

कहितेकथाअसषिराउसिधाए बहुरिदूतलंकापुरआए
कहिहुआरआरहमराषी सोशंकरगिरिजासनभाषी
याज्ञवल्क्यमुनिकथारसाला साधुसाधुपतिपरमकृपाला।
पुनिमुनिकहेउकथाउपदेशा। जगजीतेसबलंकनरेशा
चारिउहारेसिभयत्रासा सकलदेवकीहेउनिजदासा
मेघनादकहँपुनिहँकरावा दीन्हसीषबलबयरबढ़ावा
जेसुरसमरधीरबलवाना। जिनकेलरिवेकोअभिमाना
तिनहिंजीतरणआनसिबांधा उठिसुतपितुअनुशासनसांधा

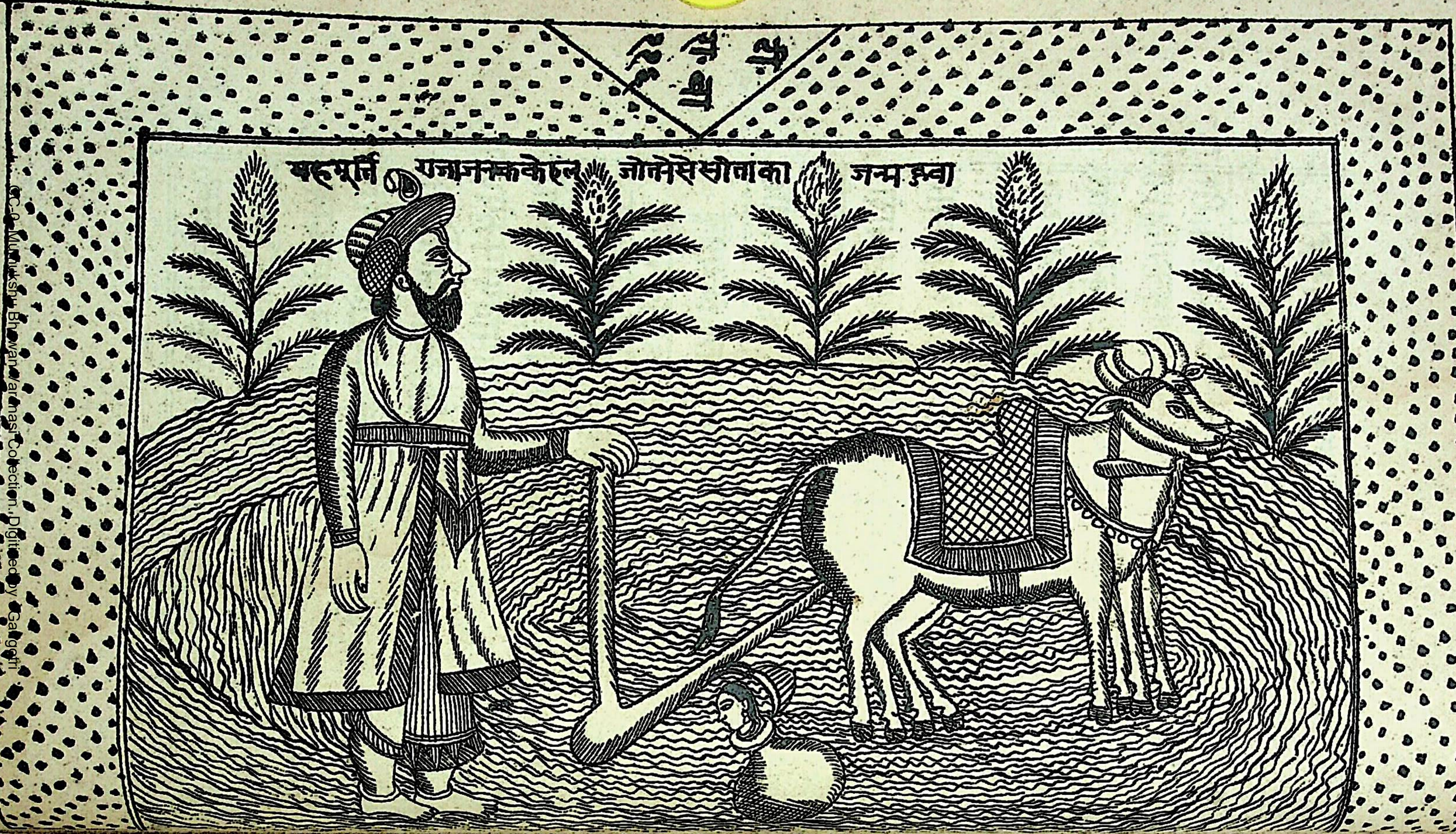
दी
रा वा
२२६
यहभूमि राजाजनककेहल जोतनेसे सीताका जन्म हुवा

इहिबिधिसबहीआज्ञादीन्हा । आपुनचलेउगदाकरलीन्हा।
चलतदशाननडोलतअवनी । गर्जतगर्भस्रवतसुररवनी।
रावणआवतसुनेउसकोहा । देवनतकेउमेरुगिरिखोहा।
दिगपालनकेलोकसिधाए । सूनेसकलदशाननपाये॥
पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी । देवदेवतनगारिप्रचारी॥
रणमदमत्तफिरैजगधावा । प्रतिभटखोजतकतहुनपावा।
रविशशिपवनबरुणतनुधारी । अग्निकालयमसबअधिकारी
किन्नरसिद्धमनुजसुरनागा । हठिसबहीकेपंथहिलागा।
ब्रह्मसृष्टिजहँलगितनुधारी । दशमुखबशवर्तीनरनारी।
आयसुकरहिंसकलभयभीता नवहिंआइनितचरणकीता।

दो·भुजबलविश्वविजयकरिराखेसिकोउनस्वतंत्र
मंडलीकमहिरावणराजकरैनिजमंत्र ××॥
देवयक्षगंधर्बनर किन्नरनागकुमार ××॥
जीतबरीनिजबाहुबलबहुसुंदरबरनार॥

इंद्रजीतसनजोकछुकहेऊ। सोसबजनिपहलेकररहेऊ
प्रथमहिंजिन्हकहआयसुदीन्हा । तिनकरचरितसुनहुजोकीन्हा
देखतभीमरूपसबपापी। निशिचरनिकरदेवपरितापी
करहिंउपद्रवअसुरनिकाया । नानारूपधरहिंकरमाया॥
जेहिबिधिहोयधर्मनिर्मूला । सोसबकरहिंबेदप्रतिकूला
जेहिजेहिदेशधेनुद्विजपावहिं । नगरग्रामपुरआगलगावहिं
सुभआचरणकतहुँनहिंहोई । देवबिप्रगुरुमाननकोई॥

रामो गई
उसके कौ कै
धो अनुकर्माई
हैत बना ६
पावकी धाई
सव १८८ लौं
ल्पाहिं गाइ
अंक कौ ति
बादे कण्डि
१छं. ५ दै
३४ दो.
मं. ८।

गहं सुरमुनि
कौधरे हैन गहं
गयेंव सहाइ
लैगभरको
अपनोबद
लोकतैं नाहिं मो
गामितं आपने
प्रार्थना धरा

दो॰
रा॰ बा॰
११८

गावना किया
आकाश बानी
पाइ बिधि सब
गाई सब देवन
कौ आतानानर
नृप भरत को
हैं सुरनि जाय
पाछि धाय ज्ञान
जूनिजसन्त
लोकको गये

नहिहरिभक्तियत्तजपग्याना सपनेहुसुनियनबेदपुराना।

छं॰ जपजोगबिरागातपमखभागाश्रवणसुनैदससीसा।
आपुनिउठधावैरहैनपावैधरिसबघालैखीसा।
असभ्रष्टअचाराभासंसाराधर्मसुनियनहिकाना।
तेहिबहुबिधित्रासैदेशनिकासैजोकहैबेदपुराना।
सो॰ बरणिनजाइअनीतघोरनिशाचरजोकरहिं
हिंसापरअतिप्रीतितिनकेपापहिकवनमिति

बाढेबहुखलचोरजुवारी जेलंपटपरधनपरनारी॥
मानहिंमातपितानहिंदेवा साधुनसोंकरवावहिंसेवा
जिनकेयहआचरणभवानी तेजानहुनिसिचरसमप्रानी
अतिशयदेखिधर्मकीहानी परमसभीतधराअकुलानी
गिरिसरिसिंधुभारनहिंमोही जसमोहिगरुअएकपरद्रोही
सकलधर्मदेखहिंबिपरीता कहिनसकैरावणभयभीता
धेनुरूपधरिहृदयबिचारी गईतहाँजहँसुरमुनिझारी
निजसंतापसुनायेसिरोई काहूतेकछुकाजनहोई।

छं॰ सुरमुनिगंधर्बामिलकरिसर्बागएबिरंचिकेलोका।
संगगोतनुधारीभूमिबिचारीपरमबिकलभयसोका
ब्रह्मासबजानामनअनुमानामेरीकछूनबसाई॥
जाकरितैंदासीसोअबिनासीहमरोतोरसहाई॥
सो॰ धरणीधरहुमनधीरकहबिरंचिहरिपदसुमरि
जानतजनकीपीरप्रभुभंजहिंदारुणःबिपति २॥

ब्रह्म श्रीमुखोपाध्या
धर्म धुरंधर
स्वायम्भुवकी
स्तुति कहि
बरनन॥
९८
॥ — ॥ — ॥ — ॥ — ॥ — ॥ —

बैठेसुरसबकरहिंबिचारा। कहँपाइयप्रभुकरियपुकारा।
पुरबैकुंठजानकहकोई॥ कोइकहपयनिधिमहँबससोई
जाकेहृदयभक्तिजसप्रीती प्रभुतेहिप्रगटसदायहरीती
तेहिसमाजगिरिजामैंरहेऊं अवसरपाइबचनइककहेऊं
हरिव्यापकसर्बत्रसमाना प्रेमतेंप्रगटहोहिंमैंजाना
देशकालदिशिबिदिशहुंमाहीं कहहुंसोकहांजहांप्रभुनाहीं
अगजगमयसबरहितबिरागी प्रेमतेप्रभुप्रगटैजिमिआगी
मोरबचनसबकेमनमाना साधुसाधुकरिब्रह्मबषाना।

दो॰ सुनिबिरंचिमनहर्षतनपुलकनयनबहुनीर
अस्तुतिकरतसजोरिकरिसावधानमतिधीर

छं॰ जयजयसुरनायकजनसुषदायकप्रणतपालभगवंता।
गोद्विजहितकारीजयअसुरारीसिंधुसुताप्रियकंता।
पालनसुरधरणीअद्भुतकरणीमर्मनजानैकोई
जोसहजकृपालादीनदयालाकरैअनुग्रहसोई
जयजयअविनाशीसबघटबासीव्यापकपरमानंदा
अभिगतगोतीताचरितपुनीतामायारहितमुकुंदा
जेहिलागिबिरागीअतिअनुरागीबिगतमोहमुनिबृंदा
निसबासरध्यावहिंगुणगणगावहिंजयतिसच्चिदानंदा
जेहिसृष्टिउपाईत्रिबिधबनाईसंगसहायनदूजा
सोकरउअघारीचिंतहमारीजानियभक्तिनपूजा
सोभवभयभंजननजनमनरंजनगंजनबिपतिबरूथा

मनबचक्रमबानीछाडिसयानीशरणासकलसुरयूथा।
शारदश्रुतिशेषाऋषयअशेषाजाकहुँकोउनजाना।
जेहिदीनपियारेवेदपुकारेद्रवौसोश्रीभगवाना
भववारिधिमंदरसबविधिसुंदरगुणमंदिरसुखपुंजा।
मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंजा।
दो॰जानिसभयसुरभूमिमुनिबचनसमेतसनेह।
गगनगिरागंभीरभईहरणिशोकसंदेह॥

जनिडरपहुमुनिसिद्धसुरेशा। तुमहिंलागिधरिहौंनरबेषा
अंशनसहितमनुजअवतारा। लेहौंदिनकरवंशउदारा॥
कश्यपअदितिमहातपकीन्हा। तिनकहँमैंपूरबबरदीन्हा
तेदशरथकौशिल्यारूपा॥ कोशलपुरीप्रगटनरभूपा
तिनकेगृहअवतरिहौंजाई। रघुकुलतिलकसोचारिउभाई
नारदवचनसत्यसबकरिहौं। परमशक्तिसमेतअवतरिहौं
हरिहौंसकलभूमिगरुआई। निर्भयहोहुदेवसमुदाई॥
गगनब्रह्मवाणीसुनिकाना। तुरतफिरेसुरहृदयजुड़ाना
तबब्रह्माधरणिहिसमुझावा। अभयभईभरोसजियआवा।

निजलोकहिविरंचिगयेदेवनइहैसिखाइ॥
बानरतनुधरिधरिणिमहँहरिपदसेवहुजाइ

गयेदेवसबनिजनिजधामा। भूमिसहितपायोबिश्रामा।
जोकछुआयसुब्रह्मेदीन्हा। हर्षेदेवबिलंबनकीन्हा॥
बनचरदेहधरीछितिमाहीं। अतुलितबलप्रतापतिनपाहीं

यह मूर्ति शृंगी ऋषि बसिष्ठजी राजा दशरथ को पुत्रनिमित्त यज्ञ कराना

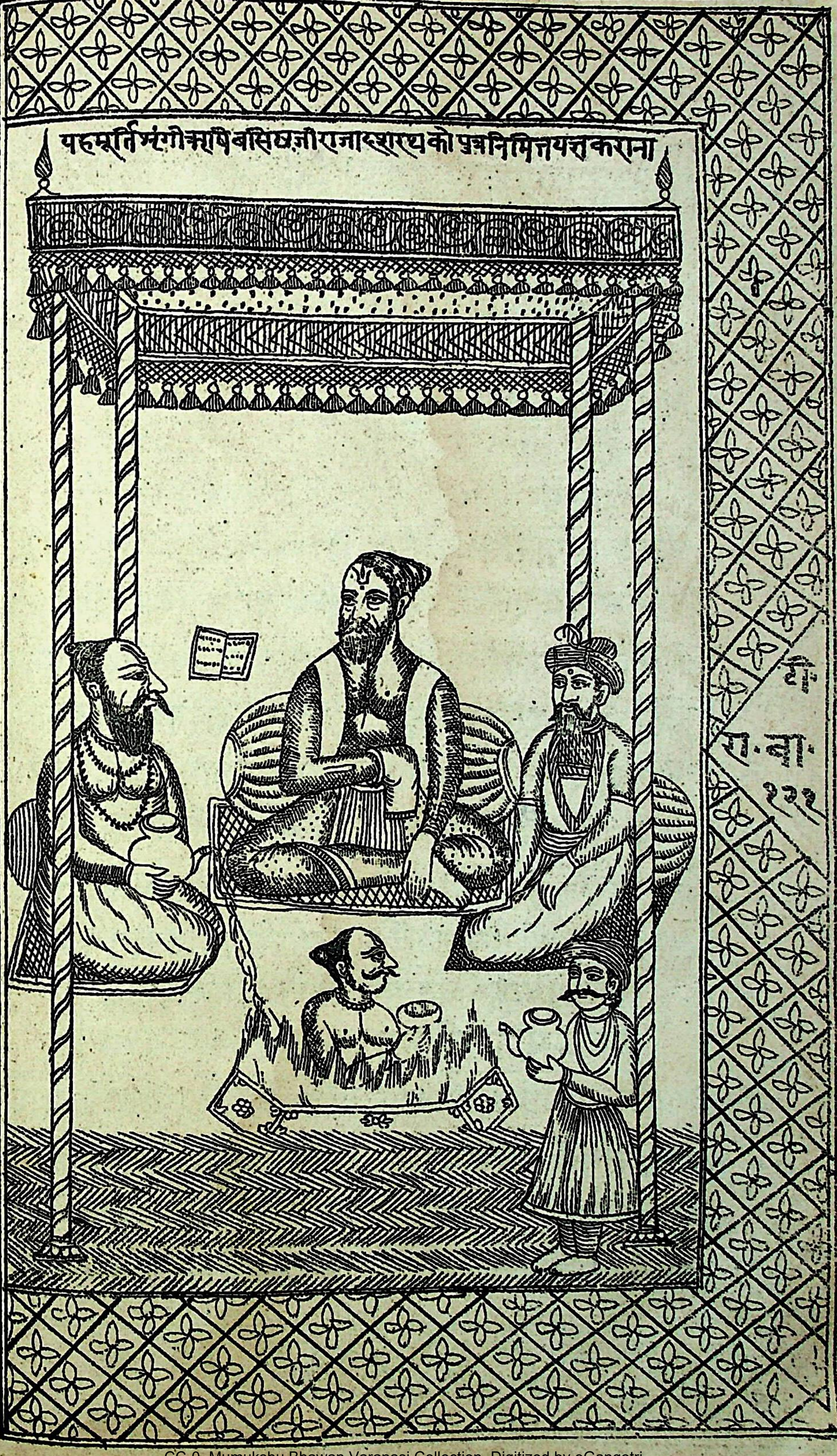

टी॰ रा॰ बा॰ १२१

मध्यवंगोध्र
प्रविश्यहर्षे ए
विनयकीरहो
अपहितकैमुख्यो
हितपुत्रबिन
वंसरक्षाहेतु
राजादशरथ
चौ० १० ५
अवकल्पमोह
प्रेहव्यापका
विश्वमेंप्राप्त
छं० ७ दो०
९३
चौ०
पं० लि० ८

गिरितरुनखआयुधसबबीरा। हरिमारगचितवहिंमतिधीरा।
गिरिकाननजहँतहँभरिपूरी रहेनिजनिजअनीकरचिरूरी
यहसबरुचिरचरितमैंभाषा अबसोसुनहुजोबीचहिराखा।
अवधपुरीरघुकुलमनिराऊ बेदबिदिततेहिदसरथनाऊ।
धर्मधुरंधरगुननिधिग्यानी हृदयभक्तिमतिसारंगपानी

कौशिल्यादिकनारिप्रियसबआचरणपुनीत
पतिअनुकूलसप्रेमदृढहरिपदकमलबिनीत

एकबारभूपतिमनमाहीं॥ भैगलानिमोरेसुतनाहीं॥
गुरुगृहगयेउतुरतमहिपाला चरणलागिकरिबिनयबिसाला
निजदुखसुखसबगुरहिसुनाएउ कहिबसिष्ठबहुबिधिसमुझाए
धरहुधीरहोइहहिंसुतचारी त्रिभुवनबिदितभक्तभयहारी
शृंगीऋषिहिबसिष्ठबुलावा पुत्रकामशुभयज्ञकरावा
भक्तिसहितमुनिआहुतिदीन्हे। प्रगटेअग्निचरूकरलीन्हे।
जोबसिष्ठकछुहृदयबिचारा सकलकाजभासिद्धितुम्हारा।
यहहबिबांटिदेहुनृपजाई॥ यथायोगजेहिभागबनाई।

तबअदृश्यपावकभयेसकलसभहिसमुझाय
परमानंदहिमगननृपहर्षनहृदयसमाय॥१॥

तबहिराउप्रियनारिबुलाई कौशिल्यादितहाँचलिआई
अर्द्धभागकौशल्यहिदीन्हा उभयभागआधेकरलीन्हा
कैकईकहँसोनृपदैदयऊ। रहेउसोउभयभागपुनिभयऊ
कौशिल्याकैकइहाथधरि। दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि

नलनीलयोगबल
मैन्दादिर्वपुत्र
होहेगर्वसंगी
सबसुग्रीवमें
निपुनयहप्रबंध
गवाल्मीकी
बालकांडमों
विस्तारसेप्रसिद्ध
यकलियेबात।
दो०
रा० का०
१२२
कैकेयीसुमभाग॥
पं० ८ पं० ६
तबहिं राजा
कैकयतरानी
हाँपरसुख्य
कौशल्याकेहि
स्रोसंखाकेमि
नासमयपास
संलाहेजरानी
कैभागतेंभा
जगायेअह
लीलापद
निषेधपुरो
आगमनसों
गर्भविषेक
कुसंदेहनाही
ईश्वरपदको
सर्वव्यापी

प्रमात्माज
अग्रगण्यरहित
श्रीवृन्दावनप
उत्पत्तिहिंबिना
नहींप्राप्तहै
अस्मजनप्रणता
धोरेकीइच्छाकर
तुहैंतवप्रभु
प्रीतपवनदेवता
उरवृद्धिमह
प्रसूतिआदि
प्रतीतिकराइ
देतेहैंसोकथा
ब्रह्मवैवर्तपुरा
नकेहमजन्म
खंडमेंबिखाहै
अस्तजन्मवार्ता
प्रभुकेसबबिल
जानोंपुनर्वसु
नक्षत्रसुयुषमा
लवछत्रस्याति

यहिबिधिगर्भसहितसबनारी। भईहृदयहर्षितसुषभारी
जादिनतेंहरिगर्भहिंआए। सकललोकसुषसंपतिछाए
मंदिरमैंसबराजहिंरानी ॥ सोभासीलतेजकीखानी ॥
सुखयुतकछुककालचलिगयऊ। जेहिंप्रभुप्रगटसोअवसरभयऊ

योगलगनग्रहबारतिथि सकलभयेअनुकूल ॥
चरअरुअचरहर्षयुत रामजन्मसुखमूल ॥

नवमीतिथिमधुमासपुनीता। शुक्लपक्षअभिजितहरिप्रीता
मध्यदिवसअतिसीतनघामा। पावनकाललोकबिश्रामा।
सीतलमंदसुरभिवहबाऊ। हर्षितसुरसंतनमनचाऊ ॥
बनकुसुमितगिरिगणमणिआरा। श्रवहिंसकलसरितामृतधारा
सोअवसरबिरंचिजबजाना। चलेसकलसुरसाजिबिमाना
गगनबिमलसंकुलसुरयूथा। गावहिंगुणगंधर्बवरूथा ॥
बरषिसुमनसुअंजुलिसाजी। गहगहगगनदुंदुभीबाजी ॥
अस्तुतिकरहिंनागमुनिदेवा। बहुबिधिलावहिंनिजनिजसेवा

दो॰ सुरसमूहबिनतीकरी पहुंचेनिजनिजधाम ॥
जगनिवासप्रभुप्रगटेउ अखिललोकबिश्राम ॥

छं॰ भएप्रगटकृपालादीनदयाला कौशिल्याहितकारी
हर्षितमहतारीमुनिमनहारी अद्भुतरूपनिहारी ॥
लोचनअभिरामातनुघनश्यामा निजआयुधभुजचारी।
भूषणबनमालानयनबिशाला शोभासिंधुखरारी।
कहदुइकरजोरीअस्तुतितोरी केहिबिधिकरौंअनंत।

टी॰
रा॰ बा॰
१२३

शुक्रायतिकर्क
पांचोग्रहउच्च
कर्मलग्नकर्क
ध्यानिचंद्रलग्न
मेंमंगलवार
नवमीशुक्लचैत्र
मासिउदुषि
मितमुहूर्त
अवधकोभाव
बालकेआदि
भोलेवाहै
प्रभुप्रगटहैव
नाहिकाभके
अगहंकौर
नगर

न:प्रफुल्लार
हिलहीको
रंगन्नका
गातेपुषध
कहैंबेंगीअ
सरलप्राय
कप्रकरास्य
पुलकप्राहो
गात्सल्प
गर्नेमातर्के
कारहेतुके
कौशल्याहित
प्राह्मणको
मंदेवंगल

हृदबालमी
कि:पुरुषप्रधान्य
के मनमेंपरंत
गुनकीप्रसंगते
बिरोधप्रपालोप
हीकरनपहंराव
अपारनहींएसी
स्वर्धकरनहैंनन
प्रदुषदत्व
जानवरीधारी।

दो:
रा.बा.
१२५

चपलतीमहार
धालतैंप्रापसुध
जानो॥ सू०
दो० ५०।
कौसल्यादि
तादिकांचि
करहिंमनकी
चपलपसतकी
धमनताममुन
दुहुलौंहै
बालरूपकेच
याचित्रमाहो
तैंपांभुजभार
जाकहीनन
गहीकलोहै
बसपापपनन
जोरत्रनासव
भुमकाप्राधा
संत्रकुपाभतान
कमनमलंगान
सकारवको

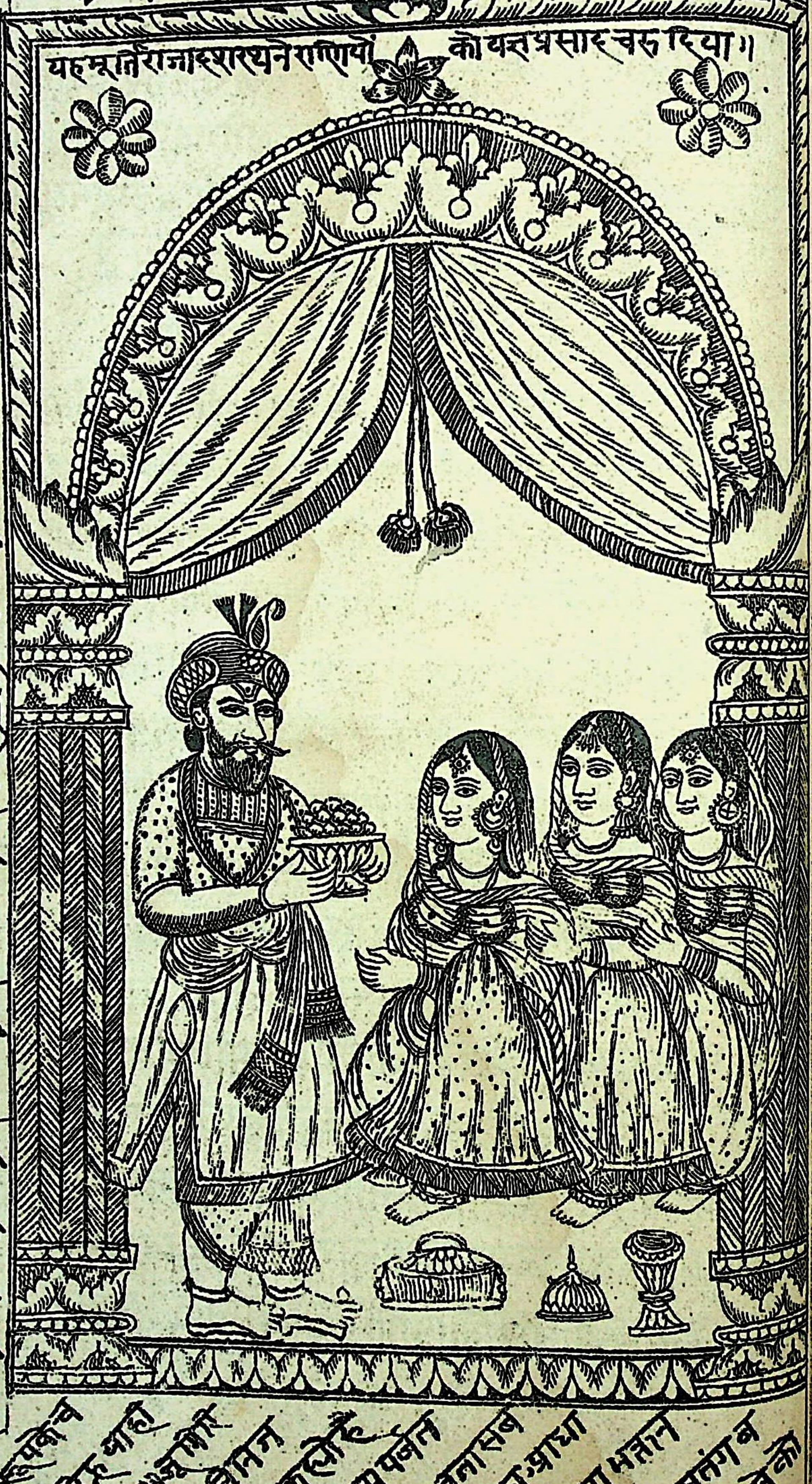

यह मूर्ति राजा दशरथ ने राणियों को यज्ञप्रसाद चरु दिया ॥

अरुनाभकीगंभीरता ब्रह्मा जानतु हैं बिस्तार भागवतमों है + ॥ + ॥ + ॥

मायागुणग्यानातीतअमाना बेदपुराणभनंता।
करुणासुखसागरसबगुणआगरजेहिगावहिंश्रुतिसंता।
सोममहितलागीजनअनुरागीप्रगटभयेश्रीकंता॥
ब्रह्मांडनिकायानिर्मितमायारोमरोमप्रतिबेदकहै।
ममउरसोबासीयहउपहासीसुनतधीरमतिथिरनरहै॥
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसकानाचरितबहुतबिधिकीन्हचहै।
कहिकथासुनाईमातुबुझाईजेहिप्रकारसुतप्रेमलहै
मातापुनिबोलीसोमतिडोलीतजहुतातयहरूपा॥
कीजैशिशुलीलाअतिप्रियशीलायहसुखपरमअनूपा
सुनिबचनसुजानारोदनठानाहोयबालकसुरभूपा।
यहचरितजोगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरैंभवकूपा॥
दो॰ बिप्रधेनुसुरसंतहितलीन्हमनुजअवतार
निजइच्छानिर्मिततनुमायागुणगोपार ++॥

सुनिशिशुरुदनपरमप्रियबानी संभ्रमचलिआईंसबरानी
हर्षितजहँतहँधाईंदासी। आनंदमगनसकलपुरबासी
दशरथपुत्रजन्मसुनिकाना। मानहुब्रह्मानंदसमाना॥
परमप्रेममनपुलकिशरीरा। चाहतउठनकरतमतिधीरा।
जाकरनामसुनतशुभहोई मोरेगृहआवाप्रभुसोई॥
परमानंदपूरिमनराजा ॥ कहाबुलायबजावहुबाजा।
गुरुवसिष्ठकहँगयउहँकारा आयेद्विजनसहितनृपद्वारा।
अनुपमबालकदेखिनजाई। रूपराशिगुणकहिनसिराई

टी
रा॰बा॰
१२५

दो॰ नबनांदीमुखश्राद्धकरिजातकर्मसबकीन्ह
हाटकधेनूबसनमणिनृपबिप्रन्हकहँदीन्ह ॥

ध्वजपताकतोरणपुरछावा। कहिनजाइबहुभांतिबनावा
सुमनवृष्टिआकाशतेहोई ब्रह्मानंदमगनसबकोई ॥
वृंदवृंदमिलिचलीलुगांई सहजसिंगारकरैंउठिधाई
कनककलशमंगलभरिथारा गावतपैठहिंभूपदुआरा ॥
करिआरतीनिछावरकरहीं बारबारसिसुचरणन्हपरहीं
मागधसूतबंदिगुणगायक पावनगुणगावहिंरघुनायक
सर्बसदानदीन्हसबकाहू। जेहिपावाराखानहिंताहू ॥
मृगमदचंदनकुंकुमकीचा ॥ मचीसकलबीथिनबिचबीचा

टी॰ रा॰बा॰ १२६

दो॰ गृहगृहबाजबधावसुभ प्रगटभयेसुखकंद।
हरषवंतसबजहँतहँ नगरनारिनरवृंद ++ ॥

कैकयसुतासुमित्रादोऊ। सुंदरसुतजनमतभइओऊ ॥
बहुसुखसंपतिसमयसमाजा कहिनसकैशारदअहिराजा
अवधपुरीसोहैइहिभांती प्रभुहिंमिलनआईजनुराती
देखिभानुजनुमनसकुचानी तदपिबनीसंध्याअनुमानी
अगरधूपजनुबहुअंधियारी उड़ैअबीरमनहुंअरुणारी ॥
मंदिरमणिसमूहजनुतारे। नृपगृहकलशसोइंदुउदारे
जनुखगमुखरसमयजनुसानी
भवनबेदधुनिअतिमृदुबानी जनुखगमुखरसमयजनुसानी
कौतुकदेखिपतंगभुलाना। एकमासतेहिजाततजाना

मासदिवसकादिवसभामरमनजानैकोइ

पं॰ १५मू॰ प्रभुहिमिलन टी॰। रामचंद्रस्वाधिनिशा के पाती हैं नामकरण क्षत्रियका ब्राह्मण द्वारा है।

कं॰ २७ ज्ञानिगुनराशी दो॰ योगपती साक्षिकनाम नाहिंआपनपौ चलतंत्रिकालज्ञ हैं चैतन्यप्रभाव हैं भानु।

रथसमेतरविथाकेउ निशाकवनबिधिहोइ

यहरहस्यकाहूनहिंजाना। दिनमणिचलेकरतगुणगाना।
देषिमहोत्सवसुरमुनिनागा। चलेभवनबरनतनिजभागा।
औरौंकहौंएकनिजचोरी। सुनुगिरिजाअतिदृढमतितोरी।
काकभुसुंडिसंगहमदोऊ मनुजरूपजानैनहिंकोऊ॥
परमानंदप्रेमसुषफूले॥ बीथिनफिरहिंमगनमनभूले
यहसुभचरितजानपैसोई। कृपारामकीजापरहोई॥
तेहिअवसरजोजेहिबिधिआवा। दीन्हभूपजोजेहिमनभावा।
गजरथतुरगहेमगोहीरा दीन्हेनृपनानाबिधिचीरा॥

दो॰ मनसंतोषेसबनकेजहँतहँदेहिंअसीस॥
सकलतनयचिरजीवहुतुलसिदासकेईस॥

कछुकदिवसबीतेयहिभांती जाततनजानहिंदिनअरुराती
नामकरणकरअवसरजानी भूपबोलपठयेमुनिज्ञानी॥
करिपूजाभूपतिअसभाषा धरियनामजोमुनिगुनिराषा।
इनकेनामअनेकअनूपा। मैंनृपकहबस्वमतिअनुरूपा।
जोआनंदसिंधुसुषरासी सीकरतेत्रैलोकसुपासी॥
सोसुखधामरामअसनामा। अखिललोकदायकबिश्रामा।
बिश्वभरणपोषणकरजोई जाकरनामभरतअसहोई॥
जाकेसुमरनतेरिपुनासा। नामशत्रुहनबेदप्रकासा॥

लक्षणधामरामप्रियसकलजगतआधार॥
गुरुबसिष्ठतेहिराषा लक्ष्मणनामउदार॥

हैं अलौकिक हैं [illegible] ईश्वरता [illegible]

टी॰ रा॰ बा॰ ९२

[illegible] मंगलगान श्रीशुनःशेप [illegible] बिन्दु [illegible]

[illegible] औरविभमधनकौ अर्थकोशशंकावली में २०५ रामचंद्रजी

धरेनामगुरुहृदयबिचारी। बेदतत्वनृपतवसुतचारी॥
मुनिजनधनसर्बसशिवप्राना। बालकेलिरसतेहिसुखमान
बारेहितेनिजहितपतिजानी। लक्ष्मणरामचरणरतिमानी
भरतशत्रुहनदोनोंभाई॥ प्रभुसेवकजसप्रीतिबड़ाई
श्यामगौरसुंदरदोउजोरी। निरखहिंछबिजननीतृणतो
चारिउरूपशीलगुणधामा तदपिअधिकगुणसागरराम
हृदयअनुग्रहइंदुप्रकाशा सूचतकिरणमनोहरहास
कबहुँउछंगकबहुँबरपलना। मातुदुलारहिंकहिप्रियलल

दो॰ व्यापकब्रह्मनिरंजननिर्गुणबिगतबिनोद।
सोअजप्रेमभक्तिबसकौशिल्याकीगोद*॥

कामकोटिछबिस्यामशरीरा। नीलकंजबारिदगंभीरा॥
अरुणचरणपंकजनखजोती। कमलदलनबैठजनुमोती
रेखकुलिशध्वजअंकुशसोहैं नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहैं
कटिकिंकिणीउदरत्रयरेखा नाभिगंभीरजानिजेहिदेखा
भुजबिशालभूषणयुतभूरी हियहरिनखशोभाअति
उरमणिहारपदिककीशोभा बिप्रचरणदेखतमनलोभ
कंबुकंठअतिचिबुकसुहाई आननअमितमदनछबि
दुइदुइदशनअधरअरुणारे नासातिलककोबरनैपारे
सुंदरश्रवणसुचारुकपोला अतिप्रियमधुरसोतोतरिबोल
नीलकमलदोउनयनबिशाला बिकटभृकुटिलटकनबनमा
चिक्कणकचकुंचितगभुआरे बहुप्रकाररचिमातुसँवारे

पीतझगुलियातनपहिराये। जानुपाणिबिचरनमोहिभाये
रूपसकहिंनहिकहिश्रुतिशेषा। सो जानैसपनेहुजिनदेखा।

सुखसंदोहमोहपरज्ञानगिरागोतीत * ॥
दंपतिपरमप्रेमबसकरिशिशुचरितपुनीत

एहिबिधिरामजगतपितुमाता। कोशिलपुरबासिनसुखदाता।
जिनरघुनाथचरणरतिमानी। तिनकीयहगतिप्रगटभवानी।
रघुपतिबिमुखयतनकरकोरी। कवनसकैभवबंधनछोरी॥
जीवचराचरबसकरराखे। सोमायाप्रभुसोभयमाखे॥
भृकुटिबिलासनचावैताही। असप्रभुछाड़िभजियकहुकाहीं
मनक्रमबचनछाड़िचतुराई। भजतकृपाकरिहैंरघुराई॥
एहिबिधिशिशुबिनोदप्रभुकीन्हा। सकलनगरबासिनसुखदीन्हा।
लैउछंगकबहुकहलरावै * ॥ कबहुपालनघालिझुलावै॥

दो· प्रेममगनकौशिल्यानिशिदिनजातनजान।
सुतसनेहबसमाता। बालचरितकरगान * ॥

एकबारजननीअन्हवाये ॥ करिसिंगारपलनापौढ़ाये।
निजकुलइष्टदेवभगवाना। पूजाहेतुकीन्हअस्नाना॥
करिपूजानैबेधचढ़ावा ॥ आपुगईजहँपाकबनावा ॥
बहुरिमातुतहँआचलिआई। भोजनकरतदेखरघुराई॥
गईजननीशिशुपहँभयभीता। देखाबालतहाँपुनिसोता॥
बहुरिआयदेखासुतसोई। हृदयकंपमनधीरनहोई * ॥
इहाँउहाँदुइबालकदेखा। मतिभ्रममोरिकिअनबिशेषा।

दी·
रा· बा·
१२५

सो

रामदेखजननीअकुलानी प्रभुहँसिदीन्हमधुरमुसकानी

दो· देखिराममातहिंनिजअद्भुतरूपअखंड ॥
रोमरोमप्रतिलागेउकोटिकोटिब्रह्मंड २॥

अगणितरविशशिशिवचतुरानन बहुगिरिसरितसिंधुमहिकानन
कालकर्मगुणज्ञानस्वभाऊ ॥ सोइदेखासोसुनानकाऊ २॥
देखीमायासबविधिगाढी । अतिसभीतजोरेकरठाढी ॥
देखाजीवनचावैजाही २॥ देखिभक्तिजोछोरैताही ॥
तनपुलकितमुखबचननआवा नयनमूंदिचरणह्निसिरुनावा
बिस्मयवंतदेखिमहतारी ॥ भयेबहुरिशिशुरूपखरारी
अस्तुतिकरिनजायभयमाना जगतपितामैंसुतकरिजाना
हरिजननिबहुविधिसमुझाई यहजनिकतहुंकहसिसुनमाई

दो· बारबारकौशल्याबिनयकरैकरजोरि ॥
अबजनिकबहूंब्यापहिप्रभुमोहिमायातोरि

बालचरितहरिबहुविधिकीन्हा अतिआनंदसबहूंकहँदीन्हा ।
कछुककालबीतेसबभाई बड़ेभयेपरिजनसुखदाई ॥
चूड़ाकरणकीन्हगुरुआई ॥ बिप्रनपुनिदछिणाबहुपाई ।
परममनोहरचरितअपारा करतफिरतचारिउसुकुमारा
मनक्रमबचनअगोचरजोई । दशरथअजिरबिचरप्रभुसोई
भोजनकरतबुलावनराजा । नहिंआवहिंतजिबालसमाजा
कौशल्याजबबोलनजाई ॥ ठुमुकिठुमुकिप्रभुचलहिंपराई
निगमनेतिशिवअंतनपावा । ताहिधरैजननीहठिधावा २॥

धूसरधूरभरेतनआये*॥ भूपतिबिहँसिगोदबैठाये॥
भोजनकरतचपलचित इतउतअवसरपाइ*॥
भाजचलेकिलकात मुखदधिओदनलपटाइ॥
बालचरितअतिसरलसुहाए। शारदशेषशंभुश्रुतिगाए॥
जिनकरमनइनसननहिंराता। तेजनबंचितकियेबिधाता॥
भयेकुमारजबहिंसबभ्राता। दीन्हजनेऊगुरुपितुमाता॥
गुरुगृहपढनगयेरघुराई। अलपकालबिद्यासबआई।
जाकीसहजस्वासश्रुतिचारी। सोहरिपढियेकौतुकभारी।
बिद्याबिनयनिपुणगुणशीला। खेलहिंखेलसकलनृपलीला।
करतलबाणधनुषअतिसोहा। देखतरूपचराचरमोहा*॥
जिनबीथिनबिहरहिंसबभाई। थकितहोहिंसबलोगलुगाई
दो॰ कोशिलपुरबासीहिनरनारिवृद्धअरुबाल॥
प्राणहुतेप्रियलागतेसबकहँरामकृपाल*॥
बंधुसखासबलेहिंबुलाई। बनमृगयानितखेलनजाई॥
पावनमृगमारहिंजियजानी। दिनप्रतिनृपहिंदिखावहिंआनी
जोमृगरामबाणकेमारे*। तेतनुतजिसुरलोकसिधारे
अनुजसखासंगभोजनकरहीं। मातपिताआज्ञाअनुसरहीं॥
जेहिबिधिसुखीहोहिंपुरलोगा। करहिंकृपानिधिसोइसंयोगा
वेदपुराणसुनहिंमनलाई॥ आपुकहहिंअनुजहिंसमुझाई
प्रातकालउठिकेरघुनाथा। मातुपितागुरुनावहिंमाथा।
आयसुमांगिकरहिंपुरकाजा। देखचरितहरषहिंमनराजा॥

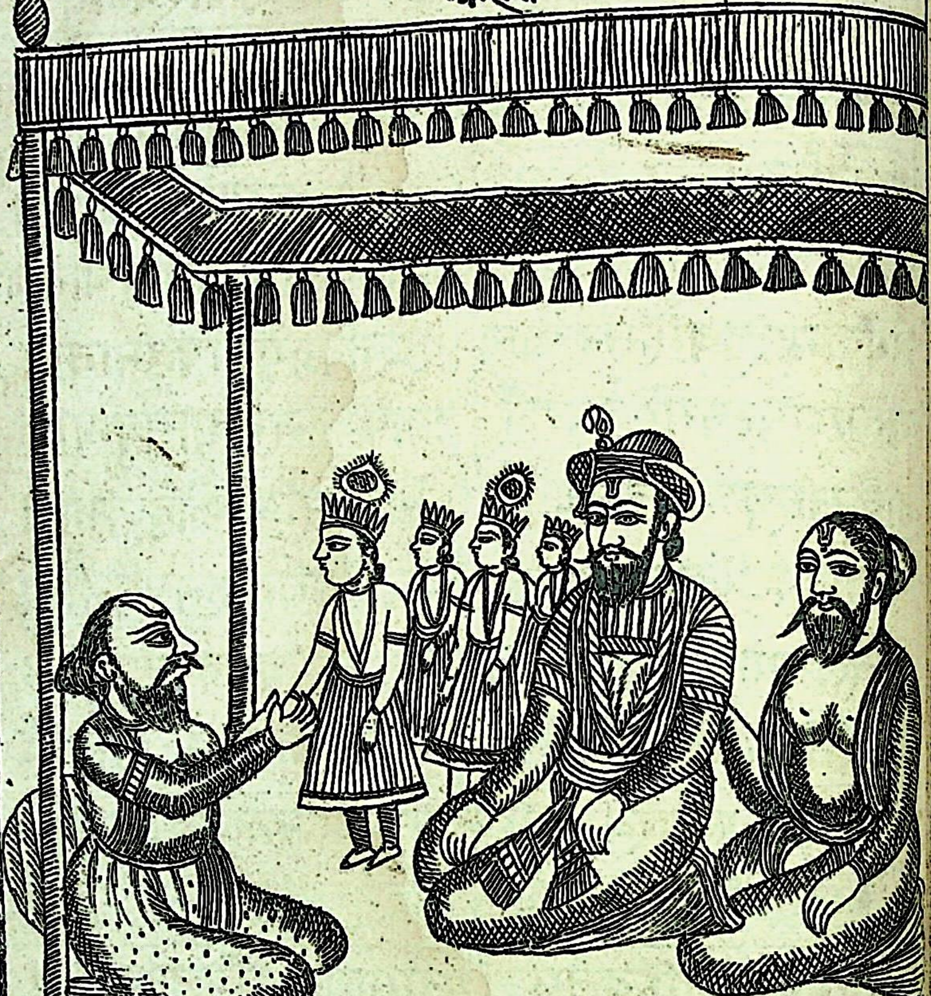

विश्वामित्रऋषिराजादशरथसेरामलक्ष्मणकोयज्ञार्थमांगने आए ॥

टी॰
रा॰ बा॰
१३२

पंक्ति ३ चौ० २८ दो० ३ २ सो० ०॥ यहसबचरित कहाअरुसो भूपतिभक्ति नसुन २०८ लौं० बिश्वामित्रश्री रामजानकहि दुःखीरामलषन निशिचरबधार्थ नहाँराजाप्रथम मेंज्ञाहयस पुनःबासिष्ठ बचनतेंबाध अरुप्रधानतें सौंपदिये॥ २०८॥

ब्यापकअकलअनीहअजनिर्गुणनामनरूप॥
भक्तहेतुनानाबिधिकरतचरित्रअनेक ॥ नूप

यहसबचरितकहामैंगाई आगिलकथासुनहुमनलाई
बिश्वामित्रमहामुनिज्ञानी बसहिंबिपिनशुभआश्रमजानी
जहँतपयज्ञयोगमुनिकरहीं अतिमारीचसुबाहुहिडरहीं
देखतयज्ञनिशाचरधावहिं ४ करहिंउपद्रवमुनिदुखपावहिं
गाधितनयमनचिंताब्यापी हरिबिनमरहिंननिशिचरपापी
तबमुनिबरमनकीन्हबिचारा प्रभुअवतरेउहरणमहिभारा
एहिमिसदेखौंप्रभुपदजाई करिबिनतीआनौंदोऊभाई
ज्ञानबिरागसकलगुणअयना। सोप्रभुमैंदेखौंभरिनयना

बहुबिधिकरतमनोरथजातनलागीबार॥
करमज्जनसरजूहिजलगयेभूपदरबार ॥

मुनिआगमनसुनाजबराजा मिलनगयेउलैबिप्रसमाजा
करिदंडवतमुनीसनमानी। निजआसनबैठारिन्हिआनी
चरणपखारिकीन्हअतिपूजा मोसमधन्यआजुनहिंदूजा
बिबिधभांतिभोजनकरवाया। मुनिबरहृदयहर्षअतिछाया।
पुनिचरणनमेलेसुतचारी रामदेखमुनिबिरतबिसारी
भयेमगनदेखतमुखशोभा। जनुचकोरपूरणशशिलोभा।
तबमनहर्षबचनकहराऊ। मुनिअसकृपाकीन्हनहिंकाऊ
केहिकारणआगमनतुम्हारा कहहुसोकरतनलाउँबारा
असुरसमूहसतावहिमोही मैंयाचनआयोंनृपतोही॥

यो० रा० बा० १३३

पंक्ति १८
४ चौ०
१ छं० दो०
अंतरगत
अहसंगवंतो
बरदाई०
१८ ४ चौ०
विश्वामित्र
कैसांभार
मौंकि समातैं
गाधिजा निष्प
न उद्धार कि
गौ आश्रम में
रहि को बिधा
प्रभु संतोषद
तासुबाहु
हनन मारीचको
दैवा फैंको और
और निकट सब
लक्ष्मण संहार
दो॰
रा॰ बा॰
२३५
कारि मुनि संग
अहिल्या निस्तार
गंगा स्नान
करि मिथिला
पुर में आवत
भा । २१४ ।

अनुजसमेतदेहुरघुनाथा। निसिचरबधमैंहोबसनाथा

दो॰ देहुभूपमनहर्षित तजहुमोहअज्ञान ≈॥
धर्मसुयशनृपतुमहिंकहँ इनकहँअतिकल्यान

सुनिराजाअतिअप्रियबानी हृदयकंपमुखदुतिकुमुलानी
चौथेपनपायेउंसुतचारी। बिप्रबचननहिंकहेउबिचारी
मागहुभूमिधेनुधनकोशा सर्बसदेहुंआजसहरोषा॥
देहप्राणतेंप्रियकछुनाहीं सोउमुनिदेउंनिमषएकमाहीं
सबसुतप्रियमोहिप्राणकीनांई रामदेतनहिंबनैगोसांई ≈॥
कहँनिसिचरअतिघोरकठोरा कहसुंदरसुतपरमकिशोरा।
सुनिनृपगिराप्रेमरससानी हृदयहरषमानामुनिज्ञानी॥
तबवसिष्ठबहुबिधिसमुझावा। नृपसंदेहनाशकहँपावा॥
अतिआदरदोउतनयबोलाए हृदयलाइबहुभांतिसिखाए
मेरेप्राणनाथसुतदोऊ॥≈। तुमसुनिपिताआननहिंकोऊ

दो॰ सौंपेभूपऋषिहिसुतबहुबिधिदेइअसीस
जननीभवनगयेउप्रभुचलेनाइपदसीस ≈॥

सो॰ पुरुषसिंहदोउबीरहर्षचलेमुनिभयहरण।
कृपासिंधुमतिधीरअखिलबिश्वकारणकरण

अरुणनयनउरबाहुबिशाला नीलजलजतनश्यामतमाला
कटिपटपीतकसेबरभाथा रुचिरचापशायकदुहुहाथा
स्यामगौरसुंदरदोउभाई॥ बिश्वामित्रमहानिधिपाई॥
प्रभुब्रह्मण्यदेवमैंजाना॥ मोहिलगिपितातजेभगवाना

चलेजातमुनिदीन्हदिखाई। सुनिताड़िकाक्रोधकरधाई
एकहिंबानप्राणहरलीन्हा। दीनजानितेहिनिजपददीन्हा
तबऋषिनिजनाथहिजियचीन्हा। विद्यानिधिकहँबिद्यादीन्हा
जातेलागनछुधापियासा। अतुलितबलतनतेजप्रकासा

आयुधसकलसमर्पिकै प्रभुनिजआश्रमआनि
कंदमूलफलभोजनहिं दियेभक्तहितजानि।

प्रातकहामुनिसनरघुराई। निर्भययज्ञकरहुतुमजाई
होमकरणलागेमुनिझारी॥ आपुरहेमखकीरखवारी
सुनिमारीचनिशाचरक्रोही। लैसहायधावामुनिद्रोही
बिनुफरबाणरामतेहिमारा। शतयोजनगासागरपारा॥
पावकशरसुबाहुपुनिमारा। अनुजनिशाचरकटकसँहारा
मारिअसुरद्विजनिर्भयकारी। अस्तुतिकरहिंदेवमुनिझारी
तहँपुनिकछुकदिवसरघुराया। रहेकीन्हविप्रनपरदाया॥
भक्तिहेतुबहुकथापुराना। कहेंविप्रयद्यपिप्रभुजाना॥
तबमुनिसादरकहाबुझाई। चरितएकदेखियप्रभुजाई॥
धनुषयज्ञसुनिरघुकुलनाथा। हर्षचलेमुनिबरकेसाथा॥
आश्रमएकदीखमगमाहीं। खगमृगजीवजंतुतहँनाहीं
पूछामुनिहिशिलाप्रभुदेखी। सकलकथाऋषिकहीविशेषी

गौतमनारीश्रापबसउपलदेहधरिधीर॥
चरणकमलरजचाहतीकृपाकरहुरघुबीर

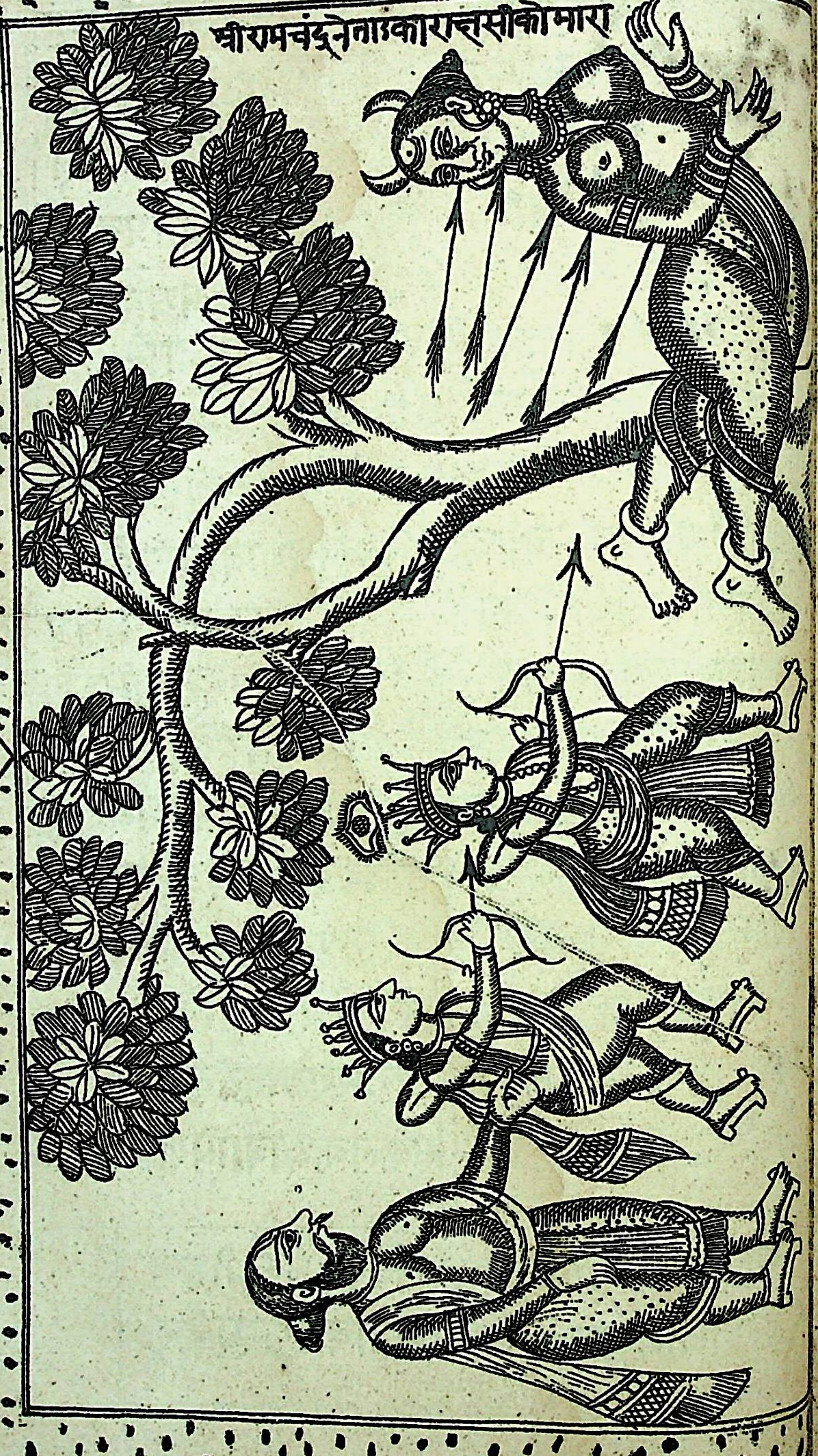

श्रीरामचंद्रनेताड़काराक्षसीकोमारा

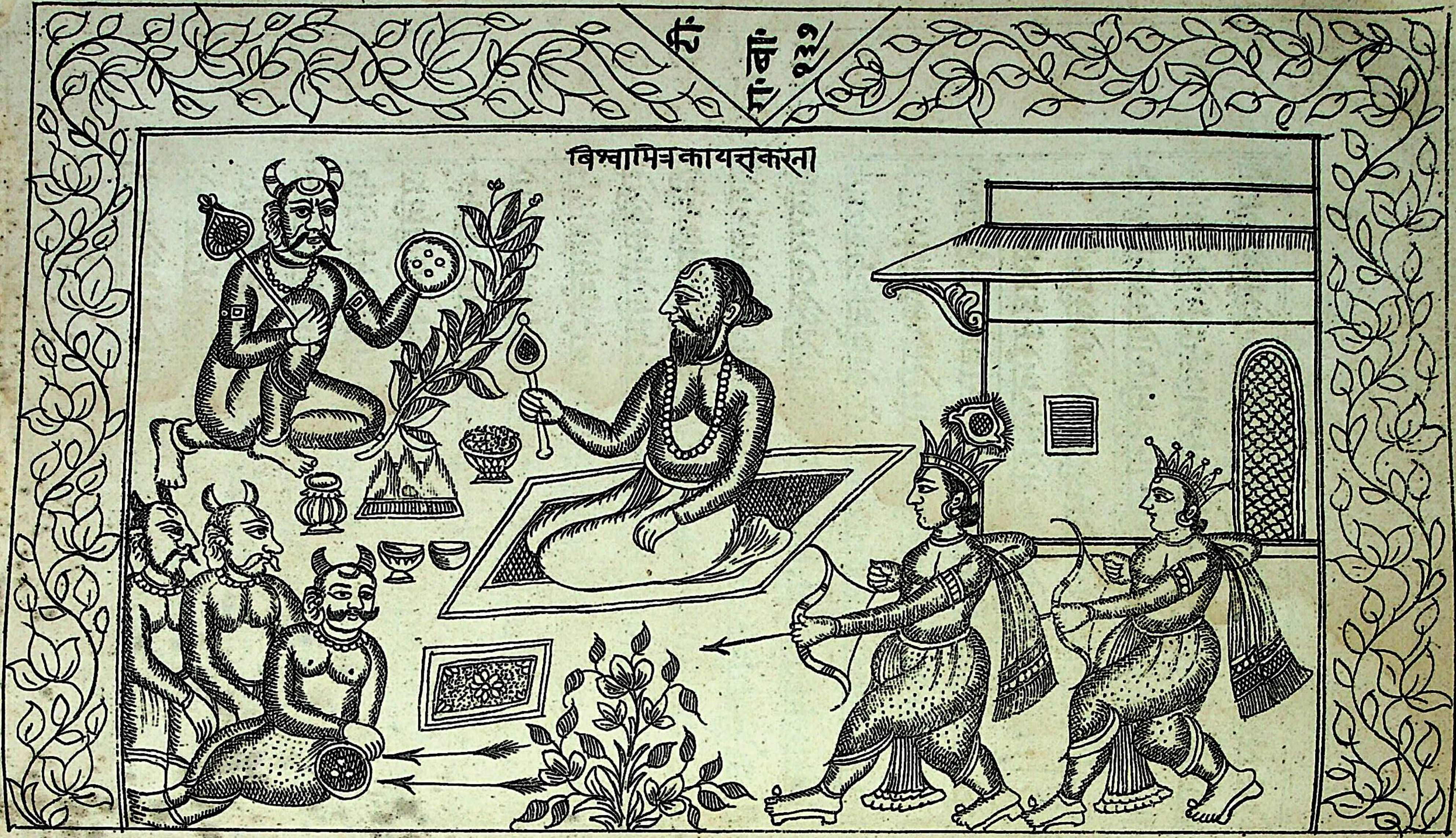

बिश्वामित्रकायज्ञकरना

छं॰ परसतपदपावनशोकनसावनप्रगटभईतपपुंजसही।
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोररही।
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिंआवैबचनकही।
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही।
धीरजमनकीन्हाप्रभुकहँचीन्हारघुपतिकृपाभक्तिपाई।
अतिनिर्मलबाणीअस्तुतिठानीज्ञानगम्यजयरघुराई।
मैंनारिअपावनिप्रभुजगपावनिरावणरिपुजनसुखदाई।
राजिवलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरननआई॥
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंजाना।
देखिउँभरिलोचनहरिभवमोचनयहैलाभशंकरजाना।
बिनतीप्रभुमोरीमैंमतिभोरीनाथनमांगौंबरआना॥
पदकमलपरागारसअनुरागामममनमधुपकरैपाना।
जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईशिवसीसधरी।
सोइपदपंकजजेहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालहरी॥
यहिभांतिसिधारीगौतमनारीबारबारहरिचरणपरी।
जोअतिमनभावासोबरपावागैपतिलोकअनंदभरी॥

असप्रभुदीनबंधुहरिकारणरहितकृपाल
तुलसिदाससठताहिभजछांडिकपटजंजाल

चलेरामलक्ष्मणमुनिसंगा। आयेजहांजगपावनिगंगा॥
अनुजसहितप्रभुकीन्हप्रणामा। बहुप्रकारसुखपायहुरामा।
मुनिसुरसरिउतपतिरघुराई कौसिकसनपूछासिरनाई।

कहहुमुनिप्रभुगनवकुलरकराजा। नामसगरतिहुंलोकबिराजा।
तेहिकेजुगभामिनिसुकुमारी। प्रथमकेशिनीसुमतिपियारी।
सबप्रकारसंपतिसुरभ्राजा। सुतबिहीनमनबिस्मयराजा।
एकसमयभामिनिदोउसाथा। गयेबनतनयहेतुरघुनाथा।
सघनसुफलतरुसुंदरनाना। तहांभृगुमुनितपतेजनिधाना।

सहितनारिनृपमुदितमनरहेबरषशतएक।
कीन्हेतपबलदेषिभृगुमस्तकजिकीन्हअनेक।

कहिनिजदुखप्रनामनृपकीन्हा। देअसीससत्वमुनिबरदीन्हा।
नृपरानीसनमुनिअसभाषा। देहुसबरजोजेहिअभिलाष।
सुनिमुनिबचनसीसतिननाव। देहुनाथजोआनिमनभाव।
एकहिकहेउएकसुतहोना। दुसरिसाठसहसगुनलोना।
हरषितभयोसुभगबरपाई। पानिजोरिचरननसिरनाई॥
सहितभामिनीअवधहिआए। हरषसहितकछुदिवसगवाए।
जानिसुघरीसुंदरसुखदाई। नामकेसिअसमंजसजाई।
सुमतिप्रसवएकतुंबरिसोई। भयसुतप्रगटकहेमुनिजोई
निरखेसुतहरषितसबहोई। मंगलचारकियेसबकोई॥
हरषसहितदियेदाननरेसू। पूजिबिप्रगुरुगौरिगनेसू॥
घरघरसुंदरबिबिधमंगाए। तिसबसुतनृपतिनिमहनाए।

दो॰ यहिबिधिभएउसकलसुतपूजेसबमनकाम।
जाइदिवसनिसिहरषबसतुनहुरामघनस्याम।

पुरिजनसबघरघरानिनरेसू। आनिअनंदतनमियअंदेसू॥

दी॰
रा॰ बा॰
१३९

बालकेलिकरभयेकुमारा। लीलाकरैंअगमसंसारा॥
होइसोनाजसकलमनचीते। एहिसुखबसतबहुतदिनबी
सरजूनदीअवधिजोअहई। बिमलसलिलउत्तरतटबहई
प्रजालोककेबालकनाना। नितउठितहांकरैंअसनाना
असमंजसतहँतरनीआनी। तिनहिंबढ़ाइबोरिनिजपानी
भयेप्रजासबपरमदुखारी। बालकबधसुनिसुनदुखसारी
सकलगयेजहँबैठिनृपाला। बोलेबचननायपदभाला॥
तुमनृपचहोहिप्रजाप्रतिपाला। सुनतुम्हारभयासबकरकाल
तजनदेशासबसुनहुनरेसू। बिनातजेनहिंमिटैकलेसू॥

दो॰ तबसुतकीन्हेउपापबहु मारेबालकवृंद॥
तुमकहँप्राणसमानयह सकलप्रजनकहमंद

प्रजागिरासुनिधीरजहीना। सुतहिदेशतेबाहरकीना
तासुतनयजगबिदितप्रभाऊ। गुननिधिअंसुमानतिहिनाऊ
बसनहृदयनृपकेसोकैसे। मुनिमनमीनसलिलरहैजैसे
गयेप्रजासबनिजनिजधामा। भयबिलोकमनगुणबिश्रामा
बहुरिनृपतिमनकीऊबिचारा। आइभयेउपनचौथहमारा
हितमंत्रीगुरुसुतहुबुलाये। हिमगिरिबिंध्यमध्यनवआ॥
रुचिरबेदिकाएकबनाई। देखनबनइबरनिनहिंजाई
मखआरंभछाडेउतबतुरगा। बेगवंतजानिमिदेखियउरगा

सुरपतिसुनभयदारुणहि मनमहँकियअनुमान
आनतुरंगनबलीहेउ मर्मनकोऊजान ४४॥

राखेउआनिकपिलमुनिपाहीं कोउनजानकाहुहिगमनाहीं
जुगवतरहेजेसुभटसयाने। लेतुरंगरहेकिनहुनजाने॥
तिनसबआनकहीनृपपाहीं महाराजहमकहतडराहीं॥
लीनतुरंगकोइजाननकोऊ कहाकरियसोआयसुहोऊ
सुनतबचननृपबिस्मैपाये। सकलसुतनकहँतुरतबुलाये
जाहुतुरंगतुमहेरहुजाई * ॥ सकलचलेचरननसिरुनाई॥
सुरपतिसमदेखियसबबीरा सकलधनुर्द्धरअतिरनधीरा
तिनहिंचलतधरनीअकुलाई बलिपसुजीवभयेसबआई
सुमनबाटिकाउपबनबागा। सरितकूपवापिकातड़ागा।
नगरगांवमुनीशथलनाना। गिरिकंदरकाननअस्थाना।

इहिबिधिखोजहुतुरगतिनआयेभूपतिपाहि॥
चरननमांथहिनाइकहिखोजअस्वकरिनाहि।

दो·
रा· बा·
२५२

खोदहुमहिसुतकरहिपठाये चलेसकलपूरबदिशिआये
तिनकेकरजिमिकुलिशसमाना। जोजनभरिखोदहिंबलवाना।
देखिअतुलबलदेवउराने * भरहुनाहबिरंचसनमाने।
सोधतमहीपतालसबधाये दिग्गजदेखिएकासिरनाये
तिनपूछासबकथासुनाये बहुरिसकलदक्षिणदिशिआए
इहिबिधिपुनिदूसरगजदेखा। अतिउतंगगनबिमलबिशेषा।
ताहूबहुप्रनामातिनकीने॥ चलेसुतनपश्चिमचितदीने
तीसरदेखिप्रदक्षिणाकीनी पुनिउत्तरदिशिसोधहिलीनी
दिग्गजस्वेतनिरखसुखपाये सकलकपिलमुनिपाहिपुनिआये

खोजतमहीपारनहिंपावा। सोभाचहुंदिसिजलधिसुहाव

देखिनआपतुरंगतब बांधामुनिबरपास२॥
बोलेबचनसकोपकरिभयाचहतसबकरनास

खोरामहिहमचारिउकोधा रेरेदुष्टबहुतनोहिसोधा॥
कोउकाहिचोरहीरलबहुकोई रहिसमछलीअवरनहींकोई
परधनलैपनालमुनिआयो तसकरमुनिबरभेषबनायो
कोउकहैयहमुनिबरनाहीं समुझिदेखिलहराणमनमाहीं
कोऊकहबकातपकीह्नअपारा अहोदुष्टलैतुरगहमारा॥
सुनतबचनमुनिचितवाजबहीं भयेभस्मसबछिनमेंतबहीं
उमाबचनजिहसमुजनबोला। सुधाहोइबिषतिक्तभओला
पावकजानिधरहिंकरप्रानी जरहिंकाहिनहिंअतिअभिमानी
जानगरलजेसंग्रहकरहीं। सुनहुरामतेकाहेनमरहीं।
क्रोधकरैंबिनकियेबिचारा भयेसकलतेहिंगलछारा।
इहांनृपतिअसुमानकुलारा नहिंआयेसबतिनहिंपठाये

दो॰दीनीनपतिअसीसतबआनिहिनबारहिबार
बेगिफिरोलेतुरगसुत मेरेप्राणअधार२॥

चलेनायपदसीसकुमारा। बिश्वभक्तहितकुलउजियार
जहँजहँनिरखिमुनिनकेधामा पूछिखबरकरिदंडप्रणामा॥
पन्नगनागसुनपाइअसीसा चहुंदिग्गजकहुंनावनसीसा
रहिबिधिसोधनमगमहुजाता मिलेगरुड़सुमनीकरभ्राता
चरनपरनतबआशिषदयेऊ नरेसकलजेहिबिधिसोकहे

सुनतबचनसोचभयोभारी [illegible]येखगेशदिषायलबारी
अंसमानतहँमज्जनकीन्हा क्रमक्रमसबहिंतिलांजलि दीन्हा।
बहुरिगरुड़बोलेसुनुज्ञाना मैंतोहिकहौंकारिहिएकबाना।

सो· करहुजतनसोइउपाय गंगाआवहिंअवनिमहँ
दरसनतेअघजाय मज्जनकीनेपरमसुख॥

अठिसहस्रतरिहैंगोनिधि गंगापायपरमपावननिधि
सुनअसबचनहृदयमनभाये सहितगरुड़मुनिबरपहिंआये
तबखगेशमुनिचरननआयेउ पूरबकथासकलसुनगाएऊ
आयसुदेहुतुरगमुनिदीन्हा। हरषिहृदयनिजअश्वहिंचीन्हा
नगरसमीपगरुड़पहुंचाई। गयेभवननिजतबरघुराई
रहांतुरगलैनृपशिरनाई। सटसहस्रमुनिकथासुनाई
बिस्मयहरषविवसनृपभएऊ कीनाजचदानबहुदयेऊ२॥
बहुबिधिनृपतिराजसुनिकीना प्रजालोककहँअतिसुषदीना

दो· रा· बा· २४३

अंसुमानहिंनराजदै निजमनहरिपदलाग।
गयेउसगरतपकाजबन हृदयअधिकअनुराग॥

नासुतनामदिलीपनृपभयेऊ मनतपहेतुअनसरिशिगएऊ
उहांअगमतपकीन्हनपाला। भाकालबसगएकछुकाला।
कहुकवनदिलीपप्रभुताई सेवैंसकलनृपजिजेहिआई।
जुगवनजेहिंनितसुरपतिरहीं महिमानासुकविकोहविधिकहीं
भागीरथअससुतभयोजासू पितुसमनीकअधिककरनासू
तिनहिंबोलनृपदीनेउराजू॥ आपचलेउठिनपकेकाजू॥

मनमहुँकरतपंथअनुमाना ॥ सुरसरिआवनजउनत्रआना
निजमनुतनुदोनेउतिमिरेऊ। फिरिनिजुनगरकनामनले

एहिबिधिकरतबिचारनृपकीन्हेतबअवलतप
बीतेकछुएककालदेहतजीकोउअगटनाहिं।

जेहिसुरसरिलगितजेतनभूपा सोनाजिमूढपियहजलकूपा
रहाँभगीरथअसमनभयेऊ पितुनआवबहुदिनचलगये
काकुस्थनामतनयएकरहेऊ दीनाराजनीतिबहुकरेऊ॥
कहितवपूर्बकथासुतपाहीं दीनअसीसचलेनरनाहीं॥
निकसतनगरसगुनभलपाये आनिहिंनिवड़बनजहँनृपआ
देखभगीरथबनसुखपावा। सुरसरिहितनतपकहँमनला
एकचरनदोउभुजाउठाये॥ रविसन्मुखचितवहिंमनलाये
बरषसहसबीतेइहिभांती। जाततनजानेदिनअरुराती॥
देखिउग्रतपअजचलिआये बोलेबचननृपाहिंमनभाये
चरहिनृपातेजोलेनरहाना। बोलेनृपकरअजाहिप्रनामा।
जोमांगेसोजाननअरुहहू। मोसनमांगनप्रभुकिमिकहह

तदपिकहैंप्रभुदेहुबरसबसंतनकहवृद्धि ॥
असरमांगोजोरिकरगंगाआवहिनिद्धि ॥

एवमस्तुकहिपुनबिधिभवहीं सुरसरिदेहुँराखिकोसकहीं
छूटजाहिपुनितुरतरसातल। फिरहिंनृपतिबहुदिसनभू
तिहितेंकहौएकतेहिपाहीं अनिख्यालशंकरमनमाहीं
सोईशंकरषिरिवसरेआजू। उनहिजपेनबहोयहेकाजू।

असकहिबिधिअंतरहितभए बहुरिभगीरथशिवपहँगये उ
बिबुधबरषअंगुष्ठधारा। बारबारशिवनामउचारा।
शिवदयालप्रगटेतबआई हाथजोरनृपबिनयसुनाई
मैंराखबसुरसरिकहँईशा। बहुरिरमापतिध्यानकरीशा।

उहाँदेवसरिशिवबचनसुनमनकीन्हबिचार
जाउँरसानलशिवसहितजातनलावौबार ॥

अंतरजामीशिवलहिउपाई। निजसिरजटासोअगमबनाई
रहींभगीरथअस्तुतिकीन्ही सुनिमृदुगिरछाडबिधिदीन्ही
छूटेसोरभयेउजगभारी ॥ चकितदेवअहिदिगजचारी
सुरसरिपुनिहरजटासमानी। बर्षएकतहाँरहीभवानी॥
कौतुकदेखसकलसुरलषे कहजयजयतिसुमनबहुबरषे
बहुरिभगीरथसुमरनकीना। डारिजटाशिवबुंदकहीना
तीहितेभईतीनपुनिधारी। एकगईनभएकपतारी॥
गईनभसोईकिअघनासिनी देवनधरानाममंदाकिनी॥

टी· रा· बा· १४५

दो· दूसरगईपतालमें नामप्रभावतिहरनदुख
तीसरिभईगंगासोइ सबसंतनकूकरनसुख
सलिलप्रवाहनिरखनृपतिउरअतिभयेउआनंद
जैसेउमगतसिंधुतबपूर्णकलालषचंद ॥

आयभगीरथपुनिसिरनाये बोलेसुरसरिबचनसुहाये
बेगचलहुनरपरथलेआनू ॥ तुरततुरंगसुभगनिजिमिभानू
तिहिरथचढ़िआवलममआगे चलिहौंमैंतवपाछेलागे।

सुनिनृपदिव्यतुरगरथआना। चलेउहृदयसुमरतभगवाना
चलीअग्रकरिनृपहिसुरसरी देवहिंमुदितसुमनझरकरी
चलततेजकछुबरनिनजाई टूटहिंगिरितरुशैलसुहाई॥
करैंकुलाहलबिधिबहुभांती कमठनक्रगयव्यालसोमाती
मज्जनकरहिंदेवतहँआई॥ सुनगानिसिद्धरहेसबछाई

सो॰ तरपनकरमनलाय हर्षहृदयनहिंजातकहि
दर्शनतेअघजाय तरैसकलमुनिजनकहैं २॥
मज्जनकरहरखायसुरअजादिसनकादिरिषि॥
पानकरतअघजायअसमतसबकोऊकहहिं॥

करजोमज्जनजपमनलाई। तिहकीमहिमाकहिनसिराई॥
मदनजानसोहैंनृपकैसे॥ तेजवंतरविदेखियजैसे २॥
लांघितशैलसुहावनदेशा पाछेसुरसरिआगेनरेशा २॥
हरिद्वारसमीपतबआये तीर्थदेखसुरसरिमनलाये।
तीर्थनिरखमनभयासुखभारी आइप्रयागपहुंचिअघहारी
तहांमज्जनकीन्हेदुखजाई। बहुरिदेवसरिकाशीआई॥
सोशिवपुरीसहजसुखदाई बरनिनजाइमनोहरताई॥
अवसैतीर्थविविधिविधजानी गईतहांकिमिकहौंबखानी॥
मगलोगनकरुकारनसनाथा जाइचलीशहिबिधिरघुनाथा

मिलीजाइमुनिउदधिमहँ उदधिहृदयसुखमान।
लगेकहनभागीरथादि तुमसमधन्यनआन २॥

कौनोअसकरहीनहिंकोई। तपमहिमाबलकसनाहिंहोई

सगरसुतनयतरेजनकाला। हर्षेवंशतबभयोनृपाला।
अबलौरहैरघुकुलमहिकोऊ तिनकेसंगतरेअबसोऊ॥
तुमसमाननृपअवरनभयेऊ जगबिख्यातअचलजसलयेऊ
सकलसुरन्हतहांसंगबिधाता नृपसनआयकहीसबबाता
धन्यभगीरथजसजगजयऊ। तुमसमाननृपऔरनभयऊ।
अपनीसत्यप्रतिज्ञाकियेऊ संमतबेदबचनसुखदयेऊ।
गंगासागरसबकोउकहहीं अघउलूकदेखतरविडरहीं।
भागीरथीनामऔरकहहीं सुनसुरसिद्धनागजसलहहीं
असबिधिकहनिजलोकसिधाये जहांभगीरथअतिसुखपाये।

छं॰ पायोअमितसुखबहुरिपूजासुरसरिहिमनलाइकै
तबहीरुआशिषसुरितगंगानृपभवनसुखपाइकै।
इहिभांतिसुनगंगाकथातबरामरुचिचरननये।
कहदासतुलसीरामलषनहिमहामुनिआशिषदये

दो॰ कौशिकआशिषअमियसमपापहरषरघुराज।
प्रभुसंशयसबइमगईलवानिरषिजिमिबाज॥
आशिषसुधासमानसुनिहरषेश्रीरघुनाथ॥
प्रभुसुषपाइकरेउपुनिबेगचलियमुनिनाथ५॥

चौ॰ रामनामतेसंशयजाई॥ देहधरेकेयहफलपाई॥
गाधिसुवनसबकथासुनाई जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई
तबप्रभुऋषिनसमेतनहाये बिबिधदानमहिदेवनपाये।
हर्षिचलेमुनिवृंदसहाया। बेगिबिदेहनगरनियराया॥

टी॰
रा॰बा॰
१४८

पुररम्यतारामजबदेखी। हर्षेअनुजसमेतबिशेषी
वापीकूपसरितसरनाना। सलिलसुधासममणिसोप
गुंजतमंजुमत्तरसभृंगा॥ कूजतकलबहुबरणबिहं
बरणबरणबिकसेजलजाता। त्रिबिधसमीरसदासुखदात

दो॰सुमनबाटिकाबागबनबिपुलबिहंगनिवास
फूलतफलतसपल्लवितसोहतपुरचहुँपास२॥

बनैनबरनतनगरनिकाई। जहाँजायमनतहँलुभाई
चारुबजारबिचित्रअँबारी। मणिमयबिधिजनुस्वकरसं
धनिकबणिकबरधनदसमाना। बैठेसकलबस्तुलैनाना॥
चौहटसुंदरगलीसुहाई॥ संततरहहिंसुगंधसिचाई
मंगलमयमंदिरसबकेरे। चित्रितजनुरतिनाथचिते
पुरनरनारिसुभगशुचिसंता। धर्मशीलज्ञानीगुणवंता॥
अतिअनूपजहँजनकनिवासू। बिथकहिंबिबुधबिलोकबि
होतचकितचितकोटबिलोकी। सकलभुवनशोभाजनुरो

दो॰धवलधाममणिपुरटपटसुघटितनानाभाँति
सियनिवाससुंदरसदनशोभाकिमिकहिजाति

शुभद्वारसबकुलिशकपाटा। भूपभीरनटमागधभाटा॥
बनीबिशालबाजिगजशाला। हयरथगयसंकुलसबका
शूरसचिवसेनपबहुतेरे। नृपगृहसरिससदनसबके
पुरबाहिरसरसरितसमीपा। उतरेजहँतहँबिपुलमहीपा॥
देखिअनूपएकअँबराई॥ सबसुपाससबभाँतिसुहा

घं कि ७ श्री ८८ २ दो ०॥ कीन्हप्रनाम ग्रन्थसमय प्रेम २२५ श्रीं मिथिलेश श्री जनकी भरम बाद रामलल्ल राजको देखि प्रसन परिपूरण प्रेमतें जनकजू लेगा ह्वैके संग सुखालय श्री प्रमद्यो ग्रन्थ लषनकी श्री लाषाजानियारा चंद्रमुनि श्रीपाल लेषकै देषर मचषाला हि देखनो फुलवारि नंकौ बन वर्ण श्रामाहबनाय श्री

कौशिक कहेउ मोर मन माना। इहाँ रहिय रघुबीर सुजाना।
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता॥
बिश्वामित्र महामुनि आये। समाचार मिथिलापति पाये

दो· संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुरु ज्ञाति
चले मिलन मुनिनायकहिं मुदित राउ एहिं भांति

कीन्ह प्रणाम चरण धरि माथा। दीन्ह असीस मुदित मुनिनाथा।
बिप्रबृंद सब सादर बंदे॥ जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे
कुशल प्रश्न कहि बारहिं बारा। बिश्वामित्र नृपहि बैठारा॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई गये रहे देखन फुलवाई॥
स्याम गौर मृदु बयस किशोरा। लोचन बिशद बिश्व चित चोरा
उठे सकल जब रघुपति आये बिश्वामित्र निकट बैठाये
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता।
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेह बिदेह बिशेषी।

दो· प्रेम मगन मनु जानि नृप करि बिबेक धरि धीर
बोलेउ मुनि पद नाय शिर गद्गद गिरा गंभीर॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक।
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय भेष धरि की सोई आवा।
सहज बिराग रूप मन मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा।
ताते प्रभु पूछौं सतभाऊ॥ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा।
कह मुनि बिहँसि कहेहु नृप नीका। बचन तुम्हार न होय अलीका।

कौंशामिकै बभा बाकिक हौश्रु ... प्रेमकै परब्रह्म कै ... ॥ १२५

येप्रियसबहिंजहांलगिप्रानी मनमुसकाहिरामसुनबानी॥
रघुकुलमणिदशरथकेजाये ममहितलागिनरेशपठाये॥

रामलषनदोउबंधुबर रूपशीलबलधाम ॥
मखराखेउसबसाखिजगजीतेअसुरसंग्राम

मुनितबचरणदेखिकहराऊ कहिनसकौंनिजपुण्यप्रभाऊ
सुंदरश्यामगौरदोउभ्राता आनंदहूकेआनंददाता ×॥
इनकीप्रीतिपरस्परपावनि। क[illegible]नजायमनभावसुहावनि
सुनहुनाथकहमुदितबिदेहू ब्रह्मजीवइवसहजसनेहू॥
पुनिपुनिप्रभुहिचितयनरनाहू पुलकगातउरअधिकउछाहू।
मुनिहिप्रशंसिनाइपदसीसा चलेलिवायनगरअवनीसा॥
सुंदरसदनसुखदसबकाला तहांबासलेदीन्हभुआला॥
करिपूजासबबिधिसेवकाई गयेउराउगृहबिदाकराई॥

ऋषयसंगरघुबंशमणि करिभोजनबिश्राम ॥
बैठेप्रभुभ्रातासहित दिवसरहाभरयाम ×॥

लषनहृदयलालसाबिशेषी जाइजनकपुरआइयदेखी॥
प्रभुभयबहुरिमुनिहिसकुचाहीं प्रगटनकहहिंमनहिंमुसकाहीं
रामअनुजमनकीगतिजानी। भक्तबछलताहियहुलसानी॥
परमबिनीतसकुचिमुसकाई बोलेगुरुअनुशासनपाई ×॥
नाथलषनपुरदेषनचहहीं॥ प्रभुसकोचबरप्रगटनकहहीं।
जौराउरआयसुमैंपाऊं ×॥ नगरदिषायतुरतलेआयऊं॥
सुनिमुनीशकहबचनसप्रीती। कसनरामराखहुतुमनीती॥

धर्मसेतुपालकतुमताता॥ प्रेमबिवससेवकसुखदाता

दो जाइदेखिआवहुनगर सुखनिधानदोउभाइ
करहुसुफलसबकेनयनसुंदरबदनदिखाइ॥

मुनिपदकमलबंदिदोउभ्राता। चलेलोकलोचनसुखदाता
बालकबृंददेखिअतिशोभा। लगेसंगलोचनमनलोभा॥
पीतबसनपरिकरकटिभाथा। चारुचापशरसोहतहाथा
तनुअनुहरतसुचंदनखोरी। श्यामलगौरमनोहरजोरी
केहरिकंधरबाहुबिशाला। उरअतिरुचिरनागमणिमाला
सुभगश्रवणसरसीरुहलोचन। बदनमयंकतापत्रयमोचन॥
कानन्हकनकफूलछबिदेहीं। चितवतचितहिंचोरजनुलेहीं
चितवनचारुभृकुटिबरबांकी। तिलकरेखशोभाजनुचांकी

रुचिरचौतनीसुभगशिरमेचककुंचितकेश
नखसिखसुंदरबंधुदोउशोभासकलसुदेश

देखननगरभूपसुतआये। समाचारपुरबासिनपाये॥
धायेधामकामसबत्यागे॥ मनहुंरंकनिधिलूटनलागे॥
निरखसहजसुंदरदोउभाई। होंहिंसुखीलोचनफलपाई
जुवतीभवनझरोखनलागी। निरखहिंरामरूपअनुरागी
कहहिंपरस्परबचनसप्रीती। सखिइनकोटिकामछबिजीती
सुरनरअसुरनागमुनिमाहीं। शोभाअसकहुंसुनियतनाहीं
बिष्नुचारिभुजबिधिमुषचारी। बिकटभेषमुषपंचपुरारी॥
अपरदेवअसकोउजगमाहीं। इहछबिसखिपटतरियेजाहीं

बयकिशोरसुखमासदनस्यामगौरसुखधाम
अंगअंगपरवारियैकोटिकोटिशतकाम+ ॥

कहहुसखीअसकोतनुधारी जोनमोहयहरूपनिहारी
कोउसप्रेमबोलीमृदुबानी जोमैंसुनासोसुनहुसयानी
येदोउनृपदशरथकेढोटा। बालमरालिनकेकलजोटा
मुनिकौशिकमखकेरखवारे जिनरणअजयनिशाचरमारे
श्यामगातकलकंजबिलोचन जोमारीचसुभुजमदमोचन
कौशल्यासुतसोसुखखानी रामनामधनुशायकपानी॥
गौरकिशोरभेषबरपाछे। करशरचापरामकेपाछे॥
लक्ष्मणनामरामलघुभ्राता सुनुसखितासुसुमित्रामाता

दो·बिप्रकाजकरिबंधुदोउमगमुनिबधूउधारि॥
आयेदेखनचापमखसुनिहरषीसबनारि+ ॥

देखिरामछबिकोउइककहई योग्यजानकीयहबरअहई
जौसखिइन्हहिंदेखनरनाहू॥ आपपरिहरिहठकरैबिवाहू
कोउकहइन्हभूपतिपहचाने मुनिसमेतसादरसनमाने
सखिपरंतुप्रणराउनतजई। बिधिबसहठअबिबेकहिंभ
कोउकहजोभलअहैबिधाता सबकहसुनियउचितफ
तौजानकिहिमिलिहिबरएहू नाहिनआलीयहसंदेहू॥
जौबिधिबसयहबनैसंयोगू तौकृतकृत्यहोइसबलोगू॥
सखिहमरेआरतिअतितातें। कबहुंकयेआवहिंइहनातें॥

दो·नाहिनहमकहँसुनहुसखिइन्ह करदरशनदूर

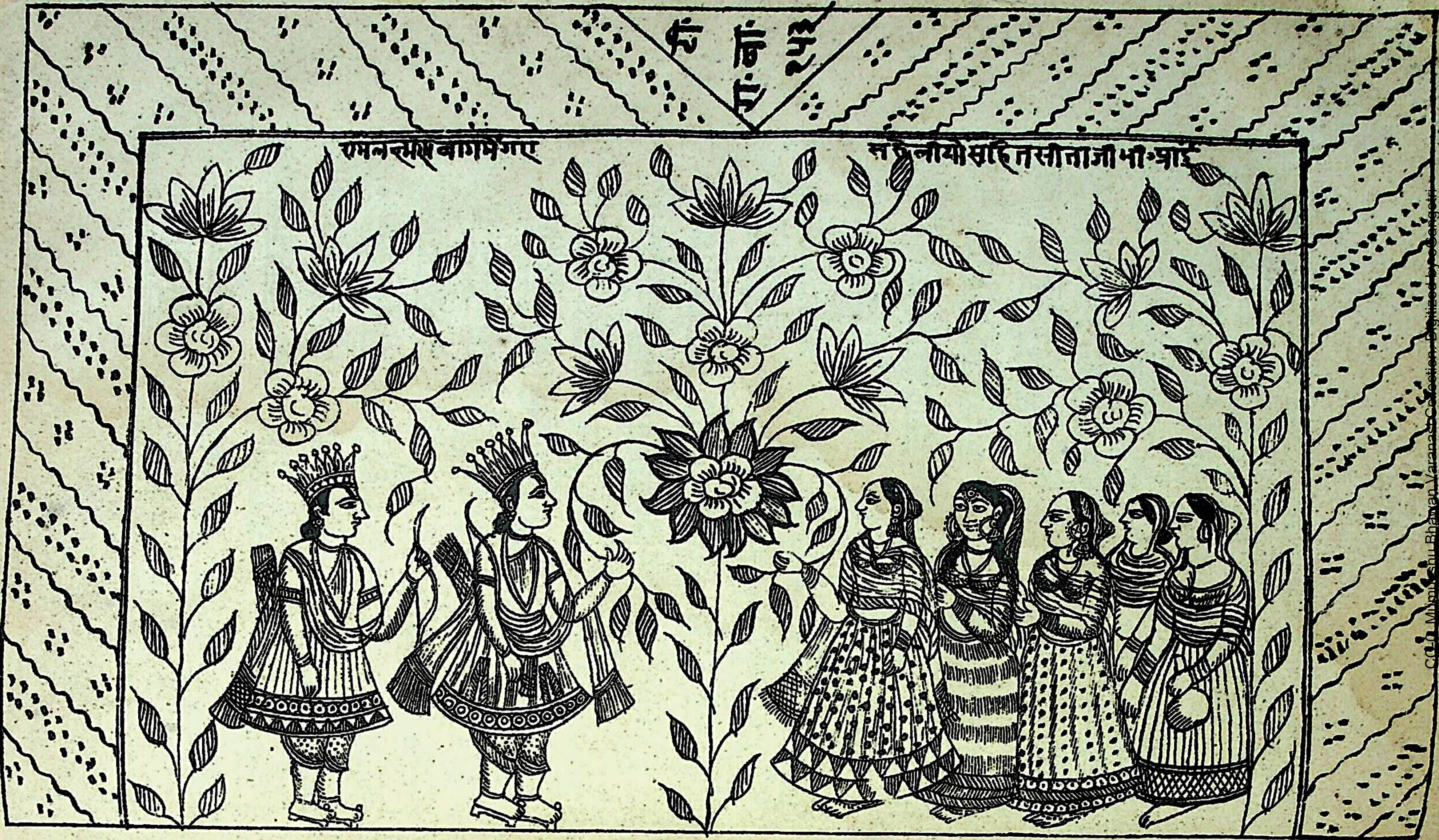
टी
रा॰बा॰
१५२
रामलक्ष्मणबागमेंगए
सखिनीयोसहितसीताजीभीआई

यहसंघटुजबहोइनबड़पुन्यहुंसुलभनभूरि ॥

बोलीअपरकहेउसखिनीका। यहबिवाहअतिहितसबहीका॥
कोउकहशंकरचापकठोरा। येस्यामलमृदुगातकिसोरा॥
सबअसमंजसअहैसयानी। यहसुनिअपरकहैमृदुबानी॥
सखिइनकहँकोउकोउअसकहहीं। बड़प्रभावदेखतलघुअहहीं॥
परसिजासुपदपंकजधूरी। तरीअहिल्याकृतअघभूरी॥
सोकिरहैंबिनुशिवधनुतोरे। यहप्रतीतिपरिहरियनभोरे॥
जेहिबिरंचिरचिसियेसवाँरी। तेस्यामलबररचेउबिचारी॥
तासुबचनसुनिसबहरषानी। ऐसहिहोउकहहिंमृदुबानी॥

हियहरषहिंबरषहिंसुमनसुमुखिसुलोचनिबृंद।
जाहिंजहाँजहँबंधुदोउतहँतहँपरमानंद २२६ ॥

पुरपूरबदिशिगेदोउभाई। जहँधनुमखहितभूमिबनाई॥
अतिबिस्तारचारुगचढारी। बिमलबेदिकारुचिरसवाँरी॥
चहुँदिशिकंचनमंचबिसाला। रचेजहाँबैठहिंमहिपाला॥
तेहिपाछेसमीपचहुंपासा। अपरमंचमंडलीबिलासा॥
कछुकऊँचसबभाँतिसुहाई। बैठहिंनगरलोगजहँजाई॥
तिनकेनिकटबिशालसुहाये। धवलधामबहुबरणबनाये॥
जहँबैठीदेखहिंपुरनारी॥ यथायोग्यनिजकुलअनुहारी॥
पुरबालककहिकहिमृदुबचना। सादरप्रभुहिंदिखावहिंरचना॥

सबशिशुयहिमिसप्रेमबसुपरसिमनोहरगात।
तनपुलकहिंअतिहर्षहियदेखदेखदोउभ्रात ॥

पंक्ति ११ १६ श्रौं० १८ छं० स्रौं० २ ह्रौं० ॥ निसिप्रवेश स नि अरुणतानंद पर्वणि १२६ श्री प्रश्नोबालतापात जानिवषनपुत श्रीरघुनाथमुनि परनंदफलके

शिशुसबरामप्रेमबसजाने प्रीतिसमेतनिकेतबखाने
निजनिजरुचिसबलेहिंबुलाई सहितसनेहजाहिंदोउभाई
रामदेखावहिंअनुजहिंरचना। कहिमृदुमधुरमनोहरबचना
लवनिमेषमहँभुवननिकाया। रचैजासुअनुशासनमाया
भक्तहेतुसोईदीनदयाला॥ चितवतचकितधनुषमखसाली
कौतुकदेखिचलेगुरुपाहीं जानिबिलंबत्रासमनमाहीं
जासुत्रासडरकहुडरहोई॥ भजनप्रभावदेखावतसोई
कहिबातेंमृदुमधुरसोहाई कियेबिदाबालकबरिआई

सभयसप्रेमबिनीतअतिसकुचसहितदोउभाइ
गुरुपदपंकजनाइशिरबैठेआयसुपाइ॥[illegible]॥

निशिप्रवेशमुनिआयसुदीन्हा सबहींसंध्याबंदनकीन्हा॥
कहतकथाइतिहासपुरानी रुचिरजनीयुगयामसिरानी
मुनिबरशायनकीन्हतबजाई लगेचरणचापनदोउभाई
जिनकेचरणसरोरुहलागी करतबिबिधजपयोगबिरागी
तेदोउबंधुप्रेमजनुजीते॥ गुरुपदकमलपलोटतप्रीते
बारबारमुनिआज्ञादीनी॥ रघुबरजाइशयनतबकीनी
चापतचरणलखनउरलाये। सभयसप्रेमपरमसुखपाये
पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता प्रौढधरिउरपदजलजाता॥

उठेलखननिशिबिगतसुनिअरुणशिखाधुनिकान
गुरुतेपहिलेजगतपतिजागेरामसुजान २२॥

सकलसौचकरजायनहाये नित्यनिबाहिगुरुहिसिरनाये

गयफतानाम गीतावंद हनुमानकीमी श्रीपरमहंस नलीकानमक रामायिका श्रीनिमककीर गामाहात्म्य बरघुननवक

टी. रा.बा. १५५

कुगूढ़निषीद नमनभूरलहा नेजनकमा गाश्रीमान कवी १२८

समयजानिगुरुआयसुपाई। लेनप्रसूनचलेदोउभाई॥
भूपबागबरदेखेउजाई॥ जहँबसंतरितुरहैलुभाई॥
लागेबिटपमनोहरनाना। बरणबरणबरबेलिबिताना।
नवपल्लवफलसुमनसुहाए। निजसंपतिसुरतरुहिलजा
चातककोकिलकीरचकोरा कूजतबिहंगनचतकलमोर
मध्यबागसरसोहसुहावा मणिसोपानबिचित्रबनाव
बिमलसलिलसरसिजबहुरंगा जलखगकूजतगुंजतभृंग

दो॰ बागतड़ागबिलोकिप्रभुहर्षेबंधुसमेत॥
परमरम्यआरामयहुजोरामहिसुखदेत॥

टी॰ रा॰ बा॰ २५६

चहुँदिशिचितैपूछिमालीगन लगेलेनदलफूलमुदितमन
तेहिअवसरसीतातहँआई गिरिजापूजनजननिपठाई
संगसखीसबसुभगसयानी। गावहिंगीतमनोहरबानी
सरसमीपगिरिजागृहसोहा बरणिनजाइदेखिमनमोह
मज्जनकरिसरसखीसमेता गईमुदितमनगौरिनिकेत
पूजाकीन्हअधिकअनुरागा निजअनुरूपसुभगबरमांग
एकसखीसियसंगबिहाई गईरहीदेखनफुलवाई॥
तेहिदोउबंधुबिलोकेउजाई प्रेमबिबशसीतापहँआई

तासुदशादेखीसखिनपुलकगातजलनयन॥
कहुकारणनिजहर्षकरपूछहिंसबमृदुबयन

देखनबागकुंअरदोउआये बयकिशोरसबभांतिसु
श्यामगौरकिमिकहौंबखानी गिराअनयननयनबिनुबानी

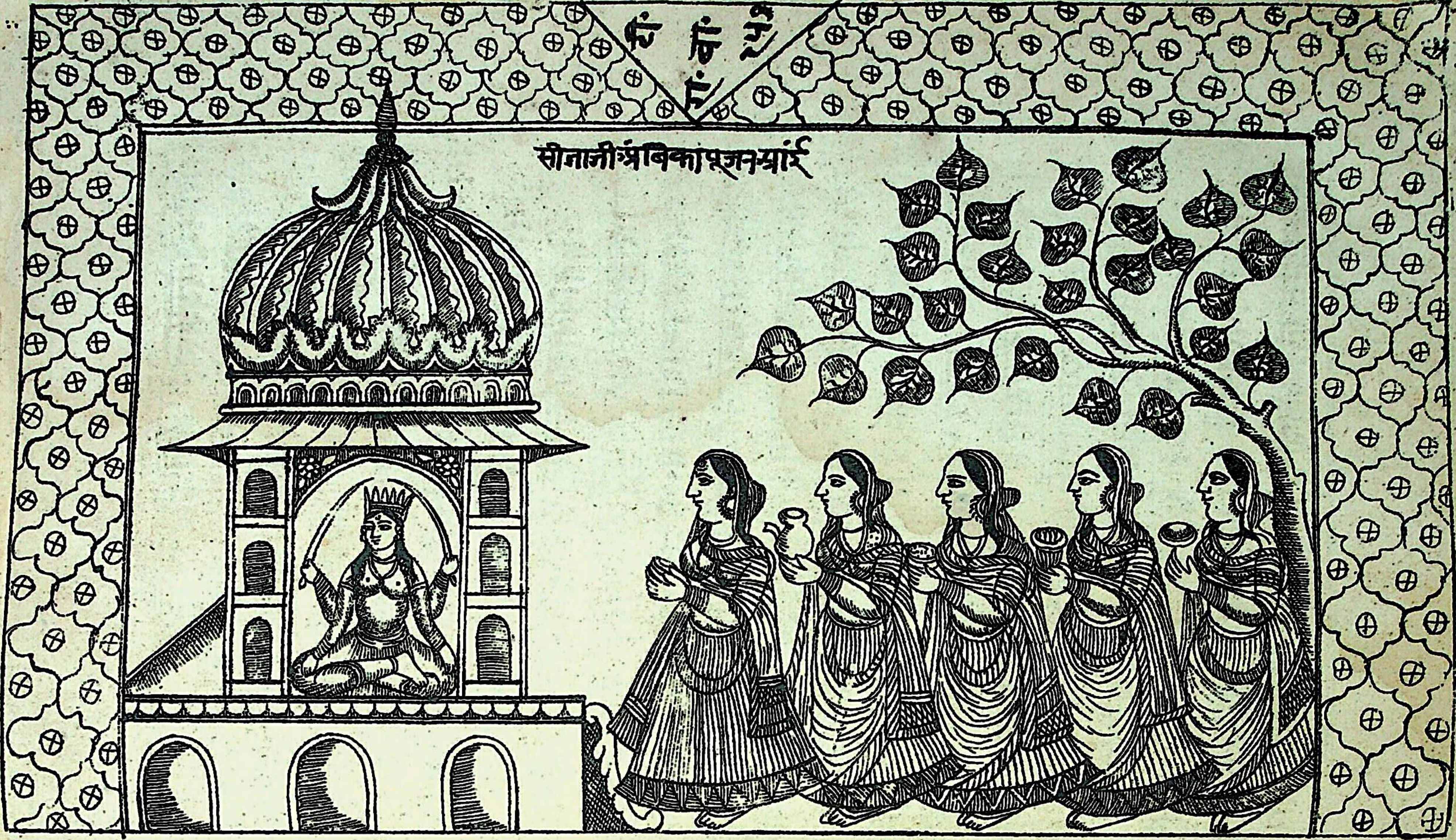

सीताजीअंबिकापूजनआंई

टी॰
रा॰ बा॰
२५४

सुनिहरखीसबसखीसयानी सियहियअतिउत्कंठाजानी
एककहहिंनृपसुततेआली सुनेजेमुनिसंगआयेकाली
जिननिजरूपमोहिनीडारी। कीन्हेस्वबशनगरनरनारी
बरणनछबिजहँतहँसबलोगू अवसिदेखियेदेखनजोगू॥
तासुबचनअतिसियहिसुहाने दरसलागिलोचनअकुलाने
चलीअग्रकरिप्रियसखिसोई प्रीतिपुरातनलखैनकोई।

सुमिरिसीयनारदबचनउपजीप्रीतिपुनीति॥
चकितबिलोकतसकलदिशिजनुशिशुमृगीसभीत

कंकणकिंकिणिनूपुरधुनिसुनि कहतलखनसनरामहृदयगुनि
मानहुमदनदुंदुभीदीन्ही॥ मनसाबिश्वबिजयकहुंकीनी
असकहिफिरचितयेतेहिओरा सियमुखशशिभयेनयनचको
भएबिलोचनचारुअचंचल मनहुंसकुचिनिमितजेदृगंचल
देखिसीयशोभासुखपावा। हृदयसराहतबचननआवा।
जनुबिरंचिनिजसबनिपुनाई बिरचिबिश्वकहप्रगटदिखाई
सुंदरताकहँसुंदरकरई॥ छबिगृहदीपशिखाजनुबरई
सबउपमाकबिरहेजुठारी॥ केहिपटतरियबिदेहकुमारी

सियशोभाहियबरणिप्रभुआपनिदशाबिचारि
बोलेसुचिमनअनुजसनबचनसमयअनुहारि

तातजनकतनयायहसोई॥ धनुषयज्ञजेहिकारणहोई
पूजनगौरिसखीलैआई॥ करतिप्रकाशफिरतिफुलवा
जासुबिलोकिअलौकिकशोभा सहजपुनीतमोरमनछोभा॥

सोसबकारणजानबिधाता फरकहिंसुभगअंगसुनुभ्राता
रघुबंशिनकरसहजसुभाऊ मनकुपंथपगधरैनकाऊ॥
मोहिंअतिसयप्रतीतजियकेरी जेहिंसपनेहुपरनारिनहेरी॥
जिनकैलहहिंनरिपुरणपीठी नहिंलावहिंपरतियमनडीठी।
मंगनलहहिंनजिनकैनाहीं तेनरबरथोरेजगमाहीं२॥

करतबतकहीअनुजसनमनसियरूपलुभान
मुखसरोजमकरंदछबिकरतमधुपइवपान॥

चितवतिचकितचहूंदिशिसीता कहँगयेनृपकिशोरमनचीता।
जहँबिलोकिमृगसावकनैनी जनुतहँबरसकमलसितश्रेनी।
लताओटतबसखिनलखाये स्यामलगौरकिशोरसुहाये।
देखिरूपलोचनललचाने हरषेजनुनिजनिधिपहिचाने।
थकेनयनरघुपतिछबिदेखी पलकनहूंपरिहरीनिमेषी।
अधिकसनेहदेहभईभोरी शरदशशिहिजनुचितवचकोरी।
लोचनमगरामहिउरआनी दीन्हेपलककपाटसयानी
जबसियसखिनप्रेमबसजानी कहिनसकहिंकछुसबसकुचानी

लताभवनतेप्रगटभेतेहिअवसरदोउभाइ॥
निकसेजनुयुगबिमलबिधुजलदपटलबिलगाइ

शोभासींवसुभगदोउबीरा नीलपीतजलजाभशरीरा।
काकपक्षशिरसोहतनीके गुच्छेबिचबिचकुसुमकलीके
भालतिलकश्रमबिंदुसुहाए श्रवणसुभगभूषणछबिछाए
बिकटभृकुटिकचघूंघरवारे नवसरोजलोचनरतनारे॥

चारुचिबुकनासिकाकपोला। हासबिलासलेतमनुमोला।
मुखछबिकहिनजाइमोहिपांही जोबिलोकिबहुकामलजाई
उरमणिमालकंबुकलग्रीवा। कामकलभकरभुजबलसींवा
सुमनसमेतबामकरदोना। सांवरकुअँरसखिसुठिलोना।

केहरिकटिपटपीतधरसुखमासीलनिधान॥
देखिभानुकुलभूषणहिबिसरासखीअपान।

धरिधीरजएकसखीसयानी सीतासनबोलीगहिपानी॥
बहुरिगौरिकरध्यानकरेहू। भूपकिशोरदेखिकिनलेहू॥
सकुचसीयतबनयनउघारे सन्मुखदोउरघुबंशनिहारे
नखसिखदेखिरामकीशोभा सुमिरिपितापनमनअतिक्षोभा
परबससखिनलखीजबसीता भयेगहरुसबकहहिंसभीता
पुनिआउबएहिबिरियाँकाली असकहमनबिहँसीएकआली
गूढगिरासुनसियसकुचानी भयोबिलंबुमातुभयमानी
धरिबड़धीररामउरआनी फिरअपनपौपितुबसजानी

देखनमिसुमृगबिहँगतरु फिरैबहोरिबहोरि
निरखिनिरखिरघुबीरछबिबाढ़ीप्रीतिनथोरि

जानिकठिनशिवचापबिसूरति चलीराखिउरश्यामलमूरति
प्रभुजबजातजानकीजानी। सुखसनेहशोभागुणखानी
परमप्रेममयमृदुमसिकीन्ही चारुचित्रभीतरलिखलीन्ही
गईभवानीभवनबहोरी। बंदिचरणबोलीकरजोरी
जयजयजयगिरिराजकिशोरी जयमहेशमुखचंद्रचकोरी

जयगजबदनषडाननमाता। जगतजननिदामिनिदुतिगाता।
नहितवआदिमध्यअवसाना। अमितप्रभावबेदनहिंजाना।
भवभवबिभवपराभवकारिणि। बिश्वबिमोहनिस्वबशबिहारिणि

दो· पतिदेवतासुतीयमहँमातुप्रथमतवरेष॥
महिमाअमितनकहसकहिंसहसशारदाशेष

सेवततोहिसुलभफलचारी बरदायिनित्रिपुरारिपियारी
देविपूजिपदकमलतुम्हारे सुरनरमुनिसबहोहिंसुखारे
मोरमनोरथजानहुनीके। बसहुसदाउरपुरसबहीके।
कीन्हेउप्रगटनकारणतेही असकहिचरणगहेबैदेही
बिनयप्रेमबसभईभवानी खसीमालमूरतिमुसकानी
सादरसियप्रसादसिरधरेऊ बोलीगौरिहर्षहियभरेऊ
सुनुसियसत्यअसीसहमारी पूजिहिमनकामनातुम्हारी
नारदबचनसदासुठिसांचा सोबरमिलिहिजाहिमनराचा।

टी: रा·बा· १६१

छं· मनजाहिराचामिलिहिसोबरसहजसुंदरसाँवरो
करुणानिधानसुजानशीलसनेहजानतरावरो॥
इहिभाँतिगौरिअसीससुनिसियसहितहियहर्षितअली
तुलसीभवानिहिपूजिपुनिपुनिमुदितमनमंदिरचली
सो· जानिगौरिअनुकूलसियहियहर्षनजायकहि
मंजुलमंगलमूलबामअंगफरकनलगे॥

हृदयसराहतसीयलुनाई गुरुसमीपगवनेदोउभाई
रामकहासबकौशिकपाहीं सरलसुभावछुवाछलनाहीं

सुमनपाइमुनिपूजाकीन्ही मुनिअसीसदोउभाइनदीन्ही
सुफलमनोरथहोहुतुम्हारे रामलखनसुनभयेसुखारे
करिभोजनमुनिबरबिज्ञानी लगेकहनकछुकथापुरानी
बिगतदिवसमुनिआयसुपाई संध्याकरणचलेदोउभाई
प्राचीदिशिशशिउगेउसुहावा सियमुखसरिसदेखसुखपा
बहुरिबिचारकीन्हमनमाहीं सीयबदनसमहिमकरनाहीं

दो· जन्मसिंधुपुनिबंधुबिष दिनमलीनसकलंक
सियमुखसमतापावकिमिचंदबापुरोरंक ॥

घटैबढैबिरहिनदुखदाई ॥ ग्रसैराहुनिजसंधिहिपाई॥
कोकशोकप्रदपंकजद्रोही अवगुणबहुतचंद्रमातोही
बैदेहीमुखपटतरदीन्हे ॥ होइदोषबड़अनुचितकीन्हे
सियमुखछबिबिधुब्याजबखानी गुरुपहचलेनिशाबड़िजानी
करिमुनिचरणसरोजप्रणामा आयसुपाइकीन्हबिश्रामा
बिगतनिशारघुनायकजागे बंधुबिलोकिकहनअसलागे
उगेउअरुणअवलोकोताता पंकजलोककोकसुखदाता
बोलेलखनजोरिजुगपानी ॥ प्रभुप्रभावसूचकमृदुबानी

अरुणोदयसकुचेकुमुदउडुगणज्योतिमलीन।
जिमितुम्हारआगमनसुनिभयेनृपतिबलहीन

नृपसबनखतकरहिंउजियारी टारिनसकहिंचापतमभारी।
कमलकोकमधुकरखगनाना। हरषेसकलनिशाअवसाना॥
ऐसेहिप्रभुसबभक्ततुम्हारे। होइहहिंटूटेधनुषसुखारे।

दी·
रा·बा·
१६२

चौ॰ २० १२४ श्लो॰ १ छं॰ १ सो॰ १५ दो॰ ॥

सीयस्वयंबर २
तिवधनुमखत
नमन २६ शो॰
विश्वामित्रादि
मुनिसुतश्रीराम
चंद्रलषनयशमो
आगमनतहाँनि
जकविभावतें २
खनभयबीर
सोदिखन
संतंधनुषभं
गभयाजनवीर
रस १ भयामृत
भयानक १ रूप
पुलतंआरामा
कोमगधपुर
तोद्य उपुरवा
सिनकाप्रपूर्व
कलमंगार ७
निराटमयजप

उदयभानुबिनुश्रमतमनासा। दुरेनखतजगतेजप्रकासा॥
रविनिजउदयव्याजरघुराया। प्रभुप्रतापसबप्रगटजनाया।
तबभुजबलमहिमाउदघाटी। प्रगटीधनुबिघटनपरिपाटी॥
बंधुबचनसुनिप्रभुमुसुकाने। होइसुचिसहजपुनीतनहाने
नित्यक्रियाकरिगुरुपहँआये। चरणसरोजसुभगसिरनाये।
सतानंदतबजनकबुलाये। कौशिकमुनिपहँतुरतपठाये
जनकबिनयतिनआयसुनाई। हरषेबोलिलियेदोउभाई॥

दो॰सतानंदपदबंदिप्रभुबैठेगुरुपहँजाइ २ ॥
चलहुतातमुनिकहेउतबपठवाजनकबुलाइ।

सीयस्वयंबरदेखियजाई॥ ईशकाहिधौंदेहिबड़ाई॥
लषनकहायशभाजनसोई। नाथकृपातवजापरहोई॥
हरषेसबसुनिमुनिबरबानी। दीन्हअसीससबहिंसुखमानी
पुनिमुनिबृंदसमेतकृपाला। देखनचलेधनुषमखशाला
रंगभूमिआयेदोउभाई॥ अससुधिसबपुरबासिनपाई
चलेसकलगृहकाजबिसारी। बालकजुबाजठरनरनारी॥
देखीजनकभीरभइभारी। सुचिसेवकसबलियेहँकारी
तुरतसकललोगनपहँजाहू। आसनउचितदेहुसबकाहू।

सो॰कहिमृदुबचनबिनीतअतिबैठारेनरनारि॥
उत्तममध्यमनीचलघुनिजनिजथलअनुहारि॥

राजकुँअरतेहिअवसरआये। मनहुमनोहरताछबिछाये
गुणसागरनागरबरबीरा॥ सुंदरश्यामलगौरशरीरा॥

टी॰

स्वकीपंठतबिभाग
१ सननसोदिबो
कै हास्य दशमाता
गुरुबरबाल्लभ्प ५
परतवपरबल
रूपसोसांत ८
होरभकनके
बिधउपासका
रानतर्हेहीद
उन्महि लिय ८
रामसुकोनेहि
भावस्वमार ९
तैजानवीगो ३
क्लीकालीतंसी
काहिवैपाभूति
तीरिश्यामने
अहमुनरत १०

राजसमाजबिराजतरूरे॥ उडुगणमहँजुगबिधुजनुपू
जिनकेरहीभावनाजैसी। प्रभुमूरतिदेखीतिनतैसी॥
देखहिंभूपमहारणधीरा। मनहुबीररसधरेशरीरा॥
डरेकुटिलनृपप्रभुहिनिहारी। मनहुभयानकमूरतिभारी
रहेअसुरछलछोनृपबेषा। तिनप्रभुप्रगटकालसमदेख
पुरबासिनदेखेदोउभाई। नरभूषणलोचनसुखदाई

नारिबिलोकहिंहरषिहियनिजनिजरुचिअनुरूप
जनुसोहतशृंगारधरिमूरतिपरमअनूप॥

बिदुषनप्रभुबिराटमयदीसा। बहुमुखकरपगलोचनसी
जनकजातिअवलोकहिंकैसे। सजनसगेप्रियलागहिंजैसे
सहितबिदेहबिलोकहिंरानी। शिशुसमप्रीतिनजातबखानी
योगिनपरमतत्वमयभासा। शांतशुद्धसमसहजप्रकास
हरिभक्तनदेखेदोउभ्राता। इष्टदेवइवसबसुखदाता॥
रामहिचितवभावजेहिसीया। सोसनेहसुखनहिंकथनी
उरअनुभवतिनकहिसकसोऊ। कवनप्रकारकहैकविकोऊ
इहिबिधिरहाजाहिजसभाऊ। तेहितसदेखेउकोशलराऊ

राजतराजसमाजमहँकोशलराजकिशोर
सुंदरश्यामलगौरतनबिश्वबिलोचनचोर

सहजमनोहरमूरतिदोऊ। कोटिकामउपमालघुसो
शरदचंदनिंदकमुखनीके। नीरजनयनभावतेजीके॥
चितवनिचारुमारमदहरणी। भावतहृदयजातनहिंबरणी

टी॰ रा॰ बा॰ २६५

इंद्रकेसहायक काकुत्स्थराना तीकिनयानौं रूपबिजयी ६ श्यामजिनके पुत्रनकोनर रूपबिजय लक्षतापरन्ती भाग्यसंभ्रमि गाढ़ै १ साधु पवमनहिते रानायप्रभा तातेवालनकी काहवाकेहे छविका मनासनात्यागि देखिसुखीकर गानि कीभावधनुष भाग्यनकोफल बालककेछबि रानकेप्रतीत स्यामधनुषभंग सोजिगानहीं

कलकपोलश्रुतिकुंडललोला। चिबुकअधरसुंदरमृदुबोला।
कुमुदबंधुकरनिंदकहासा। भृकुटीबिकटमनोहरनासा।
भालबिशालतिलकझलकाहीं। कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं।
पीतचौतनीसुभगसुहाई। कुसुमकलीबिचबीचबनाई।
रेखारुचिरकंबुकलग्रीवा। जनुत्रिभुवनसुखमाकीसींवा।

कुंजरमणिकंठाकलितउरतुलसीकीमाल॥
वृषभकंधकेहरिठवनिबलनिधिबाहुबिशाल॥

कटितूणीरपीतपटबांधे॥ करशरधनुषबामबरकांधे
पीतयज्ञउपवीतसोहाई॥ नखसिखमंजुमहाछबिछाई
देखिलोगसबभयेसुखारे। इकटकलोचनटरहिंनटारे॥
हर्षेजनकदेखिदोउभाई। मुनिपदकमलगहेतबजाई
करिबिनतीनिजकथासुनाई। रंगअवनिसबमुनिहिदिखाई
जहंतहंजाहिंकुंवरबरदोऊ। तहंतहंचकितचितवसबकोऊ
निजनिजरुचिरामहिंसबदेखा। कोउनजानकछुमर्मबिशेषा
भलिरचनानृपसनमुनिकहेऊ। राजामुदितमहासुखलहेऊ

सबमंचनतेंमंचइकसुंदरबिशदबिशाल॥
मुनिसमेतदोउबंधुतहंबैठारेमहिपाल॥

प्रभुहिदेखिसबनृपहियहारे। जनुराकेशउदयभयेतारे॥
असप्रतीतितिनकेमनमाहीं। रामचापतोरबसकनाहीं॥
बिनुभंजेउभवधनुषबिशाल। मेलिहिसीयरामउरमाला।
असबिचारिगवनेउघरभाई। नयप्रतापबलतेजगवाई॥

देखिभावकेसे ऊ प्राणसंबंधीके भाववकोप्रकाश रांभ्राममेंबंधे उभयतेग्रंथकार गायोहैबरबी स्यामदाहित कविसाभावकोन आगमदृश्योस अनिबरतउ परतुगाढ़ाकी उपमाप्रहलाद गारिनकोरथ तैसुगवतोत कैदंबरदै मगनयमी लाहिअप्रभु छलीहिंगाहे उल्लनाहितीन इंद्रलौकिक परंतु

शाक्तिमूलरूप
माधुर्यछबि
कोटिहैंरहा
बासीलोभा
भूषणरुपके
बैसकेसमुह
मागीस्वकाश्री
सुतबाम्पूर्ण
गमनहीहैं
श्रृंदर्गतैंसाधा
गोसारोचिबधी
बोलानिहैंभवा
प्रबैठबढत
रविकीरसा

अहल्यादिकीश्री
सीतानन्दबरन
नन्द १८७
सखीगीतबानी
एतानिमनोहर
अरुनबरनतन
सारायुतनगमो
लोकीछबियुत
लिनहैनबरंगम
अभूरसानकी
उरबहपरलगा

बिहँसेअपरभूपसुनिबानी। जेअबिबेकअंधअभिमानी॥
तोरेहुधनुषब्याहअवगाहा। बिनुतोरेकोकुअँरिबिवाहा।
एकबारकालहुकिनहोई। सियहितसमरजितबहमसोई
यहसुनअपरभूपमुसकाने। धर्मशीलहरिभक्तसयाने॥

सो॰सीयबिवाहबराम गर्बदूरिकरिनृपनकर।
जीतिकोसकैसंग्राम दशरथकेरणबांकुरे+॥

ब्यर्थमरहुजनिगालबजाई। मनमोदकनभूखनहिंजाई॥
सिखहमारसुनुपरमपुनीता। जगदंबाजानहुजियसीता॥
जगतपितारघुपतिहिबिचारी। भरिलोचनछबिलेहुनिहारी
सुंदरसुखदसकलगुणरासी। येदोउबंधुशंभुउरबासी॥
सुधासमुद्रसमीपबिहाई। मृगजलनिरखिमरहुकतधाई
करहुजाइजाकहँजोभावा। हमतोआजुजन्मफलपावा॥
असकहिभलेभूपअनुरागे। रूपअनूपबिलोकनलागे+॥
देखहिंसुरनभचढेबिमाना। बरषहिंसुमनकरहिंकलगाना॥

दो॰जानिसुअवसरसीयतब पठवाजनकबुलाइ।
चतुरसखीसुंदरसकल सादरचलींलिवाइ+॥

सियशोभानहिंजायबखानी। जगदंबिकारूपगुणखानी॥
उपमासकलमोहिलघुलागी। प्राकृतनारिअंगअनुरागी॥
सीयबरणितेहिउपमादेई॥ कोकबिकहैअयशकोलेई॥
जौपटतरियतीयसमसीया। जगअसयुवतिकहाकमनीया॥
गिराघरवरतनअर्द्धभवानी। रतिअतिदुखितअतनपतिजान

टी॰
रा॰ बा॰
१९६

सोलीभूमिबानश्रु
प्रभानतेकंचन
लतारतीभूमि
परशोभाकेलि
गईस्यादिमान
उत्कर्षप्रसनारि
रूपतेनयकी
पारुलीतानरुमो
आश्चर्यनाहिं
अनुप्राकृत
हैअनुप्राहतन
कारुहनन्दानि
नारिकेस्पाय
प्रमानहीनजोग
हिहायकमलसों
नयमालवाहाथ
नमांसनननकी
मालाहिमाल
सामचंडिकासों
कौरावसंमत

अरुप्रधान सोसीतासखी मयीमालातंत्र शाखलालपा देरांतंग्रंथी दुनअरुअरुवा कौफूलन की धालितंजयमा लकालीअरु अवचटचैतै कोभावराग बिनुसदअप नकौअरसह जठभागतं रहिकौरहि रामचाहितंशील कोऽबिनचाहि नहिकैहरि यायवनअप नणोरामजीको

बिषबारुणीबंधुप्रियजेही। काहियरमासम।किमिबैदेही।
जौंछबिसुधापयोनिधिहोई। परमरूपमयकच्छपसोई।
शोभारजुमंदरसिंगारू ॥ मथैपाणिपंकजनिजमारू

दो॰ इहिबिधिउपजैलच्छजबसुंदरतासुखमूल।
तदपिसकोचसमेतकवि कहहिंसीयसमतूल।

चलीसंगलैसखीसयानी॥ गावतिगीतमनोहरबानी
सोहनवलतनुसुंदरसारी। जगतजननिअतुलितछबिभारी
भूषणसकलसुदेशसुहाये अंगअंगरचिसखिनबनाये।
रंगभूमिजबसियपगुधारी देखिरूपमोहेनरनारी॥
हरषसुरन्हदुंदुभीबजाई॥ बर्षिप्रसूनअपसरागाई+॥
पाणिसरोजसोहजयमाला। औचकचितैसकलमहिपाला।
सीयचकितचितरामहिंचाहा भयेमोहबससबनरनाहा॥
मुनिसमीपदेखेदोउभाई। लगेललकिलोचननिधिपाई

दो॰ गुरुजनलाजसमाजबड़देखिसीयसकुचानि
लगीबिलोकनसखिनतन रघुबीरहिंउरआनि+॥

रामरूपअरुसियछबिदेखी नरनारिनपरिहरीनिमेषी॥
सोचहिंसकलकहतसकुचाहीं बिधिसनबिनयकरहिंमनमाहीं
हरुबिधिबेगजनकजड़ताई मतिहमारअसदेहुसुहाई+॥
बिनुबिचारप्रणतजिनरनाहू सीयरामकरकरैबिवाहू॥
जगभलकहहिंभावसबकाहू हठकीन्हेउअंतरदाहू+॥
यहलालसामगनसबलोगू। बरसाँवरोजानकीजोगू॥

दो॰
रा॰ बा॰
२६७

कौमानिहैं ॥
॥ १८ ॥

गबिचारेंगी तोसीताऽऽ धातमोबाहिं रकुलतीगों कीभावपर कैनाहिंबिचार १८८ श्रीकौंशी प्रमधनुषभी कीऽसनाहीं नापनसुना स्त्रियुकी भावकीर्ती रोगंसाहितै

२५०

तबबंदीजनजनकबुलाये॥ बिरदावलीकहतचलिआये॥
कहनृपजाइकहहुप्रणमोरा चलेभाटहियहर्षनथोरा॥

दो॰ बोलेबंदीबचनबरसुनहुसकलमहिपाल।
प्रणबिदेहकरकहहिंहमभुजाउठाइबिशाल।

नृपभुजबलबिधुशिवधनुराहू गरुअकठोरबिदितसबकाहू
रावणबाणमहाभटभारे। देखिशरासनगवहिंसिधारे
सोइपुरारिकोदंडकठोरा॥ राजसमाजआजजेइतोरा
त्रिभुवनजयसमेतबैदेही। बिनयबिचारिबरैहठितेही
सुनिप्रणसकलभूपअभिलाषे भटमानीअतिसयमनमाषे
परिकरबांधउठेअकुलाई चलेइष्टदेवनसिरनाई॥
तमकिताकितकिशिवधनुधरहीं उठइनकोटभांतिबलकरहीं
जिनकेकछुबिचारमनमाहीं चापसमीपमहीपनजाहीं

तमकिधरहिंधनुमूढनृपउठइनचलहिंलजाइ।
मनहुंपाइभटबाहुबलअधिकअधिकगरुआइ।

भूपसहसदसएकहिबारा लगेउठावनटरैनटारा॥
डिगैनशंभुशरासनकैसे॥ कामीबचनसतीमनजैसे॥
सबनृपभयेयोगउपहासी जैसेबिनुबिरागसंन्यासी॥
कीरतिबिजयबीरताभारी चलेचापकरबरबसहारी॥
श्रीहतभयेहारिजियराजा बैठेनिजनिजजाइसमाजा॥
नृपनबिलोकिजनकअकुलाने बोलेबचनरोषजनुसाने॥
दीपदीपकेभूपतिनाना॥ आयेसुनिजोहमप्रणठाना॥

भूपसहसदस एकहिबारायह कथासन्तोपाख्या नमेंएकतोशेऽ सम्बन्धहैनब बिचहहैमति कैउपायहै

टी॰

रा॰बा॰
१६८

कौनसुंदरकै समपुरगाहिं धनुहिटपरसुम कारीजासबकाकी कोसबसीताबी जासहजनकमहा राजजनकीहित धनुषयज्ञबनाय गौरहास्यसका रनासहस्यों पहलेश्रनेकनृ रूराजालोग सीताजीनिमित्त कियहरस्याहिं निवारणेपाप ख्यानमां॥

॥ ॥ ॥

२५१

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

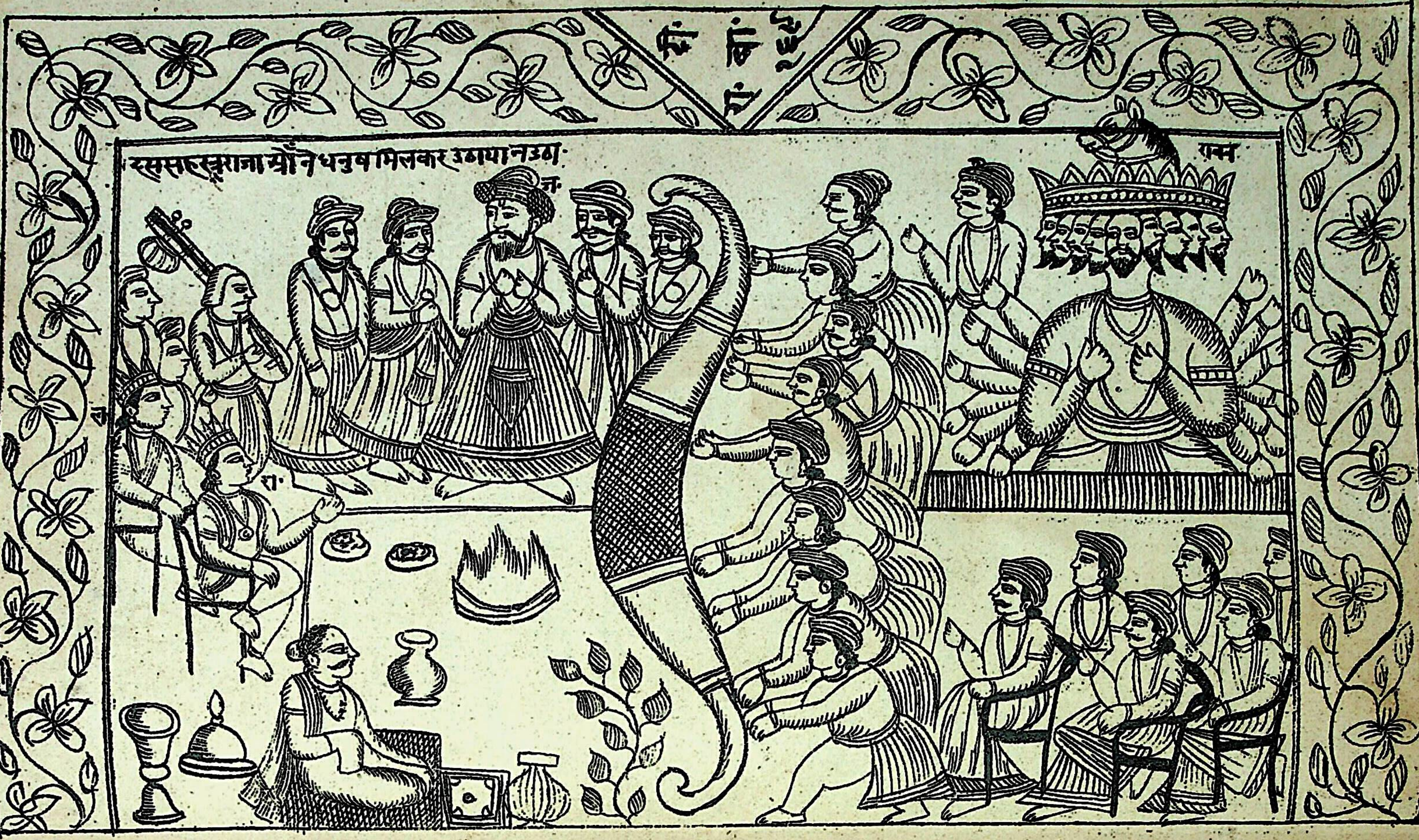

दससहस्रराजाओंनेधनुषमिलकरउठायानउठा॰

प्रसंगः २१
जनकवचन
सुधौगपुगा
नैकै कि कौ
कीरति मही
लखन कोपो-
समय उचित
न बोलन
भो २५२

शोभावनारि
गैउसमवर्षी
शारि धनुष
पत्वानिज
बौध्रमको
॥ २५२॥

टी॰
रा॰ बा॰
१७०

देवदनुजधरिमनुजशरीरा। बिपुलबीरआयेरणधीरा

कुँवरिमनोहरिबिजयबड़िकीरतिअतिकमनीय
पावनहारिबिरंचिजनुरचेउनधनुदमनीय।

कहहुकाहियहलाभनभावा। काहुनशंकरचापचढ़ावा।
रहोचढ़ाउबतोरबभाई ॥ तिलभरभूमिनसकेउछुड़ाई
अबजनिकोउभाषैभटमानी बीरबिहीनमहीमैंजानी।
तजहुआसनिजनिजगृहजाहू लिखानबिधिबैदेहिविवाहू
सुकृतजाइजोप्रणपरिहरहू कुँवरिकुवारिरहोकाकरहू
जोजनत्यौंबिनुभटभुविभाई तौप्रणकरिहोत्यौंनहँसाई
जनकबचनसुनसबनरनारी देखिजानकीभएदुखारी।
सुनतहिंलषनकुटिलभैभौंहैं रदपटफरकतनयनरिसौंहैं

कहनसकतरघुबीरडरलगेबचनजनुबाण।
नाइरामपदकमलशिरबोलेगिराप्रमाण॥

रघुबंशिनमहँजहँकोउहोई तेहिसमाजअसकहइनकोई
कहीजनकजसअनुचितबानी बिद्यमानरघुकुलमणिजानी।
सुनहुभानुकुलपंकजभानू। कहौंसुभावनकछुअभिमान
जौराउरअनुशासनपाऊँ। कंदुकइवब्रह्मांडउठाऊँ॥
काचेघटजिमिडारौंफोरी सकौंमेरुमूलकइवतोरी।
तवप्रतापमहिमाभगवाना। कोबापुरोपिनाकपुरान।
नाथजानिअसआयसुहोऊ कौतुककरौंबिलोकियसोऊ
कमलनालइमिचापचढ़ावौं शतयोजनप्रमाणलैधावौं

नोरौंछत्रकरंड जिमितवप्रतापबलनाथ
जौनकरौंप्रभुपदशपथपुनिनधरौंधनुहाथ

लषनसकोपबचनजबबोले डगमगानिमहिदिग्गजडोले
सकललोकसबभूपडराने सियहियहर्षजनकसकुचाने
गुरुरघुपतिसबमुनिमनमांहीं मुदितभयेपुनिपुनिपुलकाहीं
सैनहिंरघुपतिलषननिवारे प्रेमसमेतनिकटबैठारे॥
बिश्वामित्रसमयशुभजानी बोलेअतिसनेहमृदुबानी।
उठहुरामभंजहुभवचापू॥ मेटहुतातजनकपरितापू
सुनिगुरुबचनचरणसिरनावा हर्षबिषादनकछुउरआवा॥
ठाढभयेउठिसहजसुभाये। ठवनियुवामृगराजलजाये

उदितउदयगिरिमंचपररघुबरबालपतंग॥
बिकसेसंतसरोजसब हरषेलोचनभृंग२॥

नृपनकेरिआसानिशिनाशी बचननषतअवलीनप्रकासी
मानिमहीपकुमुदसकुचाने कपटीभूपउलूकलुकाने॥
भयेबिशोककोकमुनिदेवा। बरषहिंसुमनजनावहिंसेवा।
गुरुपदबंदिसहितअनुरागा। राममुनिनसनआयसुमांगा
सहजहिंचलेसकलजगस्वामी मत्तमंजुकुंजरबरगामी॥
चलतरामसबपुरनरनारी। पुलकिपूरितनभयेसुखारी
बंदिपितरसुरसुकृतसभारे जौकछुपुन्यप्रभावहमारे॥
तौशिवधनुषमृनालकीनाई तोरहिंरामगणेशगोसाँई॥

रामहिप्रेमसमेतलषि सखिनसमीपबुलाए

लषनबचन
मुनिगनबकु
जानकीकोहर्ष
भयोभामगई
पतिकेराखन
हारगानिकेगुरा
दिकेमुदितको
भावभलोग्रास
पुबचनसमार
षन:गुरुआतातें
श्रीरामनृहर्ष
बिषादरहित
उठबालसूर्य
रामजूकेकाहव
कोभावकि
बलप्रताप
आगकेहेंग॥
॥२५८॥
〃 〃
〃 〃
〃

टी॰
रा॰ बा॰
१७१

कपटीभूपनको
बिषादखलनको
हर्षदिखायो २५५
〃 〃
〃

सीतामातुसनेहबस बचनकहैबिलखाइ

सखिसबकौतुकदेखनहारे जेउकहावतहितूहमारे।
कोउनबुझाइकहइनृपपाहीं येबालकअसहठभलनाहीं
रावणबाणछुवानहिंचापा। हारेसकलभूपकरिदापा।
सोधनुराजकुँवरकरदेहीं बालमरालकिमंदरलेहीं।
भूपसयानपसकलसिरानी सखीबिधिगतकछुजायन
बोलीसखीचतुरमृदुबानी। तेजवंतलघुगणियनरानी।
कहँकुंभजकहँसिंधुअपारा सोषेउसुयशसकलसंसा
रविमंडलदेखतलघुलागा। उदयतासुत्रिभुवनतमभाग

दो॰ मंत्रपरमलघुजासुबसबिधिहरिहरसुरसर्ब
महामत्तगजराजकहँबसकरअंकुशखर्ब ॥

कामकुसुमधनुसायकलीन्हे सकलभुवनअपनेबसकी
देवितजियसंशयअसजानी भंजबधनुषरामसुनुरानी।
सखीबचनसुनभईपरतीती मिटाबिषादबढ़ीअतिप्रीती
तबरामहिबिलोकिबैदेही सभयहृदयबिनवतिजेहि
मनहींमनमनायअकुलानी होहुप्रसन्नमहेशभवानी।
करहुसुफलआपनिसेवकाई करहितहरहुचापगरुआ
गणनायकबरदायकदेवा। आजुलगेकीन्हीतवसेवा।
बारबारबिनतीसुनिमोरी करहुचापगुरुताअतिथो

दो॰ देखदेखरघुबीरतनसुरमनावधरिधीर ॥
भरेबिलोचनप्रेमजलपुलकावलीशरीर ॥

पुनः जानकी जी
पितु प्रणते पर
बुध नाते कहते
हैं जैसे गोपीजन
ऽलता हिते
हृदय कथा पूछ
तम्भ जैसे अप्रा
तकाम पूर्ण ब्रह्म
कृष्णको १५८
जानकीजी को
प्रेमपण गनिनो
प्रतीति रामपद
रूको धनु
प्रनाकनो लख
नलाखबनोत।
१५९
दिग्गजनको
बगगाकिए
पृथ्वीजनहरज
के भूपनोतुं
वाम समाज क

नीके निरखि नयन भरि शोभा। पितु पण सुमिरि बहुरि मन छोभा।
अहह तात दारुण हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभ न हानी।
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड़ अनुचित होई।
कहँ धनु कुलिशहु चाहि कठोरा। कहँ श्यामल मृदु गात किशोरा।
बिधि केहि भांति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन किमि बेधहि हीरा।
सकल सभा कै मति भइ भोरी। अब मोहि शंभु चाप गति तोरी।
निज जड़ता लोगन पर डारी। होहु हरुव रघुपतिहि निहारी।
अति परिताप सीय मन माहीं। लव निमेष युग सत सम जाहीं।

दो॰ प्रभुहि चितै पुनि चितै महि राजत लोचन लोल
खेलत मनसिज मीन युग जनु बिधु मंडल डोल॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निशा अवलोकी।
लोचन जल रह लोचन कोना। जैसे परम कृपण कर सोना।
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरज प्रतीति उर आनी।
तन मन बचन मोर पन साँचा। रघुपति पद सरोज मन राचा।
तौ भगवान सकल उर बासी। करिहहिं मोहि रघुपति कै दासी।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु संदेहू।
प्रभु तन चितै प्रेम पण ठाना। कृपानिधान राम सब जाना।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे। चितव गरुड़ लघु व्यालहि जैसे।

दो॰ लषन लषेउ रघुबंशमणि ताकेउ हर कोदंड॥
पुलकि गात बोले बचन चरण चाप ब्रह्मंड॥

दिशा कुंजरहु कमठ अहि कोला धरहु धरणि धर धीर न डोला

दो॰ ॥ २६० ॥

× × × ×
× × × ×
कीयौ ६१
धनुषभंग
सैहि रामसू
कौबिकल
गनवोरा

रामचहहिंशंकरधनुतोरा होहुसजगसुनिआयसुमोरा
चांपसमीपरामजबआए। नरनारिनसुरसुकृतमनाए
सबकरसंशयअरुअज्ञानू मंदमहीपनकरअभिमानू।।
भृगुपतिकेरिगर्भगरुआई सुरमुनिनृपनिकेरिकदराई
सियकरसोचजनकपछितावा रानिनकरदारुणदुखदावा
शंभुचापबड़वोहितपाई।। चढेजाइसबसंगबनाई +।।
रामबाहुबलसिंधुअपारा चहतपारनहिंकोउकड़िहारा

रामबिलोकेलोगसबचित्रलिखेसेदेषि।।
चितयीसीयकृपायतनजानीबिकलबिशेषि

टी॰
रा॰ बा॰
२२५

देखीबिकलअतीबैदेही।। निमषबिहायकल्पसमतेही
तृषितबारिबिनुजोतनत्यागा। मुयेकरैकासुधातड़ागा।।
काबर्षाजबकृषीसुखाने समयचूकिपुनिकापछिताने
असजियजानिजानकीदेखी प्रभुपुलकेलखिप्रीतिबिशेषी
गुरुहिप्रणाममनहिमनकीन्हा अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा
दमकेदामिनिजिमिधनलयऊ पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ
लेतचढावतखैंचतगाढ़े +।। काहुनलखादेखसबठाढे।।
तेहिछणमध्यरामधनुतोरा भरेउभुवनधुनिघोरकठोरा।।

छं॰ भरिभुवनघोरकठोररवरविबाजितजमारगचले।।
चिक्करहिंदिग्गजडोलअहिमहिकोलकूरमकलमले।।
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलबिकलबिचारहीं
कोदंडभंजेउरामतुलसीजयतिबचनउचारहीं।।

चउथमंगल तांबिश्वामित्र कौशिकसिंधु रामचंद्रशशि देखउमगात भयोअनजनकी दैवतादिआनंद तेंफूलबर्षा किय २६३ पुनःसतानंद आज्ञातेंसीता सखिनयुत गमनकियो जयमालपहि वनहेतु ॥ ३६३ ॥

सो॰ शंकरचापजहाजसागररघुबरबाहुबल
बूड़ेसकलसमाजचढ़ेजेप्रथमहिंमोहबस ॥

प्रभुदोउखंडचापमहिडारे देखिलोगसबभयेसुखारे
कौशिकरूपपयोनिधिपावन प्रेमबारिअवगाहसुहावन
रामरूपराकेशनिहारी ॥ बढ़ीबीचिपुलकावलिभारी
बाजेनभगहगहेनिसाना। देवबधूनाचहिंकरिगाना
ब्रह्मादिकसुरसिद्धमुनीशा। प्रभुहिप्रशंसहिंदेहिंअसीसा
बरषहिंसुमनरंगबहुमाला। गावहिंकिन्नरगीतरसाला।
रहीभुवनभरिजयजयबानी धनुषभंगधुनिजातनजानी
मुदितकहहिंजहँतहँनरनारी भंजेउरामशंभुधनुभारी ॥

बंदीमागधसूतगणबिरदबदहिंमतिधीर ॥
करहिंनिछावरलोगसब हयगयधनमणिचीर

झांझमृदंगशंखसहनाई। भेरिढोलदुंदुभीसुहाई ॥
बाजहिंबहुबाजनेसुहाये जहँतहँयुवतिनमंगलगाये
सखिनसहितहर्षितअतिरानी सूखतधानपराजनुपानी ॥
जनकलहेउसुखसोचबिहाई पैरतथकेथाहजनुपाई ॥
श्रीहतभयेभूपधनुटूटे ॥ जैसेदिवसदीपछबिछूटे ॥
सियहियसुखबरणियकेहिभांती जनुचातकपायेजलस्वाती।
रामहिंलषनबिलोकतकैसे शशिहिचकोरकिशोरकजैसे
सतानंदतबआयसुदीन्हा सीतागमनरामपहँकीन्हा

दो॰ संगसखीसुंदरचतुरगावहिंमंगलचार ॥

टी॰
रा॰ बा॰
१७५

८२६

गवनीबालमरालगतिसुषमाअंगअपार॥

सखिनमध्यसियसोहतिकैसी छबिगणमध्यमहाछबिजैस

करसरोजजयमालसुहाई। बिश्वबिजयशोभाजनुछाई।
तनसकोचमनपरमउछाहू गूढप्रेमलखिपरैनकाहू॥
जाइसमीपरामछबिदेखी रहिजनुकुवरिचित्रअवरेखी।
चतुरसखीलखिकहाबुझाई पहिरावहुजयमालसुहाई॥
सुनतयुगलकरमालउठाई प्रेमबिबसपहिराइनजाई॥
सोहतजनुयुगजलजसनाला शशिहिसभीतदेतजयमाल
गावहिंछबिअवलोकिसहेली सियजयमालरामउरमेली॥

सो॰ रघुबरउरजयमालदेखिदेवबरषहिंसुमन।
सकुचेसकलभुआलजनुबिलोकिरबिकुमुदगण॥

पुरअरुव्योमबाजनेबाजे। खलभयेमलिनसाधुसबगाजे
सुरकिन्नरनरनागमुनीशा। जयजयसबकहिंदेहिंअसीस
नाचहिंगावहिंबिबुधबधूटी बारबारकुसुमावलिछूटी
जहँतहँबिप्रबेदधुनिकरहीं बंदीबिरदावलिउच्चरहीं॥
महिपातालनाकयशब्यापा रामबरीसियभंजेउचापा॥
करहिंआरतीपुरनरनारी॥ देहिंनिछावरबित्तबिसारी
सोहतसीयरामकीजोरी। छबिशृंगारमनहुइकठौरी॥
सखीकहहिंप्रभुपदगहुसीता। करतिनचरणपरसअतिभीत

दो॰ गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरसतिपदपानि
मनबिहँसेरघुबंशमणि प्रीतिअलौकिकजानि।

टेढकाल
जयमाल ३
चहतसोंभाव
अतिप्रेमसंयु
गाढ़ेघलहैं
रुकिगल्पतें
उआईगंबार
कहयातेमें
यहअष्टगय
मालपहिराव
नैहिनहींअं
गैवाज्ञानी
भाठांपुआपाणी
वापल्लैभ्रम
स्पर्शकोंगी
ग्रहरावतिभाव
दोउभुजानाल
दोऊहाथकमल
रामचंद्रउरवसंत
आनिहितचंद
कमलनकोमूंदि
तवारिश्रीहल
ऊहतहींभयते
आपुहीनसरलै
दो॰
रा॰ बा॰
२१६
मिलोयहस्थान
कोमाव २६८
अहसाहिमोके
बराछुवतराम
बियोगमो ४०
मयनाआहि
सापापाण
होबराछुव
नारिख्युनारी
मंजिस्मारि
ग्रांहठानकै
अनकनां
रुत्यनारी
वनातिराम
श्रीरहितंग
लौकिकप्रीति
जानरामनृहर्ष
२६५

दी. रा. बा. ८३

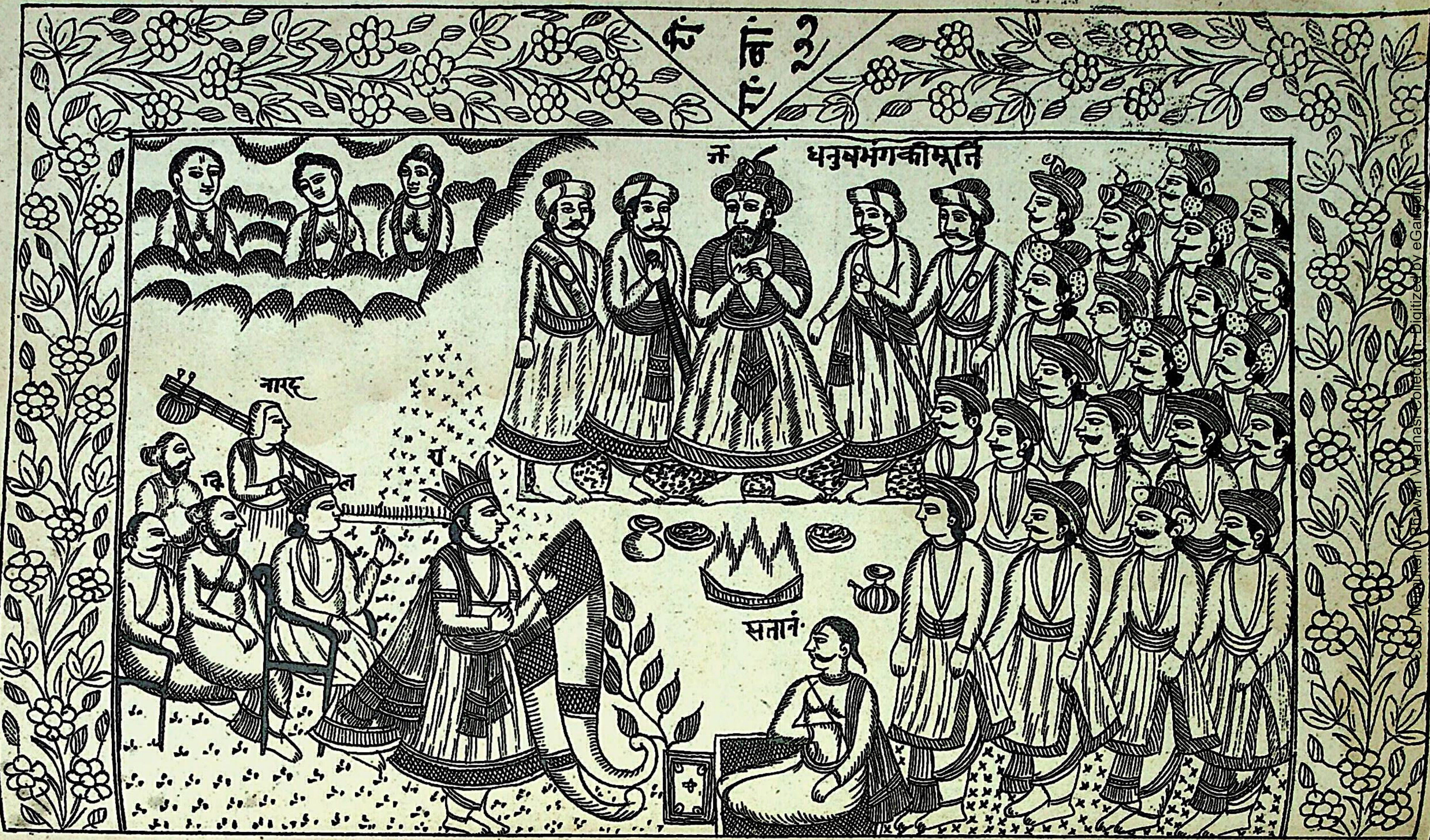

धनुषभंगकीमूर्ति

ज
नारद
वि
ल
रा
सतानं

नहीं कुछ भूप
को हल्ला सुनि
जानकी जू
भयानक भईं
आव यह कि
कोऊ दुष्ट
राम घात न
करै राम हेत
जान को खमा
बह है। २६७
टी॰
रा॰ बा॰
१७८

है। २६६।
राम तौ बड़ा भू
समर्थ हैं जनक
कौ जराइ दवे को
अनायास सब
है। लक्ष्मन
ते हैं अवद्य
गईं कि लाज
भांति साधु भूप
धिक भूप
अन्य भू को

नवसियदेखिभूपअभिलाखे। कूरकपूतमूढमनमाखे+॥
उठउठपहरसनाहअभागे। जहँतहँगालबजावनलागे॥
लेहुछुड़ाइसीयकहकोऊ। धरबांधहुनृपबालकदोऊ॥
तोरेधनुषचाड़नहिंसरई॥ जीवतहमहिंकुँवरिकोबरई॥
जोबिदेहकछुकरैसहाई। जीतहुसमरसहितदोउभाई॥
साधुभूपबोलेसुनुबानी॥ राजसमाजहिंलाजलजानी॥
बलप्रतापबीरताबड़ाई॥ नाकपिनाकहिंसंगसिधाई॥
सोईसूरताकिअबकहुँपाई। असबुधितौबिधिमुँहमसिलाई॥

देखहुरामहिंनयनभरितजईर्षामदमोहु+॥
लखनरोषपावकप्रबलजानिसलभजनिहोहु॥

बैनतेयबलिजिमिचहकागा। जिमिशशिचहहिंनागअरिभागा॥
जिमिचहकुशलअकारणकोही। सुखसंपदाचहहिंशिवद्रोही॥
लोभीलोलुपकीरतिचहहीं। अकलंकिताकिकामीलहहीं॥
हरिपदबिमुखपरमगतिचाहा। तसतुम्हारलालचनरनाहा॥
कोलाहलसुनिसीयसकानी। सखीलिवायगईजहँरानी॥
रामसुभायचलेगुरुपाहीं॥ सियसनेहबरणतमनमाहीं॥
रानिनसहितसोचबससीया। अबधौंबिधिहिंकाहकरनीया॥
भूपबचनसुनिइतउतकहहीं। लखनरामडरबोलनसकहीं॥

अरुणनयनभ्रकुटीकुटिलचितवतनृपनसकोप।
मनहुंमत्तगजगणनिरखिसिंहकिशोरहिंचोप॥

खरभरदेखिबिकलनरनारी। सबमिलिदेहिंमहीपनगारी॥

पंक्ति २८
२८७ श्लो॰
२९०॥
जनक देखि
छत्र सब सह
मीडुभा २८
लों॰ धनुषभंग
कोलाहल
कौ खरभर

सुनिय परशुराम
संत बीर रस
जामिल्ल बधूटी
श्लो॰ २६८
प्रभाव जानि
सब राजा नहिं
तब भाग्य जनक
को भय तें सीता
जू को आलि कै

नवतभाविधवा
मिलामिलेहेतु
अहण्णालकि
चालहिंअनुप्रभा
जनमंत्रधापरही
अनुकोपंतगुरू
धनुभंगहेतु
जनकौतंमहल
भा॥ २५६॥ ॥ – ॥ – ॥ – ॥ – ॥

तेहिअवसरसुनिशिवधनुभंगा। आयेभृगुकुलकमलपतंगा।
देखमहीपसकलसकुचाने। बाजझपटजनुलवालुकाने।
गौरशरीरभूतिभलिभ्राजा। भालबिशालत्रिपुंड बिराजा।
सीसजटाशशिबदनसुहावा। रिसिबसकछुकअरुणहोइआवा
भृकुटीकुटिलनयनरिसराते। सहजहिंचितवतमनहुरिसाते
बृषभकंधउरबाहुबिशाला। चारुजनेउमालमृगछाला।
कटिमुनिबसनतूणदुइबांधे। धनुशरकरकुठारकलकांधे

दो॰ सांतबेषकरणीकठिन बरणिनजाइसरूप॥
धरिमुनितनुजनुबीररस आयेजहँसबभूप १॥

देखतभृगुपतिबेषकराला उठेसकलभयबिकलभुआला
पितुसमेतकहिकहिनिजनामा लगेकरणसबदंडप्रणामा॥
जेहिसुभायचितवहिंहितजानी सोजानैजनुआयुखुटानी १॥
जनकबहोरिआयसिरनावा। सीयबुलायप्रणामकरावा
आशिषदीन्हसखीहरषानी निजसमाजलैगईसयानी॥
बिश्वामित्रमिलेपुनिआई॥ पदसरोजमेलेदोउभाई १॥
रामलषनदशरथकेढोटा। दीन्हअसीसजानिभलजोय
रामहिचितयरहेथकिलोचन रूपअपारमारमदमोचन १॥

बहुरिबिलोकिबिदेहसनकहहुकाहअतिभीर।
पूछतजानअजानजिमिब्यापेउकोपशरीर १॥

समाचारकहिजनक[illegible] जेहिकारणमहीपसबआये॥
सुनतबचनफिरिअनतनिहारे देखेचापखंडमहिडारे १॥

सुनाये

॥ २७०॥ बोलनभा श्रीरघुनाथ अबतैनहीं अरुसाधुस हलहग्राने रिसकरीतो हेवातुश्रीर कहैबापकं मनकाबिनय

अतिरिसबोलेबचनकठोरा कहुजड़जनकधनुषकेहितो
बेगिदिखावमूढ़नतआजू उलटौंमहिजहँलगितवरा
अतिडरउत्तरदेतनृपनाहीं। कुटिलभूपहरषेमनमाहीं।
सुरमुनिनागनगरनरनारी सोचहिंसकलत्रासअतिभा
मनपछतातिसीयमहतारी बिधिसँवारिसबबानबिगा
भृगुपतिकरसुभाउसुनसीता। अर्द्धनिमेषकल्पसमबीता

सभयबिलोकेलोगसबजानजानकीभीर ॥
हृदयनहर्षबिषादकछुबोलेश्रीरघुबीर +॥

नाथशंभुधनुभंजनहारा। होइहिकोउएकदासतुम्हा
आयसुकहाकहियकिनमोही सुनिरिसायबोलेमुनिको
सेवकसोजोकरैसेवकाई अरिकरणीकरकरियलराई
सुनहुरामजेहिशिवधनुतोरा सहस्रबाहुसमसोरिपुमोरा
सोबिलगाउबिहायसमाजा ननुमारेजयहैंसबराजा॥
सुनिमुनिबचनलषनमुसकाने बोलेपरशुधरहिंअपमाने
बहुधनुहीतोरेउलरिकाई कबहुनअसरिसकीन्हगोसा
एहिधनुपरममताकोहिहेतू सुनरिसायकहभृगुकुलकेत

रेनृपबालककालबस बोलतनोहिनसंभार
धनुहीसमत्रिपुरारिधनु बिदितसकलसंसार

लषनकहाहँसिहमरेजाना। सुनहुदेवसबधनुषसमाना।
काछतिलाभजीर्णधनुतोरे देखारामनयेकेभोरे +॥
छुवतटूटरघुपतिहिनदोषू मुनिबिनुकाजकरियकतरोष

नीतिपूर्वक
रामबचनतें
परशुरामजी
को क्रोध बढ़
आपनतें लक्ष्मण
उत्तर ब्यंगपूर्वक
तें भये नहीं
टी· रा·बा· १८०
निंद जानो नहीं
समुझानी सुन
अर्थातें प्रकाशि
माना बिस्तर
भयातें न होति
रखा॥ २७१॥

भृगुपतिकी
आधिक्यतें
श्रीरघुनाथजी
नारायणकरि
जानितिनका
पूर्वकसभा २८
धनतेंपरसुराम
जूकोपूर्वज्ञान
भयोतबआपुनो
धनुषरघुनाथ
सौंतैजोचलि
गयोअत्यंत
साधहीमातें
कालिकोरतप
हैलुबनकोजा
तमये २८५
" "
" "
" "
" "
" "
" "

टी॰
रा॰ बा॰
१८१

बोलेचितयपरसुकीओरा रेसुनेसिसुभावनमोरा॥
बालकबोलिबधौंनहिंतोही केवलमुनिजड़जानेसिमोही
बालब्रह्मचारीअतिकोही बिस्वबिदितक्षत्रीकुलद्रोही
भुजबलभूमिभूपबिनुकीन्ही बिपुलबारमहिदेवनदीन्ही
सहसबाहुभुजछेदनहारा परसुबिलोकमहीपकुमारा।

दो॰ मातुपितहिजनिसोचबसकरसिमहीपकिसोर
गर्भनकेअर्भकदलन परसुमोरअतिघोर २॥

बिहँसिलषनबोलेमृदुबानी अहोमुनीशमहाभटमानी।
पुनिपुनिमोहिदेखावकुठारा चहतउड़ावनफूंकपहारा॥
इहांकुम्हड़बतियाकोउनाहीं जोतर्जनीदेखिमरिजाहीं
देखिकुठारसरासनबाना मैंकछुकहासहितअभिमाना
भृगुकुलसमुझिजनेउबिलोकी जोकछुकहहुसहौंरिसरोकी
सुरमहिसुरहरिजनअरुगाई हमरेकुलइनपरनसुराई॥
बधेपापअपकीरतिहारे॥ मारतहूंपापरियेतुम्हारे।
कोटिकुलिशसमबचनतुम्हारा व्यर्थधरहुधनुबाणकुठारा।

जोबिलोकिअनुचितकहेउ छमहुमहामुनिधीर
सुनिसरोषभृगुबंशमणिबोलेगिरागंभीर॥

कौशिकसुनहुमंदयहबालक कुटिलकालबसनिजकुलघालक
भानुबंशराकेशकलंकू॥ निपटनिरंकुशअबुधअशंकू
कालकवरहोइहिक्षणमाहीं कहौंपुकारिखोरिमोहिनाहीं
तुमहटकहुजोचहहुउबारा कहिप्रतापबलरोषहमारा

लषनकहेउमुनिसुयशतुम्हारा तुमहिंअछतकोबरनैपारा
अपनेमुखतुमआपनकरणी बारअनेकभाँतिबहुबरणी
नहिंसंतोषतोपुनिकछुकहहु जिनरिसरोकदुसहदुखसहहु
बीरब्रतितुमधीरअछोभा ॥ गारीदेतनपावहुशोभा + ॥

सूरसमरकरणीकरहिंकहिनजनावहिंआपु।
बिद्यमानरणपायरिपुकायरकरहिंप्रलापु।

तुमतोकालहाँकिजनुलावा बारबारमोहिलागिबुलावा
सुनतलषनकेबचनकठोरा। परशुसुधारेउकरघोरा॥
अबजनिदेहुदोषमहिलोगू कटुबादीबालकबधयोगू
बालबिलोकिबहुतमैंबाँचा अबयहमरणहारभासांचा॥
कौशिककहाक्षमियअपराधू बालदोषगुणगणहिंनसाधू
करकुठारमैंअकरणकोही॥ आगेअपराधीगुरुद्रोही + ॥
उतरदेतछाड़ौंबिनमारे ॥ केवलकौशिकशीलतुम्हारे
नतुइहिकाटिकुठारकठोरे। गुरुहिंउरिणहोतेउश्रमथोरे

गाधिसुअनकहहृदयहँसिमुनिहीहरिअरिसूझ
अयमयखंडऊऊषजिमिअजहुँनबूझअबूझ ॥

कहेउलषनमुनिशीलतुम्हारा कोनहिंजानबिदितसंसारा॥
मातुहिंपितहिंउरिणभयनीके गुरुऋणरहासोचबड़जीके॥
सोजनुहमरेमाथेकाढ़ा + ॥ दिनचलिगएउब्याजबहुबाढ़ा
अबआनियब्यवहरियाबोली तुरतदेवमैंथैलीखोली + ॥
सुनिकटुबचनकुठारसुधारा हाहाकहिसबलोगपुकारा॥

भृगुबरपरसुदेखावहुमोही विप्रबिचारिबचौंनृपद्रोही।
मिलेनकबहुंसुभटरणगाढ़े द्विजदेवताघरहिकेबाढ़े ~॥
अनुचितकहसबलोगपुकारे रघुपतिसैनहिंलषननिवारे।

लषनउतरआहुतिसरसभृगुबरकोपकृशानु॥
बढ़तदेखिजलसमबचनबोलेरघुकुलभानु॥

नाथकरहुबालकपरछोहू सूधदूधमुखकरियनकोहू॥
जोपैप्रभुप्रभावकछुजाना। तौकिबराबरकरतअयाना॥
जौलरिकाकछुअचगरिकरहीं गुरुपितुमातुमोदमनभरहीं॥
करियकृपाशिशुसेवकजानी तुमसमशीलधीरमुनिज्ञानी॥
रामबचनसुनिकछुकजुड़ाने कहिकछुलषनबहुरिमुसकाने
हंसतदेखिनखसिखरिसव्यापी रामतोरभ्राताबड़पापी॥
गौरशरीरश्याममनमाहीं। कालकूटमुखपयमुखनाहीं
सहजटेढ़अनुहरैनतोही॥ नीचमीचसमलषैमोही॥

लषनकहेउहंसिसुनहुमुनिक्रोधपापकरमूल॥
जेहिवसजनअनुचितकरहिंचरहिंविश्वप्रतिकूल।

मैंतुम्हारअनुचरमुनिराया। परिहरकोपकरियअबदाया
टूटचापनहिंजुरहिंरिसाने बैठियहोइहिंपायपिराने ~॥
जौअतिप्रियतौकरियउपाई जोरियकोउबड़गुनीबुलाई
बोलतलषनहिंजनकडराहीं मष्टकरहुअनुचितभलनाहीं
थरथरकांपहिंपुरनरनारी छोटकुमारखोटअतिभारी
भृगुपतिसुनिसुनिनिर्भयबानी रिसितनुजरैहोयबलहानी॥

बोलेरामहिदेहिनिहोरा। बचौबिचारबंधुलघुतोरा।
मनमलीनतनसुंदरकैसे॥ बिषरसभराकनकघजैसे

सुनिलक्ष्मणबिहँसेबहुरिनयनतरेरेराम॥
गुरुसमीपगवनेसकुचिपरिहरबाणीबाम

अतिबिनीतमृदुसीतलबाणी बोलेरामजोरिजुगपाणी॥
सुनहुनाथतुमसहजसुजाना। बालकबचनकरियनहिंकाना।
बरैबालकएकसुभाऊ॥ इनहिंनसंतबिदूषहिंकाऊ।
तिननाहींकछुकाजबिगारा अपराधीमैंनाथतुम्हारा॥
कृपाकोपबधबंधुगुसाँई। मोपरकरियदासकीनाईं।
कहियबेगजेहिबिधरिसजाई मुनिनायकसोकरियउपाई
कहमुनिरामजाइरिसकैसे अजहुँबंधुतवचितवअनैसे
यहिकेकंठकुठारनदीन्हा। तोमैंकहाकोपकरिकीन्हा

टी॰
रा॰ बा॰
२८४

दो॰ गर्भस्रवहिंअवनिपरवनिसुनिकुठारगतिघोर
परसुअछतदेखौंजियतबैरीभूपकिशोर ॥

बहैनहाथदहैरिसछाती॥ भाकुठारकुंठितनृपघाती
भयउबामबिधिफिरेउसुभाऊ मोरेहृदयकृपाकसकाऊ
आजुदयादुखदुसहसहावा। सुनुसौमित्रिबिहँसिसिरना
बाउकृपामूरतिअनुकूला। बोलतबचनझरतजनुफूला।
जोपैकृपाजरैमुनिगाता। क्रोधभयेतनुराखुबिधात
देखजनककहठबालकएहू कीन्हचहतजड़यमपुरगेहू
बेगिकरहुकिनआंखिनओट देखतछोटखोटनृपढोटा॥

यह मूर्त्ति परशुराम आगमन की

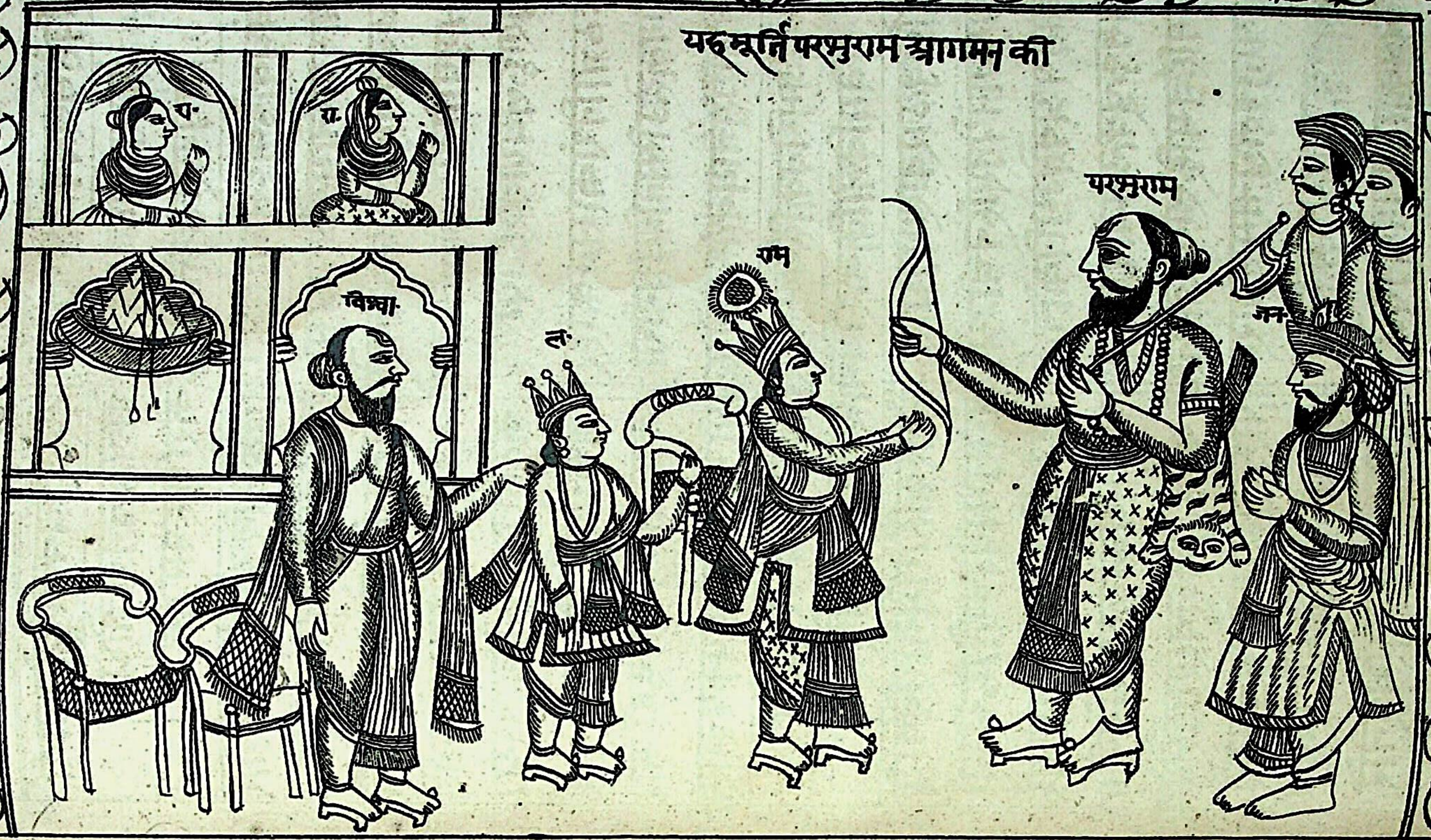
रा॰
विश्वा॰
ल॰
राम
परशुराम
जन॰

बिहँसेलषनकहामनमांही। मूंदेंआंखकतहुँकोउनाहीं

परशुरामतबरामप्रतिबोलेबचनसक्रोध।
शंभुशरासनतोरिसठकरसिहमारप्रबोध

बंधुकहैकटुसंमततोरे। तूछलबिनयकरसिकरजो
करुपरितोषमोरसंग्रामा। नाहिनछोड़ुकहावबरामा
छलतजिकरहुसमरशिवद्रोही बंधुसहितनतुमारौंतोही
भृगुपतिबकहिंकुठारउठाये मनमुसकाहिंरामसिरनाये
गुणहुलषणकरहमपररोषू कतहुंसुधाइहुतेंबड़दोषू।
टेढ़जानिशंकासबकाहू बक्रचंद्रमैंग्रसैनराहू॥
रामकहेउरिसतजियमुनीशा करकुठारुआगेयहशीसा।
जेहिरिसिजायकरियसोइस्वामी मोहिजानआपनअनुगा

प्रभुसेवकहिंसमरकसतजहुबिप्रबररोष॥
बेषबिलोकिकहेसिकछुबालकहूंनहिंदोष

देखिकुठारबाणधनुधारी भैलरकहिंरिसबीरबिचारी
नामजानपैतुमहिंनचीन्हा। बंशसुभावउत्तरतेहिदीन्हा।
जोतुमअवतेउमुनिकीनांई पदरजशिरशिशुधरतगुसांई
क्षमहुचूकअनजानतकेरी चहियबिप्रउरकृपाघनेरी॥
हमहिंतुमहिंसरिबरकसनाथा कहहुनकहांचरणकहँमा
राममात्रलघुनामहमारा परशुसहितबड़नामतुम्हारा
देवएकगुणधनुषहमारे नवगुणपरमपुनीततुम्हारे
सबप्रकारहमतुमसनहारे क्षमहुबिप्रअपराधहमारे

बारबारमुनिबिप्रबरकहारामसनराम॥
बोलेभृगुपतिसरुषहौतुहूंबंधुसमबाम

निपटहिंद्विजकरिजानेउमोही मैंजसबिप्रसुनाउंतोही॥
चाँपस्रुवासरआहुतिजानू कोपमोरअतिघोरकृसानू
समिधसेनचतुरंगसुहाई ×× । महामहीपभयेपसुआई॥
मैंएहिपरसुकाटिबलिदीन्हा। समरयज्ञजगकोटिनकीन्हा
मोरप्रभावबिदितनहिंतोरे। बोलसिनिदरिबिप्रकेभोरे
भंजेउचापदापबड़बाढ़ा। अहमितिमनहुंजीतिजगठाढ़ा
रामकहामुनिकहहुबिचारी रिसअतिबड़िलघुचूकहमारी
छुवतहिंटूटपिनाकपुराना मैंकेहिहेतुकरौंअभिमाना

जोहमनिंदरहिंबिप्रबदिसत्यसुनहुभृगुनाथ।
तौअसकोजगसुभटजेहिभयबसनावहिंमाथ

देवदनुजभूपतिभटनाना। समबलअधिककहौकुबलवाना
जोरणहमहिंप्रचारैकोऊ लरहिंसुखेनकालकिनहोऊ
क्षत्रियतनुधरिसमरसकाना कुलकलंकतेहिपावरआना
कहौंसुभावनकुलहिंप्रशंसी कालहिडरहुनरणरघुबंशी
बिप्रबंशकीअसप्रभुताई ॥ अभयहोयजोतुमहिडेराई
सुनिमृदुबचनगूढरघुपतिके उघरेपटलपरशुधरमतिके
रामरमापतिकरधनुलेहू। खैंचहुमोरमिटैसंदेहू॥
देतचांपआपहिचढ़िगयेऊ परशुराममनबिस्मयभयऊ

जानारामप्रभावतबपुलकप्रफुल्लितगात॥

पंक्ति ११
५४२ चौ०
१ सो० ६८
टी० ॥
अतिगहगहे
अरु भावत
गानि बजान
करे ५ श्लौ
पुलकित
और सबकौ
आनंद भयो
बाजन अति
की भांत की
जनककौ
शोकरहै बिन
धनुषके नटैं क
लोकी विवाह
चापधीन रहौ
सो भयो अब यथा
कुलरीति सब करौ
आनंदपूर्वक इत

जोरिपाणिबोलेबचनप्रेमनहृदयसमान।

जयरघुबंशबनजबनभानू । गहनदनुजकुलदहनकृशानू
जयसुरबिप्रधेनुहितकारी । जयमदमोहकोहभ्रमहारी
बिनयशीलकरुणागुणसागर । जयतिबचनरचनाअतिनागर
सेवकसुखदसुभगसबअंगा । जयशरीरछबिकोटिअनंगा
करौंकहामुखएकप्रशंसा । जयमहेशमनमानसहंसा
अनुचितबहुतकहेउँअज्ञाता । छमहुछमामंदिरदोउभ्राता
कहिजयजयजयरघुकुलकेतू । भृगुपतिगयेउबनहिंतपहेतू
अपभयकुटिलमहीपडराने । जहँतहँकायरगवहिंपराने

देवनदीन्हीदुंदुभीप्रभुपरबरषहिंफूल॥
हरषेपुरनरनारिसबमिटामोहभयशूल॥

अतिगहगहेबाजनेबाजे । सबहिंमनोहरमंगलसाजे
यूथयूथमिलसुमुखिसुनयनी । करहिंगानकलकोकिलबयनी
सुखबिदेहकरबरणिनजाई । जन्मदरिद्रमनहुंनिधिपाई
बिगतत्रासभईसीयसुखारी । जनुबिधुउदयचकोरकुमारी
जनककीन्हकौशिकहिप्रणामा । प्रभुप्रसादधनुभंजेउरामा
मोहिकृतकृत्यकीन्हदोउभाई । अबजोउचितसोकहियगोसाईं
कहमुनिसुनुनरनाहप्रवीना । रहाबिबाहचापआधीना
टूटहिधनुजबभयेउबिवाहू । सुरनरनागबिदितसबकाहू

तदपिजाइतुमकरहुअबयथावंशव्यवहार
बूझिबिप्रकुलवृद्धगुरुबेदबिदितआचार

टी०
रा० बा०
१९८

अथ आपका हाजि
जनक: प्रजा
ऐसा बना यागात
ब्रह्माहुँ चकित
भये हैं जहाँ
साहिबा किशन
हौवी सजन हो
रा यह थल में
आटे हैं प्रतना
अस्थायजमुका
पालीदहतलाहार
आ प्रमबात हम
तां उस: सब्धापूर्व
संनाद प्रभाव
चानबनतकि
या मनुनताहआ
ल्हादक्षापगु
द आनालाह
बराल साजन
की

आशाई अमसगुन सबभयअम दिध्यरधन घरस्वारथ अरुबसिष्ठ अरुबमकी भारवाहिन अरुनरान सालिचलत भय ३०८

दूतअवधपुरपठवहुजाई आनैंनृपदसरथहिबुलाई
मुदितराउकहिभलेहिकृपाला। पठयेदूतनृपहितेहिकाला।
बहुरिमहाजनसकलबुलाए आइसबनसादरसिरनाये
हाटबाटमंदिरसुरबासा। नगरसवारिहुचारिहुपासा।
हरषिचलेनिजनिजगृहआए पुनिपरिचारकबोलपठाए
रचहुबिचित्रबितानबनाई सिरधरिबचनचलेसचुपाई
पठयेबोलिगुणीतिन्हनाना जोबितानबिधिकुशलसुजाना
बिधिहिबंदितिन्हकीन्हअरंभा बिरचेकनककेदलीथंभा॥

हरितमणिनकेपत्रफलपद्मरागकेफूल॥
रचनादेखिबिचित्रअतिमनबिरंचिकेभूल

बेगुहरितमनिमयसबकीन्हे सरलसपर्णपरहिंनहिचीन्हे
कनककलितअहिबेलबनाई लषिनहिपरैसुपर्णसुहाई
तेहिकेरचिपचिबंधबनाये बिचबिचमुकतादामसुहाए
मानिकमरकतकुलिशपिरोजा। चीरकोरपचिरचेसरोजा।
कियेभृंगबहुरंगबिहंगा। गुंजहिंकूजहिंपवनप्रसंगा।
सुरप्रतिमाखंभनगहिकाढे मंगलद्रव्यलियेसबठाढे॥
चौकेभांतिअनेकपुराये। सिंदुरमणिमयसहजसुहाये

सौरभपल्लवसुभगसुठिकियेनीलमणिकोर
हेमबौरमरकतघबरिलसतपाटमयडोर २॥

रचेरुचिरबरबंदनुवारे॥ मनहुंमनोभवफंदसवारे
मंगलकलशअनेकबनाये। ध्वजपताकपटचमरसुहाये

टी·
रा· बा·
१८९

दीपमनोहरमणिमयनाना जाइनबरणिबिचित्रबिताना
जेहिमंडपदुलहिनिबैदेही सोबरणैअसमतिकविकेही
दूलहरामरूपगुणसागर सोबितानतिहिंलोकउजाग
जनकभवनकीशोभाजैसी गृहगृहप्रतिपुरदेषियतैसी
जेहितिरहुतितेहिसमयनिहारी तेहिलघुलगेभुवनदशचारी
सोसंपदानीचगृहसोहा ॥ सोबिलोकिसुरनायकमोहा

बसैनगरजेहिलछिकरिकपटनारिबरभेष ॥
तेहिपुरकीशोभाकहतसकुचेशारदशेष ॥

पहुँचेदूतरामपुरपावन ॥ हरषेनगरबिलोकिसुहावन
भूपद्वारतिन्हखबरजनाई दशरथनृपसुनिलियेबुलाई
करिप्रणामतिन्हपातीदीन्ही मुदितमहीपआपउठिलीन्ही
बारिबिलोचनबांचतपाती पुलकिगातआईभरिछाती
रामलषनउरकरबरचीठी। रहिगयेकहतनखाटीमीठी
पुनिधरिधीरपत्रिकाबांची हरषीसभाबातसुनिसांची।
खेलतरहेतहांसुधिपाई ॥ आएभरतसहितहितभाई॥
पूछतअतिसनेहसकुचाई तातकहांतेपातीआई ॥

कुशलप्राणप्रियबंधुदोउअहहिंकहहुकेहिदेस
सुनिसनेहसानेबचनबाचीबहुरिनरेश * ॥

सुनिपातीपुलकेदोउभ्राता। अधिकसनेहसमातनगात
प्रीतिपुनीतभरतकीदेखी सकलसभासुखलहेउबिशेष
तबनृपदूतनिकटबैठारे ॥ मधुरमनोहरबचनउचारे॥

भैयाकुशलकहहुदोउबारे तुमनीकेनिजनयननिहारे
श्यामलगौरधरेधनुभाथा बयकिशोरकौशिकमुनिसाथा
पहिचानेतौकहहुसुभाऊ प्रेमविवशपुनिपुनिकहराऊ
जादिनतेमुनिगयेउलिवाई तबतेंआजुसांचसुधिपाई
कहहुविदेहकवनविधिजाने सुनुप्रियवचनदूतमुसकाने

सुनहुमहीपतिमुकुटमणितुमसमधन्यनकोउ
रामलषनजिनकेतनयविश्वविभूषणदोउ॥

पूछनयोगतनयतुम्हारे पुरुषसिंहतिहुंपुरउजियारे
जिनकेयशप्रतापकेआगे शशिमलीनरविसीतललागे
तिनकहँकहियेनाथकिमिचीने देखियरविहिकिदीपकलीने
सीयस्वयंबरभूपअनेका। सिमिटेसुभटएकतेंएका॥
शंभुसरासनकाहुनटारा। हारेसकलवीरवरिआरा॥
तीनलोकमहँजेभटमानी सबकीशक्तिशंभुधनुभानी
सकैउठाइसरासुरमेरू सोउहियहारिगयउकरफेरू
जेहिकौतुकशिवशैलउठावा। सोउतेहिसभापराभवपावा

दो. रा. बा. २९१

तहांरामरघुवंशमणिसुनियमहामहिपाल
भंजेउचापप्रयासबिनुजिमिगजपंकजनाल

सुनिसरोषभृगुनायकआये बहुतभांतितिनआंखिदिखाये
देखिरामबलनिजधनुदीन्हा करिबहुविनयगवनबनकीन्हा
राजनरामअतुलबलजैसे। तेजनिधानलषनपुनितैसे॥
कंपहिंभूपबिलोकतजाके जिमिगजहरिकिशोरकेताके

टी॰
रा॰ बा॰
२५२

खेदेखतवबालकदोऊ। अवनिआँखतरआवनकोऊ
दूतबचनरचनाप्रियलागी प्रेमप्रतापबीररसपागी॥
सभासमेतराउअनुरागे। दूतहिदेननिछावरलागे॥
कहिअनीतितेउमूँदेउकाना धर्मबिचारिसबहिसुखमा

तबउठिभूपबसिष्ठकहँदीन्हपत्रिकाजाइ २॥
कथासुनाईगुरुहिसबसादरदूतबुलाइ ॥

सुनिबोलेमुनिअतिसुखपाई पुन्यपुरुषकहँमहिसुखछाई
जिमिसरितासागरमहँजाई यद्यपिताहिकामनानाई॥
तिमिसुखसंपतिबिनाबुलाए धर्मशीलपहँजाहिसुभाए
तुमगुरबिप्रधेनुसुरसेवी तसपुनीतकौशिल्यादेवी॥
सुकृतीतुमसमानजगमाहीं भयउनहैकोउहोनेउनाहीं
तुमतेअधिकपुन्यबड़काके राजनरामसरससुतजाके
बीरबिनीतधर्मब्रतधारी। गुणसागरबालकबरचारी
तुमकहँसर्बकालकल्याना सजहुबरातबजाइनिसाना॥

चलेउबेगिगुरुबचनसुनिभलेहिनाथसिरनाइ
भूपतिगवनेभवनतबदूतन्हिबासदिवाइ ॥

राजासबरनिवासबुलाई। जनकपत्रिकाबाँचसुनाई॥
सुनिसंदेशसकलहरषानी अपरकथासबभूपबखानी
प्रेमप्रफुल्लितराजैंरानी॥ मनहुँशिखिनसुनिबारिदबा
मुदितअसीसदेहिंगुरुनारी अतिआनंदमगनमहतारी
लेहिंपरस्परअतिप्रियपाती हृदयलगायजुड़ावहिंछाती

रामलषनकीकीरतिकरणी बारहिंबारभूपबहुबरणी॥
मुनिप्रसादकहिद्वारसिधाए रानिन्हतबमहिदेवबुलाए॥
दियेदानआनंदसमेता ॥ चलेबिप्रबरआशिषदेता॥

सो॰ याचकलियेहंकारिदीन्हनिछावरिकोटिबिधि
चिरजीवहुसुतचारिचक्रवर्तिदशरथ्थके ॥

कहतचलेपहिरेपटनाना। हरषिहनेगहगहेनिसाना॥
समाचारसबलोगनपाये। लागेघरघरहोनबधाये॥
भुवनचारिदशभरेउउछाहू जनकसुतारघुबीरबिवाहू
सुनिशुभकथालोगअनुरागे मगगृहगलीसवारनलागे॥
यद्यपिअवधसदैवसुहावनि रामपुरीमंगलमयपावनि॥
तदपिप्रीतिकीरीतिसुहाई मंगलरचनारचीबनाई + ॥
ध्वजपताकपटचामरचारू छावापरमबिचित्रबजारू।
कनककलशतोरणमणिजाला हरददूबदधिअक्षतमाला॥

दो॰ मंगलमयनिजनिजभवनलोगनरचेबनाइ।
बीथीसींचीअरगजनु चौकेचारुपुराइ + + ॥

जहँतहँयूथयूथमिलिभामिनि सजिनवसप्तसकलदुतिदामिनि
बिधुबदनीमृगशावकलोचनि निजसरूपरतिमानबिमोचनि
गावहिंमंजुलमंगलबानी॥ सुनिकलरवकलकंठलजानी
भूपभवनकिमिजाइबखाना। बिश्वबिमोहनरचेउबिताना।
मंगलद्रव्यमनोहरनाना ॥ राजतबाजतबिपुलनिसाना।
कतहुंबिरदबंदीउच्चरहीं॥ कतहुंबेदधुनिभूसुरकरहीं

दो· रा·बा· २९४

गावहिंसुंदरमंगलगीता॥ लैलैनामरामअरुसीता॥
बहुतउछाहभुवनअतिथोरा मानहुउमगिचलाचहुंओरा

शोभादशरथभवनकीकोकबिबरनैपार ॥
जहांसकलसुरसीसमणिलीन्हरामअवतार

भूपभरतपुनिलियेबुलाई। हयगयस्यंदनसाजहुजाई
चलहुबेगिरघुबीरबराता सुनतपुलकपूरेदोउभ्राता
भरतसकलसाहनीबुलाए आयसुदीन्हमुदितउठिधाए
रुचिरुचिजीननतुरंगतिनसाजे बर्णबर्णबरबाजिबिराजे॥
सुभगसकलसुठिचंचलकरणी अयइवजरतधरतपगुधरणी
नानाजातिनजायबखाने॥ निदरिपवनजनुचहतउडाने॥
तिनसबछयलभएअसवारा भरतसरिसबयराजकुमारा
सबसुंदरसबभूषणधारी। करशरचापतूणकटिभारी

छरेछबीलेछयलसबसूरसुजाननबीन ॥
युगपदचरअसवारप्रतिजेअसुकलाप्रबीन

बांधेबिरदबीररणगाढ़े॥ निकसिभयेपुरबाहरठाढे
फेरहिंचतुरतुरंगहिनाना। हरषहिंधुनिसुनिपणवनिसा
रथसारथिनबिचित्रबनाये ध्वजपताकमणिभूषणछाये
चवरुचारुकिंकिणिध्वनकरहीं भानुयानशोभाअपहरहीं॥
श्यामकर्णअगणितहयहोते तेतिनरथनसारथिनजोते॥
सुंदरसकलअलंकृतसोहैं। जिनहिंबिलोकिमुनिनमनमो
जेजलचलहिंथलहिकीनाँई टापनबूडबेगिअधिकाई॥

अस्त्रशस्त्रसबसाजबनाई। रथीसारथिनलियेबुलाई॥

चढ़िचढ़िरथबाहरनगर लागीजुरनबरात॥
होतसगुनसुंदरसबहिंजोजेहिकारजजात

कलितकरिन्हपरपरींअंबारी कहिनजाइजेहिभांतिसवारी
चलेमत्तगजघंटबिराजे॥ मनहुँसुभगसावनघनराजे
बाहनअपरअनेकबिधाना। शिविकासुभगसुखासनयाना
तिनिचढ़िचलेबिप्रबरबृंदा। जनुतनुधरेसकलश्रुतिछंदा
मागधसूतबंदिगुणगायक चलेयानचढ़िजोजेहिलायक
बेसरऊंटवृषभबहुजाती॥ चलेबस्तुभरिअगणितभांती
कोटिनकाँवरचलेकहारा। बिबिधबस्तुकोबरनैपारा॥
चलेसकलसेवकसमुदाई निजनिजसाजसमाजबनाई

सबकेउरनिर्भरहरषपूरितपुलकशरीर॥
कबहिंदेखियेनयनभरिरामलषनदोउबीर

दो० रा० बा० २९९

गरजहिंगजघंटाधुनिघोरा रथरवबाजिहंसचहुँओरा हों
निदरिघनहिंघूर्मेहींनिसाना निजपरावकछुसुनियनकान
महाभीरभूपतिकेद्वारे रजहोइजाइपखानपवारे॥
चढ़ीअटारिनदेखहिंनारी। लयेआरतीमंगलथारी॥
गावहिंगीतमनोहरनाना। अतिआनंदनहिंजातबखाना।
तबसुमंतदुइस्पंदनसाजी जोतेरविहयनिंदकबाजी।
दोउरथरुचिरभूपपहआने नहिंशारदपनिजाहिंबखाने
राजसमाजएकरथभ्राजा। दूसरतेजपुंजअतिराजा॥

नहिरथरुचिरबशिष्ठकहँहरषेचढ़ाइनरेश॥
आपुचढ़ेउस्पंदनसुमिरिहरगुरुगौरिगणेश

सहितबसिष्ठसोहनृपकैसे सुरगुरुसंगपुरंदरजैसे॥
करिकुलरीतिबेदबिधिराऊ। देखिसबहिंसबभांतिबनाऊ
सुमिरिरामगुरुआयसुपाई चलेमहीपतिशंखबजाई॥
हरषेबिबुधबिलोकिबराता बरषहिंसुमनसुमंगलदाता
भयउकोलाहलहयगयगाजे व्योमबरातबाजनेबाजे॥
सुरनरनारिसुमंगलगाई। सरसरागबाजहिंसहनाई॥
घंटघंटिधुनिबरणिनजाई। सरौकरैपायकफहराई॥
करैंहिबिदूषककौतुकनाना हाँसकुसलकलगानसुजा

दो॰ तुरंगनचावहिंकुँवरबरअकनिमृदंगनिसान
नागरनटचितवहिंचकितउगहिनतालबिधान

बनैनबरनतबनीबराता॥ होइसगुनसुंदरसुभदाता॥
चाराचाषबामदिशिलेई॥ मनहुँसकलमंगलकहिदेई
दाहिनकागसुखेतसुहावा। नकुलदरशसबकाहूपावा
सानुकूलबहत्रिबिधबयारी सघटसबालआवबरनारी
लोवाफिरफिरदर्शदिखावा। सुरभीसन्मुखशिशुहिपिआ
मृगमालादाहिनदिशिआई। मंगलगणजनुदीनदिखाई
छेमकरीकहछेमबिशेषी स्यामाबामसुतरुपरदेखी
सन्मुखआयेउदधिअरुमीना। करपुस्तकदुइबिप्रप्रबीना॥

दो॰ मंगलमयकल्याणमयअभिमतफलदातार।

पंक्ति२ ८६चौ. ७छं. १सो. दो.॥ कनककलश अरुयेनुथारा बलाविमल ३२लों॰ अरुतग्राम नरकतपार अरुमानीगार आरपूर्वकौं साहसपल जनवासादियो अरुपडनाईअरु कभांतिकियो। प्रियासिक कौशरअवादु जनसहायता कैंअरुपआदु नायकीगढ़केल जानिविश्वामित्र जीलआइमिला

जनुसबसाँचेहुहोनहितभयेसगुनएकबार।

मंगलसगुनसुगमसबताके सगुणब्रह्मसुंदरसुतजाके
रामसरिसबरदुलहिनिसीता समधीदशरथजनकपुनीता।
सुनिअसब्याहसगुनसबनाचे अबकीन्हेबिरंचिहमसांचे।
इहिबिधिकीन्हबरातपयाना हयगयगाजहिंहनहिंनिसाना
आवतजानिभानुकुलकेतू। सरितनजनकबंधाएउसेतू
बीचबीचबरबासबनाये॥ सुरपुरसरिससंपदाछाये।
अशनशयनबरबसनसुहाये पावहिंसबनिजनिजमनभाये
नितनूतनसुखलखिअनुकूले सकलबरातिनमंदिरभूले।

आवतजानिबरातबरसुनिगहगहेनिशान॥
साजिगजरथपदचरतुरंगलेनचलेअगवान॥

कनककलशकलकोपरथारा भाजनललितअनेकप्रकारा
भरेसुधासमसबपकवाना भांतिभांतिनहिंजाइबखाना
फलअनेकबरबस्तुसुहाई हरषिभेटहितभूपपठाई।
भूषणबसनमहामणिनाना खगमृगहयगयबहुबिधियाना।
मंगलसगुनसुगंधसुहाये। बहुतभांतिमहिपालपठाये
दधिचिउराउपहारअपारा भरिभरिकाँवरिचलेकहारा
अगवाननजबदीखबराता उरआनंदपुलकभरगाता
देखिबनावसहितअगवाना मुदितबरातिनहनेनिसाना।

दो· हरषिपरस्परमिलनहितकछुकचलेबगमेल
जनुआनंदसमुद्रदुइमिलतबिहाइसुबेल २॥

दी· रा·बा· १५१

भासीआनंदउ थमाजमेंछायो अरुयातलगन नैंअथपादि आकांतेआधिक उत्साहकयो अरुभरतादि सारनकीबिदा कुबाकुलको आलैरत्साहल स्योतैगुरुमा तैअरुकुमा नैकीयोगपता नैधुरलमी पतिकागोड़ लाखनारद कैकयपुरी

मंगलरूप शुभग्रह गोबेलादि अपंचमीतिथि मूर्तिभाग्यवश गतमास हिलगगृ गौरीरली गौतिहिन गौरगनी रुपुमगा

पृ १८२

बरषिसुमनसुरसुंदरिगावहिं मुदितदेवदुंदुभीबजावहिं ॥
बस्तुसकलराखीनृपआगे बिनयकीन्हितिन्हअतिअनु
प्रेमसमेतराउसबलीन्हा । भैबकसीसयाचकन्हदीन्ह
करिपूजामान्यताबड़ाई ॥ जनवासेकहँचलेलिवाई ॥
बसनबिचित्रपावड़ेपरहीं नृपदशर[illegible]तापपगधरहीं ॥
देखिधनदधनमदपरिहरहीं बरषिसुमनसुरजयजयकर
अतिसुंदरदीन्हेउजनवासा । जहँसबकहँसबभांतिसुपा
जानीसियबरातपुरआई । कछुनिजमहिमाप्रगटजना
हृदयसुमिरिसबसिद्धिबुलाई भूपपहुनईकरणपठाई ॥

दो॰ रा॰ बा॰ २५८

[illegible]सिधिसबसियआयसुअकनिगईजहाँजनवास ॥
लयेसंपदासकलसुखसुरपुरभोगबिलास ॥

सुनत

निजनिजबासबिलोकिबराती सुरसुखसकलसुलभसबभा
बिभवभेदकछुकाहुनजाना सकलजनककरकरहिंबखा
सियमहिमारघुनायकजानी हरषेहृदयहेतुपहिचानी ॥
पितुआगमनसुनतदोउभाई हृदयनआतिआनंदसमाई ॥
सकुचनकहिनसकतगुरुपाहीं पितुलालचदर्शनमनमाहीं
बिश्वामित्रबिनयबड़िदेखी उपजाउरसंतोषबिशेषी ॥
हरषिबंधुदोउहृदयलगाये पुलकअंगलोचनजलछाये
चलेजहाँदशरथजनवासे मनहुँसरोवरतकेपियासे

दो॰ भूपबिलोकेजबहिंमुनिआवतसुतनसमेत
उठेहरषिसुखसिंधुमहँचलेथाहसीलेत ॥

मुनिहिं दंडवत कीन्ह महीशा। बार बार पद रज धरि सीसा
कौशिक राउ लिये उर लाई। कहि असीस पूछी कुसलाई
पुनि दंडवत करत दोउ भाई देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे मृतक शरीर प्राण जनु भेटे।
पुनि बसिष्ठ पद सिर उन नाये प्रेम मुदित मुनिबर उर लाये॥
बिप्र बृंद बंदे दोउ भाई २॥ मन भावती असीसन पाई॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा। लिये उठाइ लाइ उर रामा २॥
हरषे लखन देख दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरण गाता॥

पुरजन परिजन जातिजन याचक मंत्री मीत॥
मिले यथाविधि सबहिं प्रभु परम कृपाल बिनीत

रामहि देख बरात जुड़ानी॥ प्रीति की रीति न जाइ बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत चारी जनु धन धर्मादिक तनु धारी
सुतन सहित दशरथ कह देखी मुदित नगर नर नारि बिशेषी
सुमन बरषि सुर हनहिं निसाना नाकनटी नाचहिं करि गाना॥
सतानंद अरु बिप्र सचिव गण। मागध सूत बिदुष बंदीजन।
सहित बरात राउ सनमाना आयसु मांगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगन ते आई। तातें पुर प्रमोद अधिकाई॥
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं बढ़उ दिवस निसि बिधि सन कहहीं।

रामसीय शोभा अधिक सुकृत अवध दोउ राज
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिल नर नारि समाज

जनक सुकृत मूरति बैदेही॥ दशरथ सुकृत राम धरि देही

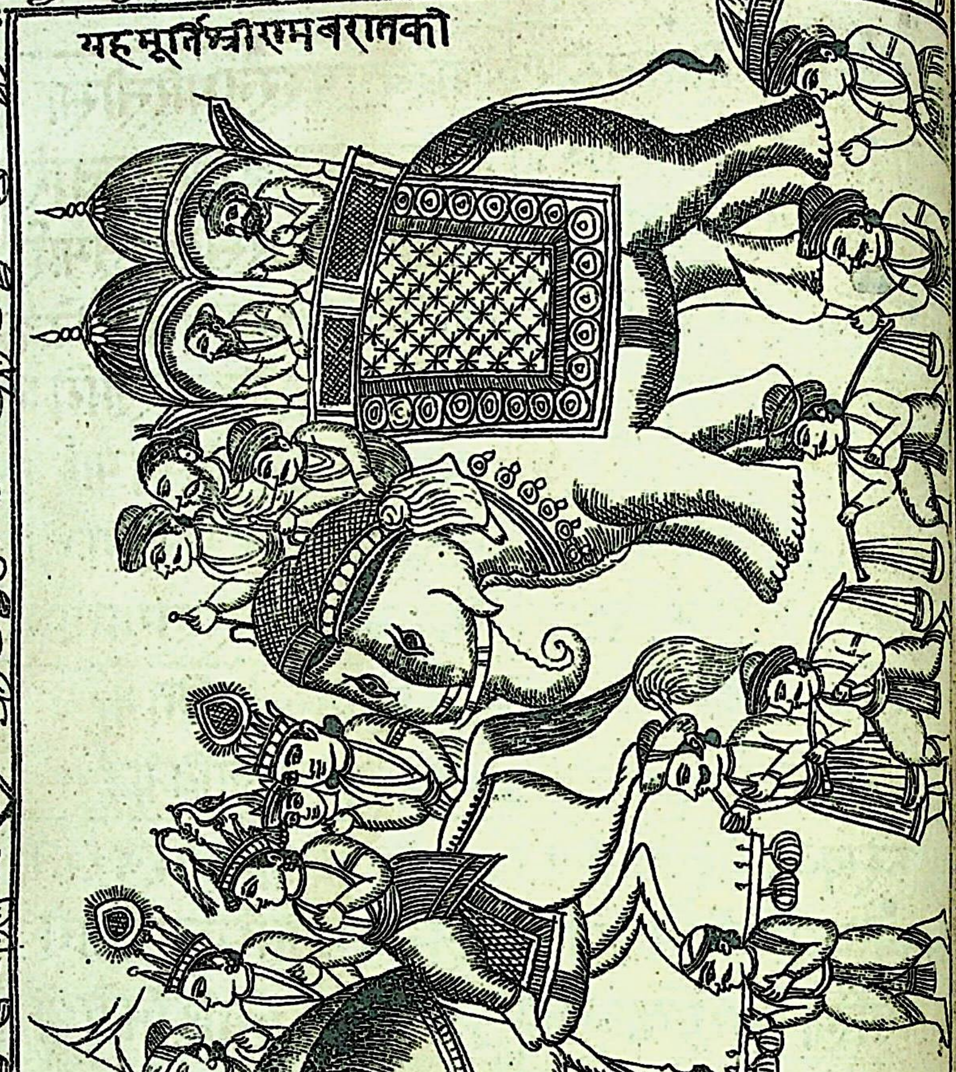

यहमूर्तिश्रीरामबरातकी

इनसमकाहुनशिवअवराधे काहुनइनसमानफलसाधे
इनसमकोउनभयेउजगमाहीं हैनहींकतहूंहोनेउनाहीं
हमसबसकलसुकृतकीराशी भयेजगजन्मिजनकपुरबासी
जिनजानकीरामछबिदेषी कोसुकृतीहमसरसबिशेषी
पुनिदेषबरघुबीरबिवाहू लेबभलीबिधिलोचनलाहू
कहहिंपरस्परकोकिलबयनी यहबिवाहबड़लाभसुनयनी
बड़ेभागबिधिबातबनाई नयनअतिथिहोइहैंदोउभाई

बारहिबारसनेहबसजनकबुलाउबसीय।
लेनआइहहिंबंधुदोउकोटिकामकमनीय।

बिबिधभांतिहोइहिपहुनाई प्रियनकाहिअससासुरमाई
तबतबरामलषनहिंनिहारी होइहहिंसबपुरलोगसुखारी
सखिजसरामलषनकरजोटा तैसेइभूपसंगदोइढोटा॥
स्यामगौरसबअंगसुहाये तेसबकहहिंदेषजेआये
कहाएकमैंआजुनिहारे॥ जनुबिरंचिनिजहाथसँवारे
भरतरामहीकीअनुहारी सहसालषनसकहिंनरनारी
लषनशत्रुसूदनइकरूपा। नखशिखतेसबअंगअनूपा
मनभावहिंसुखबरणिनजाईं उपमाकहँत्रिभुवनकोउनाईं

छं·उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुंकबिकोबिदकहैं
बलबिनयबिद्याशीलशोभासिंधुइनसमयेअहैं॥
पुरनारिसकलपसारिअंचलबिधिहिबचनसुनावहीं
ब्याहियसुचारिउभाइइहिपुरहमसुमंगलगावहीं।

टी·
रा· बा·
२०१

सो॰ कहहिंपरस्परनारिबारिबिलोचनपुलकतन
सखिसबकरबपुरारिपुन्यपयोनिधिभूपदोउ॥

एहिबिधिसकलमनोरथकरहीं आनंदउमगिउमगिउरभ
जोनृपसीयस्वयंबरआये॥ देखिबंधुसतिनसुखप
कहतरामयशबिशदबिशाला। निजनिजभवनगयेमहिप
गयेबीतकछुदिनयहिभांती। प्रमुदितपुरजनसकलब
मंगलमूललगनदिनआवा॥ हिमऋतुअगहनमाससुह
ग्रहतिथिनखतयोगबरचारु लगनसोधिबिधिकीन्ह
पठैदीन्हनारदसनसोई॥ गनीजनककेगणकन
सुनीसकललोगनयहबाता कहहिंज्योतिषीअहहिंनि

धेनुधूलिबेलाबिमलसकलसुमंगलमूल॥
बिप्रन कहेउबिदेहसनजानिसमयअनुकूल

उपरोहितहिंकहेउनरनाहा अबबिलंबकरकारणका
सतानंदतबसचिवबुलाये मंगलकलशसाजिसबल
शंखनिसानपनवबहुबाजे। मंगलकलशसगुनसबसा
सुभगसुआसिनिगावहिंगीता। करहिंबेदधुनिबिप्रपुनीत
लेनचलेसादरयहिभांती। गयेजहांजनवासबराती
कौशलपतिकरदेखसमाजू अतिलघुलागतिनहिंसुरा
भयेऊसमयअबधारियपाऊ यहसुनिपरानिशाननिघ
गुरहिंपूछकरकुलबिधिराजा। चलेसंगमुनिसाधुसमा

दो॰ भागपाबिभवअवधेसाकरदेखिदेवब्रह्मादि।

कौल्या
सबकुंवर
नंदपग्रुन
गानिसता
भूमम्य
नं॰
गौ॰
गिरागमि
कौं॰ ड॰ ग्र
अयोहित
हे॰
ह॰
घ॰
शृंगा

सौभाग्यप्रद
काहिशालि
मकसत्रिपर्णं
कौमाहिमाको
आनिअनुरु
मवाउबीन
सबअधिभग
गुंअसमान
पषाविधिअव
दो॰
रा॰ बा॰
२०२
गरपूर्वकौचा
गुंकअवलको
चादिकन्याये
अकजबनार
अनेकप्रकार
करवाहिअफ
पायशमाधिक
बद्धसविनय

लगेसराहनसहसमुखजानिजनमनिजबादि॥

सुरनसुमंगलअवसरजाना। बरषहिंसुमनबजाइनिसाना
शिवब्रह्मादिकबिबुधबरूथा। चढेबिमानन्हनानाजूथा*॥
प्रेमपुलकितनहृदयउछाहू। चलेबिलोकनरामबिवाहू॥
देखिजनकपुरसुरअनुरागे। निजनिजलोकसबहिंलघुलागे
चितवहिंचकितबिलोकिबिताना। रचनासकलअलौकिकनाना॥
नगरनारिनररूपनिधाना॥ सुघरसुधर्मसुशीलसुजाना॥
तिनहिंदेखिसबसुरसुरनारी। भयेनखतजनुबिधुउजियारी
बिधिहिभयेउआश्चर्यबिशेषी। निजकरणीकछुकतहूनदेखी

शिवसमुझायेदेवसबजनिआश्चर्यभुलाहु॥
हृदयबिचारहुधीरधरिसियरघुबीरबिवाहु

जिनकरनामलेतजगमाहीं। सकलअमंगलमूलनसाहीं॥
करतलहोहिंपदारथचारी। तेसियरामकहेउकामारी॥
हिबिधिशंभुसुरन्हसमुझावा। पुनिआगेबरबसहचलावा॥
देवनदेखेदशरथजाता॥ महामोदमनपुलकितगाता
साधुसमाजसंगमहिदेवा। जनुतनुधरेकरहिंसुरसेवा॥
सोहतसाथसुभगसुतचारी। जनुअपबर्गसकलतनुधारी।
रकतकनकबरणबरजोरी। देखिसुरन्हभैंप्रीतिनथोरी॥
निरामहिंबिलोकिहियहर्षे। नृपहिंसराहिंसुमनतिनबर्षे

दो॰रामरूपनखसिखसुभगबारहिंबारनिहारि
पुलकगातलोचनसजलउमासमेतपुरारि*॥

केकिकंठदुतिश्यामलअंगा तड़ितबिनिंदकबसनसु
ब्याहबिभूषणबिबिधबनाए मंगलमयसबभांतिसुहा
शरदबिमलबिधुबदनसुहावन नयननवलराजीवलजा
सकलअलौकिकसुंदरताई कहिनजाइमनहीमनभा
बंधुमनोहरसोहहिंसंगा। जातनचावतचपलतुरं
राजकुंवरबरबाजिनचावहिं बंशप्रसंसकबिरदसुना
जेहितुरंगपररामबिराजे॥ गतिबिलोकिखगनाय
कहिनजाइसबभांतिसुहावा। बाजिबेषजनुकामबना

छं·जनुबाजिबेषबनायमनसिजरामहितअतिसोहई
अपनवयबलरूपगुणगतिसकलभुवनबिमोहई
जगमगतजीनजड़ावजोतिसुमोतिमानिकतेहिलै
किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनि
दो·प्रभुमनसहिलयलीनमनचलतबाजिछबिपा
भूषणउडुगणतड़ितघनजनुबरबरहिनचा

जेहिबरबाजिरामअसवारा तेहिशारदहुंनबरनैपा
शंकररामरूपअनुरागे॥ नयनपंचदशअतिप्रिय
हरिहितसहितरामजबजोहे रमासमेतरमापतिमो
निरखिरामछबिबिधिहरषाने आठैनयनजानिपछिता
सुरसेनपउरबहुतउछाहू बिधितेड्यौढलोचनला
रामहिचितवसुरेशसुजाना। गोतमशापपरमहितमा
देवसकलसुरपतिहिसिहांहीं आजुपुरंदरसमकोउना

मुदितदेवगणरामहिंदेखी नृपसमाजदुहुंहरषविशेषी

छं॰ अतिहर्षराजसमाजदुहुंदिशिदुंदुभीबाजहिंघनी।
बरषहिंसुमनसुरहरषिकहजयजयतिजयरघुकुलमनी।
इहिंभांतजानबरातआवतबाजनेबहुबाजहीं ॥
रानिसुआसनिबोलपरिछनहेतुमंगलसाजहीं।
दो॰ सजिआरतीअनेकबिधिमंगलसकलसँवारि
चलीमुदितपरिछनकरनगजगामिनिबरनारि

बिधुबदनीमृगशावकलोचनि सबनिजतनुछबिरतिमदमोचनि
पहरेबरनबरनबरचीरा॥ सकलबिभूषणसजेसरीरा
सकलसुमंगलअंगबनाये। करहिंगानकलकंठलजाये
कंकणकिंकिणिनूपुरबाजहिं चालबिलोकिकामगजलाजहिं
बाजहिंबाजनबिबिधप्रकारा नभअरुनगरसुमंगलचारा
सचीसारदारमाभवानी ॥ जेसुरतियशुचिसहजसयानी
कपटनारिबरभेषबनाई ॥ मिलीसकलरनबासहिंआई
करहिंगानकलमंगलबानी हरषबिबससबकाहुनजानी

छं॰ कोजानकेहिआनंदबससबब्रह्मबरपरिछनचली।
कलगानमधुरनिशानबरषहिंसुमनसुरशोभाभली।
आनंदकंदबिलोकिदूलहसकलहियहरषितभई
अंभोजअंबकअंबुउमगिसुअंगपुलकावलिछई
दो॰ जोसुखभासियमातुमनदेखिरामबरभेष॥
सोनसकहिंकहिकल्पशतसहसशारदाशेष।

री॰
रा॰ बा॰
२०५

नयननीरहठमंगलजानी परिछनकरहिंमुदितमनरानी
बेदबिहितअरुकुलव्यवहारू कीन्हभलीबिधिसबपरिचारू
पंचशब्दधुनिमंगलगाना। पटपाँवड़ेपरहिंबिधिनाना
करिआरतिअरघतिन्हदीन्हा रामगवनमंडपतबकीन्हा।
दशरथसहितसमाजबिराजे बिभवबिलोकिलोकपतिलाजे
समयसमयसुरबर्षहिंफूला। शांतिपढ़हिंमहिसुरअनुकूला।
नभअरुनगरकोलाहलहोई आपनपरकछुसुनैनकोई॥
एहिबिधिराममंडपहिंआये अर्घदेइआसनबैठाये ५॥

छं॰ बैठारिआसनआरतीकरिनिरखिबरसुखपावहीं
मणिबसनभूषणभूरिवारहिंनारिमंगलगावहीं॥
ब्रह्मादिसुरबरबिप्रबेषबनायकौतुकदेखहीं॥
अवलोकिरघुकुलकमलरविछबिसुफलजीवनलेखहीं

दो॰ नाऊबारीभाटनटरामनिछावरिपाइ ५॥
मुदितअसीसहिंनाइसिरहर्षनहृदयसमाइ।

मिलेजनकदशरथअतिप्रीती करिबैदिकलौकिकसबरीती
मिलतमहादोउराजबिराजे उपमाखोजिखोजिकबिलाजे
लहीनकतहुँहारिहियमानी इनसमयेउपमाउरआनी॥
समधीदेखिदेवअनुरागे। सुमनबरषियशगावनलागे
जगबिरंचिउपजावाजबतें। देखेसुनेब्याहबहुतबतें ५॥
सकलभाँतिसमसाजसमाजू समसमधीहमदेखेआजू॥
देवगिरासुनिसुंदरसांची॥ प्रीतिअलौकिकदुहुदिशिमांची

देनपांवड़ेअर्घसुहाये२॥ सादरजनकमंडपहिंआये

छं॰मंडपबिलोकिबिचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे।
निजपाणिजनकसुजानसबकहँआनिसिंहासनधरे
कुलइष्टसरिसवसिष्ठपूजेबिनयकरिआशिषलही
कौशिकहिंपूजतपरमप्रीतिकिरीतितौनपरेकही
दो॰बामदेवआदिकऋषयपूजेमुदितमहीश
दियेदिव्यआसनसबहिंसबसनलहीअसीस

बहुरिकीन्हकौशलपतिपूजा। जानिईशसमभावनदूजा॥
कीन्हजोरिकरबिनयबड़ाई। कहिनिजभाग्यबिभवबहुताई
पूजेभूपतिसकलबराती॥ समधीसमसादरसबभांती
आसनउचितदियेसबकाहू। कहौंकहामुखएकउछाहू
सकलबरातजनकसनमानी। दानमानबिनतीबरबानी
बिधिहरिहरदिशपतिदिनराऊ। जौजानहिंरघुबीरप्रभाऊ॥
कपटबिप्रबरभेषबनाये॥ कौतुकदेखहिंसबमुखपाये
पूजेजनकदेवसमजाने॥ दियेसुआसनबिनपहिचाने

छं॰पहिचानकोकेहिजानसबहिंअपानसुधिभोरीभई
आनंदकंदबिलोकिदूलहउभयदिशिआनंदमई॥
सुरलखेरामसुजानपूजेमानसिकआसनदये॥
अवलोकिसरलसुभावप्रभुकोबिबुधमनप्रमुदितभये
दो॰रामचंद्रमुखचंद्रछबिलोचनचारुचकोर॥
करतपानसादरसकलप्रेमप्रमोदनथोर२॥

समयबिलोकिबसिष्ठबुलाए। सादरसतानंदसुनिआए॥
बेगिकुंवरुअबआनहुजाई। चलेमुदितमुनिआयसुपाई॥
रानीसुनिउपरोहितबानी॥ प्रमुदितसखिनसमेतसयानी॥
बिप्रबधूकुलवृद्धबुलाई। करिकुलरीतिसुमंगलगाई॥
नारिबेषजेसुरबरबामा॥ सकलसुभायसुंदरीस्यामा॥
तिनहिंदेखिसुखपावहिंनारी। बिनपहिचानप्रानतेंप्यारी॥
बारबारसनमानहिंरानी॥ उमारमासारदसमजानी।
सीयसवांरिसमाजबनाई। मुदितमंडपहिंचलीलिवाई॥

छं॰ चलील्याइसीतहिसखीसादरसजिसुमंगलभामिनी।
नवसप्तसाजेसुंदरीसबमत्तकुंजरगामिनी * * ॥
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं।
मंजीरनूपुरकलितकंकणतालगतिबरबाजहीं॥
दो॰ सोहतिबनितावृंदमहुँसहजसुहावनिसीय।
छबिललनागणमध्यजनुसुषमातियकमनीय॥

सियसुंदरताबरणिनजाई। लघुमतिबहुतमनोहरताई॥
आवतदेखिबरातिनसीता। रूपराशिसबभांतिपुनीता॥
सबहिमनहिमनकीन्हप्रणामा। देखिरामभयेपूरणकामा॥
हरषेदशरथसुतनसमेता। कहिनजायउरआनंदजेता॥
सुरप्रणामकरिबर्षहिंफूला। मुनिअसीसधुनिमंगलमूला॥
गाननिसानकुलाहलभारी। प्रेमप्रमोदनगरनरनारी॥
एहिबिधिसीयमंडपहिंआई। प्रमुदितशांतिपढैंमुनिराई॥

नेहिअवसरकरिबिधिब्यवहारू दुहुकुलगुरुसबकीन्हअचारू।

छं॰ आचारकरिगुरगौरिगणपतिमुदितबिप्रपुजावहीं
सुरप्रगटपूजालेहिंदेहिंअसीसमुनिसुखपावहीं॥
मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजेहिसमयमुनिमनमेंचहैं।
भरेकनककोपरकलशसोसबलियेपरिचारकरहैं
कुलरीतिप्रीतिसमेतरविकहदेतसबसादरकियो
इहिभांतिदेवपुजायसीतहिंसुभगसिंहासनदियो
सियरामअवलोकनपरस्परप्रेमकाहुनलषपरै
मनबुद्धिबरबाणीअगोचरप्रगटकविकैसेकरै

दो॰ होमसमयतनुधरिअनलअतिहितआहुतिलेहि
बिप्रभेषधरिबेदसबकहिबिवाहबिधिदेहि॥

सीयमातुकिमिजाइबखानी जनकपाटमहषीजगजानी
सुयशसुकृतसुखसुंदरताई सबसमेटिबिधिरचीबनाई
समयजानिमुनिबरनबुलाई सुनतसुआसिनिसादरल्याई
जनकबामदिशिसोहसुनैना हिमगिरिसंगबनीजनुमयना
कनककलशमणिकोपररूरे सुचिसुगंधमंगलजलपूरे
निजकरमुदितराउअरुरानी धरेरामकेआगेआनी॥
पढ़हिंबेदमुनिमंगलबानी मगनसुमनझरिअवसजानी।
बरबिलोकिदंपतिअनुरागे पायपुनीतपखारनलागे

छं॰ लागेपखारनपायपंकजप्रेमतनुपुलकावली॥
नभनगरगाननिशानजयधुनिउमगिजनुचहुँदिशिचली

जेपदसरोजमनोजअरिउरसरसदैवबिराजहीं॥
जेसुकृतसुमरतिबिमलतामनसकलकलिमलभाजहीं
जेपरसिमुनिबनितालहीगतिरहीजोपातकमई
मकरंदजिनकोशंभुशिरशुचिताअवधसुरबरनईं
करिमधुपमुनिमनयोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहैं
तेपगपखारतभाग्यभाजनजनकजयजयसबकहैं
बरकुंवरिकरतलजोरिशाखोच्चारदोउकुलगुरुकरैं
भयोपाणिग्रहणबिलोकिबिधिसुरमनुजमुनिआनं
सुखमूलदूलहिंदेखिदंपतिपुलकतनहुलसैहियो
करिलोकबेदबिधानकन्यादाननृपभूषणकियो॥
हिमवंतजिमिगिरिजामहेशहिंहरिहिश्रीसागरदई
तिमिजनकरामहिंसियसमर्पीबिश्वकलकीरतिनई
क्यौंकरैबिनयबिदेहकियोबिदेहमूरतिसांवरी
करिहोमबिधिवतगांठजोरीहोनलागीभांवरी॥

दो॰जयधुनिबंदीबेदधुनिमंगलगाननिसान
सुनिहरषैबरषैबिबुधसुरतरुसुमनसुजान॥

कुवरकुंवरिकलभांवरिदेहीं नयनलाभसबसादरलेहीं
जाइनबरणिमनोहरजोरी॥ जोउपमाकछुकहियेसोथ
रामसीयसुंदरपरिछाहीं॥ जगमगाहिंमणिखंभनमा
मनहुंमदनरतिधरिबहुरूपा। देखहिंपमबिवाहअनूपा
दरसलालसासकुचनथोरी प्रगटतदुरतबहोरिबहोरी

भयेमगनसबदेखनहारे । जनकसमानअपानबिसारे
प्रमुदितमुनिनभाँवरीफेरी । नेगसहितसबरीतिनिबेरी॥
रामसीयसिरसिंदुरदेहीं। शोभाकहिनजातबिधिकेही
अरुणपरागजलजभरिनीके । शशिहिभूषअहिलोभअमीके।
बहुरिबसिष्ठदीन्हअनुशासन । बरदुलहिनिबैठेइकआसन

छं॰ बैठेबरासनरामजानकिमुदितमनदशरथभये॥
तनपुलकिपुनिपुनिदेखिअपनेसुकृतसुरतरुफलनये।
भरिभुवनरहाउछाहरामबिवाहभासबहीकहा॥
केहिभाँतिबरणिसिरातरसनाएकयहमंगलमहा
तबजनकपाइबसिष्ठआयसुब्याहसाजसवारिकै
मांडवीश्रुतिकीर्तिउर्मिलाकुँवरिलईहँकारिकै।
कुशकेतुकन्याप्रथमजोगुणशीलसुखशोभामई
सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसोब्याहिनृपभरतहिदई
जानकीलघुभगिनिसकलसुंदरिशिरोमणिजानिकै
सोजनकदीन्हीब्याहलक्ष्मणहिसकलबिधिसनमानिकै
जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसमुखिसबगुणआगरी
सोदईरिपुसूदनहिभूपतिरूपशीलउजागरी २२॥
अनुरूपबरदुलिहिनिपरस्परलषिसकुचहियहर्षहीं
सबमुदितसुंदरतासराहहिंसुमनसुरगणबर्षहीं।
सुंदरीसुंदरबरणसहसबएकमंडफराजहीं २॥
जनुजीवउरचारिउअवस्थाबिभुनसहितबिराजहीं।

दो॰
रा॰बा॰
२२१

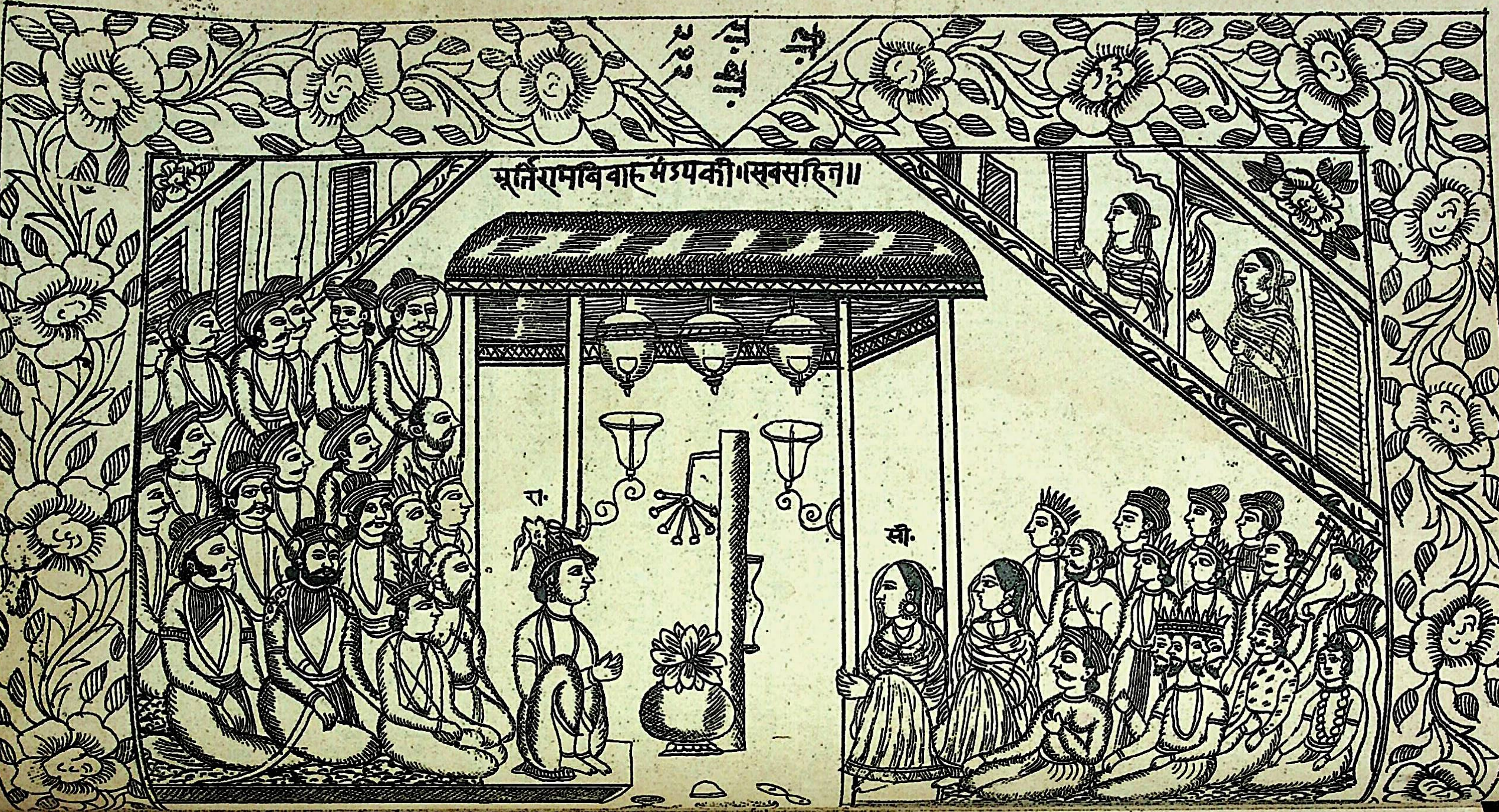

मूर्तिरामविवाहमंडपकी॥सखसहित॥

मुदितअवधपतिसकलसुतबधुनसमेतनिहारि
जनुपायेमहिपालमणिक्रियनसहितफलचारि

जसरघुबीरब्याहबिधिबरणी सकलकुअंरब्याहेतेहिकरणी
कहिनजाइकछुदाइजभूरी। रहाकनकमणिमंडपपूरी।
कोमलबसनबिचित्रपटोरे। भांतिभांतिबहुमोलनथोरे
गजरथतुरगदासअरुदासी धेनुअलंकृतकामदुहासी
बस्तुअनेककरियकिमिलेषा कहिनजाइजानहिंजिनदेषा
लोकपालअवलोकसिहाने। लीन्हअवधपतिसबसुखमानि
दीन्हयाचकन्हजोजेहिभावा उबरासोजनवासहिंआवा
तबकरजोरिजनकमृदुबानी बोलेसबबरातसनमानी

छं॰ सनमानिसकलबरातआदरदानबिनयबड़ाइकै॥
प्रमुदितमहामुनिवृंदबंदेप्रेमपूजिलडाइकै + ॥
सिरनायदेवमनायसबसनकहतकरसंपुटकियें
सुरसाधुचाहतभावसिंधुकितोषजलअंजलिदियें
करजोरिजनकबहोरिबंधुसमेतकोशलरायसों।
बोलेमनोहरबयनसानिसनेहसीलसुभावसों।
संबंधराजनरावरेहमबड़ेअबसबबिधिभये॥
यहराजसाजसमेतसेवकजानिबीबिनुगथलये
येदारकापरिचारकाकरपालबीकरुणामयी
अपराधक्षमिबोबोलिपठयेबहुतहौंढीठौदई।
पुनिभानुकुलभूषणसकलसनमाननिधिसमधीकिये।

दो॰
रा॰ बा॰
२१३

३

कहिजाननहिंबिनतीपरस्परप्रेमपरिपूरणहिये
वृंदारिकागणसुमनबरषहिंराउजनवासहिचले
दुंदुभीजयधुनिबेदधुनिनभनगरकौतूहलभले
तबसखिनमंगलगानकरतिमुनीशआयसुपाइकै
दुलहदुलहिनिन्हसहितसुंदरिचलींकुहबरल्याइकै
दो॰ पुनिपुनिरामहिचितवसियसकुचतिमनसकुचैन
हरतिमनोहरमीनछबिप्रेमपियासेनयन २ ॥

श्यामशरीरसुभायसुहावन शोभाकोटिमनोजलजावन
जावकयुतपदकमलसुहाये मुनिमनमधुपरहतजहँछाये
पीतपुनीतमनोहरधोती ॥ हरतबालरविदामिनिज्योती
कलकिंकिणिकटिसूत्रमनोहर बाहुबिशालबिभूषणसुंदर
पीतजनेउमहाछबिदेई । करमुद्रिकाचोरचितलेई
सोहतव्याहसाजसबसाजे उरआयतउरभूषणराजे॥
पीतउपरनाकाखासोती । दुहुँआचरणलगेमणिमोती
नयनकमलकलकुंडलकाना बदनसकलसौंदर्य्यनिधाना
सुंदरभृकुटिमनोहरनासा भालतिलकरुचिरतबिरनिवा
सोहतमौरमनोहरमाथे ॥ मंगलमयमुकुतामणिगाथे

छं॰ गाथेमहामणिमौरमंजुलअंगसबचितचोरहीं
पुरनारिसुरसुंदरबिलोकहिंनिरषछबितृननोरहीं
मणिबसनभूषणवारिआरतिकरहिंमंगलगावहीं
सुरसुमनबरषहिंसूतमागधबंदिसुयशसुनावहीं

कुहबरहिंआनेकुवरकुवरिसुआसनिनसुखपाइकैं
अतिप्रीतिलौकिकरीतिलागीकरणमंगलगाइकैं
लहकौरिगौरिसिखावरामहिंसीयसबसारदकहैं
रनिवासहासबिलासरसबसजनमकोफलसबलहैं
निजपाणिमणिमहदेषिप्रतिमूरतिसरूपनिधानकी
चालतिनभुजबल्लीबिलोकनिबिरहबसभईजानकी
कौतुकबिनोदप्रमोदप्रेमनजायकहिंजानहिंअली।
बरकुंवरिसुंदरसकलसखिनलिवाइजनवासहिंचली।
तेहिसमयसुनियअसीसजहँतहँनगरनभआनंदमहा
चिरजियहुजोरीचारिचारिउमुदितमनसबहीकहा।
योगीन्द्रसिद्धमुनीशदेवबिलोकिप्रभुदुंदुभीहनी।
चलेहरषिबरषिप्रसूननिजनिजलोकजय२भनी।

दो॰ सहितबधूटिनकुवरसबतबआयेपितुपास
शोभामंगलमोदभरिउमगेउजनुजनवास५॥

पुनिजेवनारिभयउबहुभांती पठयेजनकबुलायबराती॥
परतपांवड़ेबसनअनूपा। सुतनसमेतगवनकियोभूपा
सादरसबकेपांवपखारे॥ यथायोगपीठनबैठारे५॥
धोयेजनकअवधपतिचरना शीलसनेहजाइनहिंबरना॥
बहुरिरामपदपंकजधोये। जोहरहृदयकमलमहँगोये
तीनोंभाइरामसमजानी। धोयेचरणजनकनिजपाणी
आसनउचितसबहिंनृपदीन्हे बोलिसूपकारीसबलीन्हे॥

सादरलगेपरनपनवारे। कनककीलमणिपरणस

सूपोदनसुरभिसुरपिसुंदरस्वादुपुनीत ॥
छणमहुसबकेपरासिगेचतुरसुआरबिनीत

पंचकौरकरिजेवनलागे॥ गारिगानसुनअतिअनुरागे
भांतिअनेकपरेपकवाना सुधासरिसनहिंजाइबखान
परसनलगेसुआरसुजाना व्यंजनबिबिधनामकोजाना
चारिभांतिभोजनबिधिगाई एकएकबिधिबरणिनजाई
छरसरुचिरव्यंजनबहुभांती एकएकरसअगणितजाती
जेवतदेहिंमधुरधुनिगारी लैलैनामपुरुषअरुनारी
समवसुहावनगारिबिराजा हँसतराउसुनिसहितसमाज
इहिबिधिसबहीभोजनकीन्हा आदरसहितआचमनली

दो॰ देइपानपूजेजनकदशरथसहितसमाज ॥
जनवासेगवनेमुदितसकलभूपसिरताज।

नितनूतनमंगलपुरमाहीं निमिषसरिसदिनयामिनिजा
बड़ेभोरभूपतिमनिजागे॥ याचकगुणगणगावनल
देखिकुवरबरबधुनसमेता किमिकहिजातमोदमनजे
प्रातक्रियाकरिगेगुरुपाहीं महाप्रमोदप्रेममनमाहीं
करिप्रणामपूजाकरजोरी बोलेगिराअमियजनुबोरी
तुम्हरीकृपासुनियमुनिराजा भयउआजममपूरणकाजा
अबसबबिप्रबुलाइगुसांई देहुधेनुसबभांतिबनाई
सुनिगुरुकरिमहिपालबड़ाई पुनिपठयेमुनिवृंदबुलाई

बामदेव~~अरुदेव~~अरुदेवऋषिबाल्मीकजाबालि
आयेमुनिबरनिकरतबकौशिकादितपशालि ॥

दंडप्रणामसबहिनृपकीन्हा। पूजिसप्रेमबरासनदीन्हा॥
चारिलक्षबरधेनुमगाई ॥ कामसुरभिसमसीलसुहाई
सबबिधिसकलअलंकृतकीन्ही मुदितमहीपऋषिनकहँदीन्ही
करतबिनयबहुबिधिनरनाहू लहेउँआजुजगजीवनलाहू॥
पाइअसीसमहीपअनंदा। लियेबोलिपुनियाचकवृंदा
कनकबसनमणिहयगयस्यंदन दियेबूझिरुचिरविकुलनंदन॥
चलेपढ़तगावतगुणगाथा। जयजयजयदिनकरकुलनाथा।
एहिबिधिरामबिबाहउछाहू सकैनबरणिसहसमुखजाहू

बारबारकौशिकचरणसीसनाइकहराउ ॥
यहसबसुखमुनिराजतवकृपाकटाक्षप्रभाउ॥

जनकसनेहसीलकरतूती नृपसबभांतिसराहबिभूती
दिनउठिबिदाअवधपतिमांगा राखहिंजनकसहितअनुरागा
नितनूतनआदरअधिकाई दिनप्रतिसहसभांतिपहुनाई
नितिनवनगरअनंदउछाहू दसरथगवनसोहाइनकाहू
बहुतदिवसबीतेयहिभांती जनुसनेहरजुबंधेबराती।
कौशिकसतानंदतबजाई। कहीबिदेहनृपहिसमुझाई
अबदसरथकहँआयसुदेहू। यद्यपिछाड़िनसकहुसनेहू।
भलेहिनाथकहसचिवबुलाए कहजयजीवसीसतिननाये

दो॰ अवधनाथचाहतचलनभीतरकरहुजनाव

रै उनकोबिदा
सीतादिकों
भाइनसुत
रघुनाथजू
व ३५ चलीं
नौबिभातसु
हिरामप
लहिभांत
सबतमाग
१४ वै०
१८ औ० ०
१५ औ० १४ औ० ०
पंक्ति ८

भयेप्रेमबससचिवसुनि बिप्रसभासदराउ॥

पुरबासीसुनिचलीबराता । पूछतबिकलपरस्परबाता
सत्यगवनसुनिसबबिलखाने । मनहुँसांझसरसिजकुमलाने
जहँतहँआवतबसेबराती॥ । तहँतहँसिद्धचलाबहुभाँती
बिबिधभांतिमेवापकवाना । भोजनसाजनजाइबखाना
भरिभरिबसहअपारकहारा । पठयेजनकअनेकसुसारा
तुरगलाखरथसहसपचीसा । सकलसवारेनखअरुसीसा
मत्तसहसदशसिंधुरसाजे॥ । जिनहिंदेखिदिशिकुंजरलाजे
कनकबसनमणिभरिभरिजाना । महिषीधेनुबस्तुबिधिनाना

दो०दाइजअमितनसकियकहिदीन्हबिदेहबहोरि
जोअवलोकतलोकपतिलोकसंपदाथोरि ५॥

सबसमाजएहिभांतिबनाई । जनकअवधपुरदीन्हपठाई
चलीहिबरातसुनतसबरानी । बिकलमीनगणजिमिलघुपानी
सुनिपुनिसीयगोदकरिलेहीं । देइअसीससिखावनुदेहीं॥
होएहुसंततपियहिपियारी । चिरुअहिबातअसीसहमारी
सासुससुरगुरुसेवाकरेहू । पतिरुखलखिआयसुअनुसरेहू
अतिसनेहबससखीसयानी । नारिधरमसिखवहिंमृदुबानी
सादरसकलकुँवरिसमुझाई । रानिन्हबारबारउरलाई॥
बहुरिबहुरिभेटहिँमहतारी । कहहिंबिरंचिरचीकितनारी

दो०तेहिअवसरभाइन्हसहितरामभानुकुलकेतु
चलेजनकमंदिरमुदितबिदाकरावनहेतु ५॥

करादि तहांली
रानाकोप्रेमब
भावउकीरहा
प्रजनकन
पठंपावनबे
प्रेमवेलिता
होप्रंतहसाथ
कोसआदिथने
उतरिमिलेप्रन

टी०
रा० बा०
२१८

रामचंद्रजीचलिहैं
भाइनतेनगमिलन
संयुतमिलेरघु
नाथजीकोंदेखा
लक्ष्मणविदित
कोनिजपुर
पधारेअस
बरातअयोध्या
आईतहांकीशोभा
अधिकाई
यथाचित
बबहरपर
छनइत्यादि
कासंदरसों

हेगानअंइ—
हृदयँगाजी
स्यकाहिंसन
कोविनकीअस
आसननकेकी
नयुतनिबिध
भाँतिपरतोषि
चलेहनुमेयपुर
यानिकेप्रथमपू
रुभागमेंमो
जनउचितगा
नकींसयन
स्थानमेंगए
नंगराजाग्रह
चलैकौंभम
बासल्भवा
नकियानकी
॥ ३५१ ॥
॥ ॥ ॥

चारिउभाइसुभायसुहाये नगरनारिनरदेखनधाए॥
कोउकहचलनचहतहहिंआजू कीन्हबिदेहबिदाकरसाजू
लेहुनयनभरिरूपनिहारी॥ प्रियपाहुनेभूपसुतचारी॥
कोजानैकेहिसुकृतसयानी नयनअतिथिकीन्हेबिधिआनी
मरनशीलजिमिपाइपियूषा सुरतरुलहैजन्मकरभूषा॥
पावनारकीहरिपदजैसे इन्हकरदरशनहमकहँतैसे॥
निरखिरामशोभाउरधरहू। निजमनफनिमूरतिमनिकरहू
इहिबिधिसबहिनयनफलदेता। गयेकुँवरसबराजनिकेता॥

रूपसिंधुसबबंधुलखिहरषिउठेरनिवासु॥
करहिंनिछावरआरतीमहामुदितमनसासु

देखिरामछबिअतिअनुरागी। प्रेमबिवसपुनिपुनिपदलागी
रहीनलाजप्रीतिउरछाई॥ सहजसनेहबरनिकिमिजाई॥
भाइन्हसहितउबटिअन्हवाये छरसअसनअतिहेतुजेवाए
बोलेरामसुअवसरजानी। सीलसनेहसकुचमयबानी॥
राउअवधपुरचहतसिधाए बिदाहोनहमइहाँपठाए॥
मातुमुदितमनआयसुदेहू बालकजानिकरबनितनेहू
सुनतबचनबिलखेउरनिवासू बोलनसकहिंप्रेमबससासू॥
हृदयलगाइकुँवरिसबलीन्ही पतिनसौंपिबिनतीअतिकीन्ही

छं॰ करिबिनयसियरामहिंसमर्पीजोरिकरपुनिपुनिकहैं
बलिजाउँतातसुजानतुम्हकहँबिदितगतिसबकीअहैं
परिवारपुरजनमोहिराजहिंप्रानप्रियसियजानबी

टी॰
रा॰ बा॰
२२०

तुलसीसुसीलसनेहलखिनिजकिंकरीकरिमानवी
सो॰तुमपरिपूरनकामजानिसिरोमनिभावप्रिय।
जनगुनगाहकरामदोषदलनकरुनाअयन॥

असकहिरहीचरनगहिरानी प्रेमपंकजनुगिरासमानी
सुनिसनेहसानीबरबानी। बहुबिधिरामसासुसनमा
रामबिदामांगोकरजोरी॥ कीन्हप्रनामबहोरिबहो
पाइअसीसबहुरिसिरनाई भाइन्हसहितचलेरघुरा
मंजुमधुरमूरतिउरआनी भईसनेहसिथिलसबरा
पुनिधीरजधरिकुंवरिहंकारी बारबारभेटहिंमहतारी।
पहुंचावहिंफिरमिलहिंबहोरी बढ़ीपरस्परप्रीतिनथोरी
पुनिपुनिमिलतसखिनबिलगाई बालबछजिमिधेनुलवा

दो॰प्रेमबिबसनरनारिसबसखिनसहितरनिवास
मानहुकीन्हबिदेहपुरकरुणाबिरहनिवास॥

सुकसारिकाजानकीजिआए कनकपिंजरनराखिपढ़
व्याकुलकहहिंकहांबैदेही सुनिधीरजपरिहरैनकेह
भयेबिकलखगमृगएहिभांती मनुजदसाकैसेकहिजा
बंधुसमेतजनकतबआये प्रेमउमगिलोचनजलछा
सीयबिलोकिधीरताभागी रहेकहावतपरमबिरागी
लीन्हराउउरलाइजानकी। मिटीमहामर्यादज्ञानकी
समुझावतसबसचिवसयाने कीन्हबिचारअनवसरजा
बारहिबारसुताउरलाई। सजिसुंदरपालकीमंगा

दो॰ प्रेमबिबसपरिवारसब जानिसुलगननरेश
कुंवरिचढ़ाईपालकी सुमरेसिद्धगणेश ॥

बहुबिधभूपसुतासमुझाई नारिधर्मकुलरीतिसिखाई
दासीदासदियेबहुतेरे ॥ सुचिसेवकजेप्रियसियकेरे
सीयचलतब्याकुलपुरबासी होंहिंसगुनशुभमंगलरासी
भूसुरसचिवसमेतसमाजा संगचलेपहुंचावनराजा ॥
रथगजबाजिबरातिनसाजे समयबिलोकिबाजनेबाजे
दशरथविप्रबोलिसबलीन्हे दानमानपरिपूरणकीन्हे
चरणसरोजधूरिधरसीसा मुदितमहीपतिपाइअसीसा
सुमरिगजाननकीन्हपयाना मंगलमूलशकुनभयेनाना

सुरप्रसूनबरषहिंहरषि करहिंअप्सरागान ॥
चलेअवधपतिअवधपुर मुदितबजाइनिसान

नृपकरिबिनयमहाजनफेरे सादरसकलमागनेटेरे ॥
भूषणबसनबाजिगजदीन्हे प्रेमपोषिठाढ़ेसबकीन्हे
बारबारबिरदावलिभाषी फिरेसकलरामहिंउरराखी
बहुरबहुरिकोशलपतिकहहीं जनकप्रेमबसफिरननहहीं
पुनिकहभूपतिबचनसुहाये फिरियमहीपदूरबड़िआए
राउबहोरिउतरभयेठाढे ॥ प्रेमप्रवाहबिलोचनबाढे
तबबिदेहबोलेकरजोरी। बचनसनेहसुधाजनुबोरी
करौंकवनबिधिबिनयसुहाई महाराजमोहिदीन्हबड़ाई

कोसलपतिसमधीसजनसनमानसबभांति

मिलनपरस्परबिनयअति प्रीतिनहृदयसमाति

मुनिमंडलीजनकसिरनावा । आशिर्बादसबहिंसनपावा ॥
सादरपुनिभेटेजामाता । रूपशीलगुणनिधिसबभ्रात
जोरिपंकरुहपाणिसुहाये । बोलेबचनप्रेमजनुजाये ॥
रामकरोंकेहिभांतिप्रशंसा । मुनिमहेशमनमानसहंसा ॥
करहियोगयोगीजेहिलागी । कोहमोहममतामदत्यागी
व्यापकब्रह्मअलखअबिनासी । चिदानंदनिर्गुणगुणराशी ॥
मनसमेतजेहिजाननबानी । नरकिनसकहिंसकलअनुमा
महिमानिगमनेतिकरिकहहीं । जोतिहुंकालएकरसरहहीं ॥

दो· रा· बा· २२२

दो· नयनबिषयमोकहँभयेउ सोसमस्तसुखमूल
सबहिंसुलभजगजीवकहँ भयेईशअनुकूल + ॥

सबहिंभांतिमोहिंदीन्हबड़ाई । निजजनजानिलीन्हअपनाई ॥
होहिंसहसदशशारदशेषा । करहिंकलपकोटिकभरिलेख
मोरभागपराउरगुणगाथा ॥ कहिनसिराहिंसुनहुरघुनाथ
मैंकछुकहौंएकबलमोरे । तुमरीझहुसनेहसुठिथोरे ॥
बारबारमांगौंकरजोरे ॥ मनुपरिहरैचरनजनिभोरे ॥
सुनिबरबचनप्रेमजनुपोषे । पूरनकामरामपरितोषे + ॥
करिबरबिनयससुरसनमाने । पितुकौशिकवसिष्ठसमजा
बिनतीबहुतभरतसनकीन्ही । मिलसप्रेमपुनिआशिषदीन्ह

दो· मिलेलषनरिपुसूदनहिंदीन्हअसीसमहीश ॥
भयेपरस्परप्रेमबसफिरिफिरिनावहिंसीस + ॥

बारिबारिकरिबिनयबड़ाई। रघुपतिचलेसंगसबभाई।
जनकगहेकौशिकपदजाई चरनरेनुसिरनयनन्हलाई॥
सुनुमुनीशबरदरशनतोरे। अगमनकछुप्रतीतिमनमोरे
जोसुखसुजशलोकपतिचहहीं करतमनोरथसकुचतअहहीं
सोसुखसुजशसुलभमोहिंस्वामी। सबसिधितवदरशनअनुगामी
कीन्हबिनयपुनिपुनिसिरनाई। फिरेमहीपआशिषापाई।
चलीबराननिसानबजाई॥ मुदितछोटबड़सबसमुदाई।
रामहिंनिरखिग्रामनरनारी॥ पाइनयनफलहोंहिंसुखारी

दो॰ बीचबीचबरबासकरिमगलोगन्हसुखदेत॥
अवधसमीपपुनीतदिनपहुंचीआइजनेत॥

होतनिसानपनवबरबाजे॥ भेरिशंखधुनिहयगयगाजे
झांझबीनडिंडिमीसुहाई॥ सरसरागबाजहिंसहनाई॥
पुरजनआवतअकनिबराता मुदितसकलपुलकावलिगाता
निजनिजसुंदरसदनसवाँरे हाटबाटचौहटपुरद्वारे॥
गलीसकलअरगजासिचाई जहँतहँचौकेंचारुपुराई॥
बनाबजारुनजाइबखाना तोरनकेतुपताकबिताना॥
सफलपूगफलकदलिरसाला रोपेबकुलकदंबतमाला॥
लगेसुभगतरुपरसतधरनी मनिमयआलबालकलकरनी

दो॰ बिबिधभांतिमंगलकलशगृहगृहरचेसँवारि
सुरब्रह्मादिसिहाहिंसबरघुबरपुरीनिहारि॥

भूपभवनतेहिअवसरसोहा। रचनादेखिमदनमनमोहा॥

कालसगुनमनोहरनाई॥ रिधिसिधिसुभसंपदासु
जनुउछाहसबसहजसुहाए तनुधरिधरिदसरथगृहआ
देखनहेतुरामबैदेही॥ कहहुलालसाहोइनके
जूथजूथमिलिचलीसुआसिनि निजछबिनिदरहिंमदनबि
सकलसुमंगलसजेआरती। गावहिंजनुबहुबेषभारती
भूपतिभवनकोलाहलहोई जाइनबरनिसमउसुखसो
कौशल्यादिराममहतारी॥ प्रेमबिबसतनदसाबिसारी

दियेदानबिप्रन्हबिपुलपूजिगणेशपुरारि॥
प्रमुदितपरमदरिद्रजनुपाइपदारथचारि॥

मोदप्रमोदबिबससबमाता। चलहिंनचरनसिथिलभए
रामदरसहितअतिअनुरागी परिछनसाजुसजनसबला
बिबिधबिधानबाजनेबाजे मंगलमुदितसुमित्रासाजे।
हरददूबदधिपल्लवफूला। पानपुंगफलमंगलमूला।
अछतअंकुररोचनलाजा मंजुलमंजरितुलसिबिरा
छुहेपुरटघटसहजसुहाये मदनशकुनजनुनीड़बनाये
सगुनसुगंधनजाइबखानी मंगलसकलसजहिंसबरा
रचीआरतीबिबिधबिधाना। मुदितकरहिंकलमंगलगान

दो· कनकथारभरिमंगलन्हकमलकरनलियेमातु
चलीमुदितपरिछनकरनपुलकप्रफुल्लितगात॥

धूपधूमनभमेचकभयऊ। सावनघनघमंडजनुठयऊ
सुरतरुसुमनमालसुरबर्षहिं मनहुंबलाकअवनिमनकर्षहि

मंजुलमणिमयबंदनवारे मनहुँपाकरिपुचाँपसवारे
प्रगटहिंदुरहिंअटनपरभामिनि चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि।
दुंदुभीधुनिघनगरजहिंघोरा याचकचातकदादुरमोरा
सुचिसुगंधबरुबर्षहिंबारी सुखीसकलशशिपुरनरनारी।
समयजानिगुरुआयसुदीन्हा पुरप्रवेशरघुकुलमणिकीन्हा
सुमरिशंभुगिरिजागणराजा मुदितमहीपतिसहितसमाजा।

होहिंसकुनबरषहिंसुमनसुरदुंदुभीबजाइ॥
बिबुधबधूनाचहिंमुदितमंजुलमंगलगाइ।

मागधसूतबंदिनटनागर गावहिंयशतिहुँलोकउजागर
जयधुनिबिमलबेदबरबानी दशदिशिसुनियसुमंगलसानी।
बिपुलबाजनेबाजनलागे। नभसुरनगरलोगअनुरागे।
बनेबरातीबरणिनजाहीं। महामुदितमनसुखनसमाहीं
पुरबासिनतबराउजोहारे। देखतरामहिंभयेसुखारे
करहिंनिछावरमणिगणचीरा बारिबिलोचनपुलकशरीरा
आरतिकरहिंमुदितपुरनारी हरषहिंनिरखिकुंवरबरचारी
शिबिकासुभगओहारउघारी देखदुलहिनिन्हहोहिंसुषारी

दो· इहिबिधिसबहीदेतसुखआयेराजदुआर
मुदितमातुपरिछनकरहिंबधुनसमेतकुमार

करहिंआरतीबारहिंबारा प्रेमप्रमोदकहैकोपारा
भूषणमणिपटनानाजाती करहिंनिछावरअगणितभाँती
बधुनसमेतदेखसुतचारी परमानंदमगनमहतारी॥

पुनिपुनिरामसीयछबिदेखी मुदितसुफलजगजीवनलेखी
सखीसीयसुखबधुनिपुनिचाही गानकरहिंनिजसुकृतसराही
बरषहिंसुमनछनहिंछनदेवा। नाचहिंगावहिंलावहिंसेवा॥
देखिमनोहरचारिउजोरी। सारदउपमासकलढंढोरी॥
देतनबनहिंनिपटलघुलागी एकटकरहींरूपअनुरागी॥

दो·निगमनीतिकुलरीतिकरिअरघपावड़ेदेत॥
बधुनसहितसुतपरिछिसबचलीलिवायनिकेत

दो·
रा·बा·
३२६

चारिसिंहासनसहजसुहाये जनुमनोजनिजहाथबनाये॥
तिनपरकुवरिकुवरबैठारे। सादरपायपुनीतपखारे॥
धूपदीपनैबेद्यबेदबिधि। पूजेबरदुलहिनिमंगलनिधि
बारहिंबारआरतीकरहीं। ब्यजनचारुचामरसिरढरहीं॥
बस्तुअनेकनिछावरहोहीं भरीप्रमोदमातुसबसोहीं॥
पावापरमतत्वजनुयोगी॥ अमृतलहेउजनुसंततरोगी॥
जनमरंकजनुपारसपावा। अंधहिलोचनलाभसुहावा॥
मूकबदनजनुसारदछाई मानहुसमरसूरजयपाई॥

दो·इहसुखतेंशतकोटिगुणपावहिंमातुअनंद।
भाइनसहितबिवाहघरआयेरघुकुलचंद॥
लोकरीतिजननीकरहिंबरदुलहिनिसकुचाहिँ
मोदबिनोदबिलोकिबड़राममनहिंमुसुकाहिँ॥

देवपितरपूजेबिधिनीकी पूजीसकलबासनाजीकी॥
सबहिंबंदिमांगेबरदाना। भाइनसहितरामकल्यान॥

अंतरहितसुरआशिषदेहीं मुदितमातुअंचलभरिलेहीं
भूपतिबोलिबरातिन्हलीन्हे यानबसनमणिभूषणदीन्हे
आयसुपाइराखिउररामहिं मुदितगयेसबनिजनिजधामहि।
पुरनरनारिसकलपहिराये घरघरबाजहिंअनंदबधाये
याचकजनयाचहिंजोइजोई प्रमुदितराउदेहिंसोईसोई॥
सेवकसकलबजनियांनाना। पूरणकियेदानसनमाना॥

दो· देहिंअसीसजुहारिसब गावहिंगुणगणगाथ।
तबगुरुभूसुरसहितगृहगवनकीन्हरघुनाथ॥

जोवसिष्ठअनुशासनदीन्ही लोकबेदविधिसादरकीन्ही
भूसुरभीरदेखिसबरानी। सादरउठीभाग्यबड़जानी*॥
पायपखारिसकलअन्हवाये पूजभलीबिधिभूपजेंवाये
आदरदानप्रेमपरिपोषे॥ देतअसीसचलेमनतोषे॥
बहुबिधिकीन्हगाधिसुतपूजा नाथमोहिसमधन्यनदूजा॥
कीन्हप्रशंसाभूपतिभूरी। रानिनसहितलीन्हपगधूरी॥
भीतरभवनदीन्हबरबासू। मनजुगवतरहनृपरनिवासू
पूजेगुरुपदकमलबहोरी। कीन्हबिनयअतिप्रीतिनथोरी

दो· बधुनसमेतकुमारसबरानिनसहितमहीश
पुनिपुनिबंदितगुरुचरनदेतअसीसमुनीश॥

बिनयकीन्हउरअतिअनुरागे सुतसंपदाराखिसबआगे
नेगमांगिमुनिनायकलीन्हा आशिर्वादबहुतबिधिदीन्हा
उरधरिरामहिंसियासमेता हरषिकीन्हगुरुगवननिकेता

दो·
रा· बा·
२२७

बिप्रबधूसबभूपबुलाईं। चीरचारुभूषणपहिराईं।
बहुरिबुलाइसुआसनिलीन्हीं। रुचिबिचारपहिरावनदी
नेगानेगलोगसबलेहीं॥ रुचिअनुरूपभूपमणिदे
प्रियपाहुनेपूज्यजेजाने। भूपतिभलीभांतिसनमा
देखिदेखिरघुबीरबिवाहू। बरषिप्रसूनप्रशंसिउछा

दो॰ चलेनिसानबजायसुर निजनिजपुरसुखपाइ
कहतरामयशपरस्पर हरषनहृदयसमाइ ×॥

सबबिधिसबहिसमधिनरनाहू। रहाहृदयभरिपूरिउछाहू
जहँरनवासतहाँपगुधारे॥ सहितबधूटिनकुंवरनिहा
लियेगोदकरिमोदसमेता। कोकहिसकैभयउसुखजे
बधूसप्रेमगोदबैठारी × ॥ बारबारहियहर्षदुलारी॥
देखिसमाजमुदितरनवासू। सबकेउरआनंदकियबा
कहेउभूपजिमिभयउबिवाहू। सुनिसुनिहर्षहोतसबका
जनकराजगुणशीलबड़ाई। प्रीतिरीतिसंपदासुहाई।
बहुबिधिभूपभाटजिमिबरणी रानीसबप्रमुदितसुन

सुतनसमेतनहाइनृप बोलबिप्रगुरुजात × ॥
भोजनकीन्हअनेकबिधि घरीपांचगईरात॥

मंगलगानकरहिंबरभामिनि भइसुखमूलमनोहरयामि
अचैंपानसबकाहुनपाये। स्रगसुगंधभूषितछबि
रामहिदेखिरजायसुपाई। निजनिजभवनचलेसिरना
प्रेमप्रमोदबिनोदबड़ाई॥ समयसमाजमनोहरताई॥

कहिनसकहिंक्रतिशारदशेषू बेदबिरंचिमहेशगणेशू॥
सोमैंकहौंकवनबिधिबरणी भूमिनागशिरधरैकिधरणी
नृपसबभाँतिसबहिंसनमानी कहिमृदुबचनबुलाईरानी
बधूलरिकिनीपरघरआई। राखेउनयनपलककीनाई

लरिकाश्रमितउनींदबस शयनकरावहुजाइ॥
असकहिगेबिश्रामगृह रामचरणचितलाइ॥

भूपबचनसुनिसहजसुहाये जटितकनकमणिपलंगडसाये।
सुभगसुरभिपयफेनसमाना कोमलकलितसुपेतीनाना
उपबरहनबरबरनिनजाई। स्रगसुगंधमणिमंदिरमाहीं
रतनदीपसुठिचारुचंदोवा कहतनबनैजानजेहिजोवा
सेजरुचिररचिरामउठाये। प्रेमसमेतपलंगपौढाये।
आज्ञापुनिपुनिभाइनदीन्ही निजनिजसेजसयनतिन्हकीन्ही
देखिश्याममृदुमंजुलगाता कहहिंसप्रेमबचनसबमाता
मारगजातभयावनभारी॥ केहिबिधिताततांडकामारी

घोरनिशाचरबिकटभट समरगनैनहिंकाहु।
मारेसहितसहायकिमिखलमारीचसुबाहु।

मुनिप्रसादबलितातुम्हारे ईशअनेककरवरेटारे॥
मखरखवारीकरिदुहुंभाई गुरुप्रसादसबबिद्यापाई
मुनितियतरीलगतपगधूरी कीरतिरहीभुवनभरिपूरी
कमठपीठपविबापकठोरा नृपसमाजमहँशिवधनुतोरा
बिश्वबिजययशजानकीपाई आयभवनब्याहीसबभाई॥

टी
रा॰ बा॰
२२९

३ दो॰॥ १ छं॰ १ सो॰ ३४ चौ॰ पंक्ति६

रहैंतंशठिनित्य
बारहैंयाति
कप्रातसमय
शोभावरनन
शयनसमयहं
श्रीरघुनाथजी
बालकौं॰ ३६१
प्रभुबोरवि
श्रीकणको
गौरउर्वत

सकलप्रभाउसुनामतुम्हारे केवलकौशिककृपासुध
आजुसुफलजगजन्महमारे देखिनाथविधुवदनतुम्ह
जोदिनगयेउतुमहिंबिनुदेखे सोबिरंचिजिनपारहिंलेख

दो॰ रामप्रतोषी मातुसबकहिबिनतिबरबयन
सुमिरिशंभुगुरुविप्रपद कियेनींदबसनयन +॥

नींदहुँबदनसोहसुठिलोना। मनहुँसांझसरसीरुहसोना॥
घरघरकरहिंजागरणनारी देहिंपरस्पर मंगलगारी॥
पुरीविराजतिराजतिरजनी। रानीकहहिंविलोकहुसजन
सुंदरबधुनसासुलैसोई॥ फणिकणिजनुशिरमणिउर
प्रातपुनीतकालप्रभुजागे अरुणचूड़बरबोलनलागे॥
बंदीमागधगुणगणगाये। पुरजनद्वारजुहारनआये॥
बंदिविप्रसुरगुरुपितुमाता। पाइअसीसमुदितसबभ्रा
जननिहुसादरबदननिहारे भूपतिसंगद्वारपगुधारे +॥

दो॰ कीन्हसौचसबसहजसुचिसरितपुनीतनहाइ
प्रातक्रियाकरितातपहँआयेनचारिउभाइ +॥

भूपबिलोकिलियेउरलाई॥ बैठेहरषिरजायसुपाई +॥
देखिरामसबसभाजुड़ानी। लोचनलाभअवधिअनुमानी॥
पुनिबसिष्ठमुनिकौशिकआये शुभगआसनन्हमुनिबैठाये
सुतनसमेतपूजिपदलागे। निरखिरामदोउगुरअनुरागे
कहहिंबसिष्ठधर्मइतिहासा सुनहिंमहीपसहितरनिवास
मुनिमनअगमगाधिसुतकरणी मुदितवसिष्ठबिपुलबिधिबर

क्रियाकारिकै
चारिउ भाई
राजाकोमयिन
कैबरणबंद
बिश्वामित्र
वशिष्ठवाम
देवआदिकसबि

दो॰
रा॰ बा॰
२३०

कौ श्रवनकथा
नत्वप्रसंगादि
सुनतरहैंया
थोतिपुनःसब
ऋषिनसहि
बिश्वामित्रकी
कौनकरामायादि
तौंबिराकिया
सबरघुनाथा
हिकुमारश्री
नायादर्गाई
लायआर
तहांवसिष्ठजू
बिश्वामित्रके
तपको प्रभाव
अनेकाविधि
वर्ननकिये +
श्रीरघुनाथजू
के

अवलम्बचरि जादिअपारहैं गोसांईजी दीनता पूर्वकप्रकाश बरनतभए ३६१

इति बालकांड प्रसंग समाप्त

बोलेबामदेवसबसांची ॥ कीरतिकलितलोकतिहुँमांची
सुनिआनंदभयेउसबकाहू। रामलषनउरअधिकउछाहू

दो॰ मंगलमोदउछाहनितजाहिँदिवसइहिंभांति।
उमगीअवधअनंदभरिअधिकअधिकअधिकाति

सुदिनसोधकरकंकणछोरे मंगलमोदबिनोदनथोरे २॥
नितिनवसुखसुरदेखिसिहांहीं अवधजन्मयाचहिंबिधिपाहीं
बिश्वामित्रचलननितचहहीं रामसप्रेमबिनयबसरहहीं
दिनदिनसतगुणभूपतिभाऊ देखिसराहमहामुनिराऊ॥
मांगतबिदाराउअनुरागे ३ ॥ सुतनसमेतठाढभयेआगे॥
नाथसकलसंपदातुम्हारी। मैंसेवकसमेतसुतनारी॥
करबसदालरिकनपरछोहू दरशनदेतरहबमुनिमोहू॥
असकहिराउसहितसुतरानी परेचरणमुखआवनबानी
दीन्हअसीसबिप्रबहुभांती चलेनप्रीतिरीतिकहिजाती
रामसप्रेमसंगसबभाई ४ ॥ आयसुपाइफिरेपहुंचाई॥

दो॰ रामरूपभूपतिभगतिब्याहउछाहअनंद ।
जातसराहतमनहिंमन मुदितगाधिकुलचंद ५॥

बामदेवरघुकुलगुरुज्ञानी बहुरिगाधिसुतकथाबषानी
सुनिमुनिसुयशमनहिंमनराऊ बरणतआपनपुन्यप्रभाऊ ॥
बहुरेलोगरजायसुभयऊ। सुतनसमेतनृपतिगृहगयऊ
जहँतहँरामब्याहयशगावा सुयशपुनीतलोकतिहुंछावा
आयेरामब्याहघरजबतें बसेअनंदअवधसबतबतें॥
प्रभुबिवाहजसभयउछाहू सकहिंनबरणिगिराअहिनाहू
कबिकुलपावनजीवनजानी रामसीययशमंगलखानी॥
तेहितेंमैंकछुकहाबखानी करणपुनीतहेतुनिजबानी

टी॰ बा॰ २३१
सं॰

चौपाई छंद दोहादिकों टीका बालकांडके ॥

श्लोक	७
चौपाई	१५७८
छंद	३८
सोरठा	३५
दोहा	३६१

छं॰ निजगिरापावनकरणकारणरामयशतुलसीकह्यो ।
रघुबीरचरितअपारबारिधिपारकबिकौनेकह्यो ।
उपबीतब्याहउछाहमंगलसुनहिंसादरगावहीं ॥
बैदेहिरामप्रसादतेजनसर्बदासुखपावहीं ॥
सो॰ सीयरघुबीरबिबाहुजेसप्रेमसादरसुनहिं
तिनकहँसदाउछाहुमंगलायतनरामयश ॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबिमलवैराग्यसंतोषसंपादनोनामतुलसीकृतबालकाण्डप्रथमोसोपानः १ प्रथमकाण्डः

दरमतनबहिंदप्रेस
लालाप्यारेला
लकेपान
मामेंम
छपी
सं१९
३८

अथअयोध्याकांडप्रसंगप्रलिख्यते ३ श्लो० २ दो० १ आमांकेअथश्रीगुरुचरणसरोजं० अथआरंभजानिबेदलाकियाचो अर्थनिरूप्रशपदीतकहुआ नार्थअबप्रसंगलगायरूलु दो० ॥

॥ मू० ॥ वामांकेचविभजूखर्णयसमारी रवाकथाजिसके वामभागसामगी चलकीवाचकाकी नीबिराजतीहैं अबमलकप गंगाजूभालमां विषाकोचन्द्रगले मांबधउरमांसांच

यहमूर्तिनृसिंहावतारकी

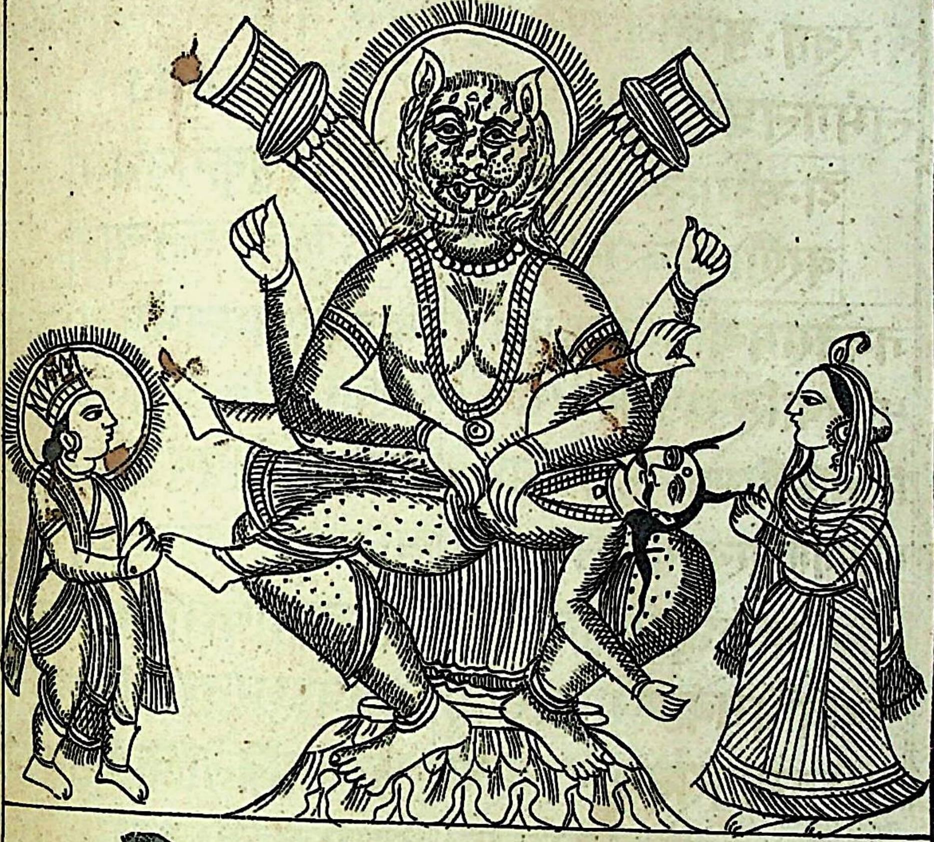

अयोध्याकाण्डः १

श्रीगणेशायनमः। श्लोक वामांकेचविभातिभूधरसुता देवापगामस्तके भालेबालविधुर्गलेचगरलंयस्योरसि व्यालराट्सोयंभूतिविभूषणः सुरवरःसर्बाधिपःसर्बदासर्बःसर्बगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमां १ नीलांबुजकोमलस्यामलांगंसीतासमारोपितबामभागं पाणौमहासायकचारुचापंनमामिरामंरघुबंशनाथं ॥ २॥

टी० रा० प्र० १

अरुपरमागिरिकोभूषणहैउस मोस्रेश सर्वकानकेखामी सर्वरूपसबमांव्यापकअरुबड़के समानउज्जलशरीर ॥ मू० । नीलांबुजनीके श्रीरामनीलकम लसमश्यामअरु कोमलांगहैंअरु जिनकेबामभाग सीताहैंअरुहाथ मेंअमोघबाण अरुसुंदरधनुष धारणकिये रघुबंशनाथ श्रीरामको मैं प्रनाम करत हैं ॥ ॥

प्रसन्नतांयानगताभिषेकतस्तथानमम्लेवनवास
दुःखतः मुखांबुजश्रीरघुनंदनस्यमेसदास्तुसामंजु
लमंगलप्रदा ॥ ३ ॥ अथभाषादोहा ॥

दो॰ श्रीगुरुचरणसरोजरज निजमनमुकुरसुधार
बरणौंरघुबरबिशदयश जोदायकफलचार

जबतेंरामब्याहघरआये। नितनवमंगलमोदबधाये
भुवनचारिदशभूधरभारी। सुकृतमेघबरषहिंसुखवारी
रिधिसिधिसंपतिनदीसुहाई। उमगिअवधिअंबुधिकहँआई
मणिगणपुरनरनारिसुजाती। शुचिअमोलसुंदरसबभांती
कहिनजाइकछुनगरबिभूती। जनुइतनीबिरंचिकरतूती
सबबिधिसबपुरलोगसुखारी। रामचंद्रमुखचंदनिहारी
मुदितमातुसबसखीसहेली। फलितबिलोकिमनोरथबेली
रामरूपगुणशीलसुभाऊ। प्रमुदितहोहिंदेखसुनिराऊ

सबकेउरअभिलाषअसि कहहिमनाइमहेश।
आपअछतयुवराजपद रामहिदेहिंनरेश।

एकसमयसबसहितसमाजा। राजसभारघुराजबिराजा
सकलसुकृतिमूरतिनरनाहू। रामसुयशसुनिअतिहिंउछा
नृपसबरहहिंकृपाअभिलाषे। लोकपरहहिंप्रीतिरुखरा
त्रिभुवनतीनकालजगमांही। भूरिभागदशरथसमना
मंगलमूलरामसुतजासू। जोकछुकहियथोरसबता
राउसुभाउमुकुरकरलीन्हा। बदनबिलोकिमुकुटसमकी

टी॰ १ प्रसन्नतां या श्रीरघुनन्दनके मुख कमल की शोभा मोरे है मंगलप्रद है सो कौन शोभा ? अभिषेक सुनके प्रतिहर्ष न भई नहीं न वनवास के दुःखको सुन मुर्झानी नहीं सुखका मूलकारी तातें प्रफुल्लित प्रद सबकै धर्मकामद २ ॥ दोहा ॥ गुरुगति । याको आशय पंचावलीमें ॥ प्र॰ ६ चौ॰ २८

टी॰
रा॰प्र॰
२

टी॰ १२ ॥ जबतें रामग्रहनाम मंगल १२ चौं॰ नित मंगल आदि की अधिकता हेतु आदि शक्ति संयोग ग्रह सब के अभिलाष पूर्ण करता रामग्राम अंककी बांछा करि गुरु आज्ञाय रुचि नम्र हाना नय न सिद्ध कहँ राजा की परितोष कारि आज्ञा दय सुकृत लोलुपतार सब फल मन आधीन हैं तात्पर्य यह श्री लोगन को

अभिलाष फलनकेपीछे दौरतफिरतैं फलीहायनहीं लागतअरु आपकैतो अभिलाषक रिबेकीहूँ फलप्राप्ति चलिआवतहैं दूसरासरख तीहातअरुके हीकैदहवर्षकै

श्रवणसमीपभएसितकेसा। मनहुजरठपनअसउपदेसा।
लागिश्रवणजनुकहतबुढ़ाई रामहिराज्यदेहोकिनजाई।
नृपजुवराजरामकहँदेहू॥ जीवनजन्मसुफलकरलेहू

दो॰ असबिचारिउरआनिनृपसुदिनसुअवसरपाइ।
तनपुलकितमनमुदितअतिगुरुहिसुनावहुजाइ।

कहेउभुआलसुनियमुनिनायक भएरामसबबिधिसबलायक
सेवकसचिवसकलपुरबासी जेहमारअरिमित्रउदासी॥
सबहिरामप्रियजेहिबिधिमोही प्रभुअसीसजनुतनुधरसोही॥
बिप्रसहितपरिवारगुसाईं करहिंछोहसबरौरीनाईं॥
जेगुरुचरणरेणुसिरधरहीं तेजनुसकलबिभवबसकर
मुहिसमयहअनभयउनदूजे सबपायउपरपावनपूजे॥
अबअभिलाषएकमनमोरे पूजिहिनाथअनुग्रहतोरे॥
मनअसन्नलखिसहजसनेहू कहेउनरेशरजायसुदेहू

दो॰ राजनराउरनामयशसबअभिमतदातार
फलअनुगामीमहिपमणिमनअभिलाषतुम्हार

सबबिधिगुरुप्रसन्नजियजानी बोलेउराउबिहँसिमृदुबानी
नाथरामकोजियजुवराजू। कहियकृपाकरिकरियसमाजू
मोहिअछतअसहोउउछाहू लहहिंलोगसबलोचनलाहू
प्रभुप्रसादशिवसबैनिबाही यहैलालसाइकमनमाहीं

अनंतरयाकौ फलहोनिहारहै अरुसबसामग्री राजाधिराजके योग्यशीघ्रहीहै आयअरुमंगल करआह्लादितहो सोफलपाइगु दहरघुनाथ

दो॰
रा॰ अ॰
३

सकलमेंधर्मरूप सौर्थनायकही तहाँश्रीरामक भरतकेनपरे संगासीवतहैंकि निर्मलकर्मों यहअनुमानहोत हैकिभरत हैकिमाहै हैहाकै तीकैबिन श्रीकौ ×

पुनिनसोचतनुरहइकिजाऊ जेहिनहोइपाछेपाँछिताऊ॥
सुनिमुनिदसरथबचनसुहाए मंगलमोदमूलमनभाए॥
सुनिनृपजासुबिमुखपछिताहीं जासुभवनबिनुजरनिनजाहीं
भएउतुम्हारतनयसोस्वामी रामपुनीतप्रेमअनुगामी

दो· बेगबिलंबनकरियनृपसाजियसबहिसमाजु
सुदिनसुमंगलतबहिंजबरामहोहिंजुवराजु ४।

मुदितमहीपतिमंदिरआए सेवकसचिवसुमंत्रुबुलाए
कहिजयजीवसीसतिन्हनाए भूपसुमंगलबचनसुनाए॥
जोपंचहिंमतलागैनीका। करहुहरषिहियरामहिंटीका
मंत्रीमुदितसुनतप्रियबानी अभिमतबिरवपरेउजनुपानी
बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी जियहुजगतपतिबरषकरोरी
जगमंगलभलकाजबिचारा बेगियनाथनलाइयबारा
नृपहिंमोदसुनिसचिवसुभाषा बढ़तबौंड़जनुलहीसुसाख

टी·
रा· अ·
४

दो· कहेउभूपमुनिराजकरजोइजोइआयसुहोइ।
रामराजअभिषेकहितबेगिकरहुसोइसोइ ५

हरषमुनीशकहेउमृदुबानी आनहुसकलसुतीरथपानी
औषधमूलफूलफलपाना कहेनामगनिमंगलनाना।
चामरचमरबसनबहुभाँती रोमपाटपटअगनितजाती
मनिमनमंगलबस्तुअनेका जोजगजोगुभूपअभिषेका
बेदबिहितकहिसकलबिधाना कहेउरचहुपुरबिबिधबिधा

सफल रसाल पूगफल केरा। रोपहु बीथिन पुर चहुं फेरा
रचहु मंजु मनि चौकें चारू। कहेउ बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति गुरु कुलदेवा। सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा

दो· ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरग रथ नाग।
सिर धरि मुनिबर बचन सब निज निज काजहि लाग ६

सुनत सुमंत मन अति हरषाना। जीवन जन्म सुफल करि जाना दे०।
जहँ तहँ धावन कोटि पठाए। मंगल द्रव्य सकल लै आए
कनक कलस सज धरेहु नारे गज रथ तुरग अनेक सवारे
बहु बिधि बांधे बंदनवारा। ध्वज पताक मणि बसन अपारा।
बनेहु नगर नहिं बरनि न जाई सकल लोक शोभा पुर छाई
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा सो जनु काज प्रथम तेहि कीन्हा
मुनि मन इच्छा करन न पावा सो सुमंत पहिलै लै आवा॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा करत राम हित मंगल काजा
सुनत राम अभिषेक सुहावा बाजु गहागह अवध बधावा
राम सीय तनु शकुन जनाये फरकहिं मंगल अंग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं भरत आगमन सूचक अहहीं
भए बहुत दिन अति अवसेरी सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी
रामहि सोच बधु दिन रानी। अंडन कमठ हृदय जेहि भांती
भरत सरस प्रिय को जग माहीं यहै सगुन फल दूसर नाहीं

टी·
रा·अ·
५

दो· तेहि अवसर मंगल परम सुनि हरषी रनिवासु।
शोभित लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीच बिलासु ७

प्रथमजाइजिन्हबचनसुनाये भूषणबसनभूरितिनपाये।
प्रेमपुलकितनुमनअनुरागी मंगलसाजसजनसबलागी
चौकैंचारुसुमित्रापूरे॥ मणिमयबिबिधभांतअति
आनंदमगनराममहतारी। दियेदानबहुबिप्रहकारी
पूजेउग्रामदेवसुरनागा। कहेउबहोरिदेनबलिभागा
बारबारगणपतिहिनिहोरा कीजियसफलमनोरथमो
भूपहृदयप्रभुप्रेरहोजाई॥ मनदृढहोहिजोजियमेंआ
जोकछुइच्छाकरिमनमाहीं सोफुरहोइआनकछुनाहीं
जेहिबिधिहोइरामकल्याना देहुदयाकरिसोबरदाना॥
गावहिंमंगलकोकिलबयनी बिधुबदनीमृगसावकनयनी

दो॰ रामराजअभिषेकसुनिहियहरषेनरनारि
लगीसुमंगलसजनसबबिधिअनुकूलबिचारि

तबनरनाहबसिष्ठबुलाये रामधामसिखदेनपठाये
गुरुआगमनसुनतरघुनाथा द्वारआइनायेउपदमाथा।
सादरअर्घदेइघरआने॥ सोरहभांतिपूजिसनमाने
गहेचरणसियसहितबहोरी बोलेरामकमलकरजोरी
सेवकसदनस्वामिआगमनू मंगलमूलअमंगलदमनू
तदपिउचितअसबोलिसप्रीती पठइयनाथकाजअसनीती
प्रभुतातजिप्रभुकीह्नसनेहू भयेउपुनीतआजममगे
आयसहोइसोकरियगुसाईं सेवकलहैस्वामिसेवका

सुनिसनेहसानेबचनमुनिरघुबरहिप्रशंस॥

रामकसनतुमकहहुअसहंसबंसअवतंस।

बरनिरामगुणसीलसुभाऊ बोलेप्रेमपुलकिमुनिराऊ
भूपसजेउअभिषेकसमाजू चाहतदेनतुमहिजुवराजू
रामकरहुसबसंजमआजू जोबिधिकुशलनिबाहैकाजू
गुरुसिखदेइरायपहँगयेऊ रामहृदयअसबिस्मयभयऊ
जनमेएकसंगसबभाई। भोजनशयनकेलिलरकाई
कर्णबेधउपवीतबिवाहा। संगसंगसबभयउछाहा।
बिमलबंशयहअनुचितएका। अनुजबिहाइबड़ेहिअभिषेका
प्रभुसप्रेमपछितानिसुहाई हरेउभक्तमनकीकुटिलाई

टी॰
रा॰अ॰
७

तेहिअवसरआयेलषनमगनप्रेमआनंद।
सनमानेप्रियबचनकहिरविकुलकैरवचंद।

बाजहिंबाजनबिबिधबिधाना पुरप्रमोदनहिंजाइबखाना।
भरतआगमनसकलमनावहिं आवहिंबेगनयनफलपावहिं
हाटबाटघरगलीसुहाई॥ कहहिंपरस्परलोगलुगाई
काललगनभलकेतिकबारा पूजिहिबिधिअभिलाषहमारा
कनकसिंहासनसीयसमेता। बैठहिंरामहोइचितचेता।
सकलकहहिंकबहोइहिकाली बिघ्नमनावहिंदेवकुचाली
तिनहिसोहातनअवधबधावा। चोरहिचांदनिरातनभावा।
सादरबोलबिनयसुरकरहीं बारहिंबारपांवलैपरहीं

बिपतिहमारिबिलोकिबड़िमातुकरियसोइआज
रामजाहिंबनराजतजिहोइसकलसुरकाज।

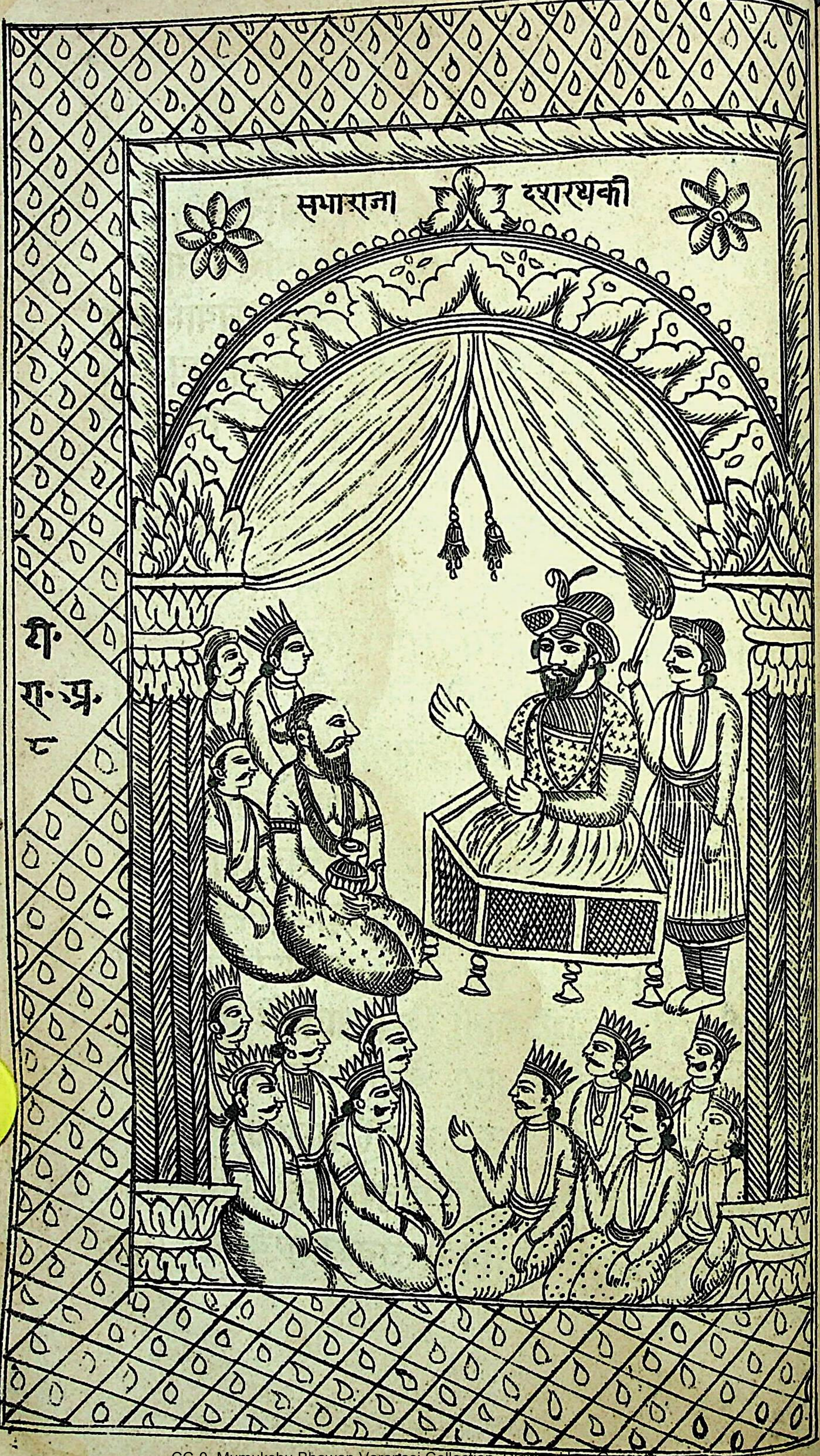

सभा राजा दशरथकी

टी. रा. प्र. ८

सुनिसुरबिनयठाढ़िपछ्तानी। भईउसरोजबिपनहिमराती॥
देखिदेवपुनिकहहिंनिहोरी। मातुतोहिनहिंथोरिउखोरी॥
बिस्मयहर्षरहितरघुराऊ। तुमजानहुरघुबीरसुभाऊ॥
जीवकर्मबसदुखसुखभागी। जाइयेअवधदेवहितलागी॥
बारबारगहिचरणसकोची। चलीबिचारबिबुधमतिपोची॥
ऊंचनिवासनीचकरतूती॥ देखिनसकहिंपराइबिभूती॥
आगिलकाजबिचारिबहोरी। करिहैंचाहकुशलकविमोरी॥
हरषिहृदयकोशलपुरआई। जनुग्रहदशादुसहदुखदाई॥

दो॰ नाममंथरामंदमति चेरीकेकइकेरि + + ॥
अयशपिटारीताहिकरि गईगिरामतिफेरि + ॥

देखिमंथरानगरबनावा॥ मंगलमंजुलबाजबधावा॥
पूछसिलोगनकाहउछाहू। रामतिलकसुनिभाउरदाहू॥
करैबिचारकुबुद्धिकुजाती। होइअकाजकवनबिधिराती॥
देखिलागिमधुकुटिलकिराती। जिमिगवतकैलेउंकेहिभांती॥
भरतमातुपहंगइबिलषानी। काअनमनीहंसिकहरानी॥
उतरुनदेइनलेइउसासू॥ नारिचरितकरिढारतिआंसू॥
हंसिकहिरानिगालबड़तोरे। दीनलषनसिषअसमनमोरे॥
तबहुनबोलिचेरिबड़िपापिनि। छाड़ैस्वांसकारिजनुसांपिनि॥

दो॰ सभयरानिकहकहसिकिनकुशलराममहिपाल।
भरतलषनरिपुदवनसुनि भाकुबरीउरसाल + ॥

कासोवतसुहागअभिमानी। निकरमहाभयतनडरानी॥

पंक्ति २ ५ ३ ५ में कौं १ ... ० हिं ३ ... को ५ ... ६ ... दौं०। हरिकमधुरा गाप्रसन्नको बनसाज ३५ ॥ चौ० ॥ गारौनैनकौं भौगाहैनसहो औसुख्याग विभावोहि करनैरजानो नाहसुप्रधना पमागमनकौ सिसरानन्तैबिर हर्षनैगानन्द सबानोमग्रसु सजानलीमौं तमख्याको प्र रघसेबाबरोज तुम्हारिमामग्रद

टी॰

रा॰ प्र॰ ९

इसहेतुनात याकोभावपाप्ति कौभारभूपिपर आपकोभारसौ परधोईतुमही तुम्हारेहीभारउ तानकारतभले भागलहरोइल इसकोभावग्रपथ मैंरामनकेसब कैअनेकरखौ सैबातुहैंमल गहोबनमेंतौ बैबलराम तुम्हरेबोर पेश्रधारही सेवाकोंग्रह मानतौं

बिधलेगें
बनवासपुर
पीतामणी
१ गाड़ी
हम्भा ॥
१८
" " " " " "

कतसिखदेइहमहिंकोमाई गालकरबकेहिकरबलपा
रामहिछाड़िकुशलकेहिआजू जाहिनरेशदेतयुबराजू॥
भाकौशिल्यहिबिधिअतिदाहिन देखतगर्बरहाउरनाहिन
देखहुकसनजाइसोइशोभा जोअवलोकिमोरमनछोभा
पूतबिदेशनसोचतुम्हारे। जाननिहोबसनाहहमारे
नींदबहुतप्रियसेजतुराई। लखहुनभूपकपटचतुरा
सुनिप्रियबचनकपटमनजानी झुकिरानीअबरहुअरगानी
पुनिअसकबहुँकहसिघरफोरी तौधरिजीहकढावौंतोरी

दो·कानेखोरेकूबरेकुटिलकुचालीजानि॥
तियबिशेषपुनिचेरिकहिभरतमातुमुसकानि

टी· रा·अ· १०

प्रियबादिनिसिखदीन्हेउँतोही सुपनेहुतोपरकोपनमो
सुदिनसुमंगलदायकसोई जोरकहाफुरजादिनहो
जेठस्वामिसेवकलघुभाई। यहदिनकरकुलरीतिसु
रामतिलकजोसांचेहुकाली मांगुदेवमनभावतिआ
कौशल्यासमसबमहतारी रामहिंसहजसुभावपिया
मोपरकरहिंसनेहबिशेषी। मैंकरिप्रीतिपरीक्षादेखी
जोबिधजन्मदेइकरछोहू होंहिरामसियपूतपतोहू
प्राणतेंअधिकरामप्रियमोरे तिनकेतिलकछोभकसतो
असप्रियबचनसुनायोमोही कहोमंथरादेहुँकातोही

टी·१

दो·भरतसपथतोहिसत्यकहुपरिहरकपटदुराइ
हरषसमयबिस्मयकरसिकारणमोहिसुनाइ

सुनतबचनमंथरारिसानी। बोलीबचनकपटछलसानी।
एकहिंबारुआससबपूजी। अबकछुकहबजीहकरदूजी।
फोरैयोगकपारअभागा। भलोकहतदुखरौरहुलागा।
कहहिंझूठफुरबातबनाई। तेप्रियतुमहिंकरुइमैंमाई।
हमहुँकहबअबठकुरसुहाती। नाहिंतमौनरहबदिनराती।
करिकुरूपबिधिपरबसकीन्हा। बाचासालहमैंविधिदीन्हा।
कोउनृपहोउहमैंकाहानी॥ चेरिछाड़िअबहोबकिरानी।
जारैयोगसुभावहमारा॥ अनभलदेखिनजाइतुम्हारा।
तातेंकछुकबातअनुसारी। छमहुदेविबड़चूकहमारी।

दो॰ गूढ़कपटप्रियबचनसुनितियअधरनबुधरानि।
सुरमायाबसबैरिणिहिसुहृदजानिपतिआनि १६

सादरपुनिपुनिपूंछतिओही। सबरीगानमृगीजनुमोही।
तसमतिफिरीअहईजसभावी। रहँसीचेरिघातजनुफावी।
तुमपूंछहुमैंकहतडेराऊं। धरेउमोरिघरफोरीनाऊं॥
जसप्रतीतिबहुबिधिगढ़िछोली। अवधसाढ़सातीतबबोली।
प्रियसियरामकहातुमरानी। रामहिंतुमप्रियसोफुरबानी।
रहाप्रथमअबतेदिनबीते। समउफिरेरिपुहोंहिपिरीते।
भानुकमलकुलपोषनहारा। बिनुजलजारिकरैसोइछारा।
जरितुम्हारिचहसवतिउपारी। रूंधहुकरउपायबरबारी।

तुम्हहिंनसोचसुहागबलनिजबसजानहुराउ॥
मनमलीनमुंहमीठनृपराउरसरलसुभाउ॥

चतुरगभीरराममहतारी ॥ बीचपाइनिजबातसवारी॥
पठयेभरतभूपननिओरे । राममातुमनजानबरौरे ॥
सेवहिंसकलसवतिमोहिनीके गरबितभरतमातुबलपीके
सालतुम्हारकौशिलहिमाई कपटचतुरनहिहोइजनाई॥
राजहिंतुमपरप्रेमुबिशेषी ॥ सवतिसुभावसकइनहिदेखी
रचिप्रपंचभूपहिअपनाई ॥ रामतिलकहितलगनधराई
यहकुलउचितरामकहुंटीका। सबहिंसुहायमोहिसुठिनी
आगलिबातसमुझिडरमोही ॥ देउदैउफिरसोफलओही ॥

दो॰ रचिपचकोटिककुटिलपन कीन्हेसिकपटप्रबोधु ॥
कहसिकथासतसवतिकैजेहिबिधिबाढबिरोधु १८

भावीबसप्रतीतिउरआई ॥ पूछिरानिपुनिसपथदेवाई
कापूछहुतुमअबहुनजाना। निजहितअनहितपशुपहिचा
भयउपाखदिनुसजतसमाजू। तुमपाईसुधिमोहिसनआज
खाइअपहरियराजतुम्हारे ॥ सत्यकहेनहिंदोषुहमारे॥
जोअसत्यकछुकहबबनाई तौबिधिदेइहिहमहिंसजा
रामहिंतिलककालजोभयऊ तुमकहुंबिपतिबीजबिधिब
रेखखचाइकहौंबलभाखी। भामिनिभइहुदूधकइमाखी
जौंसुतसहितकरहुसेवकाई तौघररहहुनआनउपाई॥

दो॰ कद्रुबिनतहिदीन्हदुखतुमहिकौशिलादेव ॥
भरतबंदिगृहसेइहहिंलषनरामकेनेव ॥ १९ ॥

कैकयसुतासुनतकटुबानी। करिनसकइकछुसहमिसुख

तनपसेउकदलीजिमिकांपी। कुवरीदशनजीहतबचाँपी॥
कहिकहिकोटिककपटकहानी। धीरजधरेउप्रबोधेसिरानी॥
कीन्हेसिकठिनपढाइकुपाठू। जिमिननवइफिरउकठकुकाठू।
फिराकरमुप्रियलागिकुचाली। बकिहिसराहहिंमनहुँमराली।
सुनिमंथराबातफुरितोरी॥ दहनीआंखनितफरकहिमोरी
दिनप्रतिदेखउंरातिकुसुपनैं कहउँनतोहिमोहबसअपने॥
कहाकरौंसखिसूधसुभाऊ दाहिनबामनजानउँकाऊ॥

दो॰ अपनेचलतनआजुलगिअनभलकाहुककीन्ह।
केहिअघएकहिबारमोहिदैवदुसहदुखदीन्ह॥ २० ॥

नैहरजन्मभरबबरुजाई * ॥ जियतनकरबसवतिसेवकाई
अरिबसदैवजिआवतजाही। मरनुनीकतेहिजीवनचाही।
दीनबचनकहबहुबिधिरानी सुनिकुवरीतियमायाठानी
असकसकहहुमानिमनऊना। सुखसुहागतुमकहुंदिनदूना
जेहिराउरअतिअनभलताका। सोइपाइहियहफलपरिपाका
जबतेंकुमतिसुनामैंस्वामिनि भूखनबासरनींदनजामिनि।
पूछेउगुनिन्हरेखतिन्हखांची। भरतभुआलहोंहियहसांची
भामिनिकरउतकहौंउपाऊ हैतुम्हरीसेवाबसराऊ * ॥

दो॰ परौंकूपतवबचनपरसकौंपूतपतित्यागि ॥
कहसिमोरदुखदेखबड़ि़कसनकरबहितलागि२१

कुबरीकरिकबुलीकैकेई ॥ कपटछुरीउरपाहनटेही *॥
लखइनरानिनिकटदुखकैसें । चरइहरिततृनबलिपसुजैसे।

टी॰ रा॰ अ॰ १३

टी.
रा.अ.
२४

सुनतबातमृदुअंतकठोरी देतिमनहुंमधुमाहुरघोरी
कहइचेरिसुधिअहइकिनाहीं स्वामिनिकहहुंकथामोहिपा
दुइबरदानभूपसनथाती। मांगहुआजजुड़ावहुछाती।
सुतहिराजुरामहिंबनबासू देहुलेहुसबसवतिहुलासू
भूपतिरामसपथजबकरई तबमांगेहुजेहिंबचननटरई
होइअकाजुआजुनिसिबीते बचनमोरप्रियमानहुजीते

बड़कुघातकरिपातकिनिकहेसिकोपगृहजाहु
काजुसंवारेहुसजगुसबसहसाजनिपतिआहु।

कुबरिहिरानिप्रानप्रियजानी बारबारबड़िबुद्धिबखानी
तोहिसमहितुनमोहिसंसारा बहेजातकइभइसिअधारा।
जौबिधिपुरबमनोरथकाली करौंतोहिचषपूतरिआली
बहुबिधिचेरिहिआदरुदेई। कोपभवनगवनीकैकेई
बिपतिबीजबरषारितुचेरी भूंईभईकुमतिकैकईकेरी
पाइकपटजलअंकुरजामा बरदोउदलदुखफलपरिनामा
कोपसमाजसाजसबसोई राजुकरतनिजकुमतिबिगोई
राउरनगरकोलाहलहोई। यहकुचालकछुजाननकोई

दो. प्रमुदितपुरनरनारिसबसजहिंसुमंगलचार
एकप्रबिसहिंएकनिर्गमहिंभीरभूपदरबार॥

बालसखासुनिहियहरषाहीं मिलदशपांचरामपहंजाहीं
प्रभुआदरहिंप्रेमुपहिचानी पूंछहिंकुशलखेममृदुबानी
फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई करतपरस्पररामबड़ाई॥

कोरघुबीरसरिससंसारा। सीलसनेहनिबाहनहारा
जेहिजेहियोनिकरमबसभ्रमहीं तहँतहँईसुदेउयहहमहीं
सेवकहमस्वामीसियनाहू होतनाथयहओरनिबाहू।
असअभिलाषनगरसबकाहू कैकैसुताहृदयअतिदाहू।
कोनकुसंगतिपाइनसाई। रहैननीचमतेचतुराई॥

दो·सांझसमयसानंदनृपगयोकैकइगेहु×॥
गवननिठुरतानिकटकियजनुधरिदेहसनेहु।

कोपभवनसुनसकुचेराऊ भयबसअगहुडपरैनपाऊ
सुरपतिबसैबाहुबलजाके नरपतिरहहिंसकलरुषताके
सोसुनितियरिसगयेउसुषाई देखहुकामप्रतापबड़ाई
सूलकुलिसअसिअंगवनिहारे तेरतिनाथकुसमसरमारे
सभयनरेशप्रियापहँगयऊ देखिदशादुखदारुनभयऊ
भूमिसयनपटमोटपुराना। दियेडारितनभूषननाना॥
कुमतिहिकसकुबेषताफावी अनअहिवातसूचजनुभावी
जाइनिकटनृपकहमृदुबानी प्रानप्रियाकेहिहेतुरिसानी

छं·केहिहेतुरानिरिसानिपरसतपानिपतिहिनिवारही
मानहुंसरोषभुअंगभामिनिबिषमभांतिनिहारही।
दोउबासनारसनादसनबरमरमठाहरुदेखई×॥
तुलसीनृपतिभवतव्यताबसकामकौतुकलेषई
सो·बारबारकहराउसुमुखिसुलोचनिपिकबचनि
कारनमोहिसुनाउगजगामिनिनिजकोपकर

अनहिततोरप्रियाकेहिंकीन्हा केहिदुइसिरकेहिजमुचहलीन्हा
कहुकेहिरंकहिकरौंनरेसू ॥ कहुकेहिनृपहिनिकासउँदेसू
सकौंतोरअरिअमरौंमारी। काहकीटबपुरेनरनारी+॥
जानसिमोरसुभाउबरोरू मनतवआननचंदचकोरू॥
प्रियाप्रानसुतसर्बसमोरे। परिजनप्रजासकलबसतोरे
जौंकछुकहउँकपटकरितोही भामिनिसपथरामसतमोही
बिहँसिमांगुमनभावतिबाता। भूषनसजहिंमनोहरगाता॥
घरीकुघरीसमुझिजियदेखू। बेगिप्रियापरिहरहिकुबेषू।

दो॰यहसुनिमनगुनिसपथबड़िबिहँसिउठीमतिमंद ॥
भूषनसजतिबिलोकिमृगमनहुंकिरातिनिफंद २६।

टी
रा॰अ॰
१६

सुनिकहराउसुहृदजियजानी प्रेमपुलकिमृदुमंजुलबानी॥
भामिनिभएउतोरमनभावा ॥ घरघरनगरअनंदबधावा+॥
रामहिंदेउंकालजुवराजू+॥ सजहिंसुलोचनिमंगलसाजू
दलकिउठेउसुनिहृदयकठोरू जनुछुइगएउपाकबरतोरू॥
ऐसिउपीरबिहँसितबगोई। चोरनारिजिमिप्रगटनरोई॥
लषीनभूपकपटचतुराई ॥ कोटिकुटिलमनिगुरूपढ़ाई॥
जद्यपिनीतिनिपुननरनाहू ॥ नारिचरितजलनिधिअवगाहू
कपटसनेहबढ़ाइबहोरी+॥ बोलीबिहँसिनयनमुँहमोरी

दो॰ मांगुमांगुपैकहहुपियकबहुँनदेहुनलेहु॥
देनकहेउबरदानदुइतेउपावतसंदेहु॥ २७॥

जानेउंमरमराउहँसिकहई। तुम्हहिंकोहावपरमप्रियअहई

थातिनराषेउमांगेउकाऊ बिसरगयोमोहिभोरसुभाऊ
झूठेहुहमहिदोषजनिदेहू दुइकैचारमांगकिनलेहू ॥
रघुकुलरीतिसदाचलिआई प्रानजाहुबरुबचननजाई ॥
नहिंअसत्यसमपातकपुंजा गिरिसमहोहिकिकोटिकगुंजा
सत्यमूलसबसुकृतसुहाये बेदपुरानबिदितमुनिगाये॥
तेहिपररामसपथकरिआई सुकृतसनेहअवधिरघुराई॥
बातदृढायकुमतिहंसिबोली कुमतिकुबिहगकुलहजनुषोली

दो॰ भूपमनोरथसुभगबनसुखसुबिहंगसमाज।
भिल्लनिजिमिछाड़नचहतिबचनुभयंकरबाज।२८।

सुनहुप्रानप्रियभावतजीका देहुएकबरभरतहिटीका॥
मांगोदूसरबरकरजोरी ॥ पुरवहुनाथमनोरथमोरी।
तापसबेषबिशेषउदासी। चौदहबरषरामबनबासी
सुनिमृदुबचनभूपहियसोकू ससिकरछुअतबिकलजिमिकोकू
गयउसहमिनहिंकछुकहिआवा जनुसचानबनझपटेउलावा
बिबरनभयउनिपटनरपालू। दामिनिहनेउमनहुतरुतालू।
माथेहाथमूंदिदोउलोचन ॥ तनुधरिसोचलागिजनुसोचन
मोरमनोरथसुरतरुफूला ॥ फरतकरिनिजिमिहतेउसमूल
अवधउजारिकीन्हकैकेई ॥ दीन्हेसिअचलबिपतिकैनेई

दो॰ कवनेअवसरकाभयउगयउनारिबिश्वास॥
जोगसिद्धिफलसमयजिमिजतिहिअविद्यानास२९

एहिबिधिराउमनहिंमनझांषा देषिकुभांतिकुमतिमनमाषा

टी॰
रा॰ अ॰
१८

भरतकिराउरपूतनहोही आनेहुबोलिबिसाहिकिमो
जोसुनिसरुअसलागतुम्हारे काहेनबोलहुबचनसंभारे
देहुउतरुअरुकहहुकिनाहीं सत्यसंधतुमरघुकुलमा
देनकहेहुअबजनिबरदेहू। तजहुसत्यजगअपजसले
सत्यसराहिकहेहुबरदेना। जानेहुलेइहिमांगिचबेना।
शिवदधीचबलिजोकछुभाषा तनुधनुतजेउबचनपनुराखा
अतिकटुबचनकहतिकैकेई मानहुलोनजरेपरदेई ॥

धरमधुरंधरधीरधरिनयनउघारेराय ॥
सिरधुनलीनउसासअसिमारेसिमोहिकुठाय

आगेदीखजरतरिसभारी। मनहुरोषतरवारिउघारी
मूठकुबुद्धिधारनिठुराई ॥ धरीकूबरीसानबनाई
लखीमहीपकरालकठोरा। सत्यकिजीवनुलेइहिमोर
बोलेराउकठिनकरिछाती बानीसबिनयतासुसोहा
प्रियाबचनकसकहसिकुभांती भीरुप्रतीतिप्रीतिकरहां
मेरेभरतरामदुइआंखी ॥ सत्यकहउंकरिशंकरसा
अवसिदूतमैंपठउबप्राता। ऐहहिंबेगिसुनतदोउभ्रा
सुनिसोधिसबसाजसजाई देउंभरतकहंराजुबजाई ॥

लोभुनरामहिराजकरबहुतभरतपरप्रीति ।
मैंबड़छोटबिचारिजियकरतरहेउंनृपनीति

रामसपथसतकहउंसुभाऊ राममातुकछुकहेउनका
मैंसबकीन्हतोहिबिनपूछें। तेहितेंपरेउमनोरथछूछे

रिसपरिहरुअबमंगलसाजू कछुदिनगयेभरतयुवराजू
एकहिबातमोरदुखलागा बरदूसरअसमंजसमांगा
अजहुंहृदयजरततेहिआंचा रिसपरिहासकिसांचेउसांचा
कहुतजिरोषरामअपराधू। सबकोउकहइरामसुठिसाधू
तुहुंसराहसिकरसिसनेहू अबसुनिमोहिभयउसंदेहू
जासुसुभाउअरिहिअनुकूला सोकिमिकरहिमातुप्रतिकूला।

प्रियाहासरिसपरिहरहिमांगबिचारबिबेकु।
जेहिदेखौंअबनयनभरिभरतराजअभिषेकु ३२

जिऐमीनबरुबारिबिहीना मनिबिनुफनिकुजियैदुखदीना।
कहउसुभावनछलुमनमांही जीवनमोररामबिनुनाहीं॥
समुझिदेखिजियप्रियाप्रवीना जीवनरामदरसआधीना॥
सुनिमृदुबचनकुमतिअतिजरई मनहुंअनलआहुतिघृतपरई
कहइकरहुकिनकोटिउपाया इहांनलागहिराउरिमाया
देहुकिलेहुअजसकरिनाहीं मोहिनबहुतप्रपंचसोहाहीं
रामसाधुतुमसाधुसयाने राममातुभलिसबपहिचाने
जसकौसिलामोरभलताका तसफलउन्हहिंदेहुंकरिसाका।

दो॰ होतप्रातमुनिबेषधरिजौंनरामबनजाहिं
मोरमरनराउरअजसनृपसमुझियमनमांहि

असकहिकुटिलभईउठिठाढ़ी मानहुंरोषतरंगिनिबाढ़ी
पापपहारप्रगटभइसोई भरीक्रोधजलजाइनजोई।
दोउबरकूलकठिनहठधारा भंवरकूबरीबचनप्रचारा

ढाहतभूपरूपतरुमूला ॥ चलीबिपतिबारिधिअनुकू
लखीनरेशबातसबसाँची ॥ तियमिसुमीचुसीसपरनाँची
गहिपदबिनयकीन्हबैठारी ॥ जनिदिनकरकुलहोसिकु
माँगुमाथअबहींदेउँतोही ॥ रामबिरहजनिमारसिमोहि
राखुरामुकहुँजेहितेहिभाँती। नाहितजरहिजन्मभरिछाती

दो·देखीब्याधिअसाधनृपपरेउधरनिधुनिमाथ॥
कहतपरमआरतबचनरामरामरघुनाथ॥३४॥

ब्याकुलराउसिथिलसबगाता करिनिकलपतरुमनहुँनिपा
कंठसूखमुखआवनबानी॥ जनुपाठीनदीनबिनुपानी
पुनिकहकटुकठोरकैकेई ॥ मनहुँघायमहुँमाहुरदेई
जौंअंतहुँअसकरतबरहेऊ। माँगुमाँगुतुमकेहिबलकहे
दुइकिहोहिंएकसमयभुआला हँसबठठाइफुलाउबगाल
दानिकहाउबअरुकृपनाई॥ होइकिखेमकुसलरौताई
छाड़हुबचनुकिधीरजुधरहू। जनिअबलाजिमिकरुना
तनुतियतनयधामधनधरनी सत्यसंधकहुँतृनसमब

दो·मरमबचनसुनिराउकहकहुकछुदोषननोर॥
लागेउतोहिपिसाचजिमिकालकहावतमोर ३५॥

चहतनभरतुभूपपदभोरें ॥ बिधिबसकुमतिबसीउर
सोसबमोरपापपरिनामू ॥ भयउकुठाहरजेहिबिधिब
सुबसबसिहिफिरिअवधसुहाई सबगुनधामरामप्रभुताई
करिहहिंभाइसकलसेवकाई होइहितिहुँपुररामबड़ाई

तोरकलंकमोरपछिताऊ॥ मुयेहुँनमिटहिंनजाइहिकाऊ
अबतोहिनीकलागु।करुसोई लोचनओटबैठुमुँहगोई॥
जबलगिजिअउँकहउँकरजोरी तबलगिजनिकछुकहसिबहोरी।
फिरपछितैहसिअंतअभागी मारसिगायनहारुहिलागी

दो॰ परेउराउकहिकोटिबिधिकाहेंकरसिनिदानु ॥
कपटसयानिनकहतिकछुजागतिमनहुँमसानु ॥

रामरामरटबिकलभुआलू। जनुबिनुपंखबिहंगबिहालू।
हृदयमनावभोरुजनिहोई। रामहिजाइकहइजनिकोई॥
उदउकरहुजनिरविरघुकुलगुर अवधबिलोकिसूलहोइहिउर
भूपप्रीतिकैकेइकठिनाई। उभयअवधिबिधिरचीबनाई
बिलपतनृपहिभयउभिनुसारा बीनाबेनुसंखधुनिद्वारा॥
पढ़इभाटगुनगावहिंगायक सुनतनृपहिंजनुलागतिसायक
मंगलसकलसोहाइनकैसे। सहगामिनिहिंबिभूषणजैसे
तेहिनिसिनीदपरीनहिंकाहू रामदरसलालसाउछाहू॥

दो॰ द्वारभीरसेवकसचिवकहहिंउदितरविदेख॥
जागेउअजहुँनअवधपतिकारनकवनबिशेष॥

पछिलेपहरभूपनितजागा। आजुहमहिंबड़अचरजुलागा।
जाहुसुमंत्रजगावहुजाई॥ कीजियकाजुरजायसुपाई॥
गएसुमंत्रतबराउरमाहीं। देषिभयानकजातडेराहीं।
धाइखाइजनुजाइनहेरा॥ मानहुँबिपतिबिषादबसेरा
पूँछेकोउनउत्तरदेई॥ ॥ गएजेहिभवनभूपकैकेई॥

टी॰
रा॰ अ॰
२१

काहिजयजीवबैठसिरनाई देषिभूपगतिगयउसुखाई।
सोचबिकलबिबरनमहिपरेऊ मानहुकमलमूलपरिहरेऊ
सचिवसभीतसकैनहिंपूंछी बोलीअसुभभरीसुभछूंछी

दो॰ परीनराजहिंनींदनिसिहेतुजानुजगदीस॥
रामरामरटिभोरकियकहइनमरममहीस ३८

आनहुरामहिबेगबुलाई॥ समाचारतबपूछेहुआई॥
चलेउसुमंत्रुरायरुषजानी लषीकुचालकीन्हकछुरानी
सोचबिकलमगपरइनपाऊ रामहिंबोलिकहहिंकाराऊ
उरधरिधीरजुगयेउदुआरे पूछहिंसकलदेषिमनुमारे
समाधानकरसोसबहीका गयेउजहांदिनकरकुलटीका
रामसुमंत्रहिआवतदेखा आदरकीन्हपितासमलेखा
निरखिबदनकहभूपरजाई रघुकुलदीपहिचलेलिवाई
रामकुभांतिसचिवसंगजांही देखिलोगजहंतहंबिलखांही

जाइदीखरघुबंशमणिनरपतिनिपटकुसाजु
सहमिपरेउलषिसिंघिनिहिमनहुंबृद्धगजराजु।

सूषहिंअधरजरहिंसबअंगू मनहुंदीनमनिहीनभुजंगू
सरुषसमीपदीषिकैकेई मानहुमीचुघरीगनिलेई॥
करुनामयमृदुरामसुभाऊ प्रथमदीखदुखसुनानकाऊ
तदपिधीरधरिसमउबिचारी पूछीमधुरबचनमहतारी
मोहिकहुमातुतातदुखकारन करियजतनजेहिहोइनिवारन
सुनहुरामसबकारनएहू। राजहितुमपरपरमसनेहू

देनकहेहुमोहिदुइबरदाना। मांगेउजोकछुमोहिसुहाना।
सोसुनिभयेउभूपउरसोचू। छाड़िनसकहिंतुमारसकोचू।

सुतसनेहइतबचनउतसंकटपरेउनरेसु॥
सकहुतआयसुधरहुसिरमेटहुकठिनकलेसु ४०

निधरकबैठिकहैकटुबानी। सुनतकठिनताअतिअकुलानी।
जीभकमानबचनसरनाना। मनहुमहिपमृदुलच्छसमाना।
जनुकठोरपनुधरेशरीरू। सिखइधनुषबिद्याबरबीरू।
सबप्रसंगरघुपतिहिसुनाई। बैठिमनहुंतनुधरिनिठुराई।
मनमुसुकायभानुकुलभानू। रामसहजआनंदनिधानू।
बोलेबचनबिगतसबदूषन। मृदुमंजुलजनुबागबिभूषन।
सुनजननीसोइसुतबड़भागी। जोपितुमातुबचनअनुरागी।
तनयमातुपितुतोषनहारा। दुर्लभजननिसकलसंसारा।

दो॰
रा॰ प्र॰
२३

मुनिगनमिलनबिशेषबनसबहिभांतिहितमोर।
तेहिमहँपितुआयसुबहुरिसंमतजननीतोर ४१

भरतप्राणप्रियपावहिंराजू। बिधिसबबिधिमोहिसन्मुखआजू।
जौनजाउँबनऐसेहुकाजा। प्रथमगनियमोहिमूढ़समाजा।
सेवहिंअरंडकल्पतरुत्यागी। परिहरअमृतलेहिविषमागी।
तेउनपाइअससमयचुकाहीं। देखुबिचारिमातुमनमाहीं।
अंबएकदुखमोहिबिशेषी। निपटबिकलनरनायकदेषी।
थोरिहिबातपितहिदुषभारी। होतिप्रतीतिनमोहिमहतारी।
राउधीरगुनउदधिअगाधू॥ भामोहितेंकछुबड़अपराधू।

जौंतेंमोहिनकहबकछुराजू। मोहिसपथतोहिकहउँसतभाउ

दो· सहजसरलरघुबरबचनकुमतिकुटिलकरिजान॥
चलइजोंकजिमिबक्रगतिजद्यपिसलिलसमान ४२।

रहसीरानिरामरुखपाई॥ बोलीकपटसनेहजनाई॥
सपथतुम्हारिभरतकइआना। हेतुनमैंकछुदूसरजाना॥
तुमअपराधजोगनहिंताता। जननीजनकबंधुसुखदाता।
रामसत्यजोसबकछुकहहू तुमपितुमातुबचनरतिअहहू
पितहिबुझाइकहहुबलिसोई चौथेपनजेहिअजसुनहोई॥
तुमसमसुवनसुकृतजेहिंदीन्हे उचितनतासुनिरादरकीन्हे॥
लागहिंकुमुखबचनसुभकैसे मनहुगयादिकतीरथजैसे॥
रामहिंमातुबचनसबभाए जिमिसुरसरिगतसलिलसुहाए॥

दो·गइमुरछारामहिसुमिरिनृपफिरिकरवटलीन्ह॥
सचिवरामआगमनुकहिबिनयसमयसमकीन्ह ४३।

अवनिपअकनिरामपगुधारे धरिधीरजतबनयनउघारे॥
सचिवसँभारिराउबैठारे॥ चरनपरतनृपरामुनिहारे॥
लियेसनेहबिकलउरलाई। गइमनिमनहुँफनिकफिरिपाई
रामहिंचितइरहेउनरनाहू॥ चलाबिलोचनबारिप्रबाहू।
सोकबिबसकछुकहैनपारा। हृदयलगावतबारहिंबारा॥
बिधिहिमनावराउमनमाहीं। जेहिरघुनाथनकाननजाहीं
सुमिरिमहेसहिकहइनिहोरी बिनतीसुनहुसदासिवमोरी
आसुतोषतुमअवढरदानी॥ आरतिहरहुदीनजनजानी॥

दो॰ तुमप्रेरकसबकेहृदयसोमतिरामहिदेहु ।।
बचनमोरतजिरहहिंघरपरिहरुसीलसनेहु ४४॥

अयसुहोउबरुसुयशनसाऊ॥ नरकपरौंबरुसुरपुरजाऊ॥
सबदुखदुसहसहावहुमोही लोचनओटरामजनिहोहीं॥
असमनगुणितराउनहिंबोला। पीपरपानसरिसमनडोला॥
रघुपतिपितहिप्रेमबसजानी। पुनिकछुकहेउमातुअनुमानी
देसकालअवसरअनुसारी॥ बोलेबचनविनीतबिचारी॥
तातकहौंकछुकरौंढिठाई। अनुचितछमबजानिलरिकाई
अतिलघुबातलागिदुखपावा। काहुनकहिमोहिप्रथमजनावा।
देखिगुसाइंहिपूछेउमाता। सुनिप्रसंगभासीतलगाता

दो॰ मंगलसमयसनेहबससोचपरिहरियतात॥
आयसुदेइयहरषिहियकहिपुलकेप्रभुगात ४५।

धन्यजन्मजगतीतलतासू। पितहिप्रमोदचरितसुनजासू
चारिपदारथकरतलताके प्रियपितुमातुप्राणसमजाके
आयसुपालिजन्मफलपाई आयेहौंबेगिहोउरजाई॥
बिदामातुसनआवौंमांगी। चलिहौंबनहिंबहुरिपगलागी
असकहिरामगवनतबकीन्हा भूपशोकबसउतरनदीन्हा
नगरव्यापगइबातसुतीछी छुवतचढीजनुसबतनुबीछी
सुनिभयेबिकलसकलनरनारी बेलबिटपजनुदेखुदवारी
जोजहँसुनैधुनैसिरसोई॥ बड़बिषादनहिंधीरजहोई

मुखसुखाहिंलोचनस्रवहिंसोकनहृदयसमाय

मानहुकरुणारसकटकैउतरीअवधबजाय

भलिबनायबिधिबातबिगारी जहँतहँदेहिंकैकेइहिगारी
इहिपापिनिहिबूझिकापरेऊ छायभवनपरपावकधरेऊ
निजकरनयनकाटिचहदीखा डारिसुधाबिषचाहतचीखा
कुटिलकठोरकुबुद्धिअभागी भइरघुबंशबेणुबनआगी
पल्लवबैठिपेड़इनकाटा ॥ सुखमैंशोकठाठधरिठाठा
सदारामइहिप्राणसमाना। कारणकवनकुटिलपनठाना
सत्यकहहिंकविनारिसुभाऊ सबबिधिअगमअगाधदुराऊ
निजप्रतिबिंबबरुकिगहिजाई जानिनजाइनारिगतिभाई

काहनपावकजारिसककानसमुद्रसमाइ॥
कानकरैअबलाप्रबलकेहिजगकालनखाइ४७

कासुनाइबिधिकाहसुनावा काहदेखायचहकाहदेखावा
एककहहिंभलभूपनकीन्हा बरुबिचारनहिंकुमतिहिदीन्हा
जोहठिभएउसकलदुखभाजन अबलाबिबसज्ञानगुनगाज
एकधरमपरमितिपहिचाने नृपहिंदोषनहिंदेहिंसयाने
सिविदधीचिहरिचंदकहानी एकएकसनकहहिंबषानी
एकभरतकरसंमतकहहीं। एकउदासभायसुनरहहीं
कानमूंदिकररदगहिजीहा। एककहहिंयहबातअलीक
सुकृतजाइअसकहततुम्हारे रामभरतकहुंप्रानपियारे

दो· चंद्रचवइबरुअनलकनसुधाहोइबिषतूल।
सपनेहुकबहुनकरहिंकछुभरतरामप्रतिकूल४८

एकाबिधातहिंदूषनदेहीं सुधादिखाइदीन्हबिषुजेही
खरभरनगरसोचसबकाहू दुसहदाहुउरमिटाउछाहू
बिप्रबधूकुलमान्यजठेरी जेप्रियपरमकैकईकेरी॥
लगींदेनसिखसीलसराहीं बचनबानसमलागहिंताही
भरतनमोहिंप्रियरामसमाना सदाकहहुयहसबजगजाना
करहुरामपरसहजसनेहू केहिंअपराधआजुबनदेहू
कबहुँनकियेहुसवतिआरेसू प्रीतिप्रतीतिजानसबदेसू
कौसल्याअबकाहबिगारा तुमजेहिलागिबज्रपुरपारा

दो॰ सीयकिपियसंगुपरिहरिहिलषनुकिरहिहहिंधाम
राजकिभूँजबभरतपुरनृपकिजिइहिंबिनुराम ४९

असबिचारिउरछाड़हुकोहू सोककलंककोठिजनिहोहू
भरतहिअवसदेहुयुवराजू काननकाहरामकरकाजू
नाहिनरामराजकेभूषे धरमधुरीनबिषयरसरूषे
गुरुगृहबसहुरामतजिगेहू नृपसनअसबरुदूसरलेहू
जौंनहिंलगिहहुकहेहमारे नहिंलागिहिकछुहाथतुम्हारे
जौपरिहासकीन्हकछुहोई तौकहिप्रगटजनावहुसोई
रामसरिससुतकाननयोगू काहकहहिंसुनितुमकहँलोगू
उठहुबेगिसोइकरहुउपाई जेहिबिधिसोककलंकनसाई

छं॰ जेहिभाँतिसोककलंकुजाइउपायकरिकुलपालही
हठिफेररामहिजातबनजनिबातदूसरिचालही
जिमिभानुबिनुदिनुप्रानबिनुतनुचंदबिनुजिमिजामनी

टी॰
रा॰ अ॰
२७

तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझधौंजियभामिनी।
सो·सखिनसिखावनदीन्हसुनतमधुरपरनामहित।
तेहिकछुकाननकीन्हकुटिलप्रबोधीकूबरी।५०।

उतरुनदेइदुसहरसरूषी॥ मृगनचितवजनुबाघिनिभूष
ब्याधिअसाधिजानितिन्हत्यागी चलींकहतमतिमंदअभागी।
राजुकरतयहदैवबिगोई॥ कीन्हेसिअसजसकरइनको
एहिबिधिबिलपहिंपुरनरनारी देहिंकुचालिहिंकोटिकगारी।
जरहिंबिषमजुरलेहिंउसासा कवनिरामबिनुजीवनआसा
बिपुलबियोगप्रजाअकुलानी जनुजलचरगनसूषतपानी।
अतिबिषादबसलोगलुगाई गयेमातुपहँरामगोसाँई॥
मुखप्रसन्नचितचौगुनचाऊ इहैसोचजनिराखैराऊ + +॥

दो·नवगयंदरघुबीरमनुराजअलानसमान + + ॥
छूटजानिबनगवनसुनिउरअनंदअधिकान ५१॥

रघुकुलतिलकजोरिदोउहाथा। मुदितमातुपदनाएउमाथा।
दीन्हअसीसलाइउरलीन्हे॥ भूषनबसननिछावरकीन्हे।
बारबारमुखचुंबतिमाता। नयननेहजलपुलकितगात
गोदराषिपुनिहृदयलगाए। स्रवतप्रेमरसपयदसुहाये॥
प्रेमप्रमोदनकछुकहिजाई रंकधनदपदवीजनुपाई॥
सादरसुंदरबदननिहारी॥ बोलीमधुरबचनमहतारी
कहहुतातजननीबलिहारी कबहिंलगनमुदमंगलकारी
सुकृतसीलसुखसींवसुहाई जन्मलाभकइअवधिअघाई

दो॰ जेहिचाहतनरनारिसबअतिआरतएहिभाँति
जिमिचातकचातकितृषितबृष्टिसरदरितुस्वाति५१

तातजाउबलिबेगिनहाऊ। जोमनभावमधुरकछुषाहू
पितुसमीपतबजाएहुभैया भैबड़बारजाइबलिमैया॥
मातुबचनसुनिअतिअनुकूला। जनुसनेहतरुवरकेफूला॥ सुरतरु
सुषमकरंदभरेश्रियमूला। निरषिराममनुभवरनभूला
धरमधुनीरधरमगतिजानी कहेउमातुसनअतिमृदुबानी
पितादीन्हमोहिकाननराजू। जहँसबभाँतिमोरबड़काजू
आयसुदेहिमुदितमनमाता जेहिमुदमंगलकाननजाता
जनिसनेहबसडरपसिमोरे। आनंदअंबअनुग्रहतोरे +॥

दो॰ बर्षचारिदसबिपिनबसकरिपितुबचनप्रमान
आइपाइपुनिदेषिहौंमनजनेकरसिम्लान॥५२॥

बचनबिनीतमधुररघुबरके सरसमलगेमातुउरकरके॥
सहमसूषिसुनिसीतलबानी जिमिजवासुपरेपावसपानी
कहिनजाइकछुहृदयबिषादू मनहुँमृगीसुनिकेहरिनादू।
नयनसजलतनथरथरकाँपी माजहिषाइमीनजनुमाँपी॥
धरिधीरजसुतबदननिहारी गदगदबचनकहतिमहतारी
तातपितहितुमप्रानपियारे देखिमुदितनितचरितुम्हारे
राजदेनकहँसुभदिनसाधा कहेउजानबनकेहिअपराधा
तातसुनावहुमोहिनिदानू। कोदिनकरकुलभयउकृसानू

दो॰ निरषिरामरुषसचिवसुतकारनकहेउबुझाइ॥

सुनिप्रसंगरहिमूकजिमिदशाबरनिनहिंजाइ

राखिनसकहिनकहिसकजाहू दुहूंभांतिउरदारुणदाहू
लिखतसुधाकरगालिखिराहू बिधिगतिबामसदासबकाहू
धरमसनेहउभयमतिघेरी भइगतिसांपछुछुंदरिकेरी
राखौंसुतहिकरौंअनुरोधू। धर्मजायअरुबंधुबिरोधू
कहौंजानिबनतौबड़िहानी संकटसोचबिबसभईरानी
बहुरिसमुझितियधरमसयानी रामभरतदोउसुतसमजानी
सरलसुभाउराममहतारी बोलीबचनधीरधरिभारी
तातजाउंबलिकीन्हेउनीका पितुआयसुसबधरमकटी

दो॰ राजदेनकहिदीन्हबनुमोहिनसोदुखलेसु॥
तुमबिनुभरतहिभूपतिहिप्रजहिप्रचंडकलेसु ५५

जौकेवलपितुआयसुताता तौजनिजाहुजानिबड़िमात
जौपितुमातुकहेउबनजाना तौकाननसतअवधसमान
पितुबनदेवमातुबनदेवी। खगमृगचरनसरोरुहसेवी
अंतहुउचितनृपहिबनबासू बयबिलोकिहियहोतहिरा
बड़भागीबनअवधअभागी जोरघुबंशतिलकतुमत्यागी
जौसुतकहौंसंगमोहिलेहू तुम्हरेहृदयहोइसंदेहू॥
पूतपरमप्रियतुमसबहीके प्रानप्रानकेजीवनजीके
तेतुमकहहुमातुबनजाऊं मैंसुनिबचनबैठिपछताउं

यहबिचारनहिंकरौंहठझूठसनेहबढ़ाइ॥ × ॥
मानमातकरनातबलिसुरतबिसरिजनिजाइ ५६

देवपितरसबतुमहिगोसाईं राषहुपलकनयनकीनाईं
अवधिअंबुप्रियपरिजनमीना तुमकरुनाकरधरमधुरीना
असबिचारिसोइकरहुउपाई सबहिजिअतजेहिभेटहुआई
जाहुसुषेनबनहिंबलजाऊं करिअनाथजनपरिजनगाऊं
सबकरआजुसुकृतफलबीता भयउकरालकालबिपरीता
बहुबिधिबिलपिचरनलपटानी परमअभागिनिआपुहिजानी
दारुन दुसहदाहुउरब्यापा बरनिनजाइंबिलापकलापा
रामउठाइमातउरलाई ॥ कहिमृदुबचनबहुरिसमुझाई

समाचारतेहिसमयसुनि सीयउठीअकुलाय
जाइसासुपदकमलयुग बंदिबैठसिरुनाय ५७

दीन्हअसीससासुमृदुबानी अतिसुकुमारिदेषिअकुलानी
बैठिनमितमुषसोचतिसीता रूपराशिपतिप्रेमपुनीता।
चलनचहतबनजीवननाथू केहिसुकृतसनहोइहिसाथू
कीतनुप्रानकिकेवलप्राना बिधिकरतबकछुजाइनजाना
चारुचरननषलेषतिधरनी नूपुरमुषरमधुरकबिबरनी
मनहुंप्रेमबसबिनतीकरहीं हमहिंसीयपदजनिपरिहरहीं
मंजुबिलोचनमोचतिबारी बोलीदेषिराममहतारी॥
तातसुनहुसियअतिसुकुमारी सासससुरपरिजनहिपियारी

पिताजनकभूपालमनि ससुरभानुकुलभानु
पतिरविकुलकैरवबिपिन बिधुगुनरूपनिधानु

मैंपुनिपुत्रबधूप्रियपाई॥ रूपराशिगुनसीलसुहाई

नयनपुत्तरिकरिप्रीतिबढ़ाई राखेउप्रानजानकिहिंलाई॥
कलपबेलिजिमिबहुबिधिलाली सींचसनेहसलिलप्रतिपाली
फूलतफलतभयउबिधिबामा जानिनजाइकाहपरिनामा
पलंगपीठतजिगोदहिंडोरा सियनदीन्हपदअवनिकठोरा
जिअनिमूरिजिमिजोगवतरहऊं दीपबातिनहिंटारनकहऊं
सोइसियचलनचहतिबनसाथा आयसुकाहहोयरघुनाथा
चंदकिरनरसरसिकचकोरी रविरुखनयनसकैकिमिजोरी

दो॰ करिकेहरिनिशिचरचरहिंदुष्टजंतुबनभूरि॥
बिषबाटिकाकिसोहसुतसुभगसजीवनमूरि॥५९॥

बनहितकोलकिरातकिसोरी रचीबिरंचिबिषमसुखभोरी
पाहनकृमिजिमिकठिनसुभाऊ तिनहिंकलेसुनकाननकाऊ
कैतापसतियकाननजोगू। जिन्हतपहेतुतजासबभोगू
सियबनबसहिंतातकेहिभांती चित्रलिखितकपिदेखिडराती
सुरसरसुभगबनजबनचारी। डाबरजोगुकिहंसकुमारी
असबिचारिजसआयसुहोई मैंसिखदेऊंजानकिहिसोई।
जौंसियभवनरहैकहअंबा मोहिकहंहोइबहुतअवलंबा
सुनिरघुबीरमातुप्रियबानी सीलसनेहसुधाजनुसानी॥

दो॰ कहिप्रियबचनबिबेकमयकीन्हमातुपरितोष
लगेप्रबोधनजानकिहिप्रगटबिपनगुनदोष॥६०॥

मातुसमीपकहतसकुचाहीं बोलेसमउसमुझिमनमाहीं
राजकुमारिसिखावनुसुनहू। आनभांतिजियजनिकछुगुन

आपनमोरनीकजौंचहहू॥ बचनहमारमानगृहरहहू॥
आयसुमोरसासुसेवकाई॥ सबबिधिभामिनिभवनभलाई।
येहितेअधिकधरमनाहिंदूजा। सादरसासुससुरपदपूजा॥
जबजबमातुकरिहिसुधमोरी। होइहिप्रेमबिकलमतिभोरी
तबतबतुमकहिकथापुरानी। सुंदरसमुझायेउमृदुबानी॥
कहौंसुभायसपथशतमोही। सुमुखिमातुहितराखौंतोही

दो॰ गुरुश्रुतिसंमतधरमुफलपाइयबिनहिंकलेस
हठिबससबसंकटसहेगालवनहुषनरेस॥ ६१॥

मैंपुनिकरिप्रमानपितुबानी। बेगिफिरबसुनुसुमुखिसयानी
दिवसजातनहिंलागहिंबारा। सुंदरिसिखवनुसुनहुहमारा
जोहठकरहुप्रेमबसबामा। तौतुमदुखपाउबपरिनामा
काननकठिनभयंकरभारी। घोरघामहिमुबारिबयारी॥
कुसकंटकमगकाकरनाना। चलबपयादेहिबिनुपदत्राना
चरनकमलमृदुमंजुतुम्हारे। मारगअगमभूमिधरभारे॥
कंदरखोहनदीनदनारे ४॥ अगमअगाधनजाहिंनिहारे
भालुबाघबृककेहरिनागा। करहिंनादसुनिधीरजभागा

दो॰ भूमिसयनबलकलबसनअसनकंदफलमूल
तेकिसदासबदिनमिलहिंसमैंसमयअनुकूल ६२

नरअहाररजनीचरचरहीं॥ कपटबेषबिधिकोटिककरहीं
लागनअतिपहारकरपानी। बिपिनबिपतिनहिंजाइबखानी।
ब्यालकरालबिहगबनघोरा। निशिचरनिकरनारिनरचोरा।

उरपहिंधीरगहनसुधिआए मृगलोचनितुमभीरुसुभा
हंसगमनितुमनहिंबनजोगू सुनिअपजसमोहिदेइहिलो
मानससलिलसुधाप्रतिपाली जिअइकिलवनपयोधिमरा
नवरसालबनबिहरनसीला। सोहकिकोकिलबिपनकरी
रहहुभवनअसहृदयबिचारी चंदबदनिदुखकाननभारी

सहजसुहृदगुरुस्वामिसिखजोनकरइसिरमानि
सोपछितायअघायउरअवसहोइहितहानि ६३॥

सुनिमृदुबचनमनोहरपियके लोचनललितभरेजलसियके।
सीतलसिखदाहकभईकैसे। चकइहिसरदचांदनीजैसे॥
उतरुनआवबिकलबैदेही॥ तजनचहतसुचिस्वामिसने
बरबसरोकिबिलोचनबारी धरिधीरजुउरअवनिकुमारी
लागिसासुपगकहाकरजोरी छमबिदेबिबड़िअबिनयमोरी
दीन्हप्रानपतिमोहिसिखसोई जेहिबिधिमोरपरमहितहोई
मैंपुनिदीखसमुझिमनमाहीं पियबियोगसमदुखजग

दो॰ प्राननाथकरुनायतन सुंदरसुखदसुजान।
तुमबिनुरघुकुलकुमुदबिधु सुरपुरनरकसमान

मातुपिताभगनीप्रियभाई प्रियपरिवारसुहृदसमुदा
सासुससुरगुरसजनसहाई सुतसुंदरसुसीलसुखदाई
जहँलगिनाथनेहअरुनाते पियबिनुतियहिंतरनितेता
तनुधनुधामधरनिपुरराजू पतिबिहीनसबसोकसमाजू
भोगरोगसमभूषनभारू॥ जमजातनासरिससंसारू

प्राननाथतुमबिनुजगमाहीं मोकहुँसुखदकतहुकोउनाहीं
जियबिनुदेहनदीबिनुबारी तैसहिंनाथपुरुषबिनुनारी॥
नाथसकलसुखसाथतुमारे सरदबिमलबिधुबदननिहारे

खगमृगपरिजननगरबनबलकलबिमलदुकूल
नाथसाथसुरसदनसमपर्णशालसुखमूल ६५

बनदेवीबनदेवउदारा × ॥ करिहैंसासुससुरसमसारा
कुशकिसलयसाथरीसुहाई प्रभुसंगमंजुमनोजतुराई॥
कंदमूलफलअमियअहारू अवधसौधसतसरसपहारू
छणछणप्रभुपदकमलबिलोकी रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी
बनदुखनाथकहेबहुतेरे। भयबिषादपरितापघनेरे॥
प्रियबियोगलवलेशसमाना सबमिलहोहिनकृपानिधाना
असजियजानिसुजानसिरोमनि लेइयसंगमोहिंछाड़ियजनि
बिनतीबहुतकरौंकास्वामी करुणामयउरअंतरजामी।

राखियअवधजोअवधिलगिरहतजानियेप्राण
दीनबंधुसुंदरसुखदसीलसनेहनिधान॥६६॥

मोहिमगचलतनहोइहिहारी छणछणचरणसरोजनिहारी
सबहिंभांतिपियसेवाकरिहौं मारगजनितसकलश्रमहरिहौं
पांवपखारिबैठितरुछाहीं करिहौंपवनमुदितमनमाहीं
श्रमकणसहितस्यामतनुदेखे काउदुखसमयप्राणपतिपेखे
सममहितृणतरुपल्लवडासी पायपलोटिहिसबनिसिदासी
बारबारमृदुमूरतिजोही ॥ लागिहितापबयारनमोही

कोप्रभुसंगमोहिचितवनिहारा सिंघबधुहिजिमिससिकासि
मैंसुकुमारिनाथबनजोगू॥ तुमहिंउचिततपमोकहंभोगू

दो॰ ऐसेबचनकठोरसुनिजौंनहृदयबिलगान+॥
तौप्रभुबिषमबियोगदुखसहिहहिंपावरप्रान ६७

असकहिसीयबिकलभइभारी बचनबियोगनसकीसभारी
देखिदसारघुपतिजियजाना। हठराखेनहिंराखिहिप्राना॥
कहेउकृपालभानुकुलनाथा परिहरसोचचलहुबनसाथा
नहिंबिषादकरअवसरआजू बेगिकरहुबनगवनसमाजू
कहिप्रियबचनप्रियासमुझाई लगेमातुपदआसिषपाई॥
बेगिप्रजादुखमेटबआई ॥ जननीनिठुरबिसरिजनिजाई
फिरहिदसाबिधिबहुरिकिमोरी देखिहौंनयनमनोहरजोरी॥
सुदिनसुघरीतातकबहोइहि जननीजिअतबदनबिधुजोइहि

दो॰ बहुरिबच्छकहिलालकहिरघुपतिरघुबरतात॥
कबहिंबोलाइलगाइहियहरषिनिरषिहौंगात ॥६८॥

लखिसनेहकातरमहतारी बचनुनआवबिकलभइभारी॥
रामप्रबोधुकीन्हबिधिनाना। समउसनेहनजाइबखाना+॥
तबजानकीसासुपदलागी सुनिअमायमैंपरमअभागी॥
सेवासमयदैइअबनदीन्हा। मोरमनोरथसुफलनकीन्हा॥
तजबछोभुजनिछाड़ियछोहू करमुकठिनकछुदोषनमोह
सुनिसियबचनसासुअकुलानी दसाकवनबिधिकहौंबषा
बारहिंबारलाइउरलीन्ही+॥ धरिधीरजुसिखआसिषदी

टी॰
रा॰अ॰
३६

अचलहोउअहिवाततुम्हारा जबलगिगंगजमुनजलधारा

दो॰सीतहिसासुअसीससिखदीन्हअनेकप्रकार।
चलीनाइपदपदुमसिरुअतिहितबारहिबार ६९।

समाचारजबलछमनपाए॥ व्याकुलबिलषबदनउठिधाए
कंपपुलकतननयनसनीरा गहेचरनअतिप्रेमअधीरा॥
कहिनसकतकछुचितवतठाढे मीनदीनजनुजलतेंकाढे+॥
सोचहृदयबिधिकाहोनिहारा सबसुखसुकृतसिरानहमारा
मोकहुँकाहकहबरघुनाथा रषिहहिंभवनकिलेइहहिंसाथा
रामबिलोकिबंधुकरजोरें देहगेहसबसनतृनतोरें+॥
बोलेबचनरामनयनागर ॥ सीलसनेहसरलसुखसागर
तातप्रेमबसजनिकदराहू समुझिहृदयपरिनामउछाहू

दो॰मातुपितागुरुस्वामिसिखसिरधरिकरहिंसुभाय
लहेउलाभतिन्हजन्मकर नतरुजन्मजगजाय ७०।

असजियजानिसुनहुसिषभाई करहुमातुपितुपदसेवकाई॥
भवनभरतरिपुसूदननाहीं। राउवृद्धममदुखमनमाहीं।
मैंबनजाउँतुमहिंलेसाथा होइसबहिंबिधिअवधअनाथा
गुरुपितुमातुप्रजापरिवारू सबकहुँपरइदुसहदुखभारू
रहहुकरहुसबकरपरितोषू। नतरुतातहोइहिबड़दोषू॥
जासुराजप्रियप्रजादुषारी। सोनृपअवसिनरकअधिकारी
रहहुतातअसनीतिबिचारी सुनतलषनभयेव्याकुलभारी
सियरेबचनसूषिगएकैसे। परसततुहिनतामरसजैसे॥

टी॰
रा॰ अ॰
३१

उतरुनआवैप्रेमबसगहेचरणअकुलाइ॥
नाथदासमैंस्वामितुमतजहुतकाहबसाइ७१

दीन्हमोहिसिखनीकिगोसांईं लागिअगमअपनीकदराईं
नरवरधीरधरमधुरधारी॥ निगमनीतिकहुंतेअधिकारी
मैंशिशुप्रभुसनेहप्रतिपाला मंदिरमेरुकिलेहिंमराला॥
गुरुपितुमातुनजानउंकाहू कहउंसुभाउनाथपतिआहू
जहंलगिजगतसनेहसगाई। प्रीतिप्रतीतिनिगमनिजुगाईं
मोरेसबइकतुमस्वामी॥ दीनबंधुउरअंतरजामी॥
धरमनीतिउपदेशियताही। कीरतिभूतिसुगतिप्रियजाही
मनक्रमबचनचरनरतहोई कृपासिंधुपरिहरियकिसोईं

करुनासिंधुसुबंधुकेसुनमृदुबचनबिनीत
समुझाएउरलाइप्रभुजानिसनेहसभीत७२।

मांगहुबिदामातुसनजाई॥ आवहुबेगिचलहुबनभाई॥
मुदितभयेसुनरघुबरबानी भयेउलाभबड़गईबड़िहानी
हरषितहृदयमातुपहिंआए मनहुंअंधफिरलोचनपाये
जाइजननिपगनाएउमाथा। मनरघुनंदनजानकिसाथा
पूंछेमातुमलिनमनदेखी। लषनकहीसबकथाबिशेषी
गईसहमिसुनिबचनकठोरा मृगीदेखिदवजनुचहुंओरा
लषनलषेउभाअनरथआजू यहिसनेहबसकरबअकाजू
मांगतबिदासभयसकुचाहीं जाइसंगबिधिकहहिंकिनाहीं

दो॰ समुझिसुमित्रारामसियरूपसुसीलसुभाउ

नृपसनेहलखिधुनेउसिरुपापिनीदीन्हकुदाउ

धीरजुधरेउकुअवसरजानी सहजसुहृदबोलीमृदुबानी
ताततुम्हारमातुबैदेही ॥ पितारामसबभांतिसनेही
अवधतहाँजहँरामनिवासू तहंईदिवसजहंभानुप्रकासू
जौंपैसीयरामबनजाहीं॥ अवधतुम्हारकाजकछुनाहीं
गुरुपितुमातुबंधुसुरसांई सेइअहिंसकलप्रानकीनाईं
रामप्रानप्रियजीवनजीके। स्वारथरहितसखासबहीके
पूजनीयप्रियपरमजंहांतें सबमानियहिरामकेनाते
असजियजानिसंगबनजाहू लेहुतातजगजीवनलाहू।

भूरिभागभाजनभएउमोहिसमेतबलजाउं॥
जौंतुम्हरेमनछाड़िछलकीन्हरामपदठाउं ७४॥

टी॰
रा॰ ग्र॰
३९

पुत्रवतीजुगतीजगसोई रघुपतिभगतजासुसुतहोई
नतरुबांझभलिबादिबिआनी रामबिमुखसुततेंहितहानी
तुमरेहीभागरामबनजांहीं दूसरहेतुतातकछुनाहीं।
सकलसुकृतकरफलबड़एहू रामसीयपदसहजसनेहू
रागरोषइरषामदमोहू । जनिसपनेहुंबसइन्हकेहोहू
सकलप्रकारबिकारबिहाई मनक्रमबचनकरेहुसेवकाई
सबकहंबनसबभांतिसुपासू संगपितुमातुरामजियजासू
जेहिनरामबनलहहिंकलेसू सुतसोइकरेहुइहैउपदेसू

छं॰ उपदेशएहुजेहिताततुमरेरामसियसुखपावहीं
पितुमातुप्रियपरिवारुपुरसुखसुरतबनाबिसरावहीं

तुलसीप्रभुहिंसुषदेइआयसुदीन्हपुनिआशिषदई ॥
रतिहोउअबिरलअमलसियरघुबीरपदनितनितनई।
सो· मातुचरनसिरनाइचलेतुरतसंकितहृदय ॥
बागुरबिषमतोराइमनहुंभागुमृगभागबस ७५

गएलषनुजहँजानकिनाथू। भेमनमुदितपाइप्रियसाथू
बंदिरामसियचरनसोहाये चलेसंगनृपमंदिरआये॥
कहहिंपरस्परपुरनरनारी। भलिबनाइबिधिबातबिगा
तनकृशमनदुखबदनमलीने बिकलमनहुंमाषीमधुछीने
करमीजहिंसिरधुनिपछताहीं जनुबिनुपंखबिहगअकुला
भइबड़िभीरभूपदरबारा ॥ बरनिनजाइबिषादअपारा।
सचिवउठायराउबैठारे ॥ कहिप्रियबचनरामुपगुधारे
सीयसहितदोउतनयनिहारी ब्याकुलभएउभूपमतिभारी

दो· सीयसहितसुतसुभगदोउदेखिदेखिअकुलाइ ॥
बारहिंबारसनेहबसराउलेइउरलाइ ॥ ७६॥ ॥

सकैनबोलिबिकलनरनाहू सोकजनितउरदारुनदाहू
नाइसीसपदअतिअनुरागा उठिरघुबीरबिदातबमांगा॥
पितुअसीसआयसुमोहिदीजै हर्षसमयबिषमउकतकीजै॥
तातकियेप्रियप्रेमप्रमादू। जसजगजाइहोइअपबादू॥
सुनिसनेहबसउठिनरनाँहा। बैठारेरघुपतिगहिबाँहा॥
सुनहुताततुमकहँमुनिकहहीं रामचराचरनायकअहहीं
सुभअरुअसुभकरमअनुहारी ईसुदेइफलहृदयबिचारी॥

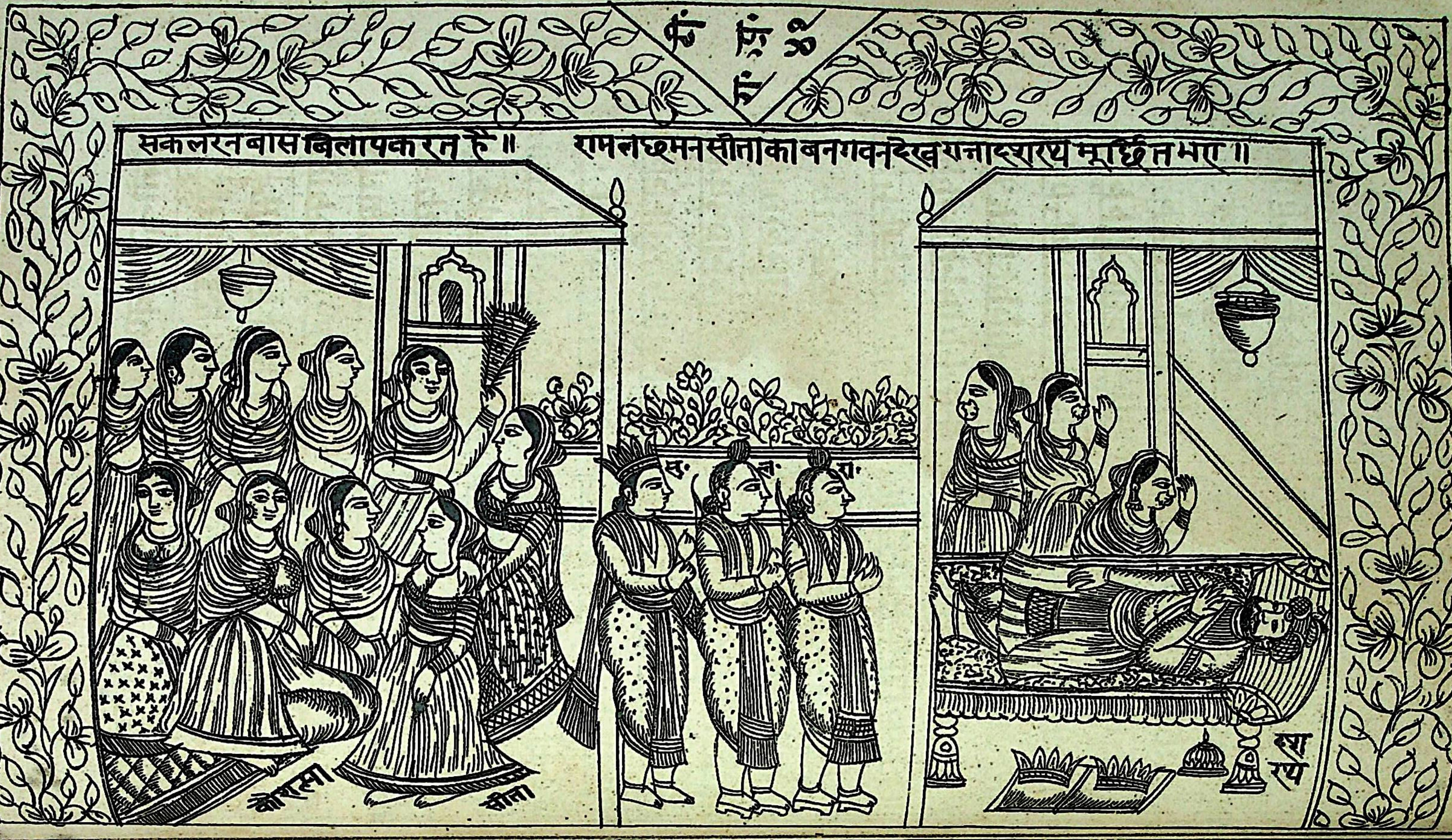

सकलरनवास बिलापकरत है ॥ रामलछमनसीताकाबनगवनदेखराजादशरथमूर्छितभए ॥

कौशल्या
सीता
सु॰
ल॰
रा॰
दश
रथ

टी॰
रा॰ अ॰
४२

करैजोकर्मपावफलसोई निगमनीतिअसकहसबको

औरकरइअपराधकोउऔरपावफलभोगु ॥
अतिबिचित्रभगवंतगतिकोजगजानइजोग ७७

रायरामराषनहितलागी॥ बहुतउपायकियेछलत्या
लषीरामरुषकहतनजाने। धरमधुरंधरधीरसयाने।
तबनपसीयलाइउरलीन्ही। अतिहितबहुतभांतिसिषदी
कहिबनकेदुखदुसहसुनाए सासुससुरपितुसुषसमुझाए
सियमनरामचरनअनुरागा घरुनसुगमबनबिषमनलागा
औरौसबहिसीयसमुझाई कहिकहिबिपिनबिपतअधि
सचिवनारिगुरुनारिसयानी सहितसनेहकहहिंमृदुबानी
तुमकहंतौनदीन्हबनबासू करहुजोकहहिंससुरगुरसा

सिखसीतलहितमधुरमृदुसुनसीतहिनसोहानि
सरदचंदचंदनिलगतजनुचकईअकुलानि ७८।

सीयसकुचबसउतरुनदेई सोसुनितमकउठीकैकेई॥
मुनिपटभूषनभाजनआनी आगेधरिबोलीमृदुबानी।
नृपहिंप्रानप्रियतुमरघुबीरा सीलसनेहनछाडहिभीरा
सुकृतसुजसपरलोकनसाऊ तुमहिजानबनकहिहिनकाऊ
असबिचारिसोइकरहुजोभावा रामजननिसिखसुनसुखपा
भूपहिबचनबानसमलागे करहिंनप्रानपयानअभागे
लोगबिकलमुरछितनरनाहू काहकरिअकछुसूझनका
रामतुरतमुनिबेषबनाई ॥ चलेजनकजननीहिसिरनाई

साजिबनसाजुसमाजसबबनिताबंधुसमेत।
बंदिबिप्रगुरचरनप्रभुचलेकरिसबहिअचेत॥७९

निकसबसिष्ठद्वारभयेठाढे देखेलोगबिरहदवडाढे॥
कहिप्रियबचनसकलसमुझाए बिप्रबृंदरघुबीरबोलाए॥
गुरुसनकहिबरषासनदीन्हे आदरदानबिनयबसकीन्हे
जाचकदानमानसंतोषे । मीतपुनीतप्रेमपरितोषे।
दासदासबोलाइबहोरी ॥ गुरुहिंसौंपिबोलेकरजोरी
सबकैसारसंभारिगोसांई करबजनकजननीकीनांई
बारहिंबारजोरिजुगपानी। कहतरामसबसनमृदुबानी
सोइसबभांतिमोरहितकारी जेहितेंरहैभुआलसुखारी

मातुसकलमोरेबिरहजेहिंनहोंहिंदुखदीन॥
सोउउपावतुमकरेहुसबपुरजनपरमप्रबीन

टी.
रा. अ.
४३

एहिबिधिरामसबहिंसमुझावा गुरुपदपदमहरषिसिरनावा
गनपतिगौरिगिरीसमनाई चलेअसीसपाइरघुराई॥
रामचलतअतिभयउबिषादू सुनिनजाइपुरआरतनादू
कुसगुनलंकअवधअतिसोकू हरषबिषादबिबससुरलोकू
गईमूरछातबभूपतिजागे बोलसुमंत्रकहनअसलागे
रामचलेबनप्राननजाहीं। केहिसुखलागिरहततनमाहीं
एहितेंकवनब्यथाबलवाना। जोदुखपाइतजहिंनप्राना
पुनिधरधीरकहैनरनाहू लैरथसंगसखातुमजाहू।

दो॰ सुठिसुकुमारकुमारदोउजनकसुतासुकुमारि

८३ रथको
धोंकेदेषि
लौकाप्रारंभ
ऊंहै॥ ॥
८ब्रौ॰
भेटे॰।
निकसवाते
द्र॰प्रकबलव
रह्यबिहाय
लौं॰। चावेद्ध
अवधिवा प्र
गाय दसौंह
सम्रारिसब
लागनकैपर
प्रमताजनाथ
बलवभए
उहांराजासम
नसनकहो
रथचढ़ाइबन
देखायफेरो
उनहींजानकी
अकोअपथ

टीं॰
रा॰ ग्रं॰
४५

फेरलाउवम
रामाविरथ
परचढ़ेनहां
सबलोगप्रम
छिक्युतेसाथ
चलेयातेनिवा
सनमसानता
होतुभयो॥

रथचढ़ाइदेखराइबनफिरेहुगयेदिनचारि ८१॥

जोनहिंफिरहिंधीरदोउभाई । सत्यसंधदृढव्रतरघुराई॥
नोतुमबिनयकरेहुकरजोरी । फेरियप्रभुमिथलेशकिशो
अबसियकाननदेषिउराहीं। कहेउमोरिसिखअवसरपा
सासुसुसरअसकहेउसंदेसू । पुत्रिफिरियबनबहुतकलेसू
पितुगृहकबहुँकबहुँससुरारी । रहेउजहांरुचिहोइतुम्हारी॥
एहिबिधिकरेउउपायकदंबा । फिरइतहोइप्रानअवलंबा॥
नाहितमोरमरनपरिनामा। कछुनबसाइभएबिधिबामा॥
असकहिमुरछिपरामहिराऊ । रामलषनसियआनिदेषाऊ॥

दो॰ पाइरजायसुनाइसिरुरथअतिबेगबनाइ + ॥
गएउजहांबाहिरनगरसीयसहितदोउभाइ ८३

तबसुमंत्रनृपबचनसुनाये। करिबिनतीरथरामचढ़ाए॥
चढ़िरथसीयसहितदोउभाई । चलेहृदयअवधहिंसिरुनाई
चलतरामलषिअवधअनाथा । बिकललोगसबलागेसाथा
कृपासिंधुबहुबिधिसमुझावहिं । फिरहिंप्रेमबसपुनिफिरआवहिं
लागतिअवधभयावनभारी। मानहुकालरातिअंधियारी
घोरजंतुसमपुरनरनारी + ॥ डरपहिंएकहिंएकनिहारी॥
घरमसानपरिजनजनुभूता । सुतहितमीतमनहुंजमदूता
बागन्हबिटपबेलिकुम्हिलाहीं । सरितसरोवरदेखनजाहीं॥

दो॰ हयगयकोटिन्हकेलिमगपुरपसुचातकमोर
पिकरथांगसुकसारिकासारसहंसचकोर।८३॥

पं. २१ चौ. ४६ ४ छं. २ दो. ५ द्वार रघुपतिप्रजा प्रेम अरु रामलषन सीता सहित २४ लो. श्री रघुनाथजी के उपदेश तें भी लोग प्रेमबस न फिरे अरु प्रेम बात्सल्य न त्यागि सके नहीं अर्द्धरात्रि को सुमंत तें श्रीरामजू का सो योजन्मा रथ हांकवे को भाव प्रवीनता रथ हांकेकी भूमि पर बोबर परस्या कीली कन पर वा यंत्रि परयायो जाकर बांधके तहां तें श्रृंगबेरपुर गए तहां सुरसरि प्रसंग अरु निषादतें सचिय भेट अरु प्रभुकृत भोर तेहि रात्र तहां सीसो वृक्षतरे निवास अरु निषाद प्रति श्रीलक्ष्मण उपदेश प्रातहि न करि सुनि बेष धारि सुमंत दिष मोहत भये अरु श्रीमहाराज दशरथजू की आज्ञा कहि तहां श्रीरघुनाथजू धर्म कायातें बोध करि सबिनय अरु लषन कटु बचन कहवे को निवारन अरु सपथ अरु श्रीजानकीजी के न फिरवे में भाव अभेदशक्ति जानी सुमंत को फिरिबो तहां उनकी व्याकुलता अश्वनते प्रगट हैं गंगापार जाइ निषादको प्रेम बरनन अरु एवं दिवस रहके श्रीरघुराज प्रयाग आगमन महात्म बर्णन तहां तीरथबिधिकर भरद्वाजप्रति भेट अरु सिषाचार परस्पर संबाद करि बिसरमे अरु चार शिष्य संग लिये यमुनापार तें फेर लिये पार उतर अस्नान करि आगे चलतु भए तहां सब ग्रामबासी अरु पथिकन के प्रेम बात्सल्य बर्णन सो सुकुमार जा रूप में प्रगट हैं अरु तापस तेजपुंज लघु बैस के प्रेम तें प्रभु को सब ब्राम्ह जनायो [illegible] संक [illegible] तापसरूप तें [illegible] अरु एकान्त [illegible] सोच करि श्रीबालमीकि के आश्रमको आए आदरपूर्वक मिले प्रभु रूप स्थान कहि चित्रकूट निवास कर्यो तहां श्रीराघव प्रसन्नतापूर्वक रहे अरु किरातन को प्रेम भ

रामबियोगबिकलसबठाढ़े । जहँतहँमनहुचित्रलिखिकाढ़े ।
नगरसफलबनगहबरभारी । खगमृगबिपुलसकलनरनारी ।
बिधिकैकेइकिरातिनकीन्ही । जेहिदवदुसहदसहुँदिसिदीन्ही ।
सहिनसकेरघुबरबिरहागी । चलेलोगसबब्याकुलभागी ।
सबहिंबिचारुकीन्हमनमाहीं । रामलषनसियबिनुसुखनाहीं ।
जहाँरामतहाँसबइसमाजू । बिनुरघुबीरअवधनहिंकाजू ।
चलेसाथअसमंत्रदृढ़ाई ॥ सुरदुर्लभसुखसदनबिहाई ॥
रामचरनपंकजप्रियजिन्हहीं । बिषयभोगबसकरहिंकितिन्हहीं ।

दो. बालकबृद्धबिहायगृहलगेलोगसबसाथ ॥
तमसातीरनिवासकियप्रथमदिवसरघुनाथ ॥ ८४ ॥

रघुपतिप्रजाप्रेमबसदेषी । सदयहृदयदुखभयेउबिशेषी ।
करुनामयरघुनाथगोसांई । बेगिपाइअहिपीरपराई ॥
कहिसप्रेममृदुबचनसुहाये । बहुबिधिरामलोगसमुझाये ।
कियेधरमउपदेशघनेरे ॥ लोगप्रेमबसफिरहिंनफेरे ॥
सीलसनेहछाड़िनहिंजाई ॥ असमंजसबसभेरघुराई ॥
लोगसोगश्रमबसगएसोई । कछुकदेवमायामतिमोई ।
जबहिंजामजुगजामिनिबीती । रामसचिवसनकहेउसप्रीती ।
षोजमारिरथहाँकहुताता ॥ आनउपायबनिहिनहिंबाता ।

दो. रामलषनसियजानचढ़िशंभुचरनसिरुनाइ ।
सचिवचलाएउतुरतरथइतउतषोजदुराइ ॥ ८५ ॥

जागेसकललोगभएभोरू ॥ गेरघुनाथभयेउअतिशोरू ।

दो. रा. प्र. ८५

रथकरखोजकतहुंनहिंपावहिं रामरामकहिचहुंदिशिधाव
मनहुंबारिनिधिबूड़जहाजू भएबिकलजनुबणिकसमा
एकहिंएकदेहिंउपदेसू ॥ तजेहुंरामहमजानिकलेस
निंदहिंआपुसराहहिंमीना। धिगजीवनरघुबीरबिहीन
जौपैप्रियबियोगबिधिकीन्हा तौकसमरणनमागेदीन्हा॥
इहिबिधिकरतप्रलापकलापा। आएअवधभरेपरितापा।
बिषमबियोगनजाइबखाना। अवधआसराखहिंसबप्रान

रामदरसहितनेमब्रतलगेकरननरनारि ॥
मनहुंकोककोकीकमलदीनबिहीनतमारि॥

सीतासचिवसहितदोउभाई शृंगबेरपुरपहुंचेजाई॥
उतरेरामदेवसरिदेखी ॥ कीन्हदंडवतहरषबिशेषी
लषनसचिवसियकीन्हप्रणामा। सबहिसहितसुखपायउ
गंगसकलमुदमंगलमूला॥ सबसुखकरणिहरणिसब
कहिकहिकोटिककथाप्रसंगा। रामबिलोकतगंगतरंगा॥
सचिवहिंअनुजहिंप्रियहिंसुनाई बिबुधनदीमहिमाअधिका
मज्जनकीन्हपंथश्रमगयेऊ सुचिजलपियतमुदितमन
सुमरतजाहिमिटहिभवभारू तिहिश्रमयहलौकिकव्यवहा

शुद्धसच्चिदानंदमयरामभानुकुलकेतु ॥
चरितकरतनरअनुहरतसंसृतिसागरसेतु॥

यहसुधिगुहनिषादजबपाई मुदितलियेप्रियबंधुबुला
लेफलमूलभेटभरिभारा। मिलनचल्योहियहर्षअपा

करि दंडवत भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे।
सहज सनेह बिबस रघुराई पूंछी कुशल निकट बैठाई।
नाथ कुशल पद पंकज देषे भएउ भागभाजन जन लेषे॥
देव धरनि धनु धाम तुम्हारा मैं जन नीचु सहित परिवारा
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ थापिय जनु सब लोग सिहाऊ
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना मोहि दीन्ह पितु आयसु आना

दो· बरष चारिदस बास बन मुनिब्रत बेष अहारु।
ग्राम बास नहिं उचित सुनि गुहहि दुःख अति भारु ८७

राम लषन सिय रूप निहारी कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी।
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे जिन्ह पठये बन बालक ऐसे
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा लोचन लाहु हमहि बिधि दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना तरु सिंसपा मनोहर जाना।
लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भांति सुहावा
पुरजन करि जोहार घर आए रघुबर संध्या करन सिधाए
गुह सँवारि साथरी डसाई॥ कुस किसलैमय मृदुल सुहाई
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी दोना भरि भरि राखेसि आनी

सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल षाइ
सयन कीन्ह रघुबंशमनि पाय पलोटत भाइ ८८

उठे लषन प्रभु सोवत जानी कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी
कछुक दूर सजि बान सरासन जागन लगे बैठि बीरासन।
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती ठांव ठांव राषे अति प्रीती॥

टी·
रा·अ
४८

आपुलषनपहँबैठेउजाई॥ कटिभाथासरचापचढ़ाई॥
सोवतप्रभुहिनिहारिनिषादू भयउप्रेमबसहृदयबिषादू
तनुपुलकितजललोचनबहई बचनसप्रेमलषनसनकहई॥
भूपतिभवनसुभायसुहावा। सुरपतिसदननपटतरपावा॥
मनिमयरचितचारुचौबारे जनुरतिपतिनिजहाथसँवारे

दो· सुचिसुबिचित्रसुभोगमयसुमनसुगंधसुबास
पलंगमंजुमनिदीपजहँसबबिधिसकलसुपास ८९

बिबिधभांतिउपधानतुराई छीरफेनुमृदुबिसदसुहाई॥
तहँसियरामसयननिसिकरहीं निजछबिरतिमनोजमदहरहीं
तेसियरामसाथरीसोए*॥ श्रमितबसनबिनुजाहिनजोए
मातुपितापरिजनपुरबासी सखासुसीलदासअरुदासी
जोगवहिंजिन्हहिंप्रानकीनांई महिसोवततेइरामगोसांई
पिताजनकजगबिदितप्रभाऊ ससुरसुरेशसखारघुराऊ॥
रामचंद्रपतिसोबैदेही॥ सोवतमहिबिधिबामनकेही
सियरघुबीरकिकाननजोगू करमप्रधानसत्यकहलोगू॥

दो· कैकयनंदनिमंदमतिकठिनकुटिलपनकीन्ह
जेहिंरघुनंदनजानकिहिसुखअवसरदुखदीन्ह ९०

भइदिनकरकुलबिटपकुठारी कुमतिकीन्हसबबिस्वदुषारी
भयउबिषादनिषादहिंभारी रामसीयमहिसयननिहारी॥
बोलेलषनतबहिंमृदुबानी ज्ञानबिरागभगतिरससानी
काहुनकोउसुखदुखकरदाता। निजकृतकरमभोगसबभ्राता॥

योग बियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा।
जनम मरण जहँ लगि जग जालू । संपति बिपति कर्म अरु कालू
धरणि धाम धन पुर परिवारू । स्वरग नरक जहँ लगि व्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं । मोह मूल परमारथ नाहीं॥

दो॰ सपने होहिं भिखारि नृप रंक नाकपति होइ × ॥
जागे हानि न लाभ कछु तिमि प्रपंच जिय जोइ ॥ × × ॥

अस बिचारि नहिं कीजिय रोसू । बादि काहु नहिं दीजिय दोसू
मोह निसा सब सोवनिहारा । देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा
एहि जग यामिनि जागहि योगी । परमारथ परिपंच बियोगी॥
जानिय तबहिं जीव जग जागा । जब सब विषय बिलास बिरागा
होइ बिबेक मोह भ्रम भागा । तब रघुबीर चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू। । मन क्रम बचन राम पद नेहू
राम ब्रह्म परमारथ रूपा ॥ । अबिगत अलख अनादि अनूपा
सकल बिकार रहित गत भेदा । कहि नित नेति निरूपहिं बेदा

दो॰ भक्ति भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपालु
करित चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटै जग जालु ॥

सखा समुझि अस परिहरु मोहू । सिय रघुबीर चरण रत होहू
कहत राम गुण भा भिनुसारा । जागे जग मंगल दातारा × ॥
सकल शौच करि राम अन्हाए । शुचि सुजान बट छीर मँगाए
अनुज सहित सिर जटा बनाए । देखि सुमंत नयन जल छाये।
हृदय दाह अति बदन मलीना । कह कर जोरि बचन अति दीना।

टी॰
रा॰ग्र॰
५०

नाथकहेउअसकोसलनाथा। लैरथजाहुरामकेसाथा॥
बनदिषाइसुरसरिअन्हवाई। आनेउबेगिफेरिदोउभाई।
लषनरामसियआनेहुफेरी संसयसकलसकोचनिबेरी

नृपअसकहेउगुसाइंजसकहियेकरौंबलिसोइ
करिबिनतीपायनपरेउदीनबालजिमिरोइ ९३॥

तातकृपाकरिकीजियसोई जातेंअवधअनाथनहोई।
मंत्रिहिरामउठायप्रबोधा। तातधरममतुतुमसबसोध
सिबिदधीचहरिचंदनरेसा। सहेधरमहितकोटिकलेस
रंतिदेवबलिभूपसुजाना धरमधरेउसहिसंकटनाना।
धरमुनदूसरसत्यसमाना। आगमनिगमपुरानबषाना।
मैंसोइधरमुसुफलकरपावा तजेतिहुंपुरअपजसछाव
संभावितकहुंअपजसलाहू मरनकोटिसमदारुनदाहू
तुमसनतातबहुतकाकहऊं दियेउतरुफिरपातकलह

पितुपदगहिकहिकोटिनतिबिनयकरबकरजोरि
चिंताकवनिहुंबातकेतातकरियजनिमोर ९४

तुमपुनिपितुसमअतिहितमोरे बिनतीकरौंतातकरजोरे।
सबबिधिसोइकरतव्यतुम्हारे दुषनपावपितुसोचहमारे
सुनिरघुनाथसचिवसंबादू भयउसपरिजनबिकलनिषा
पुनिकछुलषनकहीकटुबानी प्रभुबरजेउबड़अनुचितजानी
सकुचिरामनिजसपथदिवाई लषनसंदेसाकहियजिनजाई
कहसुमंत्रपुनिभूपसंदेसू सहिनसकहिसियबिपन

जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया। सोइ रघुबरहि तुमहि करनीया।
नतरु निपट अवलंब बिहीना। मैं न जिअब जिमि जल बिनु मीना।

मइके ससुरे सकल सुख जबहिं जहां मनु मानु
तब तहँ रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान

बिनती भूप कीन्ह जेहि भांती। आरति प्रीति न सो कहि जाती।
पितु संदेश सुनि कृपानिधाना। सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना।
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू। फिरहु तौ सब कर मिटै षभारू।
सुनि पति बचन कहति बैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही।
प्रभु करुनामय परम बिबेकी। तनु तजि रहति छांह किमि छेंकी।
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई।
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई।
तुम पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी।

आरति बस सनमुख भयेउँ बिलगु न मानब तात
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहां लगि नात ९८

पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा।
सुखनिधान अस पितु गृह मोरे। पिय बिहीन मन भाव न भोरे।
ससुर चक्कवै कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ।
आगे होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंहासन आसन देई।
ससुर एतादृश अवध निवासू। प्रिय परिवार मातु सम सासू।
बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहि सब सपनेहुँ सुखद न लागा।
अगम पंथ बन भूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा।

टी॰
रा॰प्र॰
५१

कोलकिरातकुरंगबिहंगा। मोहिसबसुखदप्रानपतिसं

दो·सासुससुरसनमोरहुतिबिनयकरबिपरीपाय
मोरसोचजनिकरियकछुमैंबनसुखीसुभाय९६

प्राननाथप्रियदेवरसाथा॥ धीरधुरीनधरेधनु।भाथा
नहिंश्रममगुभ्रमदुखमनमोरे मोहिलगिसोचुकरियजनिभो
सुनिसुमंत्रुसियसीतलबानी भयउबिकलजनुफनिमनिहानी
नयनसूझनहिंसुनइनकाना॥ कहिनसकैकछुअतिअकुलाना
रामप्रबोधकीन्हबहुभांती। तदपिहोतनहिंसीतलछाती
जतनअनेकसाथहितकीन्हे उचितउतररघुनंदनदीन्हे॥
मेटिजायनहिंरामरजाई॥ कठिनकरमगतिकछुनबसा
रामलषनसियपदसिरनाई॥ फिरिउबनिकजनुमूलगवांई

टी·
रा·प्र·
५२

दो·रथहांकेउहयरामतनहेरिहेरिहिहिनाहिं॥
देषिनिषादबिषादबसधुनहिंसीसपछताहिं९९

जासुबियोगबिकलपशुऐसे प्रजामातुपितुजीवहिंकैसे
बरबसुरामसुमंत्रपठाये॥ सुरसरितीरआपुतबआ
मांगीनावनकेवटआना॥ कहइतुम्हारमरममैंजाना
चरनकमलरजकहुंसबकहई मानुषकरनिमूरिकछुअहई
छुवतसिलाभइनारिसुहाई पाहनतेनकाठकठिनाई॥
तरनिउमुनिघरनीहोइजाई बाटपरैमोरिनावउड़ाई॥
एहिप्रतिपालोंसबपरिवारू नहिंजानोंकछुऔरकबारू
जौप्रभुपारअवसिगाचहहू मोहिपदपदुमपखारनकहहू

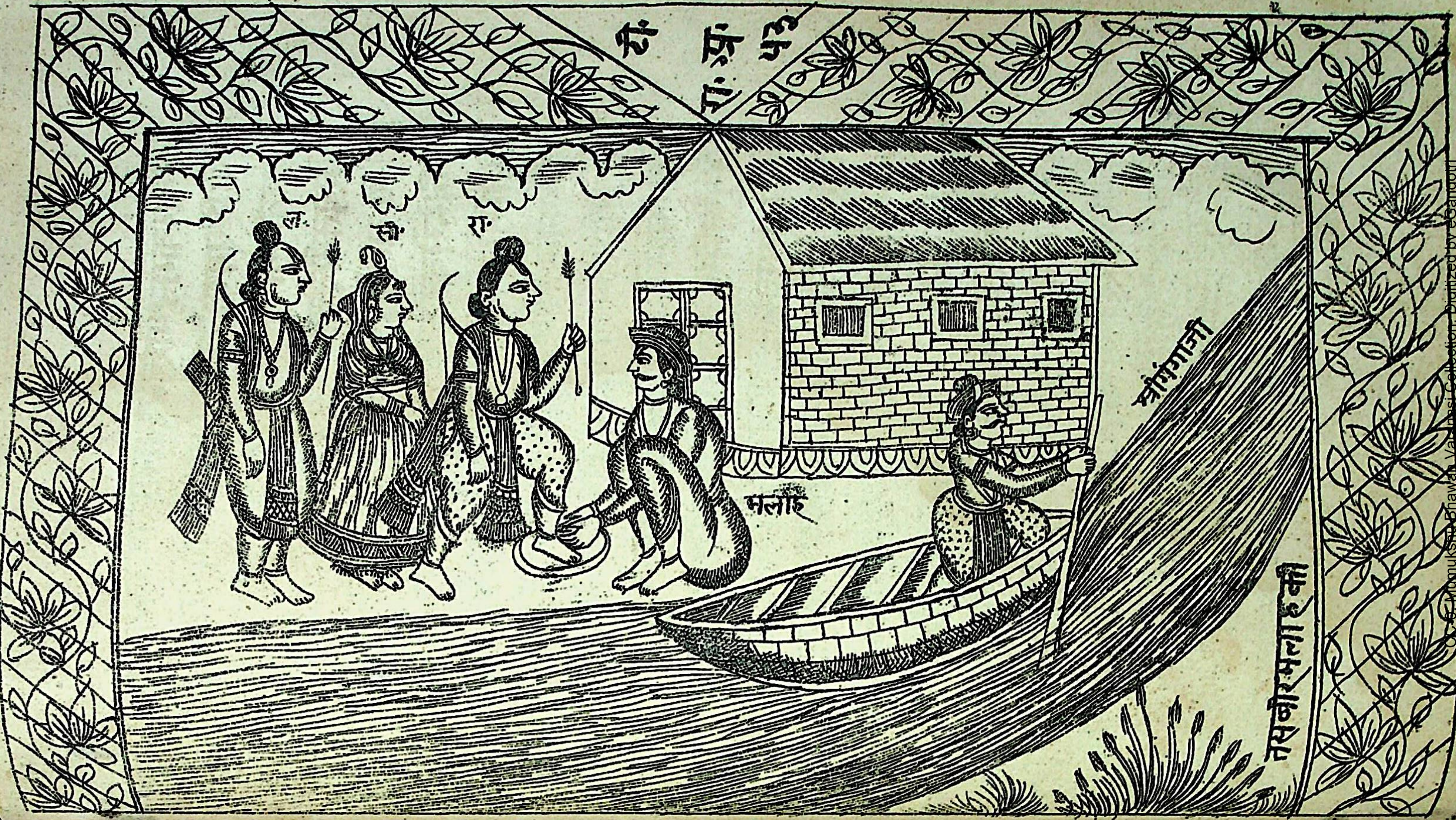
टी. रा. प्र. ५३
ल.
सी.
रा.
मलाह
श्रीगंगाजी
तसवीरमलाहकी

छं· पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब सांची कहौं
बरु तीर मारहु लषनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं
सो· सुनि केवट के बयन प्रेम लपेटे अटपटे ॥
बिहँसे करुनाअयन चितइ जानकी लषन तन ९९

कृपासिंधु बोले मुसकाई। सोउ करु जेहि तव नाव न जा
बेगि आनु जल पांय पखारू होत बिलंबु उतारहि पारू।
जासु नाम सुमिरत एक बारा उतरहिं नर भव सिंधु अपारा
सोइ कृपाल केवटहि निहोरा जेहिं जगु किय तिहिं पग
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोह मति क
केवट राम रजायसु पावा॥ पानि कठवता भरि लेइ आ
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं एहि सम पुन्य पुंज कोउ नाहीं

पद पखारि जल पान करि आपु सहित परिवार
पितर पार करि प्रभुहि पुनि मुदित गयेउ लै पार १०

उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता। सीय राम गुह लषन समेता।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि कछु न
पिय हिय की सिय जाननिहारी मनि मुंदरी मन मुदित उतारी
कहेउ कृपाल लेहु उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई
नाथ आज मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा

बहुतकालमैंकीन्हमजूरी। आजुदीन्हबिधिभलिबनिभूरी
अबकछुनाथनचाहियमोरे दीनदयालअनुग्रहतोरे॥
फिरतीबारमोहिजोदेबा। सोप्रसादमैंसिरधरिलेबा।

बहुतकीन्हप्रभुलखनसियनहिंकछुकेवटलेइ॥
बिदाकीन्हकरुनायतनभगतिबिमलबरदेइ२०॥

तबमज्जनकरिरघुकुलनाथा। पूजिपारथिवनायउमाथा॥
सियसुरसरिहिंकहेउकरजोरी मातुमनोरथपुरउबिमोरी।
पतिदेवरसंगकुसलबहोरी। आइकरौंजेहिपूजातोरी॥
सुनिसियबिनयप्रेमरससानी भइतवबिमलबारिबरबानी।
सुनुरघुबीरप्रियाबैदेही। तवप्रभाउजगबिदितनकेही।
लोकपहोंहिबिलोकततोरे तोहिसेवहिंसबबिधिकरजोरे
तुमजोहमहिंबड़िबिनयसुनाई कृपाकीन्हमोहिदीन्हबड़ाई
तदपिदेबिमैंदेबिअसीसा। सफलहोनहितनिजबागीसा।

टी·
रा·प्र·
५६

प्राननाथदेवरसहितकुसलकोसलाआइ॥
पूजिहिसबमनकामनासुजसरहिहिजगछाइ।

गंगबचनसुनिमंगलमूला। मुदितसीयसुरसरिअनुकूला।
तबप्रभुगुहहिकहेउघरजाहू सुनतसूखमुखभाउरदाहू
दीनबचनगुहकहकरजोरी बिनयसुनहुरघुकुलमनिमोरी।
नाथसाथरहिपंथदेखाई। करिदिनचारिचरनसेवकाई
जेहिबनजाइरहबरघुराई। परनकुटीमैंकरबिसुहाई॥
तबमोहिकहँजसदेबरजाई सोईकरिहौंरघुबीरदोहाई

सहजसनेहुरामलषितासू। संगलीनगुहहृदयहुलासू॥
पुनिगुहज्ञातिबोलिसबलीन्हे। करिपरितोषबिदासबकीन्हे॥

दो· तबगनपतिशिवसुमिरिप्रभुनायसुरसरिहिमाथ।
सखाअनुजसियसहितबनगवनकीन्हरघुनाथ १०३॥

तेहिदिनभयउबिटपतरबासू। लषनसखासबकीन्हसुपासू॥
प्रातप्रातकृतकरिरघुराई। तीरथराजदीखप्रभुजाई॥
सचिवसत्यश्रद्धाप्रियनारी। माधवसरिसमीतहितकारी॥
चारिपदारथभराभंडारू॥ पुन्यप्रदेशदेशअतिचारू॥
छेत्रअगमगढ़गाढ़सुहावा। सपनेहुनहिंप्रतिपक्षिनपावा॥
सेनसकलतीरथबरबीरा॥ कलुषअनीकदलनरनधीरा॥
संगमुसिंहासनसुठिसोहा। छत्रअछैबटमुनिमनमोहा॥
चवरजमुनअरुगंगतरंगा। देषिहोहिंदुखदारिदभंगा॥

दो· सेवहिंसुकृतीसाधुसुचिपावहिंसबमनकाम।
बंदीबेदपुरानगनकहहिंबिमलगुनग्राम १०४॥

कोकहिसकैप्रयागप्रभाऊ। कलुषपुंजकुंजरमृगराऊ॥
असतीरथपतिदेखिसुहावा। सुखसागररघुबरसुखपावा॥
कहिसियलषनहिंसषहिसुनाई। श्रीमुखतीरथराजबड़ाई॥
करिप्रनामदेखतबनबागा। कहतमहातमअतिअनुरागा॥
एहिबिधिआइबिलोकीबेनी। सुमिरतसकलसुमंगलदेनी॥
मुदितनहाइकीन्हशिवसेवा। पूजियथाबिधितीरथदेवा॥
तबप्रभुभरद्वाजपहँआये। करतदंडवतमुनिउरलाये॥

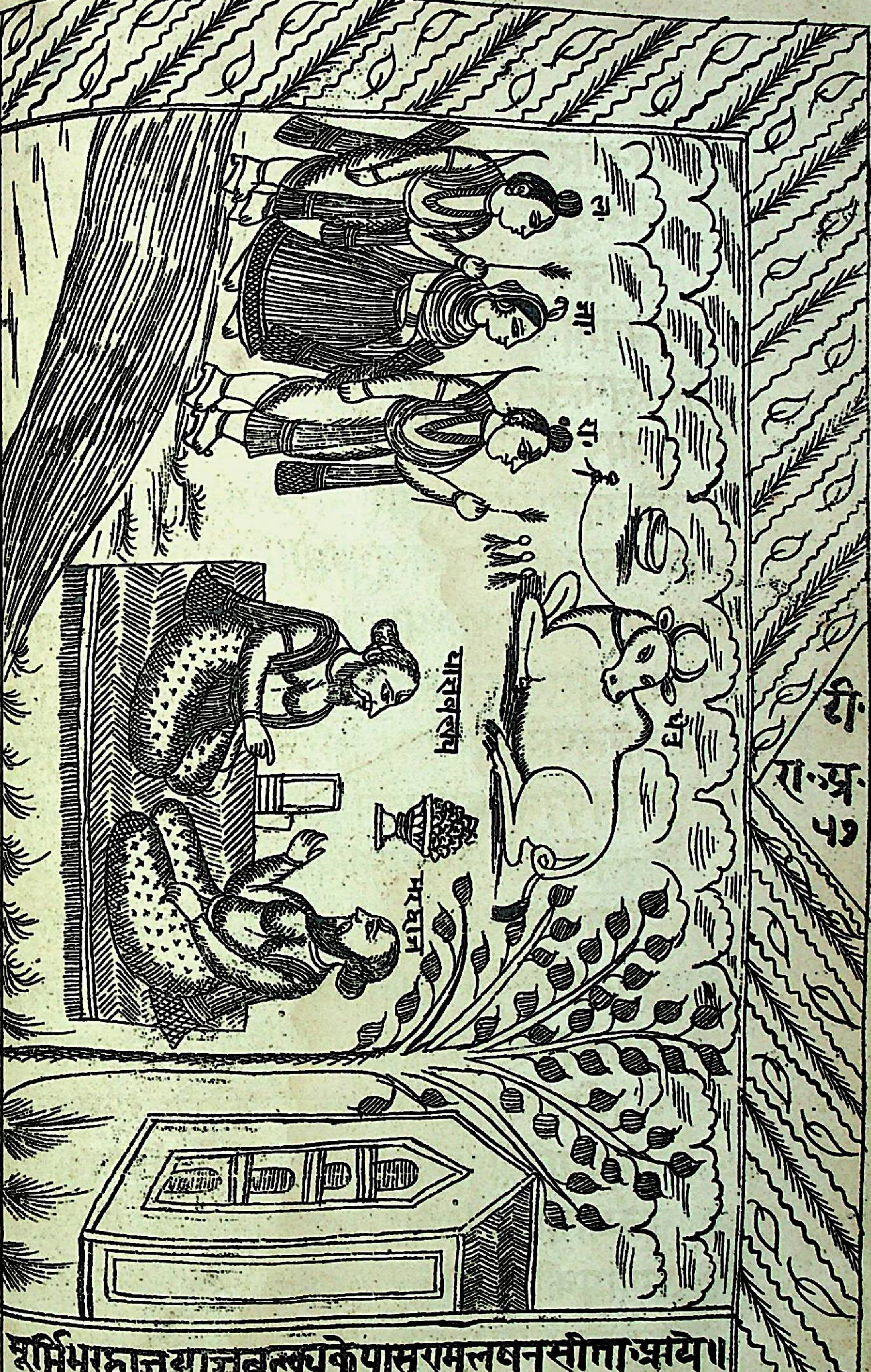
टी· रा·प्र· ५१
याज्ञवल्क्य
भरद्वाज

मुनिभरद्वाजयाज्ञवल्क्यकेपासरामलषनसीताआये।

मुनिमनमोदनकहिकछुजाई ब्रह्मानंदराशिजनुपाई॥

दीन्हअसीसमुनीसउर अतिअनंदअसजानि
लोचनगोचरसुकृतफलमनहुँकियेविधिआन॥५

कुशलप्रश्नकरिआसनदीन्हे पूजिप्रेमपरिपूरणकीन्
कंदमूलफलअंकुरनीके दियेआनमुनिमनहुअमी
सीयलषनजनसहितसुहाए अतिरुचिराममूलफलषा
भएबिगतश्रमरामसुखारे भरद्वाजमृदुबचनउचारे
आजुसुफलतपतीरथत्यागू भयासुफलजपयोगबिराग
सुफलसकलशुभसाधनसाजू रामतुमहिअवलोकतआ
लाभअवधिसुखअवधिनदूजी तुम्हरेदरसआससबपूजी
अबकरिकृपादेहुबरएहू। निजपदसरसिजसहजसने

कर्मबचनमनछाडिछलजबलगिजननतुम्हार॥
तबलगिसुखसपनेहुनहिंकियेकोटिउपचार॥६

सुनिमुनिबचनरामसकुचाने भावभक्तिआनंदअघाने॥
तबरघुबरमुनिसुयशसुहावा कोटिभांतिकहसबहिसुना
सोबड़सोसबगुणगणगेहू जेहिमुनीशतुमआदरदेहू
मुनिरघुबीरपरस्परनवहीं बचनअगोचरसुखअनुभ
यहसुधिपायप्रयागनिवासी बटुतापसमुनिसिद्धउदा
भरद्वाजआश्रमसबआये देखनदशरथसुअनसुहाये
रामप्रणामकीन्हसबकाहू मुदितभयेलहिलोचनलाहू
देहिंअसीसपरमसुखपाई फिरेसराहतसुंदरताई॥

दो॰ रामकीन्हबिश्रामनिशिप्रातप्रयागनहाइ।
चलेसहितसियलषनजनमुदितमुनिहिसिरनाइ ७

रामसप्रेमकहेउमुनिपाहीं। नाथकहियहमकेहिमगुजाहीं
सुनिमुनिबिहंसिरामसनकहहीं। सुगमसकलमगतुमकहअहहीं
साथलागिमुनिशिष्यबुलाये। सुनिमनमुदितपचासकआए
सबहिंरामपरप्रेमअपारा। सबहिंकहहिंमगुदीषहमारा
मुनिबटुचारिसंगतबदीन्हे। जिनबहुजन्मसुकृतबड़कीन्हे
करिप्रणाममुनिआयसुपाई। प्रमुदितहृदयचलेरघुराई
ग्रामनिकटजबनिसरहिंजाई। देखहिंदरसनारिनरधाई।
होहिंसनाथजन्मफलपाई। फिरहिंदुखितमनसंगपठाई

बिदाकियेबटुबिनयकरि फिरेपाइमनकाम॥
उतरिअन्हायेयमुनजलजोशरीरसमश्याम ८

टी॰
रा॰ अ॰
५९

सुनितीरथबासीनरनारी। धाएनिजनिजकाजबिसारी
लषनरामसियसुंदरताई॥ देखिकरहिंनिजभागबड़ाई
अतिलालसासबहिंमनमाहीं। नाँवगाँवपूछतसकुचाहीं
जेतिनमेंहँबयबृद्धसयाने। तिनकरियुक्तिरामपहिचाने
सकलकथाकहितिनहिंसुनाई। बनहिंचलेपितुआयसुपाई
सुनिसबिषादसकलपछिताहीं। रानीरायकीन्हभलनाहीं॥
तेहिअवसरएकतापसआवा। तेजपुंजलघुबयससुहावा
गतिअलषितकविबेषबिरागी। मनक्रमबचनरामअनुरागी

सजलनयनतनपुलकिनिजइष्टदेवपहिचान॥

परेदंडजिमिधरणिपरदशानजायबखान ९

रामसप्रेमपुलकउरलावा ॥ परमरंकजनुपारसपावा ॥
मनहुंप्रेमपरमारथदोऊ ॥ मिलतधरेतनुकहसबकोऊ
बहुरिलषनपायनसोलागा। लीन्हउठायउमगअनुरागा ॥
पुनिसियचरणधूरिधरिसीसा जननिजानिशिशुदीन्हअसी
कीन्हनिषाददंडवततेही ॥ मिलेउमुदितलखिरामसने
पियतनयनपुटरूपपियूषा मुदितसुअसनपाइजिमिभू
रामलषनसियरूपनिहारी ॥ सोचसनेहबिकलनरनारी
तेपितुमातुकहौसखिकैसे जिनपठयेबनबालकऐसे

दो॰ तबरघुबीरअनेकबिधिसखहिसिखावनदीन्ह
रामरजायसुसीसधरिगवनभवनतिन्हकीन्ह ११०

पुनिसियरामलषनकरजोरी यमुनहिंकीन्हप्रणामबहो
गमनेसीयसहितदोउभाई रबितनयाकरकरतबड़ाई ॥
पथिकअनेकमिलहिंमगजाता कहहिंसप्रेमदेखिदोउभ्राता
राजलषनसबअंगतुम्हारे देखसोचहियहोतहमारे ॥
मारगचलहुपयादेहिपाये। जोतिषझूठहमारेभाये ॥
अगमपंथगिरिकाननभारी तेहिमहँसाथनारिसुकुमारी
करिकेहरिबनजायनजोई। हमसंगचलहिंजोआयसुहोई
जावजहांलगितहँपहुँचाई। फिरबबहोरितुमहिसिरनाई

दो॰ एहिबिधिबूझहिंप्रेमबसपुलकगातजलनैन ॥
कृपासिंधुफेरहिंतिन्हहिंकहबिनतीमृदुबैन १११

जेपुरग्रामबसहिंमगमाहीं तिन्हहिंनागसुरनगरसिहाहीं
केहिसुकृतीकेहिघरीबसाए धन्यपुन्यमयपरमसुहाए॥
जहतहँरामचरणचलिजाहीं तिन्हसमानअमरावतिनाहीं
पुन्यपुंजमगनिकटनिवासी। तिन्हहिंसराहहिंसुरपुरवासी
जेभरिनयनबिलोकहिंरामहिं सीतालषणसहितघनस्यामहिं
जेसरसरितरामअवगाहहिं। तिन्हहिंदेवसरिसरितसराहहिं
जेहितरुतरप्रभुबैठहिंजाई॥ करहिंकल्पतरुतासुबड़ाई॥
परसिरामपदपद्मपरागा॥ मानतिभूमिभूरिनिजभागा॥

दो॰ छांहकरहिंघनबिबुधगनबरषहिंसुमनसिहाहिं।
देखतगिरिबनबिहगमृगरामचलेबनजाहिं ११२।

सीतालषनसहितरघुराई। गांवनिकटजबनिकसहिंजाई
सुनिसबबालवृद्धनरनारी॥ चलहिंतुरतगृहकाजबिसारी
रामलषनसियरूपनिहारी। पाइनयनफलहोहिंसुषारी
सजलबिलोचनपुलकसरीरा सबभएमगनदेषिदोउबीरा।
बरनिनजाइदशातिन्हकेरी॥ लहिजनुरंकन्हसुरमनिढेरी।
एकन्हएकबोलिसिषदेहीं लोचनलाहुलेहुछनएही॥
एकरामहिंदेषिअनुरागे॥ चितवतचलेजाहिंसंगलागे
एकनयनमगछबिउरआनी होहिंसियलतनमनबरबानी

दो॰ एकदेषिबटछांहभलिडासिमृदुलतृनपात॥॥
कहहिंगवाइअछिनकुश्रम गवनबअबहिंकिप्रात

एककलसभरिआनहिंपानी अँचईअनाथकहहिंमृदुबानी

यी· रा· ग्रं· ६२

सुनिप्रियबचनप्रीतिअतिदेषी रामकृपालसुसीलबिशेषी
जानीअमितसीयमनमाहीं घरिकबिलंबकीन्हतरछा
मुदितनारिनरदेषहिंशोभा रूपअनूपनयनमनुलोभा
एकटकसबजोवहिंचहुँओरा रामचंद्रमुखचंदचकोरा॥
तरुनतमालबरनतनुसोहा। देखतकोटिमदनमनमोहा॥
दामिनिबरनलषनसुठिनीके नखसिखसुभगभावतेजी
मुनिपटकटिन्हकसेतूणीरा सोहहिंकरकमलन्हधनुतीरा

दो॰ जयमुकुटसीसनसुभगउरभुजनयनबिसाल
सरदपरबबिधुबदनबरलसतस्वेदकनजाल २५४

बरनिनजाइमनोहरजोरी॥ शोभाबहुतमोरिमतिथोरी
रामलषनसियसुंदरताई॥ सबचितवहिंचितमनमतिला
थकेनारिनरप्रेमपियासे॥ मनहुमृगीमृगदेषिदिआसे
सीयसमीपग्रामतियजाहीं पूंछतअतिसनेहसकुचाहीं
बारबारसबलागहिंपाया। कहहिंबचनमृदुसरलसुभा
राजकुमारिबिनयहमकरहीं तियसुभावकछुपूछतडरहीं
स्वामिनिअबिनयछमिबहमारी बिलगुनमानिबिजानगवां
राजकुँवरदोउसहजसलोने इन्हतेलहिद्युतिमरकतसों

श्यामलगौरकिशोरबरसुंदरसुखमाअयन।
सरदसरवरीनाथमुखसरदसरोरुहनयन ५

कोटिमनोजलजावनहारे सुमुखिकहहुकोआंहितुम
सुनिसनेहमयमंजुलबानी सकुचिसीयमनमहुमुसका

तिन्हहिंबिलोकिबिलोकतधरनीदुहुंसकोचसकुचतिबरबरनी
सकुचिसप्रेमबालमृगनयनी बोलीबचनमधुरपिकबयनी
सहजसुभायसुभगतनगोरे नामलषनलघुदेवरमोरे॥
बहुरिबदनबिधुअंचलढांकी पियतनचितइभौंहकरबांकी
खंजनमंजुतिरीछेनयननि *। निजपतिकहेउतिन्हहिंसियसयननि।
भईमुदितसबग्रामबधूटी। रंकनरायरासिजनुलूटी॥

अतिसप्रेमसियपाइपरिबहुबिधिदेहिंअसीस
सदासुहागिनिहोहुतुमजबलगिमहिअहिसीस

पारबतीसमपतिप्रियहोहू देबिनहमपरछाड़बछोहू।
पुनिपुनिबिनयकरिअकरजोरी जौंएहिमारगफिरिअबहोरी
दरसनदेबजानिनिजदासी। लषीसीयसबप्रेमपियासी
मधुरबचनकहिकहिपरितोषी जनुकुमुदनीकौमुदीपोषी।
तबहिंलषनरघुबररुषजानी पूछेउमगलोगन्हिमृदुबानी
सुनतनारिनरभयेदुखारी पुलकितगातबिलोचनबारी
मिटामोदमनभयेमलीने॥ बिधिनिधिदीन्हलेतजनुछीने
समुझिकरमगतिधीरजुकीन्हा सोधिसुगममगुतिन्हकहिदीन्हा।

लषनजानकीसहिततबगवनकीन्हरघुनाथ॥
फेरेसबप्रियबचनकहिलियेलायमनसाथ ७

फिरतनारिनरअतिपछिताहीं दैअहिंदोषदेहिंमनुमाहीं
सहितबिषादपरस्परकहहीं बिधिकरतबउलटेअहहीं
निपटनिरंकुसनिठुरनिसंकू जेहिंससिकीन्हसरुजसकलंकू

दो.
रा.ग्रं.
६३

टी॰
रा॰ प्र॰
६८

रूषकस्यतरुसागरषारा ॥ नेहिपठयेबनराजकुमा
जौपैइन्हहिंदीइबनबासू ॥ कीइबादिबिधिभोगबिला
एबिचरहिंमगुबिनुपदत्राना रचेबादिबिधिबाहनना
एमहिंपरहिंडासिकुसपाता सुभगसेजकतसृजतबिधा
तरुतरबासइन्हहिंप्रभुदीन्हा धवलधामरचिरचिश्रमकी

दो॰ जौंएमुनिपटजटिलधर सुंदरसुठिसुकुमार ॥
बिबिधभांतिभूषनबसनबादिकियेकरतार ११८

जौंएकंदमूलफलखांहीं ॥ बादिसुधादिअसनजगमा
एककहहिंएसहजसुहाए ॥ आपुप्रगटभएबिधिनबना
जहँलगिबेदकहीबिधिकरनी श्रवननयनमनगोचरब
देखहुखोजिभुवनदसचारी । कहँअसपुरुषकहाँअसना
कीन्हबहुतश्रमऐकनआये तेहिइरषाबनआनिदुराए
इन्हहिंदेखिबिधिमनअनुरागा पटतरजोगुबनावैलागा
एककहहिंहमबहुतनजानहिं आपुहिपरमधन्यकरमानहिं
तेपुनिपुन्यपुंजहमलेखे ॥ जेदेखहिंदेखिहहिंजिन्हदेखे

दो॰ एहिबिधिकहिकहिबचनप्रियलेहिंनयनभरिनीर ॥
किमिचलिहहिंमारगअगमसुठिसुकुमारसरीर ११९

नारिसनेहबिकलबसहोहीं । चकईसांझसमयजनुसोहीं
मृदुपदकमलकठिनमगुजानी गहबरिहृदयकहहिंमृदुबा
परसतचरनमृदुलअरुनारे ॥ सकुचतिमहिजिमहृदयहमा
जौंजगदीसइन्हहिंबनुदीन्हा ॥ कसनसुमनमयमारगकी

जोमांगेपाइयबिधिपाहीं। एरखियसखिइन्हआँखनमाहीं
जेनरनारिनअवसरआये॥ तिनसियरामनदेखनपाये॥
सुनिसरूपबूझहिंअकुलाई अबलगिगयेकहांलगिभाई
समरथधाइबिलोकहिंजाई। प्रमुदितफिरहिंनयनफलपाई

दो॰ अबलाबालकवृद्धजन करमीजहिंपछिताहिं
होहिंप्रेमबसलोगइमि रामजहँजहँजाहिँ ॥१२०।

गाँवगाँवअसहोइअनंदू ॥ देषिभानुकुलकैरवचंदू ॥
जोकछुसमाचारसुनिपावहिं तेनृपरानिहिदोषलगावहिं।
कहहिंएकअतिभलनरनाहू दीन्हहमहिजिहलोचनलाहू
कहहिंपरस्परलोगलुगाई। बातेंसरलसनेहसुहाई ॥
तेपितुमातुधन्यजेजाये ॥ धन्यसोनगरजहँतेंआये॥
धन्यसोसैलदेशबनगाऊं॥ जहंजहंजाहिंधन्यसोठाऊं॥
सुखपायोबिरंचिरचितेही येजिहकेसबभांतिसनेही।
रामलषनसियकथासुहाई रहीसकलमगकाननछाई॥

दो॰ इहिबिधिरघुकुलकमलरवि मगलोगनसुखदेत
जाहिंचलेदेखतबिपिनसियसौमित्रिसमेत।१२१।

आगेरामलषनमुनिपाछें। तापसबेषबिराजतकाछें॥
उभयमध्यसियसोभितिकैसी ब्रह्मजीवबिचमायाजैसी।
बहुरिकहौंछबिजसमनबसई जनुमधुमदनमध्यरतिलसई
उपमाबहुरिकहौंजियजोही जनुबिधुबुधबिचरोहणीसोही।
प्रभुपदरेखबीचबिचसीता। धरहिंचरणमगचलहिंसभीता॥

सीय राम पद अंक बराये। लषन चलैंहिं मगु दाहिन ला
राम लषन सिय प्रीति सुहाई। बचन अगोचर किमि कहि ज
षग मृग मगन देषि छबि होंई। लिये राम चित चोर बटोही

जिन्ह जिन्ह देषे पथिक प्रिय सीय सहित दोउ भाइ
भव मगु अगम अनंद तेइ बिनु श्रम रहे सिराइ १२३

अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ। बसहिं लषन सिय राम बटाऊ
राम धाम पथि पाइहि सोई। जो पथि पाव कबहु मुनि को
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देषि निकट बट सीतल पानी
तहँ बसि कंद मूल फल षाई। प्रात नहाइ चले रघुराई॥
देषत बन सर सैल सुहाये। बालमीक आश्रम प्रभु आ
राम दीष मुनि बास सुहावनि। सुंदर गिरि कानन जल पावन
सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले।
षग मृग बिपुल कोलाहल करहीं। बिरहित बैर मुदित मन चरहीं

सुचि सुंदर आश्रम निरषि हरषे राजिवनयन॥
सुनि रघुबर आगमन मुनि आगे आये लयन १२४

मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा। आशिर्बाद बिप्रबर दीन्हा॥
देषि राम छबि नयन जुड़ाने॥ करि सनमान आश्रमहिं आने
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाए। कंद मूल फल मधुर मंगाए।
सिय सौमित्रि राम फल षाए। तब मुनि आश्रम दिए सुहाये
बालमीक मन आनंद भारी। मंगल मूरति नयन निहारी।
तब कर कमल जोरि रघुराई॥ बोले बचन श्रवन सुषदाई।

तुमत्रिकालदरसीमुनिनाथा। बिस्वबदरजिमितुमरेहाथा।
असकहिप्रभुसबकथाबषानी। जेहिजेहिभांतिदीन्हबनरानी।

तातबचनपुनिमातुहितभाइभरतअसराउ॥
मोकहुदरसतुम्हारप्रभुसबममपुन्यप्रभाउ॥

देखिपायमुनिरायतुमारे। भएसुकृतसबसुफलहमारे।
अबजहंराउरआयसुहोई। मुनिउदबेगनपावैकोई॥
मुनितापसजिन्हतेंदुषलहहीं। तेनरेशबिनुपावकदहहीं।
मंगलमूलबिप्रपरितोषू। दहइकोटिकुलभूसुररोषू।
असजियजानिकहियसोइठाऊं। सियसौमित्रिसहितजहंजाऊं।
तहंरचिरुचिरपरनतृनशाला। बासकरहुकछुकालकृपाला।
सहजसरलसुनिरघुबरबानी। साधुसाधुबोलेमुनिज्ञानी।
कसनकहहुअसरघुकुलकेतू। तुमपालकसंततश्रुतिसेतू।

छं॰ श्रुतिसेतुपालकरामतुमजगदीशमायाजानकी।
जोसृजतिजगपालतिहरतिरुषपाइकृपानिधानकी।
जोसहससीसअहीसमहिधरलषनुसचराचरधनी।
सुरकाजधरिनरराजतनुचलेदलनषलनिसचरअनी।

सो॰ रामसरूपतुमारबचनअगोचरबुद्धिपर॥
अबिगतअकथअपारनेतिनेतिनितनिगमकह॥

जगपेखनतुमदेखनहारे। बिधिहरिशंभुनचावनहारे।
तेउनजानहिंमरमतुम्हारा। औरतुमहिकोजाननहारा।
सोइजानइजेहिदेहुजनाई। जाननतुमहिंतुमहोइजाई।

यहमूर्तिबालमीकआश्रममेंरामलषनकाआवना

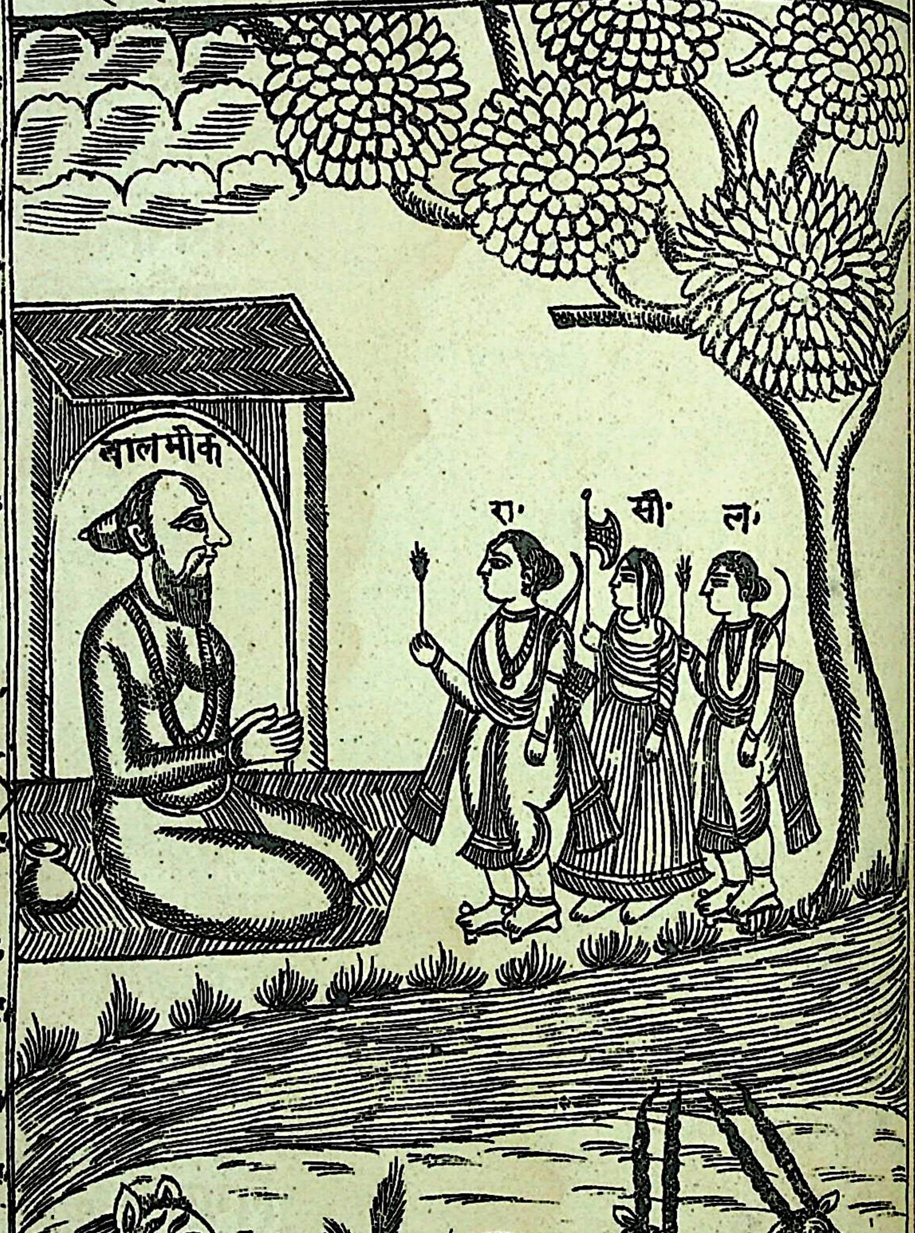

टी·
रा·अ·
६८

तुमरीकृपातुमहिंरघुनंदन जानहिंभगतभगतउरचंदन
चिदानंदमयदेहतुम्हारी। बिगतबिरागजानअधिकारी
नरतनुधरेउसंतसुरकाजा। कहहुकरहुजसप्राकृतराजा।
रामदेखिसुनिचरिततुम्हारे जड़मोहहिंबुधहोहिंसुषारे
तुम्हजोकहहुकरहुसबसोचा। जसकाछियतसचाहियनाचा।

दो·पूंछेमोहिकिरहौंकहँमैंपूछतसकुचाउँ॥
जहँनहोहुतहँदेहुकहितुमहिंदेखावहुँठाउँ १२६

सुनिमुनिबचनप्रेमरससाने सकुचिराममनमहँमुसकाने
बालमीकिहँसिकहहिंबहोरी बानीमधुरअमियरसबोरी
सुनहुरामअबकहौंनिकेता। जहांबसहुसियलषनसमेता
जिन्हकेश्रवनसमुद्रसमाना। कथातुम्हारिसुभगसरिनाना।
भरहिंनिरंतरहोंहिनपूरे ॥ तिनकेहियतुमकहुंगृहरूरे
लोचनचातकजिनकरराखे रहहिंदरसजलधरअभिलाषे
निदरहिंसरितसिंधुसरभारी रूपबिंदुजलहोंहिसुखारी।
तिन्हकेहृदयसदनसुषदायक बसहुबंधुसियसहरघुनायक

दो·जसतुम्हारमानससबिमलहंसिनिजीहाजासु॥
मुकताहलगुनगनचुनइरामबसहुमनतासु १२७

प्रभुप्रसादसुचिसुभगसुबासा। सादरजासुलहइनितनासा।
तुमहिंनिबेदितभोजनकरहीं प्रभुप्रसादपटभूषनधरहीं
सीसनवहिंसुरगुरुद्विजदेषी प्रीतिसहितकरिबिनयबिसेषी
करनितकरहिंरामपदपूजा। रामभरोसहृदयनहिंदूजा॥

चरणरामतीरथचलिजाहीं रामबसहुतिनकेमनमाहीं
मंत्रराजनितजपहिंतुम्हारा पूजहिंतुमहिंसहितपरि
तरपनहोमकरहिंबिधिनाना बिप्रजेवाइदेहिंबहुदाना॥
तुमतेंअधिकगुरुहिजियजानी सकलभायसेवहिंसनमा

सबुकरमांगहिंएकफलरामचरनरतिहोउ॥
तिन्हकेमनमंदिरबसहुसियरघुनंदनदोउ १२९

कामक्रोधमदमाननमोहा लोभनछोभनरागनद्रोहा
जिनकेकपटदंभनहिंमाया तिन्हकेहृदयबसहुरघुराया
सबकेप्रियसबकेहितकारी। दुखसुखसरिसप्रसंसागारी
कहहिंसत्यप्रियबचनबिचारी जागतसोवतसरनतुम्हारी
तुमहिंछाडिगतिदूसरनाहीं रामबसहुतिन्हकेमनमाही
जननीसमजानहिंपरनारी। धनपरावविषतेंविषभारी
जेहरषहिंपरसंपतिदेखी॥ दुखितहोहिंपरबिपतबिसे
जिन्हहिंरामतुमप्रानपियारे तिन्हकेमनसुभसदनतुम्हा

स्वामिसखापितुमातुगुरुजिन्हकेसबतुमतात
मनमंदिरतिन्हकेबसहुसीयसहितदोउभ्रात

अवगुनतजिसबकेगुनगहहीं बिप्रधेनुहितसंकटसहहीं
नीतिनिपुनजिनकरजगलीका घरतुम्हारतिन्हकरमननी
गुनतुम्हारसमुझइनिजदोषा जेहिसबभांतितुम्हारभरो
रामभगतिप्रियलागहिंजेही तेहिउरबसहुसहितबैदेही
जातिपांतिधनधरमबड़ाई प्रियपरिवारसदनसुखदा
सबतजितुमहिंरहइउरलाई तेहिकेहृदयरहहुरघुराई

सुरगनरकअपबरगुसमाना। जहँतहँदेषधरेधनुबाना॥
करमबचनमनराउरचेरा॥ रामकरहुतिनकेउरडेरा॥

जाहिनचाहियकबहुंकछुतुमसनसहजसनेहु
बसहुनिरंतरतासुमनसोराउरनिजगेहु।१३०॥

एहिबिधिमुनिबरभवनदिषाए।बचनसप्रेमराममनभाए
कहमुनिसुनहुभानुकुलनायक। आश्रमकहउंसमयसुखदायक।
चित्रकूटगिरिकरहुनिवासू। तहँतुम्हारसबभांतिसुपासू।
शैलसुहावनकाननचारू। करिकेहरिमृगबिहगबिहारू
नदीपुनीतपुरानबखानी। अत्रिप्रियानिजतपबलआनी।
सुरसरिधारनाममंदाकिनि जोसबपातकपोतकडाकिनि
अत्रिआदिमुनिबरबहुबसहीं करहिंजोगजपतपतनकसहीं
चलहुसफलश्रमसबकरकरहू रामदेहुगौरवगिरिबरहू॥

चित्रकूटमहिमाअमितकहीमहामुनिगाइ + ॥
आइनहायेसरितबरसियसमेतदोउभाइ १३१

रघुबरकहेउलषनभलघाटू करहुकतहुअबठाहरठाटू
लषनदीषपयउतरकरारा चहुंदिशिफिरेउधनुषजिमिनारा
नदीपनचसरसमदमदाना। सकलकलुषकलिसाउजनाना
चित्रकूटजनुअचलअहेरी॥ चुकइनघातमारमुठभेरी
असकहिलषनठांउँदेखरावा। थलबिलोकिरघुबरसुखपावा
रमेउराममनदेवन्हजाना॥ चलेसहितसुरपतिपरधाना
कोलकिरातबेषसबआए। रचेपरनतृनसदनसुहाए

टी.
रा.प्र.
७२

बरनिनजाइमंजुदुइशाला। एकललितलघुएकबिशा

दो॰ लषनजानकीसहितप्रभुराजतरुचिरनिकेत॥
सोहमदनमुनिबेषजनुरतिरितुराजसमेत १३२॥

अमरनागकिन्नरदिशिपाला। चित्रकूटआएतिहिकाला॥
रामप्रनामकीन्हसबकाहू। मुदितदेवलहिलोचनलाह
बरषसुमनकहदेवसमाजू। नाथसनाथभएहमआज
करिबिनतीदुखदुसहसुनाये। हरषितनिजनिजसदनसिध
चित्रकूटरघुनंदनछाये॥ समाचारसुनिसुनिमुनिआ
आवतदेषिमुदितमुनिवृंदा। कीन्हदंडवतरघुकुलचंदा॥
मुनिरघुबरहिंलाइउरलेहीं। सुफलहोनहितआशिषदे
सियसौमित्रिरामछबिदेषहिं। साधनसकलसफलकरिले

दो॰ रा॰ अ॰ ७२

दो॰ जथाजोगसनमानप्रभुबिदाकियेमुनिवृंद +॥
करहिंजोगजपजागतपनिजआश्रमनिस्वछंद १३

यहसुधिकोलकिरातनपाई। हरषेजनुनवनिधिघरआ
कंदमूलफलभरिभरिदोना। चलेरंकजनुलूटनसोना॥
जिन्हमहँजिन्हदेषेदोउभ्राता। अपरतिन्हहिंपूछहिंमगुजा
कहतसुनतरघुबीरनिकाई। आइसबनदेषेरघुराई +॥
करहिंजोहारुभेंटधरिआगे। प्रभुहिबिलोकहिंअतिअनु
चित्रलिखेजनुजहँतहँठाढ़े। पुलकशरीरनयनजलबाढ़े
रामसनेहमगनसबजाने॥ कहिप्रियबचनसकलसनमा
प्रभुहिजोहारिबहोरिबहोरी। बचनबिनीतकहहिंकरजो

दो॰ अबहमनाथसनाथसबभएदेखिप्रभुपाय ॥
भागहमारेआगमनुराउरकोशलराय ॥ १३५॥

धन्यभूमिबनपंथपहारा ॥ जहँजहँनाथपांवतुमधारा ॥
धन्यबिहगमृगकाननचारी । सफलजनमभएतुमहिंनिहारी
हमसबधन्यसहितपरिवारा दीखदरसभरिनयनतुम्हारा
कीन्हबासभलठांवबिचारी इहांसकलरितुरहबसुखारी
हमसबभांतिकरबसेवकाई करिकेहरिअहिबाघबराई
बनबेहड़गिरिकंदरखोहा ॥ सबहमारप्रभुपगपगजोहा ।
जहँतहँतुम्हहिंअहेरखेलाउब सरनिर्झरजलठांउदेखाउब ॥
हमसेवकपरिवारसमेता । नाथनसकुचबआयसुदेता

दो॰ बेदबचनमुनिमनअगमतेप्रभुकरुनाऐन ॥
बचनकिरातन्हकेसुनतजिमिपितुबालकबैन

टी
रा॰ अ॰
७२

रामहिंकेवलप्रेमपियारा ॥ जानलेउजोजाननिहारा ॥
रामसकलबनचरतबतोषे । कहिमृदुबचनप्रेमपरितोषे
बिदाकियेसिरनाइसिधाए प्रभुगुनकहतसुनतघरआए
इहिबिधिसियसमेतदोउभाई बसहिंबिपिनसुरमुनिसुखदाई
जबतेंआइरहेरघुनायकु ॥ तबतेंभयउबनमंगलदायक ॥
फूलहिंफलहिंबिटपबिधनाना मंजुबलितबरबेलिबिताना
सुरतरुसरिससुभायसुहाए मनहुंबिबुधबनपरिहरिआए
गुंजमंजुतरमधुकरश्रेनी ॥ बिबिधबयारबहैसुखदेनी

दो॰ नीलकंठकलकंठसुकचातकचक्कचकोर ॥

भांतिभांतिबोलहिंबिहगश्रवनसुषदचितचोर ३६

करिकेहरिकपिकोलकुरंगा। बिगतबैरबिचरहिंसबसंगा।
फिरतअहेररामछबिदेषी॥ होहिंमुदितमृगबृंदबिशेष
बिबुधबिपनजहलगिजगमाहीं देषिरामबनसकलसिहाहीं
सुरसरिसरसइदिनकरकन्या। मेकलसुतागोदावरिधन्या।
सबसरसिंधुनदीनदनाना॥ मंदाकिनीकरकरहिंबखान
उदयअस्तगिरिअरुकैलासू मंदरमेरुसकलसुरबासू॥
शैलहिमाचलआदिकजेते। चित्रकूटजसगावहिंतेते॥
बिंधिमुदितमनसुखनसमाई श्रमबिनुबिपुलबड़ाईपाई॥

चित्रकूटकेबिहगमृगबेलबिटपतृनजाति॥
पुन्यपुंजसबधन्यअसकहहिंदेवदिनराति ३७

नैनवंतरघुबरहिबिलोकी। पाइजनमफलहोहिंबिसो
परसिचरनरजअचरसुषारी भएपरमपदकेअधिकारी
सोबनशैलसुभावसुहावन मंगलमयअतिपावनपावन
महिमाबरनकवनबिधिजासू सुखसागरजहँकीन्हनिवास
पयपयोधिनजिअवधबिहाई जहँसियलषनरामुरहेआई
कहिनसकहिंसुषमाजसकानन जोंसतसहसहोंहिंसहसान
सोमैबरनिकहौंबिधिकेही डाबरकमलकिमंदरलेहीं॥
सेवहिंलषनकरममनबानी। जाइनसीलसनेहबषानी॥

छिनछिनलषिसियरामपदजानिआपुपरनेह॥
करतनसपनेहुँलषनचितबंधुमातुपितुगेह १३८

पंक्ति १९ श्लो० १२ छं० १४ दो० १२८ ।

सियलषन
जोहिअस्तनाथ
नासियरघुन
समयसबको
श्रीरामजान
कीलषन
सबाश्रीरहा
निषाद्ध्याम
पर्श्राद्ध

रामसंगसियरहतिसुखारी पुरपरिजनगृहसुरतबिसारी
छिनछिनपियबिधुबदननिहारी प्रमुदितमनहुंचकोरकुमारी
नाहनेहनितबढ़तबिलोकी हरषितरहतिदिवसजिमकोकी
सियमनरामचरनअनुरागा अवधसहससमप्रियबनलागा
परनकुटीप्रियप्रियतमसंगा प्रियपरिवारकुरंगबिहंगा॥
सासुससुरसममुनितियमुनिबर असनुअमियसमकंदमूलफर
नाथसाथसांथरीसुहाई॥ मयनसयनसमसमसुखदाई
लोकपहोंहिबिलोकतजासू तेहिकिमोहसकबिषयबिलासू

सुमिरतरामहिंतजहिंजनतृनसमबिषयबिलासु
रामप्रियाजगजननिसियकछुनआचरजतासु३९

सीयलषनजेहिबिधिसुखलहहीं सोइरघुनाथकरइसोइकहहीं
कहहिंपुरातनकथाकहानी सुनहिंलषनसियअतिसुखमानी
जबजबरामअवधिसुधिकरहीं तबतबबारिबिलोचनभरहीं
सुमरिमातुपितुपरिजनभाई भरतसनेहसीलसेवकाई॥
कृपासिंधुप्रभुहोहिंदुखारी धीरजधरहिंकुसमउबिचारी
लषसियलषनबिकलहोइजाहीं जिमिपुरुषहिंअनुसरपरछाहीं
प्रियाबंधुगतिलषिरघुनंदन धीरकृपालभगतउरचंदन॥
लगेकहनकछुकथापुनीता सुनसुषलहहिंलषनअरुसीता

दो० रामलषनसीतासहित सोहतपरननिकेत॥
जिमिबासवबसअमरपुरसचीजयंतसमेत१४०

जोगवहिंप्रभुसियलषनहिंकैसे पलकबिलोचनगोलकजैसे

स्पर्शकोबिकल
तासमतको
प्रातिबिकल
मुकेप्रनम
भांतिबाधचार
पूतसाधनकारि
प्रयाध्या
कामनतुमया
तनमयातिर
सांपडवायकि
स्प्रहसमतर

टी०
रा० अ०
७५

समपाबिचार
नगरप्रवेशादि
धीनहींराना
सबादपार
सोकप्रथिकादि
लषनकीकथा
भरतकीप
अकमत्यत
निषाप्रबंधान

सबको
लषकनाथ
जैअनेकरहै
गोयनप्रनाम
बनिकस्प्रत
भयोनहारित
भरिमागत

॥५६॥ बोलाइ मंत्री मनाहि क्रौं गहइ श्री बैरि कुट गैबाया थोकताम

सेवहिंलषनसीयरघुबीरहिं जिमिअबिबेकीपुरुषशरीरा
एहिबिधिप्रभुबनबसहिंसुषारी खगमृगसुरतापसहितका
कहेउरामबनगवनसुहावा॥ सुनहुसुमंत्रअवधजिमआ
फिरउनिषादप्रभुहिंपहुंचाई सचिवसहितरथदेखेकिआ
मंत्रीबिकलबिलोकिनिषादू कहिनजायजसिभएउबिषा
रामरामसियलषनपुकारी॥ परेउधरनितलव्याकुलभा
देखदखनदिशिहयहिहिनाहीं जनुबिनुपंखबिहगअकुला

दो॰ नहिंतृनचरहिंनपियहिंजलमोचहिंलोचनबारि।
व्याकुलभएनिषादसबरघुबरबाजिनिहारि।१४२।

टी॰
रा॰प्र॰
७६

धरिधीरजतबकहइनिषादू अबसुमंत्रपरिहरहुबिषादू
तुमपंडितपरमारथज्ञाता॥ धरहुधीरलषिबामबिधा
बिबिधकथाकहकहमृदुबानी रथबैठारेउसरबसआनी॥
सोकसिथलरथसकैनहांकी रघुबरबिरहपीरउरबां
चरफराहिंमगचलहिंनघोरे। बनमृगमनहुंआनिरथजोरे
अरुकिपरहिंफिरहेरहिंपीछे रामबियोगबिकलदुषतीछे
जोकहरामलषनबैदेही॥ हिकरिहिकरिहितहेरहिंते
बाजिबिरहगतिकिमिकहिजानी बिनमनिफनिकबिकलजेहिभा

दो॰ भएउनिषादबिषादबसदेखतसचिवतुरंग॥
बोलिसुसेवकचारितबदियेसारथीसंग॥१४३॥

गुहसारथिहिफिरेउपहुंचाई बिरहबिषादबरनिनहिंजा
चलेअवधलेरथहिंनिषादा होहिंछनहिंछनमगनबिषा

सोचतसुमंत्रबिकलदुखदीना। धिकजीवनरघुबीरबिहीना।
रहिहिंनअंतहुअधमशरीरू। जसुनलहेउबिछुरतरघुबीरू
भएउअजसअघभाजनप्राना। कवनहेतुनहिंकरतपयाना।
अहहमंदमनअवसरचूका। अजहुंनहृदयहोतदुइटूका।
मींजहाथसिरधुनिपछिताई। मनहुंकृपनधनराशिगँवाई॥
बिरदबांधिबरबीरुकहाई॥ चलेउसमरजनुसुभटपराई॥

दो· बिप्रबिबेकीबेदबिदसंमतसाधसुजाति ॥
जिमिधोषेमदपानकरसचिवसोचतेहिभांति ४४

जिमिकुलीनतियसाधुसयानी पतिदेवताकरममनबानी॥
रहैकरमबसपरिहरनाहू॥ सचिवहृदयतिमिदारुनदाहू
लोचनसजलडीठिभइथोरी॥ सुनइनश्रवनबिकलमतिभोरी
सूखहिंअधरलागिमुंहलाटी जिउनजाइउरअवधिकपाटी
बिबरनभएउनजाइनिहारी। मारेसिमनहुंपितामहतारी।
हानिगलानिबिपुलमनव्यापी जमपुरपंथसोचजिमिपापी॥
बचनुनआवहृदयपछिताई अवधकाहमैंदेखबजाई॥
रामरहितरथदेखिहिजोई॥ सकुचिहिमोहिबिलोकतसोई

दो· धाइपूछिहहिंमोहिजबबिकलनगरनरनारि ॥
उतरुदेबमैंसबहिजबहृदयबज्रबैठारि॥ १४५॥

पूछिहहिंदीनदुखितसबमाता। कहबकाहमैंतिन्हहिंबिधाता।
पूछिहिजबहिंलषनमहतारी। कहिहौंकवनसंदेससुखारी
रामजननिजबआइहिधाई॥ सुमरिबछजनुधेनुलवाई॥

टी·
रा·अ·
७७

पूछबउतरदेबमैंतेही ~॥ बेगनरामुलषनबैदेही॥
जोपूछिहितेहिउतरदेवा। जाइअवधअबयहसुखलै
पूछिहिजबहिंराउदुखदीना। जिवनजासुरघुनाथअधी
देहोंउतरकवनमुंहलाई॥ आएउंकुशलकुंअरपहुंचा
सुनतलषनसियरामसंदेसू ननजिमितनुपरिहरिहिने

हृदयनबिदरेउपंकजिमिबिछुरतप्रीतमनीर॥ ~
जानतहों।मोहिदीनबिधियहजातनाशरीर १४६

एहिबिधिकरतपंथपछितावा। तमसातीरतुरतरथआवा
बिदाकियेकरबिनयनिषादा। फिरेपायपरिबिकलबिषा
पैठतनगरसचिवसकुचाई॥ जनुमारेसिगुरुबामनगाई
बैठिबिटपतरदिवसगँवाया। सांझसमयतबअवसरपाव
अवधप्रवेशकीन्हअंधियारे पैठभवनरथराषिदुआरे॥
जिन्हजिन्हसमाचारसुनिपाए भूपद्वाररथदेखनआए॥
रथपहिचानबिकललषघोरे गरहिंगातजिमिआतपओ
नगरनारिनरब्याकुलकैसे निघटतनीरमीनगनजैसे

सचिवआगमनुसुनतसबबिकलभएउरनिवास
भवनभयंकरलागतेहिमानहुप्रेतनिवास १४७

अतिआरतसबपूछहिंरानी उतरनआवबिकलभइबानी
सुनइनश्रवननयननहिंसूझा कहहुकहांनृपजेहितेहिबू
दासिन्हदीषसचिवबिकलाई कौसिल्यागृहगईंलवाई
जाइसुमंत्रदीखकसराजा अमिअरहितजनुचंदबिरा

आसनसयनबिभूषनहीना। परेउभूमितलनिपटमलीना।
लेइउसाससोचएहिभांती। सुरपुरतेंजनुषसेउजजाती।
लेतसोचभरिछिनछिनछाती जनुजरिपंखजरेउसंपाती।
रामरामकहिरामसनेही। पुनिकहरामलषनबैदेही

देषसचिवजयजीवकहिकीन्हेदंडप्रनामु॥
सुनतउठेउब्याकुलनृपतिकहुसुमंत्रकहँरामु ४८

भूपसुमंत्रलीन्हउरलाई। बूड़तकछुअधारजनुपाई॥
सहितसनेहनिकटबैठारी पूंछतराउनयन भरिबारी।
रामकुसलकहुसखासनेही कहरघुनाथलषनबैदेही
आनेफेरिकिबनहिंसिधाए सुनतसचिवलोचनजलछाए॥
सोकबिकलपुनिपूंछनरेसू कहुसियरामलषनसंदेसू
रामरूपगुणसीलसुभाऊ सुमरिसुमरिउरसोचतराऊ
राजसुनायदीन्हबनबासू सुनिमनभयेउनहरषहरासू
सोसुतबिछुरतगएनप्राना। कोपापीबड़मोहिसमाना।

सखारामसियलषनजहँतहाँमोहिपहुँचाउ॥
नाहितचाहतचलनअबप्रानकहौंसतभाउ ४९

पुनिपुनिपूंछतमंत्रिहिराऊ प्रियतमसुअनसंदेससुनाऊ
करहिसखासोबेगउपाऊ रामलषनसियनयनदेखाऊ
सचिवधीरधरिकहिमृदुबानी महाराजतुमपंडितज्ञानी
बीरसुधीरधुरंधरदेवा॥ साधुसमाजसदातुमसेवा।
जनममरनसबदुखसुखभोगा हानिलाभप्रियमिलनबियोगा॥

कालकरमबसहोहिंगोसांई बरबसरातिदिवसकीनाँ
सुखहरषहिंजड़दुखबिलखांहीं दोउसमधीरधरहिंमनमा
धीरजधरहिंबिबेकबिचारी छाडियसोचसकलहितका

दो॰प्रथमबासतमसाभयउदूसरसुरसरितीर॥
न्हायरहेजलपानुकरसियसमेतदोउबीर १५०

केवटकीन्हबहुतसेवकाई॥ सोजामिनिसिंगरौरगवांई॥
होतप्रातबटछीरमँगाई ॥ जटामुकुटनिजसीसबनाई॥
रामसखातबनावमँगाई। प्रियाचढ़ाइचढ़ेरघुराई॥
लषनुबानधनुधरेबनाई॥ आपुचढ़ेप्रभुआयसुपाई॥
बिकलबिलोकिमोहिरघुबीरा बोलेमधुरबचनधरिधीरा
तातप्रनामतातसनकहेहू। बारबारपदपंकजगहेहू॥
करबिपायँपरिबिनयबहोरी तातकरियजनिचिंतामोरी॥
बनमगमंगलकुसलहमारे कृपाअनुग्रहपुन्यतुम्हारे॥

छं॰तुमरेअनुग्रहतातकाननजातसबसुखपाइहौं॥
प्रतिपालिआयसुकुसलदेषनपायपुनिफिरआइहौं॥
जननीसकलपरितोषपरिपरिपायकरिबिनती
तुलसीकरेहुसोइजतनजेहिकुसलीरहहिंकोशलध
सो॰गुरसनकहबसंदेसबारबारपदपदुमगहि॥
करबिसोइउपदेसजेहिनसोचमोहिअवधपति ५१

पुरजनपरिजनसकलनिहोरी तातसुनायहुबिनतीमो
सोइसबभांतिमोरहितकारी जातेंरहनरनाहसुखारी॥

कहबसंदेशभरतकेआये ॥ नीतिनतजिअराजपदपाये
पालेहुप्रजहिंकरममनबानी सेयेहुमातुसकलसनमानी ॥
ओरनिबाहेहुभायपभाई ॥ करिपितुमातुसुजनसेवकाई
तातभांतितेहिराषबराऊ ॥ सोचमोरजेहिकरैनकाऊ ॥
लषनकहेउकछुबचनकठोरा बरजिरामपुनिमोहिनिहोरा।
बारबारनिजसपथदिवाई ॥ कहबिनतातलषनलरिकाई

दो॰ कहिप्रनामकछुकहनलियसियभइसिथिलसनेह
थकितबचनलोचनसजलपुलकपल्लवितदेह १५२

तेहिअवसररघुबररुषपाई केवटपारहिंनावचलाई ॥
रघुबरतिलकचलेएहिभांती देषेउंठाढकुलिशधरिछाती
मैंआपनकिमिकहउंकलेसू। जियतफिरेउंलैरामसंदेसू ॥
असकहिसचिवबचनरहिगएऊ हानिगलानिसोचबसभएऊ
सूतबचनसुनतहींनरनाहू। परेउधरनिउरदारुनदाहू ॥
तलफतबिषममोहमनमाया। माजामनहुंमीनकहुंव्यापा
करिबिलापसबरोवहिंरानी महाबिपतिकिमिजाइबषानी
सुनिबिलापदुखहूंदुषलागा। धीरजहूंकरधीरजभागा * ॥

दो॰ भएउकोलाहलअवधअतिसुनिनृपराउरसोरु ॥
बिपुलबिहगबनपरेउनिशिमानहुंकुलिसकठोरु १५३

प्रानकंठगतभएउभुआलू ॥ मनिबिहीनजनुव्याकुलव्यालू।
इंद्रीसकलबिकलभइभारी। जनुसरसरसिजबनबिनुबारी
कौशल्यानृपदीषमलाना ॥ रविकुलरविअथयेजियजाना।

उरधरिधीररामम्हतारी। बोलीबचनसमयअनुहा
नाथसमुझिमनकरियबिचारू रामबियोगपयोधिअपा
करनधारतुमअवधजहाजू चढेउसकलप्रियपथिकस
धीरजधरिअतपाइअपारू नाहिंतबूड़िहिसबपरिवारू
जौजियधरिपियअबिनयमोरी रामलषनसियमिलहिंबहो

प्रियाबचनमृदुसुनतनृपचितयउआंषिउघारि
तलफतमीनमलीनजनुसींचेउसीतलबारि५४

धरिधीरजउठिबैठभुआलू। कहुसुमंतकहँरामकृपाल
कहांलषनकहँरामसनेही कहँप्रियपुत्रबधूबैदेही॥
बिलपतरामबिकलबहुभांती भइजुगसरिससिरातिनरात
तापसअंधसापसुधिआई। कौशल्यहिसबकथासुनाई
भएउबिकलबरनतइतिहासा रामरहितधिगजीवनआस
सोतनुराषिकरबमैकाहा। जोहिनप्रेमपनुमोरनिबाह
हारघुनंदनप्रेमपिरीते ॥ तुमबिनुजियतबहुतदिनबी
हाजानकीलषनहारघुबर हापितुहितचितचातकजल

रामरामकहिरामकहिराममरामकहिराम ॥
तनुपरिहररघुबरबिरहराउगएउसुरधाम५५

जिअनमरनफलदसरथपावा अंडअनेकअमलजसछाव
जिअतरामबिधुबदननिहारा रामबिरहभरिमरनसवारा
सोकबिकलसबरोवहिंरानी रूपसीलबलतेजबखानी॥
करहिंबिलापअनेकप्रकारा परहिंभूमितलबारहिंबारा

पं॰ कि॰ १ २८ श्री॰ पृ॰ २ सो॰ ३० दो॰ १ तेलनावभरि अरुबोपिन गरगुबिसष्ठ का॰ ९७ तौं रङपछोते भरतनअर गुनतेबल हिंपडेगत दुतनकेजा

बिलपहिंबिकलदासअरुदासी। घरघररुदनकरहिंपुरबासी
अथयेउआजुभानुकुलभानू। धरमअवधिगुनरूपनिधानू।
गारीसकलकैकइहिदेहीं ॥ नयनबिहीनकीन्हजगजेहीं
यहिबिधिबिलपतरैनिबिहानी। आएसकलमहामुनिग्यानी॥

तबबसिष्ठमुनिसमयसमकहिअनेकइतिहास॥
सोकनिवारेउसबहिकरनिजबिग्यानप्रकास१५६

तेलनावभरिनृपतनराषा॥ दूतबोलाइबहुरिअसभाषा।
धावहुबेगिभरतपहँजाहू। नृपसुधिकतहुंकहहुजनिकाऊ
येतनेइकहहुभरतसनजाई। गुरुबोलाइपठयेदोउभाई
सुनिमुनिआयसुधावनधाये। चलेबेगिबरबाजिलजाये
अनरथअवधअरंभेउजबतें। कुसगुनहोंहिंभरतकहुतबतें
देखहिंरातिभयानकसपना। जागिकरहिंकटुकोटिकलपना।
बिप्रजेवांइदेहिंदिनदाना। शिवअभिषेककरहिंबिधनाना।
मांगहिंहृदयमहेशमनाई। कुसलमातुपितुपुरजनभाई

यहिबिधिसोचतभरतमनधावनपहुंचेजाइ॥
गुरुअनुशासनश्रवनसुनिचलेगनेशमनाइ१५७

चलेसमीरबेगहयहांके। नाघतसैलसरितबनबांके
हृदयसोचबड़कछुनसोहाई। असजानहिंजियजाउंउड़ाई
एकनिमेषबरषसमजाई। यहिबिधभरतअवधनियराई
असगुनहोंहिंनगरपैठारा। रटहिंकुभांतिकुषेतकरारा
खरसिआरबोलहिंप्रतिकूला। सुनिसुनिहोइभरतमनसूला॥

अरुबधाइगा मारेनाहरथ परचलतुभा गरमिंअरसुन दूबेनगरमोपङुह्व तहसबकोमलिन पाउअरसके उन्मादपुहक मिलातहाँ भरततेप्रमात सुनिबड़ाउव

थी॰

रा॰ ग्र॰ ८३

भयोतातें गारद्योनर मोजननीभई न्याहिंकैकयी कोमालहिंपति बधकोकिया हतौअरकुक कोउन्माद हेतिधाद्धा

मोह हिंयातहे त्याउकैसं अनः कौष्ठ भरःअमागा कौडोगक उकौसप्कौ नेनरखनी

श्रीहतसरसरिताबनबागा। नगरुबिशेषिभयावनला
खगमृगहयगयजाइनजोए। रामबियोगकुरोगबिगोए
नगरनारिनरनिपटदुखारी। मनहुँसबन्हसबसंपतिहा

दो॰ पुरजनमिलहिंनकहहिंकछुगवहिंजोहारहिंजाहिं
भरतकुसलपूंछिनसकहिंभयबिषादमनमाहिं १५८

हाटबाटनहिंजाइनिहारी॥ जनुपुरदहुँदिशिलागिदवा
आवतसुतसुनिकैकयनंदिनि। हरषीरबिकुलजलरुहचंदि
सजिआरतीमुदितउठिधाई। द्वारेहिंभेटभवनलइआई॥
भरतदुखितपरिवारुनिहारा। मानहुँतुहिनबनजबनुमारा
कैकेयीहरषितयेहिभांती। मनहुँमुदितदवलाइकिरा
सुतहिससोचदेषमनमारे॥ पूंछतिनैहरकुसलहमारे
सकलकुसलकहभरतसुनाई। पूंछीनिजकुलकुसलभल
कहुकहँतातकहाँसबमाता। कहँसियरामलषनप्रियभ

दो॰ सुनसुतबचनसनेहमयकपटनीरभरिनयन॥
भरतश्रवनमनसूलसमपापिनबोलीबयन १५९

तातबातमैंसकलसँवारी॥ भइमंथरासहायबिचारी॥
कछुककाजबिधिबीचबिगारेऊ। भूपतिसुरपतिपुरपगुधा
सुनतभरतभएबिवसबिषादा। जनुसहमेउकरिकेहरिना
ताततातहातातपुकारी॥ परेभूमितलब्याकुलभारी॥
चलतनदेखनपायेउँतोही॥ तातनरामहिंसोंपेउमो
बहुरिधीरधरिउठेसंभारी। कहुपितुमरनहेतुमहतारी॥

सुनिसुतबचनकहतिकैकेई मरमपाछिजनुमाहुरदेई॥
आदिहुतेसबआपनिकरनी कुटिलकठोरमुदितमनबरनी

दो॰ भरतहिंबिसरेउपितुमरनसुनतरामबनगौन॥
हेतुअपनपउजानिजियथकितरहेधरिमौन १६०

बिकलबिलोकिसुतहिंसमुझावति मनहुंजरेपरलोनलगावति
तातराउनहिंसोचइजोगू ॥ बढ़इसुकृतजसुकीन्हेउभोगू
जीवतसकलजनमफलपाये अंतअमरपतिसदनसिधाए
असअनुमानिसोचपरिहरहू सहितसमाजराजपुरकरहू
सुनिसुठिसहमेउराजकुमारू पाकेछतजनुलागअंगारू॥
धरिधीरजभरिलेहिंउसासा पापिनिसबहिंभांतिकुलनासा
जोपैकुरुचिरहीअतितोही जनमतकाहेनमारेमोही॥
पेडुकाटितैंपालवसींचा। मीनजियननितिबारिउलीचा।

दो॰ हंसबंसदसरथजनकरामलखनसेभाइ॥
जननीतूजननीभईबिधिसनकछूनबसाइ १६१॥

जबतेकुमतिकुमतजियठयऊ खंडखंडहोइहृदयनगयऊ॥
बरमांगतमनभईनपीरा ॥ गरिनजीहमुहपरेउनकीरा॥
भूपप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही मरनकालबिधिमतिहरलीन्ही
बिधिहुनारिहृदयगतिजानी सकलकपटअघअवगुनखानी
सरलसुसीलधरमरतराऊ सोकिमिजानइतीयसुभाऊ
असकोजीवजंतुजगमाहीं जेहिरघुनाथप्रानप्रियनाहीं
भयअतिअहितरामतेउतोही कोतूअसहिसत्यकहुमोही।

जोहसिसोहसिमुंहमसिलाई आंखिओटउठिबैठहिंजा

रामबिरोधीहृदयतें प्रगटकीन्हबिधिमोहि॥
मोसमानकोपातकीबादिकहउँकछुतोहि१६२

सुनिशत्रुघनमातुकुटिलाई जरहिंगातरिसकछुनबसा
तेहिअवसरकुबरीतहँआई। बसनबिभूषनबिबिधबना
लखिरिसभरेउलषनलघुभाई बरतअनलघृतआहुतिपा
हुमगिलाततकिकूबरिमारा परिमुंहभरमहिकरतपुका
कूबरटूटेउफूटकपारू४॥ दलितदसनमुखरुधिरप्रचा
आहदैवमैंकाहनसावा॥ करतनीकफलअनइसपा
सुनिरिपुहनलषनखसिखखोटी लगेघसीटनधरिधरिझों
भरतदयानिधिदीन्हछोड़ाई। कौशल्यापहिंगेदोउभाई॥

मलिनबसनबिबरनबिकलकृशशरीरदुखभारु
कनककलपबरबेलिबनमानहुहनीतुषारु१६३।

भरतहिदेखिमातुउठिधाई॥ मुरछितअवनिपरीझइँआ
देखतभरतबिकलभएभारी परेचरनतनदसाबिसारी।
मातुतातकहँदेहिदिषाई। कहँसियरामलषनदोउभा
कैकइकतजननीजगमांझा जौंजनमितभईकाहेनबांझ
कुलकलंकुजेहिजनमेउमोही अपजसभाजनप्रियजनद्रो
कोतिभुवनमोहिसरसअभागी गतिअसतोरिमातुजेहिला
पितुसुरपुरबनरघुकुलकेतू मैंकेवलसबअनरथहेतू
धिगमोहिभएउबेनुबनआगी दुसहदाहदुखदूषनभागी

दो॰ मातुभरतकेबचनमृदुसुनिपुनिउठीसंभारि।
लियेउठाइलगाइउरलोचनमोचतिबारि॥१६४॥

सरलसुभायमायहियलाए। अतिहितमनहुंरामफिरिआए॥
भेटेउबहुरिलषनलघुभाई। सोकसनेहुनहृदयसमाई॥
देखिसुभाउकहतसबकोई। राममातुअसकाहेनहोई॥
माताभरतगोदबैठारे॥ आंसुपोंछिमृदुबचनउचारे
अजहुंबछबलिधीरजधरहू। कुसमउसमुझिसोकपरिहरहू
जनिमानहुहियहानिगलानी। कालकरमगतिअघटितजानी
काहुहिदोसदेहुजनिताता॥ भामोहिसबबिधबामबिधाता
जोएतेहुदुषमोहिजिआवा। अजहुंकोजानेकातेहिभावा

पितुआयसभूषनबसनतानतजेरघुबीर॥
बिषमउहर्षनहृदयकछुपहिरेबलकलचीर ६५

टी॰ रा॰ अ॰ ८७

मुखप्रसन्नमनरंगनरोषू। सबकरसबबिधिकरपरितोषू।
चलेबिपनसुनिसियसंगलागी। रहइनरामचरणअनुरागी
सुनतहिंलषनचलेउठिसाथा। रहहिंनजतनकियेरघुनाथा
तबरघुपतिसबहीसिरुनाई। चलेसंगसियअरुलघुभाई
रामलषनसियबनहिंसिधाए। गइउनसंगनप्रानपठाए॥
येउसबभाइन्हआंखिनआगे। तउनतजातनप्रानअभागे
मोहिनलाजनिजनेहुनिहारी। रामसरिससुतमैंमहतारी
जिअइमरइभलभूपतिजाना। मोरहृदयसतकुलिससमाना

कौसल्याकेबचनसुनिभरतसहितरनिवास।

टी॰
रा॰ अ॰
८८

ब्याकुलबिलपतराजगृहमानहुंसोकनिवासु६६

बिलपहिंबिकलभरतदोउभाई । कौशिल्यालियेहृदयलगाइ
भांतिअनेकभरतसमुझाए । कहिबिबेकपरबचनसुनाए
भरतहुंमातुसकलसमुझाई । कहिपुरानश्रुतिकथासुहा
छलबिहीनसुचिसरलसुबानी । बोलेभरतजोरिजुगपानी॥
जेअघमातुपितासुतमारे। गाइगोठमहिसुरपुरजारे।
जेअघतियबालकबधकीन्हे । मीतमहीपतिमाहुरदीन्हे
जोपातकउतपातकअहहीं । करमबचनमनभवकविक
तेपातकमोहिहोहुबिधाता । जौंयहुहोयमोरमतमाता

दो॰जेपरिहरिहरिहरचरनभजहिंभूतगनघोर॥
तिन्हकइगतिमोहिदेउबिधिजौंजननीमतमोर६७

बेचहिंबेदधरमदुहिलेहीं। पिसुनपरायपापकहिदेहीं
कपटीकुटिलकलहप्रियक्रोधी बेदबिदूषकबिस्वबिरोधी
लोभीलंपटलोलुपचारा॥ जेताकहिंपरधनपरदारा
पाउंमैंतिन्हकैगतिघोरा जौंजननीयहसंमतमोरा
जेनहिंसाधुसंगअनुरागे॥ परमारथपथबिमुखअभा
जेनभजहिंहरिनरतनुपाई। जिन्हहरिहरसुजससोहा
तजिश्रुतिपंथबामपथिचलहीं बंचकबिरचिबेषजगछल
तिन्हकैगतिमोहिशंकरदेऊ । जननीजौंयहजानवभेऊ॥

दो॰मातुभरतकेबचनसुनिसांचेसरलसुभाय॥
कहतिरामप्रियतातुमसदाबचनमनकाय१६८॥

सदाप्रानतेंप्रानतुम्हारे * ॥ तुमरघुपतिहिप्रानतेंप्यारे
बिधुबिषचवईस्रवइहिमुआगी होइबारिचरबारिबिरागी
भएज्ञानबरुमिटइनमोहू ॥ तुमरामहिंप्रतिकूलनहोहू
मततुम्हारयेजोजगकहहीं ॥ सोसपनेहुसुखसुगतिनलहहीं
असकहिमातुभरतहियलाए थनपयस्रवहिंनयनजलछाये
करतबिलापबहुतएहिभांती बैठेहिंबीतगईसबराती * ॥
बामदेवबसिष्ठतबआए। सचिवमहाजनसकलबुलाए
मुनिबहुभांतिभरतउपदेसे। कहिपरमारथबचनसुदेसे

दो· तातहृदयधीरजधरहुकरहुजोअवसरआजु
उठेभरतगुरुबचनसुनिकरनकहेउसबकाजु १६९

नृपतनुबेदबिदितअन्हवावा। परमबिचित्रबिमानबनावा
गहिपदभरतमातुसबराखी। रहींरानिदरसनअभिलाषीं
चंदनअगरभारबहुआये ॥ अमितअनेकसुगंधसुहाये।
सरजूतीररचिचिताबनाई। जनुसुरपुरसोपानसुहाई।
एहिबिधिदाहक्रियासबकीन्ही बिधिवतन्हायतिलांजलिदीन्ही।
सोधिसुमृतिसबबेदपुराना कीन्हभरतदशगात्रबिधाना
जहँजसमुनिबरआयसुदीन्हा तहँतससहसभांतिसबकीन्हा
भएबिशुद्धदियेसबदाना ॥ धेनुबाजिगजबाहननाना।

दो· सिंहासनभूषनबसनअन्नधरनिधनधाम ॥
दियेभरतलहिभूमिसुरभेपरिपूरनकाम १७०

पितुहितभरतकीन्हजसकरनी सोमुखलाखजाइनहिंबरनी

टी·
रा॰प्र॰
८९

सुदिनसोधिमुनिबरतबआए॥ सचिवमहाजनसकलबुला
बैठेराजसभासबजाई॥ पठयेभरतबोलिदोउभाई
भरतबसिष्ठनिकटबैठारे नीतिधरममयबचनउचारे
प्रथमकथासबमुनिबरबरनी कैकइकुटिलकीन्हिजसक
भूपधर्मब्रतसत्यसराहा॥ जेहितनुपरिहरिप्रेमनिबाहा
कहतरामगुनसीलसुभाऊ सजलनयनपुलकेउमुनिराऊ
बहुरिलखनसियप्रीतिबखानी सोकसनेहमगनमुनिज्ञानी।

दो॰ सुनहुभरतभावीप्रबलबिलषिकहेउमुनिनाथ।
हानिलाभजीवनमरनजसअपजसबिधिहाथ ७१

टी॰
रा॰ प्र॰
५०

असबिचारकेहिदेइयदोषू ब्यर्थकाहिपरकीजियरोषू
तातबिचारकरहुमनमाँही सोचजोगदसरथनृपनाहीं
सोचियबिप्रजोबेदबिहीना तजनिजधरमबिषयलयली
सोचियनृपतिजोनीतिनजाना जेहिनप्रजाप्रियप्रानसमा
सोचियबयसकृपनधनवानू जोनअतिथिशिवभगतिसु
सोचियसूद्रबिप्रअपमानी मुखरमानप्रियज्ञानगुमानी
सोचियपुनिपतिबंचकनारी कुटिलकलहप्रियइच्छाचा
सोचियबटुनिजब्रतपरिहरई जोनहिंगुरुआयसअनुस

सोचियगृहीजोमोहबसकरइकरमपथत्याग।
सोचियजतीप्रपंचरतबिगतबिबेकबिराग ७२

बैखानससोइसोचनजोगू। तपबिहाइजेहिभावइभो
सोचियपिसुनअकारनक्रोधी जननिजनकगुरुबंधुबिरो

सबबिधिसोचयपरअपकारी निजतनुपोषकनिरदयभारी
सोचनीयसबहींबिधिसोई। जोनछाड़छलहरिजनहोई
सोचनीयनहिंकोसलराऊ भुवनचारिदशप्रगटप्रभाऊ
भयेउनअहइनअबहोनिहारा भरतभूपजसपितातुम्हारा
बिधिहरीहरसुरपतिदिशिनाथा बरनहिंसबदशरथगुनगाथा

कहहुतातकेहिभांतिकोउकरिहिबड़ाईतासु।
रामलषनतुमशत्रुहनसरिससुअनसुचिजासु

सबप्रकारभूपतिबड़भागी बादिबिषादकरियतेहिलागी
एहुसुनिसमुझिसोचपरिहरहू सिरधरराजरजायसुकरहू
रायराजपदतुमकहँदीन्हा पिताबचनफुरचाहियकीन्हा
तजेरामजेहिबचनहिंलागी तनुपरिहरेउरामबिरहागी
नृपहिंबचनप्रियनहिंप्रियप्राना करहुतातपितुबचनप्रवाना
करहुसीसधरिभूपरजाई। हइतुमकहँसबभांतिभलाई
परसुरामपितुअग्याराखी मारीमातुलोगसबसाखी
तनयययातिहियौवनदयेऊ पितुअग्याअघअजसनभएऊ

अनुचितउचितबिचारुतजिजेपालहिंपितुबैन
तेभाजनसुखसुजसकेबसहिंअमरपतिअैन७४

अवसनरेशबचनफुरकरहू पालहुप्रजासोकपरिहरहू
सुरपुरनृपपाइहिपरितोषू तुमकाहँसुकृतसुजशनहिंदोषू।
बेदबिहितसंमतसबहीका जेहिपितुदेइसोपावइटीका
करहुराजपरिहरहुगलानी मानहुमोरबचनहितजानी

सुनिसुखलहबरामबैदेही अनुचितकहबनपंडितके
कौशल्यादिसकलमहतारी तेउप्रजासुखहोंहिंसुखारी
प्रेमतुम्हाररामकरजानिहि सोसबबिधितुमसनभलमा
सौंपेउराजरामकेआयें * ॥ सेवाकरेहुसनेहसुहाये * ॥

दो॰ कीजियगुरुआयसुअवसिकहहिंसचिवकरजोरि
रघुबरआयेउचितजसतसतबकरबबहोरि २५५॥

कौशिल्याधरिधीरजकहई। पूतपथ्यगुरुआयसुअहई॥
सोआदरिअकरियहितमानी तजिअबिषादकालगतिजा
बनरघुपतिसुरपुरनरनाहू तुमएहिभांतितातकदराहू
परिजनप्रजासचिवसबअंबा। तुमहीसुतसबकहँअवलं
लखिबिधिबामकालकठिनाई धीरजधरहुमातुबलिजाई
सिरधरिगुरुआयसुअनुसरहू प्रजापालिपुरजनदुखहरहू
गुरुकेबचनसचिवअभिनंदनु सुनेभरतहियहितजनुचं
सुनीबहोरिमातुमृदुबानी। सीलसनेहसरलरससानी

छं॰ सानीसरलरसमातुबानीसुनिभरतब्याकुलभये॥
लोचनसरोरुहस्रवतसींचतबिरहउरअंकुरनये * ॥
सोदशादेखतसमयतेहिबिसरीसबहिसुधिदेहकी
तुलसीसराहतसकलसादरसींवसहजसनेहकी॥
सोरठा। भरतकमलकरजोरिधीरधुरंधरधीरधरि
बचनअमियजनुबोरिदेतउचितउत्तरसबहिं * ॥

मोहिउपदेशदीन्हगुरुनीका। प्रजासचिवसंमतसबहीका॥

मातुउचितधरिआयसुदीन्हा। अवसिसीसधरिचाहौंकीन्हा
गुरुपितुमातुस्वामिहितबानी। सुनिमनमुदितकरिअभलजानी
उचितकिअनुचितकियेबिचारू धरमजाइसिरपातकभारू
तुम्हतौदेहुसरलसिखसोई ॥ जोआचरतमोरभलहोई।
यद्यपियहसमुझतहौंनीके तदपिहोतपरितोषनजीके
अबतुम्हमोरिबिनयसुनिलेहू मोहिअनुहरतसिखावनदेहू
उतरदेउँछमबअपराधू ॥ दुखितदोषगुनगनहिंनसाधू।

दो॰ पितुसुरपुरसियरामबनकरनकहहुमोहिराज
एहितेंजानहुमोरहितकैआपनबड़काज १७७॥

हितहमारसियपतिसेवकाई सोहरिलीन्हमातुकुटिलाई॥
मैंअनुमानिदीखमनमाहीं। आनउपायमोरहितनाहीं॥
सोकसमाजराजकेहिलेखे लखनरामसियपदबिनुदेखे
बादिबसनबिनुभूषनभारू बादिबिरतिबिनुब्रह्मबिचारू
सरुजसरीरबादिबहुभोगा। बिनुहरिभगतिजायजपयोगा॥
जायजीवबिनुदेहसुहाई। बादिमोरसबबिनुरघुराई॥
जाउंरामपहँआयसुदेहू ॥ एकहिआंकमोरहितएहू॥
मोहिनृपकरिभलआपनचहहू सोउसनेहजड़ताबसकहहू

दो॰ कैकेईसुअकुटिलमतिरामबिमुखगतलाज
तुमचाहतसुखमोहबसमोहिसेअधमकेराज ७८

कहौंसांचसबसुनिपतियाहू चाहियधरमसीलनरनाहू
मोहिराजहठिदेइहहुजबहीं। रसारसातलजाइहितबहीं

री॰
रा॰ अ॰
५३

मोहिसमानकोपापनिवासू जेहिलगिसीयरामबनबा
रायरामकहँकाननदीन्हा। बिछुरतगवनअमरपुरकी
मैंसठसबअनरथकरहेतू। बैठबातसबसुनउँसचे
बिनुरघुबीरबिलोकिअबासू रहेप्रानसहिजगउपहास
रामपुनीतबिषयरसरूषे। लोलुपभूमिभोगकेभूषे।
कहिंलगिकहौंहृदयकठिनाई निदरिकुलिसजेहिलहीब

कारनतेंकारजकठिनहोइदोषनहिंमोर ॥
कुलिसअस्थितेंउपलतेंलोहकरालकठोर १७९

कैकेईभवतनुअनुरागे ॥ पावरप्रानअघाइअभागे।
जौंप्रियबिरहप्रानप्रियलागे देखबसुनबबहुतअबआ
लषनरामसियकहुँबनदीन्हा पठइअमरपुरपतिहितकी
लीनबिधवपनअपजसआपू दीन्हेउप्रजाहिंसोकसंता
मोहिदीन्हसुखसुजससुराजू कीन्हकैकईसबकरका
एहितेंमोरकाहअबनीका तेहिपरदेनकहहुतुमटी
कैकईजठरजनमिजगमाहीं यहमोहिकहँकछुअनुचि
मोरिबातसबबिधिहिंबनाई प्रजापाँचकतकरहुसहा

ग्रहग्रहीतपुनिबातबसतेहिपुनिबीछीमार॥
ताहिपियाइयबारुनीकहहुकवनउपचार १८०

कैकइसुवनजोगुजगजोई चतुरबिरंचिदीन्हमोहिसो
दशरथतनयरामलघुभाई दीन्हमोहिबिधिबादिबड़ा
तुमसबकहहुकढ़ावनटीका रायराजुसबहीकहँनीका।

उतरु देउँ केहि बिधि केहि केही कहहु सुषेन यथा रुचि जेही
मोहि कुमातु समेत बिहाई कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई
मो बिनु को सचराचर माहीं जेहि सिय राम प्रानप्रिय नाहीं
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू अदिनु मोर नहिं दूषन काहू
संसय सील प्रेम बस अहहू सबइ उचित सब जो कछु कहहू

राम मातु सुठि सरल चित मो पर प्रेम बिसेषि॥
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देषि १८

गुर बिबेक सागर जग जाना तिन्हहिं बिस्व कर बदर समाना
मो कहँ तिलक साज सजु सोई भये बिधि बिमुख बिमुख सब कोई।
परिहर राम सीय जग माहीं कोउ न कहिहि मोर मति नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुष मानी अंतहु कीच तहाँ जहँ पानी।
डरु न मोहि जगु कहिहि कि पोचू परलोकहु कर नाहिन सोचू
एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहि लगि भे सिय राम दुषारी
जीवन लाहु लषन भल पावा सब तजि राम चरन मन लावा
मोर जनम रघुबर बन लागी झूठ काह पछिताउं अभागी।

आपनि दारुन दीनता कहउं सबहि सिर नाइ॥
देखे बिनु रघुनाथ पद जिअ कै जरनि न जाइ॥

आन उपाव मोहि नहिं सूझा को जिअ कै रघुबर बिन बूझा
एकहि आंक इहै मन माहीं प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी भइ मोहि कारन सकल उपाधी
तदपि सरन सन्मुख मोहि देखी छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी

टी॰
रा॰ ग्र॰
९५

सीलसकुचसुठिसरलसुभाऊ कृपासनेहसदनरघुराऊ॥
अरिहुकअनभलकीन्हनरामा। मैंसिसुसेवकजद्यपिबामा॥
तुम्हपैपांचमोरभलमानी। आयसुआशिषदेहुसुबानी
जेहिसुनिबिनयमोहिजनुजानी आवहिंबहुरिरामरजधानी।

दो॰ जद्यपिजनमकुमाततें मैंसठुसदासदोष॥
आपनजानिनत्यागिहैं मोहिरघुबीरभरोस १८३॥

भरतबचनसबकहँप्रियलागे रामसनेहसुधाजनुपागे॥
मातुसचिवगुरपुरनरनारी॥ सकलसनेहबिकलभएभारी
भरतहिंकहहिंसराहिसराहीं रामप्रेममूरतितनुआहीं॥
लोगबियोगबिषमबिषदागे मंत्रसबीजसुनतजनुजागे॥
तातभरतअसकाहेनकहहू। प्रानसमानरामप्रियअहहू॥
जोपाँवरुअपनीजड़ताई॥ तुम्हहिंसुगायमातुकुटिलाई
सोसठकोटिकपुरुषसमेता बसहिंकल्पसतनरकनिके
अहिअघअवगुननहिंमनिगहई हरइगरलदुखदारिददहई॥

दो॰ अवसिचलिअबनरामजहँभरतमंत्रभलकीन्ह।
सोकसिंधुबूड़तसबहिं तुमअवलंबनदीन्ह १८४॥

भासबकेमनमोदनथोरा॥ जनुघनधुनिसुनचातकमोरा
चलतप्रातलखिनिरनउनीके भरतप्रानप्रियभेसबहीके
मुनिहिबंदिभरतहिसिरनाई चलेसकलघरबिदाकराई
धन्यभरतजीवनजगमाहीं सीलसनेहसराहतजाहीं॥
कहहिंपरस्परभाबड़काजू सकलचलैकरसाजहिंसाजू

जेहिराखहिंघररहुरखवारी। सोजानइजनुगरदनमारी।

कोउकहरहनकहियनहिंकाहू कौनचहइजगजीवनलाहू

दो॰ जरउजोसंपतिसदनसुखहृदयमातुपितुभाइ
सन्मुखहोतजोरामपदकरइनसहजसुहाइ १८५।

घरघरसाजहिंबाहननाना हरषुहृदयपरभातपयाना
भरतजाइघरकीन्हबिचारू नगरुबाजिगजभवनभंडारू
संपतिसबरघुपतिकैआहीं जोबिनुजतनचलउंतजिताहीं
तौपरिनामनमोरिभलाई॥ पापसिरोमनिसाँइदोहाई॥
करइस्वामिहितसेवकुसोई दूषनकोटिदेइकिनकोई॥
असबिचारिसुचिसेवकबोले जेसपनेहुनिजधरमनडोले॥
कहिसबमरमुधरमुभलभाषा जोजेहिलायकसोतहँराखा
करिसबजतनराखिरखवारे राममातुपहँभरतसिधारे

दो॰ आरतजननीजानसबभरतसनेहसुजान॥
कहेउबनावनपालकीसजनसुखासनजान १८६

चक्कचक्किजिमिपुरनरनारी चहतप्रातउरआरतभारी॥
जागतसबनिसिभएउबिहाना भरतबोलाएसचिवसोजान
कहेउलेहुसबतिलकसमाजू बनहिंदेवमुनिरामहिंराजू॥
बेगिचलहुसुनिसचिवजुहारे तुरततुरगरथनागसवाँरे॥
अरुंधतीअरुअगनिसमाजू रथचढ़िचलेप्रथममुनिराजू
बिप्रबृंदचढ़िबाहननाना॥ चलेसकलतपतेजनिधाना
नगरलोगसबसजिसजिजाना। चित्रकूटकहँकीन्हपयाना॥

किये कौ कै
ग्रहतें बिचार
संधुत दग
गमन भरत के
भरत कौ ग्र
२८ लौं०
कैई भरत कू
कै कमंत तू
राम दर्स बंध
२७ दों।
९ छं। ११ सौं
२८ बौ।
पं बिं ८

भक्ती गांत है
यातं यति लग
कौ बुलाय कै
कहत भये
भक्तों संप्राप्त
कौ रचांनी
कौ नाई उमते
कौ होंडुमन
पयादे आरे हैं
हे यश लन पत्र के

दौ।
रा। प्र।
५८

शिबिकासुभगनजाहिंबषानी चढिचढिचलतभईसबरानी

सौंपिनगरसुचिसेवकनसादरसबहिंचलाइ॥
सुमिरिचरनसियरामतबचलेभरतदोउभाइ १८७

रामदरसबससबनरनारी जनुकरिकरनिचलेतकिबा
बनसियरामसमझमनमाहीं सानुजभरतपयादेहिंजाहीं
देषिसनेहलोगअनुरागे॥ उतरिचलेहयगयरथत्यागे
जाइसमीपराषिनिजडोली राममातुमृदुबानीबोली॥
तातचढहुरथबलिमहतारी होइहिप्रियपरिवारुदुखारी
तुम्हरेचलतचलिहिसबलोगू सकलसोककृसनहिंमगजो
सिरधरुबचनचरनसिरनाई रथचढिचलतभएदोउभाई
तमसाप्रथमदिवसकरिबासू दूसरगोमतितीरनिवासू॥

पयअहारफलअसनएकनिसिभोजनसबलोग
करतरामहितनेमब्रतपरिहरभूषनभोग १८८

सईतीरबसिचलेबिहाने॥ शृंगबेरपुरसबनियराने॥
समाचारसबसुनेनिषादा हृदयबिचारिकरैसबिषादा
कारनकवनभरतबनजांहीं हैकछुकपटभावमनमाहीं
जौपैजियनहोतिकुटिलाई तौकतलीन्हसंगकटकाई॥
जानहिंसानुजरामहिंमारी। करौंअकंटकराजसुखारी
भरतनराजनीतिउरआनी तबकलंकअबजीवनहानी
सकलसुरासुरजुरहिंजुझारा रामहिंसमरनजीतनहारा
काआचरजुभरतअसकरहीं नहिंबिषबेलिअमियफलफरहीं

दौ कि चलत हैं
हैं भरत राम
चंद्र की मनमत
जातुहैं लक्ष्मण
भरत हीं निष
परमान रषाय
अरुकौ बिरह्या
हि मातु अरुसीय
स्य घतलाख
किये कौ भाव
कि कौ राति नगा
गगरै अरुन
निषाद हिलाग
निषाद कौं
छपर हाथ ध
रै भरत गंगा
नौ पर्कृपि
स्नान सब

मिलकरि
कहिनोजू
ज्ञातभयेमुं
गारिविधिक
रिसितासित
जलकोभाव
किसरस्वती
कोजलजल
गुप्तहैतहँ
भरतगनहुँ
कहिनासों
कहतैहैंकि
किधर्मकी

असबिचारिगुहग्यातिसनकहेउसजगसबहोहु
हथवाँसहुबोरहुतरनिकीजियघाटारोहु १८९

होहुसंजोयलरोकहुघाटा। ठाटहुसकलमरइकेठाटा॥
सनमुषलोहभरतसनलेऊँ। जिअतनसुरसरिउतरनदेऊँ।
समरमरनपुनिसुरसरितीरा रामकाजछिनुभंगशरीरा।
भरतभाइनृपमैंजननीचू। बड़भागअसपाइयमीचू॥
स्वामिकाजकरिहउँरनरारी धराधवलिहउँभुवनदशचारी
तजउँप्रानरघुनाथनिहोरे दुहुँहाथमुदमोदकमोरे॥
साधुसमाजनजाकरलेषा रामभगतमहँजासुनरेषा।
जायजियतजगसोमहिभारू जननीजोबनबिटपकुठारू

बिगतबिषादनिषादपतिसबहिंबढ़ाइउछाहु।
सुमिरिराममांगेउतुरततरकसधनुषसनाहु १९०

बेगहुभाइहुसजहुसंजोऊ। सुनिरजायकदरायनकोऊ
भलेहिंनाथसबकहहिंसहरषा एकहिएकबढ़ावैंकरषा।
चलेनिषादजोहारिजोहारी। सूरसकलरनरूचैरारी॥
सुमिरिरामपदपंकजपनहीं भाथाबांधिचढ़ायेन्हिधनुहीं
अंगुरीपहरिकूंड़सिरधरहीं फरसाबांससेलसमकरहीं
एककुसलअतिओड़नषांडे कूदहिंगगनमनहुंछितिछांड़े
निजनिजसाजसमाजबनाई गुहरावतहिंजुहारेजाई॥
देखिसुभटसबलायकजाने लइलइनामसकलसनमाने

भाइहुलावहुधोषजनिआजकाजबड़मोहि॥

मागिभीषमां
गनहोंनाकोभव
जनमसेवकाई
धर्मजोकेवल
स्वामीनेघन
सोंपबकघानई
तीर्थादिहेतं
कोप्रयोगनगर
निजधर्मबतीको
त्यागिकहियेता
होनप्रानवदैनेंधं

दो॰
रा॰ अ॰
९९

गेहनअभाजम
तैअभ्रबनारमें
सुनिऋलिहैभल
रघुवीरनीरम
वेमबालकबाली
बाक्रमतीलाप
परितविडपार
कैकमहैपरठ
हमसबकी
रामभक्तिरह
मेजठेउवा
स्वामयगनेश
कीरविकौशल
हैसभयौ
सकउम

सुधावसुधा
की राम भांति
मिलत है उस
की केवल की
गुरु वाक्य
मानते उचित
प्रीति कैसे प्रग
[illegible] वर
केवल [illegible]
लोकिकवल
[illegible]
मर [illegible]
सबै कोउ
गोनवान

सुनिसरोषबोलेसुभट बीरअधीरनहोहि ॥

रामप्रतापनाथबलतोरे ॥ करहिंकटकबिनुभटबिनुघो
जीवतपाँवनपाछेंधरहीं ॥ रुंडमुंडमयमेदनीकरहीं॥
दीषनिषादनाथभलटोलू। कहेउबजाउजुझाऊढोलू॥
एतनाकहतछींकभइबाँए कहेउसगुनिअन्हषेतसुहाए
बूढ़एककहसगुनबिचारी भरतहिमिलिअनहोइहिरारी
रामहिंभरतमनावनजाहीं। सगुनकहइअसबिग्रहनाहीं
सुनिगुहकहइनीककहबूढ़ा सहसाकरिपछिताहिंबिमूढ़ा
भरतसुभाउशीलबिनुबूझें। बड़िहितहानिजानिबिनजूझें।

दो॰ गहहुघाटभटसिमिटसबलेऊँमरममिलिजाइ
बूझिमित्रअरिमध्यगतितबतसकरिहौंआइ १९२

लषबसनेहसुभायसुहाये बैरुप्रीतिनहिंदुरइँदुराए॥
असकहिभेंटसंजोवनलागे कंदमूलफलषगमृगमांगे
मीनपीनपाठीनपुराने ॥ भरिभरिभारकहारन्हआने॥
मिलनसाजसजिमिलनसिधाए मंगलमूलसगुनसुभपाए॥
देषिदूरितेंकहिनिजनामू॥ कीन्हमुनीसहिंदंडप्रनामू॥
जानिरामप्रियदीन्हअसीसा भरतहिंकहेउबुझाइमुनीशा
रामसखासुनिस्यंदनत्यागा चलेउतरिउमगतअनुरागा॥
गाँवजातिगुहँनाँवसुनाई ॥ कीन्हजोहारमाथमहिलाई

दो॰ करतदंडवतदेषितेहिभरतलीन्हउरलाइ ॥
मनहुँलषनसनभेंटभइप्रेमनहृदयसमाइ १९३॥

मोंतबकाहे
कौसलभकी
है शुरु प्रताप
रविहं संगतै है
हर [illegible] भाहे
प्रीति भई भरत
कही था पलमै
क्यों स्पष्ट किये
धर्मशास्त्र मों

टी॰
रा॰ प्र॰
२००

दोष लिखते
सोभा की अरु
कौन दुखन
कौन सियाराम
केवल सियाराम
जनगाहु की
जाउब माहु
कुमति दृश्यादि
कुमति सबनि
कौ पुत्र कौ राज
कहा तै प्रण
को कल्यान पद
मद्ध हमारे
हनु राजलाभ
सानस्ला

क्षनाशक
कलहकुका
दुभ्रुलवाना
कोहूनाको
उन्मादनतंत्र
वनायाजीतें
विरोधहेतु
हैताकीग्राम
वाघरमांगाइ.
दूतेहुंतातेंश्र
श्रुमरती
अपनेवारपद
नरदेवीरहतहैं
सोपंथअवधमां
गाडाहेरातिको
गाड़कोकुमत
मयपातेरामकन
गयनकोहठ.
समनअहतप
वासपतेभाषम
जूकोबनतिकार
कोएहिअथधमों
कुमंत्रगाड़वोहै

भेटतभरतताहिअतिप्रीती। लोगसिहाहिंप्रेमकेरीती॥
धन्यधन्यधुनिमंगलमूला। सुरसराहितेहिबरषहिंफूला।
लोकबेदसबभांतिहिनीचा। जासुछांहछुइलेइअसींचा
तेहिभरिअंकरामलघुभ्राता। मिलतपुलकपरिपूरितगाता।
रामरामकहिजेजंमुहाहीं॥ तिनहिनपापपुंजसमुहाहीं
यहितौरामलाइउरलीन्हा। कुलसमेतजगुपावनकीन्हा।
करमनासजलसुरसरिपरई तेहिकोकहहुसीसनहिंधरई
उलटानामजपतजगजाना॥ बालमीकभएब्रह्मसमाना॥

दो॰ स्वपचसबरषसजमनजड़पांवरकोलकिरात
कहतरामपावनपरमहोतभुवनबिख्यात १९४॥

नहिंअचरजजुगजुगचलआई केहिनदीन्हरघुबीरबड़ाई॥
रामनाममहिमासुरकहहीं सुनिसुनिअवधलोकसुखलहहीं
रामसखहिंमिलभरतसप्रेमा पूछीकुसलसुमंगलषेमा।
देषिभरतकरसीलसनेहू॥ भानिषादतेहिसमयबिदेहू
सकुचसनेहमोदमनबाढ़ा॥ भरतहिंचितवतएकटकठाढ़ा
धरिधीरजपदबंदिबहोरी॥ बिनयसप्रेमकरतकरजोरी
कुशलमूलपदपंकजपेषी मैंतिहुंकालकुसलनिजपेषी
अबप्रभुपरमअनुग्रहतोरे। सहितकोटिकुलमंगलमोरे

दो॰ समुझिमोरिकरतूतिकुलप्रभुमहिमाजियजोइ
जोनभजइरघुबीरपदजगबिधिबंचितसोइ १९५

कपटीकायरकुमतिकुजाती लोकबेदबाहरसबभांती॥

यें॰
रा॰ अ॰
१०१

सीलदेखतै
हमारेसुखहेतु
यहप्रयोगकियो
ताकोफलसब
जगमोबारह
बाटपड़ोमोह
हैं१ भय३
शोच४ हानि५
ग्लानि६ क्षुधा७
तृषा८ छोभ९
मद१० अपमा
अपकीर्ति१२
बारहबाटको
उपरत।

हेतु सबप्र
कीन्ह ताको
उनि पटु नाई
श्री भरत मुनि
कीन्हें मिटै
श्री राम की
श्री मन्त उब
देखा प्रयोग
भरत जानि कै
पुनः गाहि
श्री धर्मा पर
मैं नहिं लि

बधबासीसा
हो तहैं एक
भरत नाहीं जो
त्रिय भोगोंनि
उठाय नेका ध
सत पर बाह
कीन्हें ग्रह बा
तबका कहैं
जगमें प्रगट होय

दी.
रा. ग्र.
१०२

रामकीन्हआपनजबहीतें। भयेभुवनभूषनतबहीतें।
देषिप्रीतिसुनिबिनयसुहाई। मिलेउबहोरिभरतलघुभाई।
कहिनिषादनिजनामसुबानी। सादरसकलजोहारीरानी।
जानिलषनसमदेहिंअसीसा। जिअहुसुखीसयलाखबरीसा।
निरषिनिषादनगरनरनारी। भयेसुखीजनुलषननिहारी।
कहहिंलहेउएहिजीवनलाहू। भेंटेउरामभद्रभरिबाहू+॥
सुनिनिषादनिजभागबड़ाई। प्रमुदितमनलैचलेउलवाई।

सनकारेसेवकसकलचलेस्वामिरुषपाइ+॥
घरतरुतरसरबागबनबासबनायेन्हिजाइ १९६

सृंगबेरपुरभरतदीषजब। भेसनेहसबअंगसिथलतब।
सोहतदियेनिषादहिलागू। जनुतनुधरेबिनयअनुरागू।
एहिबिधिभरतसेनसबसंगा। दीषजायजगपावनिगंगा।
रामघाटकहँकीन्हप्रनामू। भामनमगनुमिलेजनुरामू।
करहिंप्रनामनगरनरनारी॥ मुदितब्रह्ममयबारिनिहारी।
करिमज्जनमागहिंकरजोरी। रामचंद्रपदप्रीतिनथोरी॥
भरतकहेउसुरसरितवरेनू। सकलसुखदसेवकसुरधेनू।
जोरिपानिबरमांगउंएहू। सीयरामपदसहजसनेहू।

एहिबिधिमज्जनभरतुकरिगुरुअनुसासनपाइ
मातुनहानीजानिसबडेराचलेलिवाइ १९७।

जहँतहँलोगन्हडेराकीन्हा। भरतसोधुसबहीकरलीन्हा।
गुरुसेवाकरिआयसुपाई। राममातुपहँगेदोउभाई॥

दंड ध्रुव दिन सुन
स्नाता जे पकवाई
किए जते रहे
काम न लल चाऊ
न्हन की का कैं
कमांतिनबाधा
रहित राम कि
काम करत
मग॥ २१८॥

बरनचापिकहिकहिमृदुबानी जननीसकलभरतसनमानी
भाइहिसौंपिमातुसेवकाई आपुनिषादहिलीन्हबुलाई
चलेसखाकरसोंकरजोरे। सिथिलसरीरसनेहनथोरे॥
पूछतसखहिंसोठाउँदेषाऊ नेकुनयनमनजरनिजुड़ाई॥
जहँसियरामलषननिसिसोए कहतभरेजललोचनकोए॥
भरतबचनसुनिभयउबिषादू तुरततहाँलयगयउनिषादू

जहँसिंसुपापुनीततररघुबरकियबिश्रामु॥
अतिसनेहसादरभरतकीन्हेउंदंडप्रनामु १९८।

कुससाथरीनिहारिसुहाई कीन्हप्रनामुप्रदच्छिनजाई॥
चरनरेखरजआँखिन्हलाई। बनइनकहतप्रीतिअधिकाई
कनकबिंदुदुइचारकदेषे। राषेसीससीयसमलेषे॥
सजलबिलोचनहृदयगलानी कहतसखासनबचनसुबानी।
श्रीहतसीयबिरहदुतिहीना जथाअवधनरनारिमलीना
पिताजनकदेउपटतरकेही करतलभोगुजोगुजगजेही॥
ससुरभानुकुलभानुभुआलू जेहिसिहातअमरावतिपालू
प्राननाथरघुनाथगोसांई। जोबड़होतसोरामबड़ाई।

टी· रा· अ· १०३

पतिदेवतासुतीयमनिसीयसाथरीदेष ।।४।।
बिहरतहृदउनहहरिहरपबितेंकठिनबिशेष॥

लालनजोगुलषनलघुलोने भेनभाइअसअहहिंनहोने
पुरजनप्रियपितुमातुदुलारे सियरघुबीरहिप्रानपियारे
मृदुमूरतिसुकुमारसुभाऊ तातबाउतनलागनकाऊ

तेबनबसहिंबिपतसबभांती निदरेकोटिकुलिसएहिछा
रामजनमिजगकीन्हउजागर रूपसीलसुषसबगुनसा
पुरजनपरिजनगुरपितुमाता रामसुभावसबहिंसुषदा
बैरिउरामबड़ाइकरहीं ॥ बोलनमिलनबिनयमनहर
सारदकोटिकोटिसतशेषा ॥ करिनसकहिंप्रभुगुनगनले

दो॰ सुखसरूपरघुबंसमनि मंगलमोदनिधान ॥
तेसोवतकुसडासमहि बिधिगतिअतिबलवान॰

रामसुनादुखकाननकाऊ ॥ जीवनतरुजिमिजोगवइरा
पलकनयनफनिमनिजेहिभांती जोगवहिंजननिसकलदि
तेअबफिरतबिपनपदचारी कंदमूलफलफूलअहा
धिककैकईअमंगलमूला ॥ भइसिप्रानप्रियतमप्रति
मैंधिगधिकअघउदधिअभागी सबउतपातभयेउजेहिला
कुलकलंककरिसृजेउबिधाता साँईद्रोहमोहिकीन्हकुमा
सुनिसप्रेमसमुझावनिषादू । नाथकरिअकतबादबिषा
रामतुमहिंप्रियतुमप्रियरामहिं यहनिरदोषदोसबिधिबा

छं॰ बिधिबामकीकरनीकठिनजेहिमातकीन्हीबावरी ॥
तेहिरातपुनिपुनिकरहिंप्रभुसादरसराहनरावरी॰ ॥
तुलसीनतुमसोरामप्रीतमकहतहौंसौंहेंकिये ॥
परिनामसुमंगलजानिअपनेआनियेधीरजहिये ॥
सोरठा। अंतरजामीरामसकुचसप्रेमकृपायतन ॥
चलिअकरिअबिस्रामयहबिचारदृढ़आनिमन २०१

सखाबचनसुनिउरधरिधीरा बासचलेसुमिरतरघुबीरा।
यहसुधिपाइनगरनरनारी चलेबिलोकनआरतभारी॥
परदछिनाकरिकरहिंप्रनामा। देहिंकैकइहिषोरिनिकामा।
रिभरिबारिबिलोचनलेहीं॥ बामबिधातहिंदूषनदेहीं॥
कसराहहिंभरतसनेहू॥ कोउकहनृपतिनिबाहेउनेहू।
निंदहिंआपुसराहिनिषादहि कोकहिसकइबिमोहबिषादहिं
हिबिधिरातिलोगसबजागा। भाभिनुसारगुदारालागा॥
गुरहिंसुनावचढ़ाइसुहाईं॥ नइनावसबमातुचढ़ाई॥
ंडचारिमहँभासबपारा। उतरिभरततबसबहिंसंभारा

दो॰ प्रातक्रियाकरिमातुसबबंदिगुरुहिंसिरनाइ।
आगेंकियेनिषादगनदीन्हेउकटकुचलाइ २०२॥

कियेउनिषादनाथअगुवाई मातुपालकीसकलचलाई।
साथबुलाइभाइलघुदीन्हा बिप्रनसहितगवनगुरकीन्ह
आपुसुरसरिहिकीन्हप्रनामू सुमिरेसहितलषनसियरामू
वनेभरतपयादेहिंधाये कोतलसंगजाइडोरिआएँ॥
कहहिंसुसेवकबारहिंबारा होइअनाथअश्वअसवारा॥
रामपयादेहिपाउंसिधाये। हमकहँरथगजबाजिबनाए
सिरभरजाउँउचितअसमोरा सबतेंसेवकधरमकठोरा॥
देखिभरतगतिसुनिमृदुबानी सबसेवकगनगरहिंगलानी।

दो॰ भरततीसरेपहरकहँकीन्हप्रवेशप्रयाग।॥
कहतरामसियरामसियउमगिउमगिअनुराग २०३॥

टी॰
रा॰ अ॰
२०५

दो.
रा.अ.
२०६

झलकाझलकतपायनकैसे पंकजकोशओसकनजै
भरतपयादेहिंआयेआजू भयउदुखितसुनिसकल
खबरलीन्हसबलोगनहाये कीन्हप्रनामत्रिबेनीहिंआ
सबिधिसितासितनीरनहाने दियेदानमहिसुरसनमाने
देखतश्यामलधवलहिलोरे पुलकशरीरभरतकरजो
सकलकामप्रदतीरथराऊ। बेदबिदितजगप्रगटप्रभा
मांगउभीखत्यागिनिजधरमू आरतकाहनकरइकुकर
असजियजानिसुदानसुदानी सुफलकरहिंजगजाचक

अरथनधरमनकामरुचि गतिनचहउनिरबान।
जनमजनमरतिरामपद यहबरदानुनआन २०४

जानहुरामकुटिलकरमोही लोगकहहुगुरुसाहिबद्रोही
सीतारामचरनरतमोरे ॥ अनुदिनबढउअनुग्रहतोरे॥
जलदजनमभरिसुरतबिसारउ जांचतजलपबिपाहनडारउ॥
चातकरटनिघटैघटजाई ॥ बढैप्रेमुसबभांतिभलाई॥
कनकहिबानचढइजिमिदाहैं तिमिप्रियतमपदनेमनिबा
भरतबचनसुनिमांझत्रिबेनी। भइमृदुबानीसुमंगलदेनी॥
तातभरततुमसबबिधिसाधू रामचरनअनुरागअगाधू॥
बादिगलानिकरहुमनमांही। तुमसमरामहिंप्रियकोउना

दो. तनपुलकेउहियहरषसुनिबेनिबचनअनुकूल।
भरतधन्यकहिधन्यसुर हरषितबरषहिंफूल २०५

प्रमुदिततीरथराजनिवासी। बैषानसबटुग्रहीउदासी॥

कहहिंपरस्परमिलिदशपांचा भरतसनेहसीलसुठिसांचा
सुनतरामगुनग्रामसुहाये। भरद्वाजमुनिबरपहँआए।
दंडप्रनामकरतमुनिदेषे॥ मूरतिवंतभाग्यनिजलेषे॥
धाइउठाइलाइउरलीन्हे॥ दीन्हअसीसकृतारथकीन्हे
आसनदीन्हनाइसिरबैठे॥ चहतसकुचगृहजनुभजिपैठे
मुनिपूछबकिछुयहबड़सोचू बोलेरिषिलषिसीलसकोचू
सुनहुभरतहमसबसुधिपाई बिधिकरतबपरकिछुनबसाई

तुमगलानिजियजनिकरहुसमुझमातुकरतूति
तातकैकइहिदोसनहिं गईगिरामतिधूति २०६।

यहउकहतभलकहहिनकोऊ लोकबेदबुधसंमतदोऊ॥
ताततुम्हारबिमलजसगाई। पाइहिलोकहुबेदबड़ाई॥
लोकबेदसंमतसबकहई॥ जेहिपितुदेइराजसोलहई॥
राउसत्यव्रततुम्हहिंबोलाई। देतराजसुखधरमबड़ाई॥
रामगवनबनअनरथमूला॥ जोसुनिसकलबिस्वभइसूला
सोभावीबसरानिअयानी करिकुचालअंतहुपछतानी
तहउतुम्हारअलपअपराधू कहइसोअधमअयानअसाधू
करतेहुराजजोतुमहिनदोषू रामहिंहोतसुनतसंतोषू॥

अबअतिकीन्हेउभरतभलतुमहिंउचितमतएहु॥
सकलसुमंगलमूलजगरघुबरबचनसनेहु २०७।

सोतुम्हारधनजीवनप्राना। भूरिभागकोतुमहिसमाना
यहतुम्हारआचरजनताता दसरथसुअनरामप्रियभ्राता

सुनहुभरतरघुपतिमनमाहीं। प्रेमपात्रतुमसमकोउनाहीं॥
लषनरामसीतहिअतिप्रीती। निसिसबतुमहिंसराहत
जानामरमनहातप्रयागा॥ मगनहोंहिंतुमरेअनुरागा॥
तुमपरअससनेहरघुबरके। सुखजीवनजगजसजड़नरके
यहनअधिकरघुबीरबड़ाई। प्रनतपालकुटुंबरघुराई॥
तुमतउभरतमोरमतएहू॥ धरदेहजनुरामसनेहू॥

दो॰ तुमकहँभरतकलंकयहहमसबकहँउपदेश॥
रामभगतिरससिद्धिहितभायहसमउगनेश २०८

नवबिधुबिमलतातजसतोरा। रघुबरकिंकरकुमुदचको
उदितसदाअथइहिंकबहूना। घटिहिनजगनभदिनदिनदू
कोकतिलोकप्रीतिअतिकरही। प्रभुप्रतापरविछबिहिनहर
निशिदिनसुखदसदासबकाहू। ग्रसिहिनकैकेकरतबराह
पूरनरामसुप्रेमपियूषा॥ गुरुअपमानदोषनहिंदूषा॥
रामभगतअबअमीअघाहू। कीन्हेउसुलभसुधाबसुधा
भूपभगीरथसुरसरिआनी॥ सुमिरतसकलसुमंगलखा
दसरथगुनगनबरनिनजाहीं। अधिककहाजेहिसमजगना

दो॰ जासुसनेहसकोचबसरामप्रगटभयआइ॥
जेहरहियनयननकबहुंनिरषेनहींअघाइ २०९

कीरतिबिधुतुमकीन्हअनूपा। जहँबसरामप्रेममृगरूपा॥
तातगलानिकरहुजियजाएं। डरहुदरिद्रहिंपारसपाएं॥
सुनहुभरतहमझूठनकहहीं। उदासीनतापसबनरहहीं॥

सबसाधनकरसुफलसोहावा लषनरामसियदरसनपावा
तेहफलकरफलदरसतुम्हारा सहितप्रयागसुभागहमारा॥
भरतधन्यतुमजसजगजयेऊ कहिअसप्रेममगनमुनिभएऊ
सुनिमुनिबचनसभासदहरखे साधुसराहिसुमनसुरबरखे॥
धन्यधन्यधुनिगगनप्रयागा सुनिसुनिभरतमगनअनुरागा॥

दो॰ पुलकगातहियरामसियसजलसरोरुहनयन
करिप्रनाममुनिमंडलीहिबोलेगदगदबयन २१०॥

मुनिसमाजअरुतीरथराजू साँचिहुसपथअघाइअकाजू
एहिथलजौंकछुकहिअबनाई एहिसमअधिकनअघअधमाई
तुमसर्बग्यकहौंसतिभाऊ उरअंतरजामीरघुराऊ ×॥
मोहिनमातुकरतबकरसोचू नहिंदुखजियजगजानिहिपोचू
नाहिनडरबिगरिहिपरलोकू पितुहिमरनकरमोहिनसोकू
सुकृतसुजसभरिभुवनसुहाए लछमनरामसरिससुतपाए॥
रामबिरहतजितनुछनभंगू भूपसोचकरकवनप्रसंगू ×॥
रामलषनसियबिनुपगपनहीं करिमुनिबेषफिरहिंबनबनहीं

दो॰ अजिनबसनफलअसनमहिसयनडासिकुसपात
बसितरुतरनितसहतहिमआतपबरषाबात २११

एहिदुखदाहदहैदिनछाती भूखनबासरनींदनराती ×॥
एहिकुरोगकरऔषधनाहीं सोधेउसकलबिस्वमनमाहीं
मातुकुमतिबढ़ईअघमूला तेहिहमारहितकीन्हबसूला
कलिकुकाठकरकीन्हकुजंत्रू गाड़िअवधिपढ़िकठिनकुमंत्रु

टी॰ रा॰ अ॰ २०५

मोहिलगियहकुठाटजेहिठाया घालेसिसबजगबारहिबाट
मिटइकुयोगरामफिरिआए बसइअवधनहिंआनउपाए
भरतबचनसुनिमुनिसुखपाई सबहिंकीन्हबहुभांतिबड़ाई
तातकरहुजनिसोचबिशेषी सबदुखमिटहिरामपददेषी

करिप्रबोधमुनिबरकहेउ अतिथिप्रेमप्रियहोहु
कंदमूलफलफूलहमदेहिंलेहुकरिछोहु २१२।

सुनिमुनिबचनभरतहियसोचू भयउकुअवसरकठिनसकोचू
जानिगरुइगुरुगिराबहोरी चरनबंदिबोलेकरजोरी॥
सिरधरिआयसकरिअतुम्हारा परमधरमयहुनाथहमारा
भरतबचनमुनिबरमनभाए सुचिसेवकसिषनिकटबुला
चाहिअकीन्हभरतपहुनाई कंदमूलफलआनहुजाई॥
भलेहिनाथकहितिन्हसिरनाए प्रमुदितनिजनिजकामसिधा
मुनिहिंसोचपाहुनबड़नेवता तसिपूजाचाहियजसिदेवता
सुनिरिधिसिधिअनिमादिकआईं आयसुहोइसोकरहिंगोसाईं

रामबिरहब्याकुलभरत सानुजसहितसमाजु॥
पहुनाईकरिकरहुश्रम कहामुदितमुनिराजु २१३

रिधिसिधिसिरधरिमुनिबरबानी बड़भागिनिआपुहिंअनुमानी
कहहिंपरस्परसिधिसमुदाई अतुलितअतिथिरामलघुभाई
मुनिपदबंदिकरियसोइआजू होहिसुखीसबराजसमाजू।
असकहिरचेउरुचिरगृहनाना जेहिबिलोकिबिलखाहिंबिमाना
भोगबिभूतिभूरिभरराखे॥ देखतजिन्हहिंअमरअभिलाषे

पंक्ति २५ चौ° २५८ सो° १ छं° ३२ दो° ११

दासीदाससाजसबलीन्हे। जोगवततरहहिंमनाहिंमनदीन्हे।
सबसमाजसबबिधिपलमाहीं जेसुखसुरपुरसपनेहुंनाहीं॥
प्रथमहिबासदियेसबकेही। सुंदरसुखदजथारुचिजेही।

बहुरिसपरिजनभरतकहुरिषिअसआयसुदीन्ह।
बिधिबिसमयदायकुबिभवमुनिबरतपबलकीन्ह

मुनिप्रभाउजबभरतबिलोका। सबलघुलगेलोकपतिलोका।
सुषसमाजनहिंजाइबरवानी देषतबिरतिबिसारहिंग्यानी
आसनसयनसुबसनबिताना बनबाटिकाबिहगमृगनाना
सुरनफूलफलअमियसमाना। बिमलजलासयबिबिधबिधाना।
असनपानसुचिअमितअमीसे देषिलोगसकुचातजमीसे।
सुरसुरभीसुरतरुसबहीके। लषिअभिलाषसुरेससचीके
रितुबसंतबहत्रिबिधबयारी सबकहँसुलभपदारथचारी
स्रगचंदनबनितादिकभोगा। देषिहरषबिसमयसबलोगा।

दो· संपतिचकईभरतचकमुनिआयसुखेलवार।
तेहिनिशिआश्रमपिंजराराषेभाभिनुसार २१५

कीन्हनिमज्जनतीरथराजा नाइमुनिहिंसिरुसहितसमाजा।
रिषिआयसुअसीससिराषी। करिदंडवतबिनयबहुभाषी
पथिगतकुशलसाथसबलीन्हे चलेचित्रकूटहिंचितुदीन्हे।
रामसखाकरदीन्हेलागू॥ चलतदेहधरिजनुअनुरागू
नहिंपदत्रानसीसनहिंछाया। प्रेमनेमब्रतधरमुअमाया।
लषनरामसियपंथकहानी। पूछतसषहिंकहतमृदुबानी

कोइनिमज्ज
न अरु धरम
ग्रंथुनवाय
मन २४९ चौ°
प्रातनाथपूला
नकरि मुनि तें
बिदा माँगि
चित्रकूट चल
न भए अरु ग्राम
अग्रगु भरतज
की कोकाहि
कै अरु निषाद
केकांधे हाथ
दीन्हें दृष्टा
जानव अरु मार्ग
सुखवाई प्रभुते
अधिक दाय
महात्म्य अरु

टी· रा· प्र·
१११

देवनको सोच छ
भावजानव पर उ
भरत भक्ति सों
छिद्र नहीं
पायो

नहोइकृत हिप्रभुकागें सुहोतहिछ कीध्वंकैंहु ग्रामहिल्ले भूदुगामन भागेंहुनाथ लोगैप्राहीन कुसुमाकिन्द हिगोश्रु कोशबाध कीप्रभुप्र नेकटपड़ें

ग्मानहींभरत हैकीप्रभुप्राप कोतोजैसेबृद्द सुवाकोबैमालिन कोहैभरतछु रापुकोमिलापकी कछुआसेबारे अंत:करण

श्रीः
रा॰ ग्र॰
१२९

कोईकालविवा लाआदिभ्यापार ध्वीनरचीसु स्वभावबाको रहाप्रबकहै निसक्षमको कोकोहिसिकै यहांदुरबासा भाबप्रभुके

रामबासथलबिटपबिलोके। उरअनुरागरहतनहिंरोके॥
देखिदसासुरबरिसहिंफूला। भइमृदुमहिमगमंगलमूला॥

दो॰ कियेजाइछायाजलदसुखदबहइबरबात।
तसमगभयउनरामकहँजसभाभरतहिजात॥२१६॥

जड़चेतनमगजीवघनेरे॥ जेचितयेप्रभुजिन्हप्रभुहेरे॥
तेसबभयेपरमपदजोगू। भरतदरसमेटाभवरोगू॥
यहबड़िबातभरतकइनाहीं। सुमिरतजिनहिंरामुमनमाहीं॥
बारकरामकहतजगजेऊ। होततरनतारननरतेऊ॥
भरतरामप्रियपुनिलघुभ्राता। कसनहोइमगुमंगलदाता॥
सिद्धसाधुमुनिबरअसकहहीं। भरतहिंनिरखिहरषहियलहहीं॥
देखिप्रभावसुरेसहिसोचू॥ जगभलभलेहिपोचकहुँपोचू॥
गुरसनकहेउकरियप्रभुसोई। रामहिंभरतहिंभेंटनहोई॥

दो॰ रामसकोचीप्रेमबसभरतसप्रेमपयोधि॥
बनीबातबिगरनचहतिकरियजतनछलसोधि॥२१७॥

बचनसुनतसुरगुरुमुसकाने। सहसनयनबिनुलोचनजाने॥
कहगुरुबादिछोभछलछाडू। इहाँकपटकरहोइहिभाँडू॥
मायापतिसेवकसनमाया। करियतउलटिपरइसुरराया॥
तबकछुकीन्हरामरुखजानी। अबकुचालिकरिहोइहिहानी॥
सुनुसुरेसरघुनाथसुभाऊ। निजअपराधरिसाहिंनकाऊ॥
जोअपराधभगतकरकरई। रामरोषपावकसोजरई॥
लोकहुँबेदबिदितइतिहासा। यहमहिमाजानहिंदुरबासा॥

मनकैराघन
हंसिसाकोहि
कौजानीजैसे
कहुंगीग्रह
निषादतेंगुह
मातबनपुर
जाषिनकोश्रा
गमनलानिमत
भायषायोगप
श्रुनदयोगुह
नैपितुसर्वा
गामतानिनहार
सद्भुगापडर
दिनपाछिगुसन
विनयविषयाकि
सबकोबैहश्रा
ध्यानाय
स्वाकाय ते.
गुरुश्रमानिवार
धिंतामनंदवाल
कोनी॥ २८०
रा. ७१
११२

भरतसरसकोरामसनेही जगजपुरामरामजपजेही।

दो॰ मनकुनआनियअमरपतिरघुबरभक्तअकाज।
अयशलोकपरलोकदुखदिनदिनशोकसमाज२१८

सुनसुरेशउपदेशहमारा ॥ रामहिसेवकपरमपियारा।
मानतसुखसेवकसेवकाई सेवककबैरबैरअधिकाई॥
यद्यपिसमनहिंरागनरोषू ॥ गहहिनपापपुन्यगुणदोषू।
कर्मप्रधानबिश्वकरिराषा जोजसकरैसोतसफलचाषा।
तदपिकरहिंसमबिषमबिहारा भक्तअभक्तहृदयअनुसारा।
अगुणअलेखअमानएकरस रामसगुणभएप्रेमभक्तबस
रामसदासेवकरुचिराषी बेदपुराणसाधुसुरसाषी
असजियजानितजहुकुटिलाई करहुभरतपदप्रीतिसुहाई॥

दो॰ रामभक्तपरहितनिरतपरदुखदुखीदयाल।
भक्तसिरोमणिभरततेंजनिडरपहुसुरपाल२१९

सत्यसिंधुप्रभुसुरहितकारी भरतरामआयसअनुहारी
स्वारथबिबसबिकलतुमहोहू भरतदोषनहिंराउरमोहू॥
सुनिसुरबरसुरगुरुहितबानी भाप्रबोधमनमिटीगलानी
बरषिप्रसूनहर्षिसुरराऊ॥ लगेसराहनभरतसुभाऊ॥
इहिबिधिभरतचलेमगुजाहीं दशादेषिमुनिसिद्धसिहाहीं
जबहिंरामकहिलेहिंउसासा उमगतप्रेममनहुंचहुंपासा
द्रवहिंबचनसुनिकुलिसपषाना पुरजनप्रेमनजाइबखाना
बीचबासकरियमुनहिंआए निरखनीरलोचनजलछाए

दो॰ रघुबरबरणिबिलोकिबर बारिसमेतसमाज ॥
होतबिरहबारिधिमगन चढेबिबेकजहाज २२०॥

यमुनतीरतेहिदिनकरबासू । भयेउसमयसबसबहिंसुपा
रातिहिंघाटघाटकीतरणी ॥ आईंअगणितजाइनबरणी
प्रातपारभेएकहिखेवा । तोषेरामसखाकीसेवा॥
चलेअन्हाइनदीहिसिरनाई ॥ साथनिषादनाथलघुभाई॥
आगेमुनिबरबाहनआछे । राजसमाजजायसबपाछे
तेहिपाछेसबबंधुपयादे । भूषणबसनबेषसुठिसादे
सेवकसुहृदसचिवसबसाथा। सुमिरतलषनसीयरघुना
जहंजहंरामबासबिश्रामा तहँतहँकरहिंसप्रेमप्रणाम

दो॰ मगबासीनरनारिसुनि धामकाजतजिधाय ॥
देखिस्वरूपसनेहबस मुदितजनमफलपाय २२१

कहहिंसप्रेमएकइकपाहीं ॥ रामलषनसखिहोहिंकिना
बयबपुबरणरूपसोइआली। सीलसनेहसरससमचाली।
बेषनसोसखिसीयनसंगा। आगेअनीचलीचतुरंगा॥
नहिंप्रसन्नमुखमानसखेदा। सखिसंदेहहोतयहिभेदा॥
तासुतर्कतियगणमनमानी कहहिंसकलतेहिसमनस
तेहिसराहिंबाणीफुरपूजी बोलीमधुरबचनतियदूजी
कहिसप्रेमसबकथाप्रसंगू। जेहिबिधिरामराजरसभंग
भरतहिंबहुरिसराहनलागी। सीलसनेहसुभावसुभागी

दो॰ चलतपयादेखातफल पितादीन्हतजिराज॥

जातमनावनरघुबरहिंभरतसरिसकोआन २२२

भायपभक्तिभरतआचरणू। कहतसुनतदुषदूषणहरणू॥
जोकछुकहियथोरसखिसोई। रामबंधुअसकाहेनहोई+॥
हमसबसानुजभरतहिंदेखें। भयेधन्यजुवतीजनलेखें।
सुनिगुणदेखिदशापछिताहीं। कैकइजननियोगसुतनाहीं।
कोइकहदूषणरानिउनाहिन। बिधिसबभांतिहमहिंजोदाहिन
कहहमलोकबेदबिधिहीना। लघुकुलतियकरतूतिमलीना।
बसहिंकुदेशकुगाँवकुठामा। कहयहदरसपुन्यपरिणामा।
असअनंदअचरजप्रतिग्रामा। जनुमरुभूमिकल्पतरुजामा।

दो· भरतदरसदेखतखुलेमगुलोगन्हकरभाग॥
जनुसिंघलबासिनभयउबिधिबससुलभप्रयाग

टी· रा· ग्र· १२५

निजगुणसहितरामगुणगाथा। सुनतजाहिंसुमिरतरघुनाथा।
तीरथमुनिआश्रमसुरधामा। निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रणामा।
मनहींमनमांगहिंबरएहू। सीयरामपदपदमसनेहू।
मिलहिंकिरातकोलबनबासी। बैषानसबटुजतीउदासी।
करिप्रणामपूछहिंजेहितेही। केहिबनरामलषनबैदेही।
तेप्रभुसमाचारसबकहहीं। भरतहिंदेखिजन्मफललहहीं।
जेजनकहहिंकुसलहमदेखे। तेप्रियरामलषनसमपेखे।
एहिबिधिबूझतसबहिंसुबानी। सुनतरामबनबासकहानी।

तेहिबासरबसप्रातहीं चलेसुमिरिरघुनाथ॥+
रामदरसकीलालसाभरतसरिससबसाथ२२४

मंगलसगुनहोंहिंसबकाहू। फरकहिंसुखदबिलोचनबा
भरतहिंसहितसमाजउछाहू मिलहहिंराममिटहिंदुखदा
करतमनोरथजसजियजाके जाहिंसनेहसुरासबछाके
सिथलअंगपगमगडगिडोलहिं बिह्वलबचनप्रेमबसबोल
रामसखातेहिंसमयदेखावा सैलसिरोमनिसहजसुहा
जासुसमीपसरितपयतीरा सीयसमेतबसहिंदोउबी
देखिकरहिंसबदंडप्रनामा। कहिजियजानकीजीवनराम
प्रेममगनअसराजसमाजू। जनिफिरचलेअवधरघुरा

दो॰ भरतप्रेमतेहिंसमयजस तसकहिसकइनसेष॥
कबिहिअगमजिमिब्रह्मसुखअहममलिनजनेस

सकलसनेहसिथलरघुबरके गएकोसदुइदिनकरढरके
जलथलदेखिबसेनिसबीते कीन्हगवनरघुनाथपिरीते
उहांरामरजनीअवशेषा॥ जागेसीयसपनअसदेखा
सहितसमाजभरतजनुआए नाथबियोगतापतनता
सकलमलिनमनदीनदुखारी देखींसासुआनअनुहारी॥
सुनिसियसपनभरेजललोचन भएसोचबससोचबिमोच
लषनसपनयहनीकनहोई। कठिनकुचाहसुनाइहिको
असकहबंधुसमेतनहाने पूजिपुरारिसाधुसनमा

छं॰ सनमानिसुरमुनिपूजिबैठेउत्तरदिशिदेखतभये॥
नभधूरिखगमृगभूरिभागेबिकलप्रभुआश्रमगये
तुलसीउठेअवलोकिकारनकाहचितसचकितरहे॥

सबसमाचारकिरातकोलनआइतेहिअवसरकहे
सो· सुनतसुमंगलबैनमनप्रमोदतनपुलकभर।
सरदसरोरुहनैनतुलसीभरेसनेहजल ॥ २२६ ॥

बहुरिसोचबसभयेसियरमनू कारनकवनभरतआगमनू॥
एकआइअसकहाबहोरी। सेनसंगचतुरंगनथोरी*॥
सोसुनिरामहिंभाअतिसोचू इतपितुबचउतबंधुसंकोचू
भरतसुभाउसमुझिमनमाहीं प्रभुचितहितथितिपावतनाहीं
समाधानतबभायहजाने। भरतकहेमहुंसाधुसयाने
लखनलखेउप्रभुहृदयखभारू कहतसमयसमनीतिबिचारू
बिनुपूछेंकुछकहउंगोसाईं सेवकसमयनढीठढिठाई॥
तुमसर्बज्ञसिरोमनिस्वामी। आपुनिसमुझिकहौंअनुगामी

दो· नाथसुहृदसुठिसरलचितसीलसनेहनिधान।
सबपरप्रीतिप्रतीतिजियजानियआपुसमान२२७॥

बिषयीजीवपायप्रभुताई। मूढमोहबसहोंहिंजनाई॥
भरतनीतिरतसाधुसुजाना। प्रभुपदप्रेमसकलजगजाना।
तेऊ अराजपदपाई*॥ चलेधरममरजादमिटाई॥
कुटिलकुबंधुकुअवसरताकी जानिरामबनबासएकाकी
करिकुमंत्रमनसाजिसमाजू आएकरैअकंटकराजू॥
कोटिप्रकारकलपिकुटिलाई आएदलबटोरिदोउभाई॥
जोजियहोतिनकपटकुचाली केहिसोहातिरथबाजिगजाली।
भरतहिंदोषदेयकोजाए॥ जगबौराइराजपदपाए॥

टी.
रा. अ.
२२९

ससि गुरुतियगामीनहुषचढेउभूमिसुरजान
लोकबेदतेंबिमुखभाअधमनबेनुसमान २२८।

सहसबाहुसुरनाथत्रिसंकू केहिनराजमददीन्हकलं
भरतकीन्हयहउचितउपाऊ रिपुरिनरंचनराषबका
एककीन्हनहिंभरतभलाई निदरेरामजानअसहाई।
समुझिपरीहिसोआजुबिसेषी समरसरोसरामसुखपे
एतनाकहतनीतिरसभूला रनरसबिटपपुलकिमिस
प्रभुपदबंदिसीसरजराषी बोलेसत्यसहजबलभा
अनुचितनाथनमानबमोरा भरतहमहिंउपचारनथोरा
कहलगिसहियरहियमनमारे नाथसाथधनुहाथहमा

छत्रिजाति रघुकुलजनमरामअनुजजगजान
लातहुंमारेसिरचढ़तनीचकोधूरिसमान२२९

उठकरजोरिरजायसुमांगा मनहुंबीररससोवतजाग
बांधिजटासिरकसकरिभाथा साजिसरासनसायकहा
आजुरामसेवकजसलेऊं। भरतहिंसमरसिषावनदे
रामनिरादरकरफलपाई। सोवहुसमरसेजदोउभाई॥
आइबनाभलसकलसमाजू प्रगटकरौंरिसपाछिलआ
जिमिकरिनिकरदलइमृगराजू लेइलपेटिलवाजिमिबा
तैसहिंभरतहिंसैनसमेता। सानुजनिदरिनिपातउखेत
जोसहायकरशंकरआई तोमारौंरनरामदोहाई॥

अतिसरोषमाषेलषनलषिसुनिसपथप्रमान

सभयलोकसबलोकपतिचाहतभभरिभगान।

जगभयमगनगगनभइबानी लषनबाहुबलबिपुलबषानी
तातप्रतापप्रभावतुम्हारा॥ कोकहिसकइकोजाननहारा
अनुचितउचितकाजुकछुहोऊ समुझिकरियभलकहसबकोऊ
सहसाकरपाछेपछिताहीं कहहिंबेदबुधतेबुधनाहीं
सुनसुरबचनलषनसकुचाने रायसीयसादरसनमाने॥
कहीताततुमनीतिसुहाई। सबतेंकठिनराजमदभाई॥
जोअँचवंतनृपमातहिंतेई। नाहिनसाधुसभाजेहिंसेई
सुनहुलषनभलभरतसरीसा। बिधिप्रपंचमहँसुनानदीसा।

भरतहिंहोइनराजमदबिधिहरिहरपदपाय * ॥
कबहुँकिकाँजीसीकरनछीरसिंधुबिनसाइ३१

तिमिरतरुनतरनिहिमकुगिलई गगनुमगनमकुमेघहिमिलई
गोपदजलबूड़हिंघटजोनी॥ सहजछमाबरुछाड़हिछोनी
मसकफूँकमकुमेरुउड़ाई। होइननृपमदभरतहिंभाई॥
लषनतुम्हारसपथपितुआना। सुचिसुबंधुनहिंभरतसमाना।
सगुनषीरुअवगुनजलताता। मिलइरचेपरिपंचबिधाता।
भरतहंसरविबंशतड़ागा॥ जनमिकीन्हगुनदोषबिभागा
गहिगुनपयतजिअवगुनबारी निजजसजगतकीन्हउजियारी
कहतभरतगुनसीलसुभाऊ। प्रेमपयोधिमगनरघुराऊ॥

सुनिरघुबरबानीबिबुधदेखिभरतपरहेतु।
सकलसराहतरामसोप्रभुकोकृपानिकेतु२३२

जौनहोतजगजनमभरतको। सकलधरमधुरिधरनिधरत
कविकुलअगमभरतगुनगाथा। कोजानइतुमबिनरघुनाथ
लषनरामसियसुनिसुरबानी। अतिसुखलहेउनजाइबखा
इहांभरतसबसहितसहाए। मंदाकिनीपुनीतनहाये।
सरितसमीपराषसबलोगा। मांगिमातुगुरसचिवनियोगा
चलेभरतजहंसियरघुराई। साथनिषादनाथलघुभा
समुझिमातुकरतबसकुचाहीं करतकुतर्ककोटिमनमा
रामलषनसियसुनिममनाऊं उठिजनिअनतजाहिंतजिठा

दो॰ मातुमतेयहमानिमोहजोकछुकरहिंसोथोर
अघअवगुनछमिआदरहिंसमुझिआपनीओर २३

जौपरिहरहिंमलिनमनजानी तौसनमानहिंसेवकमा
मोरेसरनरामकीपनही। रामसुस्वामिदोषसबजन
जगजसभाजनचातकमीना। नेमप्रेमनिजनिपुननबीना
असमनगुनतचलेमगजाता। सकुचसनेहसिथलसब
फेरतिमनहिंमातुकृतखोरी। चलतभगतबलधीरजधो
जबसमुझतरघुनाथसुभाऊ तबपथपरतउताइलपा
भरतदशातेहिअवसरकैसी जलप्रवाहजलअलिगतिजै
देषिभरतकरसोचसनेहू भानिषादतेहिसमयबिदे

दो॰ लगेहोनमंगलसगुनसुनिगुनिकहतनिषाद
मिटिहिसोचहोइहिहरषपुनिपरिनामबिषाद २३४

सेवकबचनसत्यसबजाने आश्रमनिकटजाइनियरा

भरतदीषबनसैलसमाजू मुदितछुधितजनुपाइसुनाजू
ईतिभीतिजनुप्रजादुखारी त्रिबिधतापपीडितग्रहभारी
जाइसुराजसुदेससुखारी। होहिंभरतगतितेहिअनुहारी
रामबासबनसंपतिभ्राजा सुषीप्रजाजनुपाइसुराजा॥
सचिवबिरागबिबेकनरेसू बिपिनसुहावनपावनदेसू।
भटजिमिनियमसैलरजधानी सांतिसुमतिसुचिसुंदररानी
सकलअंगसंपन्नसुराऊ। रामचरनआश्रितचितचाऊ।

दो॰ जीतिमोहमहिपालदलसहितबिबेकभुआलु
करतअकंटकराज्यपुरसुषसंपदासुकालु २३५

बनप्रदेसमुनिबासघनेरे। जनुपुरनगरगाउँगनषेरे॥
बिपुलबिचित्रबिहगमृगनाना। प्रजासमाजनजाइबषाना।
षगहाकरिहरिबाघबराहा देषमहिषबृषसाजुसराहा
बयरुबिहाइचरहिंएकसंगा जहँतहँमनहुँसेनचतुरंगा॥
झरनाझरहिंमत्तगजगाजहिं मनहुँनिसानबिबिधबिधबाजहिं।
चकचकोरचातकसुकपिकगन कूंजतमंजुमरालमुदितमन।
अलिगनगावतनाचतमोरा जनुसुराजमंगलचहुंओरा
बेलिबिटपतृनसकलसफूला। सबसमाजमुदमंगलमूला।

दो॰ रामसैलशोभानिरखिभरतहृदयअतिप्रेम।
तापसतपफलपाइजिमिसुषीसिरानेनेम २३६।

तबकेवटऊंचेचढिधाई॥ कहेउभरतसनभुजाउठाई।
नाथदेषिअहिबिटपबिसाला। पाकरिजंबुरसालतमाला।

टी॰ रा॰ अ॰ १२२

तिन्हतरुतरुन्हमध्यबटसोहा मंजुबिसालदेखिमनमो
नीलसघनपल्लवफललाला। अबिचलछांहसुखदसब
मानहुंतिमिरअरुनमयरासी बिरचीबिधिसकेलिसुषमा
एतरुसरितसमीपगोसांई रघुबरपरनकुटीजहँछा
तुलसीतरुबरबिबिधसुहाए कहुंकहुंसियकहुंलषन
बटछायाबेदिकाबनाई ॥ सियनिजपानिसरोजसु

दो॰ जहंबैठिमुनिगणसहितनितसियरामसुजान
सुनहिंकथाइतिहाससबआगमनिगमपुरान २३७

सखाबचनसुनिबिटपनिहारी उमगेभरतबिलोचनबारी॥
करतप्रनामचलेदोउभाई। कहतप्रीतिसारदसकुचा
हरषहिंनिरखिरामपदअंका मानहुंपारसुपाइउरंका॥
रजसिरधरिहियनयनलगावहिं रघुबरमिलनसरससुखपा
देखिभरतगतिअकथअतीवा प्रेममगनमृगषगजड़जी
सखहिसनेहबिबसमगभूला कहिसुपंथसुरबरषहिंफू
निरषसिद्धसाधकअनुरागे। सहजसनेहसराहनलागे
होतनभूतलभावभरतको। अचरसचरचरअचरकरतको

प्रेमअमियमंदरबिरहुभरतपयोधिगंभीर ॥
मथिप्रगटेउसुरसाधुहितकृपासिंधुरघुबीर ३५

सखासमेतमनोहरजोटा ॥ लषेउलषनसघनबनओ
भरतदीषप्रभुआश्रमपावन सकलसुमंगलसदनसुहाव
करतप्रवेशमिटेदुखदावा जनुजोगीपरमारथपावा॥

देखेभरतलषनप्रभुआगे ॥ पूंछेबचनकहतअनुरागे॥
सीसजटाकटिमुनिपटबांधे तूनकसेकरसरधनुकांधे॥
बेदीपरमुनिसाधुसमाजू ॥ सीयसहितराजतरघुराजू॥
बलकलबसनजटिलतनुस्यामा। जनुमुनिबेषकीन्हरतिकामा।
करकमलनधनुसायकफेरत। जियकीजरनिहरतिहसिहेरत।

लसतमंजुमुनिमंडलीमध्यसीयरघुचंद २॥
ग्यानसभाजनुतनुधरेभगतसच्चिदानंद २३९।

सानुजसखासमेतमगनमन बिसरेहरषसोकसुषदुषगन
पाहिनाथकहिपाहिगोसांई। भूतलपरेलकुटकीनांई २॥
बचनसप्रेमलषनपहिचाने। करतप्रनामभरतजियजाने॥
बंधुसनेहसरसएहिओरा॥ उतसाहिबसेवाबरजोरा २॥
मिलिनजाइनहिंगुदरतबनई सुकबिलषनमनकीगतिभनई
रहेराषिसेवापरभारू ॥ चढीचंगजनुषैंचखिलारू।
कहतसप्रेमनाइमहिमाथा भरतप्रनामकरतरघुनाथा।
उठेरामसुनिप्रेमअधीरा। कहुंपटकहुंनिषंगधनुतीरा।

दो. बरबसलियेउठाइउरलाएकृपानिधान २॥
भरतरामकीमिलनिलषिबिसरेसबहिअपान २४०॥

मिलनिप्रीतिकिमिजाइबखानी कबिकुलअगमकरममनबानी
परमप्रेमपूरनदोउभाई २॥ मनबुधिचितअहमितिबिसराई
कहहुसुप्रेमप्रगटकोकरई केहिछायाकबिमतिअनुसरई
कबिहिअरथआखरबलुसांचा अनुहरितालगतिहिनटनाचा।

टी.
रा. अ.
२२३

अगमसनेहभरतरघुबरको। जहँनजाइमनुबिधिहरिहर
सोमैंकुमतिकहौंकेहिभांती बाजसुरागकिगाँडरतांती
मिलनिबिलोकिभरतरघुबरकी सुरगनसभयधकधकीध
समुझाएसुरगुरुजड़जागे। बरषिप्रसूनप्रसंसनलागे

दो. मिलिसप्रेमरिपुसूदनहिंकेवटभेंटेउराम॥
भूरिभागभेंटेउभरतलछमनकरतप्रनाम२४१

भेंटेउलखनललकिलघुभाई बहुरिनिषादलीन्हउरलाई
पुनिमुनिगनदुहुंभाइनबंदे। अभिमतआशिषपाइअनंदे
सानुजभरतउमगिअनुरागा धरिसिरसियपदपदुमपरा
पुनिपुनिकरतप्रनामउठाए सिरकरकमलपरसिबैठाए॥
सीयअसीसदीन्हमनमाहीं मगनसनेहदेहसुधिनाहीं॥
सबबिधिसानुकूललखिसीता भेनिसोचउरअपडरबीता॥
कोउकछुकहइनकोउकछुपूंछा प्रेमभरामनुनिजगतिछूंछा
तेहिअवसरकेवटधीरजधरि जोरिपानिबिनवतप्रनामुक

दो. नाथसाथमुनिनाथकेमातुसकलपुरलोग॥
सेवकसेनपसचिवसबआएबिकलबियोग४२

सीलसिंधुसुनिगुरआगमनू सियसमीपराखेरिपुदवनू
चलेसबेगरामतेहिकाला धीरधरमधुरदीनदयाला॥
गुरहिदेखिसानुजअनुरागे दंडप्रनामकरनप्रभुलागे॥
मुनिबरधाइलियेउरलाई प्रेमउमगिभेटेदोउभाई॥
प्रेमपुलकिकेवटकहिनामू कीन्हदूरतेंदंडप्रनामू +॥

रामसखारिषिसरबसभेंटा जनुमहिलुठतसनेहसमेटा॥
रघुपतिभगतिसुमंगलमूला। नभसराहिंसुरबरषहिंफूला।
एहिसमनिपटनीचकोउनाहीं बड़बसिष्ठसमकोजगमाहीं

दो॰ जेहिलखिलखनहुंतेंअधिकमिलेमुदितमुनिराउ
सोसीतापतिभजनकोप्रगटप्रतापप्रभाउ २४३।

आरतलोगरामसबजाना। करुनाकरसुजानभगवाना
जोजेहिभायरहाअभिलाषी तेहितेहिकैतसितसिरुखराखी
सानुजमिलिपलमहुंसबकाहू कीन्हदूरिदुखदारुनदाहू॥
यहबड़िबातरामकैनाहीं। जिमिघटकोटिएकरविछांहीं
मिलकेवटहिंउमगिअनुरागा पुरजनसकलसराहहिंभागा
देखींरामदुखितमहतारी। जनुसबेलिअवलीहिममारी।
प्रथमरामभेंटीकैकेई ॥ सरलसुभायभगतिमतिभेई
पगपरिकीन्हप्रबोधबहोरी कालकरमबिधिसिरधरखोरी

दो॰ भेंटीरघुबरमातुसबकरिप्रबोधपरितोषु॥
अंबईसआधीनजगकाहुनदेइअदोषु॥२४४॥

गुरुतियपदबंदेदोउभाई। सहितबिप्रतियजेसंगआईं
गंगगौरिसमसबसनमानी देहिंअसीसमुदितमृदुबानी
गहिपदलगेसुमित्राअंका। जनुभेंटीसंपतिअतिरंका॥
पुनिसागरहिंसुधासमबारी त्रिबिधतापहरत्रिबिधबया॥
बिटपबेलितृनअगनितजाती फलप्रसूनपल्लवबहुभांती।
सुंदरसिलासुखदतरुछाहीं जाइबरनिबनछबिकेहिपाहीं।

[illegible]

मिलजननिहिसानुजरघुराऊ गुरसनकहेउकिधारियपाऊ
पुरजनपाइमुनीसनियोगू ॥ जलथलतकितकिउतरेलोगू ॥

दो॰ महिसुरमंत्रीमातुगुरगनेलोगलियेसाथ ॥
पावनआश्रमगमनकिय भरतलषनरघुनाथ २४५

सीयआइमुनिबरपगलागी ॥ उचितअसीसलहीमनमागी
गुरुपतनीहिमुनितियनसमेता मिलीप्रेमकहिजाइनजेता ॥
बंदिबंदिपगसियसबहीके आसिरबचनलहेप्रियजीके
सासुसकलजबसीयनिहारीँ मूँदेनयनसहमिसुकुमारी
परीबधिकबसमनहुंमराली काहकीन्हकरतारकुचाली
तिन्हसियनिरखिनिपटदुषपावा सोसबसहियजोदैउसहावा
जनकसुतातबउरधरिधीरा ॥ नीलनलिनलोयनभरिनीरा
मिलीसकलसासुनसियजाई तेहिअवसरकरुनामहिछाई

लागिलागिसियसबनिपगभेंटतिअतिअनुराग ॥
हृदयअसीसहिंप्रेमबसरहिअहुभरीसुहाग २४६

बिकलसनेहसीयसबरानी बैठनकहेउसबहिंगुरुज्ञानी ॥
कहिजगगतिमायिकमुनिनाथा कहेकछुकपरमारथगाथा
नृपकरसुरपुरगवनसुनावा सुनिरघुनाथदुसहदुषपावा
मरनहेतुनिजनेहुबिचारी । भेअतिबिकलधीरधुरधारी
कुलिसकठोरसुनतकटुबानी बिलपतलषनसीयसबरानी
सोकबिकलअतिसकलसमाजू मानहुंराजअकाजेउआजू ॥
मुनिबरबहुरिरामसमुझाए ॥ सहितसमाजसुसरितन्ह

ग्रंकि २६ ३१ कौं: ३ स्रौ: ६ हौं: । पासबचनसा श्रुकेगुरुबकुर नियमह २६ हौं: सकाल फिरहुआप बनगनता म्याइदेखि सपखिनासा तकारमिछा

स्नाननिरंबुतेहिदिनप्रभुकीन्हा । मुनिहुकहेजलकाहुनलीन्हा ।

भोरभएरघुनंदनहिंजोमुनिआयसुदीन्ह ॥
श्रद्धाभगतिसमेतप्रभुसोसबुसादरकीन्ह४१

करिपितुक्रियाबेदजसबरनी । भेपुनीतपातकतमतरनी ॥
जासुनामपावकअघतूला । सुमिरतसकलसुमंगलमूला ।
सुद्धसोभयउसाधुसंमतअस । तीरथआवाहनसुरसरिजस
सुद्धभएदुइबासरबीते । बोलेगुरुसनरामपिरीते ॥
नाथलोगसबनिपटदुखारी । कंदमूलफलअंबुअहारी ॥
सानुजभरतसचिवसबमाता । देखिमोहिपलजिमिजुगजाता ।
सबसमेतपुरधारियपाऊ । आपुइहांअमरावतिराऊ ॥
बहुतकहेउँसबकियेउँढिठाई । उचितहोइतसकरिअगोसांई

धरमसेतुकरुनायतनकसनकहहुअसराम ॥
लोगदुखितदिनदुइदरसुदेखिलहहुबिश्राम४५

रामबचनसुनिसभयसमाजू । जनुजलनिधिमहँबिकलजहाजू
सुनिगुरगिरासुमंगलमूला । भयेउमनहुमारुतअनुकूला ।
पावनिपयतिहुंकालनहाहीं । जोबिलोकिअघओघनसाहीं
मंगलमूरतिलोचनभरिभरि । निरषहिंहरषिदंडवतकरिकरि
रामशैलबनदेषनजाहीं ॥ जहँसुखसकलसकलदुखनाहीं ।
रनाझरहिंसुधासमबारी । त्रिबिधतापहरत्रिबिधबयारी
बिटपबेलितृनअगनितजाती । फलप्रसूनपल्लवबहुभांती ।
दरसिलासुषदतरुछाहीं । जाइबरनिबनछबिकेहिपाहीं ।

रफलनाकेह सर्वकाकेमल श्मोगनकार बिधतहेन्स्य जानबाजनिज मायोंसाखन पातिबधार सनकारबध कियातहीँकोसाहैं

टीं:
रा० प्र०
२७

कौपछगावभरत श्रौसौचाकि जरघुनाथ श्रौपाफेहैं महबिचारमौं प्रानभयौ कलकारनहौं बिषयसुनिज बोताहभयो श्रुकभावकह

दो· सरनिसरोरुहजलबिहगकुंजतगुंजतभृंग।
बैरबिगतबिहरतबिपिनमृगबिहंगबहुरंग २४९

कोलकिरातभिल्लबनबासी । मधुसुचिसुंदरस्वादुसुधा
भरिभरिपरनपुटींरचिरूरीं । कंदमूलफलअंकुरजूरी॥
सबहिंदेहिंकरिबिनयप्रनामा । कहिकहिस्वादभेदगुननामा॥
देहिंलोगबहुमोलनलेहीं। फेरतरामदोहाईदेहीं॥
कहहिंसनेहमगनमृदुबानी । मानतसाधुप्रेमपहिचानी॥
तुमसुकृतीहमनीचनिषादा । पावादरसनरामप्रसादा॥
हमहिंअगमअतिदरसतुम्हारा । जसमरुधरनिदेवधुनिधारा
रामकृपालनिषादनिवाजा । परिजनप्रजउचहियजसरा

दो· यहजियजानिसकोचतजिकरिअछोहुलषनेह
हमहिंकृतारथकरनिलगफलतृनअंकुरलेहु २५०

तुमप्रियपाहुनबनपगधारे । सेवाजोगुनभागहमारे॥
देवकाहहमतुमहिंगोसाँई । ईंधनपातकिरातमिताई॥
यहहमारिअतिबड़िसेवकाई । लेहिंनबासनबसनचुराई॥
हमजड़जीवजीवगनघाती । कुटिलकुचालीकुमतिकुजा
पापकरतनिसिबासरजाहीं । नहिंपटकटिनहिंपेटअघा
सपनेहुधरमबुद्धिकसकाऊ । यहरघुनंदनदरसप्रभाऊ॥
जबतेंप्रभुपदपदमनिहारे । मिटेदुसहदुखदोषहमारे॥
बचनसुनतपुरजनअनुरागे । तिन्हकेभागसराहनलागे॥

छं· लागेसराहनभागसबअनुरागबचनसुनावहीं॥

जैसे पारकी
माहिमा सु
मानि भई हैं
सोई सुबलाई
सुभंतराग
प्रेमरति
जुजली में
अपने सम्पूर्ण
कौतासि स्नेह
मा लातीन है
ग मधुकी ले
भाव जैसे बहु
छको पाको
लिय सुरा

ऊ प्रकार नहीं
जानस्कातें ६
हैं नाव सम्पुर्ण
नगनका उपालमा
प्रेम कर्म फल कांड
भाव भानि हैं भरत
जी की सावकी प्रे
मम पायो ॐ ६
टी॰
रा॰ स्व॰
१२८
मुनि सभा समीप
रघुनाथ समीप
गवनत हाँ छाँत
अ सुख माती
सचि भरत काम
अरु प्रभु भक्त
प्रधान प्रभु
भरत ज

अनन्य भक्त प्रभु पाके कानन तहां श्रीरामरूप ध्यान युक्त ... लाभपर ...कोउ भयो पुरवासिन कौ यो पुरुः जनक आगम नर्मदे वल पाक पर जाकिन ...

बोलनि मिलनि सियरामचरनसनेह लखि सुख पावही।
नरनारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लन की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै नौका तरा॥
सो॰ निहरहिं बन चहुं ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यौं दादुर मोर भये पीन पावस प्रथम॥२५१॥

पुर नर नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिं पलक सम बीती॥
सीय सासु प्रति बेष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई॥
लखा न मरम राम बिनु काहू। माया सब सिय माया माहूं॥
सीय सासु सेवा बस कीन्ही। तिन्ह लहि सुख सिष आसिष दीन्ही॥
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई॥
अवनि जमहिं जाचति कैकेई। महि न बीचु बिधि मीचु न देई॥
लोकहुं बेद बिदित कबि कहहीं। राम बिमुख थल नरक न लहहीं॥
यह संसय सब के मन माहीं। राम गवन बिधि अवध की नाहीं॥

दो॰ निसि न नींद नहिं भूख दिन भरत बिकल सुठि सोच।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहिं सलिल संकोच॥

कीन्ह मातु मिस काल कुचाली। ईति भीति जस पाकत साली॥
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू। मोहि अवकलत उपाउ न एकू॥
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी। मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी॥
मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ॥ राम जननि हठ करिय कि काऊ॥
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महं कुसमय बाम बिधाता॥
जौं हठि करौं त निपट कुकरमू। हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू॥

इह पूर्वक वाहित समान रघुनाथ युक्त जानाय म्रा कथन की है आगे कहें जनक की प्रेम मुनि सम्बाद वचनन की भक्ति परतार

विप्र वामन नहिं कहुं राम पलटै प्रभु सु नैना रामनाहि कै कहु पाहीं अपनहिं यानी गउ कहहौं श्रुति गनवारि तो समध तेमान

एकहिजुक्तिनमनठहरानी*॥ सोचतभरतहिंरैनसिरान
प्रातनहाइप्रभुहिंसिरनावा। बैठतपठयेरिषयबोला

गुरुपदकमलप्रनामकरिबैठेआयसुपाइ*॥
बिप्रमहाजनसचिवसबजुरेसभासदआइ २५३

बोलेमुनिबरसमयसमाना। सुनहुसभासदभरतसुज
धरमधुरीनभानुकुलभानू। राजारामस्ववशभगवान
सत्यसंधपावकश्रुतिसेतू। रामजनमजगमंगलहेत
गुरपितुमातुबचनअनुसारी खलदलदलनदेवहितका
नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथु कोउनरामसमजानजथा
बिधिहरिहरससिरबिदिसपाला मायाजीवकरमकुलिक
अहिपमहिपजहँलगिप्रभुताई जोगसिद्धिनिगमागमगा
करिबिचारजियदेखहुनीके रामरजाइसीससबही

राखेरामरजायरुषहमसबकरहितहोइ॥
समुझसयानेकरहुअबसबमिलिसंमतसोइ*॥

सबकहँसुखदरामअभिषेकू मंगलमूलमोदमगुए
केहिबिधिअवधचलहिंरघुराऊ कहहुसमुझिसोइकरिय
सबसादरसुनिमुनिबरबानी। मनपरमारथस्वारथसा
उतरुनआवलोगभएभोरे॥ तबसिरुनाइभरतकरजो
भानुबंशभयेभूपघनेरे॥ अधिकएकतेंएकबड़े
जनमहेतुसबकहँपितुमाता। करमसुभासुभदेइबिध
दलिदुखसजइसकलकल्याना। असअसीसराउरिजगुजा

आसन श्री भावस्थ स्थमरथ गमनौ छर्ग गवन्तु श्रुक बनबास श्रुक योग उथारि ख सपुत कै पुनः स सैनाप्रमाण म कौशिल्या रानी तें भेंट परस्पर संवाद सीताप्रको अवधसमाप गमननहँ जग के लोहि सब पृथी अरु भूप

टी॰ रा॰ प्र॰ २३०

मन प्रयागमां सीताजू की लेहु अछय बट नाह तापर रामजू बिषयक प्रेम

सोइगोसाइबिधिगतिजेहिछेकी सकइकोटारटेकजोटेकी॥

बूझियमोहिउपाउअबसोसबमोरअभागु २॥
सुनसनेहमयबचनगुरुउरउमगाअनुरागु २५५

तातबातफुरिरामकृपाहीं। रामबिमुखसिधिसपनेहुनाहीं
सकुचउंतातकहतएकबाता। अरधतजहिंबुधसरबसजाता
तुमकाननगमनहुदोउभाई। फेरिअहिलषनसीयरघुराई॥
सुनिसुबचनहरषेदोउभ्राता। भेप्रमोदपरिपूरनगाता २॥
मनप्रसन्नतनतेजबिराजा। जनुजियराउरामभयेराजा।
बहुतलाभलोगन्हलघुहानी। समदुखसुखसबरोवहिंरानी
कहहिंभरतमुनिकहासोकीन्हे फलजगजीवनअभिमतदीन्हे
काननकरउंजनमभरिबासू। एहितेंअधिकनमोरसुपासू

अंतरजामीरामसियतुमसर्बग्यसुजान २ २ ॥
जोफुरकहहुतनाथनिजकीजियबचनप्रमान

भरतबचनसुनिदेषिसनेहू सभासहितमुनिभयेउबिदेहू
भरतमहामहिमाजलरासी मुनिमतिठाढ़ितीरअबलासी
गाचहपारजतनहियहेरा॥ पावतनावनबोहितबेरा २॥
औरकरिहिकोभरतबड़ाई सरसीपीकीसिंधुसमाई॥
भरतमुनिहिंमनभीतरभाए। सहितसमाजरामपहँआए
प्रभुप्रनामकरिदीन्हसुआसन बैठेसबसुनिमुनिअनुसासन
बोलेमुनिबरबचनबिचारी देसकालअवसरअनुहारी
सुनहुरामसरबग्यसुजाना। धरमनीतिगुनग्याननिधाना।

बालकंउ सुनहु रबि रानमांकोई य सुनि बड़ा तेहि बात ही कैसे अवलंबी कूप नहीं सी ता संकोच बिचार बिह रस प्रेम ग्रास्य देतें बिह कियांग्रह सुनः प्रमाभई नहीं उनिजनक प्रभु सपष्ट सानि वकाविन हे नन

टी.
रा. ग्रं
१३१

गौकथाहै बिंदुराग उदारकियो सालोंगैगाको कैबाहहै भरतहैकोबढ़े गीतिलोलहैं नैतुईभूषी गोलकोहोष कहैभाव मतभाव

दो॰ सबकेउरअंतरबसहुजानहुभाउकुभाउ॥
पुरजनजननीभरतहितहोइसोकहियउपाउ २५७

आरतकहहिंबिचारनकाऊ। सूझजुआरिनआपनदा
सुनिमुनिबचनकहतरघुराऊ। नाथतुम्हारेहिहाथउपाउ
सबकरहितरुखराउरराखे॥ आयसुकियेमुदितफुरभा
प्रथमजोआयसमोकहंहोई। माथेमानिकरउंसिखसो
पुनिजेहिकहंजसकहबगोसांई। सोसबभांतिघटिहिसेवका
कहमुनिरामसत्यतुमभाषा। भरतसनेहबिचारनराखा
तेहितेंकहउंबहोरिबहोरी। भरतभगतिबसभइमतिमो
मोरजानभरतरुचराखी॥। जोकीजियसोसुभशिवसा

दो॰ भरतबिनयसादरसुनियकरियबिचारबहोरि
करबसाधुमतलोकमतनृपनयनिगमनिचोरि २५

गुरअनुरागभरतपरदेषी। रामहृदयआनंदबिशेषी
भरतहिधरमधुरंधरजानी। निजसेवकतनमानसबा
बोलेगुरुआयसुअनुकूला। बचनमंजुमृदुमंगलमूला
नाथसपथपितुचरनदुहाई। भयउनभुवनभरतसमभा
जोगुरुपदअंबुजअनुरागी। तेलोकहुंबेदहुंबड़भागी
राउरजापरअसअनुरागू। कोकहिसकइभरतकरभा
लषितलघुबंधुबुद्धिसकुचाई। करतबदनपरभरतबड़ाई
भरतकहहिंसोकियेभलाई। असकहिरामरहेअरगाई

दो॰ तबमुनिबोलेभरतसनसबसकोचतजितात

सब्बाहिराघव संदर्भदृष्टि कोपालमै लग्योतब लोतेबारह अन्तरधर्म हैल्योभारि

टी॰
रा॰ प्र॰
२३२

अनायासदृष्टि कोउदारकि यातहिकोरु पनाहिलगानो अरुभरतबिनय लनिआहाद पूर्णकरघुना थउक्तिनीति युक्ति

कृपासिंधुप्रियबंधुसनकहहुहृदयकैबात॥

सुनिमुनिबचनरामरुखपाई। गुरसाहिबअनुकूलअघाई
लखिअपनेंसिरसबछरुभारू। कहिनसकहिंकछुकरहिंबिचारू
पुलकिसरीरसभाँभएठाढ़े। नीरजनयननेहजलबाढ़े
कहबमोरमुनिनाथनिबाहा। एहितेंअधिककहौंमैंकाहा
मैंजानउँनिजनाथसुभाऊ। अपराधिहुपरकोहनकाऊ
मोपरकृपासनेहबिसेषी। खेलतखुनसनकबहूँदेखी
सिसुपनतेंपरिहरेउँनसंगू। कबहुँनकीन्हमोरमनभंगू
मैंप्रभुकृपारीतिजियजोही। हारेहुखेलजितावहिंमोही।

दो॰ महूँसनेहसकोचबससन्मुखकहेनबयन
दरसनतृपितनआजुलगिप्रेमपियासेनयन २६०

बिधिनसकेउसहिमोरदुलारा। नीचबीचजननीमिसुपारा।
येहुकहतमोहिआजुनसोभा। अपनीसमुझिसाधुसुचिकोभा
मातुमंदमैंसाधुसुचाली। उरअसआनतकोटिकुचाली
फरइकिकोदवबालिसुसाली। मुकताप्रसवकिसंबुकताली
सपनेहुँदोसककलेसनकाहू। मोरअभागउदधिअवगाहू
बिनुसमुझेंनिजअघपरिपाकू। जारिउँजाइजननिकहिकाकू
हृदयहेरिहारेउँसबओरा॥ एकहिभाँतिभलाहिंभलमोरा
गुरुगोसाँइसाहिबसियरामू। लागतमोहिनीकपरिनामू

दो॰ साधुसभागुरुप्रभुनिकटकहउँसुथलसतिभाउ
प्रेमप्रपंचुकिझूठफुरजानहिंमुनिरघुराउ।२६१।

जैसे मुनि जन
भौजनचाहतैं
तब चरण कछु
मैं बाधननाना
मिलि सामग्री
कौ जानि कैं
तेनमधुरकडु
फुखा सुख प
हिवानकैसब
सबकी भ्रांति
कारित हैं आप
बार न ह्नैं
राखत अरु
मुख
कृपा बिब
कीर्हे पाप
ताथ मानन
कीरब यथा
अधिकारकौं
टी॰
रा॰ अ॰
२६३
श्री॰ दे॰ उ है अ
आपनि सत्रुघ्न
तावहम
श्रीहमारीजाल
उन हैं कहिं
बरनन कौ
बातौ किजहैं
तहाँ तैं धनलैकैं
ऊछनतांवैं
तनौं आप
सवानौ मुख
×

आगे राजा
प्रीति मन
श्रौ बुधा रु
प्रकार सब
कौ बांट है
सेवक प्रभु
रीति धर्म को
उपक्रमतो
गहें हतो
धर्म भांति की
प्रीति श्रम
प्रीति को
कौ वसन व
राख्ते हैं
श्रु भरत
विनय उहं
श्रौर मिनाहे
कौ भाव कि
अपनी श्रोर
पित्त श्राता

टी॰ रा॰ अ॰ १२८

पालन मे श्रौ
तहबकाई की
श्रातकनिवाह
कहराज की
लाल श्रापके
रापाई नहीं
भरत जू

भूपतिमरनुप्रेमपनुराषी जननीकुमतिजगतसबसाषी
देषिनजाहिंबिकलमहतारी जरहिंदुसहजुरपुरनरनारी॥
महींसकलअनरथकरमूला सोसुनिसमुझिसहेउंसबसूला
सुनिबनगवनुकीन्हरघुनाथा करिमुनिभेषलषनुसियसाथा
बिनुपनहिन्हपयादेहिंपायें संकरसाषिरहेउँएहिघाए
बहुरिनिहारिनिषादसनेहू कुलिसकठिनउरभएउनबेहू
अबसबआंषिन्हदेषेउंआई। जिअतजीवजड़सबइसहाई
जिन्हहिंनिरषिमगसांपिनबीछी तजहिंबिषमबिषतामसतीछी

तेइरघुनंदनलषनसियअनहितलागेजाहि ॥
तासुतनयतजिदुसहदुषदैउसहावैकाहि २६२

सुनिअतिबिकलभरतबरबानी आरतिप्रीतिबिनयनयसानी॥
सोकबिकलसबसभाषभारू मनहुंकमलबनपरेउतुषारू॥
कहिअनेकबिधिकथापुरानी भरतप्रबोधकीन्हमुनिग्यानी॥
बोलेउचितबचनरघुनंदू ॥ दिनकरकुलकैरवबनचंदू॥
तातजायजनिकरहुगलानी। ईसअधीनजीवगतिजानी॥
तीनिकालतिभुवनमतमोरे। पुन्यसलोकताततरतोरे॥
उरआनततुमपरकुटिलाई। जाइलोकपरलोकनसाई॥
दोसुदेइंजननिहिंजड़तेई॥ जिन्हगुरसाधसभानहिंसेई॥

मिटिहहिंपापप्रपंचसबअखिलअमंगलभार ॥
लोकसुजसपरलोकसुषसुमरतनामतुम्हार २६३

कहउंसुभाउसत्यशिवसाषी भरतभूमिरहराउरिराषी॥

कौशाधार
कोदण्डछ
अवधि
लागिकहउं
जाइहतुमा
ऋणकहे है
जैसे अमृत
नौ रकार
मकार अक्षर
दोऊ वाचान
भक्ति संपुट
अरुपुर नाम ना
इसबके आग
समरथ मां राउ
कपाट इत्यादि
विभूषन धराऊं
कौजानो वादे
कै बिद्या किय॥

तातकुतर्ककरहुजनिजाए। बैरप्रेमनहिंदुरैदुराए॥
मुनिगननिकटबिहगमृगजाहीं बाधकबधिकबिलोकिपराहीं
हितअनहितपसुपछिउजाना मानुषतनुगुनग्याननिधाना।
नाथतुमहिंमैंजानउँनीके ॥ करउँकाहअसमंजसजीकें।
राखेउराउसत्यमोहित्यागी॥ तनुपरिहरेउप्रेमपनलागी॥
तासुबचनमेटतमनसोचू। तेहितेंअधिकतुम्हारसंकोचू
तापरगुरुमोहिआयसुदीन्हा अवसिजोकहहुचहउंसोइकीन्हा

मनप्रसन्नकरिसकुचतजिकहहुकरउंसोआजु
सत्यसंधरघुबरबचनसुनभासुखीसमाजु२६४

सुरगनसहितसभयसुरराजू सोचहिंचाहतहोनअकाजू
करतउपावबनतकछुनाहीं। रामसरनसबगेमनमाहीं॥
बहुरिबिचारिपरस्परकहहीं रघुपतिभगतिभगतिउरअहहीं
सुधिकरिअंबरीषदुर्बासा। भेसुरसुरपतिनिपटनिरासा
सहेसुरन्हबहुकालबिषादा नरहरिकियेप्रगटप्रहलादा
लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा अबसुरकाजभरतकेहाथा
आनउपाउनदेखियदेवा ॥ मानतरामसुसेवकसेवा॥
हियसप्रेमसुमिरहुसबभरतहिं निजगुनसीलरामबसकरतहीं

सुनिसुरमतिसुरगुरकहेउभलतुम्हारबड़भाग।
सकलसुमंगलमूलजगभरतचरनअनुराग६५

सीतापतिसेवकसेवकाई कामधेनुसयसरिससुहाई
भरतभगतितुम्हरेमनआई तजहुसोचबिधिबातबनाई

टी.
रा. अ.
२३५

स्फुट भरत सैलिलकूहूं धाराकौं अंगालौ प्रतिमुनिमैं नाथकरौ अंकराजस प्रियमंगल जौथलमौं रामसौप्र श्रीभरतजू कौरिबिरखो गहै पाँव
देखबअनंत
मिथिलेस
सुतपद्म
करभए॥
॥ १५ ॥

देखदेवपतिभरतसुभाऊ सहजसुभायबिबसरघुराऊ
मनथिरकरहुदेवडरनाहीं भरतहिंजानिरामपरिछाहीं॥
सुनिसुरगुरसुरसंमतसोचू अंतरजामीप्रभुहिंसकोचू
निजसिरभारुभरतजियजाना करतकोटिबिधिउरअनुमाना
करुबिचारुमनदीन्हीठीका रामरजायसुआपननीका॥
निजपनतजिराखेउपनमोरा। छोहसनेहकीन्हनहिंथोरा॥

दो॰ कीन्हअनुग्रहअमितअतिसबबिधिसीतानाथ
करिप्रनामबोलेभरतजोरिजलजजुगहाथ २६६॥

कहौंकहावउंकाअबस्वामी कृपाअंबुनिधिअंतरजामी
गुरप्रसन्नसाहिबअनुकूला। मिटीमलिनमनकलपितसू
अपडरडरेउँनसोचसमूले॥ रबिहिनदोषदेवदिसिभूले
मोरअभागुमातुकुटिलाई बिधिगतिबिषमकालकठि
पाउँरोपिसबमिलिमोहिघाला। प्रनतपालपनआपनपाला॥
यहनईरीतिनराउरहोई ॥ लोकहुंबेदबिदितनहिंगोई
जगुअनभलभलएकुगोसाईं कहियहोयभलकासुभलाईं
देवदेवतरुसरिससुभाऊ सनमुखबिमुखनकाहुहिंका

दो॰ जायनिकटपहिचानितरुछांहसमनिसबसोच
मांगतअभिमतपावजगराउरंकभलपोच २६७

लखसबबिधिगुरस्वामिसनेहू मिटेउछोभनाहिंमनसंदेहू॥
अबकरुनानिधिकीजियसोई जनहितप्रभुचितछोभनहोई
जोसेवकसाहिबसेवकाई करईसकलसुषलोभबिहाई
जोसेवकसाहिबहिंसकोची निजहितचहैतासमतिपो

दो॰
रा॰ अ॰
२३६

स्वारथनाथफिरेसबहीका किएरजाइकोटिबिधिनीका
यहस्वारथपरमारथसारू॥ सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू
देवएकबिनतीसुनमोरी॥ उचितहोइतसकरवबहोरी
तिलकसमाजुसाजिसबआना करियसुफलप्रभुजोमनमाना।

दो॰सानुजपठियमोहिबनकीजियसबहिसनाथ॥
नतरुफेरियहिंबंधुदोउनाथचलौंमइसाथ।२६८।

नतरुजाहिंबनतीनउभाई बहुरियसीयसहितरघुराई।
जेहिबिधिप्रभुप्रसन्नमनहोई करुनासागरकीजियसोई॥
देवँदीन्हसबमोहिसिरभारू मोरेनीतिनधरमबिचारू॥
कहउंबचनसबस्वारथहेतू। रहतनआरतकेचितचेतू॥
उतरिदेइसुनिस्वामिरजाई। सोसेवकलषिलाजलजाई।
असमइअवगुनउदधिअगाधू स्वामिसनेहसराहतसाधू।
अबकृपालमोहिसोमतभावा सकुचस्वामिमनजाहिनपावा
प्रभुपदसपथकहउंसतभाऊ जगमंगलहितएकउपाऊ

दो॰प्रभुप्रसन्नमनसकुचतजजोजेहिआयसुदेव॥
सोसिरधरिधरिकरहिंसबमिटहिअनटअवरेव६९

भरतबचनसुचिसुनिसुरहरषे साधुसराहिसुमनबहुबरषे
असमजसबसअवधनिवासी प्रमुदितमनतापसबनबासी।
चुपहिंरहेरघुनाथसँकोची प्रभुगतिदेषिसभासबसोची।
जनकदूततेहिअवसरआए मुनिबसिष्ठसुनिबेगबुलाये
करिप्रनामतिन्हरामनिहारे वेषुदेषिभयेनिपटदुषारे॥

दूतन्हमुनिबरबूझीबाता॥ कहहुबिदेहभूपकुसला
सुनिसकुचाइनाइमहिमाथा। बोलेचरबरजोरेंहाथा।
बूझबराउरसादरसांई॥ कुसलहेतुसोभयउगोसा

नाहितकोसलनाथकेसाथकुसलगइनाथ॥
मिथलाअवधबिशेषतेंजगसबभयेउअनाथ २७०

कोसलपतिगतिसुनिजनकौरा। भेसबलोगसोचबसबौ
जेहिदेखेतेहिसमयबिदेहू। नामसत्यअसलागनके
रानिकुचालसुनतनरपालहिं सूझनकछुजनुमनिबिनु
भरतराजरघुबरबनबासू। भामिथलेसहिहृदयहरा
नृपबूझेबुधसचिवसमाजू कहहुबिचारउचितकाआ
समुझिअवधअसमंजसदोऊ चलियेंकिरहियनकहकछुको
नृपहिंधीरधरिहृदयबिचारी पठयेअवधचतुरचरचारी
बूझिभरतसतभावकुभाऊ आयउबेगिनहोइलषाऊ

गयेअवधचरभरतगतिबूझिदेखिकरतूति॥
चलेचित्रकूटहिभरतचारचलेतिरहूति २७१

दूतनआइभरतकीकरनी। जनकसमाजयथामतिब
सुनिगुरुपरिजनसचिवमहीपति भेसबसोचसनेहबिकल
धरिधीरजकरिभरतबड़ाई। लियेसुभटसाहनीबोला
घरपुरदेशराखिरखवारे॥ हयगयरथबहुजानसंवा
दुघरीसाधिचलेततकाला। कियेबिश्रामनमगमहिपा
भोरहिंआजुनहाइप्रयागा। चलेजमुनउतरनसबला

सबरलेनहमपठयेनाथा॥ तिन्हकहिअसमहिनाएउमाथा।
साथकिरातछसातकदीन्है मुनिबरतुरतबिदाचरकीन्है

सुनतजनकआगमनुसबहरषेउअवधसमाजु
रघुनंदनहिसकोचबड़सोचबिबससुरराजु।

गरलगलानिकुटिलकैकेई काहिकहइकेहिदूषनदेई॥
असमनआनिमुदितनरनारी भएउबहोरिरहबदिनचारी
येहिप्रकारगतिबासरसोऊ प्रातनहानलागसबकोऊ॥
करिमज्जनपूजहिंनरनारी॥ गनपतिगौरिपुरारितमारी
रमारमनपदबंदिबहोरी। बिनवहिंअंजलिअंचलजोरी
राजारामजानकीरानी॥ आनंदअवधिअवधरजधानी
सुबसबसउफिरसहितसमाजा भरतहिरामकरहुजुवराजा
एहिसुखसुधासींचसबकाहू देवदेहुजगजीवनलाहू॥

गुरुसमाजभाइन्हसहितरामराजपुरहोउ २॥
अछतरामराजाअवधमरियमांगुसबकोउ ७३

सुनिसनेहमयपुरजनबानी निंदहिजोगुबिरतिमुनिग्यानी
येहिबिधिनित्यकरमकरिपुरजन रामहिंकरहिंप्रनामपुलकतन
ऊंचनीचमध्यमनरनारी॥ लहहिंदरसनिजनिजअनुहारी
सावधानसबहीसनमानहिं। सकलसराहतकृपानिधानहिं
लरिकाइतेरघुबरबानी २॥ पालतनीतिप्रीतिपहिचानी
सीलसकोचसिंधुरघुराऊ। सुमुखसुलोचनसरलसुभाऊ
कहतरामगुनगनअनुरागे॥ सबनिजभागसराहनलागे॥

टी॰
रा॰अ॰
२३९

हमसमपुन्यपुंजजगथोरे। जिन्हहिरामजानतकरिमोरे

दो॰ प्रेममगनतेहिसमयसबसुनिआवतमिथिलेसु
सहितसभासंभ्रमउठेउरविकुलकमलदिनेसु २७४

भाइसचिवगुरपुरजनसाथा आगेंगवनकीन्हरघुनाथा
गिरिवरदीखजनकपतिजबहीं करिप्रनामरथत्यागेउतबहीं
रामदरसलालसाउछाहू॥ पथश्रमलेसकलेसनकाहू
मनतहँजहँरघुबरबैदेही॥ बिनुमनतनदुखसुखसुधि
आवतजनकचलेइहिभांती सहितसमाजप्रेममतिमा
आएनिकटदेखिअनुरागे॥ सादरमिलनपरस्परलागे
लगेजनकमुनिजनपदबंदन रिषिनप्रनामकीन्हरघुनं
भाइनसहितरामिलिराजहिं चलेलवाइसमेतसमाजहिं

दो॰ आश्रमसागरसांतरसपूरनपावनपाथु॥
सेनमनहुंकरुनासरितलियेजातरघुनाथु २७५

बोरतज्ञानबिरागकरारे॥ बचनससोकमिलतनदना
सोचउसाससमीरतरंगा॥ धीरजतटतरुवरकरभंगा
बिषमबिषादतोरावतिधारा भयभ्रमभ्रवरअवर्तअपार
केवटबुधबिद्याबडिनावा। सकहिंनखेइऐकनहिंआवा
बनचरकोलकिरातबिचारे थकेबिलोकिपथिकहिय
आश्रमउदधिमिलीजबजाई मनहुंउठेउअंबुधिअकुलाई
सोकबिकलदोउराजसमाजा रहानज्ञाननधीरजलाजा॥
भूपरूपगुनसीलसराही॥ रोवहिंसोकसिंधुअवगाही

छं· अवगाहिसोकसमुद्रसोचहिंनारिनरव्याकुलमहा
दैदोषसकलसरोषबोलहिंबामबिधिकीन्होकहा॥
सुरसिद्धतापसजोगिजनमुनिदेषिदशाबिदेहकी+॥
तुलसीनसमरथकोउजोतरिसकैसरितसनेहका॥
सो· कियेअमितउपदेशजहँतहँलोगन्हमुनिबरन्ह॥
धीरजधरियनरेशकहेउबसिष्ठबिदेहसन॥ २७६॥

जासुज्ञानरबिभवनिसिनासा बचनकिरनमुनिसकलबिकासा
तेहिकिमोहममतानियराई यहसियरामसनेहबड़ाई॥
बिषयीसाधकसिद्धसयाने त्रिबिधजीवजगबेदबखाने
रामसनेहसरसमनजासू॥ साधुसभाबड़आदरतासू॥
सोहनरामप्रेमबिनुज्ञानू। करनधारबिनुजिमिजलजानू
मुनिबहुबिधिबिदेहसमुझाए रामघाटसबलोगनहाये+॥
सकलसोकसंकुलनरनारी सोबासरबीतेउबिनुबारी
पसुखगमृगन्हनकीन्हअहारू प्रियपरिजनकरकवनबिचारू

दो· दोउसमाजनिमिराजरघुराजनहानेप्रात+॥
बैठेसबबटबिटपतरमनमलीनकृशगात २७७॥

जेमहिसुरदशरथपुरबासी। जेमिथिलापतिनगरनिवासी
हंसबंसगुरुजनकपुरोधा। जिन्हजगमगुपरमारथसोधा
लगेकहनउपदेशअनेका॥ सहितधरमनयबिरतिबिबेका
कौशिककहिकहिकथापुरानी समुझाईसबसभासुबानी॥
तबरघुनाथकौशिकहँकहेऊ नाथकालिजलबिनुसबरहेऊ।

मुनिकहँउचितकहतरघुराई गएउबीतदिनपहरअढाई॥
ऋषिरघुपलखिकहतिरहुतराजा। इहांउचितनहिंअसनअनाजा॥
कहाभूपभलसबहिंसोहाना। पाइरजायसुचलेनहाना॥

तेहिअवसरफलफूलदलमूलअनेकप्रकार॥
लेइआएबनचरबिपुलभरिभरिकांवरिभार २४५

कामदभेगिरिराजप्रसादा। अवलोकतअपहरतबिषाद
सरसरिताबनभूमिबिभागा। जनुउमगतआनँदअनुरागा
बेलिबिटपसबसफलसफूला। बोलतषगमृगअलिकुलभूल
तेहिअवसरबनअधिकउछाहू त्रिबिधसमीरसुषदसबका
जाइनबरनिमनोहरताई ॥ जनुमहिकरतिजनकपहुनाई
तबसबलोगनहाइनहाई॥ रामजनकमुनिआयसुपाई
देषिदेषितरुबरअनुरागे। जहँतहँपुरजनउतरनलागे
दलफलमूलकंदबिधिनाना पावनसुंदरसुधासमाना॥

सादरसबकहरामगुरुपठयेभरिभरिभार॥
पूजिपितरसुरअतिथिगुरलगेकरनफलहार २४६

एहिबिधिबासरबीतेचारी। रामनिरषिनरनारिसुखारी
दुहुँसमाजअसरुचिमनमांही बिनुसियरामफिरबभलना
सीतारामसंगबनबासू ॥ कोटिअमरपुरसरिससुपास
परिहरिरामलषनबैदेही॥ जेहिघरभावबामबिधितेहि
दाहिनदैवहोइजबसबही। रामसमीपबसियबनतबही
मंदाकिनिमज्जनतिहुंकाला रामदरसमुदमंगलमाला॥

अरथुरामगिरिकाननतापसथल असनअमियसमकंदमूलफल।
सुखसमेतसंबतदुइसाता। पलसमहोहिंनजनिअहिंजाता

एहिसुखजोगनलोगसबकहहिंकहांअसभागु
सहजसुभाउसमाजदुहुंरामचरनअनुरागु २८०।

एहिबिधिसकलमनोरथकरहीं बचनसप्रेमसुनतमनहरहीं
सीयमातुतेहिसमयपठाई॥ दासीदेखिसुअवसरआई॥
सावकाससुनिसबसियसासू आयउजनकराजरनिवासू॥
कौशल्यासादरसनमानी॥ आसनदियेसमयसमआनी
सीलसनेहसकलदुहुंओरा। द्रवहिंदेखिसुनिकुलिसकठोरा
पुलकसिथलतनबारिबिलोचन महिनखलिखनलगीसबसोचन
सबसियरामप्रीतिकीसिमूरति जनुकरुनाबहुबेषबिसूरति
सीयमातुकहबिधिबुधबांकी जोपयफेनुफोरपबिटांकी

सुनियसुधादेखियगरलसबकरतूतिकराल॥
जहंतहंकाकउलूकबकमानससकृतमराल ८१

सुनिससोचकहदेविसुमित्रा बिधिगतिबड़िबिपरीतबिचित्रा
सोसृजपालइहरइबहोरी। बालकेलिसमबिधिमतिभोरी
कौशल्याकहदोषनकाहू। करमबिबसदुखसुखछतिलाहू
कठिनकरमगतिजानबिधाता जोशुभअशुभसकलफलदाता
ईसरजायसीससबहीके। उतपतथितिलयबिषहुअमीके
देविसोचबससोचियबादी बिधिप्रपंचअसअचलअनादी
भूपतिजिअबमरबउरआनी सोचियसखिलखिनिजहितहानी

सीयमातुकहसत्यसुबानी। सुकृतिअवधिअवधपति

दो॰ लषनरामसियजाऊँबनभलपरनामनपोच॥
गहबरिहियकहकौसिलामोहिभरतकरसोच २८

ईसप्रसादअसीसतुम्हारी। सुतसुतवधूदेवसरबारी
रामसपथमैंकीन्हनकाऊ॥ सोकरिकहौंसखीसतभा
भरतसीलगुनबिनयबड़ाई भायपभगतिभरोसभला
कहतसारदहुकरमतिहींचे सागरसीपिकिजाइउली
जानउँसदाभरतकुलदीपा बारबारमोहिकहेउमहीप
कसेकनकमनिपारसपाये पुरुषपरषिआहिंसमवसुभ
अनुचितआजुकहबअसमोरा सोकसनेहसयानपथोरा
सुनिसुरसरिसमपावनबानी भईंसनेहबिकलसबरानी

दो॰ कौशल्याकहैंधीरधरिसुनहुदेविमिथिलेसि॥
कोबिबेकनिधिबल्लभहिंतुमहिंसकैउपदेसि २८

रानिरायसनअवसरुपाई अपनीभांतिकहउसमु
रषअहिंलषनभरतगवनहिंबन जोयहमतमानैमहीपम
तौभलजतनकरवसुबिचारी मोरेंसोचभरतकरभारी
गूढसनेहभरतमनमाहीं॥ रहेंनीकमोहिलागतनाहीं
लषिसुभावसुनिसरलसुबानी सबभईमगनकरुनरसरा
नभप्रसूनझरिधन्यधन्यधुनि सिथलसनेहसिद्धजोगीमु
सबरनिवासबियकिलषिरहेऊ तबधरिधीरसुमित्राकहे
देबिदंडजुगजामिनीबीती राममातुसुनिउठीसप्रीती

दो॰ बेगपायधारियथलौहिं कहसनेहसतभाय।
हमरेतोअबईसगतिकैमिथिलेससहाइ २८४।

लखिसनेहसुनिबचनसभीता। जनकप्रियागहिपांवपुनीता।
देबिउचितअसबिनयतुमारी दशरथघरनिराममहतारी॥
प्रभुअपनेनीचहिंआदरहीं अगिनिधूमगिरिसिरतनधरहीं
सेवकराउकर्मिमनबानी ॥ सदासहायमहेशभवानी
रौरेअंगजोगजगकोहै ॥ दीपसहाइकिदिनकरसोहै
रामजाइबनकरिसुरकाजू अचलअवधपुरकरिहहिंराजू
अमरनागनररामबाहुबल सुखबसिहहिंअपनेअपनेथल
यहसबजागबलिककहिराखा देबिनहोइमुधामुनिभाषा

दो॰ असकहिपगपरिप्रेमअति सियहितबिनयसुनाय
सियसमेतसियमातुतबचलीसुआयसुपाय २८५

टी॰
रा॰ अ॰
२८५

प्रियपरिजनहिंमिलींबैदेही जोजेहियोगभांततसतेही
तापसबेषजानकीदेखी भैसबबिकलबिषादबिशेषी
जनकरामगुरुआयसुपाई चलेथलहिंसियदेखीआई
लीन्हलाइउरजनकजानकी पाहुनिपावनिप्रेमप्राणकी
उरउमगेउअंबुधिअनुरागू। भयउभूपमनमनहुंप्रयागू
सियसनेहबटबाढ़तजोहा तापररामप्रेमशिशुसोहा
चिरंजीविमुनिज्ञानबिकलजनु बूड़तलहेउबालअवलंबनु
मोहमगनमतिनहिंबिदेहकी महिमासियरघुबरसनेहकी

दो॰ सियपितुमातुसनेहबसबिकलनसकीसंभारि

धरनिसुताधीरजधरेउसमउसुधरमबिचारि।

तापसबेषजनकसियदेषी। भएउप्रेमपरितोषबिशेषी
पुत्रिपवित्रकियेकुलदोऊ। सुजसधवलजगुकहसब
जिमिसुरसरिकीरतिसरितोरी गवनुकीन्हबिधिअंडको
गंगअवनिथलतीनबड़ेरे॥ येहिकियसाधुसमाजघने
पितुकहसत्यसनेहसुबानी सीयसकुचिमहिमनहुसमा
पुनिपितुमातुलीन्हउरलाई। सिषआसिषहितदीन्हसु
कहतिनसीयसकुचमनमाहीं इहांबसबरजनीभलनाही
लषिरुषरानिजनायेउराऊ हृदयसराहतसीलसुभाऊ

बारबारमिलिभेंटिसियबिदाकीन्हसनमानि॥
कहीसमयसिरभरतगतिरानिसुबानिसयानि

सुनिभूपालभरतब्यौहारू सोनसुगंधसुधाससिसा
मूंदेसजलनयनपुलकेतन। सुजससराहनलगेमुदितम
सावधानसुनुसुमुखिसुलोचनि भरतकथाभवबंधबिमोच
धर्मराजनयब्रह्मबिचारू। यहांयथामतिमोरप्रचारू
सोमतिमोरिभरतमहिमाहीं कहइकाहछलिनछुअतिन
बिधिगनपतिअहिपतिशिवसारद कबिकोबिदबुधबुद्धिबि
भरतचरितकीरतिकरतूती। धरमसीलगुनबिमलबिभू
समुझतसुनतसुखदसबकाहू सुचिसुरसरिरुचिनिदरसु

निरवधिगुननिरुपमपुरुषभरतभरतसमजानि।

कहियसुमेरुकिसेरसमकविकुलमतिसकुचानि

अगमसबहिबरनतबरबरनी। जिमिजलहीनमीनगमधरनी।
भरतअमितमहिमासुनरानी जानहिंरामनसकहिंबखानी
बरनिसप्रेमभरतअनुभाऊ। तियजियकीरुचिलषिकहराऊ
बहुरहिंभरतलषनबनजाहीं सबकरभलसबकेमनमाहीं
देबिपरंतुभरतरघुबरकी। प्रीतिप्रतीतिजाइनहिंतरकी
भरतअवधिसनेहममताकी जद्यपिरामसींवसमताकी।
परमारथस्वारथसुखसारे भरतनसपनेहुंमनहुंनिहारे॥
साधनसिद्धिरामपगनेहू॥ मोहिलषिपरतभरतमतएहू

भोरहुंभरतनपेलिहहिंमनसहुंरामरजाइ ॥
करियनसोचसनेहबसकहेउभूपबिलषाइ २८९

रामभरतगुनगनतसप्रीती। निसिदंपतिहिपलकसमबीती
राजसमाजप्रातजुगजागे॥ न्हाइन्हाइसुरपूजनलागे॥
गेनहाइगुरुपहंरघुराई॥ बंदिचरनबोलेरुषपाई॥
नाथभरतपुरजनमहतारी सोकबिकलबनबासदुखारी
सहितसमाजराजमिथिलेसू बहुतदिवसभेसहितकलेसू
उचितहोइसोकीजियनाथा। हितसबहीकररौरेहाथा॥
असकहिअतिसकुचेरघुराऊ मुनिपुलकेलषिसीलसुभाऊ
तुमबिनुरामसकलसुखसाजा। नरकसरिसदुहुंराजसमाजा।

दो॰ प्रानप्रानकेजीवकेजियसुखकेसुखराम ।
तुमतजितातसुहातगृहजिन्हहिंतिन्हहिंबिधिबाम

सोसुखधरमकरमजरिजाऊ जहँनरामपदपंकजभाऊ॥
जोगकुजोगग्यानअग्यानू। जहँनहिंरामप्रेमपरिधानू॥
तुमबिनुदुखीसुखीतुमतेही। तुमजानहुजियजोजेहिके
राउरआयसुसिरसबहीके। बिदितकृपालहिगतिसब
आपुआस्रमहिंधारियपाऊ भएउसनेहसिथलमुनिराऊ
करिप्रनामतबरामसिधाए रिषिधरिधीरजनकपहँआ
रामबचनगुरनृपहिंसुनाए। सीलसनेहसुभायसुभाए
महाराजअबकीजियसोई। सबकरधरमसहितहितहो

दो॰ज्ञाननिधानसुजानसुचिधरमधीरनरपाल॥
तुमबिनुअसमंजससमनकोसमरथएहिकाल२५४

सुनिमुनिबचनजनकअनुरागे लखिगतिज्ञानबिरागुबिरा
सिथलसनेहगुनतमनमाहीं। आएइहांकीन्हभलनाहीं॥
रामहिरायकहेउबनजाना। कीन्हआपुप्रियप्रेमप्रवा
हमअबबनतेंबनहिंपठाई। प्रमुदितफिरबबिबेकबड़ा
तापसमुनिमहिसुरगतिदेखी भएप्रेमबसबिकलबिसे
समउसमुझिधरिधीरजराजा चलेभरतपहिंसहितसमा
भरतआइआगेभइलीन्हे॥ अवसरसरिससुआसनदी
तातभरतकहतेरहुतिराजा तुमहिंबिदितरघुबीरसुभा

दो॰रामसत्यब्रतधरमरतसबकरसीलसनेह॥
संकटसहतसकोचबसकहियजोआयसुदेह२५५

सुनितनपुलकनयनभरिबारी बोलेभरतधीरधरिभारी॥

प्रभुप्रियपूज्यपितासमआपू कुलगुरसमहितमायनबापू
कौसिकादिमुनिसचिवसमाजू ग्यानअंबुनिधिआपुनआजू
सिसुसेवकआयसुअनुगामी जानिमोहिसिखदेइयस्वामी।
एहिसमाजथलबूझबराउर मनमलीनमैंबोलबबाउर
छोटेबदनकहौंबड़िबाता। छमबतातलषिबामबिधाता।
आगमनिगमप्रसिद्धपुराना। सेवकधरमकठिनजगुजाना।
स्वामिधरमस्वारथहिबिरोधू बैरुअंधप्रेमहिनप्रबोधू॥

दो॰ राषिरामरुषधरमब्रतपराधीनमोहिजान॥
सबकेसंबतसर्बहितकरियप्रेमपहिचान २९७

भरतबचनसुनिदेषिसुभाऊ सहितसमाजसराहतराऊ
सुगमअगममृदुमंजुकठोरे अरथअमितअतिआखरथोरे
ज्यौंमुखमुकरमुकरनिजपानी गहिनजाइअसअद्भुतबानी
भूपभरतमुनिसाधुसमाजू गेजहँबिबुधकुमुदद्विजराजू
सुनसुधिसोचबिकलसबलोगा मनहुँमीनगननवजलजोगा
देवप्रथमकुलगुरगतिदेषी। निरषिबिदेहसनेहबिसेषी।
रामभगतिमयभरतनिहारे सुरस्वारथीहहरिहियहारे
सबकोउरामप्रेममयपेषा। भएअलेषसोचबसलेषा

दो॰ रामसनेहसकोचबसकहससोचसुरराज॥
रचहुप्रपंचहिपंचमिलिनाहितभयेउअकाज ९८

सुरन्हसुमिरिसारदासराही देविदेवसरनागतपाही॥
फेरिभरतमतिकरिनिजमाया। पालबिबुधकुलकरिछलछाया।

बिबुधबिनयसुनिदेबिसयानी बोलीसुरस्वारथजड़जानी ॥
मोसनकहहुभरतमतिफेरू लोचनसहसनसूझसुमेरू ॥
बिधिहरिहरमायाबड़िभारी सोउनभरतमतिसकइनिहारी
सोमतिमोहिकहतकरुभोरी चंदनिकरकिचंडकरचोरी
भरतहृदयसियरामनिवासू तहँकितिमिरजहँतरनिप्रकासू
असकहिसारदगईबिधिलोका बिबुधबिकलनिसिमानहुंकोका

दो॰ सुरस्वारथीमलीनमनकीन्हकुमंत्रकुठाटु ॥
रचिप्रपंचमायाप्रबलभयभ्रमअरतिउचाटु २९५ ।

करिकुचालसोचतसुरराजू । भरतहाथसबकाजअकाजू
गयेजनकरघुनाथसमीपा । सनमानेसबरघुकुलदीपा ॥
समयसमाजधर्मअविरोधा बोलेतबरघुबंशपुरोधा ॥
जनकभरतसंबादसुनाई ॥ भरतकहावतकहीसुहाई ॥
तातरामजसआयसुदेहू सोसबकरइमोरमतएहू ॥
सुनिरघुनाथजोरिजुगपानी बोलेसत्यसरलमृदुबानी ॥
बिद्यमानआपुनमिथिलेसू मोरकहबसबभांतिभदेसू
राउरराय रजायसुहोई राउरिसपथसहीसिरसोई

रामसपथसुनिमुनिजनकसकुचेसभासमेत ॥
सकलबिलोकतभरतमुखबनइनउतरुदेत २९६

सभासकुचबसभरतनिहारी रामबंधुधरिधीरजभारी ।
कुसमउदेखिसनेहसंभारा बढ़तबिंधजिमिघटजनिवारा
सोककनकलोचनमतिछोनी हरीबिमलगुनगनजगजोनी

भरतबिबेकबराहुबिसाला। अनायासउधरीतेहिकाला।
करिप्रनामसबकहँकरजोरें रामराउगुरसाधुनिहोरे *॥
छमबआजअतिअनुचितमोरा। कहउँबदनमृदुबचनकठोरा॥
हियेसुमरिसारदासुहाई। मानसतेंमुखपंकजआई॥
बिमलबिबेकधरमनयसाली। भरतभारतीमंजुमराली॥

दो० निरषिबिबेकबिलोचनन्हिसिथिलसनेहसमाज
करिप्रनामबोलेभरतसुमरिसीयरघुराज २९७।

प्रभुपितुमातुसुहृदगुरस्वामी पूज्यपरमहितअंतरजामी।
सरलसुसाहिबसीलनिधानू। प्रनतपालसरबज्ञसुजानू।
समरथसरनागतहितकारी गुनगाहकअवगुनअघहारी
स्वामिगोसाँईहिसरिसगोसाँई मोहिसमानमैंसाँईदोहाई
प्रभुपितुबचनमोहबसपेली आएउँइहाँसमाजसकेली।
जगभलपोचऊँचअरुनीचू अमिअमरपदमाहुरमीचू
रामरजाइमेटमनमाहीं। देखासुनाकतहुँकोउनाहीं
सोमैंसबबिधिकीन्हढिठाई प्रभुमानीसनेहसेवकाई॥

दो० कृपाभलाईआपनीनाथकीन्हभलमोर
दूषनभेभूषनसरिससुजससुचारुचहुँओर २९८

राउरिरीतिसुबानिबड़ाई॥ जगतबिदितनिगमागमगाई।
कूरकुटिलखलकुमतिकलंकी नीचनिसीलनिरीसनिसंकी
तेउसुनिसरनसामुहेंआये सकृतप्रनामकियेअपनाये
देखिदोषकबहुँउरआने। सुनिगुनसाधुसमाजबखाने।

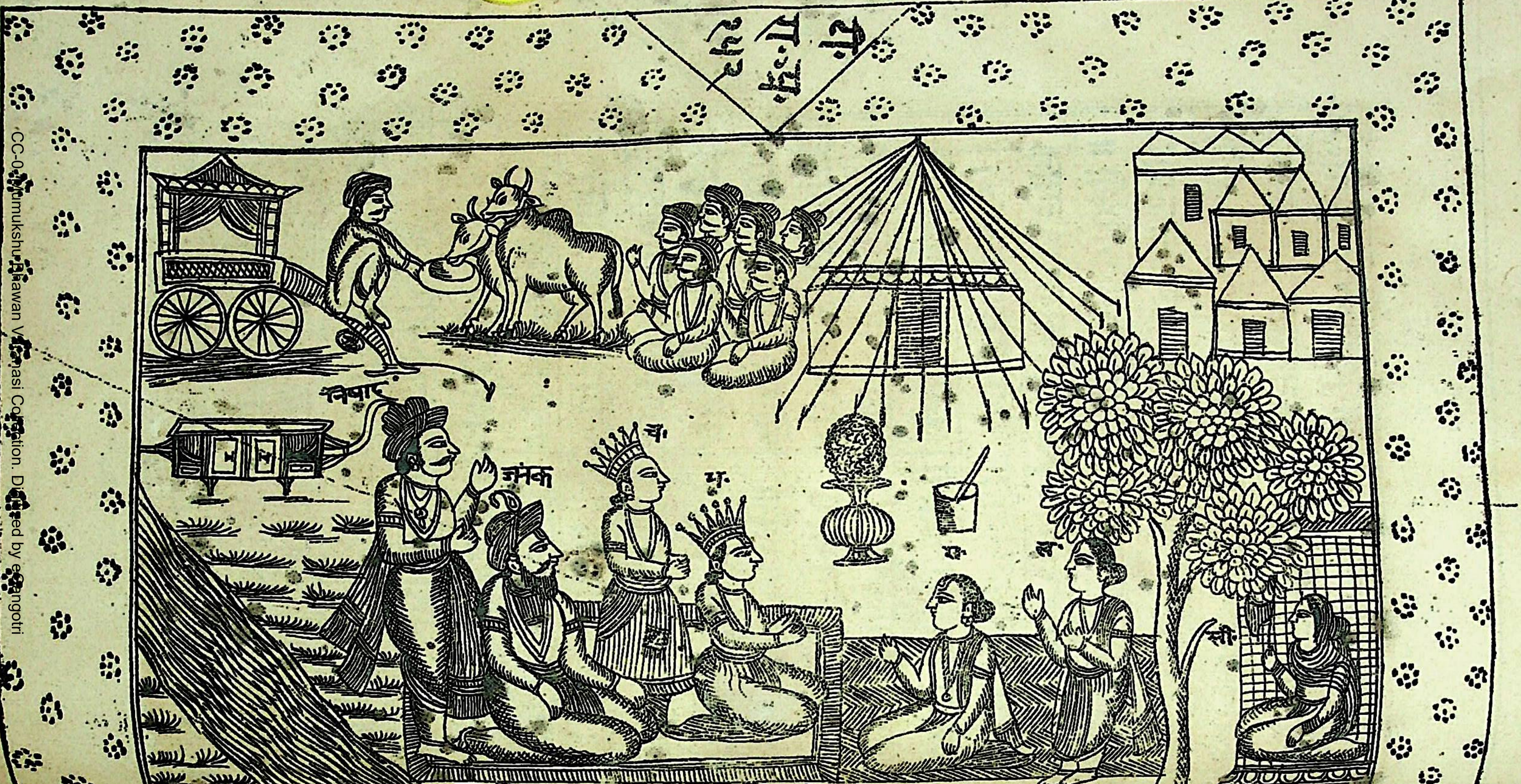
टी॰
रा॰ पृ॰
२५२
निषाद
जनक
भ॰
श॰
रा॰
ल॰
सी॰

भरतादिक रामलक्ष्मणको मनावने जाये
और पीछेसे राजा जनकजी आये ॥

कोसाहबसेवकहिंनिवाजी। आपुसमाजसाजसबसाजी।
निजकरतूतिनसमुझिअसपने सेवकसकुचसोचउरअपने
सोगोसाइँनहिंदूसरकोपी। भुजाउठायकहौंपनरोपी॥
पसुनाचतसुकपाठप्रबीना। गुनगतिनटपाठकआधीना।

दो. यौंसुधारिसनमानिजन कियेसाधुसिरमौर॥
कोकृपालबिनुपालिहैबिरदावलिबरजोर २९९

सोकसनेहकिबालसुभायें आयेउँलाइरजायसुबायें॥
तबहुँकृपालहेरिनिजओरा सबहिंभांतिभलमानेउमोरा
देखेउँपायसुमंगलमूला। जानेउँस्वामिसहजअनुकूला
बड़ेसमाजबिलोकेउँभागू बड़ीचूकसाहिबअनुरागू।
कृपाअनुग्रहअंगुअघाई॥ कीन्हिकृपानिधिसबअधिकाई
राखामोरदुलारगोसाँई॥ अपनेसीलसुभायभलाई॥
नाथनिपटमैंकीन्हिढिठाई। स्वामिसमाजसकोचबिहाई
अबिनयबिनयजथारुचिबानी छमिहिदेवअतिआरतजानी

टी. श्र. २५३

दो. सुहृदसुजानसुसाहिबहिंबहुँनकहतबड़खोरि
आयसुदेइअदेवअबसबइसुधारीमोरि॥ ३००॥

प्रभुपदपदुमपरागदोहाई सत्यसुकृतसुखसीवसुहाई
सोकरिकहौंहियेअपनेकी रुचिजागतसोवतसपनेकी
सहजसनेहस्वामिसेवकाई स्वारथछलफलचारिबिहाई
अग्यासमनसुसाहिबसेवा। सोप्रसादजनुपावइदेवा॥
असकहिप्रेमबिबसभाभारी पुलकशरीरबिलोचनबारी

प्रभुपदकमलगहेअकुलाई। समयसनेहुनसोकहिजाई
कृपासिंधुसनमानिसुबानी। बैठायेसमीपगहिपानी॥
भरतबिनयसुनिदेषिसुभाऊ। सिथलसनेहसभारघुराऊ

छं॰ रघुराउसिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी।
मनमहुंसराहतभरतभायपभगतकीमहिमाघनी॥
भरतहिंप्रसंसितबिबुधबरषतसुमनमानसमलिनसे
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचेनिसागमनलिनसे
सोरठा। देषिदुषारीदीनदुहुंसमाजनरनारिसब॥
मघवामहामलीन मुयेहिमार मंगलचहत ३०१।

कपटकुचालिसींवसुरराजू। पर अकाजप्रियआपनका
काकसमानपाकरिपुरीती। छलीमलीनकतहुंनप्रतीती
प्रथमकुमतिकरिकपटसंकेला। सोउचाटुसबकेसिरमेला
सुरमायासबलोगबिमोहे। रामप्रेमअतिसैनबिछोहे।
भयउचाटबसमनथिरनाहीं। छनबनरुचिछनसदनसुहाहीं
दुबिधमनोगतिप्रजादुषारी। सरितसिंधुसंगमजनुबारी।
दुचितकतहुंपरितोषनलहहीं। एकएकसनमरमुनकहहीं
लषिहियंहंसिकहकृपानिधानू। सरिसस्वानमघवानजवानू

दो॰ भरतजनकमुनिगनसचिवसाधुसचेतबिहाइ
लगीदेवमायासबहिंजथाजोगजनपाइ ३०२

कृपासिंधुलषिलोगदुषारे। निजसनेहसुरपतिछलभारे
सभाराउगुरमहिसुरमंत्री। भरतभगतिसबकेमतिजंत्री

रामहि चितवत चित्र लिखे से सकुचत बोलत बचन सिखे से
भरत प्रीति नति बिनय बड़ाई। सुनत सुखद बरनत कठिनाई
जासु बिलोकि भगति लवलेसू प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू
महिमा तासु कहइ किमि तुलसी भगति सुभाव सुमति हिय हुलसी।
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी कबिकुल कानि मानि सकुचानी
कहि न सकति गुन रुच अधिकाई मति गति बाल बचन की नाई

दो॰ भरत बिमल जस बिमल बिधु सुमति चकोर कुमारि
उदित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि ३०३

भरत सुभाउ न सुगम निगमहू लघु मति चापलता कबि छमहू
कहत सुनत सति भाउ भरत को सीय राम पद होइ न रत को॥
सुमिरत भरतहि प्रेम राम को जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को
देखि दयाल दसा सबही की। राम सुजान जानि जन जी की॥
धरम धुरीन धीर नय नागर। सत्य सनेह सील सुख सागर
देस काल लखि समय समाजू नीति प्रीति पालक रघुराजू
बोले बचन बानि सरबसु से। हित परिनाम सुनत ससि रस से
तात भरत तुम धरम धुरीना। लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना॥

दो॰ करम बचन मानस बिमल तुम समान तुम तात
गुरु समाज लघु बंधु गुन कुसमय किमि कहि जात ३०४

जानहु तात तरनि कुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती
समउ समाज लाज गुरजन की उदासीन हित अनहित मन की
तुमहिं बिदित सबही कर करमू आपन मोर परम हित धरमू

टी॰
रा॰अ॰
२५६

मोहिसबभांतिभरोसतुमारा तदपिकहौंअवसरअनुसा
नाथतातबिनुबातहमारी। केवलगुरकुलकृपासंभारी
नतरुप्रजापुरजनपरिवारू हमहिंसहितसबहोतखुवा
जौंबिनुअवसरअथवदिनेसू जगकेहिकहहुनहोइकलेसू
तसउतपाततातबिधिकीन्हा मुनिमिथिलेसराषसबली

दो॰ राजकाजसबलाजपतिधरमधरनिधनधाम
गुरुप्रभावपालिहिसबहिभलहोइहिपरिनाम ३०५

सहितसमाजतुमारहमारा। घरबनगुरप्रसादरषवारा॥
मातुपितागुरस्वामिनिदेसू सकलधरमधरनीधरसेसू।
सोतुमकरहुकरावहुमोहू। ताततरनिकुलपालकहोहू॥
साधकएकसकलसिधदेनी कीरतिसुगतिभूतिमयबेनी॥
सोबिचारिसहसंकटभारी करहुप्रजापरिवारुसुषारी।
बांटीबिपतिसबहिमोहिभाई तुमहिंअवधिभरिबड़िकठना
जानितुमहिंमृदुकहहुंकठोरा कुसमयतातनअनुचितमो
होहिंकुठायसुबंधुसहाये॥ ओड़ियहिहाथअसनिहुकेघा

दो॰ सेवकपरकारनयनसेमुखसेसाहिबहोइ॥
तुलसीप्रीतिकीरीतिसुनिसुकविसराहहिंसोइ ३०६

सकलसभासुनिरघुबरबानी प्रेमपयोधिअमियजनुसा
सिथलसमाजसनेहसमाधी देषिदसाचुपसारदसाधी
भरतहिंभयउपरमसंतोषू। सनमुखस्वामिबिमुखदुखदो
मुखप्रसन्नमनमिटाबिषादू भाजनुगूंगहिंगिराप्रसादू।

कीन्हसप्रेमप्रनामबहोरी। बोलेपानिपंकरुहजोरी॥
नाथभयउसुखसाथगएको लहेउलाहुजगजनमभएको
अबकृपालजसआयसुहोई करउंसीसधरिसादरसोई।
सोअवलंबदेवमोहिदेई॥ अवधिपारपावउंजेहिसेई॥

दो· देवदेवअभिषेकहितगुरुअनुसासनपाइ॥
आनेउंसबतीरथसलिलतेहिकहँकहारजाइ ३०७।

एकमनोरथबड़मनमाहीं॥ सभयसकोचजातकहिनाहीं
कहहुतातप्रभुआयसुपाई। बोलेबानिसनेहसुहाई॥
चित्रकूटमुनिथलतीरथबन खगमृगसरिसरनिर्झरगिरिगन
प्रभुपदअंकितअवनिबिशेषी आयसुहोइतौआवउंदेखी॥
अवसिअत्रिआयसुसिरधरहू तातबिगतभयकाननचरहू
मुनिप्रसादबनमंगलदाता। पावनपरमसुहावनभ्राता।
रिषिनायकुजहँआयसुदेहीं राखेउतीरथजलथलतेहीं॥
सुनिप्रभुबचनभरतसुखपावा। मुनिपदकमलमुदितसिरनावा

टी·
रा· अ·
२५१

दो· रामभरतसंबादसुनिसकलसुमंगलमूल॥
सुरस्वारथीसराहिकुलबरषहिंसुरतरुफूल॥

धन्यभरतजयरामगोसांई कहतदेवहरषतबरिआंई
मुनिमिथिलेससभासबकाहू भरतबचनसुनिभयेउछाहू
भरतरामगुनग्रामसनेहू। पुलकिप्रशंसितराउबिदेहू
सेवकस्वामिसुभावसुहावन नेमप्रेमअतिपावनपावन
मतिअनुसारसराहनलागे। सचिवसभासदसबअनुरागे

सुनिसुनिरामभरतसंबादू। दुहुंसमाजहियहरषबिषादू
राममातुसुखदुखसमजानी कहिगुनदोषप्रबोधीरानी॥
एककहहिंरघुबीरबड़ाई। एकसराहतभरतभलाई॥

दो॰ अत्रिकहेउतबभरतसनसैलसमीपसुकूप।
राषियतीरथतोयकहँ पावनअमितअनूप २०९

भरतअत्रिअनुशासनपाई जलभाजनसबदियेचलाई॥
सानुजआपअत्रिमुनिसाधू सहितगएजहँकूपअगाधू॥
पावनपाथपुन्यथलराषा॥ प्रमुदितप्रेमअत्रिअसभाषा
तातअनादिसिद्धथलएहू। लोपेउकालबिदितनहिंकेहू
तबसेवकन्हसरसथलदेषा कीन्हसुजलहितकूपबिशेषा
बिधिबसभएउबिश्वउपकारू सुगमअगमअतिधरमबिचारू
भरतकूपअबकहिहहिंलोगा अतिपावनतीरथजलजोगा॥
प्रेमसनेमनिमज्जतप्रानी। होइहहिंबिमलकरममनबा

दो॰ कहतकूपमहिमासकलगएजहाँरघुराउ ॥
अत्रिसुनाएउरघुबरहिंतीरथपुन्यप्रभाउ ३१०॥

कहतधरमइतिहाससप्रीती भएउभोरनिसिसोसुषबीती
नित्यनिबाहभरतदोउभाई रामअत्रिगुरआयसुपाई॥
सहितसमाजसाजसबसादे चलेरामबनअटनपयादे॥
कोमलचरनचलतबिनुपनहीं भइमृदुभूमिसकुचमनमनहीं
कुसकंटककाँकरीकुराई॥ कटुककठोरकुबस्तुदुराई॥
महिमंजुलमृदुमारगकीन्हे बहतसमीरत्रिबिधसुषलीन्हे

सुमनबरषिसुरघनकरिछांहीं बिटपफूलफलतृनमृदुताहीं
मृगबिलोकिखगबोलिसुबानी सेवहिंसकलरामप्रियजानी

दो· सुलभसिद्धिसबप्राकृतहुरामकहतजमुहात
रामप्रानप्रियभरतकहुँ यहनहोइबड़िबात ३११

एहिबिधिभरतफिरतबनमांहीं नेमुप्रेमुलखिमुनिसकुचाहीं
पुन्यजलाश्रयभूमिबिभागा। खगमृगतरुतृनगिरिबनबागा
चारुबिचित्रपवित्रबिशेषी। बूझतभरतदिब्यसबदेषी॥
सुनिमनमुदितकहतरिषिराऊ हेतुनामगुनपुन्यप्रभाऊ॥
कतहुंनिमज्जनकतहुंप्रनामा कतहुंबिलोकतमनअभिरामा
कतहुंबैठिमुनिआयसुपाई सुमिरतसीयसहितदोउभाई
देषिसुभाउसनेहुसुसेवा। देहिंअसीसमुदितबनदेवा
फिरहिंगएदिनपहरअढ़ाई प्रभुपदकमलबिलोकहिंआई

दो· देखेथलतीरथसकलभरतपांचदिनमांझ
कहतसुनतहरिहरसुजसगयउदिवसभईसांझ।

भोरन्हाइसबजुरासमाजू॥ भरतभूमिसुरतेरहुतिराजू
भलदिनुआजुजानिमनमाहीं रामकृपालकहतसकुचाहीं
गुरुनृपभरतसभाअवलोकी सकुचिरामफिरिअवनिबिलोकी
सीलसराहिसभासबसोची कहुंनरामसमस्वामिसकोची
भरतसुजानरामरुषदेषी। उठिसप्रेमधरिधीरबिशेषी
करिदंडवतकहतकरजोरी राषीनाथसकलरुचिमोरी।
मोहिलगिसबहिंसहेउसंतापू बहुतभांतिदुषपावाआपू।

अबगोसाँइमोहिदेउरजाई। सेवउंअवधअवधिभरजाई

दो॰जेहिउपायपुनिपायजनुदेखइदीनदयाल॥
सोसिषदेइयअवधिलगिकोसलपालकृपाल

पुरजनपरिजनप्रजागोसाईं सबसुचिसरससनेहसगाइ
राउरबदिभलिभवदुषदाहू प्रभुबिनुबादिपरमपदला
स्वामिसुजानुजानसबहीकी रुचिलालसारहनिजनजी
प्रनतपालपालहिंसबकाहू देउदुहूंदिसिओरनिबाहू
असमोहिसबबिधिभूरभरोसो किएबिचारुनसोचषरोसो
आरतिमोरिनाथकरिछोहू दुहुंमिलकीन्हढीठहठि
यहबड़दोषदूरकरस्वामी। तजिसकोचसिषइअअनुग
भरतबिनयसुनिसबहिंप्रसंसी षीरनीरबिवरणगतिहंसी

दो॰दीनबंधुसुनिबंधुकेबचनदीनछलहीन +॥
देसकालअवसरसरसबोलेरामप्रवीन॥ ३१४॥

ताततुम्हारिमोरिपरिजनकी॥ चिंतागुरहिंनृपहिंघरबन
माथेपरगुरमुनिमिथिलेसू॥ हमहिंतुमहिंसपनेहुंनकले
मोरतुम्हारपरमपुरुषारथु॥ स्वारथसुजसधरमपरमा
पितुआयसुपालियदुहुंभाई लोकबेदभलभूपभलाई
गुरपितुमातुस्वामिसिषपाले चलेहुंकुमगपगपरहिंन
असबिचारसबसोचबिहाई पालहुअवधअवधिलगजा
देसकोसपुरजनपरिवारू। गुरपदरजहिंलागछरभा
तुममुनिमातुसचिवसिषमानी पालेहुपुहुमिप्रजारजधा

दो॰ मुषियामुखसोचाहियेषानपानकहुँएक॥
पालइपोषइसकलअंगतुलसीसहितबिबेक।

राजधरमसर्बसयतनोई। जिमिमनमांहिमनोरथगोई
बंधुप्रबोधकीन्हबहुभांती बिनुअधारमनतोषुनसांती
भरतसीलगुरसचिवसमाजू सकुचसनेहबिबसरघुराजू
प्रभुकरिकृपापांवरीदीन्ही सादरभरतसीसधरिलीन्ही
चरनपीठकरुनानिधानके जनुजुगजामिकप्रजाप्रानके
संपुटभरतसनेहरतनके॥ आखरजुगजनुजीवजतनके
कुलकपाटकरकुसलकरमके बिमलनयनसेवासुधरमके।
भरतमुदितअवलंबलहेतें। अससुखजससियरामरहेतें

दो॰ मांगेउबिदाप्रनामकरिरामलियेउरलाइ॥
लोगउचाटेअमरपतिकुटिलकुअवसरपाइ ३१६

सोकुचालिसबकहंभइनीकी अवधिआससमजीवनजीकी
नतरुलषनसियरामबियोगा हहरिमरतसबलोगकुरोगा
रामकृपाअवरेबसुधारी। बिबुधधारभइगुनदगोहारी
भेंटतभुजभरिभाइभरतसौ रामप्रेमरसकहिनपरतसौ।
तनमनबचनउमगअनुरागा धीरधुरंधरधीरजत्यागा॥
बारिजलोचनमोचतबारी देषिदसासुरसभादुषारी।
मुनिगनगुरधुरधीरजनकसे ग्यानअमलमनकसेकनकसे
जेबिरंचिनिरलेपउपाये॥ पदमपत्रजिमिजगजलजाये

तेउबिलोकिरघुबरभरतप्रीतिअनूपअपार।

टी॰
रा॰ अ॰
२६१

भयेमगनमनतनबचनसहितबिरागबिचार ३१

जहांजनकगुरगतिमतिभोरी प्राकृतप्रीतिकहतबड़िखो
बरनतरघुबरभरतबियोगू। सुनिकठोरकबिजानिहिलो
सोसकोचरसअकथसुबानी समउसनेहसुमिरिसकुचा
भेंटिभरतरघुबरसमुझाये। पुनिरिपुदवनहरषिउरला
सेवकसचिवभरतरुषपाई निजनिजकाजलगेसबजा
सुनिदारुनदुखदुहुंसमाजा। लगेचलनकेसाजनसा
प्रभुपदपदुमबंदिदोउभाई चलेसीसधरिरामरजाई
मुनितापसबनदेवनिहोरी सबसनमानिबहोरिब

दो॰लषनहिंभेटिप्रनामकरिसिरधरिसियपदधूरि
चलेसप्रेमअसीससुनिसकलसुमंगलमूरि ३१

सानुजरामनृपहिंसिरनाई कीन्हबहुतबिधिबिनयबड़ा
देवदयाबसबड़दुखपायेउ। सहितसमाजकाननहिंआ
पुरपगुधारियदेइअसीसा कीन्हधीरधरिगवनमहीस
मुनिमहिदेवसाधुसनमाने बिदाकियेहरिहरसमजा
सासुसमीपगएदोउभाई। फिरेबंदिपगआशिषपा
कौसिकबामदेवजाबाली पुरजनपरिजनसचिवसुचा
जथाजोगकरिबिनयप्रनामा बिदाकियेसबसानुजरा
नारिपुरुषलघुमध्यबड़ेरे॥ सबसनमानिकृपानिधिफे

दो॰भरतमातुपदबंदिप्रभुसुचिसनेहमिलिभेंटि
बिदाकीन्हसजिपालकीसकुचसोचसबमेंटि।

पक्ति ८ ८ श्रीं क्लीं ७ ह्रीं॥ बिदाकीन्ह सनमानिस [illegible] भरतचार [illegible] नकरिनम ३१ लौं सम्प्रभुसि [illegible]

परिजन मातु पितहि मिल सीता। फिरी प्रान प्रिय प्रेम पुनीता।
करि प्रनाम भेंटी सब सासू। प्रीति कहत कबि हिय न हुलासू।
सुनि सिष अभिमत आशिष पाई रही सीय दुहु प्रीति समाई।
रघुपति पटु पालकी मँगाई। करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई।
बार बार हिलि मिलि दोउ भाई। सम सनेह जननी पहुंचाई॥
साजि बाजि गज बाहन नाना। भूप भरत दल कीन्ह पयाना।
हृदय राम सिय लषन समेता। चले जाहि सब लोग अचेता॥
बसह बाजि गज पसु हिय हारे। चले जाँहि परबस मन मारे।

दो॰ गुरु गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लषन समेत॥
फिरे हरष बिसमय सहित आए परन निकेत ३२०

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू। चले हृदय बड़ बिरह बिषादू।
कोल किरात भिल्ल बनचारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी।
प्रभु सिय लषन बैठि बट छाँही। प्रिय परिजन बियोग बिलषाहीं।
भरत सनेह सुभाउ सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बषानी।
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी। श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी।
तेहि अवसर षग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना।
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की।
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डर न षरोसो।

दो॰ सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर॥
भगति ग्यान बैराग जनु सोहत धरे शरीर ३२१

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू। राम बिरह सब साज बेहालू।

मानिकिया वासमयषग [illegible] [illegible] मगस्र प्रभु परणकुटीमाँ [illegible] [illegible] नहँदेषन मानिनयरानन

दो॰ रा॰ ग्रं॰ १६३

नैगपढ़व सबनके घरमें मयौर धोसीके [illegible] प्रभुश्री [illegible] कोहे

अष्टभरत समान सब मिथिलेश जन बौधेई बस अयोध्या पुरंबोउठे सर्बकाज राजको भार निमो बंधेन बांधकार मिथिलाको जनकजूगए

हौंभरतजू पादुकाराज सिंहासनपर स्थापितकर आपिप्रारंभे नंदिग्रामको सनेहे प्रेम भाक्तिभाव

टी॰ रा॰ प्र॰ १६४

रामको स्वामित नगरको चाहि अवधसब राजप धिकार पाउका मैं नंदन कारिकालतु अष्टजैसे मनकि अमलरूप मान अवधनेम

प्रभुगुनग्रामगुनतमनमाहीं। सबचुपचापचलेमगजाहीं
जमुनाउतरिपाससबभएऊ। सोबासरबिनुभोजनगयेऊ
उतरिदेवसरिदूसरबासू॥ रामसखासबकीन्हसुपा
सईउतरिगोमतीनहाये॥ चौथेदिवसअवधपुरआ
जनकरहेपुरबासरचारी। राजकाजसबसाजसँवारी
सौंपिसचिवगुरभरतहिंराजू। तिरहुतिचलेसाजसबसा
नगरनारिनरगुरसिषमानी। बसेसुषेनरामरजधानी॥

दो॰ रामदरसलगिलोगसबकरतनेमउपवास।
तजितजिभूषनभोगसुषजिअतअवधकीआस

सचिवसुसेवकभरतप्रबोधे। निजनिजकाजपाइसिषओधे
पुनिसिषदीन्हबोलिलघुभाई। सौंपीसकलमातुसेवकाई
भूसुरबोलिभरतकरजोरे। करिप्रनामबरबिनयनिहो
ऊँचनीचकारजभलपोचू। आयसुदेबनकरबसँको
परिजनपुरजनप्रजाबुलाये। सावधानकरिसुबसबसा
सानुजगेगुरगेहबहोरी॥ करिदंडवतकहतकरजो
आयसुहोइतोरहौंसनेमा बोलेमुनितनपुलकिसप्रे
समुझबकहबकरबतुमजोई धरमसारजगहोइहिसोई

दो॰ सुनिसिषपाइअसीसबड़िगनकबोलिदिनसाधि।
सिंहासनप्रभुपादुकाबैठारेनिरुपाधि ३२३॥

राममातुगुरुपदसिरनाई॥ प्रभुपदपीठिरजायसुपाई
नंदिगाँउकरिपरनकुटीरा॥ कीन्हनिवासधर्मधुरधीरा

श्राश्रय सो मितमार॥ ॥३२४॥ ॥ ॥ रितमानस दीपिका टीका यां अयोध्या कांड प्रसंग स्ता समाप्त॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जटाजूटसिरमुनिपटधारी। महिषनिकुससाथरीसवांरी॥
असनबसनबासनब्रतनेमा। करतकठिनऋषिधरमसप्रेमा॥
भूषनबसनभोगसुखभूरी। मनतनबचनतजेतिनतूरी॥
अवधराजसुरराजसिहाहीं। दशरथधनसुनिधनदलजाहीं॥
तेहिपुरबसतभरतबिनुरागा। चंचरीकजनुचंपकबागा॥
रमाबिलासरामअनुरागी। तजतबमनजिमिजनबड़भागी॥

दो॰ रामप्रेमभाजनभरतबड़ेनएहिकरतूति॥
चातकहंससराहियतटेकबिबेकबिभूति ३२४

देहदिनहिंदिनदूबरहोई। घटनतेजबलमुखछबिसोई॥
नितनवरामप्रेमपनपीना॥ बढ़नधरमदलमननमलीना॥
जिमिजलनिघटतसरदप्रकासे। बिलसतबेतुसबनिजबकासे॥
समदमसंजमनेमउपासा। नषतभरतहियबिमलप्रकासा॥
धुवबिस्वासअवधिराकासी। स्वामिसुरतसुरबीथिबिकासी॥
रामप्रेमबिधुअचलअदोषा। सहितसमाजसोहनितचोषा॥
भरतरहनिसमुझनिकरतूती। भक्तिबिरतिगुनबिमलबिभूती॥
बरननसकलसुकबिसकुचाहीं। सेसगनेसगिरागमुनाहीं॥

टी॰ रा॰ अ॰ २६५

सो॰ नितपूजतप्रभुपांवरी प्रीतिनहृदयसमाति॥
मांगिमांगिआयसुकरतराजकाजबहुभांति ३२५

पुलकगातहियसियरघुबीरू। जीहनामजपुलोचननीरू॥
लषनरामसियकाननबसहीं। भरतभवनबसितपतनुकसहीं॥
दोउदिसिसमुझिकहतसबलोगू। सबबिधभरतसराहनजोगू॥

चौपाई छंद दोहादि को टीक॥

श्लो॰	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
२	२६१६	१३	१३	३२५

सुनिब्रतनेमुसाधुसकुचाहीं देखिदसामुनिराजलजाहीं
परमपुनीतभरतआचरनू। मधुरमंजुमुदमंगलकरनू
हरनकठिनकलिकलुषकलेसू महामोहनिसिदलनदिनेसू
पापपुंजकुंजरमृगराजू। समनसकलसंतापसमाजू
जनरंजनभंजनभवभारू॥ रामसनेहसुधाकरसारू

छं· सियरामप्रेमपियूषपूरनहोतजनमनभरतको॥
मुनिमनअगमजमनियमसमदमबिषमब्रतआचरतको।
दुखदाहदारिददंभदूषनसुजसमिसअपहरतको।
कलिकालतुलसीसेसठहिंहठिरामसन्मुखकरतको॥

सो· भरतचरितकरिनेमुतुलसीजोसादरसुनहिं॥
सीयरामपदप्रेमअवसिहोइभवरसबिरति ३२६॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने
बिमलबैराग्यसंपादनोनामद्वितीयःसोपानः॥२॥

मतबअहिंदप्रे
समेंप्यारे
लाल
के

श्रीगणेशाय नमः। अथ अरण्यकांड प्रसंग लिख्यते॥ श्लोक १ ॥ टीका॥ मूलंधर्मतरो अद उसाराम गुसाईं० ताको अर्थलिखतहैं मूलंधर्मतरो रीतिश्रीरामभूपकोप्रियसंकर जिनकोमैंप्रनाम करतहौंकैसेहैं शंकरधर्मवृक्ष केमूलहैं अरु बिबेकसागर केबढ़ावनको पूर्णचंद्र अरु आनंददायक अरुवैराग्य कमलकेबिकाश करिबेकोसूर्यपाप रूपसघनअंधका

टी॰ रा॰ अर॰ १

रकेनाशक अरुसंसारतापके हर्तामोहरूपमेघ समूहकोउड़ावने कौपवनहैं ब्रह्म श्रीरामकुलको नबंधुआदिहैं तिनकोअरुक लंककेहरीवाले हैं॥ १॥

वामनावतारकी मूर्ति

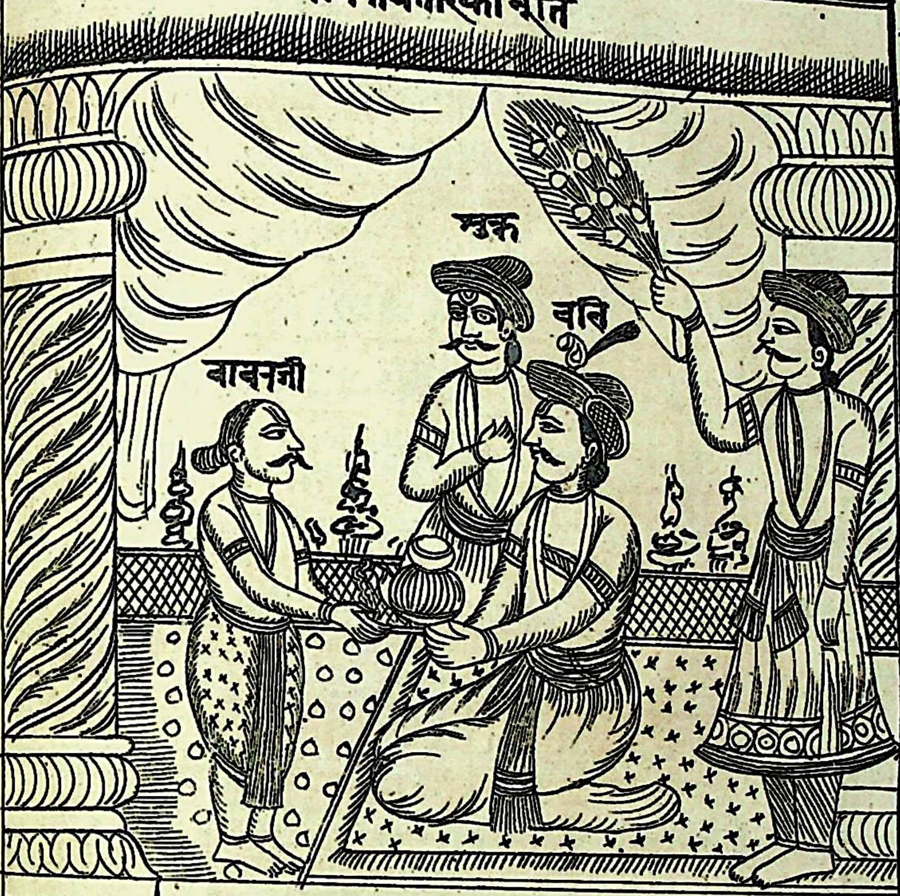

अथ अरण्यकांडः ३

श्रीगणेशायनमः श्लोक। मूलंधर्मतरोर्बिबेकजलधेःपूर्णेंदुमानंददं बैराग्यांबुजभास्करंह्यघघनंध्वांतापहंतापहं मोहांभोधरपूगपाटनबिधौस्वःसंभवंशंकरं बंदेब्रह्मकुलंकलंकशमनंश्रीरामभूपप्रियं १ सांद्रानंदपयोदसौभगतनुंपीतांबरंसुंदरं पाणौबाणशरासनंकटिलसत्तूणीरभारंबरं राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेनसंशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतंपथि

मू०।

सांद्रानंदेति। रामाजानकीज तीरूकेश्राप्त रामबल्लभ हुए रामकोमैंप्रनाम गुहेंकैसेहैं। राघव सघन आनंदह्रद श्रथसमूह मध्वं नवगुरुमेघके

कोमल
पीतांबरको
धारणकिये
गतिशोभितहै
युगःश्यामो
धनुषबाण
हैःकरमो
शोभितहैं नं
श्यामकोभार
नीलकेकमल
समानविशाल
लोचनहैं ग्रंक
धारणाकीनें
जयन्तहैं
श्रीशोभित
है पुनः सीता
लक्ष्मणसमेत
बनमार्गमोबिच
रतेहैं॥ १॥
सोरठा॥
उमारामगुनगूढ़
महदेवजीकिपार्व
तीप्रतिरामचंद्र
केगुनप्रतिअर्थ
हैंमर्मलोमराहते
टी॰
रा॰ प्रा॰
१५६८

॥ गतंरामाभिरामंभजे २

सो॰ उमारामगुनगूढ़पंडितमुनिपावहिंबिरति ॥
पावहिंमोहबिमूढ़जेहरिबिमुखनधर्मरति १ ॥

पूरनभरतप्रीतिमैंगाई १ ॥ मतिअनुरूपअनूपसोहाई
अबप्रभुचरितसुनहुअतिपावन करतजेबनसुरनरमनभावन
एकबारचुनिकुसुमसुहाये । निजकरभूषनरामबनाये॥
सीतहिंपहिरायेप्रभुसादर । बैठेफटिकसिलापरसादर
सुरपतिसुतधरिबायसबेषा सठचाहतरघुपतिबलदेषा
जिमिपिपीलिकासागरथाहा महामंदमतिपावनचाहा॥
सीताचरनचोंचहतभागा । मूढ़मंदमतिकारनकागा॥
चलारुधिररघुनायकजाना सींकधनुषसायकसंधाना

दो॰ अतिकृपालरघुनायकसदादीनपरनेह १ ॥
तासनआइकीन्हछलमूरखअवगुनगेह ॥ २ ॥

प्रेरितमंत्रब्रह्मसरधावा । चलाभाजिबायसभयपावा
धरिनिजरूपगयउपितुपाहीं रामबिमुखराखातेहिनाहीं
भानिरासउपजामनत्रासा यथाचक्रभयरिषिदुर्बासा
ब्रह्मधामशिवपुरसबलोका। फिराश्रमितब्याकुलभयशोका
काहुबैठनकहानवोही १ ॥ राषिकोसकैरामकरद्रोही
मातुमृत्युपितुसमनसमाना सुधाहोइबिषसुनुहरिजाना
मित्रकरैशतरिपुकैकरनी । ताकहँबिबुधनदीबैतरनी॥
सबजगताहिअनलहुतेताता जोरघुबीरबिमुखसुनुभ्राता

प्रभुकेनामानत
काकबिलपाहि
बचिहैबिमुख
नपंडितनकोब
रामहितहैंसो
आहितबधसब
आवकोकारण
हैपदसमूह
अहहारबिमुख
निबधोमोहप
कहैंरामक
आबिधाता
कृपाहियाता
हमहेतकोश्रुत
अनुरागवाही
पृ॰ ७ चौ॰ ६
सो॰ २ चौ॰ ५
दो॰ २०॥
पुनरभरत
प्रगाधराज
चौ॰ अ॰ भई
माली॰ पुर
बाबा

नारद देषा बिकल जयंता। लागि दया कोमल चित संता॥
पठवा तुरत राम पहि ताही। कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयाल रघुराई॥
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मै मतिमंद जानि नहि पाई॥
निज कृत कर्म जनित फल पाएऊँ। अब प्रभु पाहि सरन तकि आएऊँ॥
सुनि कृपाल अति आरत बानी। एकनयन करि तजा भवानी॥

सो॰ कीन्ह मोह बस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित
प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल रघुबीर सम।२॥

रघुबर चित्रकूट बसि नाना। चरित किये श्रुति सुधा समानी॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहि मोहि जाना॥
सकल मुनिन सन बिदा कराई। सीता सहित चले दोउ भाई॥
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गएऊ। सुनत महामुनि हर्षित भएऊ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देषि राम आतुर चलि आए॥
करत दंडवत मुनि उर लाए। प्रेम बारि दोउ जन अन्हवाए॥
देषि राम छबि नैन जुड़ाने। सादर निज आश्रम तब आने॥
करि पूजा कहि बचन सुहाए। दिये मूल फल प्रभु मन भाए॥

सो॰ प्रभु आसन आसीन भरि लोचन शोभा निरष

अरु भरतजू की प्रेम की अरु श्रीराम जी की वनग मन वर्णन क रते हैं एक स मय सीता की शृंगार फूल न से बनाई कर फटिक शिला पर बिराजत भा
तहां काक रू
गा की भाव
इंद्र का के प्र
मान काक व
मान पाना ग्र
सीता जी को छ
जयंत वाहां मय
नं सीता जू को च
वा चोंच नं
छल कै मारयो

टी॰
रा॰ अ॰
३

बाली भाति उर्व
साम्रपियेक मा
नपढर्निवक
कभयते नाना
लोकधर्मनिर
भायहकथाव
मारसहित भा
नवतिकेनवम
कांधमो हैं उन
नारदउपदेशतें
प्रभुअसरलछा
दीननप्रशाला
गनपालकी नैनकी
पुंज नैनकी
उपदेशवकी उ
विधकाहुना
लैकी कानेन
कीकैकैनयौ
प्रतिविषेप
प्रबंडनवाहि
तकारि

मुनिबरपरमप्रवीनजोरिपानिअस्तुतिकरत ॥
छं॰ नमामिभक्तबत्सलंकृपालुशीलकोमलम ॥
भजामितेपदांबुजंअकामिनांस्वधामदम ॥
निकामस्यामसुंदरंभवांबुनाथमंदरम ॥
प्रफुल्लकंजलोचनंमदादिदोषमोचनं ॥ २ ॥
प्रलंबबाहुबिक्रमंप्रभोप्रमेयबैभवम २ ॥
निषंगचापसायकंधरंत्रिलोकनायकं ॥ ३ ॥
दिनेशबंशमंडनंमहेशचापखंडनम ॥ २ ॥
मुनींद्रसंतरंजनंसुरारिबृंदभंजनम ॥ ४ ॥
मनोजबैरिबंदितंअजादिदेवसेवितम ॥
बिशुद्धबोधबिग्रहंसमस्तदूषणापहं ५
नमामिइंदिरापतिंसुखाकरंसतांगतिं ॥
भजेसशक्तिसानुजंशचीपतिप्रियानुजं ६।
त्वदंघ्रिमूलजेनराःभजंतिहीनमत्सराः ॥
पतंतिनोभवार्णवेबितर्कबीचिसंकुले ७।
बिबिक्तबासनाःसदाभजंतिमुक्तयेमुदा ॥
निरस्यइंद्रियादिकंप्रयांतितेगतिंस्वकं ८
तमेकमद्भुतंप्रभुंनिरीहमीश्वरंबिभुं २ ॥
जगद्गुरुंचशाश्वतंतुरीयमेवकेवलम ९ ॥
भजामिभाववल्लभंकुयोगिनांसुदुर्लभं ॥
स्वभक्तकल्पपादपंसमस्तसेव्यमन्वहं १०

बड्जन
समागम
गौरिब
सम्मुनतै
बलनभए
अतिउत
तैसेंहदो
गस्तउरया
संबादभौ
उपकारार्थ
सुन: सप्रसंग
कीगतिहै
बिराधको
बाधकै घ
तोरूनतेभंट
बाकोसंगलै
अगस्तजूके
आश्रमगए
निवासार्थप्र
न्दंडकबन
पावनार्थहै
तृतीयो कि
री:
सं: प्रार:
४
अरजानाम
शुक्रकीकन्या
तासोंबलातें
अबरजानादंड
अशुद्धकियो
तबशुक्राचार्य
राजाकोघार
शापदियाता
तेंभस्महोगया
सोईदंडकबन
भयोताकोउद्धार
हैउत्कृष्टमार्ग
जिसपुतंमित्र
ताकोरिपुदंड
कृपाजाकुकी
बनायसकल
भार ॥ २३॥

अनूपरूपभूपतिंनतोहमुर्विजापतिं ५ ॥
प्रसीदमेनमामितेपदाब्जभक्तिदेहिमे ११
पठंतियेस्तवंइदंनरादरेणतेपदम् ॥ ५ ॥
ब्रजंतिनात्रसंशयः त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥ १२ ॥

दो॰ बिनतीकरिमुनिनायशिरकहकरजोरबहोरि
चरनसरोरुहनाथजनिकबहुंतजैमतिमोरि ४

अनुसुइयाकेपदगहिसीता। मिलीबहोरिसुसीलबिनीता
ऋषिपतनीमनसुखअधिकाई आशिषदेइनिकटबैठाई
दिव्यबसनभूषनपहिराये जेनितनूतनअमलसुहाये
कहऋषिबधूसरसमृदुबानी नारिधर्मकछुब्याजबखानी
मातुपिताभ्राताअधिकारी मितप्रदसबसुनुराजकुमारी
अमितदानभर्तावैदेही। अधमसुनारिजोसेवनतेही
धीरजधर्ममित्रअरुनारी आपदकालपरखिअहिंचारी
बृद्धरोगबसजड़धनहीना अंधबधिरक्रोधीअतिदीना
ऐसेहुपतिकरकियेअपमाना नारिपावजमपुरदुखनाना
एकैधर्मएकब्रतनेमा ५ ॥ कायबचनमनपतिपदप्रेमा
जगपतिब्रताचारबिधिअहहीं बेदपुरानसंतसबकहहीं ॥
उत्तमकेअसबसमनमाहीं सपनेहुआनपुरुषजगनाहीं
मध्यमपरपतिदेखैकैसे। भ्रातापितापुत्रनिजजैसे ॥
धर्मबिचारिसमुझिकुलरहई सोनिकृष्टतियश्रुतिअसकहई।
बिनुअवसरभयतेरहजोई जानेहुअधमनारिजगसोई ॥

टी॰
रा॰ आर॰
५

टी॰
रा॰ बा॰
६

पतिबंचकपरपतिरतिकरई रौरवनरककल्पशतपरई।
छनसुखलागिजन्मशतकोटी दुषनसमुझतेहिसमकोषो
बिनुश्रमनारिपरमगतिलहई पतिब्रतधर्मछाड़िछलगहई
पतिप्रतिकूलजन्मजहँजाई बिधवाहोइपाइतरुनाई।

सो॰सहजअपावननारिपतिसेवतसुभगतिलहै
जसुगावतश्रुतिचारिअजहुंतुलसिकाहरिहिप्रिय
सुनुसीतातवनामसुमिरिनारिपतिब्रतकरहिं॥
तोहिप्रानप्रियरामकहेउँकथासंसारहित ५

सुनिजानकींपरमसुषपावा सादरतासुचरनसिरनावा
तबमुनिसनकहकृपानिधाना आयसुहोइजाउँबनआना
संततमोपरकृपाकरेहू। सेवकजानितजेउजनिनेहू
धरमधुरंधरप्रभुकैबानी सुनिसप्रेमबोलेमुनिग्यानी
जासुकृपाअजशिवसनकादी चहतसकलपरमारथबा
तेतुम्हरामअकामपियारे दीनबंधुमृदुबचनउचारे
अबजानीमैंश्रीचतुराई॥ भजियतुम्हहिंसबदेवबिह
जेहिसमानअतिसयनहिंकोई ताकरसीलकसनअसहो
केहिबिधिकहौंजाहुअबस्वामी कहहुनाथतुमअंतरजाम
असकहिप्रभुबिलोकिमुनिधीरा लोचनजलबहपुलकसरी

छं॰तनपुलकितनिर्भरप्रेमपूरननैनसुखपंकजदिये
मनज्ञानगुनगोतीतप्रभुमैंदीषजपतपकाकिये।
जपजोगधर्मसमूहतेनरभक्तिअनुपमपावही॥

रघुबीरचरितपुनीतनिसिदिनदासतुलसीगावहीं
दो· कलिमलसमनदमनमनरामसुजससुखमूल
सादरसुनहिंजेतिन्हपररामरहहिंअनुकूल * ॥
सो· कठिनकालमलकोसधर्मनज्ञाननजोगजग।
परिहरिसकलभरोस रामहिभजहिंतेचतुरनर

मुनिपदकमलनाइकरसीसा। चलेबनहिंसुरनरमुनिईसा।
आगेरामअनुजपुनिपाछे। मुनिबरबेषबनेअतिकाछे
उभयबीचश्रीसोहइकैसी ब्रह्मजीवबिचमायाजैसी
सरिताबनगिरिअवघटघाटा। पतिपहिचानिदेहिंबरबाटा
जहँजहँजाहिंदेवरघुराया। करहिंमेघतहँतहँनभछाया
मिलाबिराधअसुरमगजाता आवतहीरघुबीरनिपाता॥
तुरतहिंरुचिररूपतेहिंपावा देखिदुखीनिजधामपठावा
पुनिआएजहँमुनिसरभंगा सुंदरअनुजजानकीसंगा

दो· देखिराममुखपंकजमुनिबरलोचनभृंग॥
सादरपानकरतअतिधन्यजन्मसरभंग॥७॥

कहमुनिसुनरघुबीरकृपाला शंकरमानसराममराला॥
जातरहेउँबिरंचिकेधामा॥ सुनेउँश्रवनबनऐहहिंरामा
चितवतपंथरहेउँदिनराती अबप्रभुदेखिजुड़ानीछाती
नाथसकलसाधनमैंहीना। कीन्हीकृपाजानिजनदीना।
सोकछुदेवनमोहिनिहोरा। निजपनराखेउजनमनचोरा
तबलगिरहहुदीनहितलागी जबलगिमिलौंतुमहिंतनत्यागी।

टी·
रा·आर·
७

टी·
रा·आर·
८

जोगजग्यजपतपब्रतकीन्हा प्रभुकहँदेइभक्तिबरली
एहिबिसररचिमुनिसरभंगा बैठेहृदयछाडिसबसंगा॥

दो· सीताअनुजसमेतप्रभुनीलजलदतनस्याम।
ममहियबसहुनिरंतरसगुनरूपश्रीराम॥८॥

असकहिजोगअगनितनुजारा। रामकृपाबैकुंठसिधारा॥
तातेंमुनिहरिलीननभएऊ॥ प्रथमहिंभेदभक्तिबरलेऊ
रिषिनिकायमुनिबरगतिदेखी। सुखीभएनिजहृदयबिशे
अस्तुतिकरहिंसकलमुनिवृंदा जयतिप्रनतहितकरुनाकं
पुनिरघुनाथचलेबनआगे। मुनिबरवृंदबिपुलसंगलागे
अस्थिसमूहदेखिरघुराया। पूछीमुनिन्हलागिअतिदाय
जानहूपूछियकसस्वामी॥ सबदरसीतुमअंतरजामी॥
निसिचरनिकरसकलमुनिखाए सुनिरघुबीरनयनजलछा

दो· निसिचरहीनकरौंमहीभुजउठाइपनकीन्ह॥
सकलमुनिनकेआश्रमहिजाइजाइसुखदीन्ह॥९॥

मुनिअगस्तिकरसिष्यसुजाना। नामसुतीछनरतिभगवाना
मनक्रमबचनरामपदसेवक सपनेहुआनभरोसनदेवक
प्रभुआगमनश्रवनसुनिपावा। करतमनोरथआतुरधावा॥
हेबिधिदीनबंधुरघुराया मोसेसठपरकरिहहिंदाया॥
सहितअनुजमोहिरामगुसांई मिलहहिंनिजसेवककीनांई
मोरेजियभरोसदृढ़नाहीं। भक्तिबिरतिनज्ञानमनमाहीं
नहिसतसंगजोगजपजागा॥ नहिंदृढ़चरणकमलअनुरा

एकबानिकरुनानिधानकी सोप्रियजाकेंगतिनआनकी
होइहहिंसुफलआजममलोचन देषिबदनपंकजभवमोचन
निर्भरप्रेममगनमुनिग्यानी। कहिनजाइसोदसाभवानी।
दिसिअरुबिदिसिपंथनहिंसूझा कोमैंचलेउँकहाँनहिंबूझा॥
कबहुकफिरिपाछेंचलजाई कबहुकनृत्यकरैगुनगाई।
अबिरलप्रेमभगतिमुनिपाई प्रभुदेषहिंतरुओटलुकाई
अतिसैप्रीतिदेषिरघुबीरा प्रगटेहृदयहरनभवभीरा॥
मुनिमगमांझअचलहोइबैसा पुलकशरीरपनसफलजैसा
रघुबरनाथनिकटचलिआए देषिदशानिजजनमनभाए
मुनिहिंरामबहुभांतिजगावा जागनध्यानजनितसुषपावा
भूपरूपतबरामदुरावा ५॥ हृदयचतुर्भुजरूपदेखावा
मुनिअकुलायउठापुनिकैसे बिकलहीनमनिफनिबरजैसे
आगेदेषिरामतनस्यामा। सीताअनुजसहितसुखधामा
परेउलकुटइवचरनन्हलागी प्रेममगनमुनिबरबड़भागी
भुजबिशालगहिलियेउठाई परमप्रीतिराषेउउरलाई॥
मुनिहिमिलतअससोहकृपाला कनकतरुहिजिमिभेंटतमाला
रामबदनबिलोकिमुनिठाढा मानहुंचित्रमांझलिषकाढ़ा।

दो॰ तबमुनिहृदयधीरधरिगहिपदबारहिबार ५॥
निजआश्रमप्रभुआनकरिपूजाबिबिधप्रकार ९

कहमुनिप्रभुसुनिबिनतीमोरी अस्तुतिकरौंकवनबिधतोरी
महिमाअमितमोरिमतथोरी रबिसन्मुखखद्योतअंजोरी

स्यामतामरसदामशरीरम जटामुकुटपरिधनमुनिचीरं
पानिचापसरकटितूनीरं नौमिनिरंतरश्रीरघुबीरं॥
मोहबिपनघनदहनकृसानूं संतसरोरुहकाननभानूं॥
निश्चरकरिवरूथमृगराजं। त्रातुसदानोभवषगबाजं॥
अरुननयनराजीवसुबेषं। सीतानयनचकोरनिशेषं॥
हरहृदिमानसबालमरालं नौमिरामउरबाहुबिशालं॥
संशयसर्पग्रसनउरगादं॥ समनसुकर्कसतर्कबिषा
भवभंजनरंजनसुरयूथं॥ त्रातुसदानोकृपावरूथं॥
निर्गुनसगुनबिषमसमरूपं ज्ञानगिरागोतीतमरूपं॥
अमलमखिलमनवद्यमपारं नौमिरामभंजनमहिभारं॥
भक्तकल्पपादपआरामं॥ तर्जनक्रोधलोभमदकामं
अतिनागरभवसागरसेतुं। त्रातुसदादिनकरकुलके
अतुलितभुजप्रतापबलधामं कलिमलबिपुलबिभंजन
धर्मबर्मनर्मदगुनग्रामं॥ संततसंतनोतुममरामं
जदपिबिरजब्यापकअबिनासी सबकेहृदयनिरंतरबासी
तदपिअनुजश्रीसहितखरारी बसतुमनसिममकाननचा
जोजानहिंतेजानहुस्वामी। सगुनअगुनउरअंतरजामी
जोकोसलपतिराजिवनैना॥ करौसोरामहृदयममऐना
असअभिमानजाइजनिभोरे मैंसेवकरघुपतिपतिमोरे
सुनिमुनिबचनराममनभाए बहुरिहरषिमुनिबरउरला
परमप्रसन्नजानमुनिमोही जोबरमांगहुदेउंसोतोही॥

मुनिकहमैंबरकबहुनजाँचा समुझिनपरैझूठकासाँचा
तुमहिंनीकलागैरघुराई॥ सोमोहिदेहुदाससुषदाई
अबिरलभक्तिबिरतिबिज्ञाना होहुसकलगुणज्ञाननिधाना
प्रभुजोदीन्हसोबरमैंपावा अबसोदेहुमोहिजोभावा।

दो॰ अनुजजानकीसहितप्रभुचापबानधरराम
ममहियगगनइंदुइवबसहुसदानिःकाम॥२१॥

एवमस्तुकरिरमानिवासा हरषिचलेकुंभजरिषिपास
बहुतदिवसगुरदरसनपाये भयेमोहिएहिआश्रमआये
अबप्रभुसंगजाउँगुरपाहीं तुमकहँनाथनिहोरानाहीं
देषिकृपानिधिमुनिचतुराई लियेसंगबिहँसेद्वौभाई॥
पंथकहतनिजभगतिअनूपा मुनिआश्रमपहुँचेसुरभूप
तुरतसुतीछणगुरुपहँगयऊ करिदंडवतकहतअसभयऊ
नाथकोसलाधीसकुमारा आएमिलनजगतआधारा
रामअनुजसमेतबैदेही॥ निसिदिनदेवजपतहहुजेही
सुनतअगस्तितुरतउठिधाए हरिबिलोकिलोचनजलछाए
मुनिपदकमलपरेद्वौभाई रिषिअतिप्रीतिलियेउरलाई
सादरकुसलपूछिमुनिज्ञानी आसनपरबैठारेआनी॥
पुनिकरिबहुप्रकारप्रभुपूजा मोहिसमभागवंतनहिंदूजा
जहँलगिरहेअपरमुनिबृंदा हरषेसबबिलोकिसुषकंद

दो॰ मुनिसमूहमहँबैठेसन्मुखसबकीओर॥
सरदइंदुतनचितवतमानहुँनिकरचकोर २२॥

तबरघुबीर कहा मुनि पाहीं। तुम सन प्रभु दुराउ कछु नाहीं
तुम जानहु जेहि कारन आएउं। ताते तात न कछु समुझाएउं
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही
मुनि मुसकाने सुनि प्रभु बानी। पूंछेहु नाथ मोहि का जानी
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी। जानौं महिमा कछुक तुम्हारी
ऊमरि तरु बिशाल तव माया। फल ब्रह्मांड अनेक निकाया
जीव चराचर जंतु समाना॥ भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फल भच्छक कठिन कराला। तव भय डरत सदा सोउ काला
ते तुम सकल लोकपति साईं। पूंछेहु मोहि मनुज की नाईं
यह बर मांगौं कृपानिकेता। बसहु हृदय श्री अनुज समेता
अबिरल भक्ति बिरति सतसंगा। चरन सरोरुह प्रीति अभंगा
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता। अनुभव गम्य भजहिं जेहि
अस तव रूप बखानौं जानौं। फिर फिर सगुन ब्रह्म रति
संतन दासन्ह देतु बड़ाई॥ ताते मोहि पूंछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊं। पावन पंचबटी तेहि नाऊं
दंडक बन पुनीत प्रभु करहु। उग्र शाप मुनिबर कैर हरहु
बास करहु तहं रघुकुल राया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया
चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी नियराई

दो॰ गीधराज सों भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ
गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ॥ १३॥

जब तें राम कीन्ह तहं बासा। सुखी भये मुनि बीती त्रास

अरु धर्मतें ज्ञानसों तेज्ञ अधर्म वासनेंसलो अघुलोते गौं०॥ सों ७॥ तैलाघव लक्ष्मनअ कीर्त्य अक सबनेंराम ८ ८८ टी०॥ श्रीः धर्मके

अगुलितभयो अरुलभयाह वा समय अरु विखेरानबिर ग भयाभक्ति किजीवको भूतनहैं प्रभु अकर संगेंसो सबलोबिनाल्प

टी॰
रा॰ अर॰
१३

त्यागनिश्चय त्यकचनितैं त खिरहैं सना ममता अरुसप तं माया जो रंइ अनंत ह्व गहेहल्याहि अरुकामनका बिसय सब मायाजानई सोहै भाति तका अविद्या आवरन या कि प्रधान जो आत्मा के रूपको छिपा को निर्मको जलु है दूसर विद्या विक्षपक

गिरिबननदीतालछबिछाए। दिनदिनप्रतिअतिहोंहिसुहाए॥
खगमृगबृंदअनंदितरहहीं। मधुपमधुरगुंजतछबिलहहीं
सोबनबरनिनसकैअहिराजा। जहँप्रगटरघुबीरबिराजा।
एकबारप्रभुसुखआसीना। लछमनबचनकहेछलहीना।
सुरनरमुनिसचराचरसाँई। मैंपूछौंनिजप्रभुकीनाँई॥
मोहिसमुझाइकहहुसोइदेवा। सबतजकरौंचरनरजसेवा।
कहहुज्ञानबिरागअरुमाया। कहहुसोभक्तिकरहुजेहिदा

दो॰ ईश्वरजीवहिभेदप्रभुसकलकहहुसमुझाय॥
जातेंहोइचरनरतिसोकमोहभ्रमजाय॥१४॥

थोरमहँसबकहौंबुझाई। सुनहुतातमतमनचितलाई
मैंअरुमोरतोरतैंमाया + ॥ जेहिबसकीन्हेजीवनिकाया
गोगोचरजहँलगिमनजाई। सोसबमायाजानेहुभाई॥
तेहिकरभेदसुनहुतुमसोऊ। बिद्याअपरअबिद्यादोऊ॥
एकदुष्टअतिसयदुखरूपा। जाबसजीवपराभवकूपा
एकरचैजगगुनबसजाकें। प्रभुप्रेरितनहिंनिजबलताकें
ज्ञानमानजहँएकौनाहीं। देखनब्रह्मसमानसबमाहीं
कहियतातसोपरमबिरागी। तृनसमसिद्धितीनगुनत्यागी

दो॰ मायाईसनआपुकहँजानकहियसोजीव॥
बंधमोक्षप्रदसर्बपरमायाप्रेरकसीव।१५।

धर्मतेंबिरतिजोगतेंज्ञाना। ज्ञानमोक्षप्रदबेदबखाना
जातेंबेगिद्रवौंमैंभाई॥ सोममभक्तिभक्तसुखदाई

शक्तिप्रधान
प्रपंचकी है
है गुणाकार्य
सहनाशादि
पूर्नबीजान
गुणै सपुष्ट
छायापारा
जानी नवीन
समस्यानि
गुणै विराग
ज्ञादि ते
सर्वपरत्व
भावनहैं
मायाईश्वर
रूप आपनो
स्वरूप नहीं
याते बोध्याहि
प्रकृती संबंध
मानहूं बंध
दो॰
रा॰ आर॰
१५
किन्ते उत्पन्न
है मायाप्रेरक
योग ईश्वर
अर्थात् काम
कर्मयोग धर्म
तातें विनय ते
ज्ञान तें ज्ञान
ज्ञानादि है
नवकर्म की श्र
द्धा नहीं ति
पैठि प्रेम ते
के सर्वोपरि
है बिना ज्ञा
के हेतु
बिना भक्ति
तामें नंगा
बंधा प्रवृ
जै

कैबानबिपो सबनस्याहि गक्तभार कैश्याउ गटहैगंहे हिंदिताप टकपटगो ईश्रुउगिढ्ढे घांसरतेझ्र गौभगनोहै पाछुरावन कछुकाए

॥ ९ ॥

सोस्वतंत्रअवलंबनआना तेहिआधीनज्ञानबिज्ञाना
भक्तितातअनुपमसुषमूला मिलइजोसंतहोइँअनुकूला
भक्तिकेसाधनकहौंबषानी सुगमपंथमोहिपावहिंप्रा
प्रथमहिंबिप्रचरनअतिप्रीती निजनिजकर्मनिरतश्रुतिरी
यहकरफलपुनिबिषयबिरागा तबममधर्मउपजअनुरागा
श्रवनादिकनवभक्तिदृढ़ाई ममलीलारतिअतिमनमा
संतचरनपंकजअतिप्रेमा ॥ मनक्रमबचनभजनदृढ़नेमा
गुरुपितुमातुबंधुपतिदेवा । सबमोहिकहँजानेदृढ़सेवा
ममगुनगावतपुलकसरीरा गद्गदगिरानैनबहनीरा ॥
कामआदिमददंभनजाके तातनिरंतरबसमैंताके ॥

दो॰ बचनकर्ममनमोरिगतिभजनकरहिंनिःकाम
तिन्हकेहृदयकमलमहुँकरौंसदाबिश्राम १६॥

भक्तिजोगसुनिअतिसुषपावा लछिमनप्रभुचरननसिरना
एहिबिधिगएकछुकदिनबीती कहतबिरागज्ञानगुननीती
सूपनखारावनकैबहिनी ॥ दुष्टहृदयदारुनजसअहिनी
पंचबटीसोगैएकबारा ॥ देषिबिकलभइजुगलकुमा
भ्रातापितापुत्रउरगारी ॥ पुरुषमनोहरनिरषतना
होइबिकलसकिमनहिंनरोकी जिमिरबिमनिद्रवरबिहिबि
रुचिररूपधरिप्रभुपहँजाई । बोलीबचनबहुतमुसका
तुमसमपुरुषनमोसमनारी यहसंयोगबिधिरचाबिचा
ममअनुरूपपुरुषजगमाही देषेउँषोजिलोकतिहुँमा

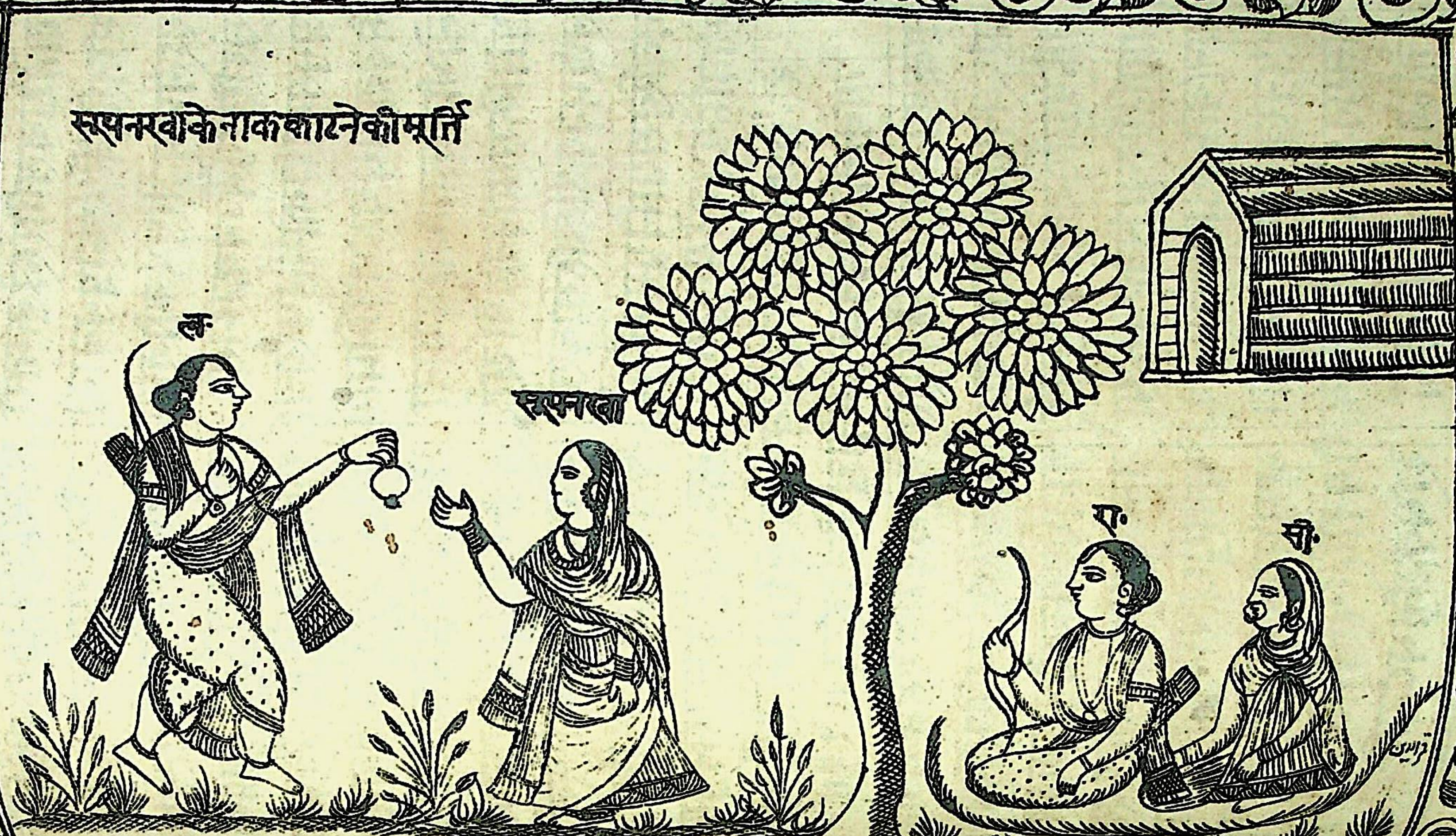

सूपनखाकेनाककाटनेकीमूर्ति

तातेंअबलगिरहेउँकुमारी मनमानाकछुतुमहिंनिहारी
सीतहिंचितैकहीप्रभुबानी अहैकुमारमोरलघुभ्राता
गइलछमनरिपुभगनीजानी प्रभुबिलोकिबोलेमृदुबानी
सुंदरिसुनुमैंउनकरदासा। पराधीननहिंतोरसुपासा
प्रभुसमरथकोसलपुरराजा जोकछुकरहिंउनहिंसबसाजा
सेवकसुखचहमानभिखारी व्यसनीधनसुभगतिव्यभचारी
लोभीजसचहचारगुमानी नभदुहिदूधचहतएप्रानी
पुनिफिररामनिकटसोआई प्रभुलछमनपहिंबहुरिपठाई
लछमनकहातोहिसोबरई जोतृनतोरिलाजपरिहरई
तबखिसयानिरामपहँगई रूपभयंकरप्रगटतभई॥
सीतहिंसभयदेखरघुराई। कहाअनुजसनसैनबुझाई

दो॰ लछमनअतिलाघवसोंनाककानबिनुकीन्ह
ताकेकररावनकहँमनौचुनौतीदीन्ह॥ १७॥

नाककानबिनुभईबिकरारा जनुस्रवसैलगेरुकैधारा॥
खरदूषनपहिंगैबिलपाता। धिकधिकतवपौरुषबलभ्राता
तेहिंपूछासबकहेसिबुझाई जातुधानसबसेनबनाई॥
धाएनिसिचरनिकरबरूथा जनुसपच्छकज्जलगिरियूथा
नानाबाहननानाकारा॥ नानायुधधरिघोरअपारा
सूपनखाआगेकरलीन्ही। असुभरूपश्रुतिनासाहीनी
असगुनअमितहोंहिंभयकारी गनहिंनमृत्युबिवसबझारी
गर्जहिंतर्जहिंगगनउड़ाहीं देखिकटकुभटअतिहरषाहीं

टी॰
रा॰ आर
१६

प्रभुरूपतें ल सनमोहित अमनपठायो प्रभुपासमर्थ उनतेंक्रोधित निसाचर सनसंग्राम कालभागो जानिजप्रमान तेंखबकोन प्रकियासों का लघनअनु का पूर्णका मिलेश्रुत सुनखाआमर्षि गतियुतखर दूषनादिबध कबतातेंनाद कहोतातहीं

सगआपसर्थ तुर्तकिबदद आर्दनहीं लखनकौभो रामनअसी हिकिसीता कौमनरामे लखैगाइ कौसेनप भ्रुतनिमिष कनपृथ्वी भवकराव दो॰॥ गर्इकोरि सनधारिकैस बैउंत्र्यरह गानवान टी॰ ठे॰ सौ॰ दोहा

हसकुँवर बाकीजु दखानक निजभव सुनाया कुमारकी आगरेमे २२

कोउकहजिअतधरेहुसोउभाई धरिमारहुतियलेहुछड़ाई
धूरिपूरिनभमंडलरहा। रामबोलाइअनुजसनकहा
लैजानकिहिजाहुगिरिकंदर आवानिसचरकटकभयंकर
रहेउसजगसुनिप्रभुकैबानी चलेसहितश्रीसरधनुपानी
देषिरामरिपुदलचलिआवा बिहँसिकठिनकोदंडचढ़ावा

छं॰ कोदंडकठिनचढ़ाइसिरजटजूटबांधतसोहक्यों।
मरकतसयलपरलरतदामिनिकोटिसोंजुगभुजगज्यों
कटिकसिनिषंगबिसालभुजगहिचापबिसिखसुधारिकै
चितवतमनहुँमृगराजप्रभुगजराजघटानिहारिकै।

सो॰ आइगएबगमेलधरहुधरहुधावतसुभट॥
जथाबिलोकिअकेलबालरबिहिघेरतदनुज॥

टी॰
रा॰ आर॰
२७

प्रभुबिलोकिसरसकहिंनडारी थकितभईरजनीचरधारी
सचिवबोलिबोलेखरदूषन यहकोउनृपबालकनरभूषन
नागअसुरसुरनरमुनिजेते देषेजितेहतेहमकेते॥
हमभरिजन्मसुनहुसबभाई देषीनहिंअससुंदरताई॥
जद्यपिभगिनीकीन्हकुरूपा बधलायकनहिंपुरुषअनूपा
देहुतुरतनिजनारिदुराई। जीअतभवनजाहुद्वौभाई
मोरकहातुमताहिसुनावहु तासुबचनसुनिआतुरआवहु।
दूतनकहारामसनजाई॥ सुनतरामबोलेमुसकाई॥
हमछत्रीमृगयाबनकरहीं तुमसेखलमृगखोजतफिरहीं
रिपुबलवंतदेषिनहिंडरहीं। एकबारकालहुसनलरहीं

जद्यपिमनुजदनुजकुलघालक मुनिपालकखलसालक बा

जौनहोइबलघरफिरिजाऊ समरबिमुखमैंहतौंनकाऊ

रनचढ़िकरियकपटचतुराई रिपुपरकृपापरमकदराई॥

दूतन्हजाइतुरतसबकहेऊ सुनिखरदूषनउरअतिदहेऊ

छं·उरदहेउकहेउकिधरहुधाएबिकटभटरजनीचरा।
सरचापतोमरशक्तिशूलकृपानपरघपरसुधरा॥
प्रभुकीन्हधनुषटकोरप्रथमकठोरघोरभयावहा।
भएबधिरव्याकुलजातुधाननग्याननेहिअवसररह

दो·सावधानहोयधाएजानिसबलआराति *॥
लागेबरषनरामपरअस्त्रशस्त्रबहुभांति *॥
दो· स·आर· १८ तिन्हकेआयुधतिलसमकरिकाटेरघुबीर ॥
तानिसरासनश्रवनलगिपुनिछाड़ेनिजतीर १९॥

छं·तोमर। तबचलेबानकरालफुंकरतजनुबहुव्याल **॥
कोपेउसमरश्रीरामचलेबिसिषनिसतनिकाम॥
अवलोकिषरतरतीरमुरिचलेनिशिचरबीर ॥
भएक्रुद्धतीनउभाइजोभागिरनतेजाइ *॥
तेहिबधबहमनिजपानिफिरेमरनमनमहिंठानि ॥
आयुधअनेकप्रकारसन्मुखतेकरहिंप्रहार॥
रिपुपरमकोपेजानिप्रभुधनुषसरसंधान*।
छाड़ेबिपुलनाराचलगेकटनबिकटपिसाच
उरसीसभुजकरचरनजहँतहँलगेमहिपरन ॥

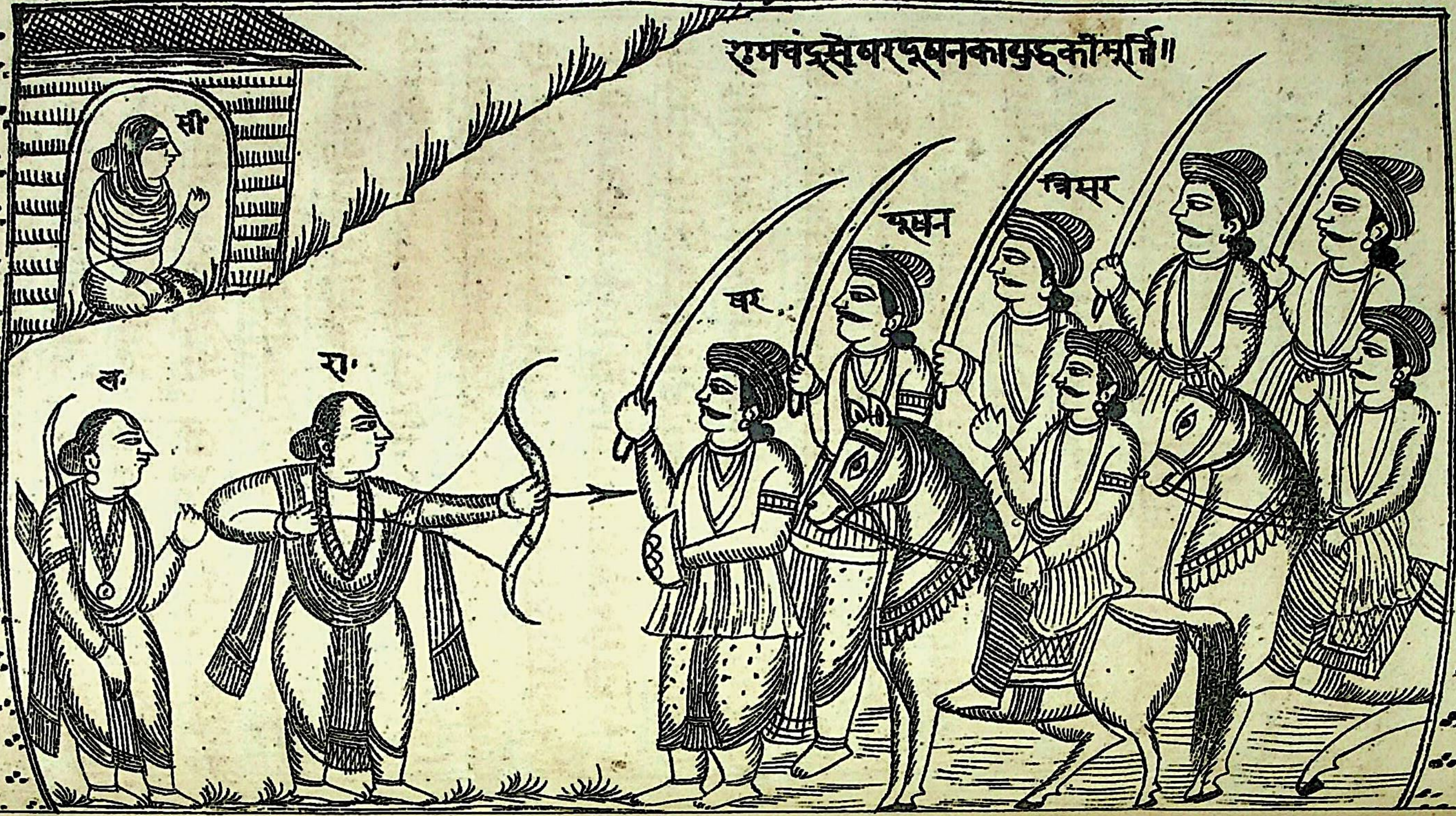

सी
ल
रा
खर
दूषन
त्रिसर

रामचंद्रसेखरदूषनकायुद्धकीमूर्त्ति॥

चिक्करनलागतबानधरपरतकुधरसमान ॥
भटकटतननसतषंडपुनिउठतकरिपाषंड।
नभउड़तबहुभुजमुंडबिनुमौलिधावतरुंड॥
षगकंककाकसृगालकटकटहिंकठिनकराल

छं॰ कटकटहिंजंबुकभूतप्रेतपिशाचषप्परसंचही।
बेतालबीरकपालतालबजाइजोगिनिनंचहीं * * ॥
रघुबीरबानप्रचंडषंडहिंभटनकेभुजउरसिरा॥
जहँतहँपरहिंउठैलरहिंधरुधरुकरहिंभयकरगिरा
अंतावरीगहिउड़तगीधपिशाचकरगहिधावहीं।
संग्रामपुरबासीमनहुँबहुबालगुड़ीउड़ावहीं *॥
मारेपछारेउरबिदारेबिपुलभटकहरतपरे *॥
अवलोकिनिजदलबिकलभटतिसरादिखरदूषनफि
सरशक्तितोमरपरशुशूलकृपानएकहिबारहीं ॥
करिकोपश्रीरघुबीरपरअगनितनिशाचरडारहीं ॥
प्रभुनिमिषमहँरिपुसरनिवारिप्रचारडारेसायका
दशदशबिसिषउरमाँझमारेसकलनिसिचरनायका
महिपरतउठिभटभिरतमरतनकरतमायाअतिघनी॥
सुरडरतचौदहसहसप्रेतबिलोकिएकअवधधनी॥
सुरमुनिसभयप्रभुदेषिमायानाथअसकौतुककियो
देषहिंपरस्पररामकरिसंग्रामरिपुदललरिमरयो
दो॰ रामरामकहितनुतजहिंपावहिंपदनिर्बान *॥

करिउपायरिपुमारेउछनमहँकृपानिधान+॥
हरषितबरषहिंसुमनसुरबाजहिंगगननिसान।
अस्तुतिकरिकरिसबचलेसोभितबिबिधबिमान

जयरघुनाथसमररिपुजीते सुरनरमुनिसबकेभयबीते
जबलछमनसीतहिलैआये प्रभुपदपरतहरषिहियलाये
सीताचितवस्याममृदुगाता। परमप्रेमलोचननअघाता।
पंचबटीबसिश्रीरघुनायक करतचरितसुरमुनिसुषदायक
धूँआँदेषिषरदूषनकेरा। जाइसुपनखारावनप्रेरा॥
बोलीबचनक्रोधकरिभारी देसकोसकैसुरतिबिसारी
करसिपानसोवसिदिनराती सुधिनहिंतवसिरपरआराती
राजनीतिबिनुधनबिनुधर्मा हरिहिसमर्पेबिनुसतकर्मा
बिद्याबिनुबिबेकउपजाये श्रमफलपठेकिएअरुपाए
संगतेंजतीकुमंत्रतेंराजा। मानतेंग्यानपानतेंलाजा॥
प्रीतिप्रणयबिनुमदतेंगुनीँ नासहिंबेगिनीतिअससुनीँ

सो· रिपुरुजपावकपापप्रभुअहिगनियनछोटकरि
असकहिबिबिधबिलापकरिलागीरोदनकरन+॥
दो· सभामाँझपरिब्याकुलबहुप्रकारकहरोइ+॥
तोहिजिअतदसकंधरमोरिकिअसगतिहोइ॥२१॥

सुनतसभासदउठेअकुलाई समुझाईगहिबाँहउठाई+॥
कालंकेसकहसिनिजबाता। केहितवनासाकाननिपाता।
अवधनृपतिदसरथकेजाए। पुरुषसिंहबनषेलनआए।

गयौ और बधगति प्रभुकरतैं हठकियो रावनकिया ऊं॰११ गतिमांग अबिलम्ब नागसुर सुरसषु २॰दे॰ ३॰सं॰ ४॰बो॰ धामि॰३

उपाइतहीं इसमें गाश्रुकोतहींष २॰भाषिबे देगयो हों रामहमलीला कारिबेहेतुलछ तानेंगुप्तसीताकी अग्निप्रवेशकं दी॰ रा॰प्रा॰ २२

समुझिपरीमोहिउनकैकरनी। रहितनिशाचरकरिहौंधरनी
जिन्हकरभुजबलपाइदसानन। अभयभएमुनिबिचरतकानन
देषतबालककालसमाना। परमधीरधन्वीगुननाना।
अतुलितबलप्रतापदोउभ्राता। षलबधरतसुरमुनिसुषदाता
सोभाधामरामअसनामा। तिन्हकेसंगनारिएकस्यामा
रूपराशिबिधिनारिसँवारी। रतिशतकोटितासुबलिहारी
तासुअनुजकाटेश्रुतिनासा। सुनितवभगिनीकरहिंपरिहासा
षरदूषनसुनिलगेपुकारा। छनमहुँसकलकटकउन्हमारा
षरदूषनत्रिसिराकरघाता। सुनिदससीसजरेसबगाता।

दो॰ सूपनषहिंसमुझायकरबलबोलेसिबहुभांति
गयउभवनअतिसोचबसनींदपरैनहिंराति २२।

सुरनरअसुरनागषगमाहीं। मोरेअनुचरकहँकोउनाहीं
षरदूषनमोहिसमबलवंता। तिन्हहिंकोमारैबिनुभगवंता
सुररंजनभंजनमहिभारा। जौंभगवंतलीन्हअवतारा
तौमैंजाइबैरहठिकरऊं॥ प्रभुसरबानतजेंभवतरऊं
होइहिभजननतामसदेहा। मनक्रमबचनमंत्रदृढएहा
जौंनररूपभूपसुतकोऊ। हरिहौंनारिजीतिरनदोऊ
चलाअकेलजानचढितहँवाँ। बसमारीचसिंधुतटजहँवाँ
इहाँरामजसजुगतबनाई। सुनहुउमासोकथासुहाई

दो॰ लछिमनगएबनहिंजबलेनमूलफलकंद॥
जनकसुतासनबोलेउबिहँसिकृपासुषवृंद २३

योअनुमारीच प्रभुप्रभावप अंकरवनतें सबिनकियो नहींरावनतें षिनाशनिज गतिप्रभुक बधमानयह बर्णीतहांक

घटमहाहैं प्रभुकोदूर्हे गयावचकाय साश्चरतगछ मैंप्रथमलछ नामलिया सबसीताजू नायपुत प्रदयसालक वना १

लखनतें कहैं याको बिलो कु खलमीको अपकाउ कों स्वर्ग को चीजानिसो यकाहेथ कसौतहों जायसंग्रा मसीताहितु

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करब ललित नरलीला।
तुम पावक महुँ करहु निवासा। जौं लगि करौं निसाचर नासा।
जबहिं राम सब कहा बषानी। प्रभु पद धरि हिय अनल समानी।
निज प्रतिबिंब राषि तहँ सीता। तैसइ रूप सील सुबिनीता।
लछिमनहूँ यह भेद न जाना। जो कछु चरित रचा भगवाना।
दसमुख गयउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा।
नवनि नीच कै अति दुषदाई। जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई।
भयदायक खल कै प्रिय बानी। जिमि अकाल के कुसुम भवानी।

दो॰ करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात + ॥
कवन हेतु मन ब्यग्र अति अकसर आएहु तात २४।

दसमुख सकल कथा तेहि आगे। कही सहित अभिमान अभागे।
होउ कपट मृग तुम छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी।
तेहि पुनि कहा सुनहु दससीसा। ते नररूप चराचर ईसा + ॥
तासों तात बयरु नहिं कीजे। मारे मरिय जियाए जीजे।
मुनि मष राषन गएउ कुमारा। बिनु फर सर रघुपति मोहि मारा।
सत जोजन आएउँ छन माहीं। तिन्ह सन बयरु किये भल नाहीं।
भइ मम कीट भृंग की नाँई ॥ जहँ तहँ मैं देषौं दोउ भाई।
जौ नर तात तदपि अति सूरा। तिन्हहिं बिरोधि न आइहि पूरा।

दो॰ जेहि ताड़का सुबाहु हति षंडेउ हरकोदंड + ॥
षर दूषन तिसरा बधेउ मनुज कि अस बरबंड २५।

जाहु भवन कुल कुसल बिचारी। सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी।

नूतन भयो अनल छपाय को देखि प्रभु मयहिं आए मसाला हैन देखि प्राकृत नरवत बिकै है चलत आज रायकी

टी॰ रा॰ आर॰ २३

मद्धिनरैवि निजधामदे बाको कर्म निन करतें और मेलार कि धा ॥ २३ ॥

॥ ॥ ॥ ॥

गुरुजिमिमूढ़करसिममबोधा कहुजगमोहिसमानकोजोध
तबमारीचहृदयअनुमाना। नवहिबिरोधेंनहिंकल्याना
सस्त्रीमर्मीप्रभुसठधनी॥ बैदबंदिकबिभानसगुनी॥
उभयभाँतिदेखानिजमरना तबताकिसिरघुनायकसरना
उतरुदेतमोहिबधबअभागें। कसनमरौंरघुपतिसरलागें
असजियजानिदसाननसंगा। चलारामपदप्रेमअभंगा॥
मनअतिहरषजनावनतेही। आजुदेखिहौंपरमसनेही॥

छं॰ निजपरमप्रीतमदेखिलोचनसफलकरिसुखपाइहौं
श्रीसहितअनुजसमेतकृपानिकेतपदमनलाइहौं॥
निर्बानदायकक्रोधजाकरिभगतिअबसहिबसकरी॥
निजपानिसरसंधानसोमोहिबधिहिसुखसागरहरी॥
दो॰ ममपाछेंधरधावतधरेंसरासनबान ॥
फिरफिरप्रभुहिबिलोकिहौंधन्यनमोसमआन२६

तेहिबननिकटदसाननगयऊ तबमारीचकपटमृगभयऊ
अतिबिचित्रकछुबरनिनजाई कनकदेहमनिरचितबनाई
सीतापरमरुचिरमृगदेखा अंगअंगसुमनोहरबेषा
सुनहुदेवरघुबीरकृपाला एहिमृगकरअतिसुंदरछाल
सत्यसंधप्रभुबधिकरियेही आनहुचर्मकहतिबैदेही
तबरघुपतिजानतसबकारन उठेहरषिसुरकाजसँवारन
मृगबिलोकिकटिपरिकरबाँधा। करतलचापरुचिरसरसाँ
प्रभुलछमनहिंकहासमुझाई फिरतबिपिननिसिचरबहु

सीताकेरिकरहुरखवारी बुधिबिबेकबलसमयबिचारी
प्रभुहिबिलोकिचलामृगभाजी धाएरामसरासनसाजी।
निगमनेतिशिवध्याननपावा मायामृगपाछेंसोधावा।
कबहुँनिकटपुनिदूरपराई कबहुँकप्रगटैकबहुँदुराई
प्रगटतछिपतकरतछलभूरी एहिबिधिगयोप्रभुहिलैदूरी
तबतकिरामकठिनसरमारा धरनिपरेउकरिघोरपुकारा
लछमनकैप्रथमहिंलैनामा पाछेंसुमिरेसिमनमहँरामा।
प्रानतजतप्रगटेसिनिजदेहा सुमिरेसिरामसमेतसनेहा।
अंतरप्रेमतासुपहिचाना। मुनिदुर्लभगतिदीन्हसुजाना

दो· बिपुलसुमनसुरबर्षहिंगावहिंप्रभुगुनगाथ।
निजपददीन्हअसुरकहुँदीनबंधुरघुनाथ।२७।

दो·
रा· आर·
२५

षलबधितुरतफिरेरघुबीरा सोहचापकरकटितूणीरा
आरतगिरासुनीजबसीता कहिलछमनसनपरमसभीता
जाहुबेगिसंकटअतिभ्राता लछिमनबिहँसिकहासुनमाता
भृकुटिबिलाससृष्टिलयहोई सपनेहुसंकटपरैकिसोई॥
मरमबचनजबसीताबोला हरिप्रेरितलछमनमनडोला
बनदिशिदेवसौंपिसबकाहू चलेजहाँरावनशशिराहू
सूनबीचदशकंधरदेषा आवानिकटजतीकेबेषा
जाकेडरसुरअसुरडराहीं। निसिननींददिनअन्ननषाहीं
सोदससीसस्वानकीनांई इतउतचितइचलाभडिहाँई
इमिकुपंथपगदेतषगेसा। रहनतेजतनुबुधिबललेसा

नानाबिधिकरिकथासुहाई राजनीतिभयप्रीतिदेखा
कहसीतासुनुजतीगोसाईं बोलेहुबचनदुष्टकीनाईं॥
तबरावननिजरूपदेखावा भईसभयजबनामसुनावा
कहिसीताधरिधीरजुगाढ़ा आइगयउप्रभुरहुखलठाढ़
जिमिहरिबधुहिछुद्रससचाहा भयसिकालबसनिसिच
सुनतबचनदससीसरिसाना मनमहुँचरनबंदिसुषमा
क्रोधवंततबरावनलीन्हेसिरथबैठाइ ++ ॥
चलागगनपथआतुरभयरथहाँकिनजाय २८
हाजगएकबीररघुराया ॥ केहिअपराधबिसारेहुदाय
आरतिहरनसरनसुषदायक हारघुकुलसरोजदिननाय
हालछिमनतुम्हारनहिदोषा सोफलपायउंकीन्हेउंरोषा
बिबिधबिलापकरतिबैदेही भूरिकृपाप्रभुदूरसनेही।
बिपतिमोरिकोप्रभुहिसुनावा पुरोडासचहरासभषाव
सीताकैबिलापसुनिभारी भएचराचरजीवदुषारी॥
गीधराजसुनिआरतबानी रघुकुलतिलकनारिपहचा
अधमनिशाचरलीन्हेजाई। जिमिमलेछबसकपिलागा
सीतेपुत्रिकरसिजनित्रासा करिहोंजातुधानकैनास
धावाक्रोधवंतषगकैसे॥ छूटैपाबिपर्बतकहँजैसे॥
रेरेदुष्टठाढ़किनहोही ॥ निर्भयचलासिनजानेहीमो
आवतदेषिकृतांतसमाना फिरिदशकंधरकरअनुमा
कीमैनाककिषगपतिहोई ममबलजानिसहितपतिस

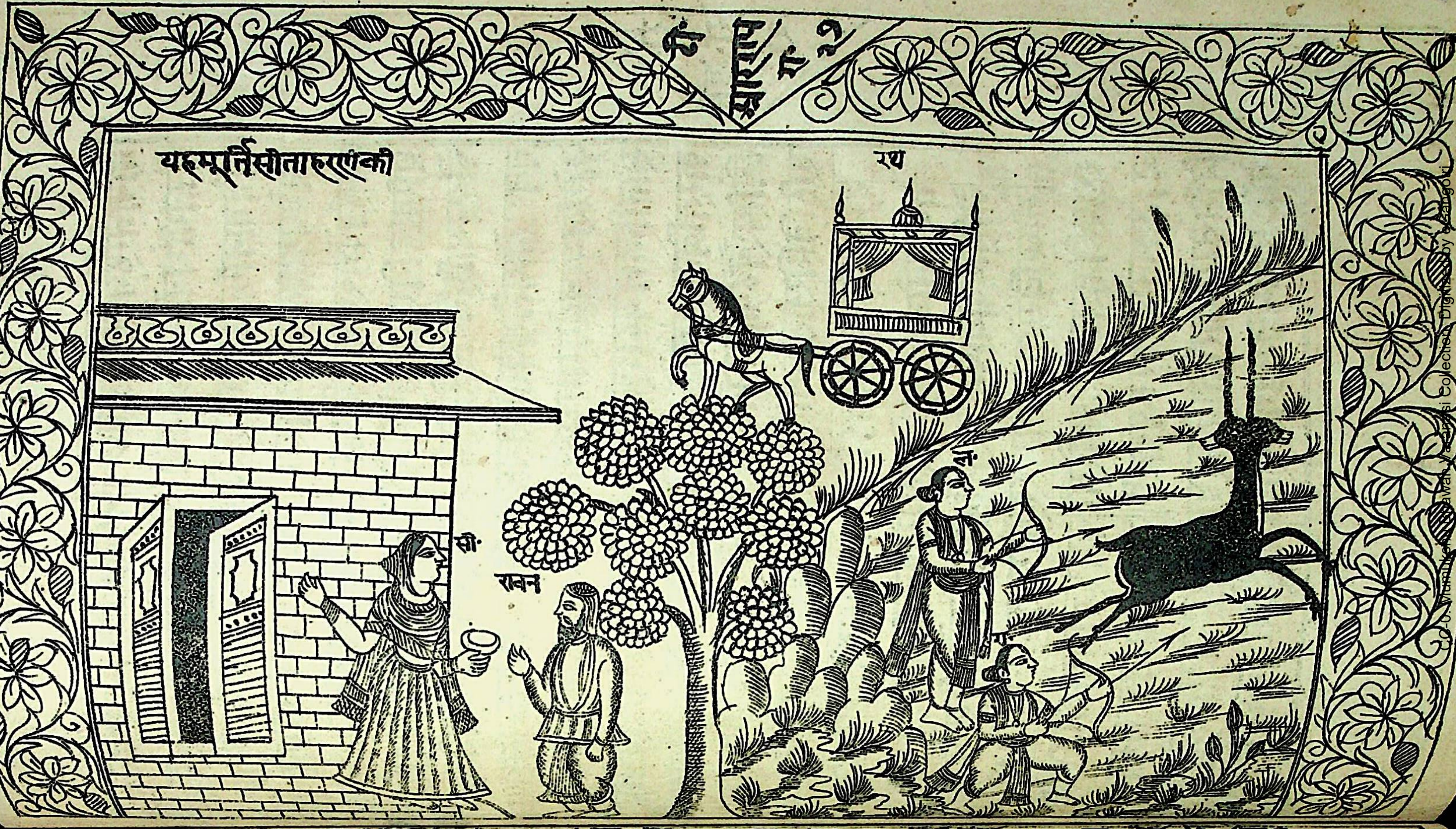
टी. आरण्य प. १
यहमूर्त्तिसीताहरणकी
रथ
सी.
रावन
रा.

टी॰
रा॰ आर॰
२८

जानाजरठजटायूयेहा॥* ममकरतीरथछाडिहिदेहा॥
सुनतगीधक्रोधातुरधावा। कहसुनुरावनमोरिसिखाव
तजिजानकिहिकुसलगृहजाहू नाहितअसहोइहिबहुबा
रामरोषपावकअतिघोरा। होइहिसकलसलभकुलतो
उतरुनदेतदसाननजोधा। तबहिंगीधधावाकरिक्रोध
धरिकचबिरथकीन्हमहिगिरा सीतहिराखिगीधपुनिफि
चोंचनमारिबिदारेसिदेही दंडएकभईमुरछातेही॥
तबसक्रोधनिसिचरखिसियाना काढेसिपरमकरालकृपा
काटेसिपंखपराखगधरनी सुमिरिरामकरिअद्भुतकरनी
सीतहिजानचढ़ाइबहोरी चलाउताइलत्रासनथोरी
करतबिलापजातनभसीता ब्याधबिबसजनुमृगीसभी
गिरिपरबैठेकपिन्हनिहारी कहिहरिनामदीन्हपटडारी
एहिबिधिसीतहिसोलैगयऊ बनअसोकमहँराखतभय

दो॰ हारिपराखलबहुबिधिभयअरुप्रीतिदेखाइ॥
तबअसोकपादपतरराखेसिजतनुकराइ **॥
जेहिबिधिकपटकुरंगसंगधाइचलेश्रीराम॥
सोछबिसीताराखिउररहतिरटतहरिनाम २९॥

रघुपतिअनुजहिआवतदेखी बाहिजचिंताकीन्हबिशे
जनकसुतापरिहरउअकेली आएहुतातबचनममपेल
निसिचरनिकरफिरहिंबनमाहीं मममनसीताआश्रमन
गहिपदकमलअनुजकरजोरी कहेउनाथकछुमोहिनखो

अनुजसमेतगएउप्रभुतहवाँ। गोदावरितटआश्रमजहवाँ।
आश्रमदेखिजानकीहीना। भएबिकलजसप्राकृतदीना।
हागुनखानिजानकीसीता। रूपसीलब्रतनेमपुनीता॥
लछमनसमुझाएबहुभाँती। पूछतचलेलतातरुपाँती।
हेखगमृगहेमधुकरश्रेनी। तुमदेखीसीतामृगनैनी॥
खंजनसुककपोतमृगमीना। मधुपनिकरकोकिलाप्रबीना।
कुंदकलीदाडिमदामिनी। कमलसरदससिअहिभामनी।
बरुनपासमनोजधनुहंसा। गजकेहरिनिजसुनतप्रसंसा।
श्रीफलकनककदलिहरषाहीं। नेकुनसंकसकुचमनमाहीं।
सुनजानकीतोहिबिनुआजू। हरषेसकलपाइजनुराजू॥
किमिसहिजातअनषतोहिपाहीं। प्रियाबेगिप्रगटसिकसनाहीं।
एहिबिधखोजतबिलपतस्वामी। मनहुमहाबिरहीअतिकामी।
पूरनकामरामसुखरासी। मनुजचरितकरअजअबिनासी।
आगेपरागीधपतिदेषा॥ सुमरतरामचरनजिन्हरेषा।

दो॰ करसरोजसिरपरसेउकृपासिंधुरघुबीर॥
निरषिरामछबिधामसुखबिगतभईसबपीर ३०

तबकहगीधबचनधरिधीरा। सुनहुरामभंजनभवभीरा।
नाथदसाननयहगतिकीन्ही। तेहिखलजनकसुताहरलीन्ही।
लैदछिनदिसिगएउगोसाँई। बिलपतिअतिकुररीकीनाँई।
दरसलागिप्रभुराषेउँप्राना। चलनचहतअबकृपानिधाना।
रामकहातनुराषहुताता॥ मुखमुसकाइकहीतेहिंबाता।

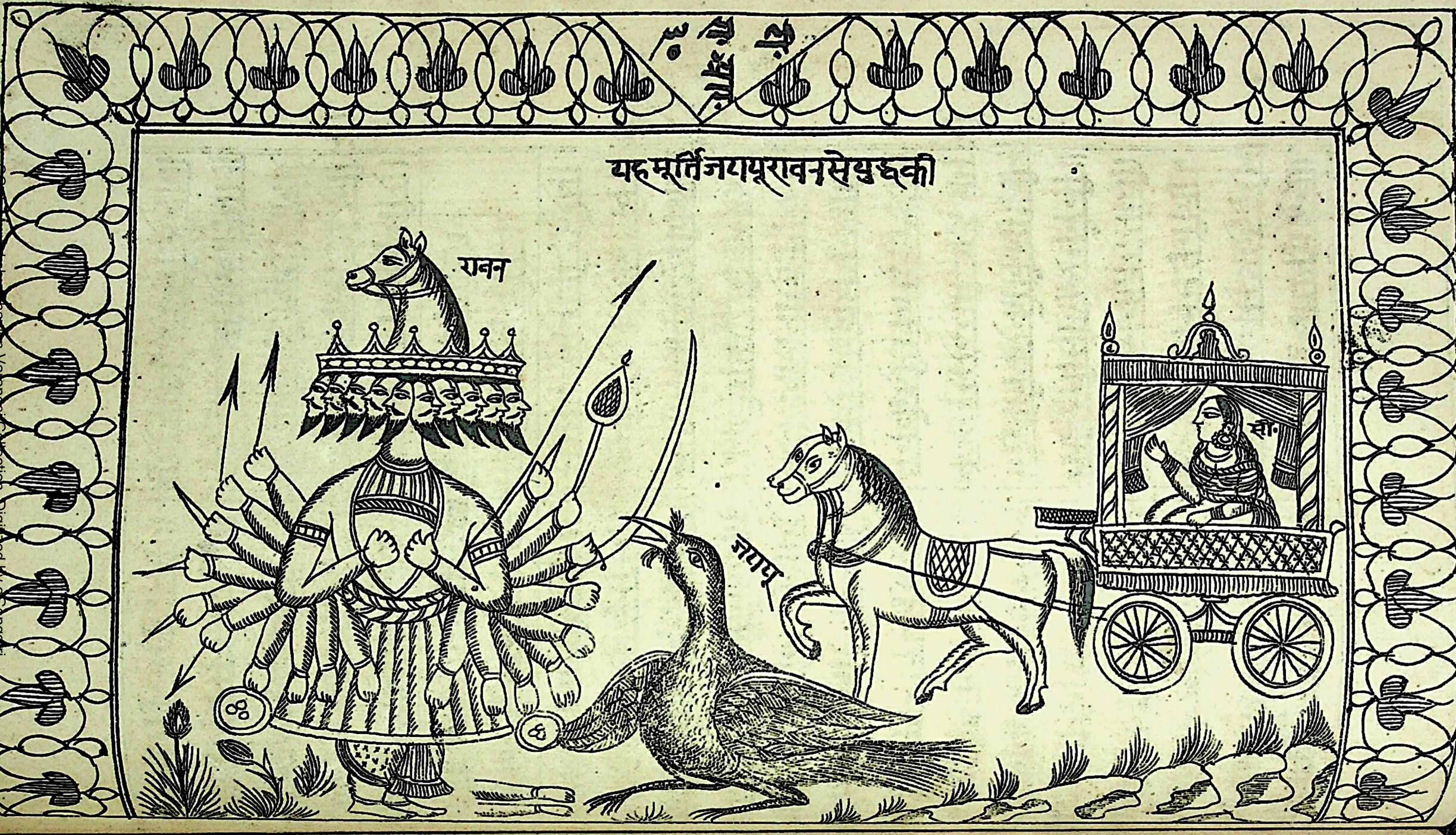

यह मूर्ति जटायू रावन से युद्ध की

जाकरनाममरतमुखआवा। अधमौमुक्तिहोयश्रुतिगावा॥
सोममलोचनगोचरआगे। राखौंदेहिनाथकेहिखांगे॥
जलभरिनयनकहहिंरघुराई तातकर्मनिजतेंगतिपाई॥
परहितबसजिन्हकेमनमाहीं तिन्हकहजगदुर्लभकछुनाहीं
तनतजितातजाहुममधामा देउकाहतुमपूरणकामा॥

दो॰ सीताहरणतातजनि कहहुपितासनजाइ॥
जोमैंरामतोकुलसहित कहहिदसाननआइ॥

गृध्रदेहतजिधरिहरिरूपा भूषणबहुपटपीतअनूपा॥
श्यामगातबिशालभुजचारी अस्तुतिकरतनयनभरिबारी

छं॰ जयरामरूपअनूपनिर्गुणसगुणगुणप्रेरकसही
दससीसबाहुप्रचंडखंडनचंडशरमंडनमही १॥
पाथोदगातसरोजमुखराजीवआयतलोचनम्
नितनौमिरामकृपालबाहुबिशालभवभयमोचनं
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरम् २॥
गोबिंदगोपरद्वंद्वहरिबिज्ञानघनधरणीधरम्।
जोराममंत्रजपंतसंतअनंतजनमनरंजनम् ॥
नितनौमिरामअकामप्रियकामादिखलदलगंजनं
जेहिश्रुतिनिरंतरब्रह्मव्यापकबिरजअजकहिगावहीं
करिज्ञानध्यानबिरागयोगअनेकमुनिजेहिपावहीं
सोप्रगटकरुणाकंदशोभाबृंदअगजगमोहई ३॥
ममहृदयपंकजभृंगअंगअनंगबहुछबिसोहई॥

स्तोत्रफल मांगबांके श्लोकमें गीधकेअधम गीधबल गी १५ तों कारनमृत संकेतपार्द कोमलचित १९ चौ १६ छं १५ चौ चौ ७

तेजनभारि
अनारहित
कौनिसार
सबरीको ७
नधा भक्ति
उपदेशनें छ
तारणकीयो
दो॰
रा॰ आर॰
३२

जोअगमसुगमसुभावनिर्मलअसमसमसीतलसद
पश्यंतियंयोगीजतनकरिकरतमनगोबससद+॥
सोराभरमानिवाससंततदासबसत्रिभुवनधनी॥
ममउरबसउसोसमनसंसृतिजासुकीरतिपावनी॥
दो॰ अबिरलभक्तिमांगिबरगीधगयउहरिधाम+॥
तेहिकेक्रियायथोचितनिजकरकीन्हीराम ३२

कोमलचितअतिदीनदयाला कारनबिनुरघुनाथकृपाला।
गीधअधमखगआमिषभोगी गतिदीन्हीजोजाचतयोगी॥
सुनहुउमातेलोगअभागी। हरितजहोहिंबिषयअनुरागी
पुनिसीतहिखोजतद्वौभाई। चलेबिलोकतबनबहुताई
संकुललताबिटपघनकानन बहुखगमृगतहँगजपंचानन
आवतपंथकबंधनिपाता। तेहिसबकहीसापकैबात
दुर्बासामोहिदीन्हीसापा। प्रभुपदपेखिमिटासोपाप
सुनगंधर्बकहौंमैंतोही॥ मोहिनसोहाइब्रह्मकुलद्रो

दो॰ मनक्रमबचनकपटतजिजोकरभूसुरसेव॥
मोहिसमेतबिरंचिशिवबसताकेसबदेव ३३

सापतताड़तपरुषकहंता। बिप्रपूज्यअसगावहिंसं
पूजियबिप्रसीलगुनहीना सूद्रनगुनगनज्ञानप्रवीन
कहिनिजधर्मताहिसमुझावा निजपदप्रीतिदेखिमनभाव
रघुपतिचरनकमलसिरनाई गयउगगनआपनिगतिपाई
ताहिदेइगतिरामउदारा॥ सबरीकेआश्रमपगुधार

तजिव्यारहि
अड़िपाई श्री
जानकीप्रसंग
जानिबिरहतुप
पासरनिंदा
करतभईप्रभु
प्रभुबिरहब
संतराजरूपक
बननतहाँ
पपाबिरहा

कल नारद आग
मनप्रभुसार
बिलापप्रसु
आपसमेसप्रसु
नारदप्रश्नका
साधुसंतनामन
नामनामप्रसु
कामार्धाप्रसु
गोसाईंजनका
दैन्यघाट

सबरीदेखिरामगृहआये। मुनिकेबचनसमुझिजियभाए

सरसिजलोचनबाहुबिसाला जटामुकुटसिरउरबनमाला

स्यामगौरसुंदरदोउभाई। सबरीपरीचरनलपटाई॥

प्रेममगनमुखबचननआवा पुनिपुनिपदसरोजसिरनावा

सादरजललैचरनपखारे। पुनिसुंदरआसनबैठारे॥

दो॰ कंदमूलफलसुरसअतिदियेरामकहुआनि
प्रेमसहितप्रभुखायेबारंबारबखानि॥ ३४॥

पानिजोरिआगेभइठाढी। प्रभुहिबिलोकिप्रीतिअतिबाढी

केहिबिधिअस्तुतिकरौंतिहारी अधमजातिमैंजड़मतिभारी

अधमतेंअधमअधमअतिनारी तिनमहँमैंमतिमंदअघारी

कहरघुपतिसुनुभामिनिबाता मानौंएकभक्तिकरनाता

जातिपातिकुलधर्मबड़ाई धनबलपरिजनगुनचतुराई

भक्तिहीननरसोहैकैसो। बिनुजलबारिददेखियजैसो

नवधाभक्तिकहौंतोहिपाहीं सावधानसुनुधरुमनमाहीं

प्रथमभक्तिसंतनकरसंगा। दूसरिरतिममकथाप्रसंगा।

दो॰ गुरुपदपंकजसेवातीसरिभक्तिअमान ॥
चौथिभक्तिममगुनगनकरइकपटतजिगान ३५

मंत्रजापममदृढबिस्वासा पंचमभजनसोबेदप्रकासा

छठदमसीलबिरतिबहुकर्मा निरतनिरंतरसज्जनधर्मा

सातवसममोहिमयजगदेखा मोतेसंतअधिककरलेखा

आठवजथालाभसंतोषा सपनेहुनहिंदेखइपरदोषा

सेवाकी अ
धिकतान
ऋषिद्यागी
दासदेउ
भक्तलाभ
भूदेपरउ
न्हैनायक
परआधिक
रिनुएक्रम
औन्मोहत
तहांतू है
याहितेंज्ञान
अप्रसन्नाभक्ति
अकलुहै यह
गुनवष प्रकार
सोमुखकारि
मदरिहुआवत
अंचकी पद
स्तिकारण

टी॰
रा॰ अ॰
३३

अक्स्थधर्म
त्यागि आवत
भक्तो आस्रय
अह शुद्धता
हैको प्राकरि
रहरि
× ×

[illegible]

नवमसरलसबसोछलहीना ममभरोसहियहर्षनदीना
नवमेंहएकोजिन्हकेहोई नारिपुरुषसचराचरकोई
सोअतिसयप्रियभामिनिमोरे सकलप्रकारभगतिदृढ़तोरे
जोगिबृंददुर्लभगतिजोई। तोकहुआजुसुलभभइसोई
ममदरसनफलपरमअनूपा जीवपावनिजसहजसरूपा
जनकसुताकैसुधिभामिनी जानहिकहुकरिबरगामिनी
पंपासरहिजाहुरघुराई॥ तहँहोइहिसुग्रीवमिताई
सोसबकहिहिदेवरघुबीरा जानतहूंपूछहुमतिधीरा
बारबारप्रभुपदसिरनाई। प्रेमसहितसबकथासुनाई

छं॰ कहिकथासकलबिलोकिहरिमुखहृदयपदपंकजधरे
तजिजोगपावकदेहहरिपदलीनभइजहँनहिंफिरे॥
नराबिबिधकर्मअधर्मबहुमतसोकप्रदसबत्यागहू
बिस्वासकरिकहदासतुलसीरामपदअनुरागहू॥

दो॰ जातिहीनअघजन्ममहिमुक्तकीन्हिअसिनारि।
महामंदमनसुखचहसिऐसेप्रभुहिबिसारि ३६।

चलेरामत्यागाबनसोऊ॥ अतुलितबलनरकेहरिदोऊ
बिरहीइवप्रभुकरतबिषादा कहतकथाअनेकसंबादा
लछिमनदेखुबिपिनकैसोभा देखतकेहिकरमननहिंछोभा
नारिसहितसबखगमृगबृंदा मानहुमोरिकरतहहिंनिंदा
हमहिंदेखिमृगनिकरपराहीं मृगीकहहिंतुमकहंभयनाहीं
तुमआनंदकरहुमृगजाए कंचनमृगखोजनएआये

इतिश्रीआरण्यकांडप्रसंगअंगसमाप्तं ॥

अरण्यचौपाईछंददोहाकीठीक

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
२	५२०	१०	८	५०

संगलाइकरनीकरिलेहीं। मानहुमोहिसिखावनुदेहीं
शास्त्रसुचिंतितपुनिपुनिदेषिय भूपसुसेवितबसनहिलेषिय
राषियनारिजदपिउरमाहीं। जुवतीशास्त्रनृपतिबसनाहीं
देखहुतातबसंतसोहावा प्रियाहीनमोहिभयउपजावा।

दो·बिरहबिकलबलहीनमोहिजानसिनिपटअकेल।
सहितबिपिनमधुकरषगनमदनकीन्हबगमेल॥
देषिगएउभ्रातासहिततासुदूतसुनिबात॥
डेराकीन्हेमनहुतबकटकुहटकिमनजात ३७।

बिटपबिशाललताउरझानी बिबिधबितानदियेजनुतानी।
कदलीतालबरध्वजापताका देषिनमोहिधीरमनजाका।
बिबिधभांतिफूलेतरुनाना। जनुबानैतबनेबहुबाना॥
कहुंकहुंसुंदरबिटपसुहाये जनुभटबिलगबिलगहोइछाये
कूजतपिकमानहुगजमाते ढेकमहोषऊंटबिसराते॥
मोरचकोरकीरबरबाजी। पारावतमरालसबताजी।
तीतरलावकपदचरजूथा बरनिनजाइमनोजबरूथा।
रथगिरिसिलादुंदुभीझरना चातकबंदीगुनगनबरना॥
मधुकरमुखरभेरिसहनाई त्रिबिधबयारिबसीठीआई
चतुरंगनीसेनसंगलीन्हे बिचरतिसबहिचुनौतीदीन्हे
लछिमनदेषतकामअनीका रहहिंधीरतिन्हकैजगलीका
एहिकेएकपरमबलनारी तेहितेंउबरसुभटसोइभारी

दो· ताततीनअतिप्रबलषलकामक्रोधअरुलोभ

टी·
रा·आर
३५

मुनिबिज्ञानधाममनकरहिंनिमिषमहुँछोभ॥
लोभकेइच्छादंभबलकामकेकेवलनारि॥
क्रोधकेपरुषबचनबलमुनिबरकहहिंबिचारि

गुनातीतसचराचरस्वामी। रामउमासबअंतरजामी॥
कामिनकैदीनतादिखाई। धीरनकेमनबिरतिदृढ़ा
क्रोधमनोजलोभमदमाया। छूटहिंसकलरामकीदाय
सोनरइंद्रजालनहिंभूला॥ जापरहोइसोनरअनुकूल
उमाकहौंमैंअनुभवअपना॥ सतहरिभजनुजगतसबस
मुनिप्रभुगएसरोवरतीरा॥ पंपानामसुभगगंभीरा॥
संतहृदयजसनिर्मलबारी। बांधेघाटमनोहरचारी॥
जहँतहँपियहिंबिबिधमृगनीरा। जनुउदारगृहजाचकभी

दो॰ पुरइनिसघनओटजलबेगिनपाइयमर्म॥
मायाछन्ननदेखियेजैसेनिर्गुनब्रह्म ×× ॥
सुखीमीनसबएकरसअतिअगाधजलमाहिं
जथाधर्मशीलन्हकेदिनसुखसंजुतजाहिं ३९

बिकसेसरसिजनानारंगा। मधुरमुखरगुंजतबहुभृं
बोलतजलकुक्कुटकलहंसा। प्रभुबिलोकिजनुकरतप्रसं
चक्रबाकबकखगसमुदाई। देखतबनइबरनिनाहिंजा
सुंदरखगगनगिरासुहाई। जातपथिकजनुलेतबुला
तालसमीपमुनिन्हगृहछाये। चहुँदिसिकाननबिटपसुहा
चंपकबकुलकदंबतमाला। पाटलपनसपरासरसाला॥

नवपल्लवकुसमिततरुनाना। चंचरीकपटलीकरगाना॥
सीतलमंदसुगंधसुभाऊ संततबहैमनोहरबाऊ॥
कुहूकुहूकोकिलधुनिकरहीं सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं

दो·फलभारनम्रबिटपसबरहेभूमिनियराइ॥
परउपकारीपुरुषजिमिनवहिंसुसंपतिपाइ४०

देषिरामअतिरुचिरतलावा। मज्जनकीन्हपरमसुषपावा
देषिसुसुंदरतरुबरछाया। बैठेअनुजसहितरघुराया
तहँपुनिसकलदेवमुनिआए अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए
बैठेपरमप्रसन्नकृपाला॥ कहतअनुजसनकथारसाला
बिरहवंतभगवंतहिदेषी। नारदमनभासोचबिशेषी
मोरसापकरिअंगीकारा कहतरामनानादुखभारा
ऐसेप्रभुहिँबिलोकौँजाई। पुनिनबनिहिंअसअवसरआई
यहबिचारनारदकरबीना गएजहाँप्रभुसुषआसीना।
गावतरामचरितमृदुबानी प्रेमसहितबहुभांतिबखानी
करतदंडवतलियेउठाई॥ राषेबहुतबारउरलाई २॥
स्वागतपूछिनिकटबैठारे लछमनसादर चरनपखारे

दो·नानाबिधबिनतीकरिप्रभुप्रसन्नजियजानि
नारदबोलेबचनतबजोरिसरोरुहपानि।।४१॥

सुनहुउदारपरमरघुनायक सुंदरअगमसुगमबरदायक
देहुएकबरमांगौंस्वामी। जद्यपिजानतअंतरजामी
जानहुमुनितुम्हमोरसुभाऊ जनसनकबहुंकिकरौंदुराऊ

कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी जो मुनिबर न सकहु तुम मां
जन कहुं कछु अदेय नहि मोरे
अस बिश्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाही ॥
अस बर मांगौं करौं ढिठाई ॥
जद्यपि प्रभु के नाम अनेका
श्रुति कहँ अधिक एक ते एक
राम सकल नामन ते अधिका
होउ नाथ अघ खग गन बधि

दो॰ राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम ॥
अपर नाम उडुगन बिमल बसहु भगत उर ब्योम ॥
एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिंधु रघुनाथ ॥
तब नारद मन हरष अति प्रभु पद नायेउ माथ ४२

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी
पुनि नारद बोले मृदु बानी॥
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया
मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया
तब बिवाह मैं चाहउं कीन्हा।
प्रभु केहि कारन करै न दीन्ह
सुनि मुनि तोहि कहौं सहरोषा
भजहिं जे मोहि तज सकल भरो
करौं सदा तिन्ह कै रखवारी
जिमि बालक राखै महता
गहि सिसु बच्छ अनल अहि धाई
तहँ राखै जननी अरगाई ॥
प्रौढ भए तेहि सुत पर माता
प्रीति करै नहिं पाछिल बात
मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी ॥
बालक सुत सम दास अमानी
जनहिं मोर बल निज बल ताही
दुहुं कहँ काम क्रोध रिपु आही
यह बिचार पंडित मोहि भजहीं
पायेहु ज्ञान भगति नहिं तजहीं

दो॰ काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धार
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ४३

सुनिमुनिकहँपुरानश्रुतिसंता। मोहबिपनकहँनारिबसंता
जपतपनेमजलाश्रयझारी होइग्रीषमसोषैसबनारी
कामक्रोधमदमत्सरभेका। इन्हहिंहरषप्रदबरषाएका
दुर्बासनाकुमदसमुदाई॥ तिनकहँसरदसदासुषदाई
धर्मसकलसरसीरुहबृंदा। होइहिमतिन्हैदहैसुषमंदा
पुनिममताजवासबहुताई। पलुहैनारिसिसिररितुपाई
पापउलूकनिकरसुषकारी नारिनिबिड़रजनीअंधियारी
बुद्धिबलसीलसत्यसबमीना। बनसीसमत्रियकहहिंप्रबीना

दो॰ अवगुनमूलसूलप्रदप्रमदासबदुखखानि
तातेंकीन्हनिवारनमुनिमैंयहजियजानि ४४।

सुनिरघुपतिकेबचनसुहाए मुनितनपुलकनयनभरिआए
कहहुकवनप्रभुकैअसरीती सेवकपरममताअरुप्रीती
जेनभजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी ज्ञानरंकनरमंदअभागी॥
पुनिसादरबोलेमुनिनारद सुनहुरामबिज्ञानबिसारद
संतनकेलच्छनरघुबीरा॥ कहहुनाथभवभंजनभीरा
सुनिमुनिसंतनकेगुनकहऊँ जिन्हतेमैंउनकेबसरहऊँ
षटबिकारजितअनघअकामा अचलअकिंचनसुचिसुष धामा
अमितबोधअनीहमितभोगी सत्यसंधकबिकोबिदजोगी
सावधानमानदमदहीना॥ धीरधर्मगतिपरमप्रबीना

दो॰ गुनागारसंसारदुखरहितबिगतसंदेह॥
तजिममचरनसरोजप्रियतिन्हकहँदेहनगेह ४५

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं। पर गुन सुनत अधिक हरषा
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्री
जप तप ब्रत दम संजम नेमा। गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमा॥
श्रद्धा छमा मयत्री दाया॥ मुदिता मम पद प्रीति अमा
बिरति बिबेक बिनै बिग्याना। बोध जथारथ बेद पुराना॥
दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत सीला
मुनि सुनि साधन के गुन जेते। कहि न सकैं सारद श्रुति तेते

छं॰ कहि सक न सारद शेष नारद सुनत पद पंकज गहे
अस दीनबंधु कृपाल अपने भक्त गुन निज मुख कहे।
सिर नाइ बारहिं बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए॥
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रंग रहे॥
दो॰ रावनारि जस पावन गावहिं सुनहिं जो लोग॥
रामभक्ति दृढ पावहिं बिनु बिराग जप जोग *॥
दीप सिखा सम युवती रस मन जनि होसि पतंग
भजहिं राम तजि काम मद करहिं सदा सतसंग ४६

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वं
सने बिमलबैराग्यसंपादनो नाम तृतीयः सोपानः

प्यारेलाल के छपा

अथ किष्किंधाकांड प्रसंग अथ आदि मंगे श्लो० २ सो० २ कुंदेंदीवर सुंदर प्रकट गत सकल सुरलोक अर्थ सिधान कहते हैं यथा सुखधाम के है निज भक्ति हेत कैसे हैं दोऊ कुंद को फूल सम कोमल गौर स्याम सोहत हैं अति बलीवि ज्ञान के धाम श्री शोभा सयुक्त उत्तम धनुषधारी श्रुति वेद तिनकी प्रशंसा करते हैं पुनः गाय और ब्राह्मन वृंद तिनके प्रिय हैं माया से लीला मनुष्य रूप धारन किये

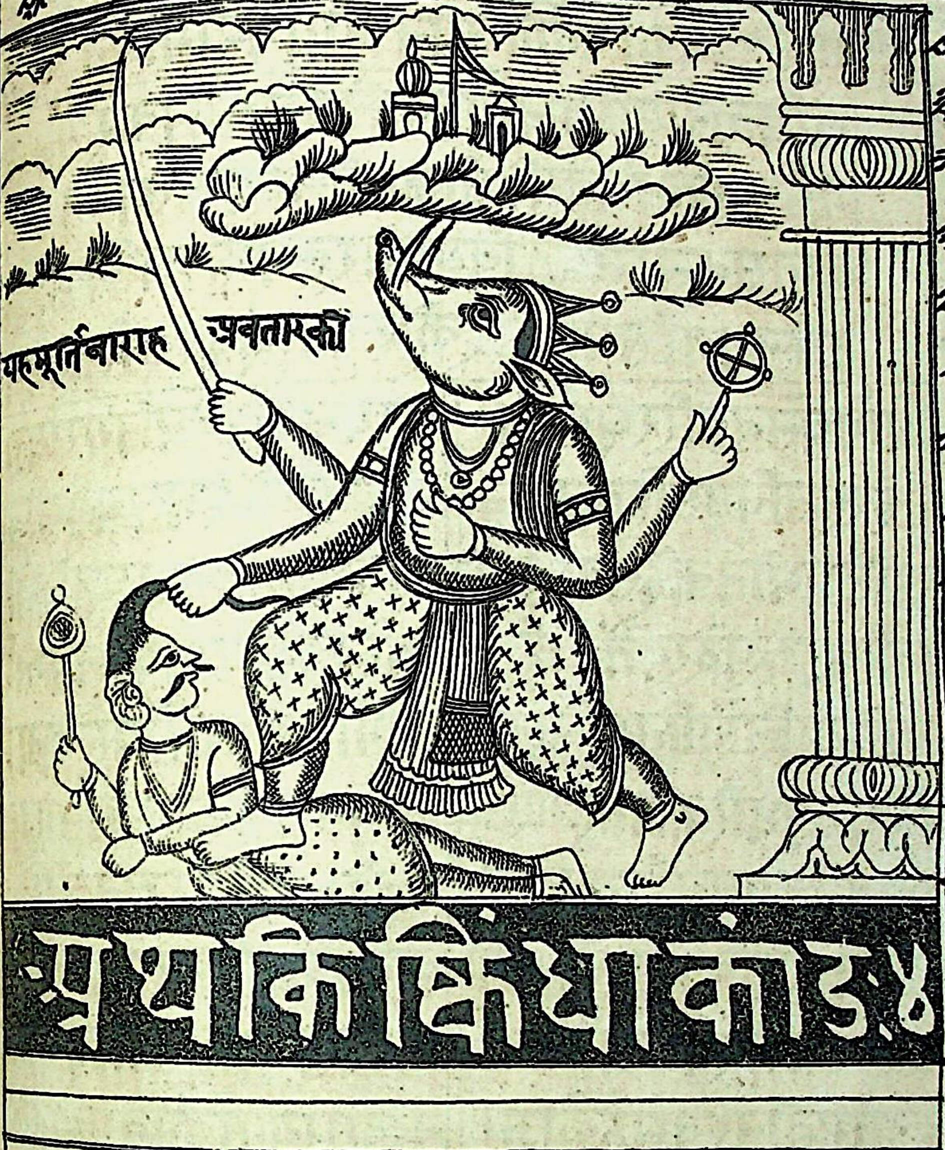
यह मूर्ति वाराह अवतार की

टी० रा० कि० १

अथ किष्किंधाकांड ४

श्रीगणेशायनमः श्लोकः कुंदेंदीवरसुंदरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृंदप्रियौ मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः १ ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं श्रीमच्छंभुमुखेंदुसुंदरवरे संशोभितं सर्वदा संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं॥

किये श्रुत सद्धर्म तिनको धारण पालन करते उत्तम सुभ आशिर्वादक कवच वत् रक्षक हितकारी के सबको हितकी सीता के खोजने तत्पर वन मार्ग मे विचरते हैं १

टी० २ ब्रह्मांभोधि० तै धर्म शास्त्र कहत हैं कैसे हैं निरंतर श्री राम नाम प्रमान पीवनि है कैसे हैं अमृत के समुद्र प्रगट भयो है सो कलिके मलको नाश करते हैं श्री विनाशी हैं और श्री महादेव जी के मुख चन्द्रमा ते शोभित गौर सुन्दर बतौं है भव रोग की औषध श्री कविश हैं सुख के दाता करत हैं बगं को श्री पार्वतीजी श्रीमं सुखश्लोक कर्ता श्री जानकीजी के प्रान हैं ॥ २ ॥

धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतं २ सो०

मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानि कर ।
जहँ बस शंभु भवानि सो कासी सेइय कस न १ ॥
जरत सकल सुरवृंद बिषम गरल जेहि पान किय
तेहि न भजसि मतिमंद को कृपाल शंकर सरिस २

आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बलसींवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई ॥ कहेसु जाय जिय सैन बुझाई ॥
पठये बालि होहिं मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
बिप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
को तुम स्यामल गौर शरीरा । छत्रीरूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पदगामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता ॥
की तुम तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायण की तुम दोऊ ॥

दो० जग कारन तारन भव भंजन धरनीभार २ ॥
की तुम अखिल भुवनपति लीन्ह मनुज अवतार

कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितु बचन मानि बन आए ॥
नाम राम लछमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सोहाई ॥
इहाँ हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझाई ॥

रा० कि०

पंक्ति ६ आगे चलेहु

प्रभुपहिचानपरेउगहिचरना। सोसुखउमाजाइनहिंबरना
पुलकिततनुमुखआवनबचना। देखतरुचिरबेषकैरचना॥
पुनिधीरजधरिअस्तुतिकीन्ही हरषहृदयनिजनाथहिचीन्ही
मोरन्यायमैंपूछासाँई॥ तुमपूछहुकसनरकीनाँई
तवमायाबसफिरौंभुलाना। तातेंमैंनहिंप्रभुपहिचाना।

दो॰ एकमैंमंदमोहबसकुटिलहृदयअग्यान॥
पुनिप्रभुमोहिबिसारेउदीनबंधुभगवान २

जदपिनाथबहुऔगुनमोरे। सेवकप्रभुहिपरैजनिभोरे
नाथजीवतवमायामोहा। सोनिस्तरैतुम्हारेहिछोहा
तापरमैंरघुबीरदोहाई॥ जानौंनहिकछुभजनउपाई
सेवकसुतपतिमातभरोसे। रहैअसोचबनैप्रभुपोसे
असकहिपरेउचरनअकुलाई निजतनप्रगटप्रीतिउरछाई
तबरघुपतिउठाइउरलावा। निजलोचनजलसींचजुडावा
सुनुकपिजियमानसिजनिऊना। तैंममप्रियलछमनतेंदूना
समदरसीमोहिकहसबकोऊ। सेवकप्रियअनन्यगतिसोऊ

दो॰ सोअनन्यजाकेअसिमतिनटरैहनुमंत॥
मैंसेवकसचराचररूपस्वामिभगवंत।३॥

देखिपवनसुतपतिअनुकूला हृदयहरषबीतीसबसूला
नाथसैलपरकपिपतिरहई। सोसुग्रीवदासतवअहई
तेहिसननाथमयत्रीकीजे। दीनजानितेहिअभयकरीजे
सोसीताकरिषोजकराइहि जहंतहंमरकटकोटिपठाइहि

एहिबिधिसकलकथासमुझाई। लियेदुऔजनपीठिचढ़ाई॥
जबसुग्रीवरामकहुँदेखा॥ अतिशयजन्मधन्यकरिलेखा॥
सादरमिलेउनाइपदमाथा। भेंटेउअनुजसहितरघुनाथा॥
कपिकरमनबिचारयहरीती। करिहहिंबिधिमोसनयेप्रीती॥

दो॰ तबहनुमंतउभयदिशिकीसबकथासुनाइ॥
पावकसाखीदेइकरिजोरीप्रीतिदृढ़ाइ॥४॥

कीन्हप्रीतिकछुबीचनराषा। लछमनरामचरितसबभाषा॥
कहसुग्रीवनयनभरिबारी मिलिहिनाथमिथलेशकुमारी॥
मंत्रिन्हसहितइहांइकबारा। बैठरहेउँमैंकरतबिचारा॥
गगनपंथदेषीमैंजाता॥ परबसपरीबहुतबिलपाता॥
रामरामहारामपुकारी॥ हमहिंदेषिदीन्हेउपटडारी॥
मागारामतुरततेहिंदीन्हा पटउरलाइसोचअतिकीन्हा॥
कहसुग्रीवसुनहुरघुबीरा तजहुसोचमनआनहुधीरा॥
सबप्रकारकरिहौंसेवकाई जेहिबिधिमिलिहिजानकीआई॥

दो॰ सषाबचनसुनिहरषेकृपासिंधुबलसींव॥
कारनकवनबसहुबनमोहिकहहुसुग्रीव॥५॥

नाथबालिअरुमैंदोउभाई। प्रीतिरहीकछुबरनिनजाई॥
मयसुतमायावीतेहिनाऊं आवासोप्रभुहमरेगाऊं॥
अर्द्धरातिपुरद्वारपुकारा। बालीरिपुबलसहैनपारा॥
धावाबालिदेषसोभागा। मैंपुनिगयउँबंधुसंगलागा॥
गिरिबरगुहापैठसोजाई॥ तबबालीमोहिकहाबुझाई॥

बालिबधहेत प्रभुसाथलेहि प्रभुयोगब पायगं॰की भक्तियान कौबैराग्य प्रेमप्रतीति ग्रीवहेत

ग्यानहांबिरूप श्रीरको हेत इंको ई पत्ताबाल केकंठमोहि बामेंप्रभावाको ग्रोप्रभुसमुद्र हेरताकोबल

दी॰
रा॰ कि॰
४

छोनिहिग्यान सोयोनंमार कैकिबानंमा देप्रश्नप्रभु सालानकै बालिमोह हेतुकोतहाँ बालिस्रगई कोसोपित त्यागकिया १०

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

परषेसुमोहिएकपषवारा नहिंआवउंतबजानसमारा
मासदिवसतहँरहेउंषरारी निसरीरुधिरधारतहँभारी
बालिहतेसिमोहिमारिहिआई सिलादेइतहँचलेउंपराई॥
मंत्रिन्हपुरदेषाबिनुसांई॥ दीन्हेउराजमोहिबरिआंई
बालीताहिमारिगृहआवा। देखिमोहिजियभेदबढ़ावा
रिपुसममोहिमारेसिअतिभारी हरिलीन्हेसिसर्बसअरुनारी
ताकेंभयरघुबीरकृपाला। सकलभुवनमैंफिरेउंबिहाला।
इहांसापबसआवतनाहीं तदपिसभीतरहौंमनमाहीं
सुनिसेवकदुखदीनदयाला फरकिउठीदोउभुजाबिसाला

दो॰ सुनुसुग्रीवमैंमारिहौंबालिहिएकहिबान
ब्रह्मरुद्रसरनागतहुगएनउबरहिंप्रान॥६॥

जेनमित्रदुषहोहिंदुषारी॥ तिनहिंबिलोकतपातकभारी
निजदुखगिरिसमरजकरजाना मित्रकेदुखरजमेरुसमाना
जिन्हकेअसमतिसहजनआई तेसठकतहठकरतमिताई
कुपथनिवारिसुपंथचलावा गुनप्रगटैअवगुननिदुरावा
देतलेतमनसंकनधरई॥ बलअनुमानसदाहितकरई
बिपतिकालकरसतगुननेहा श्रुतिकहसंतमित्रगुनएहा
आगेकहँमृदुबचनबनाई। पाछेंअनहितमनकुटिलाई
जाकरचितअहिगतिसमभाई असकुमित्रपरिहरेहिंभलाई
सेवकसठनृपकृपनकुनारी कपटीमित्रसूलसमचारी
सखासोचत्यागहुबलमोरे सबबिधिघटबकाजमैंतोरे

कहसुग्रीवसुनहुरघुबीरा बालिमहाबलअतिरनधी
दुंदुभीअस्थितालदेखराए बिनुप्रयासरघुनाथढहा
देखिअमितबलबाढ़ीप्रीती बालिबधबइन्हभैपरतीती
बारबारनावइपदसीसा। प्रभुहिजानिमनहरषकपी
उपजाज्ञानबचनतबबोला। नाथकृपामनभयउअलो
सुखसंपतिपरिवारबड़ाई। सबपरिहरिकरिहौंसेवका
एसबरामभक्तिकेबाधक कहहिंसंततवपदअवराध
शत्रुमित्रसुखदुखजगमाहीं मायाकृतपरमारथनाहीं
बालिपरमहितजासुप्रसादा मिलेहुरामतुमसमनबिषा
सपनेजेहिसनहोइलराई। जागेसमुझतमनसकुचा
अबप्रभुकृपाकरहुएहिभांती सबतजिभजनकरौंदिनरा
सुनिबिरागसंयुतकपिबानी बोलेबिहँसिरामधनुपानी
जोकछुकहेउसत्यसबसोई सखाबचनमममृषानहो
नटमर्कटइवसबहिंनचावत रामखगेसबेदअसगावत
लैसुग्रीवसंगरघुनाथा॥ चलेचापसायकगहिहाथा
तबरघुपतिसुग्रीवपठावा गर्जेसिजाइनिकटबलपा
सुनतबालिक्रोधातुरधावा गहिकरचरननारिसमुझा
सुनुपतिजिन्हहिंमिलेउसुग्रीवा तेद्वौबंधुतेजबलसींवा
कोसलेशसुतलक्ष्मणरामा कालहुजीतिसकैंसंग्रा

दो०कहबालीसुनुभीरुप्रियसमदरसीरघुनाथ
जौंकदाचिमोहिमारहैंतौपुनिहोउँसनाथ ७॥

असकहिचलामहाअभिमानी तृनसमानसुग्रीवहिजानी
भिरेउभौबालीअतितर्जा मुठिकामारमहाधुनिगर्जा
तबसुग्रीवबिकलहोइभागा मुष्टिप्रहारबज्रसमलागा
मैंजोकहारघुबीरकृपाला बंधुनहोयमोरयहकाला
एकरूपतुमभ्रातादोऊ। तेहिभ्रमतेनहिमारेउसोऊ
करपरसासुग्रीवशरीरा। तनभाकुलिशगईसबपीरा
मेलीकंठसुमनकै माला पठवापुनिबलदेइबिसाला
पुनिनानाबिधिपरीलराई बिटपओटदेखहिंरघुराई।

दो॰ बहुछलबलसुग्रीवकरि हियहाराभयमानि
माराबालीरामतबहृदयमांझसरतानि ॥ ८ ॥

पराबिकलमहिसरकेलागे पुनिउठिबैठिदेषिप्रभुआगे
स्यामगातशिरजटाबनाए अरुननयनसरचापचढ़ाए।
पुनिपुनिचितैचरनचितदीन्हा सुफलजन्ममानाप्रभुचीन्हा
हृदयप्रीतिमुखबचनकठोरा बोलाचितैरामकीओरा॥
धर्महेतुअवतरेउगोसाईं। मारेहुमोहिब्याधकीनाईं
मैंबैरीसुग्रीवपियारा। अवगुनकवननाथमोहिमारा
अनुजबधूभगिनीसुतनारी सुनसठकन्यासमएचारी
इन्हहिंकुदृष्टिबिलोकैजोई ताहिबधेकछुपापनहोई
मूढ़तोहिअतिसयअभिमाना नारिसिखावनकरसिन काना
ममभुजबलआश्रिततेहिजानी माराचहसिअधमअभिमानी

दो॰ सुनहुरामस्वामीसनचलनचातुरीमोरि

अभिकानौं हैं बिलाप बैंतरग प्रथमसग बालीकोप ८ औं०॥ हे प्रभुहै ग्रैसुप सिवालै ३ टी० २० औं० बालिके ८

गर्हे प्रभु अपने गले श्यामभोरे बालिकोरि अं: लक्ष्मण जाइ सुग्रीवको राज अंगद को जुवराज कीन्हे निजपद

दी: रा० कि० ८

प्रभुअजहूंमैंपापनकी·अंतकालगतितोरि॥

सुनतराम अति कोमलबानी। बालिसीसपरसेउनिजपानी॥
अचलकरौंतनराखहु प्राना। बालिकहासुनुकृपानिधाना॥
जन्मजन्ममुनिजतनकराहीं। अंतरामकहिआवतनाहीं॥
जासुनामबलशंकर कासी। देतसबहिंसमगतिअविनासी॥
ममलोचनगोचरसोइआवा। बहुरिकिप्रभुअसबनिहिबनावा॥

छं: सोनयनगोचरजासुगुननितनेतिकहिश्रुतिगावहीं।
जिमिपवनमनगोनिरसकरिमुनिध्यानकबहुंकपावहीं॥
मोहिजानिअतिअभिमानबसप्रभुकहेउराखुसरीरहीं।
असकवनसठहठिकाटिसुरतरुबारिकरिहिबबूरहीं॥
अबनाथकरिकरुनाबिलोकहुदेहुजोबरमागउं॥
जेहिजोनिजन्मौंकर्मबसतहँरामपदअनुरागउं॥
यहतनयममसमबिनयबलकल्यानप्रदप्रभुलीजिए।
गहिबांहसुरनरनाहआपनदासअंगदकीजिए॥
दो: रामचरनदृढप्रीतिकरबालिकीन्हतनुत्याग॥
सुमनमालजिमिकंठतेंगिरतनजानैनाग॥ १०॥

रामबालिनिजधामपठावा। नगरलोगसबव्याकुलधावा॥
नानाबिधबिलापकरतारा। छूटेकेसनदेहसंभारा॥
ताराबिकलदेखिरघुराया। दीन्हज्ञानहरलीन्हीमाया॥
छितिजलपावकगगनसमीरा। पंचरचितअतिअधमसरीरा॥
प्रगटसोतनुतवआगेसोवा। जीवनित्यकेहिलगितुमरोवा॥

दोहे बध नाहिं अवधन मीहि जीवायलतें समीपरहो तहाँ निवास कहुँ भया॥

॥ ९२ ॥

उपजाज्ञानचरनतबलागी। लीन्हेसिपरमभगतिबरमांगी॥
उमादारुजोषितकीनांईं। सबहिनचावतरामगोसांईं॥
तबसुग्रीवहिंआयसुदीन्हा। मृतककर्मबिधिवतसबकीन्हा॥
रामकहाअनुजहिंसमुझाई। राजदेहुसुग्रीवहिंजाई॥
रघुपतिचरननाइकरमाथा। चलेसकलप्रेरितरघुनाथा॥

दो· लछमनतुरतबुलाएपुरजनबिप्रसमाज॥
राजदीन्हसुग्रीवकहँअंगदकहँजुबराज॥११॥

उमारामसमहितजगमाहीं। गुरपितुमातुबंधुप्रभुनाहीं॥
सुरनरमुनिसबकैयहरीती। स्वारथलागिकरहिंसबप्रीती॥
बालित्रासब्याकुलदिनराती। तनबहुब्रनचिंताजरछाती॥
सोइसुग्रीवकीन्हकपिराऊ। अतिकृपालरघुबीरसुभाऊ॥
जानतहूँअसप्रभुपरिहरहीं। काहेनबिपतिजालनरपरहीं॥
पुनिसुग्रीवहिंलीन्हबुलाई। बहुप्रकारनृपनीतिसिषाई॥
कहप्रभुसुनुसुग्रीवहरीसा। पुरनजाउँदशचारिबरीसा॥
गतग्रीषमबरषाऋतुआई। रहिहौंनिकटशैलपरछाई॥
अंगदसहितकरहुतुमराजू। संततहृदयधरेहुममकाजू॥
जबसुग्रीवभवनफिरआए। रामप्रबर्षनगिरियहँछाए॥

दो· प्रथमहिंदेवनगिरिगुहाराखीरुचिरबनाइ।
रामकृपानिधिकछुकदिनबासकरहिंगेआइ॥

सुंदरबनकुसुमितअतिसोभा। गुंजतमधुपनिकरमधुलोभा॥
कंदमूलफलपत्रसोहाए॥ भएबहुतजबतेंप्रभुआए।

पंक्ति २ चौ० ६ दो० ११ चौ० ॥ [illegible] [illegible] कुंडलाई २ चौ० ॥ नहींधर्मतें ज्ञानयोग [illegible] कर्मयोग ज्ञानभक्ति प्राप्तकर्मा वर्णीतेंप्रभु कियाग्रह जैसेमधुग [illegible] तेंमलीनतें [illegible] तेंबिल्याहैं

गर्भमेंआवतहैं नवलोंबंगरहतो हैंभौतीपरतें [illegible] [illegible] [illegible] मायानेंमूरतहैं कहातबमायां मिलतहैं आनिकेमन [illegible] [illegible]

बालिकोरामचंद्रनेबधकिया

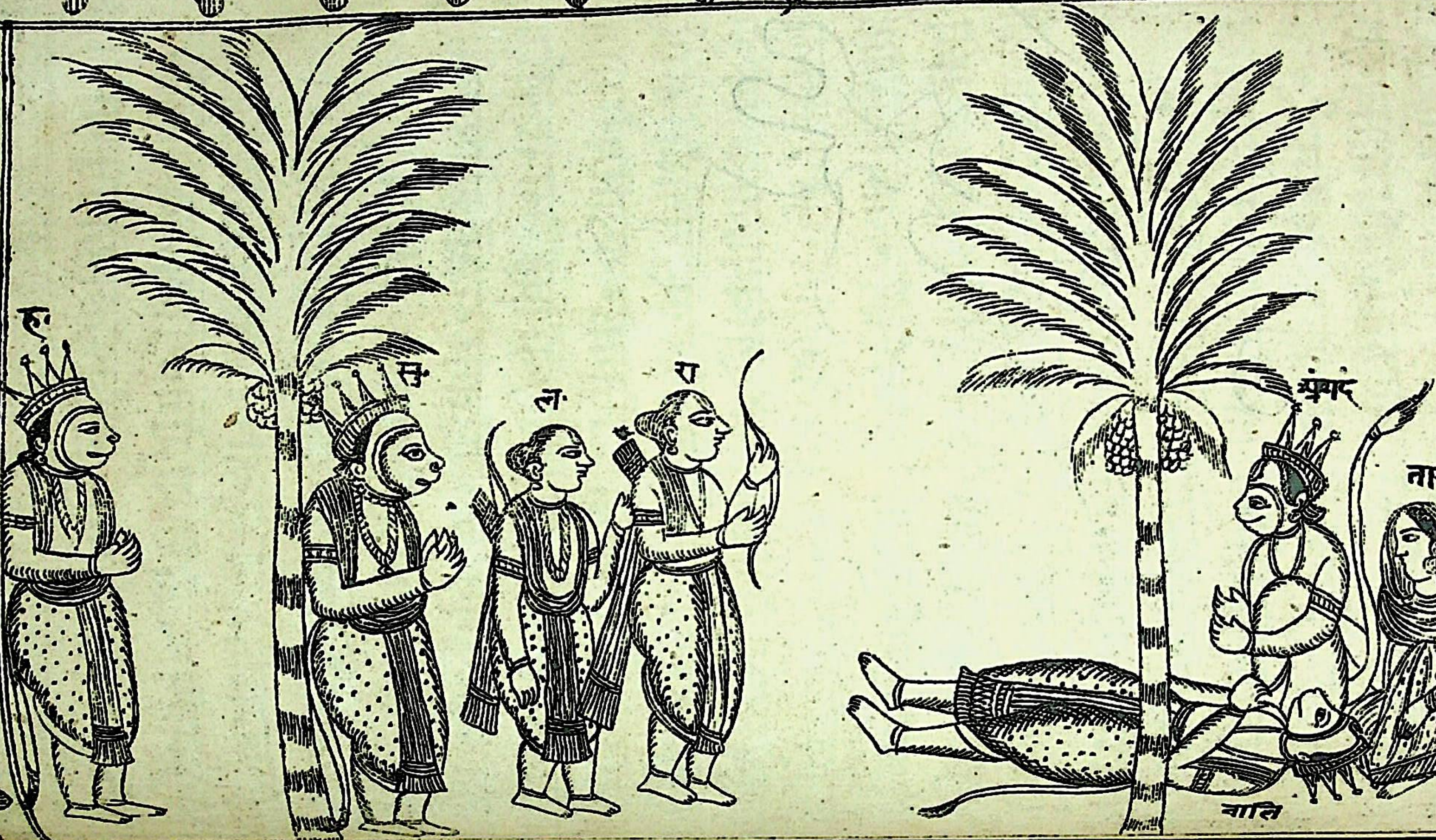
ह
सु
ल
रा
अंगद
तारा
बालि

टी. रा. कि. १०

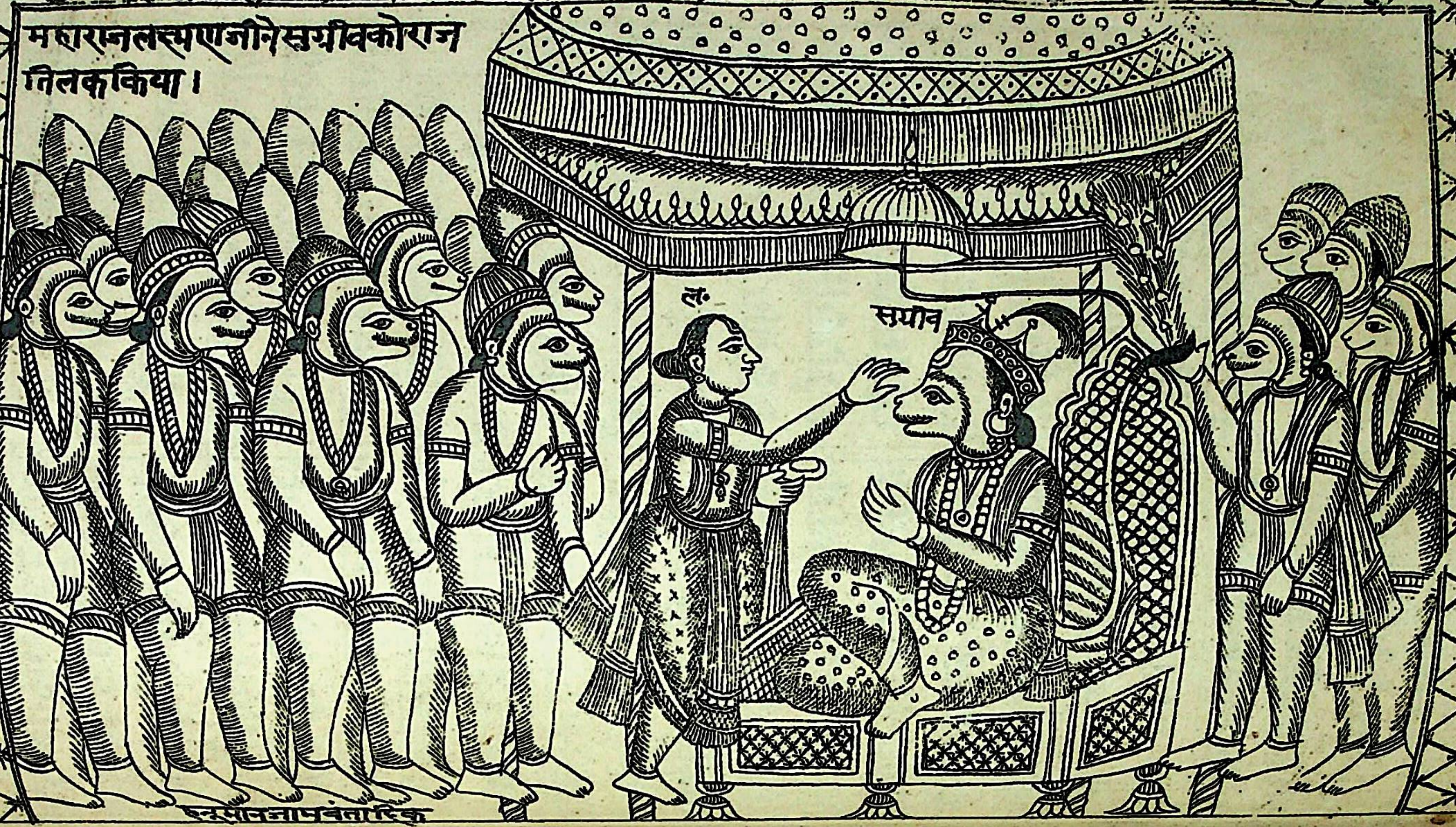

महाराजलक्ष्मणजीनेसुग्रीवकोराज तिलककिया।

लं॰
सुग्रीव
हनूमानजाम्बवंतादिक

देषिमनोहरसैलअनूपा। रहेतहँअनुजसहितसुरभूपा।
मधुकरषगमृगतनुधरिदेवा करहिंसिद्धमुनिप्रभुकैसेवा
मंगलरूपभएउबनतबतें। कीन्हनिवासरमापतिजबतें।
फटिकसिलाअतिसुभ्रसुहाई सुषआसीनतहांदोउभाई
कहतअनुजसनकथाअनेका भगतिबिरतिनृपनीतिबिबे
बरषाकालमेघनभछाये गर्जतलागतपरमसोहाये

दो॰ लछमनदेषुमोरगननाचतबारिदपेषि॥
गृहीबिरतरतिहरषजसबिष्नुभगतकहुंदेषि॥

घनघमंडनभगर्जतघोरा। प्रियाहीनडरपतमनमोरा।
दामिनिदमकरहनघनमाहीं षलकैप्रीतिजथाथिरनाहीं
बरषहिंजलदभूमिनियराये जथानवहिंबुधबिद्यापाये
बुंदअघातसहहिंगिरिकैसे षलकेबचनसंतसहजैसे
छुद्रनदीभरिचलीतुराई॥ जसथोरेहुधनषलइतराई
भूमिपरतभाढाबरपानी। जनुजीवहिमायालपटानी
सिमिटिसिमिटिजलभरहिंतलावा जिमिसद्गुनसज्जनपहिं
सरिताजलजलनिधिमहुंजाई होइअचलजिमिजिवहरिपा

दो॰ हरितभूमितृनसंकुलसमुझपरहिंनहिपंथ॥
जिमिपाषंडबादतेंगुप्तहोहिंसद्ग्रंथ॥ १४॥

दादुरधुनिचहुंदिसासोहाई बेदपढहिंजनुबटुसमुदाई
नवपल्लवभराबिटपअनेका साधकमनजसमिलेबिबे
अर्कजवासपातबिनुभएऊ जससुराजषलउद्यमगएऊ

खोजत कतहुं मिलै नहिं धूरी। करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा॥
महावृष्टि चलि फूटि कियारी। जिमि स्वतंत्र भए बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना
देषियत चक्रवाक षग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं
ऊषर बरषै तृन नहिं जामा। जिमि हरिजन हिय उपज न कामा॥
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजे ज्ञाना

दो॰ कबहुं प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं
जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसाहिं॥ १५॥

टी॰
रा॰ कि॰
१३

बरषा बिगत सरद ऋतु आई। लछमन देषहु परम सुहाई।
फूले कास सकल महि छाई। जनु बरषा कृत प्रगट बुढाई
उदित अगस्त पंथ जल सोषा। जिमि लोभहि सोषै संतोषा
सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा
रस रस सूषि सरित सर पानी। ममता त्यागि करहिं जिमि ज्ञानी
जानि सरद रितु षंजन आए। पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए
पंक न रेनु सोह अस धरनी। नीति निपुन नृप कै जसि करनी
जल संकोच बिकल भइ मीना। अबुध कुटुंबी जिम धन हीना
बिनु घन निर्मल सोह अकासा। हरिजन इव परिहरि सब आसा
कहुं कहुं बृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भक्ति जिम मोरी

स्य हलादिख बांह नपैसो डा न बहुत छोय नहैं डहलमौडु ऋतनिगुड बाहजानव सहेंपाव लेहोंनाह छोहअडु लोहैंलाओ सलकाघुत बीसरितो कहता हैं गालाक

जेलकरामाद स्सलोइधाव कमोभरदौ ला कर्णे लच ल्प्रति सधाव रिपेनिखिलै जोकहैनिबाहि जोआसरतेबध

दो॰ चलेहरषितजिनगरनृपतापसबनिकभिखारि
जिमिहरिभगतपाइश्रमतजहिंआश्रमीचारि १६

सुषीमीनजेनीरअगाधा॥ जिमिहरिसरननएकौबाध
फूलेकमलसोहसरकैसा। निर्गुनब्रह्मसगुनभएजैसा
गुंजतमधुकरमुषरअनूपा सुंदरखगरवनानारूपा॥
चक्रवाकमनदुषनिसिपेषी। जिमिदुर्जनपरसंपतिदेषी
चातकरटततृषाअतिओही जिमिसुषलहइनशंकरद्रोह
सरदातपनिशिशशिअपहरही संतदरसजिमिपातकटरही
देषिइंदुचकोरसमुदाई॥ चितवहिंजिमिहरिजनहरिपा
मसकदंसबीतेहिमत्रासा जिमिद्विजद्रोहकियेकुलनास

दो॰ भूमिजीवसंकुलरहेगएसरदरितुपाइ ×॥
सद्गुरमिलेजाहिंजिमिसंसयभ्रमसमुदाइ १७।

बरषागतनिर्मलरितुआई सुधिनतातसीताकैपाई॥
एकबारकैसेहुसुधिजानौं कालहुजीतिनिमषमहँआनौं
कतहुंरहैजोजीवतहोई। तातजतनकरिआनौंसोई॥
सुग्रीवहुंसुधिमोरिबिसारी पावाराजकोसपुरनारी॥
जेहिसायकमारामैंबाली तेहिसरहतौंमूढकहँकाली
जासुकृपाछूटहिंमदमोहा ताकहुँउमाकिसपनेहुकोह
जानहिंयहचरित्रमुनिज्ञानी जिनरघुबीरचरनरतिमानी
लछिमनक्रोधवंतप्रभुजाना धनुषचढाइगहेकरबाना॥

दो॰ तबअनुजहिंसमुझावारघुपतिकरुनासींव॥

टी॰ रा॰ कि॰ १८

किये पातना सुधरतेबाको बधकांकहौं कसमयगार पर्योसुग्रीव नाहिनश्रा वाहिनश्राकोह स्त्रीआदिविनय प्रसंगसबिनय कनायप्रभुमल सोबाताय

ल्गहिंवाताय प्रकाशआयादं कायसमुद्रहरु श्रागणलखले बानकोनिकट बालहप्रभु मुद्रिकाग्रहवि बधकोहेतु सीतानुपरखे कहैंसमन्द नाथश्रद्धहस्याद आमबंतमल्या २६ हनुमान जीवे

भयदेखाइलैआवहुतातसखासुग्रीव १८॥

इहांपवनसुतहृदयबिचारा रामकाजसुग्रीवबिसारा।
निकटजाइचरननसिरनावा चारिहुबिधितेहिकहिसमुझावा
सुनिसुग्रीवपरमभयमाना बिषयमोरहरलीन्हेउज्ञाना।
अबमारुतसुतदूतसमूहा पठवहुजहँतहँबानरजूहा॥
कहहुपाखमहुँआवनजोई मोरेकरताकरबधहोई॥
तबहनुमंतबोलाएदूता॥ सबकरकरिसनमानबहूता।
भयअरुप्रीतिनीतिदेषराई चलेसकलचरननशिरनाई
एहिअवसरलछिमनपुरआए। क्रोधदेखिजहँतहँकपिधाए।

दो॰ धनुषचढ़ाइकहातबजारिकरौंपुरछार ॥
ब्याकुलनगरदेखितबआएउबालिकुमार ॥१९॥

चरननाइसिरुबिनतीकीन्ही लछमनअभयबाँहतेहिदीन्ही
क्रोधवंतलछमनसुनकाना कहकपीसअतिभयअकुलाना
सुनहनुमंतसंगलैतारा ॥ करिबिनतीसमझाउकुमारा।
तारासहितजाइहनुमाना। चरनबंदिप्रभुसुजसबषाना।
करिबिनतीमंदिरलैआए चरनपषारिपलँगबैठाये॥
तबकपीसचरननसिरनावा गहिभुजलछमनकंठलगावा।
नाथबिषयसममदकछुनाहीं मुनिमनमोहकरैछनमाहीं।
सुनतबिनीतबचनसुषपावा लछमनतेहिबहुबिधसमुझावा
पवनतनयसबकथासुनाई जेहिबिधिगएदूतसमुदाई।

दो॰ हरषिचलेसुग्रीवतबअंगदादिकपिसाथ॥

कहेते पवन
तिबलंगाग
तेहिंनृपहि
गीमंद मा
बाह की का
सपंथ भाग
प्रहेमाप्रक्र
स्मा की प
की प्रसंग
ज्ञान संपन्न
कैठादि त
ब प्रमानतें
सब कपिनको
किंधुनट कारि
आप प्रभु पहँ
गए बाड
कारनमँगए
॥
२५

रामानुजआगेकरिआएजहँरघुनाथ २०॥

नाइचरनसिरुकहकरजोरी नाथमोहिकछुनाहिनखो
अतिसयप्रबलदेवतवमाया छूटैरामकरहुजौदाया॥
बिषयबस्यसुरनरमुनिस्वामी मैंपावरपसुकपिअतिका
नारिनयनसरजाहिनलागा घोरक्रोधतमनिसिजोजागा
लोभपासजेहिगरनबधाया सोनरतुमसमानरघुराया
यहगुनसाधनतेनहिहोई। तुम्हरीकृपापावै।कोइको
तबरघुपतिबोलेमुसकाई तुम्हप्रियमोहिभरतजिमिभा
अबसोइजतनकरहुमनलाई जेहिबिधिसीताकैसुधिपा

दो॰एहिबिधिहोतबतकहीआएबानरजूथ+॥
नानाबरनसकलदिशिदेखियकीसबरूथ॥२१॥

टी॰
रा॰ किं॰
३६

बानरकटकउमामैंदेखा। सोमूरखजोकरनचहलेखा
आइरामपदनावहिंमाथा॥ निरखिबदनसबहोहिंसना
असकपिएकनसेनामाहीं। रामकुसलजेहिपूछीनाहीं
यहकछुनहिंप्रभुकैअधिकाई बिस्वरूपब्यापकरघुराई
ठाढ़ेजहँतहँआयसुपाई॥ कहसुग्रीवसबहिंसमुझाई
रामकाजअरुमोरनिहोरा। बानरजूथजाहुचहुँओरा
जनकसुताकहुँखोजहुजाई मासदिवसमहँआयहुभाई
अवधिमेटिजोबिनुसुधिपाए आवइबनइसोमोहिमराये

दो॰बचनसुनतसबबानरजहँतहँचलेतुरंत॥
तबसुग्रीवबोलाएअंगदनलहनुमंत॥२२॥

सुनहुनीलअंगदहनुमाना। जामवंतमतिधीरसुजाना।
सकलसुभटमिलिदछिनजाहू सीतासुधिपूछेहुसबकाहू
मनक्रमबचनसोजतनबिचारेहु रामचंद्रकैकाजसवारेहु
भानुपीठसेइयउरआगी स्वामिहिसर्बभावछलत्यागी
तजिमायासेइयपरलोका। मिटहिंसकलभवसंभवसोका
देहधरेकरयहफलभाई। भजियरामसबकामबिहाई
सोइगुनग्यसोईबड़भागी॥ जोरघुबीरचरनअनुरागी।
आयसुमांगिचरनसिरनाई चलेहरषसुमिरतरघुराई॥
पाछेंपवनतनयसिरुनावा जानिकाजप्रभुनिकटबोलावा
परसासीससरोरुहपानी करमुद्रिकादीन्हीजनजानी
बहुप्रकारसीतहिसमुझेहु कहिबलबिरहबेगितुमआएहु
हनुमतजन्मसुफलकरिमाना। चलेउहृदयधरिकृपानिधाना
जद्यपिप्रभुजानतसबबाता राजनीतिराषतसुरत्राता

दो॰ चलेसकलबनषोजतसरितासरगिरिषोह
रामकाजलयलीनमनबिसरातनकरछोह २३।

कतहुहोइनिसिचरसेंभेटा प्रानलेहिंएकएकचपेटा
बहुप्रकारगिरिकाननहेरहिं कोउमुनिमिलहिंताहिसबघेरहिं।
लागितृषाअतिसयअकुलाने मिलैनजलघनगहनभुलाने
मनहनुमानकीन्हअनुमाना मरनचहतसबबिनुजलपाना
चढिगिरिसिषरचहूंदिसदेषा भूमिबिबरएककौतुकपेषा
चक्रवाकबकहंसउड़ाहीं बहुतकषगप्रबिसहिंतेहिमाहीं

सीताजीकी सोधकाई कपिसमस्त ३० चौ. सुस्थान गैलौस्थल हैं कपिपुंज इहां विचार ५ दो. ५ सो. ५ छं. ५७ चौ. पंक्ति ५

हैं वा समय संपातीके उपदेश सुन सिंधु पार जायबेको नाम लेन हनुमानको बलरूप स्मरण करायो ॥ ३० ॥

दो. ॥ स. किं. २८

गिरितेंउतरिपवनसुतआवा । सबकहँलैसोईबिबरदेखावा ॥
आगेकैहनुमंतहिलीन्हा ॥ पैठेबिबरबिलंबनकीन्हा ॥

दो. दीखजाइउपवनसरबरबिगसितबहुकंज ॥
मंदिरएकरुचिरतहँबैठिनारितपपुंज ॥ २४ ॥

दूरितेंताहिसबनसिरनावा ॥ पूछेनिजबृत्तांतसुनावा ॥
तेहिंतबकहाकरहुजलपाना । खाहुसुरससुंदरफलनाना ॥
मज्जनकीन्हमधुरफलखाए । तासुनिकटपुनिसबचलिआए ॥
तेहिंसबआपनिकथासुनाई । मैंअबजाबजहाँरघुराई ॥
मूँदहुनयनबिबरतजिजाहू । पैहहुसीतहिंजनिपछिताहू ॥
नयनमूँदिपुनिदेखहिंबीरा ॥ ठाढेसकलसिंधुकेतीरा ॥
सो.पुनिगईजहाँरघुनाथा ॥ जाइकमलपदनायसिमाथा ॥
नानाभाँतिबिनयतेहिंकीन्ही । अनपायनीभक्तिप्रभुदीन्ही ॥

दो. बदरीबनकहुँसोगईप्रभुअग्याधरिसीस ॥
उरधरिरामचरणजुगजेबंदतअजईस ॥ २५ ॥

इहाँबिचारहिंकपिमनमाहीं । बीतीअवधिकाजकछुनाहीं ॥
सबमिलिकहहिंपरस्परबाता । बिनुसुधिलयेकरबकाभ्राता ॥
कहअंगदलोचनभरिबारी । दुहुँप्रकारभइमृत्युहमारी ॥
इहाँनसुधिसीताकैपाई । उहाँगएमारिहिकपिराई ॥
पितावधेपरमारतमोही । राखारामनिहोरनओही ॥
पुनिपुनिअंगदकहसबपाहीं । मरनभयउकछुसंशयनाहीं ॥
अंगदबचनसुनतकपिबीरा । बोलिनसकहिंनयनबहनीरा ॥

इतिकिष्किंधाकांडप्रसंगसंगसमाप्त ॥

चौपाईछंददोहादिकोठीक ॥

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
२	३०२	३	३	३१

छनएकसोचमगनहोइगए। पुनिअसबचनकहतसबभए
हमसीताकैसुधिलीन्हेंबिना। नहिंजैहैंजुबराजप्रबीना॥
असकहिलवनसिंधुतटजाई। बैठेकपिसबदरभडसाई॥
जामवंतअंगददुषदेषी॥ कहीकथाउपदेशबिशेषी॥
तातरामकहुंनरजनिमानहु। निर्गुनब्रह्मअजितअजजानहु॥
हमसबसेवकअतिबड़भागी। संततसगुनब्रह्मअनुरागी॥

दो· निजइच्छाप्रभुअवतरइसुरगोद्विजमहिलागि
सगुनउपासकसंगतहँरहहिंमोक्षसबत्यागि २६

एहिबिधिकथाकहहिंबहुभांती। गिरिकंदरासुनीसंपाती॥
बाहिरहोइदेषिबहुकीसा। मोहिअहारदीन्हजगदीसा॥
आजुसबहिंकहुँभक्षनकरऊं। दिनबहुचलेअहारबिनुमरऊं॥
कबहुंनमिलैभरिउदरअहारा। आजुदीन्हबिधिएकहिंबारा॥
डरपेगीधबचनसुनिकाना। अबभामरनसत्यहमजाना॥
कपिसबउठेगीधकहँदेषी। जामवंतमनसोचबिशेषी॥
कहअंगदबिचारिमनमाहीं। धन्यजटायूसमकोउनाहीं॥
रामकाजकारनतनुत्यागी। हरिपुरगयउपरमबड़भागी॥
सुनिषगहरषसोकजुतबानी। आवानिकटकपिन्हभयमानी॥
तिन्हहिंअभयकरिपूछेसिजाई। कथासकलतिन्हताहिसुनाई॥
सुनिसंपातिबंधुकैकरनी। रघुपतिमहिमाबहुबिधिबरनी॥

दो· मोहिलैजाहुसिंधुतटदेउंतिलांजलिताहि
बचनसहाइकरबमैंपैहहुषोजहुजाहि २७

अनुजक्रियाकरिसागरतीरा कहिनिजकथासुनहुकपि
हमदोउबंधुप्रथमतरुनाई गगनगएरबिनिकटउड़ाई॥
तेजनसहिसकसोफिरिआवा मैंअभिमानीरबिनियराव
जरेपंखअतितेजअपारा॥ परेउभूमिकरिघोरचिका
मुनिएकनामचंद्रमाओही लागीदयादेखिकरमोही
बहुप्रकारतेहिंज्ञानसुनावा देहजनितअभिमानछुड़ाव
त्रेताब्रह्ममनुजतनधरहीं। तासुनारिनिसिचरपतिहर
तासुखोजपठइहिप्रभुदूता। तिन्हहिंमिलेतेंहोवपुनीता
जमिहहिंपंखकरसिजनिचिंता तिन्हहिंदेखायदेहेसुतैं
मुनिकइगिरासत्यभइआजू सुनिममबचनकरहुप्रभु
गिरित्रिकूटऊपरबसलंका तहँरहरावनसहजअसंका
तहँअसोकउपबनजहँरहई सीताबैठिसोचरतअहई।

दो· मैंदेखउंतुमनाहिंनेगीधहिदृष्टिअपार॥
बूढ़भएउनतकरतेउँकछुकसहाइतुम्हार २८॥

जोनाघइसतयोजनसागर करैसोरामकाजमति
मोहिबिलोकिधरहुमनधीरा रामकृपाकसभएउसरी
पापिउजाकरनामसुमिरहीं अतिअपारभवसागरत
तासुदूततुमतजिकदराई रामहृदयधरिकरहुउपा
असकहिगरुड़गीधजबगएऊ तिन्हकेमनअतिबिस्मय
निजनिजबलसबकाहूभाषा पारजाइकेसंशयराषा॥
जठरभएउअबकहैरिछेसा नहितनुरहाप्रथमबललेस

जबहित्रिबिक्रमभएउखरारी जबमैंतरुनरहेउंबलभारी॥

दो॰ बलिबांधतप्रभुबाढेउसोतनुबरनिनजाइ॥
उभयघरीमैंहदीन्हीसप्तप्रदच्छिणधाइ॥२९॥

अंगदकहइजाउंमैंपारा २॥ जियसंशयकछुफिरतीबारा॥
जामवंतकहतुम्हसबलायक पठइअकिमिसबहीकरनायक
कहइरीछपतिसुनहनुमाना काचुपसाधिरहेउबलवाना॥
पवनतनयबलपवनसमाना बुधबिबेकबिज्ञाननिधाना॥
कवनसोकाजकठिनजगमांही जोनहिंहोइताततुमपाहीं॥
रामकाजलगितवअवतारा सुनतहिंभएउपर्बताकारा॥
कनकबरनतनतेजबिराजा मानहुअपरगिरिन्हकरराजा॥
सिंहनादकरिबारहिंबारा लीलहिंनाघउंजलनिधिखारा॥
सहितसहाइरावनहिंमारी॥ आनौंइहांत्रिकूटउपारी॥
जामवंतमैंपूंछउंतोही॥ उचितसिखावनुदीजहुमोही॥
एतनाकरहुताततुमजाई सीतहिदेखिकहहुसुधिआई॥
तबनिजभुजबलराजिवनैना कौतुकलागिसंगकपिसेना॥

छं॰ कपिसैनसंगसंघारिनिसिचररामसीतहिंआनिहैं
त्रैलोकपावनसुजससुरमुनिनारदादिबखानिहैं॥
जोसुनतगावतकहतसमुझतपरमपदनरपावई॥
रघुबीरपदपाथोजमधुकरदासतुलसीगावई॥

दो॰ भवभेषजरघुनाथजससुनहिंजेनरअरुनारि
तिन्हकरसकलमनोरथसिद्धकरहिंत्रिपुरारि २॥

सोरठा

नीलोत्पलतनश्यामकामकोटिशोभाअधिक
सुनियतासुगुनग्रामजासुनामअघखगबधिक।

३०

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध
सनेबिशुद्धसंतोषसंपादनोनामचतुर्थःसोपानः४
समाप्तमगात॥ ॥रामचंद्रजीसहाय

दर मतबअ हिंदू प्रेस
प्यारेलाल के एहत
माम से छापी ग
ई शहर
देहली
सं १९
२४

टी॰
रा॰ कि॰
२२

श्रीगणेशायनमः॥अथ सुंदरकांड प्रसंगप्रा लिख्यते॥ श्लो०॥ शांतंशाश्वत मितिपद्य॥ ललितवर्णित ३ श्लो०॥ अर्थसिखत जैसेभूपालनके चूडामणिश्री रघुवरकोप्रना मकरतहौं शांत कैसेहैंशांत स्वरूपहैंशाश्व शाश्वतकहि अरुविनाशीहैं अप्रमेयअप्रमा णातेंअतीत अनघपापरहि तनिर्वाणकहि

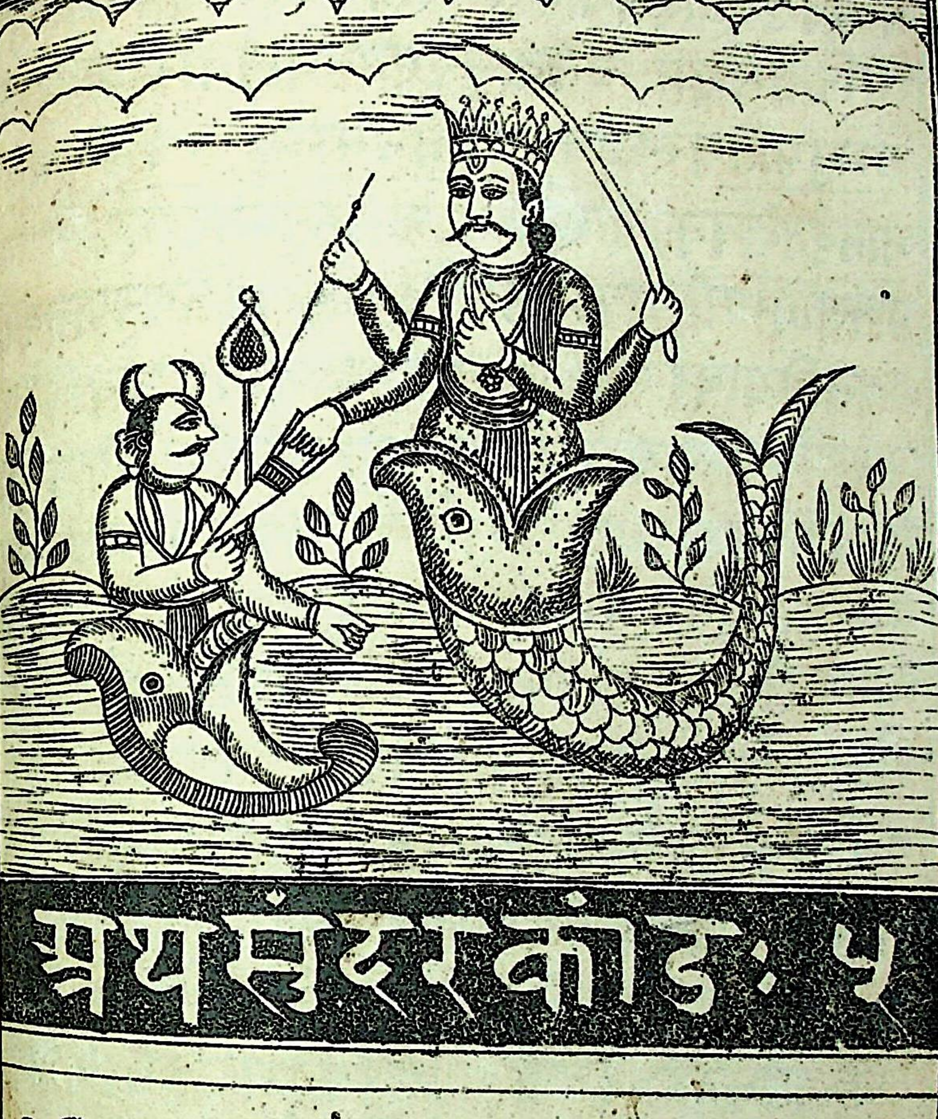

अथसुंदरकांड: ५

श्रीगणेशायनमः श्लो॰ शांतंशाश्वतमप्रमेयमनघंगी
र्वाणशांतिप्रदंब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशंवेदांतवेद्यं
विभुंरामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिंवंदेहंकरु
णाकरंरघुवरंभूपालचूडामणिं १ नानास्पृहारघुपते
हृदयेस्मदीयेसत्यंवदामिचभवानखिलांतरात्माभक्तिं
प्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरांमेकामादिदोषरहितंकुरुमानसं

टी॰ रा॰ सुं॰ १

मोक्षप्रदशांतिदा येब्रह्माशिव शेषआदिनित्य हीसेवतहैं वेदांतकरिजा नेजायजगव्याप्त सर्वव्यापकमाया करिमनुष्यरूप धारेहरि करुणाकेआकर तिनकोमैंवंदन करताहौं

ते॰ पहिलेकै आदिदेव मन्त्रकोआद इष्टकेमैं केमानौं सोलिखतहैं अधपश्चात् हेतुकथ ग्रामलाभ मेंकोहै अंतरजामी गुप्तकथकै छिनलगाहै ठकोटेको आपमैंगु

सु॰ ॥ २ ॥ ग्रं॰ अतुलित॰ टी॰ बलज्ञानकहे अमृतभको मैं अमरकारकरत हिकैवहैं अतुल तबलकैधाम है टी॰ सु॰ सुंदर॰ २

च ३ अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहंदनुजवनकृशानुं
ज्ञानिनामग्रगण्यंसकलगुणनिधानंबानराणामधी
शंरघुपतिबरदूतंबातजातंनमामि ॥ ३ ॥ राम॥

जामवंतकेबचनसोहाए। सुनिहनुमंतहृदयअतिभाए॥
तबलगिमोहिपरखेहुतुमभाई। सहिदुखकंदमूलफलखाई॥
जबलगिआवउंसीतहिदेखी। होइकाजमोहिहरषबिशेषी॥
असकहिनाइसबनकहुंमाथा। चलेउहरषिहियधरिरघुनाथ॥
सिंधुतीरएकभूधरसुंदर। कौतुककूदिचढेताऊपर॥
बारबाररघुबीरसंभारी॥ तरकेउपवनतनयबलभारी॥
जेहिगिरिचरनदेइहनुमंता चलेउसोगापातालतुरंता॥
जिमिअमोघरघुपतिकरबाना। तेहीभांतचलाहनुमाना॥
जलनिधिरघुबरदूतबिचारी तैमैनाकहोहुश्रमहारी॥

दो॰ हनुमानतेहिपरसाकरिपुनिकीन्हप्रनाम ×॥
रामकाजकीन्हेबिनामोहिकहांबिश्राम॥१॥

जातपवनसुतदेवनदेखा॥ जानेकहुंबलबुद्धिबिसेषा॥
सुरसानामअहिनकैमाता। पठइन्हिआइकहीतेहिबाता॥
आजुसुरन्हमोहिदीन्हअहारा सुनतबचनकहपवनकुमारा॥
रामकाजकरिफिरमैंआवौं सीताकैसुधिप्रभुहिसुनावौं॥
तबतवबदनपइठहौंआई सत्यकहौंमोहिजानदेमाई॥
कवनेहुजतनदेइनहिंजाना ग्रससिनमोहिकहेहुहनुमाना॥
जोजनभरितेहिबदनपसारा कपितनकीन्हदुगुनबिस्तारा॥

अतस्तुमरपवन कीनामितनात नकेबहारकी आमोहैनम नकैहाहँकैज अमितप्रसरा मिलापनमो गुणसकल गुनकेनिधा नबानरनमों अधनमस्त्री गुनाधुनीकेबर दूतहैं॥३॥

पंक्ति ४॥ चौ॰ २॥ ५०॥ जामवंतकेअति सुहावनबचन बहो॰॥जाम कानकेउपदेश सुनिरघुनाथ जानिबिकाम कारज

कामनदेम
ईधारचलप्र
कौचढ़ा
आइसंग्रति
कायाकिजानप
हिसावचपुन
मनाकसपूर्व
समुदप्रोि
कोसिंधुप्रा
कालंप्रभो
कारणाधुक

सोरहजोजनमुखतेहिठयऊ तुरतपवनसुतबत्तिसभयऊ
जसजससुरसाबदनबढ़ावा तासुदूनकपिरूपदिषावा
सतजोजनतेहिआननकीन्हा अतिलघुरूपपवनसुतलीन्हा
बदनपैठिपुनिबाहरआवा। मांगीबिदाताहिसिरनावा
मोहिसुरन्हजेहिलागिपठावा बुधिबलमरमतोरमैंपावा

दो॰ रामकाजसबकरिहहुतुमबलबुद्धिनिधान
आसिषदेइगईसोहरषिचलेहनुमान॥ २ ॥

निसिचरएकसिंधुमहरहई करिमायानभकेषगगहई
जीवजंतुजेगगनउड़ाहीं। एहिबिधिसदागगनचरखाई
सोइछलहनुमानकहँकीन्हा तासुकपटकपितुरतहिंचीन्हा
गहैछांहसकसोनउड़ाई॥ जलबिलोकितिनकैपरिछाहीं
ताहिमारिमारुतसुतबीरा बारिधिपारगएउमतिधीरा
तहांजायदेषीबनशोभा॥ गुंजतचंचरीकमधुलोभा
नानातरुफलफूलसुहाए षगमृगबृंददेषिमनभाए
सैलबिसालदेषिएकआगे तापरधाइचढ़ेउभयत्यागे॥
उमानकछुकपिकैअधिकाई प्रभुप्रतापजोकालहिषाई
गिरिपरचढ़लंकातेहिंदेषी कहिनजायअतिदुर्गबिशेषी
अतिउतंगजलनिधिचहुँपासा कनककोटकरपरमप्रकासा

छं॰ कनककोटबिचित्रमनिकृतसुंदरायतनाघना।
चउहट्टहट्टसुबट्टबीथीचारुपुरबहुबिधिबना॥
गजबाजिषच्चरनिकरपदचररथबरूथनकोगनै

॥ ॥ ॥
× × ३ ॥
॥ ॥

प्रभयपालक
कपिसुग्रीवकौ
बचाईबनन
सकाधसर
सकापठाय
नाहिकीप्रीत
आसिबैठेब
जोगाइकीमाता
संकेनानाम
तासमयपं

श्री
रा॰ सुंद॰
३

हितौरहीछांह
नेभ्रहनकरी
कौनाघिहभा
नपारगएबन
शौभादेष
पर्वतनामपूर्व
परसीधुनादलंका
प्रलिप्रीयकर
कौरिसुरदेषन

माप्रभयपुर
हनुकअनेक
हैप्रेंस
लपहारि
सुंदरेकौ
सनकीयो॥

बहुरूपनिशिचरजूथअतिबलसेनबरनतनहिंबनै
बनबागउपबनबाटिकासरकूपबापीसोहहीं॥
नरनागसुरगंधर्बकन्यारूपमुनिमनमोहहीं॥
कहुंमालदेहबिसालशैलसमानअतिबलगर्जहीं
नानाअखारेन्हभिरहिंबहुबिधिएकएकनतर्जहीं
कहिंमहिषमानुषधेनुषरअजखलनिसाचरभछहीं
एहिलागितुलसीदासइन्हकीकथासंछेपहिकही॥
रघुबीरसरतीरथशरीरन्हत्यागिगतिपैहैंसही॥
दो॰ पुररखवारेदेखबहुकपिमनकीन्हबिचार॥
अतिलघुरूपधरौंनिसिनगरकरौंपइसार॥ ३॥

मसकसमानरूपकपिधरी। लंकहिचलेसुमरनरहरी॥
नामलंकिनीएकनिशिचरी सोकहचलेसिमोहिनिंदरी॥
जानेनहींमरमसठमोरा॥ मोरअहारजहाँलगिचोरा
मुठिकाएकमहाकपिहनी रुधिरबमतधरनीढनमनी॥
पुनिसंभारिउठीसोलंका। जोरिपानकरिबिनयससं
जबरावनब्रह्मावरदीन्हा चलतबिरंचिकहामोहिची
बिकलहोसितैंकपिकेमारे तबजानेसुनिशिचरसंघारे
तातमोरअतिपुन्यबहूता देखेउंनयनरामकरदूता॥
दो॰ तातस्वर्गअपबर्गसुखधरियतुलाएकअंग
तूलननाहिसकलमिलजोसुखलवसतसंग ४
प्रबिसनगरकीजैसबकाजा हृदयराखिकोसलपुरराजा

पुनरकै स्थान
मैं एक बलपुत्र के
अंतर देखै
अपने जानै
बांहीं जंघा
अष्टकोण
अष्टकोन त्या
दिक्कोन ३ स
बिकुंठ जावत

मशक रूप
हृदय ३
तौ॰ ॥
भाव धारे

तबै बिभीषन
रूप देख
सकनाहि मार्ग

भक्तजानि
दरवानि
मसकरूपमह
लंकीहिमुं:
गृहदेखीला
निरखाचैसुग
शाखनगरा
तहाँरावन
संबादसीता
कुहदेखि
कपिसोचत
रुहुपुन:बिजट
संबादतेंसीता
अग्निजाचन
तहाँनिशानिरे
ही धर्कोविज्ञ
शनिसावरीन
कौचन्नउपेश
सनाथजात
भईनवकपि
बिदाप्रस्थान

गरलसुधारिपुकरैंमिताई गोपदसिंधुअनलसितलाई
गरुड़सुमेरुरेनुसमताही रामकृपाकरिचितवाजाही
अतिलघुरूपधरेउहनुमाना। पैठानगरसुमिरिभगवाना
मंदिरमंदिरप्रतिकरसोधा देखेजहँतहँअगनितजोधा।
गएउदशाननमंदिरमाहीं अतिबिचित्रकहिजातसोना।
सयनकियेदेखाकपितेही मंदिरमहुँनदीषबैदेही॥
भवनएकपुनिदीषसोहावा। हरिमंदिरतहँभिन्नबनावा।

दो·रामायुधअंकितग्रहसोभाबरनिनजाइ॥
नवतुलसीकाबृंदतहँदेषिहरषिकपिराइ५

लंकानिसिचरनिकरनिवासा इहाँकहाँसज्जनकरबासा।
मनमहुँतरककरैकपिलागा। तेहीसमयबिभीषनजागा।
रामरामतेहिंसुमरनकीन्हा हृदयहरषिकपिसज्जनचीन्हा।
एहिसनहठिकरिहौंपहिचानी साधुतेहोइनकारजहानी।
बिप्ररूपधरिबचनसुनाए सुनतबिभीषनउठितहँआए
करिप्रनामपूछीकुशलाई बिप्रकहहुनिजकथाबुझाई
कीतुमहरिदासनमहँकोई मेरेहृदयप्रीतिअतिहोई॥
कीतुमरामदीनअनुरागी। आएहुमोहिकरनबड़भागी

दो·तबहनुमंतकहीसबरामकथानिजनाम॥
सुनतजुगलतनपुलकिमनमगनसुमिरगुनग्राम

सुनहुपवनसुतरहनिहमारी जिमिदसननहुमहुँजीभबिचारी
तातकबहुमोहिअनाथा॥ करिहहिंकृपाभानुकुलनाथा

दो·
रा· सुंदर
५

अहिकाप्रसंग
नहौंमैंरावन
भयौ
〃 〃
〃 〃
〃 〃
〃 〃

तामसतनकछुसाधननाही प्रीतिनपदसरोजमनमा
अबमोहिभाभरोसहनुमंता बिनुहरिकृपामिलहिंनहिं
जौंरघुबीरअनुग्रहकीन्हा । तौतुममोहिदरसहठि
सुनहुबिभीषणप्रभुकरीती करहिंसदासेवकपरप्री
कहहुकवनमैंपरमकुलीना कपिचंचलसबहीबिध
प्रातलेइजोनामहमारा ॥ तेहिदिनताहिनमिलैअहा

दो॰ असमैंअधमसखासुनुमोहूपररघुबीर ॥
कीन्हीकृपासुमिरगुनभरेबिलोचननीर॥ ७ ॥

जानतहूँअसस्वामिबिसारी फिरहिंतेकाहेनहोहिंदु
एहिबिधिकहतरामगुनग्रामा पावाअनिर्बाच्यबिश्रा
पुनिसबकथाबिभीषनकही जेहिबिधिजनकसुता
तबहनुमंतकहासुनभ्राता । देखाचहौंजानकीमाता
जुगतिबिभीषनसकलसुनाई चलेउपवनसुतबिदा
करिसोईरूपगएउपुनितहँवाँ बनअसोकसीतारहि
देखिमनहिंमहुकीन्हप्रनामा बैठेहिबीतजातनिसिजा
कृसतनुसीसजटाएकबेनी जपतहृदयरघुपतिगुनश्रे

दो॰ निजपदनयनदियेमनरामचरनमहुलीन॥
परमदुखीभापवनसुतदेखिजानकीदीन ८

तरुपल्लवमहँरहालुकाई करैबिचारकरौंकाभाई
तेहिअवसररावनतहँआवा संगनारिबहुकियेबना
बहुबिधिखलसीतहिंसमुझावा सामदानभयभेददेखावा

कहरावनसुनुसुमुखिसयानी मंदोदरीआदिसबरानी ॥
तवअनुचरीकरौंपनमोरा एकबारबिलोकममवार ॥
तनधरिवोटकहतिबैदेही सुमिरिअवधपतिपरमसनेही
सुनुदसमुखखद्योतप्रकासा कबहुंकिनलनीकरैबिकासा
असमनसमुझुकहतिजानकी खलसुधिनहिंरघुबीरबानकी
सठसूनेहरिआनेहिमोही। अधमनिलज्जलाजनहिंतोही

दो॰ आपुहिसुनिखद्योतसमरामहिभानुसमान
परुषबचनसुनिकाढिअसिबोलाअतिखिसियान॥

सीतातैंममकृतअपमाना। काटिहौंतवसिरकाढिकृपाना
नाहितसपदिमानममबानी सुमुखिहोतिनहिंजीवनहानी।
स्यामसरोजदामसमसुंदर प्रभुभुजकरिकरसमदसकंधर
सोभुजकंठकितवअसिघोरा सुनुसठअसप्रमानपनमोरा
चंद्रहासहरुममपरितापं॥ रघुपतिबिरहअनलसंजातं
सीतलनिसितबहसिबरधारा कहसीताहरुममदुखभारा
सुनतबचनपुनिमारनधावा मयतनयाकहिनीतिबुझावा
कहेसिसकलनिसिचरिहिबुलाई सीतहिबहुबिधित्रासहुजाई
मासदिवसमहँकहानमाना तौमारबिकाढिकृपाना॥

दो॰ भवनगयउदसकंधरइहांपिसाचनिबृंद॥
सीतहित्रासदिषावहिंधरहिंरूपबहुमंद॥१०॥

त्रिजटानामराक्षसीएका। रामचरनरतिनिपुनबिबेका
सबन्हौंबोलिसुनाएसिसपना सीतहिसेइकरहुहितअपना

टी॰
रा॰ सुंद
७

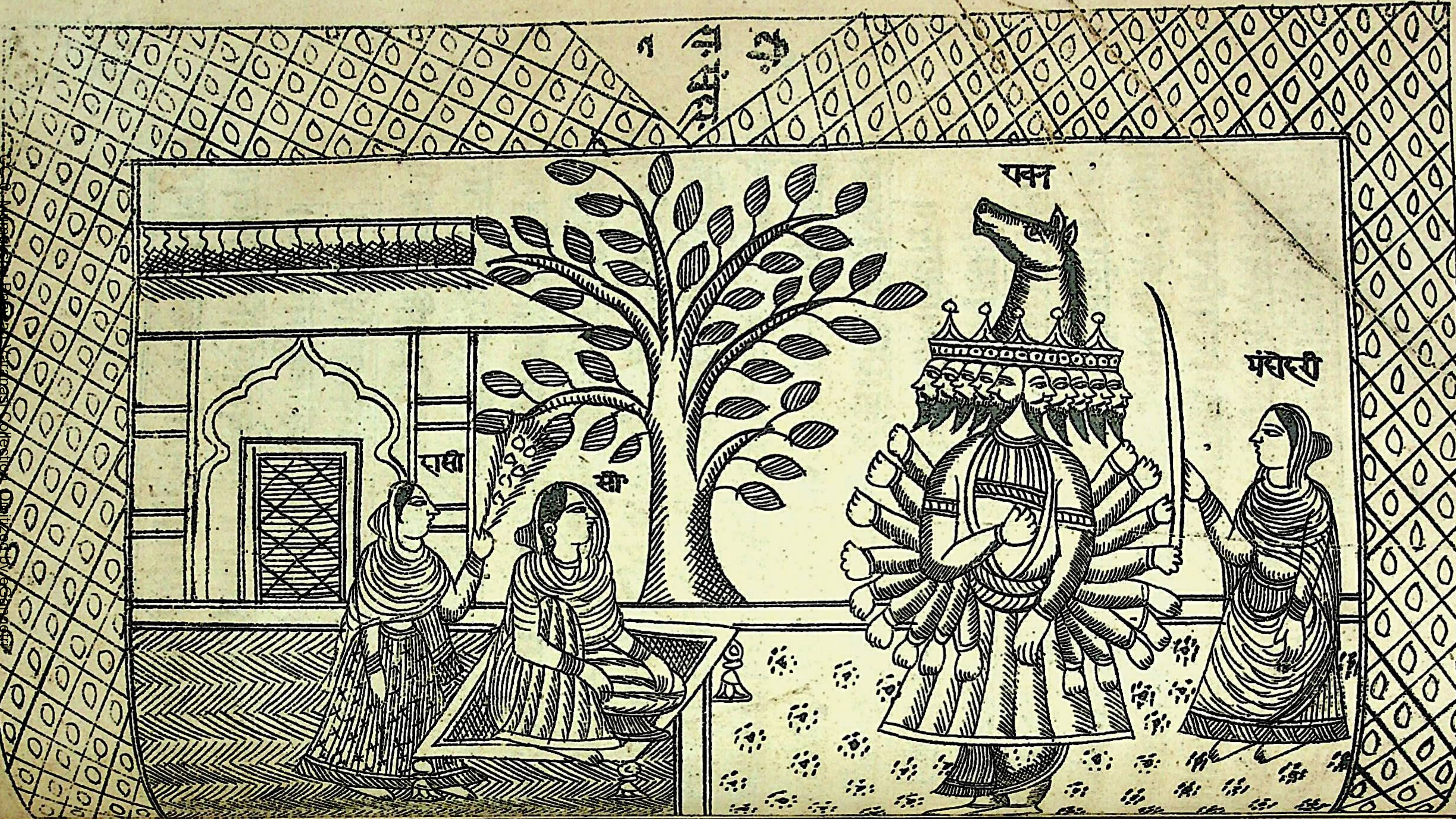
रावन
मंदोदरी
दासी
सी

सपनैबानरलंकाजारी ॥ जातुधानसेनासबमारी ॥
खरआरूढ़नगरदससीसा मुंडितसिरखंडितभुजबीसा
एबिधिसोदछिनदिसिजाई। लंकामनहुबिभीषनपाई ॥
नगरफिरीरघुबीरदोहाई ॥ तबप्रभुसीताबोलिपठाई ॥
यहसपनामैंकहौंपुकारी। होइहिसत्यगएदिनचारी ॥
तासुबचनसुनतेसबडरीं ॥ जनकसुताकेचरननपरीं ॥

दो· जहँतहँगईंसकलतब सीताकरमनसोच ॥
मासदिवसबीतेमोहि मारिहिनिसिचरपोच २२

त्रिजटासनबोलीकरजोरी मातुबिपतिसंगिनितैंमोरी
तजौंदेहकरुबेगिउपाई ॥ दुसहबिरहुअबनहिंसहिजाई
आनिकाठरचुचिताबनाई मातुअनलपुनिदेहुलगाई ॥
सत्यकरहिंममप्रीतिसयानी सुनैकोश्रवनसूलसमबानी
सुनतबचनपदगहिसमुझाएसि प्रभुप्रतापबलसुजससुनाएसि
निसिनअनलमिलसुनसुकुमारी असकहिसोनिजभवनसिधारी
कहसीताबिधिभाप्रतिकूला मिलहिनपावकमिटहिनसूला
देषियतप्रगटगगनअंगारा ॥ अवनिनआवतएकौतारा ॥
पावकमयशशिश्रवतनआगी मानहुंमोहिजानहतभागी
सुनहिबिनयममबिटपअसोका सत्यनामकरुहरुममसोका ॥
नूतनकिसलयअनलसमाना। देहिअगिनिजनुकरहिनिदान
देषिपरमबिरहाकुलसीता सोछनकपिहिकलपसमबीता

सो· कपिकरहृदयबिचारदीन्हमुद्रिकाडारितब

जनुअसोकअंगारदीन्हहरषिउठिकरगहेउ १३

तबदेषीमुद्रिकामनोहर॥ रामनामअंकितअतिसुंदर
चकितचितवमुदरीपहिचानी हरषबिषादहृदयअकुलानी
जीतिकोसकैअजयरघुराई मायातेंअसिरचिनहिंजाई
सीतामनबिचारकरनाना। मधुरबचनबोलेहनुमाना।
रामचंद्रगुनबरनैलागा॥ सुनतहिंसीताकरदुषभागा
लागीसुनैंश्रवनमनलाई। आदिहुतेंसबकथासुनाई
श्रवनामृतजेहिंकथासुनाई कहीसोप्रगटहोतिकिनभाई
तबहनुमंतनिकटचलिगयऊ फिरिबैठीमनबिस्मयभयऊ
रामदूतमैंमातजानकी। सत्यसपथकरुणानिधानकी
यहमुद्रिकामातुमैंआनी। दीन्हिरामतुमकहसहिदानी
नरबानरहिसंगकहुकैसें कहीकथाभइसंगतिजैसें

कपिकेबचनसप्रेमसुनि उपजामनबिस्वास॥
जानामनक्रमबचनयहकृपासिंधुकरदास १४

हरिजनजानिप्रीतिअतिबाढ़ी सजलनयनपुलकावलिठाढ़ी
बूड़तबिरहजलधिहनुमाना। भयउतातमोकहुँजलजाना
अबकहुकुसलजाउँबलिहारी अनुजसहितसुषभवनषरारी
कोमलचितकृपालरघुराई। कपिकेहिहेतुधरीनिठुराई
सहजबानसेवकसुषदायक कबहुकसुरतिकरतरघुनायक
कबहुँनयनममसीतलताता होइहहिंनिरषिस्याममृदुगाता
बचनुनआवनयनभरेबारी अहहनाथहौंनिपटबिसारी

नसंदेहभयो
नहिंकापहँ
बौरे:आदि
तंकहिंसंष
धरिकीयोश्री
तापाइनिक
रआइरघुब
यो:
रा:संस
१०
संष्याबिडे
नबरतकहै
तबआनानकी
नकोप्रतीत
अहंहर्षतेंफ
लषाइवेको
आतातोहै
तवकामट

निसिचर
मारिफल
षाइबाग
काउजारि
पुनापुरा
कुधिमेघनाद
नागबंधनमें
आइरावन

कापहिवो
मुंडि
रहितजेत
आगजाती
१९ सो:
समुझाइवे
तवकिसुनी
मैंसुरन
हिंकामनो
नकैहीउ
१८ दो:
१७ दो:
कमाइसो

कनकप्रभा
ओंगा ६
निर्भयसंज्ञो
र्लोकपृष्ठ
संप्रतिव
गायुनगार
जगद्धाता
जगनिकट
ग्रादकृगामी
सिद्धपारत
होतजिव
हेतुभयो

देखिपरमबिरहाकुलसीता। बोलाकपिमृदुबचनबिनीता
मातुकुसलप्रभुअनुजसमेता। तवदुखदुखीसुकृपानिकेता
जनिजननीमानहुजियऊना। तुमतेंप्रेमरामकेदूना ॥

दो. रघुपतिकरसंदेससुनिजननीधरिधीर।
असकहिकपिगदगदभयउभरेबिलोचननीर १६

कहेउरामबियोगतवसीता। मोकहुँसकलभएउबिपरीता।
नवतरुकिसलयमनहुँकृसानू। कालनिसासमनिसिससिभानू
कुवलयबिपिनकुंतबनसरिसा। बारिदतपततेलजनुबरिसा।
जेहितरहेकरततेइपीरा ॥ उरगस्वाससमत्रिबिधसमीरा
कहेहुतेंकछुदुखघटिहोई। काहिकहौंयहजाननकोई
तत्वप्रेमकरममअरुतोरा। जानतप्रियाएकमनमोरा।
सोमनरहतसदातोहिपाहीं। जानुप्रीतिरसएतनेहिमाहीं
प्रभुसंदेससुनतबैदेही। मगनप्रेमतनसुधिनहिंतेही
कहकपिहृदयधीरधरुमाता। सुमिरिरामसेवकसुखदाता।
उरआनहुरघुपतिप्रभुताई। सुनिममबचनतजहुकदराई

दो. निसिचरनिकरपतंगसमरघुपतिबानकृसानु
जननीहृदयेधीरधरिजरेनिशाचरजान ॥ १६ ॥

जोरघुबीरहोतसुधिपाई। करतेनहिंबिलंबरघुराई ॥
रामबानरबिउएजानकी। तमबरूथकहँजातुधानकी
अबहिंमातुमैंजाउँलिवाई। प्रभुआयसुनहिंरामदोहाई
कछुकदिवसजननीधरुधीरा। कपिनसहितअइहहिंरघुबीरा

॥ २१ ॥
ग्रंब. १४
× × × × × × × × × × × ×
टी.
रा. सुं.
२१

निसिचरमारितोहिलेजैहहिं निठुरनारदाहिजसगोहा
हैंसुतकपिसबतुम्हहिंसमाना जातुधानअतिभटबलवाना
मोरेंहृदयपरमसंदेहा* ॥ सुनिकपिप्रगटकीन्हिनिजदे
कनकभूधराकारसरीरा ॥ समरभयंकरअतिबलबी
सीतामनभरोसतबभयेऊ पुनिलघुरूपपवनसुतला

दो· सुनुमातासाषामृगनहिंबलबुद्धिबिशाल ॥
प्रभुप्रतापतेंगरुड़हिंषाइपरमलघुब्याल ॥ १७॥

टी·
रा·सुंदर·
१२

मनसंतोषसुनतकपिबानी भगतिप्रतापतेजबलसा
आसिषदीन्हरामप्रियजाना होहुतातबलसीलनिधाना
अजरअमरगुननिधिसुतहोहू करहुबहुतरघुनायकछोहू
करहुकृपाप्रभुअससुनिकाना निर्भरप्रेममगनहनुमाना॥
बारबारनाएसिपदसीसा। बोलाबचनजोरिकरकीस
अबकृतकृत्यभयउंमैंमाता आसिषतवअमोघबिख्या
सुनहुमातुमोहिंअतिसयभूष लागिदेषिसुंदरफलरूषा
सुनसुतकरहिंबिपिनरषवारी परमसुभटरजनीचरभारी
तिन्हकरभयमातामोहिंनाहीं जौंसुषमानहुमनमाहीं॥

तुमैं

दो· देषिबुद्धिबलनिपुनकपिकहेउजानकीजाहु
रघुपतिचरनहृदयधरितातमधुरफलषाहु १८

चलेउनाइसिरपैठेउबागा। फलषाएसितरुतोरैला
रहेतहांबहुभटरषवारे ॥ कछुमारेसिकछुजाइपुका
नाथएकआवाकपिभारी। तेहिंअसोकबाटिकाउजारी

षाएसिफलअरुबिटपउपारे रछकमर्दिमर्दिमहिडारे॥
सुनिरावनपठयेभटनाना। तिन्हहिंदेषिगर्जेउहनुमाना॥
सबरजनीचरकपिसंघारे गएपुकारतकछुअधमारे
पुनिपठयेउतेहिंअछयकुमारा चलासंगलैसुभटअपारा
आवतदेषिबिटपगहितर्जा ताहिनिपातिमहाधुनिगर्जा

दो· कछुमारेसिकछुमर्देसिकछुमिलएसिधरिधूरि
कछुपुनिजाइपुकारेप्रभुमर्कटबलभूरि ॥१९॥

सुनसुतबधलंकेसरिसाना। पठएसिमेघनादबलवाना।
मारसिजनिसुतबांधेसुताही देषियकपिहिकहाँकरिआही
चलाइंद्रजितअतुलितजोधा बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा
कपिदेषादारुनभटआवा कटकटाइगर्जाअरुधावा॥
अतिबिसालतरुएकउपारा बिरथकीन्हलंकेसकुमारा
रहेमहाभटताकेसंगा। गहिगहिकपिमर्दईनिजअंगा
तिन्हहिंनिपातिताहिसनबाजा भिरेजुगलमानहुगजराजा
मुठिकामारिचढातरुजाई ताहिएकछनमूरछाआई।
उठिबहोरिकीन्हेसिबहुमाया जीतिनजायप्रभंजनजाया

दो· ब्रह्मअस्त्रतेहिसांधाकपिमनकीन्हबिचार।
जौनब्रह्मसरमानौमहिमामिटैअपार। २०।

ब्रह्मबानकपिकहुंतेहिमारा परतिहुंबारकटकसंघारा।
तेहिंदेषाकपिमूर्छितभएऊ नागफांसबांधेसिलैगयऊ
जासुनामजपिसुनहुभवानी भवबंधनकाटहिंनरग्यानी॥

टी॰
रा॰ सुंदर॰
२७

तासुदूतकिबंधतरुआवा। प्रभुकारजलगिकपिहिंबँध
कपिबंधनसुनिनिसिचरधाए। कौतुकलागिसभासबआ
दसमुखसभादीषकपिजाई। कहिनजाइकछुअतिप्रभुता
करजोरेसुरदिसिपबिनीता। भृकुटिबिलोकतसकलस
देषिप्रतापनकपिमनसंका। जिमिअहिगनमहुँगरुडअसं

दो॰ कपिहिबिलोकदसाननबिहसाकहिदुर्बाद॥
सुतबधसुरतकीन्हिप्रभुउपजाहृदयबिषाद २१

कहलंकेसकवनतैंकीसा। केहिकेबलघालेसिबनषीस
कीधौंश्रवनसुनेनहिंमोही॥ देषौंअतिअसंकसठतोही
मारेनिसिचरकेहिंअपराधा। कहुसठतोहिनप्रानकैबाधा
सुनरावनब्रह्मांडनिकाया। पाइजासुबलबिरचतिमाया
जाकेबलबिरंचिहरिईसा। पालतसृजतिहरतदससी
जाबलसीसधरतसहसानन। अंडकोससमेतगिरिकानन।
धरैजुबिबिधदेहसुरत्राता। तुम्हरेसठनसिषावनुदाता
हरकोदंडकठिनजेहिंभंजा। तेहिसमेतनृपदलमदगंजा
षरदूषनत्रिसिराअरुबाली। बधेसकलअतुलितबलसा

दो॰ जाकेबललवलेसतेंजितेहुचराचरझारि॥
तासुदूतमैंजाकरिहरिआनेहुप्रियनारि॥२१॥

जानउंमैंतुम्हारप्रभुताई॥ सहसबाहुसनपरीलराई
समरबालिसनकरिजसुपावा। सुनिकपिबचनबिहँसिबिह
षायेउंफलप्रभुलागीभूषा। कपिसुभावतेंतोरेउँरूषा।

सबकेदेहपरमप्रियस्वामी मारहिंमोहिकुमारगगामी
जिन्हमोहिमारातेमैंमारे ॥ तेहिपरबांधेउंतनयतुम्हारे
मोहिनकछुबांधेकरलाजा। कीन्हचहौंनिजप्रभुकरकाजा।
बिनतीकरौंजोरिकररावन सुनहुमानतजिमोरसिषावन
देषहुतुमनिजकुलहिबिचारी भ्रमतजिभजहुभगतभयहारी
जाकेंडरअतिकालडेराई ॥ जोसुरअसुरचराचरषाँई॥
तासोंबयरकबहुंनहिंकीजे मोरेकहेंजानकीदीजे॥

दो॰ प्रनतपालरघुनायककरुनासिंधुषरारि ॥
गएसरनप्रभुराषिहैंतवअपराधबिसारि २२॥

रामचरनपंकजउरधरहू ॥ लंकाअचलराजतुमकरहू
रिषिपुलस्तिजसबिमलमयंका। तेहिससिमहँजनिहोहुकलंका।
रामनामबिनुगिरानसोहा। देषुबिचारत्यागमनमोहा।
बसनहीननहिंसोहसुरारी। सबभूषनभूषितबरनारी॥
रामबिमुषसंपतिप्रभुताई जाइरहीपाईबिनुपाई॥
सजलमूलजिन्हसरितन्हनाहीं बरषगएपुनितबहिंसुषाहीं
सुनदसकंधकहौंपनरोपी। बिमुषरामत्रातानहिंकोपी
संकरसहसबिष्नुअजतोही सकहिंनराषिरामकरद्रोही

दो॰ मोहमूलबहुसूलप्रदत्यागहुतमअभिमान
भजहुरामरघुनायककृपासिंधुभगवान। २३॥

जदपिकहीकपिअतिहितबानी भगतिबिबेकबिरतिनयसानी
बोलाबिहँसिमहाअभिमानी मिलाहमहिंकपिबडगुरग्यानी

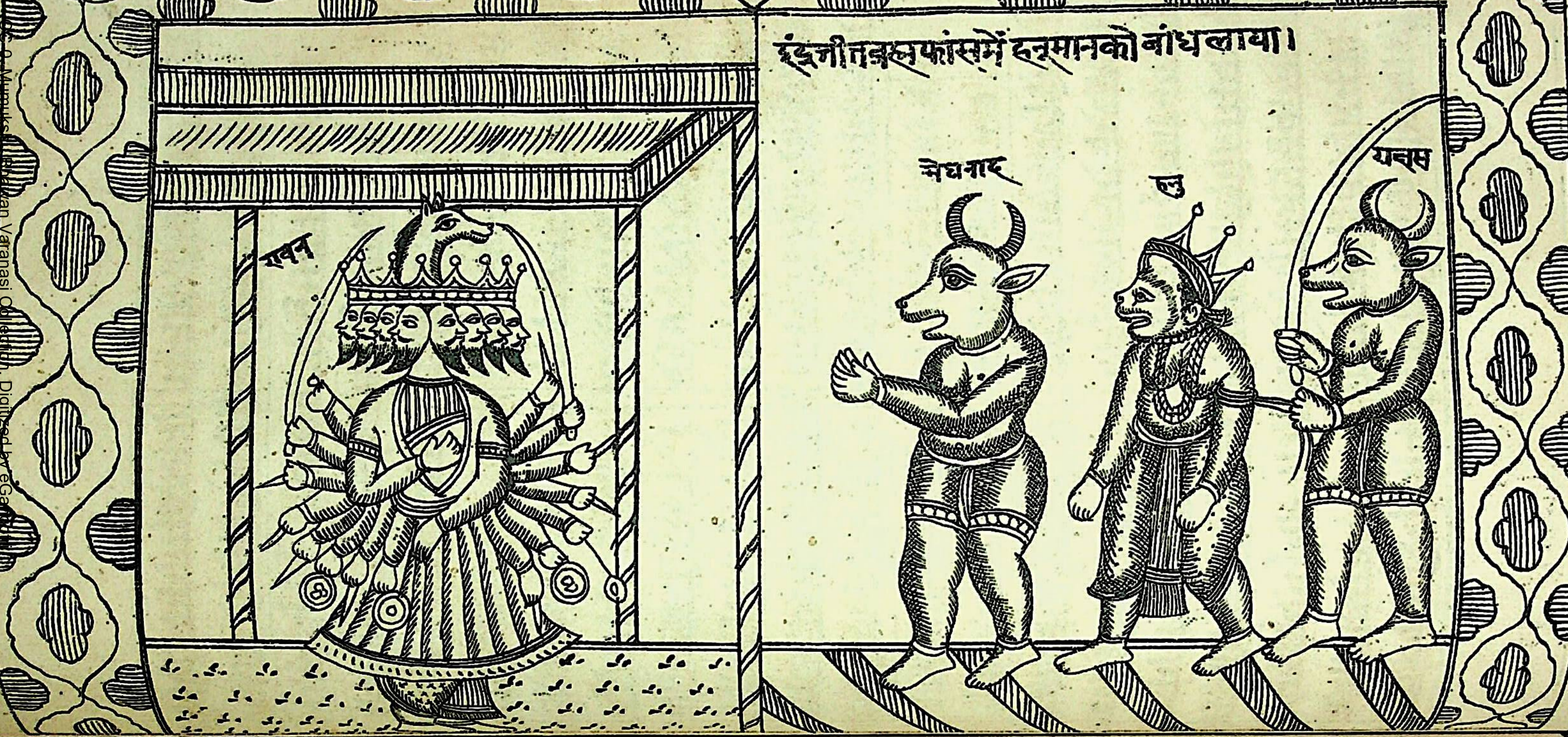
रावन
मेघनाद
हनु
राक्षस

इंद्रजीत ब्रह्मफांसमें हनुमानको बांधलाया।

मृत्युनिकटआईखलतोही। लागेसिअधमसिषावनमोही॥
उलटाहोइहिकहहनुमाना। मतिभ्रमतोहिप्रगटमैंजाना॥
सुनिकपिबचनबहुतषिसयाना। बेगिनहरहुमूढकरप्राना॥
सुनतनिशाचरमारनधाए। सचिवनसहितबिभीषनआए॥
नाइसीसकरिबिनयबहूता। नीतिबिरोधनमारियदूता॥
आनदंडकछुकरियगोसाईं। सबहीकहामंत्रभलभाई॥
सुनतबिहंसिबोलादसकंधर। अंगभंगकरिपठइअबंदर।

दो॰ कपिकेममतापुछपरसबहिंकहौंसमुझाइ।
तेलबोरिपटबांधिपुनिपावकदेहुलगाइ २४

पुछहीनबानरतहांजाइहि। तबसठनिजनाथहिलैआइहि॥
जिन्हकेकीन्हसिबहुतबड़ाई। देषौंमैंतिन्हकैप्रभुताई॥
बचनसुनतकपिमनमुसकाना। भइसहायसारदमैंजाना॥
जातुधानसुनिरावनबचना। लागेरचैमूढसोइरचना॥
रहाननगरबसनघृततेला। बाढीपूछकीन्हकपिषेला॥
कौतुककहंआएपुरबासी। मारहिंचरनकरहिंबहुहांसी॥
बाजहिंढोलदेहिंसबतारी। नगरफेरिपुनिपुछप्रजारी॥
पावकजरतदेषिहनुमंता। भएउपरमलघुरूपतुरंता॥
निबुकचढेउकपिकनकअटारी। भईसभीतनिसाचरनारी॥

दो॰ हरिप्रेरिततेहिअवसरचलेपवनउनचास॥
अट्टहासकरिगर्जाकपिबढिलागअकास २५

देहबिसालपरमहरुआई। मंदिरतेंमंदिरचढिआई॥

जरइनगरभालोगबिहाला । झपटलपटबहुकोटिकराल
तातमातहासुनियपुकारा । इहिअवसरकोहमहिंउबारा
हमजोकहायहकपिनहिंहोई । बानररूपधरेसुरकोई ॥
साधुअवज्ञाकरफलऐसा । जरैनगरअनाथकरजैसा ॥
जारानगरनिमिषएकमाहीं । एकबिभीषणकरगृहनाहीं
ताकरदूतअनलजेहिसिरजा । जरानसोतेहिकारनगिरजा ॥
उलटिपलटिलंकासबजारी । कूदिपरापुनिसिंधुमझा

दो· पूछबुझाइखोइश्रमधरिलघुरूपबहोरि ॥
जनकसुताकेआगेठाढभयउकरजोरि ॥ २६ ॥

मातुमोहिदीजैकछुचीन्हा । जैसेरघुनायकमोहिदीन्हा ॥
चूड़ामणिउतारतबदयऊ । हरषसमेतपवनसुतलयऊ
कहेहुतातअसमोरप्रनामा । सबप्रकारप्रभुपूरनकामा
दीनदयालबिरदसंभारी । हरहुनाथममसंकटभारी
तातसक्रसुतकथासुनाएहु । बानप्रतापप्रभुहिसमुझाएहु
मासदिवसमहुनाथनआवा । तौपुनिमोहिजियतनहिंपाव
कहोकपिकेहिबिधराखौंप्राना । तुमहूंतातकहतअबजान
तोहिदेखिसीतलभईछाती । पुनिमोकहुंसोइदिनसोराती

दो· जनकसुतहिसमुझाइकरिबहुबिधिधीरजदीन्ह ।
चरनकमलसिरनाइकपिगवनरामपहिकीन्ह २७ ।

चलतमहाधुनिगर्जेसिभारी । गर्भस्रवहिंसुनिनिशिचरना
नाघिसिंधुएहिपारहिआवा । सबदकिलकिलाकपिन्हसु

कीपिसमुह
रिंपुंपार
छ· १५ चौ·
गाइल्यापि
गहि विध
मानो श्रु
धुनिगर्जेसि
चलतमहा
दो· ॥
१८ छं·
१८ चौ·
संक्षे·

अंगहारितै स
मगार कीहे
हर्षित है सब
चलद भा प
धुवनके फल
भाग मानौं उगो
वकी घवर (ज
गायं पुनः ख

टी·
रा· सुंद·
१८

मारुतसीवीं
प्रेटकारि श्री
रामचंद्र निकट
गातहिजामव
नसबवर्तांत
सुनायो प्रभु
कहूंसुत हू

मानकी निकेट बुलाइ श्रीजानकीको वर्तांत पूछो सब कोई राग

कींपयान कीआज्ञा कपिस हसंगसिंधु तटआवतभए ॥ ३५ ॥ × ॥

हरषेसबबिलोकिहनुमाना नूतनजन्मकपिन्हतबजाना
मुखप्रसन्नतनतेजबिराजा कीन्हेसिरामचंद्रकरकाजा
मिलेसकलअतिभएसुषारी तलफतमीनपावजिमिबारी
चलेहरषिरघुनायकपासा पूछतकहतनवलइतिहासा
तबमधुबनभीतरसबआए अंगदसहितमधुरफलषाए
रषवारेजबबरजैलागे × ॥ मुष्टिप्रहारहनतसबभागे

दो॰ जाइपुकारेसबैतेबनउजारजुबराज × × ॥
सुनिसुग्रीवहरषिकपिकरिआयेप्रभुकाज २८

जौनहोतिसीतासुधिपाई मधुबनकेफलसकहिंकिषाई
एहिबिधिमनबिचारकरराजा आइगएकपिसहितसमाजा
आइसबननावापदसीसा । मिलेउसबन्हिअतिप्रीतकपीसा
पूछेउकुसलकुसलपददेषी रामकृपाभाकाजबिशेषी।
नाथकाजकीन्हेउहनुमाना राषेसकलकपिन्हकेप्राना
सुनिसुग्रीवबहुरितेहिमिलेऊ कपिन्हसहितरघुपतिपहिंचलेऊ
रामकपिन्हजबआवतदेषा किएकाजमनहर्षबिशेषा
फटिकशिलाबैठेदोउभाई परेसकलकपिचरनन्हजाई

टी॰ रा॰ सुंद॰ २९

दो॰ प्रीतिसहितसबभेटेरघुपतिकरुनापुंज ॥
पूछीकुशलनाथअबकुसलदेषिपदकंज २९ ॥

जामवंतकहसुनुरघुराया जापरनाथकरहुतुमदाया।
ताहिसदाशुभकुसलनिरंतर सुरनरमुनिप्रसन्नताऊपर।
सोइबिजयीबिनयीगुनसागर तासुसुजसत्रयलोकउजागर

टी. रा. सुं. २०

प्रभुकीकृपाभयउसबकाजू । जन्महमारसुफलभाआजू
नाथपवनसुतकीन्हजोकरनी । सहँसमुखसोजाइनबरनी
पवनतनयकेबचनसुहाये। जामवंतरघुपतिहिसुनाये
सुनतकृपानिधिमनअतिभाए । पुनिहनुमानहरषिहियलाए
कहहुतातकेहिभाँतिजानकी । रहतिकरतिरक्षासुप्रानकी

दो. नामपाहरूरातिदिनध्यानतुम्हारकपाट ॥
लोचननिजपदजंत्रितजाहिंप्रानकेहिबाट ।३०।

चलतमोहिचूड़ामनिदीन्ही । रघुपतिहृदयलाइसोइलीन्ही
नाथजुगललोचनभरिबारी । बचनकहेकछुजनककुमारी
अनुजसमेतगहेहुप्रभुचरना । दीनबंधुप्रनतारतिहरना ॥
मनक्रमबचनचरनअनुरागी । केहिअपराधनाथहौंत्यागी
अवगुनएकमोरमैंजाना ॥ बिछुरतप्राननकीन्हपयाना
नाथसोनयनन्हिकरअपराधा । निसरतप्रानकरहिंहठिबाधा
बिरहअगिनितनुतूलसमीरा । स्वासजरैछनमाहिंसरीरा।
नैनस्रवहिंजलनिजहितलागी । जरैनपावदेहबिरहागी ॥
सीताकैअतिबिपतिबिसाला । बिनहिंकहेंभलदीनदयाला

दो. निमिषनिमिषकरुनानिधिजाहिंकलपसमबीत
बेगिचलियप्रभुआनियभुजबलखलदलजीत ३१

सुनिसीतादुखप्रभुसुखअयना । भरिआएजलराजिवनयना
बचनकायमनममगतिजाही । सपनेहुबूझियबिपतिकिताही
कहहनुमंतबिपतिप्रभुसोई । जबतबसुमिरनध्याननहोई

कतिकबानप्रभुजातुधानकी रिपुहिजीतिआनबीजानकी
सुनुकपितोहिसमानउपकारी नहिंकोउसुरनरमुनितनधारी
प्रतिउपकारकरौंकातोरा॥ सन्मुखहोइनसकतमनमोरा
सुनुसुततोहिउरनमैंनाहीं॥ देखेउँकरिबिचारमनमाहीं
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता लोचननीरपुलकअतिगाता

दो॰सुनप्रभुबचनबिलोकिमुखगातहरषिहनुमंत
चरनपरेउप्रेमाकुलत्राहित्राहिभगवंत॥३२॥

बारबारप्रभुचहैउठावा॥ प्रेममगनतेहिउठबनभावा
प्रभुकरपंकजकपिकेसीसा सुमिरिसोदसामगनगौरीसा
सावधानमनकरिपुनिशंकर लागेकहनकथाअतिसुंदर
कपिउठाइप्रभुहृदयलगावा करगहिपरमनिकटबैठावा
कहुकपिरावनपालितलंका केहिबिधिदहेउदुर्गअतिबंका
प्रभुप्रसन्नजानाहनुमाना॥ बोलाबचनबिगतअभिमाना
साखामृगकैबड़िमनुसाई। साखातेसाखापरजाई॥
नाघिसिंधुहाटकपुरजारा निसिचरगनबधिबिपनउजारा
सोसबतवप्रतापरघुराई॥ नाथनकछूमोरिप्रभुताई॥

दो॰ताकहँप्रभुकछुअगमनहिंजापरतुमअनुकूल
तवप्रतापबड़वानलहिंजारिसकैखलुतूल॥३३॥

नाथभगतिअतिसुखदायनी देहुकृपाकरिअनपायनी॥
सुनिप्रभुपरमसरलकपिबानी एवमस्तुतबकहेउभवानी॥
उमारामसुभावजेहिजाना ताहिभजनतजिभावनआना॥

यहसंबादजासुउरआवा। रघुपतिचरनभगतिसो
सुनिप्रभुबचनकहहिंकपिबृंदा। जयजयजयकृपालसुखकं
तबरघुपतिकपिपतिहिंबुलावा। कहाचलैंकरकरहुबनाव
अबबिलंबकेहिकारनकीजे। तुरतकपिन्हकहुँआयसु
कौतुकदेखिसुमनबहुबरषी। नभतेंभवनचलेसुरहरषी

कपिपतिबेगिबुलाए।आएजूथपजूथ॥
नानाबरनअतुलबलबानरभालुबरूथ ३४॥

दो॰
रा॰ सुंदर
२२

प्रभुपदपंकजनावहिंसीसा। गर्जहिंभालुमहाबलकी
देखीरामसकलकपिसेना। चितइकृपाकरिराजिवनैन
रामकृपाबलपाइकपिंदा। भएपच्छजुतमनहुँगिरिंद
हरषिरामतबकीन्हपयाना। सगुनभयेसुंदरसुभना
जासुसकलमंगलमयकीती। तासुपयानसगुनयहनीत
प्रभुपयानजानाबैदेही॥ फरकिबामअंगजनुकहिदे
जोइजोइसगुनजानकिहिहोई। असगुनभएउरावनहिंसो
चलाकटककोबरनैपारा। गर्जहिंबानरभालुअपार
नखआयुधगिरिपादपधारी। चलेगगनमहिइच्छाचारी
केहरिनादभालुकपिकरहीं। डिगमगाहिंदिग्गजचिक्क

छं॰ चिक्करहिंदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागरखरभरे।
मनहरषदिनकरसोमसुरमुनिनागकिन्नरदुखटरे।
कटकटहिंमर्कटबिकटभटबहुकोटिकोटिन्हधावहीं।
जयरामप्रबलप्रतापकोसलनाथगुनगनगावहीं॥

यं कि० ७ २ क्षी २ छिं २ ८ छ गुनिशाप हिंसमं का ग्रन्थ सकल स मालदाय छं ६ लौं० हनुमानजू

सहिसकनभारउदारअहिपतिबारबारहिंमोहई
गहिदसनपुनिपुनिकमठपृष्ठकठोरसोकिमिसोहई
रघुबीररुचिरपयानप्रस्थितिजानिपरमसुहावनी
जनुकमठखर्परसर्पराजसोलिखतअबिचलपावनी
दो०इहिबिधिजाइकृपानिधिउतरेसागरतीर ॥
जहँतहँलागेखानफलभालुबिपुलकपिबीर ३५

उहाँनिशाचररहहिंससंका जबतेंजारिगएउकपिलंका
निजनिजगृहसबकरहिंबिचारा नहिंनिसिचरकुलकेरउबारा
जासुदूतबलबरनिनजाई। तेहिआयेपुरकवनभलाई।
दूतिन्हसनसुनिपुरजनबानी मंदोदरीअधिकअकुलानी
रहसिजोरिकरपतिपगलागी बोलीबचननीतिरसपागी
कंतकरखहरिसनपरिहरहू मोरकहाअतिहितहियधरहू
समुझतजासुदूतकैकरनी स्रवहिंगर्भरजनीचरघरनी॥
तासुनारिनिजसचिवबुलाई पठवहुकंतजोचहहुभलाई॥
तवकुलकमलबिपिनदुखदाई सीतासीतनिसासमआई
सुनहुनाथसीताबिनुदीन्हे हितनतुम्हारसंभुअजकीन्हे

दो०रामबानअहिगनसरिसनिकरनिसाचरभेक
जबलगिग्रसतनतबलगिजतनकरहुतजिटेक ३६

श्रवनसुनीसठताकरबानी बिहसाजगतबिदितअभिमानी
सभयसुभावनारिकरसाँचा मंगलमहँभयमनअतिकाचा
जौंआवैमरकटकटकाई ॥ जियहिंबिचारेनिशिचरखाई

जबतें लंका जारिगयेनिस चरनके सका ही मंदोदरी रावनकं भरी रानसंवाद पुन: समर्मां सचिनमयि हौ

रा० सुंदर २१

मंदनहां बिभीषनसाधु बिनय युक बिभीषनको कहनगयौ सोई रावनके आगमबनोहै पीठहंभयह बिबुकनीति ते बिकिहका सौं याकोभ बजीलावली सौं बिरोध क्रुह बिभीषन नेमानाश्र ४ रामौं

कंपहिलोकपजाकीत्रासा। तासुनारिसभीतबड़हा
असकहिगाहिबिहँसिउठिलाई चलेउसभाममताअधिकाई
मंदोदरीहृदयकरचिंता ॥ भयउकंतपरबिधिबिपरीता
बैठेउसभाखबरिअसिपाई। सिंधुपारसेनासबआई॥
बूझेसिसचिवउचितमतकहहू तेसबहँसेमष्टकरिरहहू।
जितेउसुरासुरतबश्रमनाहीं नरबानरकेहिलेखेमाहीं

दो॰ सचिवबैदगुरतीनजोप्रियबोलहिंभयआस।
राजधर्मतनतीनकरहोइबेगहीनास ॥ ३७ ॥

सोइरावनकहुँबनीसहाई। अस्तुतिकरहिंसुनाइसुना
अवसरजानिबिभीषनआवा भ्राताचरनसीसतेहिनावा
पुनिसिरनाइबैठिनिजआसन बोलाबचनपाइअनुसासन
जोकृपालपूछेहुमोहिबाता मतिअनुरूपकहौंहितता
जोआपनचाहइकल्याना ॥ सुजससुमतिसुभगतिसुखना
सोपरनारिलिलारगोसाँई। तजैचौथकेचंदकिनाँई॥
चौदहभुवनएकपतिहोई भूतद्रोहतिष्ठैनहिंसोई॥
गुनसागरनागरनरजोऊ॥ अलपलोभभलकहैनको

दो॰ कामक्रोधमदलोभसबनाथनरककेपंथ।
सबपरिहररघुबीरहिंभजहुभजहिंजेहिसंत ३८

तातरामनहिंनरभूपाला ४ भुवनेश्वरकालहुकरकाला
ब्रह्मअनामयअजभगवंता व्यापकअजितअनादिअनंता
गोद्विजधेनुदेवहितकारी कृपासिंधुमानषतनधारी॥

विक्र है
कोपरत
भौपन कै
श्रवन वि
हिंउंगट
कंभभो
हैतउकृत
रिजात है
श्रीरामब
श्रावालै
शरमुस्तै
श्रुतउज्ज
हेश्रुतकलो
गीतिविचारते
मुहेतिनश्रमो
बांधिबोउबि
त श्रुइसरनौ
गतपादि शठ
मिल दोउ सम
शानि श्राद
दो॰
रा॰ सुं॰
२४
पूर्वक मिल
सायगावत
भाश्रुवकडी
जुषसंगतव
तै श्रधिक है
तु पापकी
क्षीनवद्धि

जनरंजनभंजनषलब्राता। बेदधर्मरछकसुनभ्राता।
ताहिबयरुतजिनाइअमाथा। प्रनतारतिभंजनरघुनाथा।
देहुनाथप्रभुकहुँबैदेही॥ भजहुरामबिनुहेतुसनेही
सरनगएप्रभुताहुनत्यागा बिस्वद्रोहकृतअघजेहिलागा।
जासुनामत्रयतापनसावन। सोइप्रभुप्रगटसमुझुजियरावन

दो· बारबारपदलागउँबिनयकरौंदससीस॥
परिहरमानमोहमदभजहुकोसलाधीस ॥
मुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसनकहपठईयहबात।
तुरतसोमैंप्रभुसनकहीपाइसुअवसरतात ३९

माल्यवंतअतिसचिवसयाना। तासुबचनसुनिअतिसुषमाना
तातअनुजतवनीतिबिभूषन सोउरधरहुजोकहतबिभीषन
रिपुउत्कर्षकहतसठदोऊ। दूरिनकरउइहाँहैकोऊ॥
माल्यवंतगृहगयउबहोरी। कहइबिभीषनपुनिकरजोरी
सुमतिकुमतिसबकेउररहई नाथपुराननिगमअसकहई
जहाँसुमतितहाँसंपतिनाना। जहाँकुमतितहँबिपतिनिदाना
तवउरकुमतिबसीबिपरीता हितअनहितमानहुरिपुप्रीता
कालरातिनिसिचरकुलकेरी तेहिसीतापरप्रीतिघनेरी॥

दो· तातचरनगहिमांगौराषहुमोरदुलार ॥
सीतादेहुरामकहँअहितनहोइतुम्हार।४०॥

बुधपुरानश्रुतिसंमतबानी कहीबिभीषननीतिबषानी
सुनतदसाननउठारिसाई॥ षलतोहिनिकटमृत्युअबआई

किंभीतिमम
किंगोपतः३
कार्यंनहीं
नैरत्नानिते
गर्कीयेदृ
धर्मआसन
श्रीउप्रउप
धौतंश्रीधर्के
गाःकुंभो
श्रीनिलय
कौनिलय
लंकासुर
समुद्रकोम
गर्केपुनर्ते
उत्पातिगाति

× × × × × ×

दो॰
रा॰सुं॰
२६

जियसिसदासठमोरजिआवारिपुकरपच्छमूढतोहिभा
कहसिनखलअसकोजगमाही भुजबलजाहिजीतामैंनाहीं
ममपुरबसितपसिन्हपरप्रीती सठमिलुजाइतिन्हहिंकहुनीती
असकहिकीन्हेसिचरनप्रहारा अनुजगहेपदबारहिंबारा॥
तुमपितुसरसभलेहिमोहिमारा रामभजेहितनाथतुमारा॥
उमासंतकैइहइबड़ाई ~॥ मंदकरतजोकरैभलाई॥
सचिवसंगलैनभपथगयऊ सबहिसुनायकहतअसभ

दो॰ रामसत्यसंकल्पप्रभुसभाकालबसतोरि
मैंरघुबीरसरनअबजाउँदेहुजनिखोरि ४१॥

असकहिचलाबिभीषनजबही आयूहीनभएसबतबहीं
साधुअवज्ञातुरतभवानी करकल्याअखिलकैहानी
रावनजबहिबिभीषनत्यागा भयउबिभवबिनुतबहिअभागा
चलेउहरषिरघुनायकपाहीं करतमनोरथबहुमनमाहीं
देषिहौंजाइचरनजलजाता अरुनमृदुलसेवकसुषदा
जेपदपरसितरीरिषिनारी दंडककाननपावनकारी॥
जेपदजनकसुताउरलाए कपटकुरंगसंगधरधाये॥
हरउरसरसरोजपदजेई॥ अहोभाग्यमैंदेषिहौंतेही॥

दो॰ जिन्हपायन्हकेपादुकनभरतरहेमनलाइ॥
तेपदआजबिलोकिहौंइननयननिअबजाइ ४२॥

एहिबिधिकरतसप्रेमबिचारा आयउसपदिसिंधुकेपार
कपिन्हबिभीषनआवतदेषा जानाकोउरिपुदूतबिशेष

ताहि राखि कपीस पहँ आए। समाचार सब ताहि सुनाए
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा। कहै कपीस सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निसाचर माया। कामरूप केहि कारन आया
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिय बाँधि मोहि अस भावा
सखा नीति तुम नीक बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बत्सल भगवाना

दो॰ सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि
ते नर पावर पापमय तिन्हहिं बिलोकत हानि ४३।

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आये सरन तजहुँ नहिं ताहू॥
सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं
पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ
जौं पै दुष्ट हृदय सो होई॥ मोरे सन्मुख आव कि सोई
निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दससीसा॥ तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा
जग महँ सखा निसाचर जेते। लछिमन हनइ निमिष महँ तेते
जौं सभीत आवा सरनाई। रखिहौं ताहि प्रान की नाईं

दो॰ उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ४४

सादर तेहि आगे करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता॥ नयनानंद दान के दाता॥

को मन तह
सोंगाइ बिन
एक तुम्हा
तहाँ प्रभु की
ऐसे लेन आ
या सो वा
कों बान रन
धरि ताड़ नाकि
ये नाक कान
काटे लोग न
बाने पुकार
किये अरु
शील समाए
दया करि छु
ड़ाय पत्रिका
दीन्हा

सा

टी

गैरहतें
रवनबाम
रघुमंतते
प्रभुवानै
कतबाम
कोआदि
बलजन
कीमो श्रुत
हेप्रभाम प्रभु
सखापदेखिल
तें हें हेतु
सबतें लघुक
ली कुक हैं
प्रभा नीति
उपदेशतें ना
हैत भए प्र
गल्भ भये
तैं

दो॰
रा॰ सुंदर
२८

बहुरिरामछबिधामबिलोकी रहेउठठुकिएकटकपलरोकी
भुजप्रलंबकंजारुनलोचन। स्यामलगातप्रनतभयमोचन
सिंहकंधआयतउरसोहा। आननअमितमदनमनमोहा
नयननीरपुलकितअतिगाता। मनधरिधीरकहीमृदुबाता
नाथदसाननकरमैंभ्राता ॥ निशिचरबंशजन्मसुरत्राता
सहजपापप्रियतामसदेहा। जथाउलूकहितमपरनेहा॥

दो॰ श्रवनसुजससुनिआएउँप्रभुभंजनभवभीर।
त्राहित्राहिआरतिहरनशरनसुखदरघुबीर ४५

असकहिकरतदंडवतदेखा तुरतउठेप्रभुहरषबिशेषा॥
दीनबचनसुनिप्रभुमनभावा भुजबिशालगहिहृदयलगावा
अनुजसहितमिलिढिगबैठारी बोलेबचनभगतभयहारी
कहुलंकेससहितपरिबारा कुसलकुठाहरबासतुम्हारा
खलमंडलीबसहुदिनराती सखाधर्मनिर्बहैकेहिभांती
मैंजानौंतुम्हारसबरीती। अतिनयनिपुनभावअनीती
बरुभलबासनरककरताता दुष्टसंगजनिदेइबिधाता
अबपददेखिकुसलरघुराया जौतुमकीन्हजानिजनदाया

दो॰ तबलगिकुसलनजीवकहुंसपनेहुमनबिश्राम
जबलगिभजतनरामकहुंसोकधामतजिकाम ४६

तबलगिहृदयबसतखलनाना लोभमोहमत्सरमदमाना
जबलगिउरनबसतरघुनाथा धरेचापसायककटिभाथा
ममतातरुनतमीअंधियारी रागद्वेषउलूकसुखकारी

तबलगिबसतिजीवमनमाहीं जबलगिप्रभुप्रतापरविनाहीं
अबमैंकुसलमिटेभयभारे देखिरामपदकमलतुम्हारे
तुम्हकृपालजापरअनुकूला तेहिनब्यापत्रिविधभवसूला
मैंनिसिचरअतिअधमसुभाऊ सुभआचरनकीन्हनहिंकाऊ
जासुरूपमुनिध्याननआवा तेहिंप्रभुहरषिहृदयमोहिलावा

दो॰ अहोभाग्यममअमितअतिरामकृपासुखपुंज।
देखिउँनयनबिरंचिसिवसेव्यजुगलपदकंज।४७।

सुनहुसखानिजकहउँसुभाऊ जानभुसुंडिसंभुगिरिजाऊ॥
जौंनरहोइचराचरद्रोही ॥ आवैसरनसभयतकिमोही
तजिमदमोहकपटछलनाना। करौंसद्यतेहिसाधुसमाना
जननीजनकबंधुसुतदारा। तनुधनुभवनसुहृदपरिवारा
सबकैममताताग़बटोरी ममपदमनहिंबांधबरडोरी
समदरसीइच्छाकछुनाहीं। हरषसोकभयनहिंमनमाहीं
अससज्जनममउरबसकैसे लोभीहृदयबसैधनजैसे॥
तुमसारिखेसंतप्रियमोरे॥ धरौंदेहनहिंआननिहोरे॥

दो॰ सगुनउपासकपरहितनिरतनीतिदृढनेम
तेनरप्रानसमानममजिनकेद्विजपदप्रेम।४८।

सुनलंकेशसकलगुनतोरे तातेंतुम्हअतिसयप्रियमोरे
रामबचनसुनिबानरजूथा। सकलकहहिंजयकृपाबरूथा
सुनतबिभीषनप्रभुकैबानी नहिंअघातश्रवनामृतजानी
पदअंबुजगहिबारहिंबारा। हृदयसमातनप्रेमअपारा॥

अनिसा चरभयार घाम्हिंत्याग निअनिपाइ जानभयाम्र कीनिरिवस बिनयतें मु दुरुकर्वाम्र कनीनिरया हिनाइना पा नें पूर्वार्कित छिमनतें ध हीं तुमबारते अधमपापी अधमअधमसु दयापमा नमाजिनयम नायाअमल पावनभवर ऋतें पापा कैयेतहवारपार जानसुजसके आवतें पर्व प तिवाम्रधर्मको जानकियाम्रह पेरपाउं नाम हनुलकानें गौरुद्धन हेमानुं बांकेतीनके वैपरनगरी दंप्रभुभीष मातीका लपरहत्य हिपाहेत कांजीनाम उरहर ।

सुनहुदेवसचराचरस्वामी । प्रनतपालउरअंतरजामी॥
उरकछुप्रथमबासनारही । प्रभुपदप्रीतिसरितसोब
अबकृपालनिजभक्तिपावनी । देहुसदाशिवमनभावनी॥
एवमस्तुकहिप्रभुरनधीरा । मागातुरतसिंधुकरनीरा॥
जदपिसखातवइच्छानाहीं । मोरदरसअमोघजगमां
असकहिरामतिलकतेहिसारा । सुमनबृष्टिनभभईअपारा॥

दो॰रावनक्रोधअनलनिजस्वाससमीरप्रचंड॥
जरतबिभीषनराखेउदीन्हेउराजअखंड॥४९॥
जोसंपतिशिवरावनहिंदीन्हदियेदशमाथ॥
सोईसंपदाबिभीषनहिसकुचदीन्हरघुनाथ४९

असप्रभुछाडिभजहिंजेहिआना । तेनरपशुबिनुपूंछबिषाना
निजजनजानिताहिअपनावा । प्रभुसुभावकपिकुलमनभा
पुनिसर्बज्ञसर्बउरबासी । सर्बरूपसबरहितउदासी॥
बोलेबचननीतिप्रतिपालक । कारनमनुजदनुजकुलपा
सुनुकपीसलंकापतिबीरा । केहिबिधितरियजलधिगं
संकुलमकरउरगझषजाती । अतिअगाधदुस्तरसबभांती
कहलंकेशसुनहुरघुनायक । कोटिसिंधुसोषकतवसाय
जद्यपितदपिनीतिअसगाई । बिनयकरियसागरसनजाई

दो॰प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधिकहिहिउपायबिसारि
बिनुप्रयाससागरतरिहिसकलभालुकपिधारि५०

सखाकहीतुमनीकिउपाई । करियदैवजोंहोइसहाई॥

मंत्रनयहलछमनमनभावा रामबचनसुनिअतिदुखपावा
नाथदैवकरकवनभरोसा। सोषियसिंधुकरियमनरोषा
कादरमनकहुएकअधारा दैवदैवआलसीपुकारा +॥
सुनतबिहँसिबोलेरघुबीरा ऐसइकरबधरहुमनधीरा॥
असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई सिंधुसमीपगएरघुराई +॥
प्रथमप्रनामकीन्हसिरनाई बैठेपुनितटदर्भडसाई +॥
जबहिंबिभीषनप्रभुपहिंआए पाछेंरावनदूतपठाए + ॥

दो· सकलचरिततिन्हदेखेधरेकपटकपिदेह + ॥
प्रभुगुनहृदयसराहहिंसरनागतपरनेह ॥ ५१ ॥

आवेषानहिंरामसुभाऊ अतिसप्रेमगाविसरदुराऊ॥
रिपुकेदूतकपिन्हजबजाने। सकलबांधिकपीसपहँआने।
कहसुग्रीवसुनहुसबबानर अंगभंगकरिपठवहुनिशिचर
सुनिसुग्रीवबचनकपिधाए बांधिकटकचहुँपासफिराए
बहुप्रकारमारनकपिलागे दीनपुकारततदपिनत्यागे॥
जोहमारहरनासाकाना ॥ तेहिकोसलाधीसकैआना
सुनिलछमनसबनिकटबुलाए दयालागिहँसितुरतछोड़ाए
रावनकरदीजेहुयहपाती। लछमनबचनबांचकुलघाती॥

दो· कहेहुमुखागरमूढसनममसंदेसउदार + ॥
सीतादेइमिलहुनतआवाकालतुम्हार ५२॥

तुरतनाइलछमनपदमाथा चलेदूतबरननगुनगाथा॥
कहतरामजसलंकाआए। रावनचरनसीसतिननाए॥

बिहसिदसाननपूछीबाता कहसिनसुकआपनिकुसला
पुनिकहुखबरिबिभीषनकेरी जाहिमृत्युआईअतिनेरी ॥
करतराजलंकासठत्यागी । होइहिजवकरकीटअभा
पुनिकहुभालुकीसकटकाई कठिनकालप्रेरितचलिआ
जिनकेजीवनकररखवारा । भयउमृदुलचितसिंधुबिचा
कहुतपसिन्हकैबातबहोरी जिनकेहृदयत्रासअतिमोरी

दो· कीभइभेंटकिफिरिगएश्रवनसुजससुनिमोर
कहसिनरिपुदलतेजबलबहुतचकितचितचोर ।

नाथकृपाकरिपूछेहुजैसें ॥ मानहुकहाक्रोधकरितैसें
मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा जातहिरामतिलकतेहिसारा
रावनदूतहमहिंसुनिकाना । कपिन्हबांधदीन्हेदुखनाना ।
श्रवननासिकाकाटनलागे रामसपथदीन्हेंहमत्यागे ।
पूछेहुनाथरामकटकाई ।। बदनकोटिसतबरनिनजा
नानाबरनभालुकपिधारी । बिकटाननबिसालभयका
जिनपुरदहेउहतेउसुततोरा सकलकपिन्हमहँतेहिबलथो
अमितनामभटकठिनकराला अमितनागबलबिपुलबिसा

दो· द्विबिदमयंदनीलनलअंगदगदबिकटासि ।
दधिमुखकेहरिनिसठसठजामवंतबलरासि ।

एकपिसबसुग्रीवसमाना । इन्हसमकोटिन्हगनैकोना
रामकृपाअतुलितबलतिन्हहीं तृनसमानत्रयलोकहिगनहीं
असमैंसुनाश्रवनदसकंधर पदुमअठारहजूथपबंदर ।

टी·
रा· सुंदर·
३२

चौपाईछंददोहादिकोठक॥

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
३	१५८१	३	२	६२

नायकएकमहँसोकपिनाहीं जोनतुम्हैंजीतैरनमाहीं॥
परमक्रोधमीजहिंसबहाथा आयसुपैनदेइरघुनाथा॥
सोषहिंसिंधुसहितझषब्याला पूरहिंनतभरिकुधरबिसाला
मर्दिगर्दिमिलवहिंदससीसा ऐसेइबचनकहहिंसबकीसा
गर्जहिंतर्जहिंसहजअसंका मानहुँग्रसनचहतहहिंलंका

दो· सहजसूरकपिभालुसबपुनिसिरपरप्रभुराम
रावनकालकोटिकहुँजीतिसकहिंसंग्राम ५५

रामतेजबलबुद्धिबिपुलाई शेषसहससतसकहिंनगाई
सकसरएकसोषिसतसागर तवभ्रातहिपूछेउनयनागर।
तासुबचनसुनिसागरपाहीं मांगतपंथकृपामनमाहीं।
सुनतबचनबिहसादससीसा जौंअसमतिसहायकृतकीसा
सहजभीरुकरबचनदृढ़ाई सागरसनठानीमचलाई॥
मूढ़मृषाकाकरसिबड़ाई॥ रिपुबलबुद्धिथाहमैंपाई॥
सचिवसभीतबिभीषनजाकें बिजयबिभूतिकहाँजगताके
सुनिषलबचनदूतरिसबाढ़ी समयबिचारिपत्रिकाकाढ़ी
रामानुजदीन्हीयहपाती॥ नाथबचाइजुड़ावहुछाती
बिहँसिबामकरलीन्हीरावन सचिवबोलिसठलागबचावन

दो· बातनमनहिंरिझायसठजनिघालसिकुलषीस
रामबिरोधनउबरसीसरनबिष्नुअजईस [illegible]॥

दो· अनुजइवमानतजिप्रभुपदपंकजभृंग॥ ॥
होहिरामशरअनलखलजनिकुलसहितपतंग ५६

टी·
रा· सुंदर·
३३

सुनतसभयमनमुखमुसकाई कहतदसाननसबहिसुना
भूमिपराकरगहतअकासा लघुतापसकरबागबिलास
कहुसुकनाथसत्यसबबानी समझहुछाड़िप्रकृतिअभिमा
सुनहुबचनममपरिहरिक्रोधा रामनाथसनतजहुबिरोधा॥
अतिकोमलरघुबीरसुभाऊ जद्यपिअखिललोककरराउ
मिलतकृपातुम्हपरप्रभुकरहीं उरअपराधनएकौधरहीं॥
जनकसुतारघुनाथहिदीजै एतनाकहामोरप्रभुकीजै॥
जबतेहिकहादेनबैदेही॥ चरनप्रहारकीन्हसठतेही॥
नाइचरनसिरुचलासुतहाँ कृपासिंधुरघुनायकजहाँ॥
करिप्रनामनिजकथासुनाई रामकृपाआपनिगतिपाई॥
ऋषिअगस्तकीसापभवानी राछसभएउरहामुनिज्ञानी
बंदिरामपदबारहिबारा॥ मुनिनिजआश्रमकहुँपगुधा

दो· बिनयनमानतजलधिजड़गएतीनदिनबीति॥
बोलेरामसकोपतबभयबिनुहोयनप्रीति ५७॥

लछमनबानसरासनआनू सोषौंबारिधिबिसिखकृ
सठसनबिनयकुटिलसनप्रीती सहजकृपिनसनसुंदरनीती
ममतारतसनज्ञानकहानी अतिलोभीसनबिरतिबखा
क्रोधिहिसमकामिहिहरिकथा ऊषरबीजबएफलजथा॥
असकहिरघुपतिचापचढ़ावा यहमतलछमनकेमनभाव
संधानेउप्रभुबिसिखकराला उठीउदधिउरअंतरज्वाला॥
मकरउरगझषगनअकुलाने जरतजंतुजलनिधिजबजाने॥

ानकथारभरिमनिगननाना। बिप्ररूपआएउतजिमाना।

दो· काटेहिपयकदलीफरैकोटिजतनकोउसींच
बिनयनमानषगेससुनुडाटेहिपयनवेनीच ५८

सभयसिंधुगहिपदप्रभुकेरे छमहुनाथसबअवगुनमेरे
गगनसमीरअनलजलधरनी। इन्हकइनाथसहजजड़करनी
तवप्रेरितमायाउपजाये *। सृष्टिहेतुसबग्रंथनगाए॥
प्रभुआयसुजेहिकहँजसअहई सोतेहिभांतिरहेसुषलहई
प्रभुभलकीन्हमोहिसिखदीनी मरजादापुनितुम्हरीकीनी॥
ढोलगवाँरसूद्रपसुनारी॥ सकलताडनाकेअधिकारी
प्रभुप्रतापमैंजावसुखाई उतरिहिकटकुनमोरिबड़ाई
प्रभुअग्याअपेलश्रुतिगाई करौंसोबेगिजुतुमहिंसुहाई

दो· सुनतबचनबिनीतअतिकहकृपालमुसुकाय
जेहिबिधिउतरेकपिकटकुतातसकहहुउपाय ५९

नाथनीलनलकपिदोउभाई लरिकाईरिषिआसिषपाई
तिन्हकेपरसकिएगिरिभारे तरिहहिंजलधिप्रतापतुम्हारे
मैंपुनिउरधरिप्रभुप्रभुताई। करिहौंबलअनुमानसहाई
एहिबिधिनाथपयोधिबंधाइय जेहियहसुजसलोकतिहुगाइय
एहिसरममउत्तरतटबासी॥ हतहुनाथषलनरअघरासी
सुनिकृपालसागरमनपीरा तुरतहीहरीरामरनधीरा॥
देखिरामबलपौरुषभारी। हरषिपयोनिधिभयोसुषारी
सकलचरितकहिप्रभुहिसुनावा चरनबंदिपाथोधिसिधावा

दो·
सा· सुं·
३५

छं. निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मति भायउ।
यह चरित कलिमलहर जथामति दास तुलसी गायउ।
सुखभवन संसय समन दमन बिषाद रघुपति गुन गना।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।

दो. सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भवसिंधु बिना जलजान ६०

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंस
ज्ञानसंपादनो नाम पंचमः। सोपानः सुंदरकांडः॥५॥

टी.
रा. सं.
३६

मतबअ हिंद प्रे
स में प्यारेला
ल के छा
पी ग
ई

गंगाजीकी मूर्त्तिहै

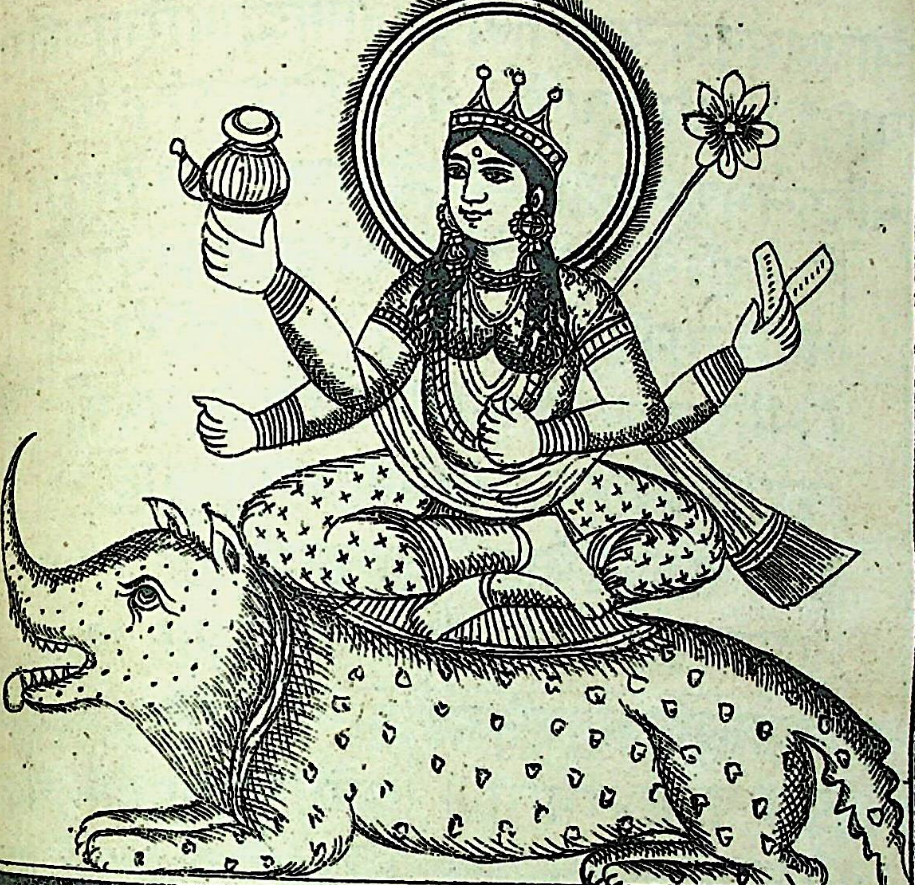

अथलंकाकांडः ६

श्रीगणेशायनमः श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ श्लोक ॥
रामकामारिसेव्यंभवभयहरणंकालमत्तेभसिंहं ॥
योगींद्रंज्ञानगम्यंगुणनिधिमजितंनिर्गुणंनिर्बिकारं
मायातीतंसुरेशंखलबधनिरतंब्रह्मवृंदैकदेवं बंदे
कंदावदातंसरसिजनयनंदेवमुर्बीसरूपम १
शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुंशार्दूलचर्मांबरंकालव्याल

श्रीगणेशाय नमः। अथ लंकाकांड प्रारंभ्यते। श्लो० टी० १ रामकामारि सेव्यमिति रघुनायना मानवसत्वौं अर्थात्शिवका कैलाधिप जगतपुनन ५ सेवेरघुबीरन कामंगुणातामक रतहैंकैसेहैं रामजूकामके अरिशिवजू तिनकेसेव योग्यहैंफेर संसारभयके नाशनको कालरूपमतवारे हाथीकेमारवेको सिंहहैंयोगीन्द्रनके स्वामीज्ञानकरि गम्यहैंजानेजाते गुणनिधानअजय अजितहैंनिर्गुणहै गुणौंनिर्विकार हैंअरुमायाते अतीतसुरन केईशखलन केबधमेंतत्पर ब्रह्मवृंदके एकदेवताहैं

करालभूषणधरंगंगाशशांकप्रियं काशीशंकलिकल्म
षौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यंगिरिजापतिंगु
णनिधिंशंकरंमन्मथारिं २ योददातिसतांशंभुः कैवल्य
मपिदुर्लभंखलानांदंडकृद्योसौशंकरःशंतनोतुमां ३

दो॰ लवनिमेषपरमानुजुगबरषकलपसरचंड ॥
भजहिनमनतेहिरामकहुंकालजासुकोदंड + ॥
सो॰ सिंधुबचनसुनिरामसचिवबोलिप्रभुअसकहेउ
अबबिलंबकेहिकामकरहुसेतुउतरैकटक + ॥
सुनहुभानुकुलकेतुजामवंतकरजोरिकह + + ॥
नाथनामतवसेतुनरचढ़िभवसागरतरहिं ॥ १ ॥

यहलघुजलधितरतकतिबारा अससुनिपुनिकहपवनकुमा
प्रभुप्रतापबड़वानलभारी ॥ सोखेउप्रथमपयोनिधिबा
तवरिपुनारिरुदनजलधारा भरेउबहोरिभएउतेहिखा
सुनिअतिउकतिपवनसुतकेरी हरषेरघुपतिकपितनहे
जामवंतबोलेदोउभाई ॥ नलनीलहिसबकथासु
रामप्रतापसुमिरिमनमाहीं करहुसेतुप्रयासकछुना
बोलिलियेकपिनिकरबहोरी सकलसुनहुबिनतीकछु
रामचरनपंकजउरधरहू । कौतुकएकभालुकपिक
धावहुमरकटबिकटबरूथा आनहुबिटपगिरिकेजूथा
सुनिकपिभालुचलेकरिहूहा जयरघुबीरप्रतापसमूहा

दो॰ अतिउतंगगिरिपादपलीलहिंलेहिंउठाइ ॥

सर्पको भूषण
धारे गंगा अरु
चंद्र है प्रिय जिन
के काशी के पति
कलि के पापवृंद
नाशक कल्यान
के हेतु को जो
कल्पतरु हैं २
मू॰ ०
जो देत सता
अति अगम मुक्त

टी॰
रा॰ लं॰
२

[illegible]

सर्वबिरहल नमस्तकर चाइनलनी हीनं सेतुहेतु कहीप्रभु बानप्रभु पाखानसि रचितिम्रा ८ नलनी लकोईत मासाधव नलमांत सेतुबंधी नहाँ प्रभु इलयुमेव सागरध्यान अफजलधार यं रा॰ लं॰ ३

आनिदेहिंनलनीलहिंरचहिंतेसेतुबनाइ १॥

सैलबिसाल।आनकपिदेहीं कंदुकइवनलनीलतेलेहीं
देखिसेतुअतिसुंदररचना बिहँसिकृपानिधिबोलेबचना
परमरम्यउतमयहधरनी। महिमाअमितजाइनहिंबरनी
करिहौंइहाँसंभुथापना॥ मोरेहृदयपरमकलपना
सुनिकपीसबहुदूतपठाए मुनिबरसकलबोलिलेआए
लिंगथापिबिधिवतकरिपूजा शिवसमानप्रियमोहिनदूजा
शिवद्रोहीममभगतकहावा सोनरसपनेहुमोहिनपावा
शंकरबिमुखभगतिचहैमोरी सोनारकीमूढमतिथोरी॥

दो॰शंकरप्रियममद्रोहीशिवद्रोहीममदास।
तेनरकरहिंकल्पभरिघोरनरकमहुंबास २।

जेरामेश्वरदरसनकरहीं तेतनुतजिममलोकसिधरहीं।
जोगंगाजलआनिचढाइहि सोसायुभक्तिनरपाइहि॥
होइअकामजोछलतजिसेइहि भक्तिमोरितेहिशंकरदेइहि
ममकृतसेतुजोदरसनकरही सोबिनुश्रमभवसागरतरही
रामबचनसबकेजियभाए। मुनिबरनिजनिजआश्रमआए
गिरिजारघुपतिकैयहरीती संततकरहिंप्रनतपरप्रीती
बांधासेतुनीलनलनागर रामकृपाजसभयउउजागर।
बूडहिंआनहिंबोरहिंजेही भएउपलबोहितसमतेही
महिमायहजलनिधिकैबरनी पाहनगुननकपिहकैकरनी

दो॰श्रीरघुबीरप्रतापते सिंधुतरेपाषान ३॥

यहनगोकाबि उक्तिज्ञानम् अम्र शिवरूकोँ कुलगुरुअग्र प्रभुकेहवा जानिरावन बिनैप्रवृद्धि ईश्वबान साधुन औ कै पार कै कै बलै

× × × × ×

फलरत्ना
कायिनकी
रेयाकरि
भातहौं
पाजातु
जलपर
दबरन
नपयस्र
तंबहुतेगण
सेनाधिक्य

दिमवन
की प्रतापई
प्रकुलोनेबिच
रामलेनाकी
कुलनाइना
कोतेजाय
रानलौंसमा

री
ग. लें
८

चारकेंतहाँ
माकुलतातें
लोमुखतें
रसोंनाम
बननिधि

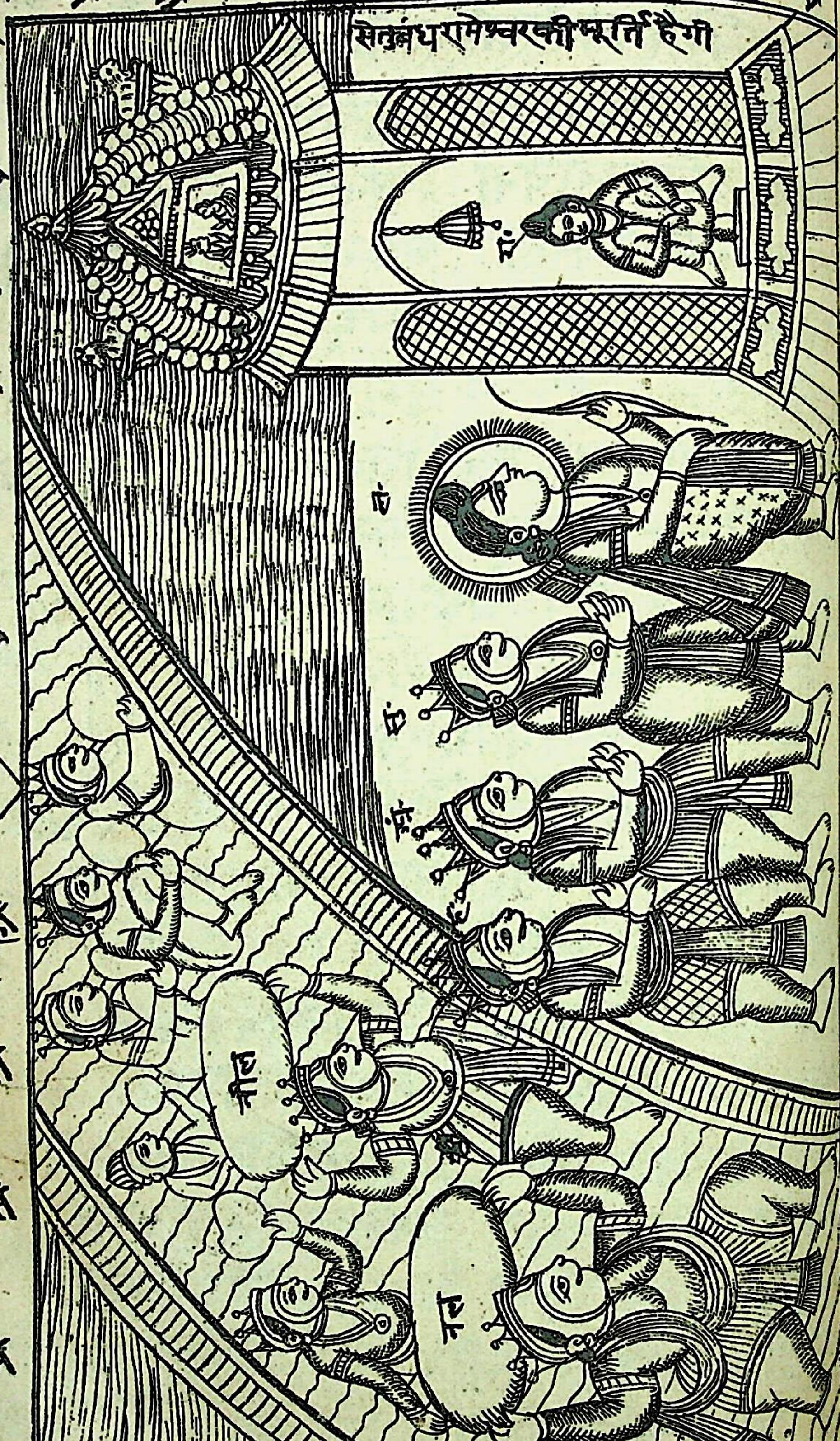
सेतुबंध रामेश्वरकी मूर्ति हैगी

प्राद तैल
भयो॥ ५॥
रामराम राम
राम राम राम
रामराम राम
राम राम

इप्रकारकीनी
स्वामीपक्तिसे
पद्धरानाकाग्रा
संयुक्त ॥
निज्याकुश्र
नाग्रब्रक्ते
कौननता ६
हों॰ ॥
तत्रमंदिरग
त्रामदेसिवपु
भुपमुताका
दंमग्रवनारि
श्रीमधुकैटभ

तेमतिमंदजेरामतजिभजहिंजाइप्रभुआन ३

बांधिसेतुअतिसुदृढ़बनावा। देखिकृपानिधिकेमनभावा॥
चलीसेनकछुबरनिनजाई। गर्जहिंमर्कटभटसमुदाई॥
सेतुबंधढिगचढ़िरघुराई। चितवकृपालसिंधुबहुताई॥
देषनकहुंप्रभुकरुनाकंदा। प्रगटभएसबजलचरबृंदा॥
मकरनक्रनानाझषब्याला। सतयोजनतनपरमबिसाला॥
ऐसेहिएकतिन्हहिंजेषाहीं। एकनकेडरतेपिडेराहीं॥
प्रभुहिबिलोकहिंटरहिंनटारे। मनहरषितसबभएसुखारे॥
तिनकीओटनदेषियबारी। मगनभएहरिरूपनिहारी॥
चलाकटकुप्रभुआयसुपाई। कोकहिसककपिदलबिपुलाई॥

दो॰ सेतुबंधभइभीरअतिकपिनभपंथउड़ाहिं॥
अपरजलचरन्हऊपरचढ़िचढ़िपारहिंजाहिं॥४॥

असकौतुकबिलोकिदोउभाई। बिहंसिचलेकृपालरघुराई॥
सेनसहितउतरेरघुबीरा। कहिनजाइकपिजूथपभीरा॥
सिंधुपारप्रभुडेराकीन्हा। सकलकपिन्हकहुंआयसुदीन्हा॥
षाहुजाइफलमूलसुहाए। सुनतभालुकपिजहंतहंधाए॥
सबतरुफरेरामहितलागी। रितुअरुकुरितुकालगतित्यागी॥
षाहिंमधुरफलबिटपहलावहिं। लंकासन्मुखसिखरचलावहिं॥
जहंकहुंफिरतनिसाचरपावहिं। घेरिसकलबहुनाचनचावहिं॥
दसननकाटिनासिकाकाना। कहिप्रभुसुजसदेहितबजाना॥
जिनकरनासाकाननिपाता। तिन्हरावनहिंकहीसबबाता॥
सुनतश्रवनबारिधिबंधाना। दसमुषबोलिउठाअकुलाना॥

ग्रादिकोमारी
सबकहींकोप
त्यागसीतादि
ग्रापोंकत्मान
कीयरुकरोपी
गीतिकीरघ्या
ग्रषमसुख
गगनहिंबधन
लहंरमीग्राप
नीप्रभुता

यी॰
रा॰ ल॰
५

श्रीश्रागेजाति
महेशसुनगामंदे
हि श्रीबननादि
रुभाजाइप्र
दि कौनिबा
कैलागा
गहैंकेमुगा
गोनिगीति

ष्मके
श्रीरघुना
इनेतप
कीबरधर
धी बाकीरव
दुल्लकरतम
सुकायकुन
डरादेभनु
कंपकीमौ
श्रीरहकीयी
कुकलपगकै
महाब्रतंकोषा
तंबरमीग्राकी
दुर्लीनिकाया
भयोत्नाकोवि
बाकोसुनदल

बिनुप्रहदबिंब बालोप्रति रैमनसंबंधो गरहमोसु कौहेतउ कैउभिसब नथागप्रभु प्रतिबिहि सुरविंदमा नकोमंत्रबो धनहतमत हैंसहतबेष सयनसुर सहस्र

प्रतिबिंबतें सुबलबाणी का प्रतिपल है अग्न्याके आधीनमन सुहापाप्रकार तैसाहैकोति

दो॰ सा॰ लं॰ ९

जहांसकहीं अहवचहरि कैंतोचंचल लाप्रहचाह रहिअमनमें यहैसांहिस्याम ताभासतुहै रसबकाबिड किगानबपुन:

बचनपरमहितसुनतकठोरे। सुनहिंजेकहहिंतेनरप्रभुथो
प्रथमबसीठिपठवसुननीती। सीतादेइकरहुपुनिप्रीती॥

दो॰ नारिपाइफिरिजाहिंजौंतौनबढ़ाइयरारि ॥
नाहितसन्मुखसमरमहँनाथकरियहठमारि ९

यहमततौमानहुप्रभुमोरा। उभयप्रकारसुजसजगतोरा॥
सुतसनकहदसकंठरिसाई। असमतिसठकेहितोहिसि
अबहींतेउरसंसयहोई ॥ बेनुमूलसुतभयउघमोई॥
सुनिपितुगिरापरुषअतिघोरा। चलाभवनकहिबचनकठो
हितमततोहिनलागैकैसें। कालबिबसकहुँभेषजजैसें
संध्यासमयजानिदससीसा। भवनचलेउनिरखतभुजबीसा
लंकाशिखरउपरआगारा। अतिबिचित्रतहँहोहिअषा
बैठजाइतेहिंमंदिररावन। लागेकिन्नरगुनगनगावन॥
बाजहिंतालपषावजबीना। नृत्यकरहिंअपछराप्रबीन

दो॰ सुनासीरसतसरिससोसंततकरइबिलास।
परमप्रबलरिपुसीसपरतदपिसोचनहिंत्रास १०

इहांसुबेलसैलरघुबीरा। उतरेसेनसहितअतिभीरा
सिखरएकउतंगअतिदेखी। परमरम्यसमसुभ्रबिशेषी॥
तहाँतरुकिसलयसुमनसुहाए। लछमनरचिनिजहाथडसाए
तापरमृदुलरुचिरमृगछाला। तेहिंआसनआसीनकृपाल
प्रभुकृतसीसकपीसउछंगा। बामदहिनदिसिचापनिषंगा॥
दुहुंकरकमलसुधारतबाना। कहलंकेसमंत्रलगिकाना॥

प्रभुमेसुवन रावणाष्वर्य दर्पितहोविमी षणपष्णकु सुयक्षकतांहके रामिनिरुपक इत्यादिकह्यो।

× × ×

बड़भागीअंगदहनुमाना। चरनकमलचापतबिधिनाना
प्रभुपाछेंलछिमनबीरासन कटिनिषंगकरबानसरासन

दो॰ एहिबिधिकृपारूपगुनधामरामआसीन।
धन्यतेनरएहिंध्यानजेरहतसदालयलीन १॥
पूरबदिसाबिलोकिप्रभुदेखाउदितमयंक॥
कहतसबहिदेखहुशशिहिमृगपतिसरिसअसंक

पूरबदिशिगिरिगुहानिवासी परमप्रतापतेजबलरासी॥
मत्तनागतमकुंभबिदारी॥ ससिकेसरीगगनबनचारी
बिथुरेनभमुकुताहलतारा निसिसुंदरीकेरसिंगारा॥
कहप्रभुशशिमहुँमेचकताई कहहुकाहनिजनिजमतिभाई
कहसुग्रीवसुनहुरघुराई। शशिमहँप्रगटभूमिकैझाँई
मारेउराहुससिहिकहकोई उरमेंपरीस्यामतासोई॥
कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा सारभागससिकरहरलीन्हा
छिद्रसोप्रगटइंदुउरमाहीं। तेहिमगदेखियनभपरिछाहीं
प्रभुकहगरलबंधुशशिकेरा अतिप्रियनिजउरदीन्हबसेरा
बिषसंयुतकरनिकरपसारी जारतबिरहवंतनरनारी॥

दो॰ कहहनुमंतसुनहुप्रभुससितुम्हारप्रियदास
तवमूरतिबिधुउरबसतसोइस्यामताभास॥
पवनतनयकेबचनसुनिबिहँसेरामसुजान १॥
दच्छिनदिशिअवलोकिप्रभुबोलेकृपानिधान १२

देखुबिभीषनदच्छिनआसा। घनघमंडदामिनीबिलासा॥

तवप्रभु [illegible] चकोछन कियानहीं [illegible] छन [illegible] प्रभु [illegible] नम्हा [illegible] चकोसेकर [illegible] प्रकार [illegible] तवगुन: मतिनि [illegible] प्रभुसम [illegible] बिषम क [illegible] हाँस [illegible] त:जावनप्रभु [illegible] मतिक [illegible] उपदेश [illegible] [illegible]

टी॰
रा॰ लं॰
९

[illegible] चवनउपदेश हितनहीं [illegible] नहींजड़ [illegible] प्रयोग है [illegible] तेहिजानब॥

९८

मधुरमधुरगरजैघनघोरा। होइबृष्टिजनिउपलकठो
कहतबिभीषनसुनहुकृपाला नाइँतनहोइनबारिदमाला
लंकासिखरऊपरआगारा। तहँदसकंधरदेखअखा
छत्रमेघडंबरसिरधारी॥ सोइजनुजलदघटअति
मंदोदरीश्रवनताटंका * ॥ सोइप्रभुजनुदामिनीदमं
बाजहिंतालमृदंगअनूपा। सोइरवमधुरसुनहुसुरभू
प्रभुमुसुकानसमुझिअभिमाना चापचढ़ाइबानसंधाना॥

दो॰ छत्रमुकुटताटंकतबहतेएकहीबान * ॥
सबकेदेखतमहिपरेमरमनकोऊजान ** ॥
असकौतुककरिरामसरप्रबिसेआइनिषंग॥
रावनसभाससंकसबदेखिमहारसभंग १३॥

टी॰
रा॰ लं॰
१०

कंपनभूमिनमरुतबिसेषा अस्त्रशस्त्रकछुनयननदे
सोचहिंसबनिजहृदयमझारी असगुनभएउभयंकरभा
दसमुखदेखिसभाभयपाई बिहँसिबचनकहजुगुति
सिरोगिरेसंततसुभजाही॥ मुकुटपरेकसअसगुनता
सैनकरहुनिजनिजगृहजाई गवनेभवनसकलसिरना
मंदोदरीसोचउरबसेऊ॥ जबतेंश्रवनपूरमहिखसे
सजलनयनकहजुगकरजोरी सुनहुप्रानपतिबिनतीमो
कंतरामबिरोधपरिहरहू। जानिमनुजजनिहठमनध

दो॰ बिश्वरूपरघुबंशमनिकरहुबचनबिश्वास
लोककल्पनाबेदकरअंगअंगप्रतिजासु १४॥

पदपातालसीसअजधामा अपरलोकअंगअंगबिश्रामा
भ्रकुटिबिलासभयंकरकाला नयनदिवाकरकचघनमाला
जासुघ्रानअस्विनीकुमारा निसिअरुदिवसनिमेषअपारा
श्रवनदिसादसबेदबखानी मारुतस्वासनिगमनिजबानी
अधरलोभजमदसनकराला मायाहासबाहुदिगपाला
आननअनलअंबुपतिजीहा उतपतिपालनप्रलयसमीहा
रोमराजिअष्टादसभारा ॥ अस्थिसैलसरितानसजारा
उदरउदधिअधगोजातना जगमयप्रभुकाबहुकलपना

दो· अहंकारसिवबुद्धिअजमनससिचित्तमहान
मनुजबासस चराचररूपरामभगवान १ ॥
असबिचारिसुनुप्रानपतिप्रभुसनबैरबिहाइ ॥
प्रीतिकरहुरघुबीरपदममअहिबातनजाइ १५

बिहसानारिबचनसुनिकाना अहोमोहमहिमाबलवाना
नारिसुभाउसत्यकबिकहहीं अवगुनआठसदाउररहहीं
साहसअनृतचपलतामाया भयअबिबेकअसौचअदाया
रिपुकररूपसकलतैंगावा अतिबिसालभयमोहिसुनावा
सोसबप्रियासहजबसमोरे समुझिपराप्रसादअबतोरे
जानेउप्रियातोरिचतुराई एहिबिधिकहेउमोरिप्रभुताई
तवबतकहीगूढमृगलोचनि समुझतसुखदसुनतभयमोचनि
मंदोदरिमनमहंअसठएऊ पियहिकालबसमतिभ्रमभएऊ

दो· एहिबिधिकरतबिनोदबहुप्रातप्रगटदसकंध

उत्तमो धृत बालि कै मंत्रनारि चौ॰॥ बसराति बसतामु कै परम गरुआई हैं मानसा ३० दो॰ ४ सो॰ ११ चौ॰ पंक्ति ४

सहजअसंकलंकपतिसभागएउमदअंध॥
सो॰फूलैफलैनबेतजदपिसुधाबरषहिंजलद
मूरखहृदयनचेतजोगुरुमिलहिंबिरंचिशिव

इहाँप्रातजागेरघुराई + ॥ पूछामतसबसचिवबुला
कहहुबेगिकाकरियउपाई जामवंतकहपदसिरुना
सुनसर्बज्ञसकलउरबासी बुधिबलतेजधर्मगुनरासी
मंत्रकहौंनिजमतिअनुसारा दूतपठाइयबालिकुमारा
नीकमंत्रसबकेउरमाना॥ अंगदसनकहकृपानिधा
बालितनयबुधिबलगुनधामा लंकाजाहुतातममकामा
बहुतबुझायतुमहिंकाकहऊं परमचतुरमैंजानतअहऊं
काजहमारतासुहितहोई। रिपुसनकरेहुबतकहीसो

सो॰प्रभुआज्ञाधरिसीसचरनबंदिअंगदउठेउ॥
सोईगुनसागरईसरामकृपाजापरकरहु॥ + ॥
स्वयंसिद्धसबकाजनाथमोहिआदरदियउ॥
असबिचारजुबराजतनपुलकितहरषितहियउ

बंदिचरनउरधरिप्रभुताई अंगदचलेउसबहिसिरु
प्रभुप्रतापउरसहजअसंका रनबाँकुराबालिसुतबं
पुरपैठतरावनकरबेटा॥ खेलतरहासोहोइगैभेटा + ॥
बातहिबातकर्षबढ़िआई जुगलअतुलबलपुनित
तेहिअंगदकहुँलातउठाई गहिपदपटकेउभूमिभवाँ
निसिचरनिकरदेषिभटभारी जहँतहँचलेनसकहिंपुका

अस्थान नहीं त बाल्मी मह अंगद कह होनि धन त खबरी अंग कैसा भामोगा गहि उबेकै ऐसी रावन

टी॰ रा॰ लं॰ ९२

बंध कियतातें पद अंगद कह अबलालि बिबंला अंगी रावनसा पकपापका तेहि अंकरुन कप्रभावतें अंगदपुत्र पठ्नां संदेह नकरव अरु अंगसबउर्हि कहरावनको पुत्रमारिसमा जीत चारों धर्म राजनके मुकुट आश्रय + + +

एकएकसनमरमनकहहीं। समुझितासुबधचुपकररहहीं
भयउकोलाहलनगरमझारी आवाकपिलंकाजेहिंजारी।
अबधौंकाहकरिहिकरतारा अतिसभीतसबकरहिंबिचारा
बिनुपूछेंमगुदेहिंदिखाई ॥ जेहिबिलोकिसोइजाइसुखाई

दो·गयउसभादरबारतबसुमररामपदकंज + ॥
सिंहठवनिइतउतचितैधीरबीरबलपुंज १८

तुरतनिशाचरएकपठावा समाचाररावनहिंजनावा ॥
सुनतबिहँसिबोलादससीसा आनेहुबोलिकहाँकरकीसा
आयसुपाइदूत[illegible]हुधाये। कपिकुंजरहिबोलिलैआए
अंगददीखदसाननबैसा। सहतप्रानकज्जलगिरिजैसा
भुजाबिटपसिरशृंगसमाना रोमावलीलताजनुनाना॥
मुखनासिकानयनअरुकाना। गिरिकंदराखोहअनुमाना।
गयउसभामननेकुनमुरा। बालितनयअतिबलबाँकुरा
उठेसभासदकपिकहँदेषी रावनउरभाक्रोधबिशेषी।

दो·जथामत्तगजजूथमहुंपंचाननचलिजाइ॥
रामप्रतापसुमरमनबैठसभासिरुनाइ १९॥

कहदसकंठकवनतेंबंदर मैंरघुबीरदूतदसकंधर॥
ममजनकहितोहिरहीमिताई तवहितकारनआएउँभाई।
उतमकुलपुलस्त्यकरनाती शिवबिरंचिपूजेहुबहुभांती
बरपाएउकीन्हेउसबकाजा जीतेहुलोकपालसबराजा
नृपअभिमानमोहबसकिंवा हरिआनेहुसीताजगदंबा

चलाइप्रभु
निकाइप्राव
नभाग्रह
कुंडपावक
कारगयो
नहँमिटदी
कहुप्रलाप
तेंबकातस
कृपायोपंतु
भैकोनीति
कबसीताह
नभाग्रहि
दिमआधिक
बढ़ाइबैठत
मयाहाँकी
अंगदप्रति
पूछासब

टी·
रा·लं·
१३

बनांतभागि
पूर्वकथा

॥ ३८ ॥

अबसुभकहासुनहुतुममोरा सबअपराधछमिहिप्रभुतोरा
दसनगहहुतृनकंठकुठारी परिजनसहितसंगनिजनारी
सादरजनककसुताकरिआगे॥ एहिबिधचलहुसकलभयत्या

दो॰ प्रनतपालरघुबंसमनित्राहित्राहिअबमोहि।
आरतगिरासुनतप्रभुअभयकरहिंगेतोहि।२०॥

रेकपिपोतनबोलुसंभारी॥ मूढनजानेहिमोहिसुरारी
कहुनिजनामजनककरभाई केहिनातेमानियेमिताई॥
अंगदनामबालिकरबेटा॥ तासोंकबहुंभईहीभेटा॥
अंगदबचनसुनतसकुचाना रहाबालिबानरमैंजाना॥
अंगदतुहीबालिकरबालक उपजेहुबंसअनलकुलघालक
गर्भनगएउब्यर्थतुमजाएहु निजमुखतापससूतकहाएहु
अबकहुकुसलबालिकहंअहई बिहंसिबचनतबअंगदकहई
दिनदसगएबालिपहंजाई॥ बूझेहुकुसलसखाउरलाई॥
रामबिरोधकुसलजसहोई सोसबतोहिसुनाइहिसोई॥
सुनसठभेदहोइमनताके। श्रीरघुबीरहृदयनहिंजाके

दो॰ हमकुलघालकसत्यतुमकुलपालकदससीस
अंधौबधिरनअसकहहिंनयनकाननवबीस २१

शिवबिरंचिसुरमुनिसमुदाई चाहतजासुचरनसेवकाई।
तासुदूतहैहमकुलबोरा असहिमतिउरबिहरनतोरा
सुनिकठोरबानीकपिकेरी। कहतदसाननयननतेरी।
खलतवबचनकठिनसबसहऊं नीतिधर्ममैंजानतअहऊं॥

कहकपिधर्मसीलतातोरी हमहुसुनीकृतपरत्रियचोरी
देखीनयनदूतरखवारी ॥ बूडिनमरहुधर्मव्रतधारी ॥
काननाकबिनुभगिनिनिहारी छमाकीन्हतुम्हधर्मबिचारी
धर्मसीलतातवजगगजा ॥ पावाहरसहमहुबड़भागी

दो॰ जानेजसमसिजगऽजंतुकपिसठबिलोकुममबाहु
लोकपालबलबिपुलससिग्रसनहेतुसबराहु ॥
पुनिनभसरममकरनिकरकमलाहिपरकरिबास
सोभनभएउमरालइवसंभुसहितकैलास । २२ ॥

तुम्हरेकटकमांझसुनुअंगद मोसनभिरहिकवनजोधाबद
तवप्रभुनारिबिरहबलहीना अनुजतासुदुषदुषीमलीना
तुमसुग्रीवकूलद्रुमरोऊ ॥ अनुजहमारभीरुअतिसोऊ
जामवंतमंत्रीअतिबूढ़ा । सोकिहोइअबसमरारूढ़ा
सिल्पिकर्मजानहिंनलनीला हैकपिएकमहाबलसीला
आवाप्रथमनगरजेहिंजारा सुनतबचनकहबालिकुमारा
सत्यबचनकहुनिसिचरनाहा सोचेहुकीसकीन्हपुरदाहा
रावननगरअलपकपिदहई सुनिअसबचनसत्यकोकहई
जोअतिसुभटसराहहुरावन सोसुग्रीवकेरलघुधावन
चलैबहुतसोबीरनहोई । पठवाषबरलेनहमसोई ॥

दो॰ सत्यनगरकपिजारेउबिनप्रभुआयसुपाइ
फिरनगयोसुग्रीवपहँतेहिभयरहालुकाय ।
सत्यकहेउदसकंठसबमोहिनसुनेकछुकोह

कोउनृमारेकरकश्रमनोसनलरनजोसोह ॥
प्रीतिबिरोधसमानसन करियनीतिअसआहि।
जौंमृगपतिबधमेडुकनि भलकिकहैकोउताहि
जद्यपिलघुतारामकहुं तोहिबधेबड़दोष × ॥
तदपिकठिनदसकंठसुन छत्रिजातिकररोष ॥
बक्रउक्तिधनुबचनसर हृदयदहेउरिपुकीस ॥
प्रतिउत्तरसड़सिनमनहु काढतभटदससीस ॥
हंसिबोलेउदससीसतब कपिकरबड़गुनएक॥
जोप्रतिपालैतासुहित करैउपायअनेक २३ ॥

धन्यकीसजोनिजप्रभुकाजा जहंतहंनाचैपरिहरलाजा॥
नाचकूदकरिलोगरिझाई ॥ पतिहितकरैधरमनिपुनाई
अंगदस्वामिभक्ततवजाती प्रभुगुनकसनकहसिएहिभां
मैंगुनगाहकपरमसुजाना तवकटुरटनिकरैंनहिकान
कहकपितवगुनगाहकताई सत्यपवनसुतमोहिसुनाई
बनबिधंसिसुतबधपुरजारा तदपिनतेहिकछुकृतअपका
सोइबिचारतवप्रकृतिसोहाई दसकंधरमैंकीन्हिढिठाई॥
देखेउंआइजोकछुकपिभाषा तुमरेलाजनरोषनमाषा॥
जौंअसमतिपितुखाएउकीसा कहिअसबचनहसादससी
पितहिखाइखातेउंपुनितोही अबहींसमुझपराकछुमोही
बालिबिमलजसभाजनजानी हतौंनतोहिअधमअभिमानी
कहुरावनरावनजगकेते। मैंनिजश्रवनसुनेसुनजेते

बलिहिजितनएकगयउपताला। राषेउबांधिसिसुनहयसाला
खेलहिंबालकमारहिंजाई दयालागिबलिदीन्हछुड़ाई
एकबहोरिसहसभुजदेषा धाइधराजिमिजंतुबिशेषा
कौतुकलागिभवनलैआवा सोपुलस्त्यमुनिजाइछुड़ावा

दो.एककहतमोहिसकुचअतिरहाबालिकीकांष
इन्हमहंरावनतैंकवनसत्यबदहितजिमाष २४

सुनसठसोहीरावनबलसीला। हरगिरिजानजासुभुजलीला॥
जानउमापतिजासुसुराई। पूजेहिजेहिसिरसुमनचढ़ाई।
सिरसरोजनिजकरन्हिउतारी पूजेउंअमितबारत्रिपुरारी॥
भुजबिक्रमजानहिंदिगपाला सठजिन्हकेअजहुंउरसाला
जानहिंदिग्गजउरकठिनाई। जबजबभिरउंजाइबरिआई
जिन्हकेदसनकरालनफूटे। उरलागतमूलकइवटूटे॥
जासुचलतडोलतिइमिधरनी चढ़तमत्तगजजिमिलघुतरनी
सोइरावनजगबिदितप्रतापी सुनेहिनश्रवनअलीकप्रलापी

दो.तेहिरावनकहंलघुकहसिनरकरकरसिबषान
रेकपिबर्बरषर्बषलअबजानातवज्ञान।२५।

सुनिअंगदसकोपकहिबानी बोलुसंभारिअधमअभिमानी
सहसबाहुभुजगहनअपारा दहनअनलसमजासुकुठारा
जासुपरसुसागरषरधारा बूड़ेनृपअगनितबहुबारा
तासुगर्बजेहिदेषतभागा सोनरक्योंदससीसअभागा
राममनुजकसरेसठबंगा धन्वीकामनदीपुनिगंगा॥

टी· रा· लं·
२८

पसुसुरधेनुकल्पतरुरूषा। अन्नदानअरुरसपीयूषा
बैनतेयखगअहिसहसानन। चिंतामनिपुनिउपलदसा
सुनिमतिमंदलोकबैकुंठा। लाभकिरघुपतिभक्तिअ

दो· सैनसहिततवमानमथि बनउजारिपुरजारि।
कसरेसठहनुमानकपिगयउजोतवसुतमारि २५

सुनुरावनपरिहरिचतुराई। भजसिनकृपासिंधुरघु
जौंखलभयसिरामकरद्रोही। ब्रह्मरुद्रसकराषिनतो
मूढबृथाजनिमारसिगाला। रामबयरअसहोइहिहाल
तवसिरनिकरकपिन्हकेआगे। परिहहिंधरनिरामसरला
तेतवसिरकंदुकसमनाना। खेलिहहिंभालुकीसचौगा
जबहिंसमरकोपिहिरघुनायक। छुटिहहिंअतिकरालबहु
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा। असबिचारभजुरामउदा
सुनतबचनरावनपरजरा॥ जरतमहानलघृतजनुप

दो· कुंभकरनअसबंधुममसुतप्रसिद्धसक्रारि।
मोरपराक्रमनहिंसुनेहिजितेउचराचरझारि २६

सठसाखामृगजोरिसहाई। बांधासिंधुइहैप्रभुताई
नाघहिंखगअनेकबारीसा। सूरनहोहिंतेसुनुसबकी
ममभुजसागरबलजलपूरा। जहँबूडेबहुसुरनरसूरा
बीसपयोधिअगाधअपारा। कोअसबीरजोपाइहिपा
दिगपालनमैंनीरभरावा। भूपसुजसखलमोहिसु
जौंपैसमरसुभटतवनाथा। पुनिपुनिकहसिजासुगुन

वसीठपठवतकेहिकाजा। रिपुसनप्रीतिकरतनहिंलाजा।
रगिरिमथननिरखुममबाहू। पुनिसठकपिनिजप्रभुहिसराहू।

दो.सूरकवनरावनसरिसस्वकरकाटिजेहिसीस।
हुतेअनलअतिहरषबहुबारिसाषिगौरीस २८।

रतबिलोकेउँजबहिकपाला। बिधिकेलिषेअंकनिजभाला।
रकेकरआपनबधबांची। हंसेउँजानिबिधिगिराअसाँची।
सोउमनसमुझित्रासनहिमोरे। लिषाबिरंचिजरठमतिभोरे।
आनबीरबलसठममआगे। पुनिपुनिकहसिलाजपतित्यागे।
कहअंगदसलज्जजगमाहीं। रावनतोहिसमानकोउनाहीं।
लाजवंततवसहजसुभाऊ। निजमुखनिजगुनकहसिनकाऊ।
सिरअरुसैलकथाचितरही। तातेंबारबीसतेंकहीं॥
सोभुजबलराखेउउरघाली। जीतेहुसहसबाहुबलबाली।
नुमतिमंददेहिअबपूरा। काटेसीसकिहोइअसूरा॥
इंद्रजालिकहुकहिअनबीरा। काटइनिजकरसकलसरीरा।

दो.जरहिंपतंगमोहबसभारबहहिंखरबृंद॥
तेनहिंसूरकहावहिंसमुझिदेखुमतिमंद २९।

अबजनिबतबढ़ावखलकरही। सुनुममबचनमानपरिहरही।
समुखमैंनबसीठीआयउं। असबिचारिरघुबीरपठायउं।
बारबारअसकहइकृपाला। नहिंगजारिजसुबधेसृकाला।
मनमहुंसमुझिबचनप्रभुकेरे। सहेउँकठोरबचनसठतेरे॥
नाहितकरिमुखभंजनतोरा। लैजातेउँसीतहिंबरजोरा॥

दो: स: लं: २९

जानेतवबलअधमसुरारी। सूनेहरिआनेहिपरनारी॥
तैंनिसिचरपतिगर्बबहूता मैंरघुपतिसेवककरदूता॥
जौंनरामअपमानहिंडरऊं। तोहिदेषतअसकौतुककरऊं

दो॰ तोहिपटकिमहिसेनहतिचौपटकरितवगाऊं
तवजुवतीनसमेतसठजनकसुतहिलैजाऊं॥३०॥

जौंअसकरौंतदपिनबड़ाई। मुएहिबधेंनहिंकछुमनुसाई॥
कौलकामबसकृपनबिमूढा अतिदरिद्रअजसीअतिबूढा
सदारोगबससंततक्रोधी। बिष्नुबिमुषश्रुतिसंतबिरोधी
तनुपोषकनिंदकअघषानी जीवतशवसमचौदहप्रानी
असबिचारिषलबधौंनतोही अबजनिरिसउपजावसिमोही
सुनिसकोपकहनिशिचरनाथा अधरदसनडसिमींजतमाथा
रेकपिअधममरनअबचहसी छोटेबदनबातबड़िकहसी
कटुजल्पसिजड़कपिबलजाके बलप्रतापबुधितेजनताके

दो॰ अगुनअमानजानितेहिदीन्हपितावनबास।
सोदुषअरुजुवतीबिरहपुनिनिसिदिनममत्रास।
जिनकेबलकरगर्बतोहिअइसेमनुजअनेक॥
षाहिंनिसाचरदिवसनिसिमूढसमुझुतजिटेक

जबतेहिंकीन्हिरामकैनिंदा क्रोधवंतअतिभयउकपिंदा
हरिहरनिंदासुनइजोकाना होइपापगोघातसमाना
कटकटानकपिकुंजरभारी दुहुंभुजदंडतमकिमहिमारी
डोलतधरनीसभासदषसे चलेभाजभयमारुतग्रसे।

गिरतसंभारिउठादसकंधर। भूतलपरेमुकुटअतिसुंदर
कछुतेहिलैनिजसिरन्हसँवारे कछुअंगदप्रभुपासपवारे
आवतमुकुटदेषिकपिभागे दिनहींलूकपरनबिधिलागे
कीरावनकरिकोपचलाए। कुलिसचारिआवतअतिधाए
कहप्रभुहंसिजनिहृदयडेराहू लूकनअसनिकेतुनहिंराहू
एकिरीटदसकंधरकेरे॥ आवतबालितनयकेप्रेरे॥

दो॰ तरकिपवनसुतकरगहेउआनिधरेप्रभुपास
कौतुकदेषहिंभालुकपिदिनकरसरिसप्रकास
उहांसकोपदसाननसबसनकहतरिसाय॥
धरहुकपिहिधरिमारहुसुनिअंगदमुसुकाइ३२

एहिबिधिबेगिसुभटसबधावहु षाहुभालुकपिजहँजहँपावहु
मरकटहीनकरहुमहिजाई। जियतधरहुतापसदोउभाई
पुनिसकोपबोलेउजुबराजा गालबजावततोहिनलाजा
मरुगरकाटिनिलजकुलघाती बलबिलोकिबिहरतिनहिंछाती
रेत्रियचोरकुमारगगामी। षलमलराशिमंदमतिकामी
सन्यपातजल्पसिदुर्बादा भयसिकालबसषलमनुजादा
याकोफलपावहुगेआगे बानरभालुचपेटन्हलागे॥
राममनुजबोलसिअसबानी गिरहिंनतवरसनाअभिमानी
गिरिहहिंरसनासंसयनाहीं सिरन्हिसमेतसमरमहिमाहीं

दो॰ सोनरक्योंदसकंधबालिबध्योजेहिएकसर
बीसहुलोचनअंधधिगतवजन्मकुजातिजड़॥

तव सोनित की प्यास तृषित राम सायक निकर ॥
तजौं तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ३३

मैं तव दसन तोरिबे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक
अस रिस होत दसौं मुख तोरौं । लंका गहि समुद्र महँ बोरौं ॥
गूलर फल समान तव लंका । बसहु मध्य तुम जंतु असंका
मैं बानर फल खात न बारा ॥ आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
जुगति सुनत रावन मुसकाई । मूढ़ सीष कहँ बहुत झुठाई ॥
बालि न कबहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह तैं भएसि लबा
साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा । जौं न उपारहुँ तव दस जीहा ॥
समुझि राम प्रताप कपि कोपा । सभा माँझ पन करि पद रोपा ॥
जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कहँ दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीस
इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । पद न टरै बैठहिं सिरु नाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती । टरहि न कीस चरन एहि भांती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी

दो॰ कोटिन मेघनाद सम सुभट उठे हरषाइ ॥
झपटहिं टरै न कपि चरन पुनि बैठहिं सिरु नाइ ॥
भूमि न छाडत कपि चरन देषत रिपु मद भाग ॥
कोटि बिघ्न तें संत कर मन जिमि नीति न त्याग ३४

कपि बल देषि सकल हिय हारे । उठा आपु कपि के परचारे ॥

गहतचरनकहबालिकुमारा ममपदगहेनतोरउबारा॥
गहसिनरामचरनसठजाई। सुनतफिरामनअतिसकुचाई
भएउतेजहतश्रीसबगई॥ मध्यदिवसजिमिससिसोहई
सिंहासनबैठेउसिरुनाई। मानहुंसंपतिसकलगँवाई
जगदात्माप्रानपतिरामा। तासुबिमुखकिमिलहबिश्रामा
उमारामकीभृकुटिबिलासा। होइबिश्वपुनिपावैनासा॥
तृनतेकुलिसकुलिसतृनकरई तासुदूतपनकहुकिमिटरई
पुनिकपिकहीनीतिबिधिनाना माननताहिकालनियराना।
रिपुमदमथिप्रभुसुजससुनायो यहकहिचल्योबालिनृपजायो
हतौंनखेतखेलाइखेलाई २॥ तोहिअबहिकाकरौंबड़ाई
प्रथमहितासुतनयकपिमारा सोसुनिरावनभएउदुखारा॥
जातुधानअंगदपनदेखी॥ भयब्याकुलसबभयेबिशेषी

दो॰ रिपुबलधरषिहरषिकपिबालितनयबलपुंज
पुलकसरीरनयनजलगहेरामपदकंज २॥२॥
सांझिजानिदसकंधरभवनगएबिलखाइ २॥
मंदोदरीरावनहिबहुरिकहासमुझाइ॥३५॥

कंतसमुझिमनतजहुकुमतिही सोहनसमरतुमहिंरघुपतिही
रामानुजलघुरेखखिचाई। सोउनहिनाघेउअसिमनुसाई
पियतुमताहिजितबसंग्रामा जाकेदूतकेरयहकामा २॥
कौतुकसिंधुनाघितवलंका आएउकपिकेहरीनिसंका
रखवारेहतिबिपिनउजारा॥ देखततोहिअछतेहिमारा॥

टी॰
स॰ लं॰
२८

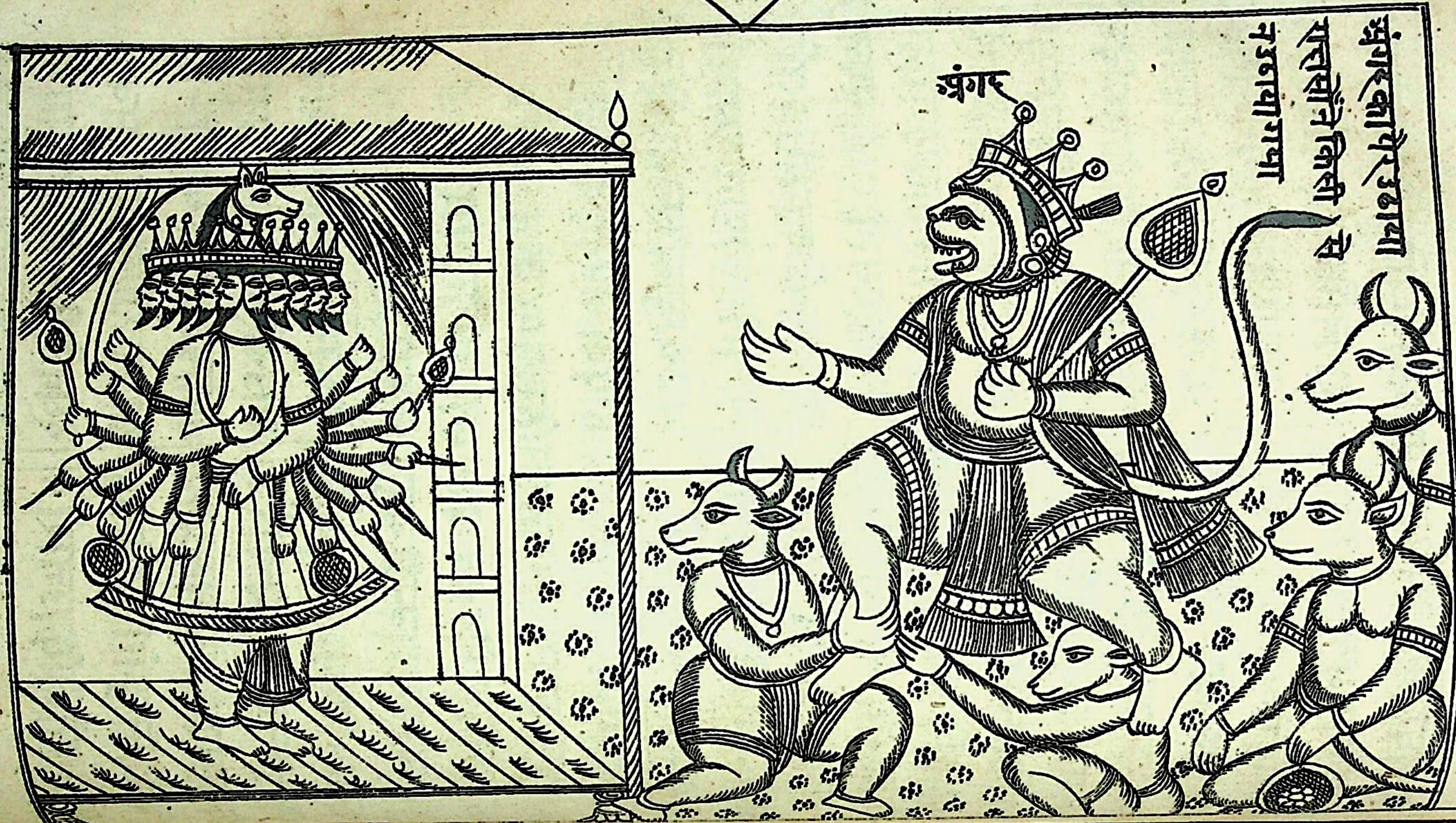

अंगद का पैर उठाया
राक्षसौं ने किसी से
न उठाया गया

जारिसकलपुरकीन्हेसिछारा। कहाँरहाबलगर्बतुम्हारा।
अबपतिमृषागालजनिमारहु। मोरकहाकछुहृदयबिचारहु।
पतिरघुपतिहिनृपतिजनिमानहु। अगजगनाथअतुलबलजानहु।
बानप्रतापजानमारीचा॥ तासुकहानहिंमानेहुनीचा॥
जनकसभाँअगनितभूपाला। रहेतुम्हौंबलअतुलबिसाला।
भंजिधनुषजानकीबिआही। तबसंग्रामजितेहुकिनताही।
सुरपतिसुतजानैबलथोरा। राखाजिअतआँखिगहिफोरा।
सूपनखाकैगतितुमदेखी॥ तदपिहृदयनहिंलाजबिसेषी।

दो॰ बधबिराधखरदूषनहिंलीलाँहत्यौकबंध॥
बालिएकसरमारयौतेहिजानहुदसकंध।२६।

जेहिजलनाथबँधायउहेला। उतरेप्रभुदलसहितसुबेला।
कारुनीकदिनकरकुलकेतू। दूतपठायोतवहितहेतू॥
सभामाझजेहितवबलमथा। करिबरूथमहँमृगपतिजथा।
अंगदहनुमतअनुचरजाके। रनबाँकुरेबीरअतिबाँके।
तेहिकहँपियपुनिपुनिनरकहहू। मुधामानममतामदबहहू।
अहहकंतकृतरामबिरोधा। कालबिबसमनउपजनबोधा।
कालदंडगहिकाहुनमारा। हरैधर्मबलबुद्धिबिचारा।
निकटकालजेहिआवतसाँई। तेहिभ्रमहोइतुम्हारिहिनाँई।

दो॰ दुइसुतमारेउदहेउपुरअजहुँपूरपियदेहु॥
कृपासिंधुरघुनाथभजिनाथबिमलजसलेहु २७

नारिबचनसुनिबिसिखसमाना। सभागयउउठिहोतबिहाना।

कर सेना युद्ध घर नहीं कौन बार ओं: ३ं लभी है ५ ढ़िलभ ८ जुनक मनवार ढ़िवकौ ७ रै ९ छें ५ ब आ पंके ५

बैठेउजाइसिंहासनफूली। अतिअभिमानत्राससबभू
इहांरामअंगदहिंबोलावा। आइचरनपंकजसिरनावा॥
अतिआदरसमीपबैठारी बोलेबिहसिकृपालखरा
बालितनयअतिकौतुकमोही तातसत्यकहुपूछउंतोही॥
रावनजातुधानकुलटीका। भुजबलअतुलजासुजगली
तासमुकुटतुमचारिचलाए कहहुतातकवनीबिधिपा
सुनिसर्बज्ञप्रनतसुषकारी मुकुटनहोंहिंभूपगुनचारी
सामदानअरुदंडबिभेदा॥ नृपउरबसहिंनाथकहबेदा
नीतिधर्मकेचरनसोहाए असजियजानिनाथपहंआ

दो॰ धर्महीनप्रभुपदबिमुषकालबिबसदससीस
तेहिपरिहरिगुनआएसुनहुकोसलाधीस ++॥
परमचतुरताश्रवनसुनिबिहंसेरामउदार ++॥
समाचारपुनिसबकहेगढ़केबालिकुमार॥३८॥

रिपुकेसमाचारजबपाये। रामसचिवसबनिकटबुल
लंकाबांकेचारिदुआरा। केहिबिधिलागियकरहुबि
तबकपीसरिछेसबिभीषन सुमरिहृदयदिनकरकुलभू
करिबिचारतिन्हमंत्रदिढ़ावा। चारिअनीकपिकटकबना
जथाजोगसेनापतिकीन्हे जूथपसकलबोलितबली
प्रभुप्रतापकहिसबसमुझाए सुनिकपिसिंहनादकरिधा
हरषितरामचरनसिरनावहिं गहिगिरिसिखरबीरसबधा
गर्जहिंतर्जहिंभालुकपीसा। जयरघुबीरकोसलाधीस

करके बारे
घर घेर लिये
युद्ध यथायोग
...भाग नब
आयि हल बा
कुल नाति गढ़
घर नाइ हल्ला
यौ॰
ल॰ लं॰
३६
मेघनाद को
प्राप्ति कार्य
गद लाय यथा
प्राप्ति उपद्रव के
निलहांदं मे
भयमान भयो
पुन: युद्धा
शनि प्रभु नि

४५ 〃 〃 〃 〃
का॰ स्मार 〃 〃 〃 〃
〃 〃

जानतपरमदुर्गअतिलंका । प्रभुप्रतापकपिचलेअसंका।
घटाटोपकरिचहुँदिसिघेरी । मुषहिंनिसानबजावहिंभेरी

दो॰ जयतिरामजयलछिमनजयकपीससुग्रीव।
गर्जहिंसिंहनादकपिभालुमहाबलसीव।३९।

लंकाभयउकोलाहलभारी। सुनादसाननअतिहँकारी।
देषहुबनरनकेरिढिठाई ॥ बिहँसिनिसाचरसेनबुलाई
आएकीसकालकेप्रेरे ॥ छुधावंतसबनिसिचरमेरे
असकहिअट्टहाससठकीन्हा। गृहबैठेंअहारबिधिदीना।
सुभटसकलचारिहुँदिसिजाहू धरिधरिभालुकीससबकाहू
उमारावनहिअसअभिमाना। जिमिढिंडिभषगसूतउताना।
चलेनिसाचरआयसुमांगी। गहिकरिभिंडिपालबरसांगी।
तोमरमुद्गरपरसुप्रचंडा ॥ सूलकृपानपरिघगिरिषंडा
जिमिअरुनोपलनिकरनिहारी धावहिंसठषगमांसअहारी
चोंचभंगदुषतिन्हहिंनसूझा। तिमिधाएमनुजादअबूझा

दो॰ नानायुधसरचापधरिजातुधानबलबीर ॥
कोटकंगूरन्हिचढिगएकोटिकोटिरनधीर।४०।

कोटकंगूरन्हिसोहहिंकैसे। मेरुकेसृंगनजनुघनबैसे॥
बाजहिंढोलनिसानजुझाऊ। सुनिधुनिहोइभटन्हिमनचाऊ।
बाजहिंभेरिनफीरिअपारा सुनिकादरउरजाहिंदरारा॥
देषिनजाइकपिनकेठट्टा। अतिबिसालतनभालुसुभट्टा
धावहिंगनहिंनअवघटघाटा पर्बतफोरिकरहिंगहिबाटा।

पी
रा॰ लं॰
२७

टी·
रा·लं·
२८

कटकटाहिंकोटिन्हभटगर्जहिं दसनओठकाटहिंअतितर्जहिं
उतरावनइतरामदोहाई। जयतिजयतिजयपरीलराई
निसिचरसिखरसमूहढहावहिं कूदिधरहिंकपिफेरिचलाव

छं· धरिकुधरखंडप्रचंडमर्कटभालुगढ़परडारहीं॥
झपटहिंचरनगहिपटकिमहिभजिचलतबहुरिपचारहीं
अतितरलतरुनप्रतापतरपहिंतमकिगढ़चढ़िचढ़िगए।
कपिभालुचढ़िमंदिरन्हजहँतहँरामजसुगावतभए॥

दो· एकएकगहिनिसिचरपुनिकपिचलेपराइ॥
ऊपरआपुहेठभटगिरहिंधरनिपरआइ॥४२॥

रामप्रतापप्रबलकपिजूथा। मर्दहिंनिसिचरसुभटबरूथा
चढ़ेदुर्गपुनिजहँतहँबानर॥ जयरघुबीरप्रतापदिवाकर
चलेनिसाचरनिकरपराई। प्रबलपवनजिमिघनसमुदाई
हाहाकारभयउपुरभारी॥ रोवहिंबालकआतुरनारी॥
सबमिलिदेहिंरावनहिंगारी राजकरतएहिंमृत्युहँकारी
निजदलबिचलसुनीतेहिंकाना फेरिसुभटलंकेशरिसाना
जोरनबिमुखफिरामैंजाना॥ सोमैंहतबकरालकृपाना
सर्बसुखाइभोगकरिनाना समरभूमिभएबल्लभप्रान
उग्रबचनसुनिसकलडेराने चलेक्रोधकरिसुभटलजाने
सन्मुखमरनबीरकैशोभा। तबतिन्हतजाप्रानकरलोभ

दो· बहुआयुधधरिसुभटसबभिरहिंपचारपचार
ब्याकुलकीन्हेभालुकपिपरिघत्रिसूलनमारि॥४

भयआतुरकपिभागनलागे। जद्यपिउमाजीतिहहिंआगे॥
कोउकहँकहँअंगदहनुमंता। कहँनलनीलदुबिदबलवंता
निजदलबिकलसुनाहनुमाना। पच्छिमद्वाररहाबलवाना।
मेघनादतहँकरैलराई * ॥ टूटनद्वारपरमकठिनाई॥
पवनतनयमनभाअतिक्रोधा। गर्जेउप्रबलकालसमजोधा।
कूदिलंकगढ़ऊपरआवा। गहिगिरिमेघनादपहँधावा।
भंजेउरथसारथीनिपाता। ताहिहृदयमहुँमारेसिलाता।
दुसरेंसूतबिकलतेहिजाना। स्यंदनघालितुरतगृहआना।

दो॰ अंगदसुनापवनसुतगढ़परगयउअकेल
रनबाँकुराबालिसुततरकिचढ़ेउकपिखेल

जुद्धबिरुद्धक्रुद्धद्वौबानर। रामप्रतापसुमिरउरअंतर।
रावनभवनचढ़ेद्वौधाई। करहिंकोसलाधीसदोहाई
कलससहितगहिभवनढहावा। देखिनिसाचरपतिभयपावा।
नारिबृंदकरपीटहिंछाती। अबदुइकपिआएउतपाती
कपिलीलाकरितिन्हहिंडेरावहिं रामचंद्रकरसुजससुनावहिं
पुनकरगहिकंचनकेखंभा। कहेन्हिकरियउतपातअरंभा
गर्जिपरेरिपुकटकमझारी। लागेमर्दैभुजबलभारी॥
काहुहिलातचपेटन्हिकेहू भजहुनरामहिंसोफललेहू

दो॰ एकएकसोंमर्दहिंतोरिचलावहिंमुंड * ॥
रावनआगेंपरहिंतेजनुफूटहिंदधिकुंड ४५।

महामहामुखियाजेपावहिं। तेपदगहिप्रभुपासचलावहिं

मेरो गयो
श्रात लिया
ओं: ॥
समय
मदपगुन
मल अंगरा
अमुपदको
२८ ग्री:
२ मा:
६ छ:
६३ औ:
मौलि: ०

कहहिंबिभीषननिरखेनामा। देहिंरामतिन्हहूंनिजधामा।
खलमनुजादद्विजामिषभोगी। पावहिंगतिजोजाचतजोगी।
उमाराममृदुचितकरुनाकर। बयरभावसुमिरतमोहिनिस
देहिंपरमगतिसोजियजानी। असकृपालकोकहहुभवा
असप्रभुसुनिनभजहिंभ्रमत्यागी। नरमतिमंदतेपरमअभागी
अंगदअरुहनुमंतप्रवेसा॥ कीन्हदुर्गअसकहअवधेसा
लंकाद्वौकपिसोहहिंकैसे। मथहिंसिंधुदुइमंदरजैसे

दो॰ भुजबलरिपुदलदलमलिदेखिदिवसकरअंत।
कूदेजुगलबिगतश्रमआएजहंभगवंत॥ ४५॥

प्रभुपदकमलसीसतिन्हनाए। देखिसुभटरघुपतिमनभाए
रामकृपाकरिजुगलनिहारे। भएबिगतश्रमपरमसुखारे
गएजानिअंगदहनुमाना। फिरेभालुमर्कटभटनाना॥
जातुधानप्रदोषबलपाई। धाएकरिदससीसदोहाई
निसिचरअनीदेखिकपिफिरे। जहंतहंकटकटाइभटभिरे
दौदलप्रबलपचारिपचारी। लरतसुभटनहिंमानहिंहारी
महाबीरनिसिचरसबकारे। नानाबरनबलीमुखभारे॥
सबलजुगलदलसमबलजोधा। कौतुककरतलरतकरिक्रो
प्राविटसरदपयोदघनेरे॥ लरतमनहुमारुतकेप्रेरे॥
अनिपअकंपनअरुअतिकाया। बिचलतसेनकीन्हइन्हमाया
भएउनिमिषमहंअतिअंधियारा। बृष्टिहोइरुधिरोपलछारा

दो॰ देखिनिबिड़तमदसहुंदिसिकपिदलभएउखभार

जानि कपि
कहं बल्यौ नहिं
निसिचर राति
कौ बल पाइ
पुन: संग्राम
हेत बलो होन
मयो देखि बिचल
लखि अकंपन
है माया कीन्ह
री:
रा: लं:
३०
पिरल्याकुल
किया जहं सो
राम अंगद
हनुमान को भेजि
पावक सरतें म
घोरवारि मारि
निसाचर
ऊपन भागी
निसाचारि
सोक्कांत
माइ हाघव
नश्याधा ना
कोपजुध
कुमारिन

तेंमंत्रनहीं मालवंतधर्म नीतिपूर्वक कह्योरावन ताकोनिरादर कृपानहीं कथनाइको निजपुरुषार्थ ताकिआनंद भयोपुन प्रातहोतचारों अनीकागढ़ घेरलेत लागोमघनाद बानरनैमायाके टमायाकिय ताकोंप्रभुने बाणनवलनष्ट

एकनएकहिदेषइँजहँतहँकरहिंपुकार ४६

सकलमरमरघुनायकजाना। लियेबोलिअंगदहनुमाना।
समाचारसबकहिसमुझाए सुनतकोपिकपिकुंजरधाए
पुनिकृपालहँसिचापचढ़ावा पावकसायकसपदिचलावा
भएउप्रकासकतहुँतमनाहीं ज्ञानउदयजिमिसंसयजाहीं
भालुबलीमुखपाइप्रकासा धाएहरषिबिगतश्रमत्रासा
हनूमानअंगदरनगाजे * ॥ हाँकसुनतरजनीचरभाजे।
भागतभटपटकहिंधरिधरनी करहिंभालुकपिअद्भुतकरनी
गहिपदडारहिंसागरमाहीं । मकरउरगझषधरिधरिषाहीं

दो· कछुमारेकछुघायलकछुगढ़चढ़ेपराइ * ॥
गर्जहिंभालुबलीमुखरिपुदलबलबिचलाइ ४७

निसाजानिकपिचारिउअनी आएजहाँकोसलाधनी * ॥
रामकृपाकरिचितवासबहीं भएबिगतश्रमबानरतबहीं
उहाँदसाननसचिवहँकारे। सबसनकहेसिसुभटजेमारे
आधाकटककपिनसंघारा कहहुबेगिकाकरियबिचार
माल्यवंतअतिजरठनिशाचर रावनमातुपितामंत्रीबर ॥
बोलाबचननीतिअतिपावन सुनहुतातकछुमोरसिषावन
जबतेंतुमसीताहरिआनी। असगुनहोंहिंनजाइबषानी
बेदपुरानजासुजसगायो रामबिमुषकाहुनसुषपायो

दो· हिरण्याक्षभ्रातासहितमधुकैटभबलवान ॥
जेहिंमारेसोइअवतरेउकृपासिंधुभगवान ४८।

दो· रा· लं· ३१

कोक्रोधग्रन्त गाढ़प्रेमसार आदिकोंमार कैप्रानप्रवर्ध कह्योनवधर्म गावर्दप्रान ज्ञानमानिसाति भारीनरनाथ कोमृदुहैत हैविनिकाट गाढ़गउत्यो रक्षौविप आदिबधोवन

कालरूपखलबनदहनगुनागारघनबोध ॥
सिवबिरंचिजेहिसेवहिंतासोंकवनबिरोध ४८

परिहरुबैरुदेहुबैदेही ५ ॥ भजहुकृपानिधिपरमसने
ताकेबचनबानसमलागे । करिआमुहुकरिजाहिअभा
बूढ़भयसिनहिंमरतेउँतोही अबजनिनयनदेखावसि
तेहिअपनेमनअसअनुमाना बध्योचहतएहिकृपानि
सोउठिगयउकहतदुर्बादा ॥ तबसकोपबोलेउघनना
कौतुकप्रातदेखिअहुमोरा करिहौंबहुतकहौंकाथो
सुनिसुतबचनभरोसाआवा प्रीतिसमेतअंकबैठावा
करतबिचारभयउभिनुसारा लागेकपिपुनिचहुँदुआ
कोपिकपिनदुर्घटगढ़घेरा नगरकोलाहलभयउघने
बिबिधायुधधरिनिसचरधाए गढ़तेंपर्बतसिखरढहाये

छं॰ ढाहेमहीधरसिखरकोटिन्हबिबिधबिधिगोलाचले
घहरातजिमिपबिपातगर्जतजनुप्रलयकेबादले ॥
मर्कटबिकटभटजुटतकटतनलटततनजर्जरभए ॥
गहिसैलतेहिगढ़परचलावहिंजहँसोतहँनिसचरहए
दो॰ मेघनादसुनिश्रवनअसगढ़पुनिछेंकाआइ ॥
उतरयोबीरदुर्गतेंसन्मुखचलेउबजाइ ४९॥

कहँकोसलाधीससोउभ्राता धन्वीसकललोकबिख्या
कहँनलनीलदुबिदसुग्रीवा अंगदहनूमंतबलसींवा ॥
कहाँबिभीषनभ्राताद्रोही आजुसबहिंहठिमारौंवो

कुकराली आदि औंप
मेग्रीमाहि
कैंबोलत
हैंबहुत
बलमये
आदिसुग्री
कोहनुमान
हैंलछमन
गनमंगन
सिवनाम
लछमनको
मेंटैभट
इन्द्रसमा
दनागा
लैं भरत ध
कपूरहि भिवलेत
हैं श्रीराम प्रभु
तब गान जानि
गरब प्रलाप

कहनलागे इहाँ
कहिलछमाँ
कातुहैं प्रताप
सोहैं हनुमान
आइ मेघनाद
में लछमण उहैं
प्रभु गहसमा
आप ता
कापछिनाथ
कुम्भकरनकी
जगायो जाइ
तहाँ कुम्भकरन
नीतिधर्म ५

उनकाहिं नाटकबिपु श्रीघाँहि नाटकगुण हृदिकि दो॰ मासकी अंतरजाँहि तिनजाहि नाथतिनम सुहायगीम्र राम स्वगुणस्य रावणारमान मधाननघव नमहामिय कीटन्हेघट घबारवाकी मतिबीरासरं

असकहिकठिनबानसंधाने अतिसयक्रोधश्रवनलगिताने
सरसमूहसोछाड़ैलागा॥ जनुसपक्षधावहिंबहुनागा
जहँतहँपरतदेषिअहिंबानर सन्मुखहोइनसकैतेहिअवसर
जहँतहँभागिचलेकपिरीछा बिसरीसबहिंजुद्धकैइछा
सोकपिभालुनरनमैंदेषा कीन्हेसिजेहिनप्रानअवशेषा

दो॰ दसदससरसबमारेसिपरेभूमिकपिबीर
सिंहनादकरिगर्जेउमेघनादबलधीर। ५०।

देषिपवनसुतकटकबिहाला क्रोधवंतजनुधायउकाला
महासैलएकतुरतउपारा। अतिरिसमेघनादपरडारा॥
आवतदेषिगयउनभसोई। रथसारथीतुरगसबषोई।
बारबारपचारहनुमाना निकटनआवमरमसोजाना
रघुपतिनिकटगयोघननादा नानाभांतिकहैदुर्बादा॥
अस्त्रशस्त्रआयुधसबडारे कौतुकहींप्रभुकाटिनिवारे
देषिप्रतापमूढ़षिसयाना करैलागिमायाबिधिनाना
जिमिकोउकरैगरुड़सैंषेला डरपावैगहिस्वल्पसपेला।

दो॰ जासुप्रबलमायाबिवसशिवबिरंचिबड़छोट
नाहिदेषाविनिसिचरनिजमायामतिषोट ५१।

नभचढ़िबरषबिपुलअंगारा महितेंप्रगटहोंहिजलधारा
नानाभांतिपिशाचपिशाची मारुकाटुधुनिबोलहिंनाची
बिष्टापूयरुधिरकचहाड़ा बरषैकबहुंउपलबहुछाड़ा
बरषिधूरकीन्हेसिअंधियारा सूझनआपनहाथपसारा।

कपिउकलानेमायादेषे ॥ सबकरमरनबनाएहिलेषे॥
कौतुकदेषिराममुसकाने ॥ भएसभीतसकलकपिजाने॥
एकबानकाटीसबमाया। जिमिदिनकरहरतिमिरनिक
कृपादृष्टिकपिभालुबिलोके भएप्रबलरनरहहिंनरोके

दो· आयसुमांगिरामपहँअंगदादिकपिसाथ॥
लछिमनचलेक्रुद्धह्वैबानसरासनहाथ॥५२॥

छतजनयनउरबाहुबिसाला हिमगिरिनिभतनुकछुएक
इहांदसाननसुभटपठाए ॥ अस्त्रसस्त्रनानागहिधाए॥
भूधरनषबिटपायुधधारी धाएकपिजयरामपुकारी
भिरेसकलजोरिहिसनजोरी इतउतजयइच्छानहिंथोरी॥
मुठिकन्हलातन्हदांतन्हकाटहिं कपिजयसीलमारिपुनिडांटहिं
मारुमारुधरुधरुधरुमारू सीसतोरिगहिभुजाउपारू
अतिरवपूरिरहीनवषंडा ॥ धावहिंजहँतहँरुंडप्रचंडा॥
देषहिंकौतुकनभसुरबृंदा कबहुंकबिसमयकबहुं

दो· रुधिरगाड़भरिभरिजम्योऊपरधूरिउड़ाय॥
जनुअंगाररासिन्हऊपरमृतकधूमरह्योछाय॥५

घाइलबीरबिराजहिंकैसे कुसुमितकिंसुककेतरुजै
लछिमनमेघनाददोउयोधा भिरहिंपरस्परकरिअतिक्रो
एकहिएकसकैनहिंजीती। निसिचरछलबलकरैअनी
क्रोधवंततबभएउअनंता॥ भंजेउरथसारथीतुरंता॥
नानाबिधिप्रहारकरशेषा राक्षसभयोप्रानअवशेषा॥

रावनसुतनिजमनअनुमाना। संकटभयेउहरिहिममप्राना।
बीरघातनीछाड़िसिसांगी तेजपुंजलछमनउरलागी
मूरछाभइशक्तिकेलागे। तबचलिगयोनिकटभयत्यागे

दो· मेघनादसमकोटिसतजोधारहेउठाइ॥
जगदाधारअनंतकिमिउठैचलेखिसिआइ ५४

सुनुगिरिजाक्रोधानलजासू जारैभुवनचारिदशआसू
सकसंग्रामजीतिकोताही सेवहिंसुरनरअगजगजाही।
यहकौतूहलजानैसोई ॥ जापरकृपारामकैहोई॥
संध्याभईफिरीदोउअनी लगेसंभारननिजनिजअनी।
ब्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर लछमनकहाँबूझकरुना कर
तबलगिलैआयोहनुमाना अनुजदेषिप्रभुअतिदुषमाना
जामवंतकहबैदसुषेना ॥ लंकारहैकोपठईलेना॥
धरिलघुरूपगयोहनुमंता आनेउभवनसमेततुरंता॥

दो· रामपदारबिंदसिरनायोआइसुषेन + + ॥
कहानामगिरिऔषधीजाहुपवनसुतलेन ३५

रामचरनसरसिजउरराषी चलाप्रभंजनसुतबलभाषी
उहाँदूतएकमरमजनावा। रावनकालिनेमिगृहआवा।
दसमुखकहामरमतेहिसुना पुनिपुनिकालनेमिसिरधुना
देषततुम्हहिंनगरजेहिंजारा तासुपंथकोरोकनपारा॥
भजिरघुपतिकरुहितआपना छाड़हुनाथमृषाजल्पना।
नीलकंजतनुसुंदरस्यामा ॥ हृदयराषिलोचनअभिरामा

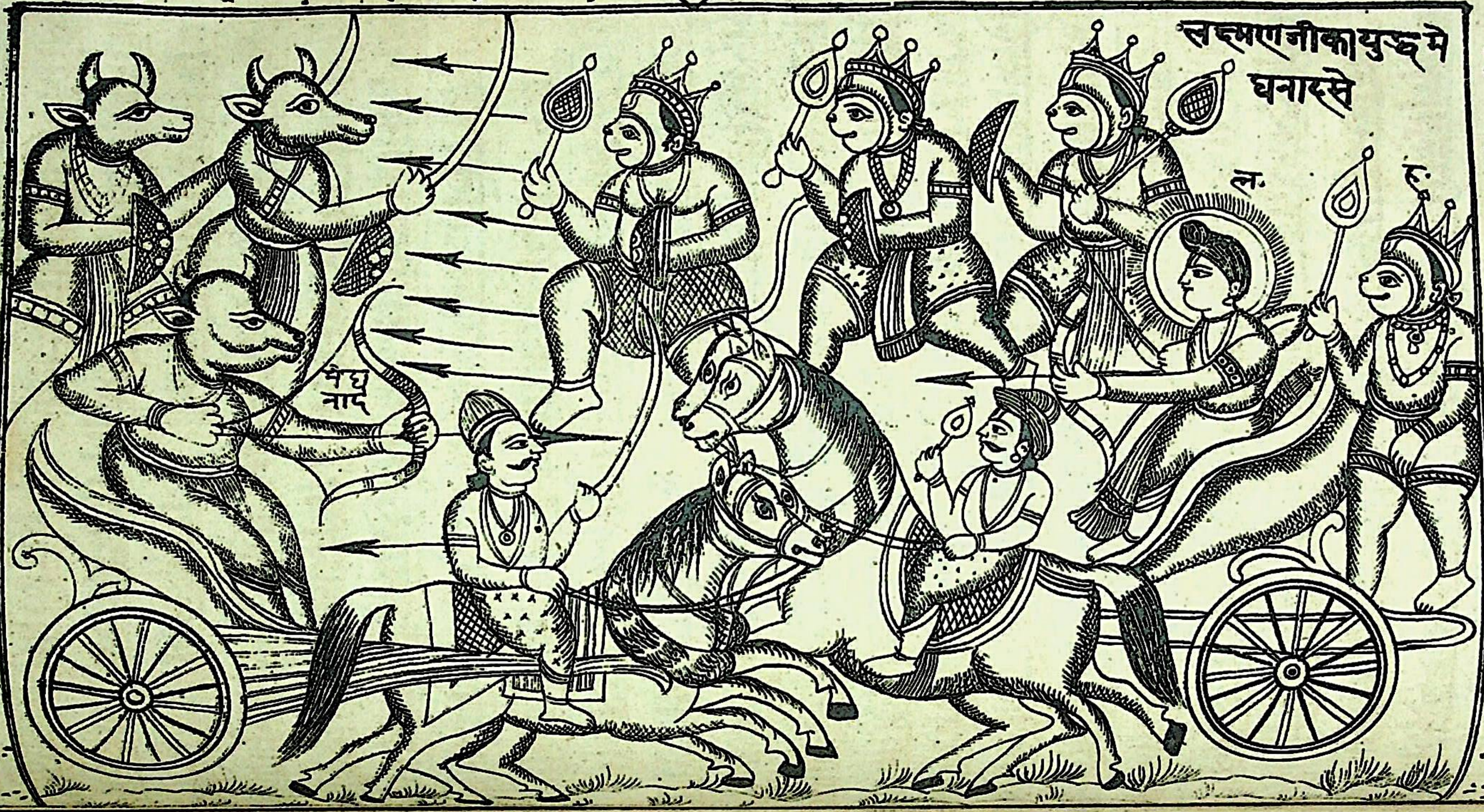

लक्ष्मणजीकायुद्धमेघनादसे

मैंतेमोरमूढतात्यागू ॥ महामोहनिसिसूतनजागू
कालव्यालकरभक्षकजोई सपनेहुसमरकिजीतियसोई

दो·सुनिदसकंधरिसानअतितेहिमनकीन्हबिचार
रामदूतकरमरौंबरुयहखलरतमलभार ॥५६॥

असकहिचलारचिसिमगमाया। सरमंदिरबरबागबनाया।
मारुतसुतदेषासुभआश्रम मुनिहिबूझजलपिअउजाइश्रम
राक्षसकपटबेषतहँसोहा। मायापतिदूतहिचहमोहा।
जाइपवनसुतनायउमाथा। लागसोकहैरामगुनगाथा।
होतमहारनरावनरामहिं। जितिहहिंरामनसंसयपामहिं
इहांभएमैंदेषौभाई * ॥ ज्ञानदृष्टिबलमोहिअधिकाई
मांगाजलतेहिदीन्हकमंडल कहकपिनहिंअघाउंथोरेजल
सरमज्जनकरिआतुरआवहु दीक्षादेउंज्ञानजेहिपावहु

दो·सरपैठतकपिपदगहामकरीतबअकुलान
मारीसोधरिदिव्यतनचलीगगनचढजान ५७

कपितवदरसभइउनिःपापा मिटतातमुनिबरकरसापा
मुनिनहोइयहनिसिचरघोरा मानहुसत्यबचनकपिमोरा
असकहिगईअपछराजबहीं निसिचरनिकटगयउकपितबहीं
कहकपिमुनिगुरदक्षिनालेहू पाछेहमहिंमंत्रतुमदेहू
सिरलंगूरलपेटिपछारा ॥ निजतनप्रगटेसिमरतीबारा
रामरामकहिछाडेसिप्राना। सुनिमनहरषचलेउहनुमाना।
देषासैलनऔषधिचीन्हा। सहसागिरिउपारिकपिलीन्हा।

गहिगिरिनिसिनभधावतभएऊ। अवधपुरीऊपरकपिगएऊ।

दो॰ देषाभरतबिसालअतिनिसिचरमनअनुमानि।
बिनुफरसायकमारेउचापश्रवनलगितानि ५८॥

परेउमुरछिमहिलागतसायक सुमरतरामरामरघुनायक
सुनिप्रियबचनभरततबधाए। कपिसमीपअतिआतुरआए।
बिकलबिलोकिकीसउरलावा। जागतनहिंबहुभांतिजगावा।
मुषमलीनमनभएदुषारी॥ कहतबचनभरिलोचनबारी।
जेहिबिधिरामबिमुषमोहिकीन्हा तेहिपुनियहदारुनदुषदीन
जोमोरेमनबचअरुकाया॥ प्रीतिरामपदकमलअमाया
तौकपिहोउबिगतश्रमसूला। जोमोपररघुपतिअनुकूला
सुनतबचनउठिबैठकपीसा कहिजयजयतिकोसलाधी

सो॰ लीन्हकपिहिउरलाइपुलकिततनुलोचनसजल
प्रीतिनहृदयसमाइसुमिरिरामरघुकुलतिलक ५९

तातकुसलकहुसुषनिधानकी सहितअनुजअरुमातजा
कपिसबचरितसमासबषाने भएदुषीमनमहुंपछिताने
अहहदैवमैंकतजगजाएउँ। प्रभुकेएकोकाजनआएउं
जानिकुअवसरमनधरिधीरा पुनिकपिसनबोलेबलबी
तातगहरुहोइहितोहिजाता काजनसाइहिहोतप्रभाता
चढुममसायकसैलसमेता। पठवउंतोहिजहांकृपानिके
सुनिकपिमनउपजाअभिमाना मोरेभारचलिहिकिमिबा
रामप्रभाउबिचारिबहोरी। बंदिचरनकपिकहकरजोरी

टी॰ रा॰ लं॰ ३६

दो॰ तवप्रतापउरराखिप्रभुजैहौंनाथतुरंत ॥
असकहिआयसुपाइपदबंदिचलेहनुमंत ॥
भरतबाहुबलसीलगुनप्रभुपदप्रीतिअपार ॥
मनमहुंजातसराहतपुनिपुनिपवनकुमार ६०॥

उहांरामलछमनहिंनिहारी बोलेबचनमनुजअनुसारी
अर्द्धरातिगईकपिनहिंआयो रामउठायअनुजउरलायो॥
सकहुनदुखितदेखिमोहिकाऊ बंधुसदातवमृदुलसुभाऊ
ममहितलागितजेउपितुमाता सहेहुबिपिनहिमआतपबाता
सोअनुरागकहांअबभाई। उठहुनसुनिममबचबिकलाई
जौंजनतेउंबनबंधुबिछोहू पिताबचनमनतेउंनहितोहू
सुतबितनारिभवनपरिवारा होहिंजाहिंजगबारहिंबारा।
असबिचारजियजागहुताता मिलैनजगतसहोदरभ्राता
जथापंखबिनुषगअतिदीना मनिबिनुफनिकरिवरकरहीना।
असममजिवनबंधुबिनुतोही जोजड़दैवजिआवैमोही।
जैहौंअवधकवनमुंहलाई नारिहेतुप्रियबंधुगवांई
बरुअपजससहतेउंजगमाहीं नारिहानिबिशेषछतिनाहीं
अबअवलोकसोकसुततोरा सहिहिनिठुरकठोरउरमोरा
निजजननीकेएककुमारा। ताततासुतुमप्रानअधारा
सौंपेहिमोहितुमहिंगहिपानी सबबिधिसुषदपरमहितजानी
उतरुकाहदैहौंतेहिजाई ॥ उठिकिनमोहिसिखावहुभाई
बहुबिधिसोचतसोचबिमोचन स्रवतसलिलराजिवदललोचन

लक्ष्मणजीकोमूर्छाभईशक्तिकेलघनेसे।

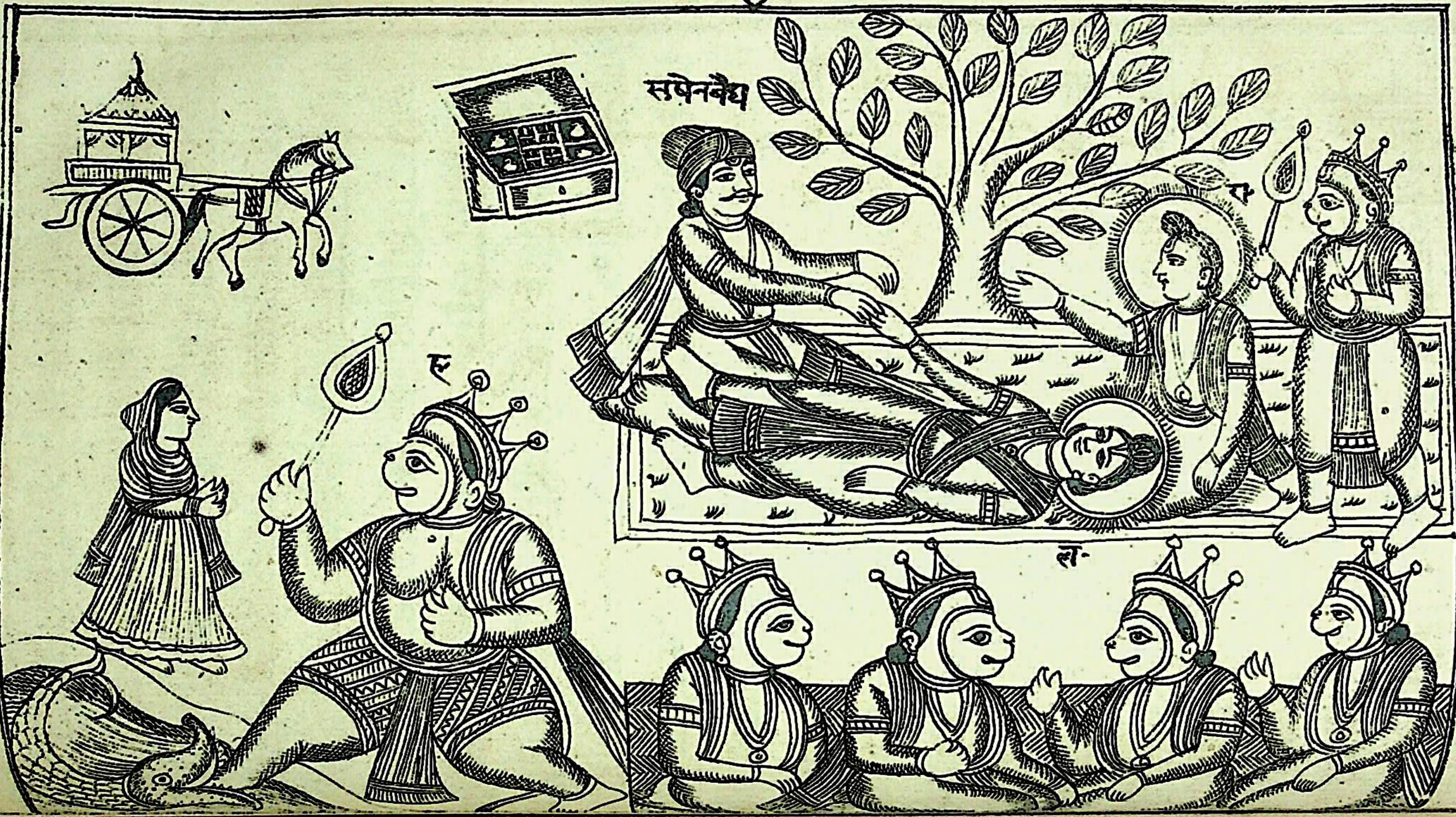

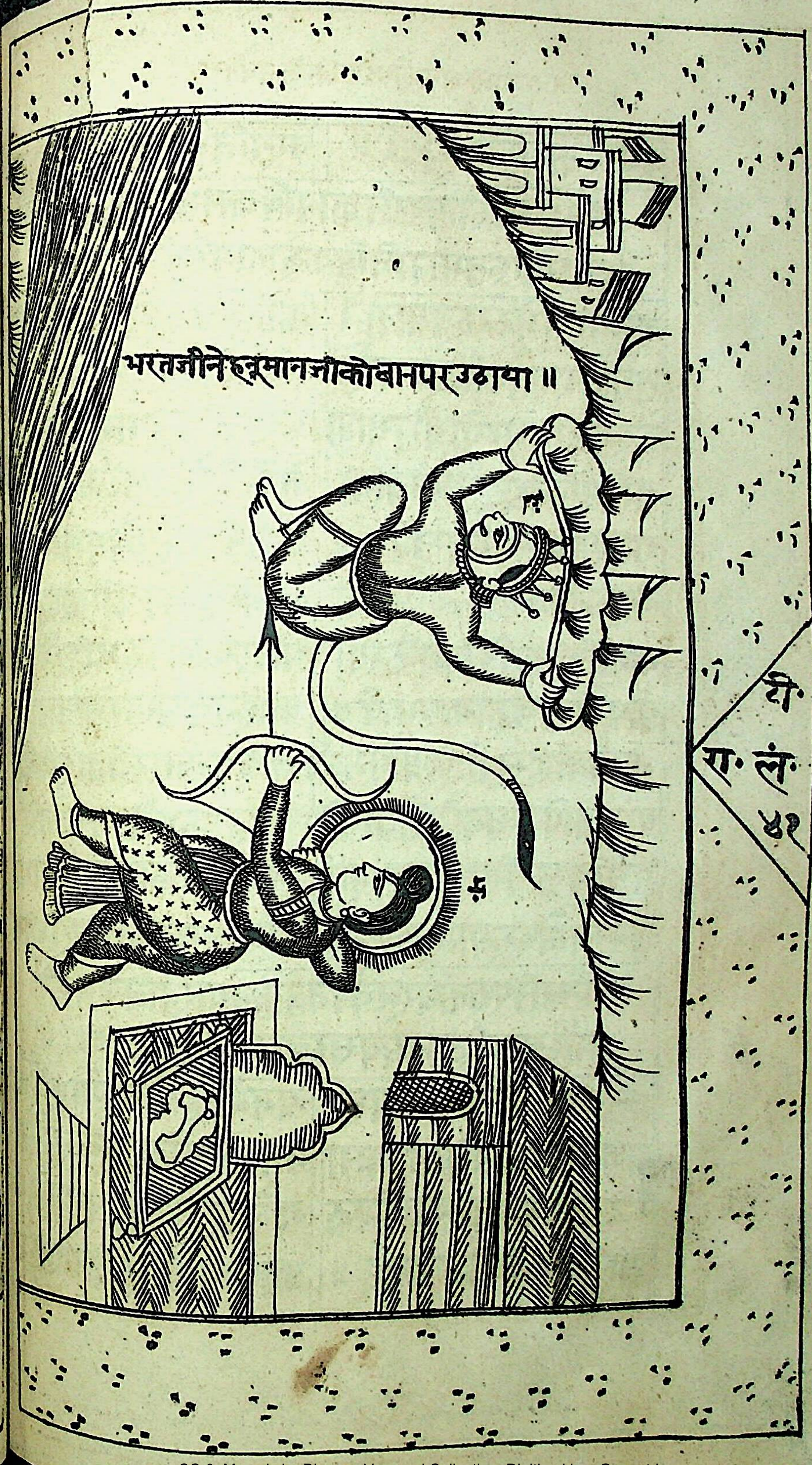

भरतजीनेहनूमानजीकोबानपरउठाया ॥

उमाएकअखंडरघुराई॥ नरगतिभगतिकृ

सो॰ प्रभुप्रलापसुनिकानबिकलभएबानरनि
आइगएहनुमानजिमिकरुणामहँबीररस॥६१

हरषिरामभेटेउहनुमाना। अतिकृतज्ञप्रभुपरमसु
तुरतबैद्यतबकीन्हउपाई। उठिबैठेलछमनहरषा
हृदयलायभेट्योप्रभुभ्राता हरषेसकलभालुकपिब्रा
कपिपुनिबैद्यतहाँपहुँचावा जेहिंबिधितबहिंताहिलेआ
यहबृत्तांतदसाननसुनेऊ॥ अतिबिषादपुनिपुनिसिर
ब्याकुलकुंभकरनपहँआवा बिबिधजतनकरिताहिज
जागानिसिचरदेखियकैसा। मानहुँकालदेहधरिबैसा
कुंभकरनबूझाकहुभाई॥ काहेतवमुखरहेसुखाई
कथाकहीसबतेहिंअभिमानी जेहिप्रकारसीताहरिआ
तातकपिन्हसबनिसिचरमारे महामहाजोधासंघारे
दुर्मुखसुररिपुमनुजअहारी भटअतिकायअकंपन
अपरमहोदरआदिकबीरा परेसमरमहिसबरनधी

दो॰ सुनिदसकंधरबचनतबकुंभकरनबिलषानि
जगदंबाहरिआनिअबसठचाहतकल्यान॥६२॥

भलनकीन्हतैंनिसिचरनाहा अबमोहिआइजगाएहि
अजहूँताततयागिअभिमाना भजहुरामहोइहिकल्या
हैदससीसमनुजरघुनायक जाकेहनूमानसेपायक
अहहबंधुतैंकीन्हखोटाई॥ प्रथमहिंमोहिनसुनाएहि

कीन्हेउप्रभुबिरोधतेहिदेवक । सिवबिरंचिसुरजाकेसेवक
नारदमुनिमोहिग्यानजोकहा। कहतेउँतोहिसमयनिरवहा।
अबभरिअंकभेंटुमोहिभाई लोचनसुफलकरौंमैंजाई।
स्यामगातसरसीरुहलोचन देखौंजाइतापत्रयमोचन॥

दो॰ रामरूपगुनसुमिरतमगनभएउछनएक*॥
रावनमांगेउकोटिघटमदअरुमहिषअनेक ६३॥

महिषखाइकरिमदिरापाना। गर्जाबज्राघातसमाना॥
कुंभकरनदुर्मदरनरंगा॥ चलादुर्गतजिसेननसंगा॥
देखिबिभीषनआगेआएउ परेउचरननिजनामसुनाएउ
अनुजउठाइहृदयतेहिलायो। रघुपतिभक्तिजानिमनभायो
तातलातरावनमोहिमारा। कहतपरमहितमंत्रबिचारा
तेहिगलानिरघुपतिपहँआएउँ देखिदीनप्रभुकेमनभाएउँ।
सुनसुतभएउकालबसरावन सोकिमानअबपरमसिखावन
धन्यधन्यतैंधन्यबिभीषन॥ भएउतातनिसिचरकुलभूषन
बंधुबंसतैंकीन्हउजागर*॥ भजेउरामसोभासुखसागर

दो॰ बचनकर्ममनकपटतजिभजेहुरामरनधीर॥
जाहुननिजपुरसूझमोहिभएउंकालबसबीर ६४

बंधुबचनसुनिचलाबिभीषन आएउँजहँत्रैलोकबिभूषन
नाथभूधराकारसरीरा॥ कुंभकरनआवतरनधीरा।
एतनाकपिन्हसुनाजबकाना किलकिलाइधाएबलवाना।
लियेउठाइबिटपअरुभूधर। कटकटाइडारहिंताऊपर॥

पंक्ति १
१ चौ०
धु० ८ दो०
[illegible]भाइ
कौश्रकरनी
सुनरश्रभु
सुमलापाल
१ चौ० ॥
हुकिसांत
तेंबिरहितहै
श्रमपणसंरक्षि
श्रकरणा स
मन श्रोकि उपर
ईश्रापनंबपधु
नाथपालेंसम्भ
नेहू एगासनमुप
चत्योनहाबिभी
षणाश्रयकारी
मिथ्योनाकी
रुपकालप्रसंग
दो॰
रा॰ लं॰
६३
करिनिवारन कि
षो किसपुग्रीन
उदि श्रबमाको
नहीं नहीं छबी
बश्रंगदहत
पनाहिकलीप
मनोपारेउ
कियानव
श्राउत भा
नवहुमाव
रामसोहै
मनुत्रहै
पुरुतोबांको
हनिगारि है
॥ २ ॥

कोटि कोटि गिरि शिखर प्रहारा करहिं भालु कपि एक एक बा
मुर्यो न मन तनु टर्यो न टार्यो । जिमि गज अर्क फलन को मा
तब मारुतसुत मुठिका हन्यो । पर्यो धरनि ब्याकुल सिर धु
पुनि तेहि उठि मारेउ हनुमंता । घूर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि जहँ तहँ पटकि पटकि भट
चली बलीमुख सेन पराई । अति भय त्रसित न कोउ समु

दो॰ अंगदादि कपि मूर्छित करि समेत सुग्रीव ॥
काँखि दाबि कपिराज कहँ चला अमित बल सींव

उमा करत रघुपति नरलीला । खेलत गरुड़ जिमि अहिगन मी
भृकुटि भंग कालहि जो खाई । ताहि कि सोहै ऐसि लराई ।
जग पावनि कीरति बिस्तरिहहिं । गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहीं
मूर्छा गै मारुतसुत जागा । सुग्रीवहि तब खोजन लागा ।
सुग्रीवहु कै मूर्छा बीती ॥ निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रती
काटेसि दसन नासिका काना । गर्जि अकास चलेउ तेहि जा
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा । अति लाघव उठि पुनि तेहि मा
पुनि आएउ प्रभु पहँ बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधा
नाक कान काटे जिय जानी । फिरा क्रोध करि भै मन ग्लानी
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा देखत कपि दल उपजी त्रासा

दो॰ जय जय जय रघुबंश मणि धाए कपि दै हूह ॥
एकहि बार तासु पर डारेन्हि गिरि तरु जूह ६६

कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रु

कोटिकोटिकपिधरिधरिखाई जनुटीड़ीगिरिगुहासमाई॥
कोटिन्हगहिसरीरसनमर्दा। कोटिन्हमीजमिलवमहिगर्दा
मुखनासाश्रवनन्हकीबाटा। निसरपराहिंभालुकपिठाटा।
रनमदमत्तनिशाचरदर्पा । बिस्वग्रसिहिजनुएहिबिधअर्पा
मुरेसुभटसबफिरहिंनफेरे सूझनयनसुनहिंनहिंटेरे
कुंभकरनकपिफौजबिडारी सुनिधाईरजनीचरधारी॥
देखीरामकटकबिकलाई। रिपुअनीकनानाबिधिआई

दो॰ सुनुसुग्रीवबिभीषनअनुजसँभारेउसैन ॥
मैंदेखौंखलबलदलहिंबोलेराजिवनैन ६७।

करसारंगसाजिकटिभाथा। अरिदलदलनचलेरघुनाथा।
प्रथमकीन्हप्रभुधनुषटँकोरा। रिपुदलबधिरभएसुनिसोरा
सत्यसंधछाड़ेसरलछा । कालसर्पजनुचलेसपच्छा ॥
जहँतहँचलेबिपुलनाराचा। लगेकटनभटबिकटपिसाचा
कटहिंचरनउरसिरभुजदंडा। बहुतकबीरहोहिंसतखंडा॥
घुर्मिघुर्मिघायलमहिपरहीं उठेसंभारिसुभटपुनिलरहीं
लागतबानजलदजिमिगाजहिं बहुतकदेखिकठिनसरभाजहिं
रुंडप्रचंडमुंडबिनुधावहिं ॥ धरुधरुमारुमारुधुनिगावहिं

दो॰ छिनमैंप्रभुकेसायकहिकाटेबिकटपिसाच
पुनिरघुबीरनिषंगमहिप्रविसेसबनाराच ६८

कुंभकरनमनदीखबिचारी हतिछनमांझनिशाचरधारी
भाअतिक्रुद्धमहाबलबीरा। कियोमृगनायकनादगंभीरा

कोपिमहीधरलेइउपारी डारैजहँमर्कटभटभारी॥
आवतदेखिसैलप्रभुभारे सरन्हिकाटिरजसमकरिडारे
पुनिधनुतानिकोपिरघुनायक छाँडेअतिकरालबहुसायक
तनुमहुँप्रविसिनिसरसरजाहीं जिमिदामिनिघनमांझसमाहीं
सोनितस्रवतसोहतनकारे। जनुकज्जलगिरिमेरुपनारे॥
बिकलबिलोकिभालुकपिधाए बिहँसाजबहिंनिकटकपिआए

दो॰ महानादकरिगर्जाकोटिकोटिगहिकीस +॥
महिपटकैगजराजइवसपथकरैदससीस॥६५॥

भागेभालुबलीमुखजूथा वृकबिलोकिजिमिमेषवरूथा
चलेभागिकपिभालुभवानी बिकलपुकारतआरतबानी
यहनिसिचरदुकालसमअहई कपिकुलदेसपरनअबचहई
कृपाबारिधररामखरारी॥ पाहिपाहिप्रनतारतिहारी
सकरुनबचनसुनतभगवाना चलेसुधारिसरासनबाना
रामसेननिजपाछेंघाली॥ चलेसकोपमहाबलसाली
खैंचिधनुषसरसतसंधाने॥ छूटेतीरसरीरसमाने +॥
लागतसरधावारिसभरा कुधरडगमगतडोलतधरा॥
लीन्हएकतेहिसैलउपाटी॥ रघुकुलतिलकभुजासोइकाटी
धावाबामबाहुगिरिधारी। प्रभुसोउभुजाकाटिमहिपारी
काटेभुजासोहखलकैसा॥ पच्छहीनमंदरगिरिजैसा॥
उग्रबिलोकनप्रभुहिबिलोका ग्रसनचहतमानहुँत्रयलोका

दो॰ करिचिक्कारघोरअतिधावाबदनपसारि॥

पंक्ति २० ८ श्लो० २ छं० ८ दो० दिनकेअंत फीअरु नाहिकिछु पातसगुन कांड ११ दौ० ॥ बाकी घोष सकेकाम औ प्रीत गयौ तक साध्यसकैं धनाबिलाप त्यागे किला तहांसुलीन स्नहस्तसुमान बरषहिं

गगन सिद्ध सुर त्रासित हौं हाहाकारु करि ।

समय देखि करुनानिधि जान्यो श्रवन प्रजंत सरासन तान्यो
बिसिख निकर निसचर मुख भरेउ तदपि महाबल भूमि न परेउ
सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा काल त्रोन सजीव जनु आवा
तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा
सो सिर परेउ दसानन आगे । बिकल भएउ जिमि फनि मनि त्यागे
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा । तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा
परे भूमि जिमि नभ ते भूधर । हेठ दाबि कपि भालु निसाचर
तासु तेज प्रभु बदन समाना सुर मुनि सबहिं अचंभौ माना
सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं
करि बिनती सुर सकल सिधाए तेही समय देवऋषि आए
गगनोपरि हरि गुन गन गाए रुचिर बीररस प्रभु मन भाए
बेगि हतहु खल कहि मुनि गए राम समर महि सोभित भए

छं॰ संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल बल कौसल धनी
श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥
भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने
कह दास तुलसी कहि न सक छबि सेष जेहि आनन घने

दो॰ निसिचर अधम मलाकर ताहि दीन्ह निज धाम
गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहिं श्रीराम ॥ १२ ॥

दिन के अंत फिरी दोउ अनी । समर भई सुभटन्ह श्रम घनी
राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा

भयो अहपूर्व बरषि है कहौ अब प्रान सुकवि रघुनाथ गुन सबै गीतन भयो नारद गैवो नै गाइ बंधन कह्यौ रु आभवंग प कीरबाको थौ रवन सुग्रीव नहीं पितस भ्रू लछिमन है प्रतिब कहै

छीजहिं निशिचर दिन अरु राती। निज मुख कहे सुकृत जेहिं भांती॥
बहु बिलाप दसकंधर करई। बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज बल बिपुल बषानी॥
मेघनाद तेहि अवसर आयो। कहि बहु कथा पिता समुझायो॥
देषहु कालि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई॥
इष्टदेव सों बल रथ पायेउँ। सो बल तात न तोहि देषायेउँ॥
इहि बिधि जल्पत भएउ बिहाना। चहुँ दुआर लागे कपि नाना॥
इत कपि भालु काल सम बीरा। उत रजनीचर अति रनधीरा॥
लरहिं सुभट निज निज जय हेतू। बरनि न जाइ समर षगकेतू॥

दो॰ मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गएउ अकास॥
गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहिं त्रास॥७२॥

शक्ति सूल तरवारि कृपाना॥ अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना॥
डारै परसु परिघ पाषाना॥ लागेउ बृष्टि करै बहु बाना॥
दश दिशि रहे बान नभ छाई। मानहु मघा मेघ झरि लाई+॥
धरु धरु मारु सुनिय धुनि काना जो मारे तेहि कोउ न जाना॥
गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं देषहिं तेहि न दुषित फिरि आवहिं॥
अवघट घाट बाट गिरि कंदर माया बल कीन्हेसि सर पंजर
जांहि कहाँ ब्याकुल भए बंदर सुरपति बंदि परे जनु मंदर
मारुत सुत अंगद नल नीला। कीन्हेसि बिकल सकल बलसीला
पुनि सुग्रीव बिभीषन लछमन सर न मार कीन्हेसि जर्जर तन
पुनि रघुपति सैं जूझै लागा। सर छाडै होइ लागहिं नागा॥

मेघनाद घोर संग्राम करि बध को प्राप्त भयो हनुमान बानो धड़ लेगो लंका धयो गढ़ देष हस्मा क्षा ब्याकुलता

संपूर्ण क्षय भयो अंगद जीत सबका पारि बध जानि रावण दिग्पति हू बिन भार अ सभ कहिंद्री मति भ्राति बिलाप कियो तहाँ रावन तानउ पद्धा कारि संसार पुनिस्यार्दि देषाह निज स्वभाव

[illegible]

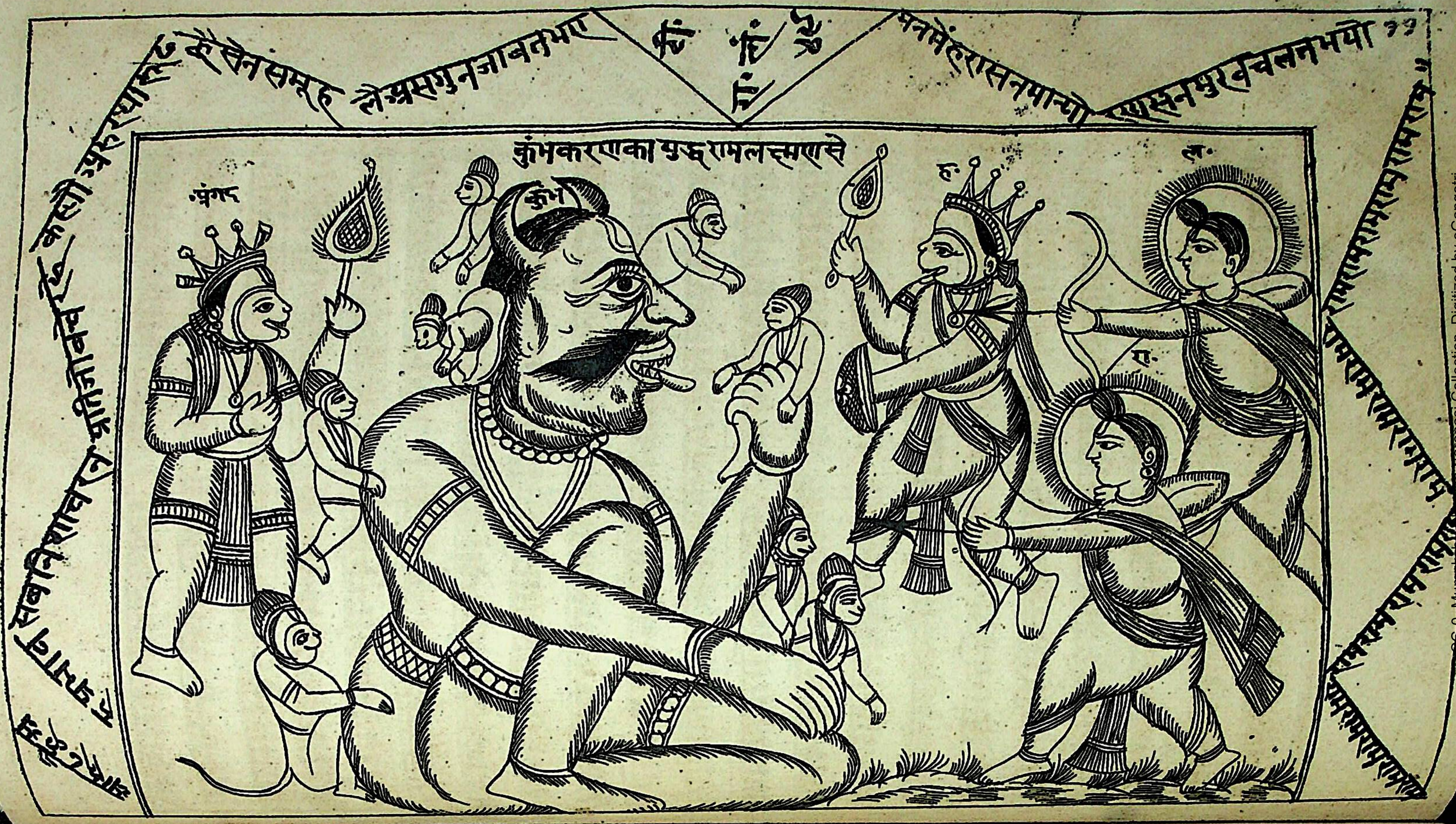

कुंभकरणका युद्ध रामलक्ष्मणसे

अंगद
कुंभ
ह.
ल.
रा.
हनुमान सबनिशाचर न प्रातिजो बचे रहे कसौ अस्त्र स्या
है सैनसमूह लै अस गुनजा बतभए
मनमेंहरासनपान्यो
सनभुवचलनभयो
रामरामरामरामरामरामरामराम

व्यालपासबसभएउखरारी स्वबसअनंतएकअबिका
नटइवकपटचरितकरनाना सदास्वतंत्रएकभगवाना
रनशोभालगिप्रभुहिंबंधायो नागपासदेवन्हभयपाये

दो· गिरिजाजासुनामजपिमुनिकाटहिंभवपास।
सोकिबंधतरआवैव्यापकबिश्वनिवास॥७३॥

चरितरामकेसगुनभवानी तरकिनजाइबुद्धिबलबान
असबिचारिजेततबिरागी। रामहिंभजहिंतर्कसबत्या
व्याकुलकटककीन्हघननादा पुनिभाप्रगटकहैदुर्बा
जामवंतकहखलरहुठाढा। सुनकरताहिक्रोधअतिबा
बूढजानिसठछाडेउतोही। लागेसिअधमपचारैमोह
असकहितरलत्रिशूलचलायो जामवंतकरगहिसोधा
मारेसिमेघनादकैछाती। परायूमिघुर्मितसुरघाती
पुनिरिसानगहिचरनफिरायो। महिपछारिनिजबलदेखा
बरप्रसादसोमरैनमारा॥ तबगहिपदलंकापरडा
इहांदेवऋषिगरुडपठायो रामसमीपसपदिसोआ

दो· खगपतिसबधरखाएमायानागबरूथ॥
मायाबिगतभएसबहरषेबानरजूथ॥
गहिगिरिपादपउपलनखधाएकीसरिसाय॥
चलेतमीचरबिकलतरगढपरचढेपराइ ७४

मेघनादकेमूर्छाजागी। पितहिबिलोकिलाजअति
तुरतगयउगिरिबरकंदरा। करौंअजयमखअसमनध

इहांबिभीषनमंत्रबिचारा सुनहुनाथबलअतुलउदारा
मेघनादमखकरैअपावन। खलमायावीदेवसतावन।
जोंप्रभुसिद्धहोइसोपाइहि नाथबेगिपुनिजीतनजाइहि
सुनिरघुपतिअतिसयसुषमाना बोलेअंगदादिकपिनाना।
लछमनसंगजाहुसबभाई॥ करहुबिध्वंसयज्ञकरजाई
तुमलछमनमारेहुरनओही देषिसभयसुरदुषअतिमोही
मारेहुतेहिबलबुद्धिउपाई जेहिछीजैनिसिचरसुनुभाई
जामवंतसुग्रीवबिभीषन सेनसमेतरहहुतीनोजन।
जबरघुबीरदीहअनुसासन कटिनिषंगकसिसाजसरासन।
प्रभुप्रतापउरधरिरनधीरा बोलेघनइवगिरागंभीरा॥
जोतेहिआजबधेबिनुआवौं तौरघुपतिसेवकनकहावौं
जोसतसंकरकरहिंसहाई तदपिहतौरघुबीरदोहाई॥

दो॰ रघुपतिचरननाइसिरुचलेउतुरंतअनंत॥
अंगदनीलमयंदनलसंगसुभटहनुमंत॥७४॥

जाइकपिन्हसोदेषावैसा। आहुतिदेतरुधिरअरुभैंसा
कीन्हकपिन्हसबयज्ञबिध्वंसा जबनउठैतबकरहिंप्रसंसा
तदपिनउठैधरेन्हिकचजाई लातनहतिहतिचलेपराई॥
लैत्रिसूलधावाकपिभागे। आएजहँरामानुजआगे॥
आवापरमक्रोधकरमारा गर्जेघोररवबारहिंबारा॥
कोपिमरुतसुतअंगदधाए हतित्रिसूलउरधरनिगिराए
प्रभुकहँछाड़िसिसूलप्रचंडा सरहतिकृतअनंतजुगखंडा

उठिबहोरिमारुतजुवराजा हतहिंकोपितेहिघावनबाजा
फिरेबीररिपुमरैनमारा। तबधावाकरिघोरचिकारा॥
लछमनमनअसमंत्रदृढ़ावा एहिपापिहिमैंबहुतखेला
आवतदेखिक्रुद्धजनुकाला लछमनछाड़ेबिसिखका
देखेसिआवतपविसमबाना तुरतभएउखलअंतरधान
बिबिधबेषधरिकरैलराई कबहुँकप्रगटकबहुँदुरिज
देखिअजयरिपुडरपेकीसा परमक्रुद्धतबभएअहीसा
सुमरिकोसलाधीसप्रतापा सरसंधानकीन्हकरिदापा
छाड़ाबानमांझउरलागा। मरतीबारकपटसबत्यागा॥

दो॰ रामानुजकहरामकहँअसकहछाड़ेसिप्रान।
धन्यशक्रजितमाततवकहअंगदहनुमान ७५।

दो॰ रा॰ लं॰ ५२

बिनुप्रयासहनुमानउठायो लंकाद्वारराषिपुनआयो॥
तासुमरनसुनसुरगंधर्बा चढ़िबिमानआएसुरसर्बा॥
बरषिसुमनदुंदुभीबजावहिं श्रीरघुनाथबिमलजसगा
जयअनंतजयजगदाधारा तुमप्रभुसबदेवन्हनिसा
अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाए लछिमनकृपासिंधुपहँआ

क्षेपक

प्रभुहिबिलोकिसीसपदनावा अनुजउठायहरषउरला
कृपादृषिकरिअनुजहिहेरा बिगतभयोश्रमजबक
बानबेधितनदेषियतकैसे बानकनूनसरपूरितजैसे॥
मुषप्रसन्ननादेषिछकेसब रिपुबधकेहेतुबिभीषनहि
धरेउसीसआनप्रभुआगे ॥ बानरभालबिलोकनला
प्रभुकौतुकीनिरखसोईसीसा रावनकहेउकोसलाधीस

दो॰ प्रभुआयसुमुनिकौसल्यानिरखेउजतनकराइ
कटकसहितरघुबंशमणिशोभितअतिदोउभाइ।

कृपादृष्टिसबकपिकोनिहारे भराश्रमरहितरामबैठारे॥
सुनहुउमारहिबिधिरिपुमारे सुनगंधर्बमुनिभएसुखारे
अबसोसुनहुभुजातेहिकेरी खगनिमिगईलंकशरप्रेरी।
मेघनादआंगनमैंपरी ऽऽ॥ बानबेधिश्रोणितसनभरी
देषततहाँसुलोचनिकैसी रतितेंरुचिररूपगुनजैसी॥
नागसुतादशकंधपतोहू। बासवरिपुतियछबिमयजोहू
हेमसिंहासनसोहतबाला सेवतबिद्याधरत्रयमाला॥
पूजतबिबिधबिनयकरताही सुषप्रमोदकोसकतसराही
तहाँपतिभुजापरीरहिमानो मनहुँसकलसुषतरुकीकावी

दी॰ रा॰ लं॰ ५३

दो॰ तबनिजदासिन्हदेषितहाँश्रोणितश्रवतभुजदंड
भएउसमरआश्चर्यमयमनहुअखंडउनखंड ऽ॥

सुनकरसकलसषीमुषबैना तजिसिंहासनउठीसुनैना॥
प्रेमसुभावधुकधुकीधरकी सूचकप्रभुभएहनीभुजफरकी
सोतमहारनरावनरामहिं। बीरधुनीरमोरपियनामहि
सकलसुरासुरसकहिंनसूझी बिधिबामतापरतनहिंबूझी
रतनाकरहुतगईचलिआपू पतिभुजलषिकरिकोटकलापू
कंचनमनिगनभूषनसोई।। महाबिरूपसमआननहोई
देषतमनहिलिआवनदेतही जासुप्रभावसुनहकिनरेही
नीरनारिभोजनपरिहरही। बारहबरषतासुकरमरही

दो. नारिबिचारमनरेकहै मैंपतिदेखतनारि ॥
भुजालिखमेरकुचितनहीसुनकरदीनपसारि ॥

लषिरुषतासुसखीउठिधाई । सोतेहिषोजधरीलेआई ।
दीनहथमणिमयअगनाई । लिखनलषनकीरजुनि
नीरनारिभोजनशतकोटी । तजततासुमहिमामतिछो
अछुपअखंडअनरवअबिनासी । अतुलअमितघटघटकेबासी ।
अगटहिंपालहिंपुनसंहरई ॥ निगुनरूपनयपरतिधरई ।
जोकालकुकारकालभयकर । बरनतसेषसारदसंका ।
लीलातनुसुरसेवकहेतू ॥ जासुनामभवसागरसेतू ।
मुनिमनपुंडरीकजाकेघर । बचनबिबेकबिनाबुद्धि

दो. कोटिकल्पबरनतनिगमआगमजासुगुनगाय
तमधरिरजड़जीवबिनुकिमभुजकरनसुलिखाय ॥

ममसिरगयेउसमररघुराई । तबअनीतलगिभुजआय
इहिबिधिलिखेउसकलभुजबाता धरीभूमितबअनिबिक
बांचसकलभुजलिखनजथारथ लक्षणरामनामपरमारथ
त्रियासुभावनदपिबहुभांती बिलषनसकलसखिनव
गुनगनसाहससीलनाहको कहिरोवनबलबिपुलबाल
जेहिभुजबलप्रभुनाथबिलोका सोप्रभुप्रानुसमरमाहिसोव
मणिगणभूषणबसनबिसारत महिलोटतकरतलसिरमा
मगनबिपतनिजतनसुधनाहीं रुदनबिपतिकाहिनकेहिवा
छिनकप्रबोधसखीकोउकरही बहुरशोकघवानलजरही

छिनछिनउठतपरतधरनीतल पुनिपुनिसबसराहपतिकोबल

दो· तिनमैंसरबोसयानइककरिसमुझावतबैन
शोकछाड़पतिहेलतासुमतिकरौमतिबैन॥

सुनकरसहसाननतनजाता। सत्यकहततुमसबोसुमाता।
बिधिनिर्मितसुधमोकहलाहू सुखपरिपूरभवनसबकाहू
बिजयरामलछमनकहँस्रामा सुजससकलमर्कटकुलपावा
कुलकलंकनहिंसेऊबिभीषन कुलकुठारअससनेऊनदोषन
छूटबंदिप्रससुरगनकेरी ॥ निजनिजपुरलहेहाईफेरी।
मुनिपुलस्त्यकरभाकुलनासा अबलगिरविशशिसुषकारहिंप्रकासा
तेजवंतपावकपरिहरिडुख बहवसमीरअनुअन्नेसुष।
सलिलगंगनिर्मलजलआजू सुबसनसहिंसुरनायककाजू

दो· जमकुबेरदिगपालसबप्रभुदिनसुरनरनाग
पाइअधीशबिहायदुखपायसुयशाबिभाग।

रतनाकरमंदिरमहँआई। देखतमणिगणधनबहुताई
सुरपतिभुवनसुपदतरनाहीं जहँदिधिसिथनतनधरैकमाहीं
देखतबिनयनमनअनुरागा पतिपदप्रेमानिसुनमनपागा
देतदानमनिभूषनचीरा ॥ धेनुबसनमनहारकहीरा॥
मणिमयशिविकारुचिरसुहाई भुजबदाइपहिरायबनाई ॥
आपनबदनभईसुनिआई । सुरदुर्लभसुषसदननिहाई
बीतरागनिमिततनबिषयगन तेहितसभांतिदियोपतिपदमन
सकसारिकासुलोचनजाये कनकपिंजरनराखिपढ़ाये॥

व्याकुलकहँकहाँजानसुनैना सुनधीरजपरिहरतसबप
मराबिकलखगमगरहिभांती अपरदसाकैसेकहिजाती॥
प्रजालोगगृहतजिसंगलागे प्रेमउमगिलोचनजलपागे

दो॰ बाजनलगेनिसानबहुढोलडुंडुभीभेरि॥
पुरजनपरिजनसंगसबचलेपालकीघेरि॥

देखिभीरदसकंधरद्वारे॥ सजकभयेसबबीरप्रचारे
जानेउकरकरिपुनकरआवा अस्त्रशस्त्रकरगहिकरधाव
धनुचढाइकरिनरकसबांधे कोउअसिचर्मसरासनसांधे
तोमरपरसुप्रचंडगदागहि। रोषनचोषेमूलशक्तिगहि
मारुमारुधरुधरुकहिधारा अगरदशाननबिजयसुनावे
गर्जततर्जतगिरागंभीरा॥ समरभयंकरनिसिचरबीरा
निपटहिनिकटपालकीआई वीरहुसकलभटरहेलजाई
देखिजुहारिनागपतिकन्या। सतीसिरोमणित्रिभुवनध

दो॰ द्वारपालदसकंधबहुखबरजनाईजाय॥
भयेउरज्ञायसुबेगितबबचनकहँतबिलषाय॥

तुमहिंअछतअसदसाहमारी सुषनजभईशोकअधिका
नभपथहैभुजममगृहपरी। बाणबेधिश्रोणितननभ
देषिभुजामनमैंअनिडरी॥ संसयजानिदीह्रकरषरी॥
लिषीरामलछिमनमहिमारन क्रमक्रमसोसबकथाक
रगीसोरहीबानगुनगाथा। जरहौंसंगजोपाउँमाथा॥
रनकबंधभुजममगृहआई शिरतहाँगराउजहाँरघुराई

वारदुसोजननमिलहिमोहिसीसा तुमसामर्थनिशाकरईशा।
सुनतकुलिसमगिराबधूकी जीवनप्रासहूसाननमूकी।
तदपिधीरधरिकमसिषप्रबोधा। कहिकोहिमोहिसमानजगजोधा।

दो·रामलषनसुग्रीवनलनीलद्विबिदहनुमंत ॥
मायनिभीक्षनरिषभकरिप्रानबमारतुरंत + ॥

प्रबलगिरहेउभरोसाभारी। कुंभकरनघननादसुरारी।
सुनहुप्रानलगिकीन्हनसूझा इनसबकरपुरुषारथबूझा
मरेउसोनरबानरकेमारे ॥ बालसुनतध्वनिलाजहमारे
गिनतीकवनबीरसेंतिनकी आनिदुरदशाकीरकपिजिनकी
तजहुसोककुलबधूपतोह्व उनसमानजिनज्ञानसिमोह
पुनिबिलंबकरोघरचारी। देषहुमोरभयंकरभारी॥
प्रानदसीसतवशत्रुनकेरा। बिनप्रयासनहिंलावौंबेरा।
भोगतजंतुपुराकृतभोगा॥ ननुकिन्निभ्रबनचरसोगा।

दो·मेरुउषारनहारजेधराधरतकरबीच + ॥
तेभरखायेमशकाशिशुकालकुटिलनानीच॥

क्रोधावेषप्रगल्भहिबोली हृदयशोकतनअवलनडोली
समाधाननहिमानतसोई। सुनिप्रलापपरितोषनहोई
नरबानरसुरुषारथदेखत। बड़ोप्रभावछोटकरलेषत॥
करसिंधुकपिलंकाजारी लघुकरमाननताहिसुरारी
कुंभकरणप्रानिकायमहोदर ममपतिगिरिउसमेनसहोस
तीरिपुबहुतदसाननजीती। देषहुमहामोहकरीती॥

उतरुदेहुतौपानकहोई ।। कहाविचारकारैसबसेवो
फिरहुराजकछुमोहनकाजू बिनपियसकलनरकव

दो॰ वरताहुउठीसुलोचनागइसयतनथायास।।
पद्माहिरोवतसकलकहअगटशोकइतिहास

आइहिजेसबकथाबषानी। सुनतसुनतरोवतरावनरानी।
कहनिजपतिभुजसिरखतबहोरी रामलषनमहिमानहियो
कहोवहुरिदशकंधरकोधा मुएबिंबनकीहसिबोधा
सुनिनिजपुत्रबधूकीबानी। बोलीदुषितमंदोदरिरानी।
कहाजोमानहुसत्यसयानी सुनीजोनारदमुनिकीबानी
पाछलिबातभइसबसांची अनुभवकीहनएकहुबां
देविनहोइमषारिषिभाषत अपनेमहामोहमनराषत।
अगलीकथासमाससमेता सुनपुत्रीरिषबरनेउजेता।
बैरिभावदशकंधरकृजब। आनहुगणलीननहिंबूज
सियासोकसंकटतेंछूटहिं बानरभालुराजघरलूटहिं
सुरमनभूषनबसनबिमाना भोगकरहिंबनचरकुल

दो॰ राजबिभीषनपायहैं अमरकल्पनिरवाह।।
भावीबसदुखसुषजगतउपदेशियकहुका।।

मुनिबरबचनमोहपरतीती अनुभवदोउहारअरुजीती
अबपुत्रीपरहरिसबसोका पतिसंगबेगिसाधपरलो
जाहुरामपहँपतिशिरलागी तजसंकोचआनविनमां
आजनहोइलाजकरभूषन। सोमेंहीनगुनगनियनभूषन

हैपुनिससुरबिभीषनतोरा बालतनयबालकसममोरा
एकनारिब्रतरघुबरकेरा। लषनसुयशतुमसुनेउघनेरा
जामवंतमंत्रीसुग्रीवा।। द्विबिदमयंदमहाबलसीवा
जानहुब्रह्मचर्यहनुमंता।। शिवस्वरूपभवहरभगवंता
सदानीतिरतराजनरेसा।। तहांजानकछुकवनकलेस

दो· बिदिततोरयातेभुजलिखतलक्ष्मणरामप्रभाव
हमहूरिपिभाषितकहेउ अबबिलंबजिनलाव + ।।

सुनतसासुसुषकरहितबानी जाहुरामपहअसजियठानी
बारबारबरननसिरनाई।। चलीजहांलक्ष्मणरघुराई।
देषतकटकभालुकपिकेरा सिंधुसुबेलमहीधरघेरा।।
उमगेउअमनोमहोदधिकूसर हरितपीतकपिधूमरधूसर
बीभत्सभाषनअनुहेरी मनहुलेतबड्वानलघेरी।।
गिरितरुधरसुभटसहसभयंकर जहंतहंअगारहोइजनुजलधर
लक्ष्मणशेषसुअंकसीसधर कालजलधिसोवतराघवबर
अषवटजहंतहंठेहिबिभीषन अससुकृतीकहुंसुनेनदोषन

दो· देषतउरतसुलोचनाधीरजधरतबहोरि।।
महाराजरघुबीरकहुंबिनयसुनावोमोरि।।

बानरसकलउठेअसबोली अरिपुरतेंआवतइकडोली
जानिपरतरावनअबबूझा। भ्रमतिमेघनादतबरूझा
हमजसीनहिदीनपठाई। तजहुसोचअबमिटीलराई
जिहलगिआगरकीन्हपुरआपी बांधेउसेतुहेतजिहिलागी

सोइसीताअबबिनभ्रमपाई जानकिबिधिअनुकूलसहा
बिजयरामसुग्रीवहिआवा। सुजसबीरबानरकुलपा
बिरहरामलक्ष्मणकरछूय बिनकलेसलंकागढ़हूय।
जुगजुगकीरतिचलबहमारी। कहाँराक्षसकहँलघुबनचा

दो॰ इहिबिधिचारुबिचारुकरिनिश्चैधरिमनमाह।
भएउकाजरघुराजकरबानदूसरीनाह***॥

पैठलकरकअतिहिसबुझाई अनबिनारिजनुघरघरआई
आगहिजाइदेषिरघुबीरा। छबिमयस्यामलगौरसरीर
मरकतकनकछबिहिजनुनिंदत धन्यसोजनमहिमानबींत
मत्तगयंदसुंडभुजदंडा।५॥ धनुषबाणअसिधरपचंड
उरबिसालअतिउन्नतकंधर कंबुकंठरेषात्रयसुंदर।
दसनपाँतिकीकांतिकहँको लावतमनपरतरहिलसे
देषनअधरनकीअरुनाई। बिंबाफलबंधूकलजाई
मुकतुंडकनासिकालजाई थाकेउकबिपरलरनहिपा

दो॰ छबिमयगुनमयतेजमयरामउदधिअवगाह।
जहाँनपावतपारसुरकिमिबरनैकबियाह॥

भ्रुकुटीललितकपोलसुहाए सीसजटाकरमुकुटबनाय
भालबिसालतिलकजनुसोहै ध्यानसमयमुनिमानसमो
कलबलबसनकूनकटिबांधे करसरसुभगसरासनकां
बीरासनआसीनकृपाला॥ नवपल्लवप्रसूनकरमाला
चरणसरोजबरणिनहिंजाई जहाँमुनिमधुकररहेलुभा

प्रगट भए जिहि थल तें गंगा । स्रुति पुरान कहँ कथा प्रसंगा ।
नख ग महेस बिरंचि जाहि कौं । लोचन गोचर होन काहि कौं ।
जन आरत भंजन जो कोई । भव सागर तारन कै सोई ॥

दो· प्रनतपाल बिरदावली जिन चरनन की बान
सोक हरन संसय दलन करन सु मंगल खान ॥

कर जोरें अंगद हनुमाना ॥ द्विबिद मयंद कुमुद बलवाना ।
जामवंत कपिपति बलसीला । रिषभ सुषेन सहित नल नीला ।
महाबीर बानर सब राजत ॥ लषन बिभीषन रोउ रिसि आगत
मिनि भाषित प्रभु चरण सुसेवक चितवत रघुनंदन देवक
सभा मध्य सोहत अघ मोचन कीने सफल निरखि निज लोचन
करत दंडवत सिर धर धरनी । तिहि कर चरित बिभीषन बरनी
अनुज दसकंधर केरी ॥ बड़ि पतिब्रता जानि प्रभु हेरी
मेघनाद की नारि सुसीला अस गति नवा बिरोध कर लीला

दो· सुये जान पति भुजाहि न बासिखु समुझाई मोह
महाराज रघुबंस मणि जाचन आई तोहि ४ ॥

करत प्रनाम प्रेम मन हियो रे । करुणा बचन कहत कर जो

छं· परसे चरण करि प्रेम पूरण प्रणतपाल खरारि के
जिहि नाम मन शंकर शेष सुर मुनि धरणि भंजन भार को
प्रभु जान सो बिनती सु लोचनि करत कहै बिनती घनी
जय शोक हरण कृपाल जय जय जपत जय रघुकुल मनी
प्रभु अमल रूप सुभाव सीतल अतुल बल त्रिभुवन धनी

छं॰

जयहरणधरणीभारबाहुबिसालषंडनषलअनी॥
नवदीनबंधुदयालअपरमपारसबगुणआकरे॥
करुणानिधानसुजानसीलसनेहरूपउजागरे॥
षट्अष्टलोकजोरचनपालनप्रलयसोमायासुरी
कहभांतिबरणौनाथगुणगणनारिजड़मतिबाबरी
जेचरणईसमहेशसारदकानिनिरंतरध्यावहीं
हमभूरिभागसरोजपदसोहर्षसिरसुलगावहीं॥
गहकरबाणौसारंगपाणीसबगुणषानीरामकी
सुरअसुरभीरहाकरावणसमतकभग्नाहिरतकमनकी
मैरिपुसुतनारीजानअघारीअधिकारीनहिंदुषभरी
हरबिरहदुषारीअतिभयकारीसहबंधुबारीउपकारी
तवसरननआईजनसुषदाईरघुराईकरुणासागर॥
पतिमत्तकपाऊंजरसंगजाऊंसिरपाऊंसोभाआगर
पतिमतनत्यागीअतिबडभागीअनुरागीजिसुरांतर
ममताकिमतासबरतआसजासुअचलजगपांतिरही
यहबिधिपदपंकजसेवारमाअजसिरनायसेउकरजोरे॥
सुनपंकजलोचनबचनसुलोचनलोचनमेंजलधारबहे॥
दो॰ असप्रभुदीनबंधुहरिकारनरहितदयाल+॥
तुलसिदाससठताहिभजछाडकपटजंजाल+॥

तुमअंतरजामीभगवाना। नाहितोहिआरसमयअवस
करुणाबचनसुनतरघुबीरा पुलकरोमभयोसियबसरीर

देहुंजिवायजोरघानिआमू करहुलंककलपशतराजू
छाडसोचअबमनरखाहू । तुरतभवनअपनेफिरजाहू ॥
सुनअससत्यसिंधुखरबानी मनमेंबनचरअतिभयमानी
कहिनसकतकछुप्रभुरुखदेखी कहाकरवकरतारबिशेखी
सबदेवनकरसोचनसाई ॥ जोकरकृपारामरहज्याई ॥

दो॰ राजबिभीषनलंककरकोहिबिधिकरिहहिंजाइ ।
समझबैरिघननादजबगहतसरासनधाइ ॥

सुखरूखदेखिकपिनभयमाना प्रणतपालभगवंतसुजाना
देखिबकुतरघुबरकरछोहू । बिनयकरतदशकंधपतोहू
तुमउदारसबदेवननायक । करुनामयदेवरघुनायक
हमकुबिचारिदेखमनमाहीं जीवनतेंअसमरनसराहीं ॥
भुजबलजीतलोकबसकीन्हे चौदहभुवनभोगकरलीन्हे
सतीरथजाचकबड़चीन्हा प्राणसुधनलक्ष्मणकदीन्हा
अबनउचितपतिदेउपहारा नाहिपरअधिकसोदरसनुमारा
हमहुजाइमरबसतसाधी। मिलवतुमहिंजसमिलतसमाधी

री॰ रा॰ लं॰ ६२

दो॰ निर्मलगतिअवसरभाउसुनहुसत्यरघुबीर
तुमहिंमिलतनहिंहोयभवजथासिंधुगतनीर ॥

मनकीजाननहारसुदेवा । भवसागरतारकुपदसेवा
तीनेउरामकथासबुलाई। मेघनादशिरदीन्हमगाई ॥
पायकतारथमानेउआपू ॥ प्रियबिरहसंभवपरितापू
अंचलपूछत्तमुखकीधूरी ॥ कहिममप्राणसजीवनमूरी

देषसदेहकहतसुग्रीवा ॥ भुजगहिलिखतजोहनिग्रीव
हँसिकहहिबरननौनिहहैसाँची नानरनिशिचरमायाजाँची॥
किनअसज्ञानमृतकभुजगावै जोमुनिबरसाधननहिंपावै
प्रभुअसकहेउहसवयहसीसा करतकुतर्कनउचितकपीस

दो· सिरसोंकहतसुलोचनाहसकुबेगममनाथ।
नानरसत्यनमानहैंलिखाजोतुमरेहाथ २ ॥

छिन्नकाबिलंबकीन्हनहिंबोला मृतकबदनमूहतनहिंषोला
पुनिमुनिकहतसोनागकुमारी अमिनभएउरनमेंकीरमारी
लगिलषनसरक्षोभबढ़ावा । प्रभुसमीपकसमोहलगाव
जोमनबचनकरमयहदेही। पतिदेवतानआनसनेही।
तौप्रभुसभाबीचसिरबोलै रहहिछायजससुजसअमोलै
जोजानतनदयहतिसाँई । बोलपठावतपितहिसराई
सुनितियबचनहँसेउतबसीसा चौंकेचकितभालुभटकीस
हँसेउठठायबरनसबदेषा । बिस्मयभएउसकलजिहिपे
कुलिससमानसुनानहिंजाई रहेउसोबरनबहुरुअगारी
सकुचकपीसहितोषेउनारी बडुआश्चर्यभयोबनचारी
पूछतकपिपतिपदसिरनाई । कारनकवनहँसासिरसाँई
प्रभुकहहैंसुनसुग्रीवकपीसा सीसहँसेकहँसुनहुअधीस
मनक्रमबचनपतिहिसेवकाई तियाहितरहिसमआनउपाई
असजियजानिकरहिंपतिसेवा तेहिपरसानुकूलसुनिदेवा
यहसतवतिमरुहिराजकुमारी तेहिसनतेहँसोसीसखरारी

सुनिप्रभुबचनकपिनसुखमाना।पुनिपुनिचरनगहेहनुमाना।
सुनुगिरिजाअसप्रभुप्रभुताई केवलभक्तहिदेतबड़ाई॥
जासुहृदयिजनमाउपजतनासा। असकौतुककरकौनकपासा॥

दो॰ सोसबपाइप्रभुचरणगहिबहुबिधबिनयसुनाय
आजकोदिनरनपरिहरहुममहितकौसलराय॥

बहुरिबिभीषनपगनपरीसो रघुपतिकरनादियमनसुदेसो
तुमपितुसमरसकंधरभाई यहिकुलकीनोहिलाजबड़ाई
मुनिपुलस्त्यपरिवारकदीपा पायेउफलरघुवीरसमीपा।
महामोहबसभ्रमनभलमाना ज्ञानभयोतबगुनपहिचाना
जुगजुगकरहुअकंटकराजू महितसुकीरतसुजनसमाजू
सुमरततुमहिसुजनगतपावा रघुपतिचरितसंगकरगावा
सुनतबिभीषणमनकरुणाभर अगरनकहतसभयबिरहाकर
कालकर्मगतिकहसमझाई चलीतुरतगुरुआयसुपाई

दो॰ बाहरकारिकपिकरकतोंफिरेउबिभीषणआप।
बिसरेउरसमुखबैरहीहृदयअधिसंताप॥ २॥

सिखवटाइपालकीकिचढ़ीसो रघुपतिकृपाप्रभावबढ़ीसो
हृदयराखिमूरतिघनश्यामा रसनारटतनिरंतरनामा॥
सरितसिंधुसंगमजहँपावन असस्थलपायगयेजहँरावन
संगमदोसरिसबरनबासू॥ मनोशोकरविकीअप्रकासू
पायरजायसुसेवकधाये। चंदनअगरभारबहुलाये॥
रचिदृढ़दारुणाचिताबनाई जनुसुलोकनसेनीलाई॥

पी॰ रा॰ लं॰ ६५

कौ

करिप्रनामसनजनपरितोषी	धीरजधरसिनाग्रमतमोषी
सिरभुजधरबैठीकरआसन।	भज्जानुजोगसिद्धिकरआस

दो॰ इतअग्नज्वालाबढ़ीलपटगगनलगिजाय॥
लषीनकाहूजाततेहिसुरपुरपहुंचीआय+॥

इतिसुलोचनाकथा॥

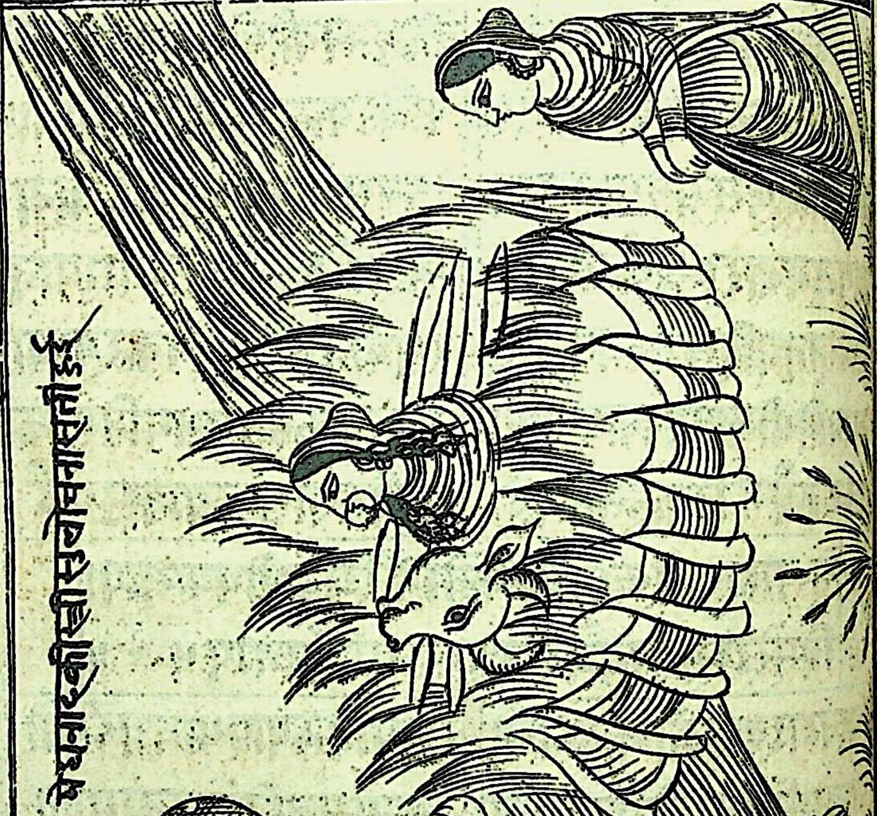
मेघनादकीस्त्रीसुलोचनासतीहुई

सुतबधसुनादसाननजबहीं मूर्छितभयउपरेउमहितबही
मंदोदरीरुदनकरभारी ~ ॥ उरताड़नबहुभांतिपुकारी॥
नगरलोगसबब्याकुलसोचा। सकलकहहिंदसकंधरपोचा।

दो· तबदसकंधरबिबिधबिधिसमुझाईसबनारि।
नस्वररूपजगतसबदेखहुहृदयबिचारि।७६॥

तिन्हहिंग्यानउपदेसारावन। आपुनमंदकथासुभपावन॥
परउपदेसकुसलबहुतेरे। जेआचरहिंतेनरनघनेरे॥
निसासिरानिभयउभिनुसारा। लगेभालुकपिचारिहुद्वारा।
सुभटबोलाइदसाननबोला। रनसनमुखजाकरमनडोला।
सोअबहींघरजाउपराई॥ संजुगबिमुखभयेनभलाई
निजभुजबलमैंबैरबढ़ावा। देहौंउतरुजोरिपुचढ़िआवा।
असकहिमरुतबेगिरथसाजा। बाजेसकलजुझाऊबाजा॥
चलेबीरसबअतुलितबली जनुकज्जलकैआंधीचली
असगुनअमितहोहिंतेहिकाला। गनैनभुजबलगर्बबिसाला॥

छं· अतिगर्बगिनैनसगुनअसगुनस्रवहिंआयुधहाथतें
भटगिरतरथतेंबाजिगजचिक्करतभाजहिंसाथतें।
गोमायुगीधकरालखररवस्वानबोलहिंअतिघने।
जनुकालदूतउलूकबोलहिंबचनपरमभयावने॥

सो· ताहिकिसंपत्तिसगुनसुभसपनेहुमनबिश्राम
भूतद्रोहबसमोहरतरामबिमुखरतिकाम ~ ॥
॥ ७७ ॥

चलेउ निसाचर कटक अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा॥
बिबिध भांति बाहन रथ जाना। बिपुल बरन पताक ध्वज ना
चले मत्त गज जूथ घनेरे॥ प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे॥
बरन बरन बिरदैत निकाया। समर सूर जानहिं बहु माया॥
अति बिचित्र बाहिनी बिराजी। बीर बसंत सेन जनु साजी॥
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं। छुभित पयोधि कुधर डगम
उठी रेनु रबि गयउ छपाई॥ मरुत थकित बसुधा अकु
पनव निसान घोर रव बाजहिं। प्रलय समय के घन जनु गा
भेरि नफीरि बाज सहनाई॥ मारू राग सुभट सुखदाई॥
केहरि नाद बीर सब करहीं। निज निज बल पौरुष उच्चरहीं॥
कहै दसानन सुनहु सुभट्टा। मरदहु भालु कपिन के ठ
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई॥ अस कहि सन्मुख फौज रेंगा
यह सुधि सकल कपिन जब पाई। धाए करि रघुबीर दोहाई॥

छं० धाए बिसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहुं सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना बान ते॥
नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजस बखानहीं॥

दो० दुहुं दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जान
भिरे बीर इत रामहिं उत रावनहि बखान॥७८॥

रावन रथी बिरथ रघुबीरा॥ देखि बिभीषन भयउ अधी
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित स

कैं ध्वजा नाना प्रकार के [illegible] दो: ॥ [illegible] ८३ [illegible]
पताका ध्वजादि ध्वजागि बाजन ओंकडकारादि बन आयो बि भीषन रघुनाथ को पियादे देखि रावन भागनहीं प्रभु धर्मबिबेक
दो: रा: लं: ७८
रथातितं स्वरूप कातें बिभीषन को संदेह कियो पुनः परस्पर भयजनक आप मातें युद्ध लक्ष्मी रावन नहीं लक्ष्मण कै बानन तें मूर्छित है लखन को

सारथी रथ घालै जौ ह्वौ अहं नहीं रू धाविगीत धोनजागकी प्रदु बाति कथा " " " " " " " "

नाथ न रथ नहिं तनु पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होय सो स्यंदन आना
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजन सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके

दो. महा अजय संसार रिपु जीत सकै सो बीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥
सुन प्रभु बचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज॥
एहि बिधि मोहि उपदेसेउ राम कृपा सुखपुंज॥
उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ॥
लरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना। देखत रन नभ चढ़े बिमाना
हमहू उमा रहे तेहि संगा। देखत राम चरित रन रंगा॥
सुभट समर रस दुहुँ दिसि माते। कपि जयसील राम बल ताते
एक एक सन भिरहिं पचारहिं। एकन एक मर्दि महि पारहिं
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं। सीस तोर सीसन सन मारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं। गह पद अवनि पटकि भट मारहिं

निसिचरभटमहिगाडहिंभालू। ऊपरढारदेहिंबहुबालू +॥
बीरबलीमुखजुद्धबिरुद्धे देषियतबिपुलकालजनुक्रुद्धे

छं· क्रुद्धेकृतांतसमानकपितनस्रवितसोनितराजहीं॥
मर्दहिंनिसाचरकटकभटबलवंतघनजिमिगाजहीं॥
मारहिंचपेटडिडाटिदांतनकाटलातनमींजहीं +॥
चिक्करहिंमर्कटभालुछलबलकरहिंजेहिषलछीजहीं
धरिगालफारहिंउरबिदारहिंगलअँतावरिमेलहीं॥
प्रहलादपतिजनुबिबिधतनुधरिसमरअंगनषेलहीं॥
धरुमारुकाटपछारघोरगिरागगनमहँभररही +॥
जयरामजोतृनतेंकुलिशकरकुलिशतेकरतृनसही
दो· निजदलबिचलतदेषेसिबीसभुजादसचाप +॥
रथचढ़िचलेउदसाननफिरहुफिरहुकरदाप॥ ८०॥

धायउपरमक्रुद्धदशकंधर सन्मुखचलेहूहकरबंदर॥
गहिकरपादपउपलपहारा डारेन्हितापरएकहिबारा॥
लागहिंसैलबज्रतनतासू षंडषंडहोइफूटहिंआसू॥
चलानअचलरहारथरोपी रणदुर्मदरावणअतिकोपी॥
इतउतझपटिदपटिकपिजोधा मर्दैलागिभयउअतिक्रोधा॥
चलेपराइभालुकपिनाना त्राहित्राहिअंगदहनुमाना॥
पाहिपाहिरघुबीरगोसाँई यहषलषायकालकीनाँई॥
तेहिदेषेकपिसकलपराने दसहुंचापसायकसंधाने॥

छं· संधानधनुसरनिकरछाडेसिउरगजियउडलागहीं

रहेपूरसरधरनीगगनदिसिबिदिसिकहँकपिभागहीं
भयोअतिकोलाहलबिकलकपिदलभालुबोलहिंआतुरे
रघुबीरकरुनासिंधुआरतबंधुजनरच्छकहरे ॥
दो॰ निजदलबिकलदेषिकटिकसिनिषंगधनुहाथ
लछमनचलेक्रुद्धहोइनाइरामपदमाथ ॥ ८१ ॥

रेषलकामारसिकपिभालू मोहिबिलोकुतोरमैंकालू
षोजतरहेउँतोहिसुतघाती आजुनिपातजुड़ावौंछाती ॥
असकहिछाड़ेसिबानप्रचंडा लछमनकियेसकलसतषंडा
कोटिन्हआयुधरावनडारे ॥ तिलप्रमानकरिकाटिनिवारे
पुनिनिजबाननकीन्हप्रहारा स्यंदनभंजिसारथीमारा ॥
सतसतसरमारेदसभाला । गिरिसृंगन्हजनुप्रविसहिंव्याला
पुनिसतसरमारेउरमाहीं ॥ परेउधरनितलसुधिकछुनाहीं
उठाप्रबलपुनिमूर्छाजागी छाड़ेसिब्रह्मदीन्हजोसांगी

छं॰ जोब्रह्मदत्तप्रचंडशक्तिअनंतउरलागीसही ॥
पर्‍योबीरबिकलउठावदसमुखअतुलबलमहिमारही
ब्रह्मांडभुवनबिराजजाकेएकसिरजिमिरजकनी ॥
तेहिचहउठावनमूढ़रावनजाननहिंत्रिभुवनधनी ॥
दो॰ देषिपवनसुतधाएउबोलतबचनकठोर ॥
आवतकपिहिहनेउतेहिंमुष्टिप्रहारप्रघोर । ८२ ॥

जानुटेकिकपिभूमिनपरा । उठासंभारिबहुतरिसभरा
मुठिकाएकताहिकपिमारा परेउशैलजनुबज्रप्रहारा ॥

मुरछागईबहोरिसोजागा। कपिबलबिपुलसराहनलाग
धिकधिगममपौरुषधिगमोही जौंतैजियतरहेसिसुरद्रोही
असकहिलछमनकहँकपिलायो॥ देषिदसाननबिस्मयपायो
कहरघुबीरसमुझुजियभ्राता। तुमकृतांतभक्षकसुरत्रात
सुनतबचनउठिबैठिकृपाला। गईगगनसोशक्तिकराला॥
पुनिकोदंडबानगहिधाए॥ रिपुसन्मुखअतिआतुरआ

छं॰ आतुरबहोरिबिभंजस्यंदनसूतहतिव्याकुलकियो।
गिर्योधरनिदशकंधरबिकलतरबानसतबेध्योहियो॥
सारथीदूसरघालिरथतेहितुरतलंकालैगयो॥
रघुबीरबंधुप्रतापपुंजबहोरिप्रभुचरननिनयो॥
दो॰ उहांदसाननजागिकरकरैलागकछुजग्य॥
रामबिरोधीबिजयचहसठहठबसअतिअज्ञ ८२

इहांबिभीषनसबसुधिपाई सपदिजाइरघुपतिहिसुना
नाथकरैरावनएकजागा॥ सिद्धकरेनहिमरहिअभागा
पठवहुनाथबेगिभटबंदर। करहिंबिधंसआवदसकंध
प्रातहोतप्रभुसुभटपठाए। हनुमदादिअंगदसबधाए
कौतुककूदिचढेसबलंका पैठेरावनभवनअसंका॥
जज्ञकरतजबहींसोदेषा। सकलकपिनभाक्रोधबिसे
रनतेंनिलजभाजगृहआवा इहांआइबकध्यानलगावा
असकहिअंगदमारीलाता। चितवनसठस्वारथमनरा

छं॰ नहिचितवजबकरिकोपकपिगहिदसनलातनमारही

७२ पृष्ठ का ३५ पं [illegible] टीका भाग दो १३७ चौ ५ छं ९ दो १ रावण विभीषण [illegible]

धरिबेशनारिनिकारबाहेरतेंतिदीनपुकारहीं
तबउठेक्रुद्धकृतांतसमगहिचरनबानरडारहीं।
एहिबीचकपिनबिधंसकृतमखदेखमनमहुंहारहीं
दो·जग्यबिधंसिकुसलकपिआएरघुपतिपास।
चलेउनिशाचरक्रुद्धह्वैत्यागिजिवनकैआस ८४

चलतहोंहिंअतिअसुभभयंकर बैठहिंगीधउडाहिंसिरन्हपर
भएउकालबसकाहुनमाना। कहेसिबजावहुजुद्धनिसाना।
चलीतमीचरअनीअपारा। बहुगजरथपदातिअसवारा।
प्रभुसन्मुखधाएखलकैसे सलभसमूहअनलकहँजैसे
इहाँदेवतनअस्तुतिकीन्ही दारुनबिपतिहमहिंएहिंदीन्ही
देवबचनसुनिप्रभुमुसकाना उठिरघुबीरसुधारेबाना।
अबजनिरामखेलावहुएही अतिसयदुखितहोतबैदेही
जटाजूटदृढबांधेमाथे ।। सोहहिंसुमनबीचबिचगाथे
अरुननयनबारिदतनस्यामा अखिललोकलोचनाभिरामा
कटितटपरिकरकस्योनिषंगा। करकोदंडकठिनसारंगा।।

छं·सारंगकरसुंदरनिषंगसिलीमुखाकरकटिकस्यो।
भुजदंडपीनमनोहरायतउरधरासुरपदलस्यो *।।
कहदासतुलसीजबहिंप्रभुसरचापकरफेरनलगे।
ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमहिसिंधुभूधरडगमगे।
दो·शोभादेखिहरषिसुरबरषहिंसुमनअपार।
जयजयजयकरुनानिधिछबिबलगुनआगार

निम्नापनसा प्रहनाद प्र उतंदानकी यज्ञकनीक दनबपातर घुनाथकपिन कआवाहं पराविधंसि [illegible]

टी· रा· लं· ७३

[illegible] देखि [illegible] मधुतानि श्रीरघ नाथप्रभुबानों [illegible] पंचप्रकार्षी [illegible]

× × × हो जै सब भूप उढकारी नव प्रभु [illegible]

एहींबीचनिसाचरअनी। कसमसातआईअतिघना
देषिचलेसन्मुखकपिभट्टा। प्रलयकालकेजनुघनघ
बहुकृपानतलवारचमकहिं जनुदहदिशिदामनीदमकीं
गजरथतुरगचिकारकठोरा गर्जेहिंमनहुबलाहकघोरा
कपिलंगूलबिपुलनभछाए मनहुँइन्द्रधनुउएसुहाए॥
उठैधूरिमानहुजलधारा। बानबुंदभैवृष्टिअपारा॥
दुहुँदिशिपर्बतकरहिंप्रहारा बज्रपातजनुबारहिंबारा॥
रघुपतिकोपिबानझरलाई घायलभैनिसिचरसमुदा
लागतबानबीरचिक्करहीं। घुर्मिघुर्मिजहँतहँमहिपर
स्रवहिंसैलजनुनिर्झरभारी। स्रोनितसरकादरभयकारी

छं॰ कादरभयंकररुधिरसरिता चलीपरमअपावनी।
कोउकूलदलरथरेतचक्रअवर्तबहतिभयावनी॥
जलजंतुगजपदचरतुरगखरबिबिधबाहनकोगने
शरशक्तितोमरसर्पचापतरंगचरमकमठघने * ॥

दो॰ बीरपरहिंजनुतीरतरुमज्जाबहुबहफेन * ॥
कादरदेषिडरहिंतहँसुभटनकेमनचैन ८६॥

मज्जहिंभूतपिसाचबेताला। प्रथममहाझोटिंककराल
कांककंकलैभुजाउड़ाहीं ॥ एकतेछीनएकलै
एककहहिंअैसिउसौंधाई ॥ सठहुतुम्हारदरिद्रनजाई॥
कहरतभटघायलतटगिरे जहँतहँमनहुँअर्धजलपरे
षैचहिंगीधआंततटभए। जनुबंसीषेलहिंचितदये॥

स बिन्नी नेवारि ड मतें माया नव प्रभु भीति है पशुनम गाँटेहम धुनः हउ दुक्रमय आमन

सत्र श्रोर सब
श्रोत पे पृथक्
पृथक् युद्ध
कोर व्याकुल
कीये नहीं नाम
बैन के घाते

दो॰
रा॰ लं॰
७४

मद्धे है
रातिजानि ना
को सूत्र पथ पर
तेउ ज्ञान भयो
तहां निसाचर
गनैं सैनि
सव्यो ॥ ८९ ॥

बहुभटबहहिंचढेखगजाहीं जनुनावरिखेलहिंसरिमाहीं
जोगिनिभरिभरिखप्परसंचहिं भूतपिसाचबधूनभनंचहिं।
भटकपालकरतालबजावहिं चामुंडनानाबिधिगावहिं।
जंबुकनिकरकटक्कटकट्टहिं खाहिंहुआहिंअघाहिंदपट्टहिं
सीसपरेमहिजयजयबोल्लहिं कोटिन्हरुंडमुंडबिनुडोल्लहिं

छं॰ बोल्लहिंजोजयजयरुंडमुंडप्रचंडसिरबिनुधावहीं।
खप्परिन्हखग्गअलुज्झिजुज्झहिंसुभटभटन्हढहावहीं।
बानरनिसाचरनिकरमर्दहिंरामबलदर्पितभए॥
संग्रामअंगनसुभटसोवहिंरामसरनिकरन्हिहए।

दो॰ रावनहृदयबिचाराभानिसिचरसंघार ×॥
मैंअकेलकपिभालुबहुमायाकरौंअपार। ८७।

देवनप्रभुहिपयादेदेखा ॥ उपजाउरअतिछोभबिशेषः
सुरपतिनिजरथतुरतपठावा हरषसहितमातलिलैआवा।
तेजपुंजरथदिव्यअनूपा ॥ हरषिचढेकोसलपुरभूपा।
चंचलतुरगमनोहरचारी। अजरअमरमनसमगतिकारी
रथारूढरघुनाथहिदेखी ॥ धाएकपिबलपाइबिशेषी
सहीनजाइकपिनकैमारी तबरावनमायाबिस्तारी ॥
सोमायारघुबीरहिंबांची। लछमनकपिन्हसोमानीसांची
देखीकपिन्हनिसाचरअनी। अनुजसहितबहुकोसलधनी

छं॰ बहुरामलछमनदेखिमर्कटभालुमनअतिअपडरे॥
जनुचित्रलिखितसमेतलछमनजहँसोतहँचितवहिंखरे

निजसेनचकितबिलोकिहँसिसरचापसजिकोसलधनी
मायाहरीहरिनिमिषमहुँहरषीसकलमर्कटअनी
दो॰बहुरिरामसबतनचितैबोलेबचनगंभीर॥
द्वंदयुद्धदेखहुसकलश्रमितभएअतिबीर।८८।

असकहिरथरघुनाथचलावा बिप्रचरनपंकजसिरुनावा
तबलंकेसक्रोधउरछावा गर्जततर्जतसन्मुखधावा॥
जीतेहुजेभटसंयुगमाहीं सुनतापसमैंतिन्हसमनाहीं
रावननामजगतजसजाना लोकपजाकेबंदीखाना॥
खरदूषनबिराधतुममारा बधेउव्याधइवबालिबिचारा
निसिचरनिकरसुभटसंघारेहु कुंभकरनघननादहिमारेहु
आजबयरसबलेउनिबाहीं जौरनभूमिभागनहिंजाहीं
आजकरौंखलकालहवाले परेहुकठिनरावनकेपाले॥
सुनिदुर्बचनकालबसजाना बिहँसिबचनकहकृपानिधा
सत्यसत्यसबतवप्रभुताई जल्पसिजनिदेखाउमनुसा

छं॰जनिजल्पनाकरिसुजसनासहिनीतिसुनहिंकरहिछम
संसारमहँपूरुषत्रिबिधपाटलरसालपनससमा
एकसुमनप्रदएकसुमनफलएकफलैकेवललागहीं
एककहहिंकहहिंकरहिंअपरएककरहिंकहतनबागहीं
दो॰रामबचनसुनिबिहँसामोहिसिखावतग्यान
बयरकरतनहिंतबडरेअबलागेप्रियप्रान ८९

कहिदुर्बचनक्रुद्धदसकंधर कुलिससमानलागछाँड़ैस

नानाकारसिलीमुखधाए दिशिअरुबिदिशिगगनमहिछाए
पावकसरछाड़ेउरघुबीरा छनमहँजरेनिशाचरतीरा
छाड़िसितीब्रशक्तिखिसिआई बानसंगप्रभुफेरिचलाई
कोटिन्हचक्रत्रिशूलपबारहिं बिनुप्रयासप्रभुकाटिनिवारहिं
निफलहोहिंरावनसरकैसें खलकेसकलमनोरथजैसें
तबसतबानसारथीमारेसि परेउभूमिजयरामपुकारेसि
रामकृपाकरिसूतउठावा तबप्रभुपरमक्रोधकहँपावा

दो· भएक्रुद्धजुद्धबिरुद्धरघुपतित्रोनसायककसमसे
कोदंडधुनिअतिचंडसुनिमनुजादसबमारुतग्रसे
मंदोदरीउरकंपकंपतिकमठभूभूधरत्रसे ॥
चिक्करहिंदिग्गजदसनगहिमहिदेखिकौतुकसुरहँसे
सो· तानेउचापश्रवणलगिछाड़ेबिसिखकराल
रामबाननभमगचलेलहलहातजनुब्याल९.

चलेबानसपक्षजनुउरगा प्रथमहिंहन्योसारथीतुरगा
रथबिभंजिहतिकेतुपताका गर्जाअतिअंतरबलथाका
तुरतआनरथचढ़िखिसियाना अस्त्रशस्त्रछाड़ेसिबिधिनाना
निफलहोंहिंसबउद्यमताके जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके
तबरावनदसशूलचलावा बाजिचारिमहिमारिगिरावा
तुरगउठाइकोपिरघुनायक खैंचिसरासनछाड़ेसायक
रावनसिरसरोजबनचारी चलिरघुबीरसिलीमुखधारी
दसदसबानभालदसमारे। निसरिगएचलेरुधिरपनारे

स्रवतरुधिरधावतबलवाना। प्रभुपुनिकृतधनुसरसंधा
तीसतीररघुबीरपबारे॥ भुजन्हिसमेतसीसमहिपा
रामबहोरिभुजासिरछीने काटतहींपुनिभएनबीने॥
प्रभुबहुबारबाहुसिरहये। कटतझटितिपुनिनूतनभ
पुनिपुनिप्रभुकाटतभुजसीसा अतिकौतुकीकोसलाधी
रहेछाइनभसिरअरुबाहू मानहुँअमितकेतुअरुरा

छं. जनुराहुकेतुअनेकनभपथस्रवतसोनितधावहीं
रघुबीरतीरप्रचंडलागहिंभूमिगिरननपावहीं॥
एकएकसरसिरनिकरछेदेनभउड़तइमिसोहहीं
जनुकोपिदिनकरकरनिकरजहँतहँबिधुंतुदपोहहीं
दो. जिमिजिमिप्रभुहरतासुसिरतिमितिमिहोहिंअपा
सेवतबिषयबिबर्धजिमिनितनितनूतनमार॥९१॥

दसमुखदेखिसिरन्हकैबाढ़ी बिसरामरनभईरिसगाढ़ी॥
गर्जेउमूढ़महाअभिमानी। धाएउदसौसरासनतानी॥
समरभूमिदसकंधरकोप्यो बरषिबानरघुपतिरथतोप्यो
दंडएकरथदेखिनपरेऊ॥ जनुनिहारमहुँदिनकरदुरेऊ
हाहाकारसुरन्हजबकीन्हा तबप्रभुकोपिसरासनलीन्
सरनिवारिरिपुकेसिरकाटे तेदिसिबिदिसिगगनमहिपाटे
काटेसिरनभमारगधावहिं जयजयधुनिकरिभयउपजा
कहँलछिमनसुग्रीवकपीसा कहँरघुबीरकोसलाधीसा

छं. कहँरामकहिसिरनिकरधाएदेखिमर्कटभजिचले।

संधानिधनुरघुबंशमणिहंसिसरन्हिसिरबेधेभले
सिरमालिकाकरकालिकागहिवृंदवृंदन्हिबहुमिली
करिरुधिरसरमज्जनमनहुँसंग्रामभटपूजनचली
दो॰पुनिदसकंठक्रुद्धहैछाड़ीशक्तिप्रचंड + + ॥
चलीबिभीषनसन्मुखमनहुँकालकरदंड।९२॥

आवतदेखिशक्तिसोघोरा प्रनतारतभंजनपनमोरा॥
तुरतबिभीषनपाछेमेला। सन्मुखरामसहेउसोसैल।
लागिशक्तिमूरछासोभई। प्रभुकृतखेलसुरन्हबिकलई
देखिबिभीषनप्रभुश्रमपायो गहिकरगदाक्रुद्धहैधायो
रेकुभाग्यसठमंदकुबुद्धे॥ तैंसुरनरमुनिनागबिरुद्धे
सादरशिवकहुँसीसचढ़ाए। एकएककेकोटिन्हपाए।
तेहिकारनखलअबलगबांच्यो अबतवकालसीसपरनाच्यो
रामबिमुखसठचहसिसंपदा असकहिहनेसिमांझउरगदा

छं॰उरमांझगदाप्रहारघोरकठोरलागतमहिपर्‍यो
दशवदनश्रोनितस्रवतपुनिसंभारिधायोरिसभरो
द्वौभिरेअतिबलमल्लयुद्धबिरुद्धएकहिएकहने॥
रघुबीरबलदर्पितबिभीषनघालनहिंताकहँगने
उमाबिभीषनरावनहिंसन्मुखचितवकिकाउ +॥
सोअबभिरतकालज्योंश्रीरघुबीरप्रभाउ ९३॥

देखाश्रमितबिभीषनभारी धायउहनूमानगिरिधारी।
रथतुरंगसारथीनिपाता॥ हृदयमांझतेहिमारेसिलाता।

ठाढरहाअतिकंपितगाता । गयोबिभीषनजहँजनत्रा
पुनिरावनकपिहतेउप्रचारी । चलेउगगनकपिपुछ्छपसा
गहेसिपुछ्छकपिसहितउड़ाना । पुनिफिरिभिरेउप्रबलहनुमा
लरतअकासजुगलसमजोधा । एकहिएकहनतकरिक्रोध
सोहहिंनभछलबलबहुकरहीं । कज्जलगिरिसुमेरुजनुलर
बुधिबलनिसिचरपरैनपार्‍यो । तबमारुतसुतप्रभुसंभा

छं. संभारिश्रीरघुबीरधीरपचारिकपिरावनहन्यो ।
महिपरतपुनिउठिलरतदेवन्हजुगलकहँजयजयभन्यो ।
हनुमंतसंकटदेखिमर्कटभालुक्रोधातुरचले ॥
रनमत्तरावनसकलसुभटप्रचंडभुजबलदलमले ॥
दो. तबरघुबीरपचारेधाएकीसप्रचंड ++ ॥
कपिबलप्रबलदेखितेहिंकीन्हप्रगटपाखंड ८२॥

अंतरधानभयउछनएका । पुनिप्रगटेखलरूपअनेक
रघुपतिकटकभालुकपिजेते । जहँतहँप्रगटदसाननते
देखेकपिन्हअमितदससीसा । जहँतहँभजेभालुअरुकी
भागेबानरधरहिंनधीरा । त्राहित्राहिलछमनरघुबी
दहदिशिधावहिंकोटिनरावन । गर्जहिंघोरकठोरभयाव
डरेसकलसुरचलेपराई । जयकैआसतजहुअब
सबसुरजितेएकदसकंधर । अबबहुभएतकहुगिरिकं
रहेबिरंचिसंभुमुनिग्यानी । जिन्हजिन्हप्रभुमहिमाकछु

छं. जानाप्रतापतेरहेनिर्भयकपिन्हरिपुमानेफुरे॥

चलेबिचलमर्कटभालुसकलकृपालपाहिभयातुरे।
हनुमंतअंगदनीलनलअतिबललरतरनबांकुरे।
मर्दहिंदशाननकोटिकोटिन्हकपटभूभटअंकुरे।
दो॰ सुरबानरदेषेबिकलहँस्योकोशलाधीस।
साजिसारंगएकसरहतेसकलदससीस ९५।

प्रभुछनमहँमायासबकाटी जिमिरबिउएँजाहितमफाटी
रावनएकदेखिसुरहरषे ॥ फिरेसुमनबहुप्रभुपरबरषे
भुजउठाइरघुपतिकपिफेरे फिरेएकएकन्हतबटेरे ॥
प्रभुबलपाइभालुकपिधाए तरलतमकिसंजुगमहँआए
अस्तुतिकरतदेवतनहिदेषे भएउँएकमैंइनकेलेखे ॥
सठहुसदातुमभोरमरायल असकहिकोपगगनपथधायल
हाहाकारकरतसुरभागे ॥ षलहुजाहुकहँमोरेआगे।
देषिबिकलसुरअंगदधायो कूदचरनगहिभूमिगिरायो

छं॰ गहिभूमिपार्यौलातमार्यौबालिसुतप्रभुपहिंगयो
संभारिउठिदशकंठघोरकठोररवगर्जतभयो ॥
करिदापचापचढ़ायदससंधानसरबहुबरषई
कियेसकलभटघायलभयाकुलदेषिनिजबलहर्षई
दो॰ तबरघुपतिरावनकेसीसभुजासरचाप ॥
काटेबहुतबढ़ेपुनिजिमितीरथकरपाप ९६

सिरभुजबाढ़िदेखिरिपुकेरी भालुकपिन्हरिसभईघनेरी
मरतनमूढ़कटेउभुजसीसा धाएभालुकपिभटकीसा।

प्रभुमारुतिनी
श्रुणप्राया श्रोति
प्राणीदे
निसिचरकाभ्यो
चौ॰ ॥
मंगली १.५
कौबनप्रद
नाम्रुकप्रभु
गौहिमीचेबी
८ दो॰ ॥
८ छं॰
७५ चौ॰
पंक्ति॰

श्रीनामनीष्ट
कहीं रावन के
हृदयस्थाननिवा
स्कतो प्रत्योर
प्रकटैयाकुलता
तबनामबिस्म
र्दबंध हेतु दर
घायो उपरावा

टी॰
रा॰ लं॰
८२

बालितनयमारुतिनलनीला। बानरराजदुबिदबलसीला
बिटपमहीधरकरहिंप्रहारा। सोइगिरितरुगहिकपिन्हसो
एकनखन्हिरिपुबपुषबिदारी। भागिचलहिंएकलातन्हमारी
तबनलनीलसिरन्हचढ़िगयऊ। नखन्हिलिलारबिदारतभयऊ
रुधिरदेखिबिषादउरभारी। तिन्हहिंधरनकहुँभुजापसारी
गहेनजाहिंकरन्हिपरफिरहीं। जनुजुगमधुपकमलबनचरहीं
कोपिकूदिद्वौधरेसिबहोरी॥ महिपटकतभजेभुजामरोरी
पुनिसकोपदसधनुकरलीन्हे। सरन्हिमारिघायलकपिकीन्हे
हनुमदादिमूर्छितकरिबंदर। पाइप्रदोषहरषदसकंधर॥
मुरछितदेखिसकलकपिबीरा। जामवंतधायउरनधीरा॥
संगभालुभूधरतरुधारी॥ मारनलगेपचारिपचारी॥
भयउक्रुद्धरावनबलवाना॥ गहिपदमहिपटकैभटनाना
देखिभालुपतिनिजदलघाता। कोपिमाझउरमारेसिलाता॥

छं॰ उरलातघातप्रचंडलागतबिकलरथतेमहिपरा।
गहिभालुबीसहुकरमनहुकमलनिबसेनिसिमधुकरा।
मूर्छितबिलोकिबहोरिपदहतिभालुपतिप्रभुपहंगयो।
निसिजानिस्यंदनघालितेहितबसूतजतनकरतभयो।

दो॰ मुरछाबिगतभालुकपिसबआएप्रभुपास॥
निसिचरसकलरावनहिंघेरिरहेअतित्रास॥९७॥

तेहिनिसिसीतापहिंजाई। त्रिजटाकहिसबकथासुना
सिरभुजबाढ़िसुनतरिपुकेरी। सीताउरभइत्रासघनेरी॥

मूर्छाबिगतसु
तंकोधितहै
रनभूमिआयो
नहाँ प्रभुपादे
जानकीसंग्राम
आधिकारी
राक्षसमायाबि
जातेंलक्ष्मण
हनुमंतादि
सबकोहितम
रतबप्रभुसब
मायाकोकी
दूरयुद्धंमा
मुचकोबि
श्रीचन्निकैतो

तबंसुरन
श्रामरोति
रवाहिकाति
श्रुतमृगरही
बिलापबाव
यपामति सं
तापकहो
श्रुतिश्रीमन
कांपीताप
सुधकापुनः

मुखमलीनउपजीमनचिंता त्रिजटासनबोलीतबसीता।
होइहिकहाकहसिकिनमाता केहिबिधिमरिहिबिस्वदुखदाता।
रघुपतिसरसिरकटेहुंनमरई बिधिबिपरीतचरितसबकरई।
मोरअभाग्यजिआवतओही जेहिंहौंहरिपदकमलबिछोही।
जेहिंकृतकनककपटमृगझूठा अजहुंसोदैवमोहिपररूठा॥
जेहिंबिधिमोहिदुखदुसहसहाए लछमनकहुंकटुबचनकहाए।
रघुबरबिरहसबिषसरभारी तकितकिमारबारबहुमारी।
ऐसेहुदुखजोराखममप्राना सोइबिधिताहिजिआवनआना।
बहुबिधिकरतबिलापजानकी करिकरिसुरतिकृपानिधानकी।
कहत्रिजटासुनुराजकुमारी उरसरलागतमरैसुरारी॥
प्रभुतातेंउरहतेनतेही एहिकेहृदयबसतिबैदेही

छं॰ एहिकेहृदयबसजानकीउरजानकीममबासहै।
ममउदरभुवनअनेकलागतबानसबकरनासहै॥
सुनिबचनहरषबिषादमनअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा।
अबमरिहिरिपुएहिबिधिसुनहिंसुंदरितजहिंसंसयमहा।
दो॰ काटतसिरहोइहिबिकलछुटजायतवध्यान॥
तबरावनहिंहृदयमहंमरिहहिंरामसुजान ९८

असकहिबहुतभांतिसमुझाई पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई
रामसुभाउसुमिरिबैदेही॥ उपजीबिरहव्यथाअतितेही
निसिहिससिहिनिंदतिबहुभांती जुगसमभईनरातिसिराती
करतिबिलापमनहिंमनभारी रामबिरहजानकीदुखारी॥

सुधकापुनः
निजप्राणतें
लक्ष्मणसुधी
पादिकोंरजके
कीआनादरें
तबंजायपथ्य
बोधराज
इदप्रभुसमीप
आइसबसोभित
यें
रा॰ बा॰
८३
अंककानिवेग
दुखभर
॥
॥
॥ १०५ ॥
॥
॥
॥
॥
॥

जबउरभयउबिरहउरदाहू। फरकेउबामनयनअरुबाहू
सगुनबिचारिधरीमनधीरा अबमिलिहहिंकृपालरघुबीरा
इहाँअर्धनिसिरावनजागा। निजसारथिसनखीजनलाग
सठरनभूमिछड़ाइसिमोही धिगधिगअधममंदमतितो
तेहिपदगहिबहुबिधिसमुझावा भोरभयेरथचढपुनिधावा
सुनिआगमनुदसाननकेरा। कपिदलखरभरभयउघनेरा।
जहँतहँभूधरबिटपउपारी। धाएकटकटाइभटभारी॥

छं॰धाएजोमर्कटबिकटभालुकरालकरभूधरधरा
अतिकोपकरहिंप्रहारमारतभजिचलेरजनीचरा।
बिचलाइदलबलवंतकीसन्हघेरिपुनिरावनलियो
चहुँदिशिचपेटन्हमारिनखन्हबिदारितनब्याकुलकियो

दो॰देखिमहामर्कटप्रबलरावनकीन्हबिचारि॥
अंतरहितहोइनिमिषमहुँकृतमायाबिस्तार॥८८॥

तोमरछंद

जबकीन्हतेहिपाषंड। भएप्रगटजंतुप्रचंड।
बेतालभूतपिसाच करधरेंधनुनाराच।
जोगिनिगहेंकरबाल एकहाथमनुजकपाल
करिसद्यसोनितपान नाचहिंकरहिंबहुगान
धरुमारुबोलहिंघोर रहीपूरिधुनिचहुंओर
मुषबायधावहिंषान तबलगेकीसपरान॥
जहँजाहिंमर्कटभागि तहँबरतदेषहिंआगि
भएबिकलबानरभालु पुनिलागिबरषैबालु।

जहँतहँथकितकरकीस गर्जेउबहुरिदससीस
लछिमनकपीससमेत भएसकलबीरअचेत
हारामहारघुनाथ ॥ कहिसुभटमींजहिंहाथ
एहिबिधिसकलबलतोर तेहिकीन्हकपटबहोर
प्रगटेसिबिपुलहनुमान धाएगहेपाषान ॥
तिन्हरामघेरेजाइ ॥ चहुँदिशिबरूथबनाइ
मारहुधरहुजनिजाइ कटकटहिंपुछउठाइ
दहुँदिशिलंगूरबिराज तेहिमध्यकोसलराज

छं· तेहिमध्यकोसलराजसुंदरस्यामतनशोभालही
जनुइंद्रधनुषअनेककीबरबारितुंगतमालही।
प्रभुदेषहरषबिषादउरसुरबदतजयजयजयकरी।
रघुबीरएकहितीरकोपिनिमेषमहुंमायाहरी॥
मायाबिगतकपिभालुहरषेबिटपगिरिगहिसबफिरे
सरनिकरछाडेरामरावनबाहुसिरपुनिमहिगिरे
श्रीरामरावनसमरचरितअनेककल्पजोगावहीं
सतशेषसारदनिगमकवितेउतदपिपारनपावहीं
दो· ताकेगुनगनकछुकहेजड़मतितुलसीदास।
जिमिनिजबलअनुरूपतेंमाछीउड़ैअकास ॥
काटेसिरभुजबारबहुमरतनभटलंकेश ॥
प्रभुक्रीड़तसुरसिद्धमुनिब्याकुलदेषकलेस १००

काटेसिरपुनिहोंहिंअपारा भोगकरतजिमिबाढ़हिमार

टी· रा· लं· ८६

मरइनरिपुश्रमभयउबिशेषा। रामबिभीषनतनतबदेखा
उमाकालमरजाकीइछा। सोप्रभुजनकरप्रीतिपरी
सुनिसर्बज्ञचराचरनायक। प्रनतपालसुरमुनिसुखद
नाभिकुंडपियूषबसयाके नाथजियतरावनबलता
सुनतबिभीषनबचनकृपाला हरषिगहेकरबानकराला
असुभहोनलागेतबनाना रोवहिंखरसृगालबहुस्वा
बोलहिंखगजगआरतिहेतू। प्रगटभएनभजहँतहँकेत
दसदिसिदाहहोनअतिलागा भयउपरबबिनुरबिउपरा
मंदोदरिउरकंपतिभारी॥ प्रतिमास्रवहिंनयनमगबा

छं· प्रतिमारुदहिंपबिपातनभअतिबातबहडोलतिमही
बरषहिंबलाहकरुधिरकचरजअसुभअतिसककोकही
उतपातअमितबिलोकिनभसुरबिकलबोलहिंजयजये
सुरसभयजानिकृपालरघुपतिचापसरजोरतभये॥

दो· खैंचसरासनश्रवनलगिछाडेसरएकतीस॥
रघुनायकसायकचलेमानहुंकालफनीस ९१

सायकएकनाभिसरसोषा अपरलगेभुजसिरकरसो
लेसिरबाहुचलेनाराचा। सिरभुजहीनरुंडमहिना
धरनिधसैधरधावप्रचंडा तबसरहतिप्रभुकृतसत
गरजेउमरतघोररवभारी कहाँरामरनहतौंपचारी
डोलीभूमिगिरतदसकंधर छुभितसिंधुसरिदिग्गजभू
धरनिपरेउदोउखंडबढ़ाई॥ चापिभालुमर्कटसमुदाई

मंदोदरिआगेभुजसीसा। धरिसरचलेजहाँजगदीसा
प्रविसेसबनिषंगमहुंजाई देषिसुरन्हदुंदुभीबजाई॥
तासुतेजसमानप्रभुआनन हरषेदेषिशंभुचतुरानन॥
जयजयधुनिपूरीब्रह्मंडा॥ जयरघुबीरप्रबलभुजदंडा॥
बरषहिंसुमनदेवमुनिबृंदा। जयकृपालजयजयतिमुकुंदा

छं॰ जयकृपाकंदमुकुंदद्वंदहरनसरनसुषप्रदप्रभो॥
षलदलबिदारनपरमकारनकारुनीकसदाबिभो।
सुरसुमनबरषहिंहरषसंकुलबाजदुंदुभीगहगही।
संग्रामअंगनरामअंगअनंगबहुशोभालही × × ॥
सिरजटामुकुटप्रसूनबिचबिचअतिमनोहरराजहीं।
जनुनीलगिरिपरतडितपटलसमेतउडुगनभ्राजहीं।
भुजदंडसरकोदंडफेरतरुधिरकनतनअतिबने ×॥
जनुरायमुनीनमालपरबैठोबिपुलसुषआपने॥
दो॰ कृपादृष्टिकरिवृष्टिप्रभुअभयकियेसुरवृंद॥
भालुकीससबहरषेजयसुषधाममुकंद १०२

पतिसिरदेषतमंदोदरी ×॥ मुरछितबिकलधरनिषसपरी
जुवतिबृंदरोवतिउठिधाई॥ तेहिउठायरावनपहिंआई।॥
पतिगतिदेषिसोकरहिंपुकारा। छूटेकचनहिंबपुषसँभारा॥
उरताडनाकरहिंबिधिनाना। रोवतकरहिंप्रतापबषाना॥
तवबलनाथडोलनितधरनी तेजहीनपावकशशितरनी।
शेषकमठसहिसकैनभारा सोतनभूमिपरेउभरिछाया।

पी॰ रुब ८८

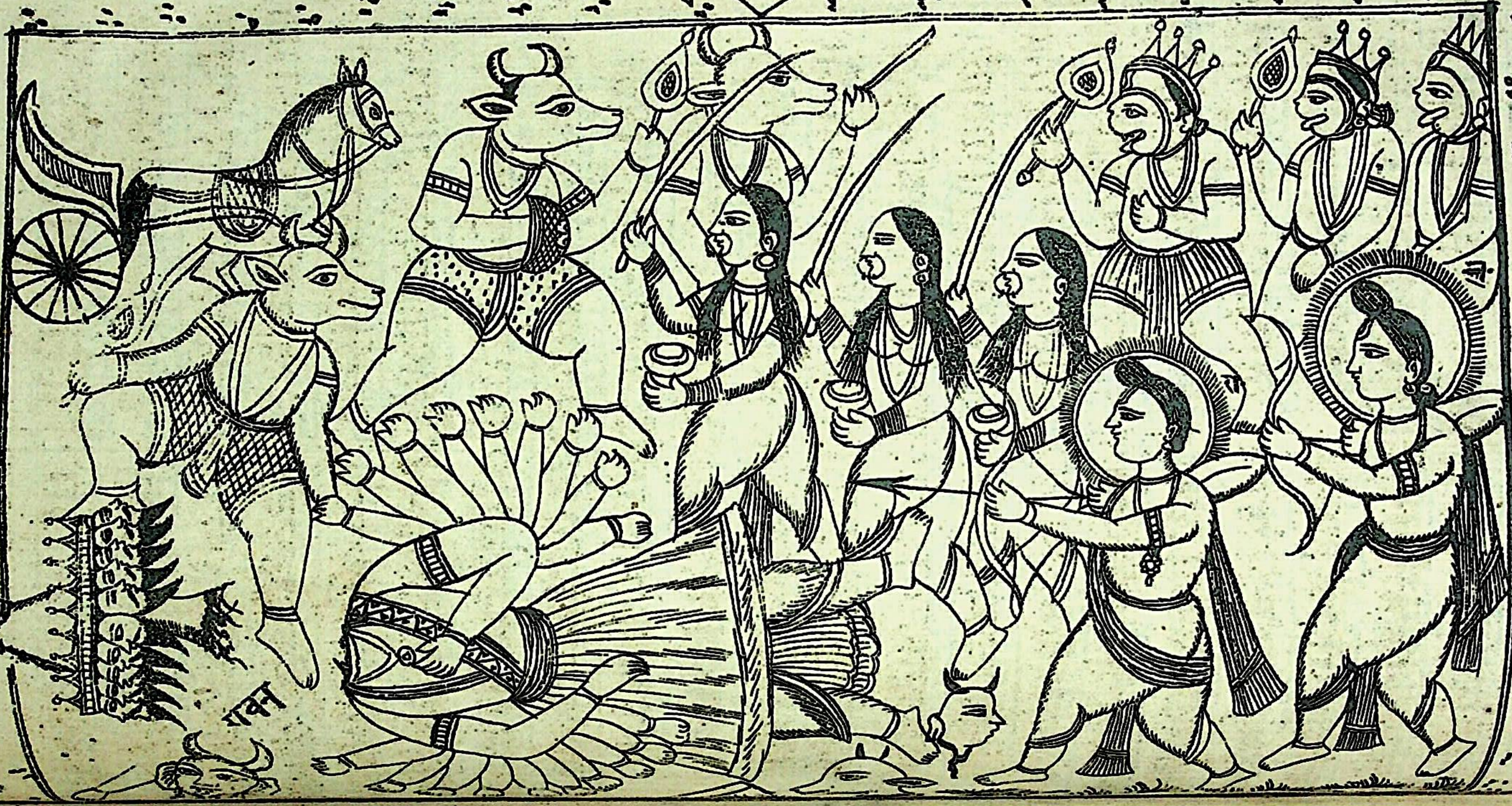

बरनकुबेरसुरेससमीरा। रनसन्मुखधरकाहुनधीरा।
भुजबलजितेहुकालजमसाँई आजपरेउअनाथकीनाँई
जगतबिदिततुम्हरीप्रभुनाई सुतपरिजनबराबरनिनजाई
रामबिमुषअसहालतुम्हारा रहानकुलकोउरोवनहारा
तवबसबिधिप्रपंचसबनाथा सभयदिशिपनितनावहिंमाथा
अबतवशिरभुजजंबुकषाहीं रामबिमुषयहअनुचितनाहीं
कालबिबसपतिकहानमाना अगजगनाथमनुजकरिजाना

छं· जानेउमनुजकरिदनुजकाननदहनपावकहरिस्वयं
जेहिनमतशिवब्रह्मादिसुरपियभजेहुनहिंकरुनामयं
आजन्मतेंपरद्रोहरतपापौघमयतवतनुअयम॥ ॥
तुम्हहूदियोनिजधामरामनमामिब्रह्मनिरामयम
दो· अहहनाथरघुनाथसमकृपासिंधुनहिंआन॥
जोगबृंददुर्लभगतितोहिदीन्हभगवान १०३।

मंदोदरीबचनसुनकाना॥ सुरमुनिसिद्धसबन्हसुषमाना
अजमहेशनारदसनकादी। जेमुनिबरपरमारथबादी।
भरिलोचनरघुपतिहिनिहारी प्रेममगनसबभएउसुषारी
रुदनकरतदेषीसबनारी॥ गएउबिभीषनमनदुषभारी
बंधुदशाबिलोकिदुषकीन्हा तबप्रभुअनुजहिंआयसुदीन्हा
लछमनतेहिबहुबिधसमुझायो बहुरबिभीषनप्रभुपहँआयो
कृपादृष्टिप्रभुताहिबिलोका करहुक्रियापरिहरसबसोका
कीन्हिक्रियाप्रभुआयसुमानी बिधिवतदेशकालजियजानी

१०. लौ: मलापतन त्रैकाल अष्ट महा हनुमाना बोलि लीन्हे प्रनिपत्य रा: १६ छं: १६ श्रो: १६ पं: १८

श्रीरघुनाथजी हनुमान को जानकीजी के कुसल लेन भेजे आन हाँ सीय पर निपुनी सर्बबल सार्थ

टी: लं: रा: ६०

कर्म सुनत मा

दो॰ मंदोदरीआदिसबदेइतिलांजलिताहि॥
भवनगईरघुपतिगुनगनबरनतमनमाहि २०४॥

आइबिभीषनपुनिसिरनायो। कृपासिंधुतबअनुजबुलायो
तुमकपीसअंगदनलनीला जामवंतमारुतिनयसीला
सबमिलिजाहुबिभीषनसाथा सारेउतिलककहेउरघुनाथ
पितावचनमैंनगरनआवौं। आपुसरिसकपिअनुजपठावौं
तुरतचलेकपिसुनिप्रभुबचना कीन्हीजाइतिलककीरचना
सादरसिंहासनबैठारी॥ तिलकसारिअस्तुतिअनुसा
जोरिपानिसबहीसिरनाये सहितबिभीषनप्रभुपहिंआ
तबरघुबीरबोलिकपिलीन्हे कहिप्रियबचनसुखीसबकी

छं॰ किएसुखीकहिबानीसुधासमबलतुम्हारेंरिपुहयो।
पायोबिभीषनराजतिहुँपुरजसतुम्हारोनितनयो॥
मोहिसहितसुभकीरतितुम्हारीपरमप्रीतिजोगाइहैं।
संसारसिंधुअपारपारप्रयासबिनुनरपाइहैं॥
दो॰ प्रभुकेबचनश्रवनसुनिनहिंअघाहिंकपिपुंज।
बारबारसिरनावहिंगहहिंसकलपदकंज १०५॥

पुनिप्रभुबोलिलियोहनुमाना। लंकाजाहुकहेउभगवाना॥
समाचारजानकिहिसुनावहु तासुकुसललैतुमचलिआ
तबहनुमंतनगरमहुँआये। सुनिनिसिचरीनिसाचरधा
बहुप्रकारतिन्हपूजाकीन्ही। जनकसुतादेखाइपुनिदी
दूरिहितेप्रनामकपिकीन्हा रघुपतिदूतजानकींचीन्हा

कहहुतातप्रभुकृपानिकेता कुसलअनुजकपिसेनसमेता
सबबिधिकुसलकोसलाधीसा मातुसमरजीतेउदससीसा
अबिचलराजबिभीषनपायो सुनिकपिबचनहरषउरछायो

छं॰ अतिहरषमनतनपुलकलोचनसजलकहपुनपुनरमा
कादेउंतोहित्रैलोकमहुंकपिकिमपिनहिंबानीसमा
सुनमातमैंपायोअषिलजगराजआजुनसंसयम॥
रनजीतिरिपुदलबंधुजुतपस्यामिराममनामयम।

दो॰ सुनसुतसदगुनसकलतवहृदयबसहुहनुमंत।
सानुकूलकोसलपतिरहहुसमेतअनंत १०६

अबसोइजतनकरहुहनुमाना देखौंनयनस्याममृदुगाता।
तबहनुमानरामपहंजाई। जनकसुताकैकुसलसुनाई
सुनिसंदेसभानुकुलभूषन बोलिलियेजुबराजबिभीषन
मारुतसुतकेसंगसिधावहु सादरजनकसुतहिलैआवहु
तुरतहिसकलगएजहंसीता। सेवहिसबनिसिचरीबिनीता
बेगिबिभीषनतिन्हहिंसिषायो तिन्हबहुबिधमज्जनकरवायो
बहुप्रकारभूषनपहिराए सिबिकारुचिरसाजिपुनल्याए
तापरहरषिचढ़ीबैदेही॥ सुमिरिरामसुषधामसनेही
बेतपानिरक्षकचहुंपासा। चलेसकलमनपरमहुलासा
देषनकीसभालुसबआए रक्षककोपिनिवारनधाए
कहरघुबीरकहाममानहु सीतहिसषापयादेंआनहु
देषहिंकपिजननीकीनाईं बिहंसिकहारघुनाथगुसाईं

अरुप्रभु
हैंआर
समाचार
कहतबोले
भीषनसुग्री
वागाईकी
बिभीषन
सिषापनतें
अनुमानभूषना
रिपदाय
सिबिकाच
टहलचले
बानरअव
री
रा॰ लं॰
८१
लोकमर्षि
प्रभुआता
मैंपयादे

भक्तजीकी
भा नहँप्रभु
बिनतीकारतु
नैबेदनकरी
सबलसंपद
बिभीषनग्राह

८
सं. लं.
ई.

जात भए तब
कीतिकार
रघुसुत स्र
देवता दय
ब्रह्मादि सब
नहँ श्रला

शोभित भई
सीताजू
साइ श्री
प्रभुपाद
कराइ तन
नि प्रवेश
हनुमंत स्र
कार सर्व

रीति प्रीतिक
है श्रवण सु
र्ग की पुलकि
त भा बिभीषन
पुष्पक जानला
८ ग्रह माहि बच
नरत्याहि

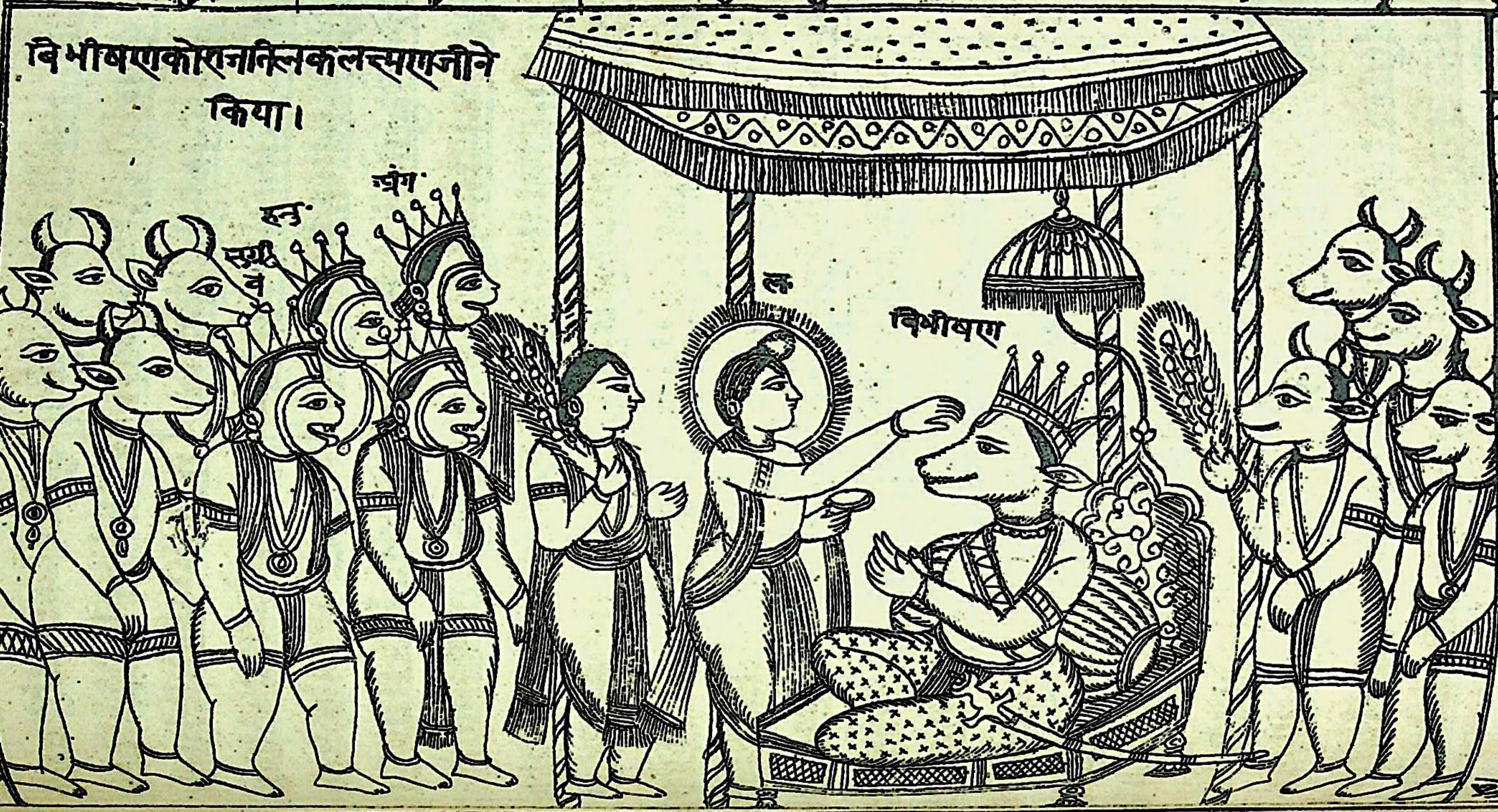

बिभीषणकोराजतिलककलसप्रभुजीने किया।

बर्षबानर
कौनप्रभुतें
बिदाहोतमहुँ
नलपुष्पका
सौनहुँबिभी
कनसुग्रीव
हनुमानअंगद
हर्षीसनजुत
सीताजूको
रणभमिदेखा
रसबमुनिन
तैंभेंटनीय
रामभ्रातहौं
भरतजनपहुँ
जाहनुमान
कौभरतनिकट
पहलजंकाम्री
जानकीजू

सुनिप्रभुबचनभालुकपिहर्षे नभतेसुरकुसुमनबहुबरषे
सीताप्रथमअनलमहुँराषी प्रगटकीन्हिचहअंतरसाषी

दो॰ तेहिकारनकरुनानिधिकहेउकछुकदुर्बाद॥
सुनतजातुधानीसबलागीकरैबिषाद १०७।

प्रभुकेबचनसीसधरिसीता बोलीमनक्रमबचनपुनीता
लछिमनहोहुधरमकेनेगी। पावकप्रगटकरहुतुमबेगी
सुनिलछिमनसीताकैबानी बिरहबिबेकधरमनयसानी
लोचनसजलजोरिकरदोऊ प्रभुसनकछुकहिसकतनवोऊ
देषिरामरुषलछिमनधाए पावकप्रगटिकाठबहुलाए
पावकप्रबलदेषिबैदेही। हृदयहरषनहिंभयकछुतेही
जौमनबचक्रममममउरमाहीं तजिरघुबीरआनगतिनाहीं
तौकृशानुसबकैगतिजाना मोकहुँहोउश्रीषंडसमाना

छं॰ श्रीषंडसमपावकप्रवेशकियोसुमरिप्रभुमैथिली
जयकोसलेशमहेशबंदितचरनरतिअतिनिर्मली॥
प्रतिबिंबअरुलौकिककलंकप्रचंडपावकमहुँजरे।
प्रभुचरितकाहुँनलषेनभसुरसिद्धमुनिदेषहिंषरे।
धरिरूपपावकपानिगहिश्रीसत्यश्रुतिजगबिदितजो
जिमिछीरसागरइंदिरारामहिंसमर्पीआनसो ॥
सोरामबामबिभागराजतिरुचिरअतिशोभाभली
नवनीलनीरजनिकटमानहुकनककपंकजकीकली
दो॰ बरषहिंसुमनहरषसुरबाजहिंगगननिसान।

गंगारामज्ञी

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ श्लो: ६ चौपाईप्रसंग गतिलंको श्लो १० चौपाईप्रसंग संवादै सेसाको

गावहिंकिंनरसुरबधूनाचहिंचढ़ीबिमान॥
जनकसुतासमेतप्रभुसोभाअमितअपार
देखिभालुकपिहरषेउजयरघुपतिसुखसार

तबरघुपतिअनुसासनपाई मातलिचलेउचरनसिरना
आएदेवसदास्वारथी॥ बचनकहहिंजनुपरमार
दीनबंधुदयालरघुराया॥ देवकीन्हिदेवनपरदा
बिस्वद्रोहरतयहखलकामी निजअघगयोकुमारगा
तुमसमरूपब्रह्मअबिनासी सदाएकरससहजउदा
अकलअगुनअजअनघअनामयअजितअमोघसक्तिकरु

दो·
रा·लं·
५४

मीनकमठसूकरनरहरी। बामनपरसुरामबपुधरी
जबजबनाथसुरन्हदुखपायो। नानातनुधरितुमहिंनसा
यहखलमलिनसदासुरद्रोही। कामलोभमदरतअतिको
अधमसिरोमनितवपदपावा। यहहमरेमनबिसमयआ
हमदेवतापरमअधिकारी। स्वारथरतप्रभुभगतिबि
भवप्रबाहसंततहमपरे॥ अबप्रभुपाहिसरनअनु

दो· करिबिनतीसुरसिद्धसबरहेजहँतहँकरजोरि
अतिसप्रेमतनपुलकिबिधिअस्तुतिकरतबहोरि

छं· जयरामसदासुखधामहरे रघुनायकसायकचाप
भवबारनदारनसिंहप्रभो॥ गुनसागरनागरनाथबिभो
तनकामअनेकअनूपछबी। गुनगावतसिद्धमुनींद्रक
जसपावनरावननागमहा। खगनाथजथाकरिकोपग

चौपाईछंददोहादिकोठीक॥

श्लोक	चौपाई	छंद	सोरठा	दोहा
३	११२०	३१	९	१५०

जनरंजनभंजनशोकभयं। गतक्रोधसदाप्रभुबोधमयं।
अवतारउदारअपारगुनं ॥ महिभारबिभंजनज्ञानघनं ३
अजब्यापकमेकमनादिसदा करुनाकररामनमामिमुदा।
रघुबंशबिभूषनदूषनहा। कृतभूपबिभीषनदीनरहा ४
गुनज्ञाननिधानअमानअजं नितरामनमामिबिभुंबिरजं।
भुजदंडप्रचंडप्रतापबलं ॥ खलबृंदनिकंदमहाकुसलं ५
बिनुकारनदीनदयालहितं छबिधामनमामिरमासहितं।
भवतारनकारनकाजपरं। मनसंभवदारुनदोषहरं ६
सरचापमनोहरत्रोनधरं जलजारुनलोचनभूपबरं ॥
सुखमंदिरसुंदरश्रीरमनं ॥ मदमारसुधाममतासमनं ७
अनवद्यअखंडनगोचरगो। सबरूपसदासबहोइनगो।
इतिबेदबदंतिनदंतकथा। रबिआतपभिन्नमभिन्नजथा ८
कृतकृत्यप्रभोसबबानरये निरखंतितवाननसादरये ॥
धिगजीवनदेवशरीरधरे। तवभक्तिबिनाभवभूलिपरे ९
अबदीनदयालदयाकरिये। दुखसोसुखमानसुखीचरिये
जेहितेबिपरीतक्रियाकरिये मतिमोरबिभेदकरीहरिये
खलखंडनमंडनरम्यछमा। पदपंकजसेवितशंभुउमा
नृपनायकदेवरदानमिदं चरनांबुजप्रेमसदासुभदं ११

दो॰ बिनयकीन्हचतुराननप्रेमपुलकअतिगात
सोभासिंधुबिलोकतलोचननहींअघात २०

तेहिअवसरदशरथतहँआए। तनयबिलोकिनयनजलछाए।

टी॰ रा॰ लं॰ ६५

अनुजसहितप्रभुबंदनकीन्हा आशीर्बादपितातबदीन्हा॥
तातसकलतवपुन्यप्रभाऊ जीत्योअजयनिशाचरराऊ॥
सुनिसुतबचनप्रीतिअतिबाढ़ी नयनसलिलरोमावलिबाढ़ी॥
रघुपतिप्रथमप्रेमअनुमाना चितैपितहिदीन्हेउदृढ़ज्ञाना॥
तातेंउमामोक्षनहिंपायो॥ दशरथभेदभगतिमनलायो॥
सगुनोपासकमोक्षनलेहीं तिनकहूंरामभक्तिनिजदेहीं॥
बारबारकरिप्रभुहिंप्रनामा॥ दशरथहरषिगएसुरधामा॥

दो॰ अनुजजानकीसहितप्रभुकुशलकोसलाधीस
सोभादेखीहरषिमनअस्तुतिकरसुरईस ++॥

तोमरछंद॥

जयरामशोभाधाम दायकप्रनतबिश्राम॥
धृतत्रोनबरसरचाप भुजदंडप्रबलप्रताप॥
जयदूषनारिखरारि मर्दननिसाचरधारि॥
यहदुष्टमारेउनाथ। भएदेवसकलसनाथ।
जयहरनधरनीभार महिमाउदारअपार॥
जयरावनारिकृपाल किएजातुधानबिहाल
लंकेशअतिबलगर्ब कियेबस्यसुरगंधर्ब॥
मुनिसिद्धनरखगनाग हठिपंथसबकेलाग॥
परद्रोहरतअतिदुष्ट पायोसोफलपापिष्ट
अबसुनहुदीनदयाल राजीवनयनबिसाल॥
मोहिरहाअतिअभिमान नहिंकोउमोहिसमान।
अबदेखिप्रभुपदकंज गतमानप्रभुपदुंज।

कोउब्रह्मनिर्गुणध्याव अव्यक्तजेहिश्रुतिगाव
मोहिभावकोसलरूप श्रीरमसगुणस्वरूप
बैदेहिअनुजसमेत ममहृदयकरहुनिकेत
मोहिजानियेनिजदास देभक्तिरमानिवास॥

छं· देभक्तिरमानिवासत्रासहरणसरणसुषदायकं
सुषधामरामनमामिकामअनेकछबिरघुनायकं
सुरबृंदरंजनद्वंदभंजनमनुजतनअतुलितबलम्।
ब्रह्मादिशंकरसेव्यरामनमामिकरुणाकोमलं॥
दो· अबकरिकृपाबिलोकिमोहिआयसुदेहुकृपाल
कहाकरौंसुनिप्रियबचनबोलेदीनदयाल ॥

सुनसुरपतिकपिभालुहमारे परेभूमिनिशिचरन्हकेमारे
ममहितलागितजेइनप्राना सकलजियाउसुरेससुजाना
सुनषगेसप्रभुकीयहबानी अतिअगाधजानहिमुनिज्ञानी
प्रभुचहत्रिभुवनमारजिवाई केवलशक्रहिदीन्हबड़ाई॥
सुधाबरषिकपिभालुजिवाए हरषिउठेसबप्रभुपहँआए
सुधाबृषिभइदुहुँदलऊपर जियेभालुकपिनहिंरजनीचर
रामाकारभएतिन्हकेमन। मुक्तभएछूटेभवबंधन॥
सुरअंसिकसबकपिअरुरीछा जियेसकलरघुपतिकीइछा
रामसरिसकोदीनहितकारी कीन्हेमुक्तनिसाचरझारी।
खलमलधामकामरतरावन गतिपाईजोमुनिबरपावन

दो· सुमनबरषिसबसुरचलेचढ़िचढ़िरुचिरबिमान

एहिसुअवसरप्रभुपाहिंआएशंभुसुजान ॥
परमप्रीतिकरजोरिजुगनलिननयनभरिबारि
पुलकिततनगदगदगिराबिनयकरतत्रिपुरारि

मामभिरक्षयरघुकुलनायक ॥
धृतबरचापरुचिरकरसायक ॥
मोहमहाघनपटलप्रभंजन ॥
संशयबिपिनअनलसुररंजन ॥
अगुनसगुनगुनमंदिरसुंदर ॥
भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर ॥
कामक्रोधमदगजपंचानन ॥
बसहुनिरंतरजनमनकानन ॥
बिषयमनोरथपुंजकंजबन ॥
प्रबलतुषारउदारपारमन ॥
भवबारिधिमंदरपरमंदर ॥
बारयतारयसंसृतिदुस्तर ॥
स्यामगातराजीवबिलोचन
दीनबंधुप्रनतारतमोचन ॥
अनुजजानकीसहितनिरंतर
बसहुरामनृपममउरअंतर ।
मुनिरंजनमहिमंडलमंडन ॥
तुलसिदासप्रभुत्रासबिखंडन

दो· नाथजबहिंकोसलपुरीहोइहितिलकतुम्हार
कृपासिंधुमैंआउबदेषनचरितउदार ॥१४॥

करिबिनतीजबशंभुसिधाए तबप्रभुनिकटबिभीषनआए
नाइचरनसिरकहमृदुबानी बिनयसुनहुप्रभुसारंगपानी
सकुलसदलप्रभुरावनमारौ पावनजसत्रिभुवनबिस्तारौ
दीनमलीनहीनमतिजाती मोपरकृपाकीन्हबहुभांती
अबजनगृहपुनीतप्रभुकीजै मज्जनकरियसमरश्रमछीजे
देषिकोसमंदिरसंपदा ॥ देहुकृपालकपिन्हकहँमुदा
सबबिधिनाथमोहिअपनाइय पुनिमोहिसहितअवधपुरजाइय
सुनतबचनप्रभुदीनदयाला सजलभएद्वौनयनबिसाला

दो· तोरकोसगृहमोरसबसत्यबचनसुनतात ॥
भरतदसासुमिरतमोहिनिमिषकल्पसमजात
तापसबेषसरीरकृशजपतनिरंतरमोहि ॥
देषौंबेगिसोजतनकरिसषानिहोरौंतोहि ॥
जोजैहौंबीतेअवधिजिअतनपावौंबीर ॥
सुमिरतप्रीतिअनुजप्रभुपुनपुनपुलकसरीर
करेहुकल्पभरिराजतुममोहिसुमरेहुमनमांहि
पुनिममधामसिधावहुजहांसंतसबजांहि ५

सुनतबिभीषनबचनरामके हरषिगहेपदकृपाधामके
बानरभालुसकलहरषाने गहिप्रभुपदगुनबिमलबषाने
बहुरिबिभीषनभवनसिधाए मनिगनबसनबिमानभराए

तेपुष्पकप्रभुआगेराषा। हँसिकरकृपासिंधुतबभा
चढ़बिमानसुनसषाबिभीषन गगनजाइबरषहुपटभूष
नभपरजाइबिभीषनतबही बरषदियेमनिअंबरतब
जोईजोईमनभावैसोइलेहीं मनिमुषमेलिडारिकपिदे
हँसेरामश्रीअनुजसमेता। परमकौतुकीकृपानिके

दो· मुनिजेध्याननपावहिंनेतिनेतिकहबेद ॥
कृपासिंधुसोइकपिन्हसनकरतअनेकबिनोद
उमाजोगजपदानतपनानाव्रतमखनेम ॥
रामकृपानहिंकरहिंतसजसिनिष्केवलप्रेम।

भालुकपिन्हपटभूषनपाए पहिरिपहिरिरघुपतिपहँआ
नानाजिनसदेषिसबकीसा पुनिपुनिहँसतकोसलाधी
चितैसबन्हपरकीन्हीदाया बोलेमृदुलबचनरघुराया
तुम्हरेबलमैंरावनमार्‌यो तिलकबिभीषनकहँपुनि
निजनिजगृहअबतुमसबजाहू सुमिरेहुमोहिडरपहुजनि
सुनतबचनप्रेमाकुलबानर जोरिपानिबोलेसबसाद
प्रभुजोइकहहुतुमहिसबसोहा हमरेहोतबचनसुनिमोह
दीनजानिकपिकियेसनाथा तुमत्रैलोकईसरघुनाथ
सुनिप्रभुबचनलाजहममरहीं मसककहूँखगपतिहित
देषिरामरुषबानररीछा ॥ प्रेममगननहिंगृहकैईछ

दो· प्रभुप्रेरितकपिभालुसबरामरूपउरराषि।
हरषबिषादसहितचलेबिनयबिबिधबिधभाषि

कपिपतिनीलरीछपतिअंगदनलहनुमान।
सहितबिभीषनअपरजेजूथपकपिबलवान।
कहिनसकहिंकछुप्रेमबसभरिभरिलोचनबारि
सन्मुखचितवहिंरामतननयननिमेषनिवारि॥

अतिसयप्रीतिदेषिरघुराई। लीन्हेसकलबिमानचढ़ाई।
मनमहुँबिप्रचरनसिरनायो उत्तरदिसिहिबिमानचलायो
चलतबिमानकोलाहलहोई जयरघुबीरकहैंसबकोई
सिंहासनअतिउच्चमनोहर श्रीसमेतप्रभुबैठेतापर॥
राजतरामसहितभामिनी मेरुशृंगजनुघनदामिनी॥
रुचिरबिमानचलेउअतिआतुर कीन्हीसुमनबृष्टिहरषेसुर।
परमसुखदचलित्रिबिधबयारी सागरसरसरिनिर्मलबारी॥
सगुनहोहिंसुंदरचहुँपासा॥ मनप्रसन्ननिर्मलनभआसा।
कहरघुबीरदेखुरनसीता। लछिमनइहाँहत्योइंद्रजीता
हनूमानअंगदकेमारे ॥ रनमहिंपरेनिसाचरभारे॥
कुंभकरनरावनदोउभाई॥ इहाँहतेसुरमुनिदुषदाई॥

सो· देखोसुंदरसेतुयहथाप्योसिवसुषधाम ॥
सीतासहितकृपानिधिसंभुहिकीन्हप्रनाम ॥
जहँजहँकृपासिंधुबनकीन्हबासबिश्राम ॥
सकलदिखाएजानकिहिकहेसबन्हकेनाम ॥

तुरतबिमानतहाँचलिआवा। दंडकबनजहँपरमसुहावा।
कुंभजादिमुनिनायकनाना। गएरामसबकेअस्थाना॥

सकलरिषिनसनपाइअसीसा चित्रकूटआएजगदीसा॥
तहँकरमुनिन्हकेरसंतोषा चलाबिमानतहाँतेचोषा॥
बहुरिरामजानकिहिदेषाई जमुनाकलिमलहरनसोहा
पुनिदेषीसुरसरिपुनीता। रामकहाप्रनामुकरसीता॥
तीरथपतिपुनिदेषुप्रयागा निरषतजन्मकोटिअघभा
देषुपरमपावनअतिबेनी हरनिसोकहरिलोकनिसे
देषीअवधपुरीअतिपावनि त्रिबिधतापभवरोगनसाव

दो॰ सीतासहितअवधपुरीकीन्हकृपालप्रनाम
सजलनयनतनपुलकितनपुनिपुनिहरषितराम
बहुरित्रिबेनीआयप्रभुहरषितमज्जनकीन्ह
कपिन्हसहितबिप्रनकहुँदानबिबिधबिधदीन्ह॰

प्रभुहनुमंतहिकहाबुझाई धरिबटुरूपअवधपुरजाई
भरतहिकुसलहमारिसुनाएउ समाचारलैतुमचलिआ
तुरतपवनसुतगवनतभाएउ तबप्रभुभरद्वाजपहँगए
नानाबिधिमुनिपूजाकीन्ही अस्तुतिकरिपुनिआसिष
मुनिपदबंदिजुगलकरजोरी चढिबिमानप्रभुचलेबहो
इहाँनिषादसुनाप्रभुआए। नावनावकहिलोगबुला
सुरसरिनाघिजानतबआयो उतरेउतटप्रभुआयसुपा
तबसीताऽपूजीसुरसरी॥ बहुप्रकारपुनिचरनन्हिप
दीन्हअसीसहरषिमनगंगा सुंदरितवअहिवातअभंगा
सुनतगुहाधायोप्रेमाकुल आयानिकटपरमसुषसंकुल

प्रभुहिसहितबिलोकिबैदेही परेउअवनितनसुधनहितेही
प्रीतिपरमबिलोकिरघुराई हरषिउठायलियेउरलाई

छं॰ लियोहृदयलाइकृपानिधानसुजानरामरमापती
बैठारिपरमसमीपबूझीकुसलसोकरबेनती ॥
अबकुसलपदपंकजबिलोकिबिरंचिशंकरसेव्यजे
सुषधामपूरनकामरामनमामिरामनमामिते ॥
सबभांतिअधमनिषादसोहरिभरतज्यौंउरलाइयो
मतिमंदतुलसीदाससोप्रभुमोहबसबिसराइयो
यहरावनारिचरित्रपावनरामपदरतिप्रदसदा ॥
कामादिहरबिज्ञानकरसुरसिद्धमुनिगावहिंमुदा

दो॰ समरबिजयरघुबीरकेचरितजेसुनहिंसुजान
बिजयबिभूतिबिबेकनिततिन्हहिंदेहिभगवान ॥
यहकलिकालमलायतनमनकरदेषुबिचार ॥
श्रीरघुनाथकनामतजिनाहिनआनअधार १२०

इतिश्रीरामचरितमानसेसक
लकलिकलुषबिध्वंस
नेबिमलबिराग
संपादनो
६

टी॰
रा॰ लं॰
१०३

रामपुष्पक
कोमैंप्रनामक
रताहैंकेकीके
गोभारवाके
कंठसमश्याम
रंगहैंश्रेष्ठदेव
ताओंमेंश्रेष्ठ
भृगुलातको
चिन्हशोभितहैं

टी॰

रा॰ उत्तर॰

१

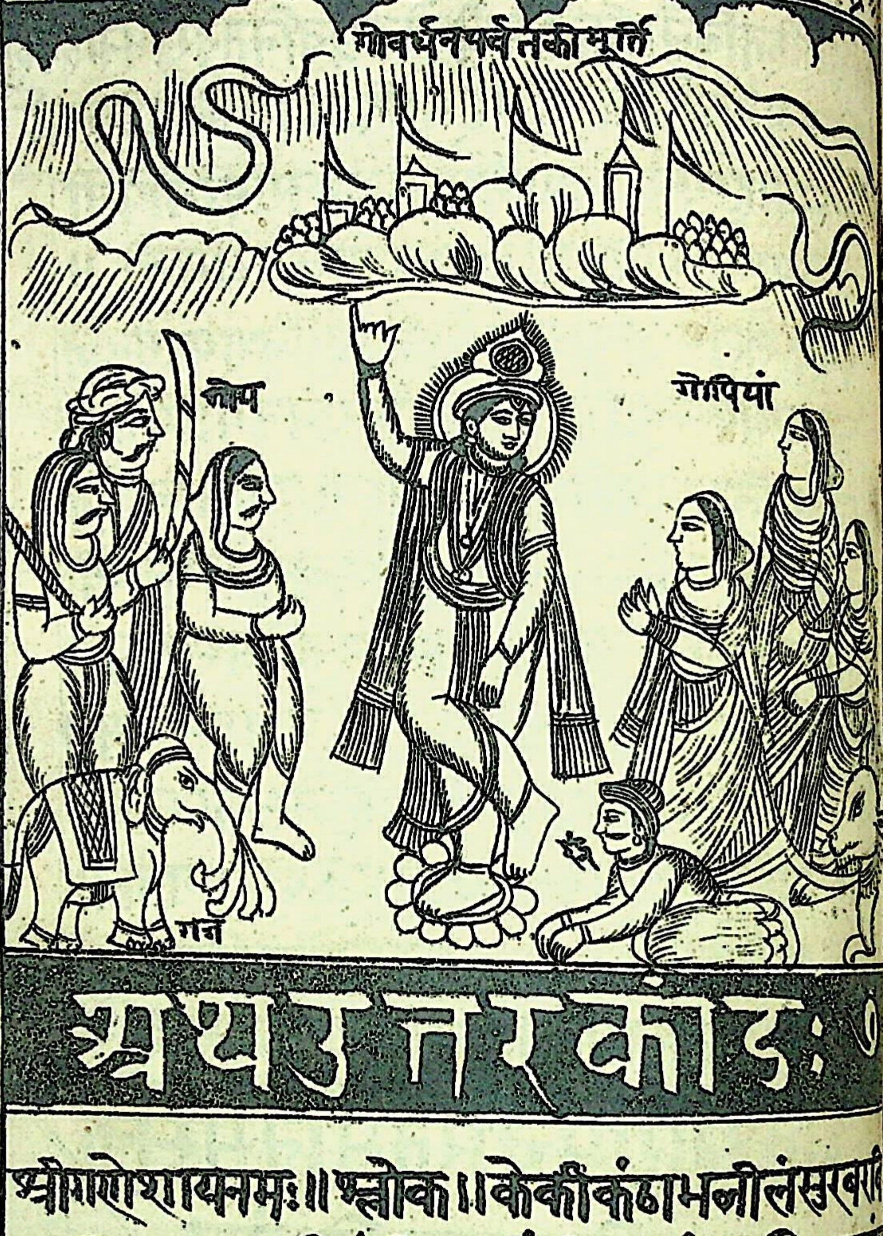

अथ उत्तरकांड:

श्रीगणेशायनमः ॥ श्लोक ॥ केकीकंठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हंशोभाढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नंपाणौनाराचचापंकपिनिकरयुतंबंधुनासेव्यमानंनौमीड्यंजानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारूढराम ॥ १ ॥ कोशलेंद्रपदकंजमंजुलौकोमलावजमहेशवंदितौजानकीकरसरोजलालितौचिंतकस्यमनभृंगसंगिनौ ॥ २ ॥

शोभायुक्तपीताम्ब
रधारनकियेकमल
समहैंनेत्रजिनके
औरसदाप्रसन्नहैं
बाणधनुषबानरस
मूहयुक्तलक्ष्मणसे
सेवापुष्पककाज
सेवितहैं ॥ २ ॥
कोसलेंद्रदि ति।
कौसलपतिके
कौसलपतिकेकम
लरूपीचरनकम

चरणकमलसुन्दर
कोमलहैंब्रह्मा
महेशसेवंदित
हैंजानकीके
करकमलसे
लालितहैं
चिंतनकरने
वालेकेमन
रूपीभ्रमरके
आधारहैं ॥ २ ॥

श्लो॰ २ कुंदइंदुदर गौर इति॥ कामनासक शंकरकोमैं प्रणामकरत हैं कैसेहैं करुणाकी सबसंपरम सुहादक कामनमको वारिहैंपार्वती पतिसबमनाथ आसउसिमादि करुणाकेकरना हैंपुनःकरुणा शिवसुकरुणू कमलनयनहैं ॥२॥ दो॰ १ एकदिनअवधि रहेतेंभरतजू आदिकोसुंदर सगुनहोनभा॰ ४ श्री

कुंदइंदुदरगौरसुंदरं अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं ॥
कारुणीककलकंजलोचनं नौमिशंकरमनंगमोचनं ३

दो॰ रहाएकदिनअवधिकरअतिआरतपुरलोग
जहँतहँसोचहिंनारिनरकृसतनरामबियोग ॥
सगुनहोहिंसुंदरसकलमनप्रसन्नसबकेर ॥
प्रभुआगमनजनावजनुनगररम्यचहुँफेर ॥
कौसिल्यादिकमातुसबमनअनंदअसहोइ ॥
आयउप्रभुसियअनुजजुतकहनचहतअबकोइ ॥
भरतनयनभुजदच्छिनफरकतबारहिंबार ॥
जानिसगुनमनहर्षअतिलागेकरनबिचार ५

रहेउएकदिनअवधिअधारा समुझतमनदुखभएउअपारा
कारनकवननाथनहिंआएउ जानिकुटिलकिधौंमोहिबिसराऊ
अहहधन्यलछिमनबड़भागी रामपदारबिंदअनुरागी ॥
कपटीकुटिलमोहिप्रभुचीन्हा तातेंनाथसंगनहिंलीन्हा ॥
जौंकरनीसमुझैप्रभुमोरी ॥ नहिंनिस्तारकलपसतकोरी
जनअवगुनप्रभुमाननकाऊ दीनबंधुअतिमृदुलसुभाऊ
मोरेजियभरोसदृढ़सोई ॥ मिलहहिंरामसगुनसुभहोई
बीतेंअवधिरहहिंजोप्राना । अधमकौनजगमोहिसमाना ।

दो॰ रामबिरहसागरमहँभरतमगनमनहोत ॥
बिप्ररूपधरिपवनसुतआइगएजनुपोत ॥
बैठेदेखिकुशासनजटामुकुटकृशगात ॥

१७ चौ॰ ३ कौ॰ १ सो॰ १२ दो॰ हैउएकदिनअव धिअधाराअह लछिमनअकी नाथहि ३ कौं॰ । तौंकरनीसमु ताकोमनस्थ्री अमृत हैं मैं धकिंतेहै नामैंकेनाहीं धुनिमेंजाही इतहै नहीं जहँसम हे मानस्थ्रद समय है पुनाइभरत नकीकुसल तैसेगा हैं भरउ

रामनामरघुपतिजपतश्रवतनयनजलजात॥१

देषतहनूमानअतिहरषेऊ। पुलकिगातलोचनजलबर
मनमहँबहुतभांतिसुषमानी बोलेउश्रवनसुधासमबा
जासुबिरहसोचहुदिनराती रटहुनिरंतरगुनगनपांती॥
रघुकुलतिलकसुजनसुषदाता आएउदेवकुसलमुनित्रा
रिपुरनजीतसुजससुरगावत सीतासहितअनुजप्रभुआव
सुनतबचनबिसरेसबदूषा त्रिषावंतजिमिपाइपियूषा
कोतुमतातकहांतेआये। मोहिपरमप्रियबचनसुना
मारुतसुतमैंकपिहनुमाना। नाममोरसुनुकृपानिधाना
दीनबंधुरघुपतिकरकिंकर सुनतभरतभेंटेउउठिसा
मिलतप्रेमनहिंहृदयसमाता। नयनश्रवतजलपुलकितगा
कपितवदरससकलदुषबीते मिलेआजुमोहिरामपिरीते
बारबारबूझीकुसलाता। तोकहँदेउंकहासुनभ्राता
यहसंदेससरसजगमाहीं। करिबिचारदेषेउंकछुना
नाहिनतातउरनमैंतोही॥ अबप्रभुचरितसुनावहुमो
तबहनुमंतनाइपदमाथा। कहेसकलरघुपतिगुनगा
कहुकपिकबहुंकृपालगोसांईं सुमिरहिंमोहिदासकीनाँ

छं॰ निजदासज्यौंरघुबंशभूषनकबहुंममसुमरनकर्यो
सुनभरतबचनबिनीतअतिकपिपुलकितनचरननपर्यो
रघुबीरनिजमुखजासुगुनगनकहतअगजगनाथजो॥
काहेनहोइबिनीतपरमपुनीतसदगुनसिंधुसो॥

हेतुबैकुंठतें
बाललीला
श्रीरघुनाथ
बैलगहै
प्रसंगलौ
गुरुमंत्रीपि
भलैधावत
नबमंगलइ
कहुंश्रागमन
कौहेरानिवा
श्रयोध्यामह
मंत्रश्रधिकानि
वरनवरनन
नगरनिवासिपुं
पुष्पकाबि
मानकोबिद
कियोनववासि
१४ वर्षहिंभरत

संपूर्णश्रार्थ
श्रीमत्स्यपतिभरत
भायासहन
श्रमनतिवर्षं
जाकोमिलेश्रा
हनुमानशुन्न
श्रादिपुनजा
वनपुरबासि
ननंश्रमुलाष
बैका श्रीनकाभूष
जोमिलनमा
श्रभूसबपावसम
श्रमपूर्वकमा
ननेतंश्रव्हकाम
निवासनार्थकै
कहतेंपुन:पुन:

अरुस्वामी
तातुसम
सासुननैंप्रम
पूर्वकमौंह
लखरानिन
आवतसुन
हरमंगल
रीतिकरना
सत्यपूर्वक
आनंदितहो
नभई ॥

दो॰ रामप्रानप्रियनाथतुमसत्यबचनममतात।
पुनिपुनिमिलतहिंभरतसुनिहरषनहृदयँसमात
सो॰ भरतचरनसिरनाइतुरतगयोकपिरामपहँ
कहीकुसलसबजाइहरषिचलेउप्रभुजानचढि।२।

१
॥
॥
॥
॥
॥
॥
॥
॥

हरषिभरतकोसलपुरआए समाचारसबगुरहिसुनाए
पुनिमंदिरमहँबातजनाई॥ आवतकुसलनगररघुराई
सुनतसकलजननीउठिधाई कहिप्रभुसकलभरतसमुझाई
समाचारपुरबासिनपाए॥ नरअरुनारिहरषिसबधाए
दधिरोचनदूर्बाफलफूला। नवतुलसीदलमंगलमूला
भरिभरिहेमथालभामिनी। गावतचलींसिंधुरगामिनी
जेजैसेहितैसेहिउठिधावहिं बालबृद्धकहँसंगनलावहिं
एकएकनकहँबूझहिंभाई। तुमदेखेदयालरघुराई॥
अवधपुरीप्रभुआवतजानी भईसकलसोभाकैखानी॥
बहैसुहावनित्रिबिधसमीरा। भइसरजूअतिनिर्मलनीरा।

दो॰ हरषितगुरुपरिजनअनुजभूसुरबृंदसमेत॥
चलेभरतमनप्रेमअतिसन्मुखकृपानिकेत॥
बहुतकचढीअटारिन्हनिरखहिंगगनबिमान
देषिमधुरसुरहरषितकरहिंसुमंगलगान१॥
राकाससिरघुपतिपुरीसिंधुदेषिहरषान२॥
बढेउकोलाहलकरतजनुनारितरंगसमान।३।

इहाँभानुकुलकमलदिवाकर कपिन्हदेषावतनगरमनोहर

सुनुकपीसअंगदलंकेशा पावनपुरीरुचिरयहदेसा
जद्यपिसबबैकुंठबखाना बेदपुरानबिदितजगजाना
अवधपुरीसमप्रियनहिंसोऊ यहप्रसंगजानैकोउकोऊ
जन्मभूमिममपुरीसुहावनि उतरदिशिबहसरजूपावनि
जामज्जनतेबिनहिंप्रयासा ममसमीपपावहिंनरबास
अतिप्रियमोहिइहाँकेबासी ममधामदापुरीसुखरासी॥
हरषेसबकपिसुनिप्रभुबानी धन्यअवधजोरामबखानी

दो॰ आवतदेखेलोगसबकृपासिंधुभगवान॥
नगरनिकटप्रभुप्रेरेउउतरेभूमिबिमान + ॥
उतरकहेउप्रभुपुष्पकहिंतुमकुबेरपहंजाहु
प्रेरितरामचलेउसोहरषबिरहअतिताहु॥

टी॰
रा॰ उतर॰
५

आएभरतसंगसबलोगा। कृशतनश्रीरघुबीरबियोग
बामदेवबसिष्ठमुनिनायक देखेप्रभुमहिधरिधनुसायक
धाइधरेगुरुचरनसरोरुह॥ अनुजसहितअतिपुलकतो
भेंटिकुसलपूछीमुनिराया। हमरेकुसलतुम्हारिहिदाय
सकलद्विजन्हमिलनायउमाथा धरमधुरंधररघुकुलनाथा
गहेभरतपुनिप्रभुपदपंकज नमतजिन्हहिंसुरमुनिशंक
परेभूमिनहिंउठतउठाए॥ बरकरिकृपासिंधुउरलाए
स्यामलगातरोमभएठाढे॥ नवराजीवनयनजलबाढे॥

छं॰ राजीवलोचनस्रवतजलतनललितपुलकावलिबनी
अतिप्रेमहृदयलगायअनुजहिमिलेप्रभुत्रिभुवनधनी

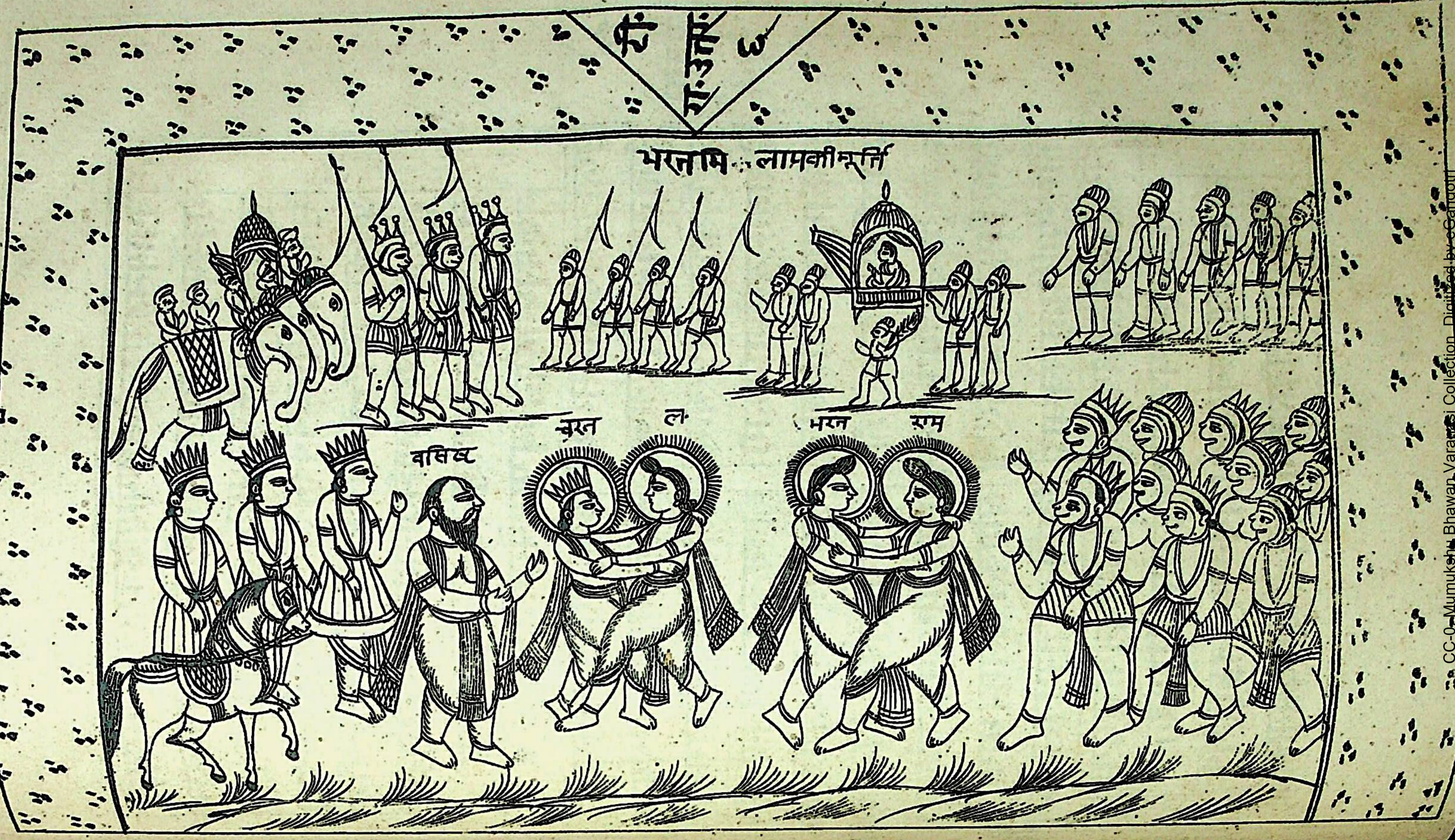
टी॰
रा॰उत्त॰
६
भरतमिलापकीमूर्ति
वसिष्ठ
चुरन
ल॰
भरत
राम

प्रभुमिलतअनुजहिंसोहमोपरिजातिनहिंउपमाकही
जनुप्रेमअरुसिंगारतनुधरिमिलेबरपरमालही॥
बूझतकृपानिधिकुसलभरतहिबचनबेगिनआवही
सुनुसिवासोसुषबचनमनतेंभिन्नजानजोपावही॥
अबकुसलकौसलनाथआरतजानिजनदरसनदियो
बूड़तबिरहबारीसकृपानिधानमोहिकरगहलियो॥

दो॰ पुनिप्रभुहरषिशत्रुघनभेटेहृदयलगाय॥
लछमनभरतमिलेतबपरमप्रेमदोउभाइ॥ ५॥

भरतानुजलछमनपुनिभेटे दुसहबिरहसंभवदुखमेटे॥
सीताचरनभरतसिरुनावा अनुजसमेतपरमसुषपावा॥
प्रभुबिलोकिहरषेपुरबासी जनितबियोगबिपतसबनासी॥
प्रेमातुरसबलोगनिहारी कौतुककीन्हकृपालषरारी॥
अमितरूपप्रगटेतेहिकाला जथाजोगमिलेसबहिंकृपाला॥
कृपादृष्टिरघुबीरबिलोकी किएसकलनरनारिबिसोकी॥
छनमहँसबहिंमिलेभगवाना उमामरमयहकाहुनजाना॥
एहिबिधिसबहिंसुषीकरिरामा आगेचलेसीलगुनधामा॥
कौसल्यादिमातुसबधाईं निरषिबछजनुधेनुलवाईं॥

जनुधेनुबालकबच्छतजिगृहचरनबनपरबसगईं
दिनअंतपुररुषस्रवतथनहुंकारकरिधावतभईं
अतिप्रेमप्रभुसबमातुभेटींबचनमृदुबहुबिधकहे
गईंबिषमबिपतिबियोगभवतिन्हहरषसुषअगनितलहे

दो·भेटेउतनयसुमित्रारामचरनरतिजानि॥
रामहिमिलतकैकेईहृदयबहुतसकुचानि।
लछिमनसबमातन्हमिलेहरषेआसिषपाइ॥
कैकेईकहुँपुनिमिलेमनकरछोभुनजाइ॥६॥

सासुनसबनिमिलीबैदेही। चरनहिलागिहरषअतितेही
देहिंअसीसबूझिकुसलाता होउकुसलतुम्हारअहिवाता
सबरघुपतिमुखकमलबिलोकहिं मंगलजानिनयनजलरोकहिं
कनककथारआरतीउतारहिं। बारबारप्रभुगातनिहारहिं॥
नानाभांतिनिछावरकरहीं परमानंदहरषउरभरहीं॥
हृदयबिचारतिबारहिबारा कवनभांतिलंकापतिमारा
कौशल्यापुनिपुनिरघुबीरहिं चितवतिकृपासिंधुरनधीरहिं
अतिसुकुमारजुगलमेरेबारे निसिचरसुभटमहाबलभारे

दो·लछिमनअरुसीतासहितप्रभुहिबिलोकतमातु
परमानंदमगनमनपुनिपुनिपुलकितगातु॥७॥

लंकापतिकपीसनलनीला जामवंतअंगदसुभशीला॥
हनुमदादिसबबानरबीरा। धरेमनोहरमनुजशरीरा॥
भरतसनेहसीलब्रतनेमा सादरसबबरनहिंअतिप्रेमा
देषनगरबासिन्हकैरीती सकलसराहहिंप्रभुपदप्रीती
पुनिरघुपतिसबसषाबुलाए मुनिपदलागहुसकलसिषाए
गुरबसिष्टकुलपूज्यहमारे इन्हकीकृपादनुजरनमारे
एसबसषासुनहुमुनिमेरे भएसमरसागरकहंबेरे।

पंक्ति ५ चौ० २७ छं ३ दो० २
लंकापतिकपी सुग्रीवस्वामी [illegible] २५ दो० १ प्रभुजीसबसे साकीप्रसंसा सबकागुरुपद बंदनकहो अरुकौसल्या [illegible] आशिषपाइ पुनःकमलादि मंगलरचना अरुआरती [illegible] बडोसुखसोभा कीन्हीं

टी·
रा·उत्तर·
८

[illegible] अभयसमाग्रम गुर्वेकी

[illegible]

बैरागतुभा
हतनपर
नकीपुतरीं
स्वामिजीजो
आविक्षंगारसब
पुन:आसुत
तींकमाथ
कौशल्याजि कै
तभाईकौ
असर्बादपा
एसबनको
बप्रथमग
कैकईग

ममहितलागिजन्मइन्हहारे भरतहुंतेमोहिअधिकपिया
सुनिप्रभुबचनमगनसबभए निमिषनिमिषउपजतसुष

दो॰ कौशल्याकेचरनन्हपुनितिन्हनाएउमाथ ॥
आशिषदीन्हेहरषितुमप्रियजिमिममरघुनाथ॥
सुमनवर्षिनभसंकुलभवनचलेसुषकंद ॥
चढ़ीअटारिन्हदेषहिंनगरनारिनरबृंद ॥८॥

कंचनकलसबिचित्रसँवारे सबन्हिधरेसजिनिजनिजद्वा
बंदनवारपताकाकेतू ॥ सबन्हिबनाएमंगलहेतू ॥
बीथींसकलसुगंधसिंचाई गजमनिरचिबहुचौकपुरा
नानाभांतिसुमंगलसाजे । हरषिनगरनिसानबहुबाजे॥
जहँतहँनारिनिछावरिकरहीं देहिंअसीसहरषउरभरहीं॥
कंचनथारआरतीनाना ॥ जुवतीसजेकरहिंसुभगाना
करहिंआरतीआरतिहरकें। रघुकुलकमलबिपनदिन
पुरशोभासंपतिकल्याना ॥ निगमशेषशारदबषाना॥
तेउयहचरितदेषिठगिरहहीं उमातासुगुननरकिमिकह

दो॰ नारिकुमुदनीअवधसररघुपतिबिरहदिनेस
अस्तभएबिकसतभईनिरषिरामराकेश ॥
होहिंसगुनसुभबिबिधबिधिबाजहिंगगननिसान
पुरनरनारिसनाथकरिभवनचलेभगवान॥९॥

प्रभुजानीकैकईलजानी। प्रथमतासुगृहगएभवानी
ताहिप्रबोधबहुतसुषदीन्हा पुनिनिजभवनगवनहरिकी

तहँप्रथमहित
कनबिषेउ
कीयपुन:सब
बिप्रनकोआशी
हिश्रीकौशल्या
हिआरतीउतार
नाबकानके
टी॰
रा॰ उत्तर॰
९
अनानककि
रहीकामकेष
बहुंदारिदेव
ता॰आगगन
दुंदुभीबजाय
सुमनबर्षि
पथकपथक
आरतीकरि
निजधामगए
तबचारउँ
कुँदीलपक्षी
तिकरनलागे

कृपासिंधुजबमंदिरगए। पुरनरनारिसुखीसबभए।
गुरुबसिष्ठद्विजलिएबुलाई आजुसुघरीसुदिनसुभदाई
सबद्विजदेहुहरषिअनुशासन रामचंद्रबैठहिंसिंहासन॥
मुनिबसिष्ठकेबचनसुहाए सुनतसकलबिप्रन्हअतिभाए।
कहहिंबचनमृदुबिप्रअनेका जगअभिरामरामअभिषेका
अबमुनिबरबिलंबनहिंकीजै महाराजकहँतिलककरीजै।

दो॰ तबमुनिकहेउसुमंत्रसनसुनतचलेउहरषाय।
रथअनेकबहुबाजिगजतुरतसँवारेउजाय॥
जहँतहँधावनपठैपुनिमंगलद्रव्यमगाय॥
हरषसमेतबसिष्ठपदपुनिशिरनाएउआय १०

अवधपुरीअतिरुचिरबनाई देवनसुमनबृष्टिझरलाई
रामकहासेवकन्हबुलाई। प्रथमसखन्हअन्हवावहुजाई
सुनतबचनजहँतहँजनधाए सुग्रीवादितुरतअन्हवाए
पुनिकरुनानिधिभरतहँकारे निजकररामजटानिरुवारे
अन्हवाएप्रभुतीनिउभाई॥ भक्तबछलकृपालरघुराई
भरतभाग्यप्रभुकोमलताई शेषकोटिसतसकहिंनगाई
पुनिनिजजटारामबिबराये गुरुअनुशासनमांगिनहाए
करिमज्जनप्रभुभूषनसाजे अंगअनंगकोटिछबिलाजे

दो॰ सादरसासुनजानकिहिमज्जनतुरतकराइ
दिव्यबसनबरभूषनअंगअंगसजेबनाइ॥
रामबामदिशिशोभितरमारूपगुनखानि॥

देषिमातुसबहरषींजन्मसुफलनिजजानि ॥
सुनषगेशतेहिअवसरब्रह्माशिवमुनिबृंद।
चढिबिमानआएसबसुरदेषनसुषकंद ११

प्रभुबिलोकिमुनिमनअनुरागा तुरतहिंदिव्यसिंहासनमा
रबिसमतेजसोबरनिनजाई बैठेरामद्विजन्हसिरुनाई॥
जनकसुतासमेतरघुराई पेषिप्रहरषेमुनिसमुदाई॥
बेदमंत्रजपद्विजनउचारे नभसुरमुनिजयजयतिपुका
प्रथमतिलकबसिष्ठमुनिकीन्हा मुनिसबबिप्रन्हआयसु
सुतबिलोकिहरषीमहतारी बारबारआरतीउतारी॥
बिप्रन्हदानबिबिधबिधिदीन्हे जाचकसकलअजाचककी
सिंहासनपरत्रिभुअनसाईं ॥ देषसुरन्हदुंदुभीबजाई

छं·नभदुंदुभीबाजहिंबिपुलगंधर्बकिन्नरगावहीं।
नाचहिंअपसरावृंदपरमानंदसुरमुनिपावहीं ॥
भरतादिअनुजबिभीषणांगदहनुमतादिसमेतते
गहिछत्रचामरब्यजनधनुअसिचर्मशक्तिबिराजते
श्रीसहितदिनकरबंशभूषणकामबहुछबिसोहई
नवअंबुधरबरगातअंबरपीतमुनिमनमोहई+॥
मुकुटांगदादिबिचित्रभूषनअंगअंगनअतिसजे
अंभोजनयनबिसालउरभुजधन्यनरनिरषंतिजे
दो· वहशोभासमाजसुखकहतनबनेषगेश॥
बरनैशारदशेषश्रुतिसोरसजानमहेश १२

भिन्नभिन्नअस्तुतिकरगयेसुरनिजनिजधाम।
बंदीबेषबेदतबआयेजहँश्रीराम × × ॥
प्रभुसर्बज्ञकीन्हअतिआदरकृपानिधान
लषेउनकाहूँमरमकछुलगेकरनगुनगान १२।

छं॰ जयसगुननिर्गुनरूपरूपअनूपभूपसिरोमने ॥
दसकंधरादिप्रचंडनिशिचरप्रबलषलभुजबलहने
अवतारनरसंसारभारबिभंजिदारुनदुषदहे।
जयप्रनतपालदयालप्रभुसंयुक्तशक्तिनमामहे
तवबिषममायाबससुरासुरनागनरअगजगहरे
भवपंथभ्रमतअमितदिवसनिसिकर्मकालगुननभरे
जेनाथकरिकरुनाबिलोकेत्रिबिधिदुषतेनिर्बहे
भवषेदछेदनदक्षहमकहुँरक्षरामनमामहे × ॥
जेज्ञानमानबिमत्ततवभवहरनिभक्तिनआदरी
तेपाइसुरदुर्लभपदादपिपरतहमदेषतहरी।
बिश्वासकरिसबआसपरिहरिदासतवजेहोइरहे
जपिनामतवबिनुश्रमतरहिंभवनाथसोस्मरामहे
जेचरनशिवअजपूज्यरजशुभपरसिमुनिपत्नीतरी
नषनिर्गतामुनिबंदितात्रैलोकपावनसुरसरी ॥
ध्वजकुलिशअंकुसकंजजुतबनफिरतकंटककिनलहे।
पदकंजद्वंदमुकुंदरामरमेशनित्यभजामहे × ॥

× × × × × ×

प्रथमबिषम
अनुरूप
त्रिगुनबाम
बदनकांति २
मायाअनव
प्रभुकीनारि
अरा २ भुजा
आन्नाकारि
सनुजद २
अव्यक्तबद्ध
टी॰
रा॰ उत्तर
१२
जानिप्रथमबृत्त ५

अव्यक्तमूलमनादितरुत्वचचारिनिगमागमभने।
षटकंधशाखापंचबीसअनेकपर्नसुमनघने ॥
फलजुगलबिधिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे
पल्लवितफूलतनवलनितसंसारबिटपनमामहे
जेब्रह्मअजमद्वैतमनुभवगम्यमनपरध्यावहीं
तेकहहुजानहुनाथहमतवसगुनजसनितगावहीं
करुनायतनप्रभुसदगुनाकरदेवयहबरमाँगहीं
मनकर्मबचनबिकारतजितवचरनहमअनुरागहीं
दो॰ सबकेदेखतबेदन्हबिनतीकीन्हिउदार * ॥
अंतरध्यानभएपुनिगएब्रह्मआगार * * ॥
बैनतेयसुनुसंभुतबआएजहँरघुबीर * ॥
बिनयकरतगदगदगिरापूरितपुलकशरीर १

जयरामरमारमनंशमनं भवतापभयाकुलपाहिजनं।
अवधेशसुरेशरमेशबिभो सरनागतमागतपाहिप्रभो
दससीसबिनासनबीसभुजा कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा
रजनीचरबृंदपतंगरहे सरपावकतेजप्रचंडदहे ॥
महिमंडलमंडनचारुतरं धृतसायकचापनिषंगबरं
मदमोहमहाममतारजनी तमपुंजदिवाकरतेजअनी
मनुजातकिरातनिपातकिये मृगलोगकुभोगसरेनहिये
हतनाथअनाथनिपाहिहरे बिषयाबनपावँरभूलिपरे
बहुरोगबियोगन्हिलोगहये भवदंघ्रिनिरादरकेफलये

सू॰ ब्रह्मरूप त्वमनादि तरुत्वचा दिनो अर्थ आपको संसार रूप बतावत हैं स्वरूप नाको अ॰ प्रनाम कर तैसे कैसो है

कुमार बचन अ
चार जौहि पर
प्रथम नाको
मूल है श्री अ
नादि है याहि
बेदनाको

टी॰
रा॰ उत्तर॰
१३

नवी है दस
शाखकाण्ड है
अरुण्या १४
ना॰ २ दोनों
का॰ ७ अन्य ३
ब्रह्म ६ ग्रह
अठ कर्माज्ञा
अमर कोपई
महनापा १५
हलि २ अहंकार १
पंचतन्मात्रा ५
पंचज्ञानेंद्रिय ५
पंचकर्मेंद्रिय ५
मन पंचमहाभूत ५
तु ५ अपर जीव १
ये पच्चीस जो है
की शाखा है

भवसिंधुअगाधपरेनरते पदपंकजप्रेमनजेकरते
अतिदीनमलीनदुषीनितहीं जिन्हकेपदपंकजप्रीति नहीं
अवलंबभवंतकथाजिन्हके प्रियसंतअनंतसदातिन्हके
नहिंरागनलोभनमानमदा तिन्हकेसमबैभववाबिपदा
यहितेतवसेवकहोतमुदा मुनित्यागतजोगभरोससदा
करिप्रेमनिरंतरनेमलिये पदपंकजसेवतसुद्धहिये
सममानिनिरादरआदरही सबसंतसुषीबिचरंतमही
मुनिमानसपंकजभृंगभजे रघुबीरमहारनधीरअजे
तवनामजपामिनमामिहरी भवरोगमहागदमानअरी
गुनसीलकृपापरमायतनं प्रनमामिनिरंतरश्रीरमनं
रघुनंदनिकंदयद्वंद्वघनं महिपालबिलोकयदीनजनं

दो॰ बारबारबरमांगौं हरषिदेहुश्रीरंग ॥
पदसरोजअनपायनीभक्तिसदासतसंग ॥
बरनिउमापतिरामगुनहरषिगएकैलास ॥
तबप्रभुकपिन्हदिवाएसबबिधिसुषप्रदबास

सुनुषगपतियहकथापावनी त्रिबिधतापभवभयदावनी
रामराजकरसुभअभिषेका सुनतलहहिंनरबिरतिबिबेका
जेसकामनरसुनहिंजेगावहिं सुषसंपतिनानाविधिपावहिं
सुरदुर्लभसुषकरिजगमाहीं अंतकालरघुपतिपुरजाहीं
सुनहिंबिमुक्तबिरतअरुबिषई लहहिंभक्तिगतिसंपतिनई
बिरतिबिबेकभगतिदृढकरनी मोहनदीकहँसुंदरतरनी ॥

नित नवीन शोभा है कहां है अविद्या ही तो कार्य्य जो संसार न ध हती है बहती आसु जौ संसार अवकी आविद्या
कामदेह और वासनाको मल बिन अरु मल न है अबैत बाधी महात्मा आपको धरल जन्म रहित यान

माया और
मनोतर॥

नितनवमंगलकोशलपुरी हरषितरहहिंलोगसब
नितनइप्रीतिरामपदपंकज सबकेजिन्हहिंनमतशिव
मंगनबहुप्रकारपहिरांये ॥ द्विजनदाननानाबिधिपा

दो॰ब्रह्मानंदमगनकपिसबकेप्रभुपदप्रीति॥
जातनजानेदिवसतिन्हगएमासषटबीति १५

बिसरेगृहसपनेहुँसुधिनाहीं जिमिपरद्रोहसंतमनमा
तबरघुपतिसबसखाबुलाए आइसबनसादरसिरना
परमप्रीतिसमीपबैठारे भगतसुखदमृदुबचनउचा
तुम्हअतिकीन्हमोरिसेवकाई मुखपरकेहिबिधिकरौं
तातेंमोहितुमअतिप्रियलागे ममहितलागिभवनसुख
अनुजराजसंपतिबैदेही। देहगेहपरिवारसनेही॥
सबममप्रियनहिंतुमहिंसमाना मृषानकहौंमोरयहबा
सबकेप्रियसेवकयहनीती मोरेअधिकदासपरप्री

दो॰अबगृहजाहुसखासबभजेहुमोहिदृढनेम॥
सदासर्बगतसर्बहितजानिकरेहुअतिप्रेम १६

सुनिप्रभुबचनमगनसबभए कोहमकहांबिसरतनगए
एकटकरहेजोरिकरआगे सकहिंनकछुकहिअतिअ
परमप्रेमतिन्हकरप्रभुदेखा कहाबिबिधबिधिग्यानबि
प्रभुसन्मुखकछुकहननपारहिं पुनिपुनिचरनसरोजनि
तबप्रभुभूषनबसनमगाए नानारंगअनूपसुहाए॥
सुग्रीवहिंप्रथमपहिराये बसनभरतनिजहाथबन

प्रभुप्रेरितलछमनपहिराये । लंकापतिरघुपतिमनभाए
अंगदबैठिरहानहिंडोला । प्रीतिदेखिप्रभुताहिनबोला

दो॰ जामवंतनीलादिसबपहिराएरघुनाथ ॥
हियधरिरामरूपसबचलेनाइपदमाथ ~ ॥
तबअंगदउठिनाइसिरुसजलनयनकरजोरि ॥
अतिबिनीतबोलेउबचनमनहुंप्रेमरसबोरि १७।

सुनुसर्बग्यकृपासुखसिंधो । दीनदयाकरआरतबंधो ॥
मरतीबेरनाथमोहिबाली । गयोतुम्हारेहिकोछेंघाली
असरनसरनबिरदसंभारी । मोहिजनितजहुभगतहितकारी
मोरेतुमप्रभुगुरुपितुमाता । जाउँकहाँतजिपदजलजाता
तुम्हहिंबिचारिकहहुनरनाहा । प्रभुतजिभवनकाजममकाहा
बालकग्यानबुद्धिबलहीना । राखहुसरननाथजनदीना ।
नीचटहलग्रहकैसबकरिहं । पदपंकजबिलोकिभवतरिहं
असकहिचरनपरेउप्रभुपाहीं । अबजनिनाथकहहुग्रहजाही

दो॰ अंगदबचनबिनीतसुनिरघुपतिकरुनासींव
प्रभुउठायउरलाएउसजलनयनराजीव ~ ~ ॥
निजउरमालबसनमनिबालितनयपहिराय ॥
बिदाकीन्हभगवानतबबहुप्रकारसमुझाय १८

भरतअनुजसौमित्रिसमेता । पठवनचलेभगतकृतचेता
अंगदहृदयप्रेमनहिंथोरा । फिरफिरचितवरामकीओर
बारबारकरिदंडप्रनामा ॥ मनअसरहनकहहिंमोहिरामा

कपि ध्यान करनु है तरकी पुरु है जानि भ्रता भक्तासगुन स्वपकौ जस निलगावतै है करनाकी है तानै बापादि है सगुनकौ षान कोई अपग्राहि है तजकै याभांति ग्रस्तुतिकारि भद्रजलोक गगुन:महा है बस्तुमपारचर नकातिकीय सगुनरूप भक्तिप्रधान कारि

टी॰
रा॰ उत्तर
१६

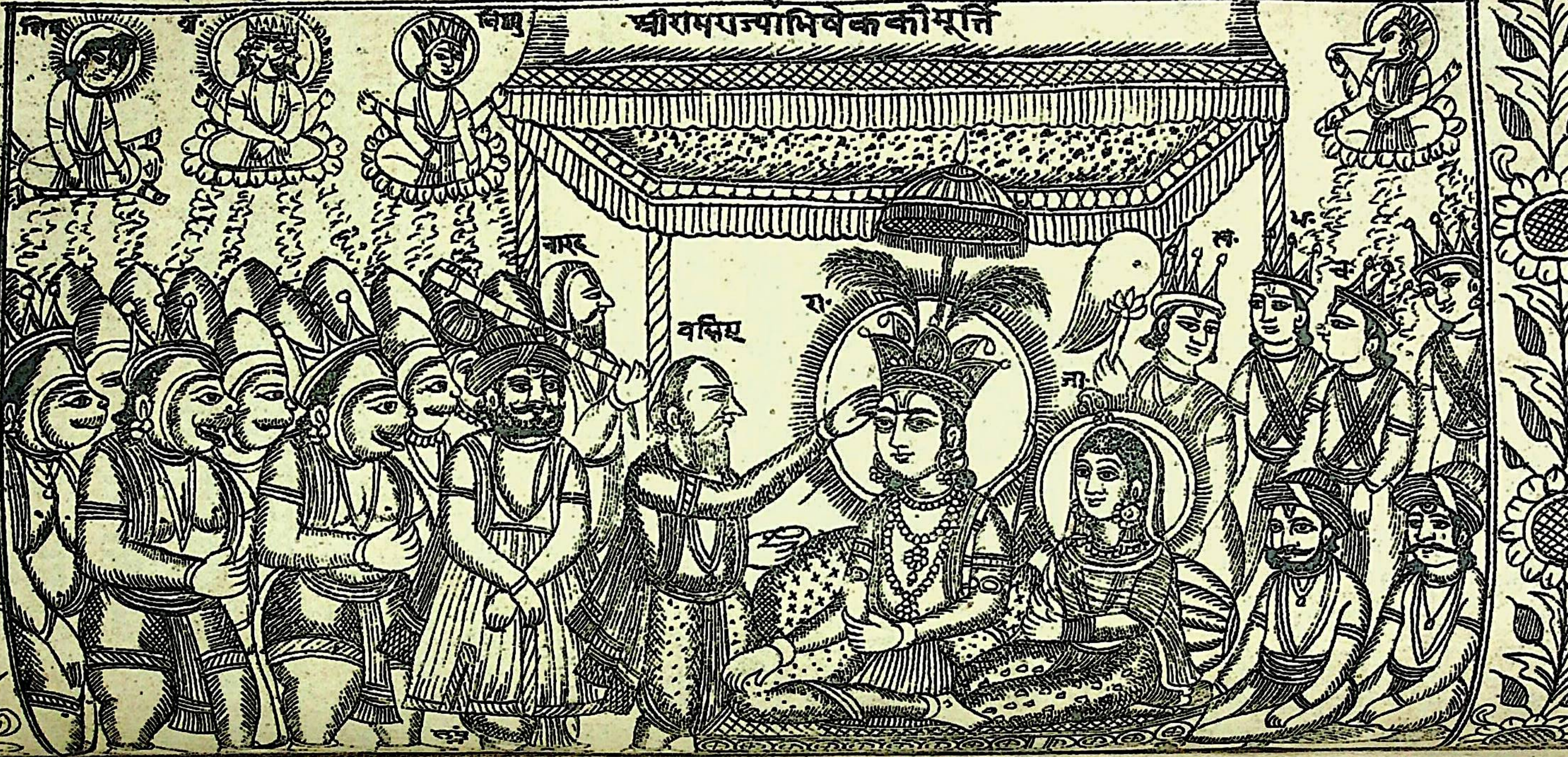
श्रीरामराज्याभिषेककीमूर्त्ति
शिव
ब्र
विष्णु
नारद
वशिष्ठ
रा॰
जा॰
ल॰
भ॰

रामबिलोकनिबोलनिचलनि सुमरिसुमरिसोचतहँसमिलनी
प्रभुरुषदेषिबिनयबहुभाषी चलेउहृदयपदपंकजराषी
अतिआदरसबकपिपहुँचाए भाइन्हसहितभरतपुनिआए
तबसुग्रीवचरनगहिनाना। भाँतिबिनयकीन्हीहनुमाना।
दिनदसकरिरघुपतिपदसेवा पुनितवचरनदेषिहौंदेवा।
पुन्यपुंजतुमपवनकुमारा। सेवहुजाइकृपाआगारा।
असकहिकपिसबचलेतुरंता अंगदकहैंसुनहुहनुमंता।

दो·कहेउदंडवतप्रभुसैंतुमहिंकहौंकरजोरि॥
बारबाररघुनायकहिंसुरतकरायेहुमोरि॥
असकहिचलेउबालिसुतफिरिआएउहनुमंत।
तासुप्रीतिप्रभुसनकहीमगनभयेभगवंत॥
कुलिसहुचाहिकठोरअतिकोमलकुसुमहुचाहि
चितषगेसअसरामकरसमुझिपरैकहुकाहि१९

पुनिकृपालिलियोबोलिनिषादा दीन्हेभूषनबसनप्रसादा॥
जाहुभवनममसुमरनकरेहू मनक्रमबचनधर्मअनुसरेहू
तुममममसषाभरतसमभ्राता सदारहेहुपुरआवनजाता
बचनसुनतउपजासुषभारी परेउचरनभरिलोचनबारी
चरननलिनउरधरिगृहआवा प्रभुसुभावपरिजनन्हिसुनावा
रघुपतिचरितदेषिपुरबासी पुनिपुनिकहहिंधन्यसुषरासी
रामराजबैठेत्रयलोका २॥ हरषितभएगएसबसोका
बैरुनकरकाहूसनकोई॥ रामप्रतापबिषमताषोई

निजधामगए
याअंगदसे
कहिकपिछ
माननभयो
प्रेमछनहीन
पीतगातभ
श्रीरघुनाथ
बिभीषनसु
ग्रीवआदि
कपिनको
सनमानिअं
गदकोअधिक
जानिभरतअ
र्कोंआदरन
रवाइबिदा
कियानहींह
नुमानरहे
पुनःनिषाद
टी·
रा·उतर
१८

कहौदंत
प्रीतिश्रेष्ठी
गहिंजानत
श्रीरामभौ
हतिसंइउत
वनसुखवर्ण
सम्पूर्णप्रकरा
वर्णमानराम
ख्या३त्रेता४
म (श्रीत्र)२
परतेधर्मप
मानतेवारी
तंबितराज्य

तिसको अर्थ
श्रीरामराज्यभा
इसन्यायसीलो
कके हाथमोहे
लिपरतहै और
कहै कातेको
इकोउनहींत
अमुन हमारासह

टी॰
रा॰उत्तर॰
१९

दो॰बरनाश्रमनिजनिजधरमनिरतबेदपथलोग
चलहिंसदापावहिंसुषनहिंभयसोकनरोग २०

दैहिकदैविकभौतिकतापा रामराजनहिंकाहुहिंब्या
सबनरकरहिंपरस्परप्रीती चलहिंस्वधर्मनिरतश्र
चारिउचरनधरमजगमाहीं। पूरिरहासपनेहुअघना
रामभगतरतसबनरनारी। सकलपरमगतिकेअधि
अल्पमृत्युनहिंकवनिउंपीरा सबसुंदरसबबिरुजसरी
नहिंदरिद्रकोउदुषीनदीना। नहिंकोउअबुधनलच्छन
सबनिर्दंभधरमरतपुनी॥ नरअरुनारिचतुरसबगु
सबगुनज्ञसबपंडितज्ञानी। सबकृतज्ञनहिंकपटसया

दो॰रामराजनभगेशसुनसचराचरजगमाहिं॥
कालकर्मसुभावगुनकृतदुखकाहुहिनाहिं २१

भूमिसप्तसागरमेखला॥ एकभूपरघुपतिकोस
भुवनअनेकरोमप्रतिजासू यहप्रभुताकछुबहुतन
सोमहिमासमुझतप्रभुकेरी यहबरनतहीनताघने
सोउमहिमाखगेशजिनजानी फिरएहिंचरिततिन्ह
सोउजानेकरफलयहलीला कहहिंमहामुनिबरदम
रामराजकरसुषसंपदा। बरननसकैफनीससार
सबउदारसबपरउपकारी। बिप्रचरनसेवकनरना
एकनारिब्रतरतसबझारी तेमनबचक्रमपतिहित

दो॰दंडजतिन्हकरभेदजहँनर्तकनृत्यसमाज॥

हेमहरुजी
कहुनहिंहिमइ
नालघरपालका
मध्यलनकारनि
गरलोगनकै
नलसमाजमों
रत्नी अमुक
सलकोमीतह
यहवातकोहं
महीकेवल
मनकाविजय
कहइहइय
शुधाविलोगइ
कारिअनप्रति
मुनिपरतहै
सहबैदमार्ग
प्रचार स्त्री
पाखंडमत तिना
८ कोउ

जानतनाहीं सबकोसम कालकालकी ज्ञानप्रकाश दयानिधि भानरथी कीन्हसब पृथ्वीसुख तिनयोकि कहिधर्मसु धिकगती नकलपद किये षाजा

जीत हूमनहिंसुनियअसरामचंद्रकेराज २२

फूलहिंफलहिंसदातरुकानन	रहहिंएकसंगगजपंचानन
खगमृगसहजबैरबिसराई	सबन्हिपरस्परप्रीतिबढ़ाई
कूजहिंखगमृगनानाबृंदा।	अभयचरहिंबनकरहिंअनंदा।
सीतलसुरभिपवनबहमंदा	गुंजतअलिलेचलिमकरंदा॥
लताबिटपमांगेमधुचवहीं	मनभावतोधेनुपयस्रवहीं।
ससिसंपन्नसदारहधरनी।	त्रेताभइकृतयुगकैकरनी
प्रगटीगिरिन्हबिबिधमनिखानी	जगदातमाभूपजगजानी॥
सरितासकलबहहिंबरबारी	सीतलअमलस्वादसुषकारी
सागरनिजमरजादारहहीं	डारहिंरत्नतटहिंनरलहहीं।
सरसिजसंकुलसकलतड़ागा।	अतिप्रसन्नदशदिसाबिभाग

दो· बिधुमहिपूरमयूषन्हिरबितपजेतनेहिकाज।
मांगेबारिददेहिंजलरामचंद्रकेराज॥ २३ ॥

कोटिन्हबाजिमेधप्रभुकीन्हे	दानअनेकद्विजन्हकहँदीन्हे
श्रुतिपथपालकधरमधुरंधर	गुनातीतअरुभोगपुरंदर॥
पतिअनुकूलसदारहसीता।	सोभाषानिसुसीलबिनीता।
जानतिकृपासिंधुप्रभुताई।	सेवतिसदाचरनमनलाई
जद्यपिगृहसेवकसेवकनी	बिपुलसकलसेवाबिधिगुनी
निजकरगृहपरिचरजाकरई	रामचंद्रआयसुअनुसरई॥
जेहिबिधिकृपासिंधुसुषमानई	सोकरश्रीसेवाबिधिजानई
कौसल्यादिसासुगृहमाहीं	सेवईसबन्हिमानमदनाहीं।

सनथरासुख सीतारघुनाथ जुके परसपर प्रीतिबढ़ावयु भवभ्रमभाव की प्रीति परसपर कहिस्थानभेद जैसवालमीकि आश्रममेंलव कुशकोजन्म तेसंयुक्त

नसकभरतकी अंगदबिनकीन लक्ष्मणकेद्वारा शत्रुघातीशत्रुघन कैयथाक्रमसुत हैतेंतामकहौ अस्थानबानी मनमायानेम श्रीरामराज्य

३५ ॥

कबिबृ व
कोगुरु
सरस्वभगत
गंगपूर्णि
श्रीरघुनाथ
३ तो॰ ।
बिसाहकै
बहुप्रताप
सदसुरुट
प्रातःकाल
६ हो॰ ।
३ छं॰ ।
१० श्रौ॰

उमारमाब्रह्माणिबंदिता। जगदंबासंततमनिंदिता॥

दो॰ जासुकृपाकटाच्छसुरचाहतचितवनसोइ।
रामपदारबिंदरतकरतसुभावहिषोइ।२४।

सेवहिंसानुकूलसबभाई। रामचरनरतिअतिअधि
प्रभुमुखकमलबिलोकतरहहीं कबहुंकृपालहमहिंकछु
रामकरहिंभ्रातन्हपरप्रीती। नानाभांतिसिखावहिंनी
हरषितरहहिंनगरकेलोगा। करहिंसकलसुरदुर्लभभो
अहनिसिबिधिहिमनावतरहहीं श्रीरघुबीरचरनरतिचह
दुइसुतसुंदरसीताजाए। लवकुसबेदपुराननगाए
दोउबिजईबिनईगुनमंदिर। हरिप्रतिबिंबमनहुंअति
दुइदुइसुतसबभ्रातन्हकेरे। भएरूपगुनसीलघनेरे॥

दो॰ ग्यानगिरागोतीतअजमायामनगुनपार॥
सोइसच्चिदानंदघनकरनरचरितउदार २५

प्रातकालसरजूकरिमज्जन बैठहिंसभासंगद्विजस
बेदपुरानबसिष्ठबषानहिं। सुनहिंरामजद्यपिसबजा
अनुजनसंजुतभोजनकरहीं देषिसकलजननीसुषभ
भरतशत्रुहनदोनोंभाई॥ सहितपवनसुतउपबनजा
बूझहिंबैठिरामगुनगाहा। कहहनुमानसुमतिअवगा
सुनतबिमलगुनअतिसुषपावहिं बहुरिबहुरिकरिबिनय
सबकेंगृहगृहहोहिंपुराना। रामचरितपावनबिधिना
नरअरुनारिरामगुनगानहिं करहिंदिवसनिसिजातनजा

मोप बेदपुराना
हिकोजानत हैं
संताश्रवनकरउ
गृहभावतेंबोवै
त अवनगरशोभा
सरजूके घाट घाट
घाटकोहिको
प्रसंगसबैनारद

टी॰
रा॰ उत्तर॰
२१

सनकादिकस्मर्ण
पुरस्पताहि
बिरतिबिसार
सोलागतेहैं
गृहअघसला
कैनामसमान
गृहधनसंरह
प्रधर्मप्रचार
प्रभुरघुबर
सुनावलितें
लोकसांछाड़
रहौ
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दो॰ अवधपुरीबासिन्हकरसुषसंपदासमाज
सहससेसनहिंकहिसकहिंजहँनृपरामबिराज

नारदादिसनकादिमुनीसा। दरसनलागिकोसलाधीसा।
दिनप्रतिसकलअयोध्याआवहिं देषिनगरबिरागबिसरावहिं
जातरूपमनिरचितअटारीं। नानारंगरुचिरगचढारीं॥
पुरचहुँपासकोटअतिसुंदर रचेकँगूरारंगरंगबर॥
नवग्रहनिकरअनीकबनाई जनुघेरीअमरावतिआई॥
महिबहुरंगरचितगचकाँचा। जोबिलोकिमुनिबरमननाँचा।
धवलधामऊपरनभचुंबत। सकलमनहुँरबिससिदुतिनिंदत
बहुमनिरचितझरोषाभ्राजहिं गृहगृहप्रतिमनिदीपबिराजहिं

छं॰ मनिदीपराजहिंभवनभ्राजहिंदेहरीबिद्रुमरची॥
मनिषंभभीतिबिरंचिबिरचीकनकमनिमर्कतषची।
सुंदरमनोहरमंदिरायतअजिररुचिरफटिकरचे॥
प्रतिद्वारद्वारकपाटपुरटबनाइबहुबज्रनषचे॥

दो॰ चारुचित्रशालागृहगृहप्रतिलिषेबनाइ।
रामचरितजेनिरषमुनितेमनलेहिंचुराइ।२७।

सुमनबाटिकासबहिंलगाईं बिबिधभाँतिकरजतनबनाईं
लताललितबहुजातिसुहाईं फूलहिंसदाबसंतकिनाँईं
गुंजतमधुकरमुषरमनोहर मारुतत्रिबिधसदावहसुंदर
नानाषगबालकन्हिजिआए बोलतमधुरउड़ातसुहाए
मोरहंससारसपारावत भवनन्हिपरसोभाअतिपावत

धरमग्रंथि
कगानी
बालकृत
मद्राकिये
बाज्ञालन
बारग्रह
सीनारद
नाथजेके
परस्पर
प्रीतिबस
अनुभवसम
ग्रहपानिनभा
न्हकीप्रीति
परस्परकहि
ज्ञानभेदजैसे
बाल्मीकि
आश्रमनाँ
तपकथाको
दो॰
रा॰ उत्त॰
२२
ज्यानितेप्रथम
तदकोभरतजी

टी॰
रा॰ उत्तर॰
२३

जहँतहँदेषहिंनिजपरछाहीं बहुनिधिकूजहिंनृत्यकरा
सुकसारिकापढ़ावहिंबालक कहहुरामरघुपतिजनपाल
राजदुआरसकलबिधिचारू बीथीचौहटरुचिरबजारू॥

छं॰बाजारचारुनबनैबरननबस्तुबिनुगथुपाइये।
जहँभूपरमानिवासतहँकीसंपदाकिमिगाइये॥
बैठेबजाजसराफबनिकअनेकमनहुँकुबेरते॥
सबसुखीसबसच्चरितसुंदरनारिनरसिसुजरठते

दो॰उत्तरदिशिसरजूबहैनिर्मलजलगंभीर ॥
बांधेघाटमनोहरस्वल्पपंकनहिंतीर २८।

दूरिफराकरुचिरसोघाटा जहँजलपिअहिंबाजिगजठा
पनघटपरममनोहरनाना। तहाँनपुरुषकरहिंअस्ना
राजघाटसबबिधिसुंदरबर मज्जहिंतहाँबरनचारिउन
तीरतीरदेवनकेमंदिर ॥ चहुँदिशितिन्हकेउपबनसं
कहुँकहुँसरितातीरउदासी बसहिंज्ञानरतमुनिसंन्यासी
तीरतीरतुलसिकासुहाई बृंदबृंदबहुमुनिन्हलगाई॥
पुरशोभाकछुबरनिनजाई बाहिरनगरपरमरुचिराई
देषतपुरीअखिलअघभागा बनउपबनबापिकातड़ा

छं॰बापीतड़ागअनूपकूपमनोहरायनसोहहीं॥
सोपानसुंदरनीरनिर्मलदेषिसुरमनमोहहीं॥
बहुरंगकंजअनेकषगकूजहिंमधुपगुंजारहीं॥
आरामरम्यपिकादिखगरवजनुपथिकहँकारहीं॥

दो॰ रमानाथजहँराजकरसोपुरबरनिनजाइ॥
अनिमादिकसुषसंपदारहींअवधसबछाइ

जहँतहँनररघुपतिगुनगावहिं बैठिपरस्परइहैसिखावहिं
भजहुप्रनतप्रतिपालकरामहिं सोभासीलरामगुनधामहिं
जलजबिलोचनस्यामलगातहिं पलकनयनइवसेवकत्रातहिं
धृतसररुचिरचापतूनीरहिं संतकंजबनरबिरनधीरहिं
कालकरालब्यालषगराजहिं नमतरामअकाममममताजहिं
लोभमोहमृगजूथकिरातहिं मनसिजकरिहरिजनसुषदातहिं
संसयसोकनिबिड़तमभानुहिं दनुजगहनघनदहनकृसानुहिं
जनकसुतासमेतरघुबीरहिं कसनभजहुभंजनभवभीरहिं
बहुबासनामसकहिमरासिहिं सदाएकरसअजअबिनासिहिं
मुनिरंजनभंजनमहिभारहिं तुलसिदासकेप्रभुहिउदारहिं

दो॰ एहिबिधिनगरनारिनरकरहिंरामगुनगान
सानुकूलसबपररहहिंसंततकृपानिधान। ३०।

जबतेंरामप्रतापखगेसा। उदितभयोअतिप्रबलदिनेस
पूरिप्रकासरहेउतिहुँलोका बहुतेउसुखबहुतेन्हमनसोका
जिन्हहिंसोकतेकहौंबखानी प्रथमअबिद्यानिसानसानी
अघउलूकजहँतहाँलुकाने कामक्रोधकैरवसकुचाने
बिबिधकर्मगुनकालसुभाऊ एचकोरसुखलहहिंनकाऊ
मत्सरमानमोहमदचोरा इन्हकरसुखनहिंकवनिउंओरा
धरमतड़ागग्यानबिग्याना। एपंकजबिकसेबिधिनाना।

टी॰
रा॰ उत्तर॰
२४

ग्रंथ ८ हनुमान का मनसहित उग्रनाथ प्र रुकवार सी चौं. ०॥ रामरत ५४ सम्मथम नरमध्य आनन्द नदि १८ दो. १८ चौं. पंक्ति ८

वाटिका मांगा
तहँ एकांत
समय जानि
सनकादिक आ
लगातिते पहै
बाहतें अवस्था
बरलाने नाहीं
दो.
रा. उत्तर
२५

सुख संतोष बिराग बिबेका। बिगत सोक ए कोक अनेका

दो. यह प्रताप रबि जाहि कि उर जब करै प्रकास।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास।३१

भ्रातन्ह सहित राम एक बारा। संग परम प्रिय पवनकुमा
सुंदर उपबन देखन गए × । सब तरु कुसुमित पल्लव न
जानि समय सनकादिक आए। तेज पुंज गुन सील सुहाए
ब्रह्मानंद सदा लय लीना ॥ देखत बालक बहु कालीन
रूप धरे जनु चारिउ बेदा ॥ समदरसी मुनि बिगत बिभे
आसा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं रघुपति चरित होय तहँ सुन
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँ घटसंभव मुनिबर ग्या
रामकथा मुनिबर बहु बरनी ग्यान जोनि पावक जिमि अ

दो. देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह॥
स्वागत पूछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ३२

कीन्ह दंडवत तीनिउ भाई । सहित पवनसुत सुख अधि
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी भए मगन मन सके न रो
स्यामल गात सरोरुह लोचन। सुंदरता मंदिर भव मोचन॥
एकटक रहे निमेष न लावहिं। प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक सरी
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे परम मनोहर बचन उचारे॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरे दरस जाहि अघ खीसा॥
बड़े भाग पाइय सतसंगा। बिनहिं प्रयास होहिं भव भं

जैसमा कहँ
सुधापयीस
बर्षक जनम
सबकहुँ सहल
नैं घरहूँ छा
उनकी सौति
स्य आदि अक्षति
गाढ़ मनोना
छिन प्रेम भक्ति
बरण बिधि के

× ×

× ×

दो॰ संतसंगअपबर्गकरकामीभवकरपंथ।
कहहिंसंतकबिकोबिदश्रुतिपुरानसदग्रंथ ३३

सुनिप्रभुबचनहरषिमुनिचारी पुलकिततनुअस्तुतिअनुसारी
जयभगवंतअनंतअनामय अनघअनेकएककरुनामय
जयनिर्गुनजयजयगुनसागर सुषमंदिरसुंदरअतिनागर
जयइंदिरारमनजयभूधर। अनुपमअजअनादिसोभाकर
ज्ञाननिधानअमानमानप्रद पावनसुजसपुरानबेदबद।
तज्ञकृतज्ञअज्ञताभंजन ॥ नामअनेकअनामनिरंजन।
सर्बसर्बगतसर्बउरालय। बससिसदाहमकहुँपरिपालय
द्वंदबिपतिभवफंदबिभंजय हृदिबसिरामकाममदगंजय

दो॰ परमानंदकृपायतनमनपरिपूरनकाम २॥
प्रेमभगतिअनपायनीदेहुहमहिंश्रीराम ३४

देहुभगतिरघुपतिअतिपावनी त्रिबिधतापभवदापनसावनी
प्रनतकामसुरधेनुकलपतरु। होइप्रसन्नदीजेप्रभुयहबर।
भवबारिधिकुंभजरघुनायक सेवतसुलभसकलसुषदायक
मनसंभवदारुनदुषदारय। दीनबंधुसमताबिस्तारय
आसत्रासइरषादिनिवारक बिनयबिबेकबिनयबिस्तारक
भूपमौलिमनिमंडनधरनी देहिभगतिसंसृतिसरितरनी
मुनिमनमानसहंसनिरंतर। चरनकमलबंदितअजसंकर
रघुकुलकेतुसेतुश्रुतिरक्षक कालकर्मसुभावगुनभक्षक
तारनतरनहरनसबदूषन ॥ तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषन

जोऽगावत हैं
भगत संतों
कै औगुन दोष
न मान प्रभु
प्रीति करी
ताते भक्त प्रीति
संतासंतलक्ष
पत प्रभु न्या
यो नीति कहैं।
संत परोपका
री पर सुष
सुषी पर दुष
दुषी। असंत
अपकारी रहैं
पश्चादि पोषक
फलसुष देत
दुषी सब दुष
सबकै सुषी
त्यागि कहैं
पुन: फल बि
टी॰
रा॰ उत्तर
२६
श्री की कथा
रुणी ठौ भु
कर्म के फल
कौ त्याग म
शुभ कर्म कौ
सर्वथा त्याग
अकरन हित
कल है।
प्रेम आनंद
साधन है
उपदान
प्रेम अंत है
कल्प युक्तै
आनंद लानो।

तोनोंग्य
कै देविबरै
नबभाषा
कहाअध्या
संयोगतें
नबैसरत
स्नानमभा
जिनौंसंगत
तोसोपुन
हेवसहितहै
गवहेवरह
हमरहेपुन
भइतनव
उतैकहावै
अहगुनसहय
धवधडातव
हवैकहावै
जैसोदिगाति

दो॰ बारबारअस्तुतिकरिप्रेमसहितसिरुनाइ॥
ब्रह्मभवनसनकादिगेअतिअभीष्टबरपाइ।३५॥

सनकादिकबिधिलोकसिधाए भ्रातन्हरामचरनसिरुनाये।
पूछतप्रभुहिसकलसकुचाहीं चितवहिंसबमारुतसुतपा
सुनीचहहिंप्रभुमुखकैबानी जोसुनिहोइसकलभ्रमहानी
अंतरजामीप्रभुसबजाना। बूझतकहहुकाहहनुमाना
जोरिपानिकहतबहनुमंता। सुनहुदीनदयालभगवंता॥
नाथभरतकछुपूछनचहहीं प्रस्नकरतमनसकुचतअहहीं
तुमजानहुकपिमोरसुभाऊ भरतहिंमोरनअंतरकाऊ॥
सुनिप्रभुबचनभरतगहेचरना। सुनहुनाथप्रनतारतिहरना

दो॰ नाथनमोहिसंदेहकछुसपनेहुसोकनमोह।
केवलकृपातुम्हारिहिकृपानंदसंदोह॥३६॥

करौंकृपानिधिएकढिठाई मैंसेवकतुमजनसुखदाई॥
संतनकैमहिमारघुराई। बहुबिधिबेदपुराननगाई॥
श्रीमुखतुम्हपुनिकीन्हबड़ाई तिन्हपरप्रभुहिप्रीतिअधि
सुनाचहौंप्रभुतिन्हकरलछन कृपासिंधुगुनज्ञानबिचछ
संतअसंतभेदबिलगाई॥ प्रनतपालमोहिकहहुबुझा
संतनकेलच्छनसुनभ्राता। अगनितस्रुतिपुरानबिख्या
संतअसंतनकैअसिकरनी। जिमिकुठारचंदनआचरनी॥
काटैपरसुमलयसुनभाई निजगुनदेइसुगंधबसाई॥

दो॰ तातेंसुरसीसन्हचढ़तजगबल्लभश्रीखंड॥

अनिलशाहपौडनघनाहिपरशुबदनपरुदंड ३७

बिषयअलंपटसीलगुनाकर परदुषदुषसुखसुषदेषेपर
समअभूतरिपुबिमदबिरागी लोभामर्षहर्षभयत्यागी॥
कोमलचित्तदीनपरदाया। मनक्रमबचममभगतिअमाया॥
सबहिमानप्रदआपुअमानी भरतप्रानसममममतेप्रानी।
बिगतकाममममनामपरायन सांतिबिरतिबिनतीमुदितायन॥
सीतलतासरलतामयत्री॥ द्विजपदप्रीतिधरमजनयित्री
एसबलछनबसहिंजासुउर। जानेहुतातसंतसंततफुर॥
समदमनियमनीतिनहिंडोलहिं परुषबचनकबहूंनहिंबोलहिं

दो· निंदाअस्तुतिउभयसम ममताममपदकंज।
तेसज्जनममप्रानप्रियगुनमंदिरसुषपुंज ३८।

सुनहुअसंतनकेरसुभाऊ। भूलेहुसंगतिकरियनकाऊ
तिनकरसंगसदासुषदाई जिमिकपिलहिंघालैहरहाई
खलनहृदयअतितापबिशेषी जरहिंसदापरसंपतिदेषी।
जहँकहुंनिंदासुनहिंपराई। हरषहिंमनहुंपरीनिधिपाई
कामक्रोधमदलोभपरायन निर्दयकपटीकुटिलमलायन
बयरुअकारनसबकाहूसों जोकरहितअनहिततांहूसों
झूठहिलेनाझूठहिदेना॥ झूठइभोजनझूठचबेना॥
बोलहिंमधुरबचनजिमिमोरा षाहिंमहाअहिहृदयकठोरा

दो· परद्रोहीपरदाररतपरधनपरअपबाद॥
तेनरपावनपापमयदेहधरेमनुजाद॥ ३९॥

स्वाँमं
नाँहने
रखवारी
जिनकीहो
नापरघेडु
गहिराखत
हुताखक
नश्रामुख
तंसुनभ्रा
नरकुंम
दिरकोगारा
अरुयाप्रकार
नीतिनवीन
पीवकारउ
हूँनहीं मा
दसबचौ
हरषबस
सोकमांबर
दो·
तिहैं नहीं ब
त्यागुन मनका
दिसमाधिया
गभुवनकारउ
हे·

लोभइओढ़नलोभइडासन शिश्नोदरपरजमपुरत्रासन
काहूकीजोसुनहिंबड़ाई ॥ स्वांसलेहिंजनुजूड़ीआई
जबकाहूकैदेखहिंबिपती सुखीभएमानहुजगनृपती
स्वारथरतपरिवारबिरोधी लंपटकामलोभअतिक्रोधी
मातुपितागुरबिप्रनमानहिं आपुगएअरुघालहिंआनहिं
करहिंमोहबसद्रोहपरावा संतसंगहरिकथानभावा
अवगुनसिंधुमंदमतिकामी बेदबिदूषकपरधनस्वामी
बिप्रद्रोहपरद्रोहबिशेषा ॥ दंभकपटजियधरेसुबेषा

दो॰ ऐसेअधममनुषखलकृतयुगत्रेतानाहिं ॥
द्वापरकछुकबृंदबहुहोइहहिंकलियुगमाहिं ॥

परहितसरिसधर्मनहिंभाई परपीड़ासमनहिंअधमाई
निर्नयसकलपुरानबेदकर कहेउँतातजानहिंकोबिद
नरसरीरधरिजेपरपीरा ॥ करहिंतेसहहिंमहाभव
करहिंमोहबसनरअघनाना स्वारथरतपरलोकनसा
कालरूपतिन्हकहँमैंभ्राता शुभअरुअशुभकर्मफल
असबिचारिजेपरमसयाने। भजहिंमोहिसंसृतिदुख
त्यागहिंकर्मशुभाशुभदायक भजहिंमोहिसुरनरमुनिना
संतअसंतनकेगुनभाषे ॥ तेनपरहिंभवजिन्हलखि

दो॰ सुनहुतातमायाकृतगुनअरुदोषअनेक ॥
गुनयहउभयनदेखिअहिंदेखियसोअबिबेक ॥४१॥

श्रीमुखबचनसुनतसबभाई हरषेप्रेमनहृदयसमाई

हृदयं है और ईस्वर को माधव गन्ने नन्दी पूर्ण मा भगत कृपपनलहे बोलाइ परमा गधुरवानि प्रभुपुराह है सुनाः गुरुनिलाख सर्वीव होत है गांधृ है धार [illegible]
लक्ष्मन भरतादि के हैं और भरतादि के कौन नहीं है सबका सन्मुख पवन तो बाधक आउप है कैसे कहो है यह जीव ईश्वर को और पीठ फेरे
ज्ञान के सन्मुख हैं अहंता है उपर यह ही है जीव का ईश्वर की ओर फेरत है तब उ गांति सुख है अपना पर मानता है
ऐसन के पंथ मूलाति को देह अहं पूजन है उपाना हो रहे को देखा सम्मुख पहले जानन को कालिम उपरि जम को पंडानावत है जुड्जान अगम दुसरे है उपमा को इस्थान है पा दुप

ज्ञानकैभांति
कौरहिहनु
मान्है गो
भक्तिनभई
तोचान अभ्यान
है सुनःपुप्र
मतोहनुकाहन
नमोसुख्यवंध
प्रापरहै गुरु
भक्तिप्रमनिबी
मा। मू०।

करहिंबिनयअतिबारहिंबारा हनूमानहियहरषअपारा
पुनिरघुपतिनिजमंदिरगए एहिबिधिचरितकरतनितनए।
बारबारनारदमुनिआवहिं चरितपुनीतरामकेगावहिं
नितनवचरितदेषिमुनिजाहीं ब्रह्मलोकसबकथाकहाहीं
सुनिबिरंचिअतिसयसुषमानहिं पुनिपुनितातकरहुगुनगानहिं
सनकादिकनारदहिंसराहहिं जद्यपिब्रह्मनिरतमुनिआहहिं
सुनगुनगानसमाधिबिसारी सादरसुनहिंपरमअधिकारी

दो॰ जीवनमुक्तब्रह्मपरचरितसुनहिंतजिध्यान
जेहरिकथानकरहिंरतितिनकेहियपाषान ४२

एकबाररघुनाथबोलाए गुरुद्विजपुरबासीसबआए
बैठेगुरुमुनिअरुद्विजसज्जन बोलेबचनभक्तभवभंजन
सुनहुसकलपुरजनममबानी कहौंनकछुममताउरआनी
नहिंअनीतिनहिंकछुप्रभुताई सुनहुकरहुजोतुमहिंसुहाई
सोइसेवकप्रियतममसोई ममअनुशासनमानैजोई।
जौअनीतिकछुभाषौंभाई। तौमोहिबरजहुभयबिसराई
बड़ेभाग्यमानुषतनपावा। सुरदुर्लभसबग्रंथनगावा
साधनधाममोक्षकरद्वारा पाइनजेहिंपरलोकसवाँरा

दो॰ सोपरत्रदुषपावहिंसिरधुनधुनपछताइ।
कालहिंकर्महिंईश्वरहिंमिथ्यादोषलगाइ ४३

एहितनकरफलबिषयनभाई स्वर्गौस्वल्पअंतदुषदाई
नरतनुपाइबिषयमनदेहीं। पलटिसुधातेंबिषसठलेहीं

पुष्टनकैअपर
है वनिंहाला
ना। जनामनु
राषपूरनआ
है नंदनगरौ
कराहि
हिलनविद्या
हिलाषिवद्धहै
है भक्तिसार
बरनपत्रसुरन

तै उनिअगाधिबो
है समंहकालि
कोरिकारिधाम
गाधुनःएक
बारबामिहरन
श्रीरामपतिकरनश्री
तिनभक्तिकुली

सिको प्रसं सील सुम प्रभुकामो प्रसंजानो कौ धनाको लो प्रधाम है कौ पुर्व श्रीरकनें निजगहें श्रा कौ बहुमांग परकमल

गहै दृढरोग दृ भौनरगुन परधामपाना कौ है बड़ारि कहै बढना यतन कीन्ह जो अनरत

दो. रा. उत्तर ३१

रामायणसन

ताहिकबहुंभलकहैनकोई गुंजागहैपरसमनिखोई॥
आकरचारलक्षचौरासी। जोनिभ्रमतयहजिवअबि
फिरतसदामायाकरप्रेरा। कालकर्मसुभावगुनघे
कबहुंककरिकरुनानरदेही देतईसबिनुहेतसनेही॥
नरतनुभववारिधिकहुंबेरो सन्मुखमरुतअनुग्रहमेरो
करनधारसतगुरुदृढनावा दुर्लभसाजसुलभकरपा

दो. जोनतरैभवसागरनरसमाजअसपाइ॥
सोकृतनिंदकमंदमतिआतमहनगतिजाइ४४

जोपरलोकइहांसुषचहहू। सुनिममबचनहृदयदृढ
सुलभसुषदमारगयहभाई भक्तिमोरपुरानश्रुतिगा
ग्यानअगमप्रत्यूहअनेका। साधनकठिननमनकहुंटे
करतकष्टबहुपावैकोई॥ भक्तिहीनमोहिप्रियनहिंसो
भक्तिसुतंत्रसकलसुषषानी बिनसतसंगनपावहिंप्रा
पुन्यपुंजबिनुमिलहिंनसंता सतसंगतिसंसृतिकरअं
पुन्यएकुजगमहुंनहिंदूजा॥ मनक्रमबचनबिप्रपदपू
सानुकूलतेहिपरमुनिदेवा। जोतजिकपटकरैद्विजसे

दो. औरौएकगुपुतमतसबहिंकहौंकरजोरि
संकरभजनबिनानरभ[illegible]नपावैमोरि४५

कहहुभगतिपथकवनप्रयासा जोगनमषजपतपउपवास
सरलसुभावनमनकुटिलाई॥ यथालाभसंतोषसदाई॥
मोरदासकहाइनरआसा॥ करइतोकहहुकहाबिस्वा

कोसमभाखै तहिसमगामी जैष्णगोसाईं भक्तवत्सल नैं प्रगटे क छोउपरांत कोशिवनु उमासेतिकाग भुसुंडगरुड़. संवादकहि के धर्महमासु तिदेखिकहौ सबकहा पूछ तिहैनबउमा बहुतप्रशंसा करिपूछ ति

भेदधरमकैा धप्रकरान

बहुतकहौंकाकथाबढ़ाई । एहिआचरनबस्यमैंभाई ॥
बैरनबिग्रहआसनत्रासा ॥ सुषमयताहिसदासबआसा
अनारंभअनिकेतअमानी अनघअरोषदच्छबिग्यानी ॥
प्रीतिसदासज्जनसंसर्गा । तिनसमबिषयस्वर्गअपवर्गा ।
भगतिपच्छहठनहिंसठताई दुष्टतर्कसबदूरबहाई + ॥

दो॰ ममगुनग्रामनामरतगतममताभदमोह ॥
ताकरसुषसोईजानैपरानंदसंदोह ॥ ४६ ॥

सुनतसुधासमबचनरामके गहेसबनिपदकृपाधामके ।
जननिजनकगुरुबंधुहमारे कृपानाथप्रानतेंप्यारे + ॥
तनुधनधामरामहितकारी सबबिधितुमप्रनतारतिहारी
असिसिखतुमबिनुदेइनकोऊ मातपितास्वारथरतओऊ ।
हेतुरहितजगजुगउपकारी तुम्हतुम्हारसेवकअसुरारी
स्वारथमीतसकलजगमाहीं सपनेहुप्रभुपरमारथनाहीं
सबकेबचनप्रेमरससाने । सुनरघुनाथहृदयहरषाने
निजनिजगृहगएआयसुपाई बरनतप्रभुबतकहीसोहाई

दो॰ उमाअवधबासीनरनारिकृतारथरूप ॥
ब्रह्मसच्चिदानंदघनरघुनायकजहंभूप ४७

एकबारबसिष्ठमुनिआए । जहांरामसुषधामसुहाए ।
अतिआदररघुनायककीन्हा पदपषारिपादोदकलीन्हा
रामसुनहुमुनिकहकरजोरी कृपासिंधुबिनतीकछुमोरी
देषिदेषिआचरनतुम्हारा ॥ होतमोहममहृदयअपारा ।

पायौ ॥ कातनैं गरिकौन उसोकोग कागभुसुं परयत्न गनतायौं मरभाता भरमभागि सबहींउपरि नमुनकाह

॥ ५८ ॥

॥ ५८ ॥

महिमाअमितबेदनहिंजाना। मैंकेहिभांतिकहौंभगवाना

उपरोहितीकरमअतिमंदा। बेदपुरानसमृतिकरनिंदा॥

जबनलेउंमैंतबबिधिमोही कहालाभआगेसुतहोई॥

परमातमाब्रह्मनररूपा ॥ होइहिरघुकुलभूषनभूपा

दो॰नबमैंहृदयबिचाराजोगजग्यब्रतदान + ॥
जाकहुंकरियसोपैहौंधर्मनएहिसमआन ४८

जपतपनियमजोगनिजधर्मा स्रुतिसंभवनानाशुभक

ग्यानदयादमतीरथमज्जन ॥ जहंलगिधर्मकहतस्रुतिस

आगमनिगमपुरानअनेका पढ़ेसुनेकरप्रभुफलएक

तवपदपंकजप्रीतिनिरंतर। सावधानकरयहफलसुंद

छूटैमलकिमलहिकेधोए। घृतकिपावकोउबारिबि

प्रेमभक्तिजलबिनुरघुराई। अभिअंतरमलकबहुंनजा

सोईसर्बज्ञतज्ञसोइपंडित ॥ सोईगुनग्रहबिग्यानअखं

दच्छसकललच्छनजुतसोई जाकेपदसरोजरतिहोई

पो॰
रा॰उत्तर॰
३३

दो॰नाथएकबरमांगौरामकृपाकरिदेहु + ॥
जन्मजन्मप्रभुपदकमलकबहुंघटैजनुनेह ४९

असिकहिमुनिबसिष्टगृहआए कृपासिंधुकेमनअतिभा

हनूमानभरतादिकभ्राता संगलियेसेवकसुखदा

मुनिकृपालपुरबाहरगए। गजरथतुरगमगावतभ

देषिकृपाकरिसकलसराहे दियेउचितजिन्हजिन्हजे

भरतदीन्हनिजबसनडसाई। बैठेप्रभुसेवहिंसबभाई॥

मारुतसुततबमारुतकरई पुलकबपुषलोचनजलभरई।
हनूमानसमनहिंबड़भागी। नहिंकोउरामचरनअनुरागी
गिरिजाजासुप्रीतिसेवकाई बारबारप्रभुनिजमुषगाई।

दो· तेहिअवसरमुनिनारदआएकरतलबीन ॥
गावनलागेरामकलकीरतिसदानवीन॥ ५०॥

मामवलोकयपंकजलोचन कृपाबिलोकनिसोचबिमोचन
नीलतामरसस्यामकामअरि हृदयकंजमकरंदमधुपहरि
जातुधानबरूथबलभंजन। मुनिसज्जनरंजनअघगंजन
भूसुरससिनवबृंदबलाहक असरनसरनदीनजनगाहक
भुजबलबिपुलभारमहिषंडित षरदूषनबिराधबधपंडित
रावनारिसुखरूपभूपबर ॥ जयदसरथकुलकुमुदसुधाकर
सुजसपुरानबिदितनिगमागम गावनसुरमुनिसंतसमागम
कारुनीकब्यलीकमदषंडन। सबबिधिकुसलकोसलामंडन
कलिमलमथननामममताहन तुलसिदासप्रभुपाहिप्रनतजन

दो· प्रेमसहितमुनिनारदबरनिरामगुनग्राम ॥
सोभासिंधुहृदयधरिगएजहांबिधिधाम ५१

गिरिजासुनहुबिसदयहकथा मैंसबकहीमोरिमतिजथा
रामचरितसतकोटिअपारा। श्रुतिसारदनबरनैपारा
रामअनंतअनंतगुनखानी ॥ जन्मकर्मअनंतनामानी
जलसीकरमहिरजगनिजाहीं रघुपतिचरितनबरनिसिराहीं
बिमलकथाहरिपददायनी। भगतिहोयसुनिअनपायनी

उमाकहेउँसबकथासुहाई जोभुसुंडिखगपतिहिसुना
कछुकरामगुनकहेउँबखानी अबकाकहौंसोकहहुभवा
सुनिसुभकथाउमाहरषानी बोलीअतिबिनीतमृदुबानी
धन्यधन्यमैंधन्यपुरारी ॥ सुनेउरामगुनभवभयहारी

दो॰ तुम्हरीकृपाकृपायतनअबकृतकृत्यनमोह।
जानेउँरामप्रतापप्रभुचिदानंदसंदोह॥ [illegible] ॥
नाथतवाननशशिश्रवतकथासुधारघुबीर।
श्रवनपुटन्हिमनपानकरिनहिंअघातमतिधीर ५२

रामचरितजेसुनतअघाहीं। रसबिशेषजानातिन्हनाहीं
जीवनमुक्तिमहामुनिजेऊ हरिगुनसुनहिंनिरंतरतेऊ
भवसागरचहपारजोपावा रामकथाताकहँदृढ़नावा
बिषइन्हकहँपुनिहरिगुनग्रामा श्रवनसुखदअरुमनअभि
श्रवनवंतअसकोजगमाहीं जाहिनरघुपतिचरितसुहा
तेजड़जीवनिजात्मकघाती। जिन्हहिंनरघुपतिकथासो
हरिचरित्रमानसतुमगावा सुनिमैंनाथअमितसुखपावा
तुमजोकहीयहकथासुहाई कागभुसुंडिगरुड़प्रतिगाई

दो॰ बिरतिज्ञानबिज्ञानदृढ़रामचरनअतिनेह॥
बायसतनरघुपतिभगतिमोहिपरमसंदेह ५३

नरसहस्रमहँसुनहुपुरारी। कोउएकहोइधर्मब्रतधारी
धर्मशीलकोटिकमहँकोई बिप्रबिमुखबिरागरतहोई
कोटिबिरक्तमध्यश्रुतिकहई सम्यकज्ञानसुकृतकोउलहई

पंक्ति ८ ५३ चौ० २ दो० ३ सो०॥ यहप्रभुचरित पवित्र:सुह सोहिमयउ सुनतमाहि ६८ चौ०॥ गरुड़ज्ञानघ्यान हरिज्ञानहैं मुनिनछाड़ंका गसनकथासु नीऔरकौन भांतिहरुनको संबादभयो तबशिवजू उमाकोप्रसंस करनलागे तबसबप्रसंग इतिहासकहन सतीनाम रघुकोध्यान

ग्यानवंतकोटिकमहँकोऊ। जीवनमुक्तसकृतजगसोऊ
तिन्हसहस्रमहँसबसुषषानी दुर्लभब्रह्मलीनबिज्ञानी॥
धर्मसीलबिरक्तअरुज्ञानी जीवनमुक्तब्रह्मपरप्रानी
सबतेंसोदुर्लभसुरराया। रामभक्तिरतगतमदमाया
सोहरिभक्तिकाककिमिपाई बिश्वनाथमोहिकहहुबुझाई

दो· रामपरायनज्ञानरतगुनागारमतिधीर॥
नाथकहहुकेहिकारनपायउकागशरीर ५४

यहप्रभुचरितपवित्रसोहावा। कहहुकृपालकागकहँपावा।
तुमकेहिभांतिसुनामदनारी कहहुमोहिअतिकौतुकभारी
गरुड़महाज्ञानीगुनरासी॥ हरिसेवकअतिनिकटनिवासी
तेहिकेहिहेतुकागसनजाई। सुनीकथामुनिनिकरबिहाई
कहहुकवनबिधिभासंबादा दोउहरिभक्तकागउरगादा।
गौरिगिरासुनिसरलसुहाई बोलेशिवसादरसुषपाई।
धन्यसतीपावनमतितोरी। रघुपतिचरनप्रीतिनहिंथोरी
सुनहुपरमपुनीतइतिहासा सोसुनिसकललोकभ्रमनासा
उपजैरामचरनबिश्वासा। भवनिधितरनरबिनहिंप्रयासा।

दो· ऐसियप्रश्नबिहंगपतिकीन्हकागसनजाइ
सोसबसादरकहिहौंसुनहुउमामनलाइ ५५

मैंजिमिकथासुनीभवमोचनि सोप्रसंगसुनुसुमुषिसुलोचनि
प्रथमदक्षगृहतवअवतारा। सतीनामतबरहातुम्हारा॥
दक्षयज्ञतवभाअपमाना तुमअतिक्रोधतजेतबप्राना

दो·

श्रीपतिचरणौ उमम्मागत्यम क्षेपातेंउठोईं शिवतत्वमांसमैं गौरिजपनीत शैलसकप्राणी रघुनाथकेआर सिरदहतहीं रघुनाथपद [illegible] [illegible] [illegible] ज्ञानप्रगो पार्वती कर्मेवपुनी मैंनेदेहत्यागि यज्ञादि

हैमीवलाप गरुँतडाग कहतेहैं अं रामकथा तातेंगरु अतिप्रिय शिवकरको रामकथा शिवकोहेत सोबाष्ट ४ महेंगुणकी आत्मपुनातें समहसको लिखत

कै शोभित होनिगरहेंहैंकाग भुशुंडीचिरंजीवी वसतहैंमायाल कृतगुणदोषादि तागिरिकेनिक नहींजायसका तहांविहंगगन बीनारेसेदेख आनंदपूर्वकतहँ हंसतनुधरिके

टी॰
सा॰ उत्तर॰
३७

कछुकालतहँ कथाश्रवनकरी पुनःकैलासआय गएइहाहेतु देखोतातेंबध श्रीरामकोहेत सोइध्यानब पाकरितरहै आम्रगरुड़ भुजपदअरु

ब्रह्मापदहर कैनानाभाग येनिद्रातहँ हैंताकाका भुसुंडियहँ ज्ञानहिगाथा आश्रमदेत बाहुज्ञानमयो पुनःकाकरू आश्रयवर्णन अरुघरसार

ममप्रभुचरनकीन्हमषभंगा। जानहुतुमसोसकलप्रसंगा।
तबअतिसोचभयोमनमेरें। दुषीभएउँबियोगप्रियतोरें।
सुंदरबनगिरिसरिततड़ागा। कौतुकदेषतफिरौंबिराग।
गिरिसुमेरुउत्तरदिशिदूरी। नीलसैलएकसुंदरभूरी।
तासुकनकमयसिखरसुहाए चारिचारुमोरेमनभाए।
तिनपरएकाएकबिटपबिसाला बटपीपरपाकरीरसाला।
सैलोपरिसर सुंदरसोहा। मनिसोपानदेषिमनमोह

दो॰ सीतलअमलमधुरजलजलजबिपुलबहुरंग
कुंजतकलरवहंसगनगुंजतमंजुलभृंग।५६।

तेहिगिरिरुचिरबसैषगसोई तासुनासकल्पांतनहोई
मायाकृतगुनदोषअनेका। मोहमनोजआदिअबिबेक
रहेब्यापिसमस्तजगमाहीं तेहिगिरिनिकटकबहुंनाहीं
तहँबसिहरिहिभजैजिमकागा सोसुनुउमासहितअनुरा
पीपरतरुतरध्यानसोधरई। जापजग्यपाकरतरकरै
आँबछाँहकरिमानसपूजा। तजिहरिभजनकाजनहिं
बरतरकहहरिकथाप्रसंगा आवहिंसुनहिंअनेकबिहं
रामचरित्रबिचित्रबिधाना। प्रेमसहितकरसादरगा
सुनहिंसकलमतिबिमलमराला बसहिंनिरंतरजेतेहिंता
जबमैंजाइसोकौतुकदेषा। उरउपजाआनंदबिशेषा।

दो॰ तबकछुकालमरालतनुधरितहँकीन्हनिवास
सादरसुनिरघुपतिगुनपुनिआएउँकैलास ५७

गिरिजाकहेउँसोसबइतिहासा। मैंजेहिसमयगयेउँखगपासा।
अबसोकथासुनहुजेहिहेतू॥ गयउकागपहिंखगकुलकेतू
जबरघुनाथकीन्हरनक्रीड़ा। समुझतचरितहोतमोहिब्रीड़ा।
इंद्रजीतकरआपबंधायो॥ तबनारदमुनिगरुड़पठायो
बंधनकाटिगयोउरगादा। * उपजाहृदयप्रचंडबिषादा।
प्रभुबंधनसमुझतबहुभांती। करतबिचारउरगआराती।
ब्यापकब्रह्मबिरजबागीसा। मायामोहपारपरमीसा॥
सोअवतारसुनेउँजगमाहीं देखेउँसोप्रभावकछुनाहीं

दो॰ भवबंधनतेछूटहिंनरजपिजाकरनाम॥
खर्बनिशाचरबांधेउनागपाससोइराम ५८

नानाभांतिमनहिंसमुझावा। प्रगटनज्ञानहृदयभ्रमछावा।
खेदखिन्नमनतर्कबढ़ाई॥ भयोमोहबसतुम्हरिहिंनाईं
ब्याकुलगयउदेवरिषिपाहीं कहेसिजोसंसयनिजमनमाहीं
सुनिनारदहिंलागिअतिदाया। सुनखगप्रबलरामकैमाया
जोज्ञानिन्हकरचितअपहरई बरिआईबिमोहमनकरई
जेहिबहुबारनचावामोही। सोईब्यापीबिहंगपतितोही
महामोहउपजाउरतोरे॥ मिटहिंनबेगिकहेखगमोरे।
चतुराननपहँजाहुखगेसा। सोइकरेहुजेहिहोइनिदेसा॥

दो॰ असकहिचलेदेवऋषिकरतरामगुनगान।
हरिमायाबलबरननपुनिपुनिपरमसुजान ५९।

तबखगपतिबिरंचिपहँगएऊ निजसंदेहसुनावतभएऊ

कैपुनःराम
कथाकौशा
रंभकिया
कृपाअनुग्रह
पूर्वकमा
नसपुनःनार
दमोहगवन
रामअवतार
बाललीला
बिश्वामित्र
आगमनजन
कविवाहपुनः
अभिषेककां
नृपवचनपु
बाधीबिरह
रामलषन
संवादबनगमन
केवटअनुराग
सुरचरितंप्रय
गवालमीकि
आश्रमतंचित्र
कूटपुनःसुमंत
गवननृपमरन

टी॰

रा॰ उत्तर॰
३८

भरतआगमनपुनः
कथाकारि
उरबाबिनयत
जानौ —

पवित्रनगर
दंडकबन
तासंबाद
नभ्रातिअ
भागसतोइ
सरभंगदेहि
बिराधबध
गौतमतिय
नेत्रभंगअ
अकलथनं
भरतरहनि
बैदेहुक
प्रपसङ्ग
उम्मिपंचबटी
बासपंगिभूमि
बामलछिमन
रूपधेयमरो

सुनिबिरंचिरामहिंसिरुनावा । समुझिप्रतापप्रेमअतिछाव
मनमैंकरैबिचारबिधाता । मायाबसकबिकोबिद्यान
हरिमायाकरिअमितप्रभावा । बिपुलबारजेहिमोहिनचाव
अगजगमयजगममउपराजा । नहिंआचरजमोहखगराजा
तबबोलेबिधिगिरासुहाई । जानुमहेशरामप्रभुताई + ॥
बैनतेयशंकरपहिंजाहू । तातअनतपूछहुजनिकाहू
तहँहोइहितवसंसयहानी । चलेउबिहंगसुनतबिधिबा

दो॰ परमातुरबिहंगपतिआएउतबमोपास + ॥
जातरहेउँकुबेरगृहरहेहुउमाकैलास ॥ ६० ॥

री
रा॰उत्तर॰
३५

तेहिममपदसादरसिरुनावा । पुनिआपनसंदेहसुनावा ॥
सुनिताकरिबिनतीमृदुबानी । प्रेमसहितमैंकहेउँभवानी ॥
मिलेहुगरुड़मारगमहँमोही । कवनभाँतिसमझावौंतोहि
तबहिंहोइसबसंसयभंगा । जबबहुकालकरियसतसं
सुनियतहाँहरिकथासुहाई । नानाभाँतिमुनिनजोगाई ॥
जेहिमहँआदिमध्यअवसाना । प्रभुप्रतिपाद्यरामभगवान
नितहरिकथाहोइजहँभाई । पठवउँतहाँसुनहुतुमजा
जाइहिसुनतसकलसंदेहा । रामचरनहोइहिअतिनेहा ॥

सो॰ बिनुसतसंगनहरिकथातेहिबिनुमोहनभाग
मोहगएबिनुरामपदहोइनदृढ़अनुराग ॥ ६१ ॥

मिलहिंनरघुपतिबिनुअनुरागा । कियेजोगजपज्ञानबिरागा ॥
उतरदिशिसुंदरगिरिनीला । तहँरहकागभुसुंडिसुसीला

कुह्यसखा ह
धनबधुरानन
घबरधारिष
ब्रातमाया
सीताहरन
रघुपतिबि
हकथनउनः
प्रभुगोष
कियाकारि
कबंधमार
सबरीतारि
पुनःनिरू
पुनपंपासर
तहाँनारद
संबादकृत
पानभेटसुग्रीव
मित्राईबालि

रामभगतिपथपरमप्रबीना। ज्ञानीगुनगृहबहुकालीना।
रामकथासोकहइनिरंतर। सादरसुनहिंबिबिधबिहंगबर।
जाइसुनहुतहँहरिगुनभूरी। होइहिमोहजनितदुखदूरी।
मैंजबतेहिसबकहाबुझाई। चलेउहरषिममपदसिरुनाई।
तातेंउमानमैंसमुझावा + ॥ रघुपतिकृपामरममैंपावा।
होइहिकीन्हकबहुँअभिमाना। सोषोवैचहकृपानिधाना।
कछुतेहितेंपुनिमैंनहिंराषा। समुझैषगषगहीकैभाषा।
प्रभुमायाबलवंतभवानी। जाहिनमोहकवनअसज्ञानी।

दो॰ज्ञानीभक्तसिरोमनित्रिभुवनपतिकरजान।
ताहिमोहमायानरपावरकरहिंगुमान + ॥
सिवबिरंचिकहँमोहैकोहैबपुराआन + ॥
असजियजानिभजहिंमुनिमायापतिभगवान \ ॥

गयउगरुड़जहँबसैभुसुंडी। मतिअकुंठहरिभक्तअषंडी।
देषिसैलप्रसन्नमनभयऊ। मायामोहसोचसबगयऊ।
करितड़ागमज्जनजलपाना। बटतरगयउहृदयहरषाना।
बृद्धबृद्धबिहंगतहँआए। सुनैरामकेचरितसुहाए॥
कथाअरंभकरैसोइचाहा। तेहीसमयगयउषगनाहा।
आवतदेषिसकलषगराजा। हरषेउबायससहितसमाजा।
अतिआदरषगपतिकरकीन्हा स्वागतपूछिसुआसनदीन्हा
करिपूजासमेतअनुरागा। मधुरबचनतबबोलेउकागा।

दो॰नाथकृतारथभयउँमैंतवदरसनषगराज।

श्री
रा॰ उत्तर॰
४०
प्रान हानि

आयसुदेहुसोकरउँअबप्रभुआएउकेहिकाज
सदाकृतारथरूपतुम्हकहमृदुबचनषगेस॥
अस्तुतिजिनकैसादरनिजमुषकीन्हमहेश॥

सुनहुतातजेहिकारनआयउँ
देषिपरमपावनतवआश्रम
अबश्रीरामकथाअतिपावनि
सादरतातसुनावहुमोही।
सुनतगरुड़कैगिराबिनीता।
भयउतासुमनपरमउछाहा।
प्रथमहिंअतिअनुरागभवानी
पुनिनारदकरमोहअपारा।
प्रभुअवतारकथापुनिगाई

सोसबभयउदरसतवपाय
गयउमोहसंसयनानाभ्रम
सदासुषददुषपुंजनसाव
बारबारबिनवौंप्रभुतोही
सरलसुप्रेमसुषदसुपुनीत
लागिकहैरघुपतिगुनगाह
रामचरितसरकहेसिबषा
कहेसिबहुरिरावनअवता
तबसिसुचरितकहेसिम

दो· बालचरितकहिबिबिधबिधमनमहँपरमउछाह
रिषिआगमनकहेसिपुनश्रीरघुबीरबिबाह ६४

बहुरिरामअभिषेकप्रसंगा.
पुरबासिन्हकरबिरहबिषादा
बिपिनगवनकेवटअनुरागा
बालमीकप्रभुमिलनबषाना
सचिवागमननगरनृपमरना
करिनृपक्रियासंगपुरबासी
पुनिरघुपतिबहुबिधसमुझाए

पुनिनृपबचनराजरसभं
कहेसिरामलछमनसंबा
सुरसरिउतरिनिवासप्र
चित्रकूटजिमिबसेभग
भरतागमनप्रेमबहुब
भरतगएजहँप्रभुसुषरा
लैपादुकाअवधपुरआ

प्रबेशगृह
[illegible]
श्रीशिवहेतु
श्रीजानकी
श्रीभेंटगौ
गरुड़कीन्ह
उतरिबेगसे
गरुड़भेंटै
मनुजन·
मनरितकै
आदबखर्णै
जैसप्रबन्धै
उमाप

संपातीभेंट
समुद्रलांघि
महबीरबोल
कांप्रबेशनाम
कीधीरजदेई
बनउजारिरावन
पुरजारिपुनगव
उलांघिकपिसेन
सहितप्रभुप्रति
टी·
रा· उत्तर
४१
दिग्मारहबीला
कुशलसुनाय
पुनःसैनयुत
श्रीरामसमुद्र
तटआइबिभी
षनमिलनसा
गरउबन्धन
बांधिसेतुपार
उतरिअंगदप्रेष
जपुनःकपि
निसाचरसंग्राम
कुंभकरनमघना
[illegible]पसंघार
निशाचरगनमार
[illegible]रामरावन

समरावन बंधनमोछी कौनकिजिमिष नरागजीनाम कौमिलन ढेंप नवांनीपुन पुष्पकनाति कपिनपुल वर्ति अयोध्या गमनवनअ मिषक

भरतरहनिसुरपतिसुतकरनी प्रभुअरुअत्रिभेटपुनबरनी

दो॰ कहिबिराधबधजेहिबिधिदेहतजीसरभंग
बरनसुतीछनप्रीतिपुनप्रभुअगस्तसतसंग ६५

कहिदंडकबनपावनताई। गीधमयत्रीपुनितेहिगाई
पुनिप्रभुपंचबटीकरबासा भंजीसकलमुनिनकीत्रासा
पुनिलछमनउपदेशअनूपा सूपनखाजिमिकीन्हकुरूपा
खरदूषनबधबहुरिबखाना जिमिसबमरमदसाननजाना
दसकंधरमारीचबतकही। जेहिबिधिभईसोसबतेहिकही
पुनिमायासीताकरहरना श्रीरघुबीरबिरहकछुबरना
पुनप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही बधकबंधसबरीहिगतिदीन्ही
बहुरबिरहबरनतरघुबीरा। जेहिबिधिगएसरोवरतीरा

दो॰ प्रभुनारदसंबादकहिमारुतमिलनप्रसंग
पुनिसुग्रीवमिताईबालिप्रानकरभंग २ ॥
कपिहितिलककरिप्रभुकृतसैलप्रबरषनबास
बरननबरषासरदअरुरामरोषकपित्रास ६६॥

टी॰
रा॰ उत्त॰
४२

जेहिबिधिकपिपतिकीसपठाए सीताखोजसकलदिसिधाए
बिबरप्रबेशकीन्हजेहिभांती कपिनबहोरिमिलासंपाती
सुनिसबकथासमीरकुमारा नाघतभयोपयोधिअपारा
लंकाकपिप्रबेसजिमिकीन्हा पुनिसीतहिधीरजजिमिदीन्हा
बनउजारिरावनहिंप्रबोधी। पुरदहिनांघेउबहुरिपयोधी
आएकपिसबजहंरघुराई। बैदेहीकीकुसलसुनाई॥

सेनसमेतगयारघुबीरा। उतरेजाइबारिनिधितीरा॥
मिलाबिभीषनजेहिबिधिआई। सागरनिग्रहकथासुनाई॥

दो॰ सेतुबांधिकपिसेनाजिमिउतरीसागरपार।
गयउबसीठीबीरबरजेहिबिधिबालिकुमार॥
निसिचरकीसलराईजिमिबरनेसिबिबिधप्रकार।
कुंभकरनघननादकरबलपौरुषसंहार ६७॥

निसिचरनिकरमरनबिधिनाना। रघुपतिरावनसमरबखा
रावनबधमंदोदरिसोका। राजबिभीषनदेवअसोक
सीतारघुपतिमिलनबहोरी। सुरन्हकीन्हअस्तुतिकरजो
पुनिपुष्पकचढिकपिनसमेता। अवधचलेप्रभुकृपानिकेता
जेहिबिधिरामनगरनिजआए। बायसबिसदचरितसबगा
कहेसिबहोरिरामअभिषेका। पुरबरननन्रपनीतिअनेक
कथासमस्तभुसुंडबखानी। जोमैंतुमसनकहीभवानी
सुनिसबरामकथाखगनाहा। कहतबचनमनपरमउछा

सो॰ गयउमोरसंदेहसुनेउँसकलरघुपतिचरित।
भयउरामपदनेहतोहिप्रसादबायसतिलक॥
मोहिभयउअतिमोहप्रभुबंधनरनमहिंनिरषि।
चिदानंदसंदोहरामबिकलकारनकवन ६८

देषिचरितअतिनरअनुसारी। भयउहृदयममसंसयभारी
सोइभ्रमअबहितकरमैंजाना। कीन्हअनुग्रहकृपानिधा
जोअतिआतपब्याकुलहोई। तरुछायासुषजानैसो

पुरबरनन न्रपनीति युतसमस्त कथाकही जोतुमको हौंसुनावत हौंतबगरुड़ जूकाकभु सुंडकोप्रस [illegible] संदेहगतहै आनंदभयो अरुचरित्र नानाप्रकारते बरनतहोइहै तहाँप्रसंगको संदेहकारतो॥ ६८ ॥ ॥ ॥ ॥

दो॰ रा॰ उत्तर॰ ४२

पंक्ति १९। चौ॰ ४९ दो॰ १२ देषिचरितअति
यामोहकेप्रसंगतेंतुम्हारोसतसंगअरुसतसंगपा
गाइसायो॰ अरुसोईसच्चिदानंदसर्वब्यापकनर
नरअरुतिमिरघुपतिनिजदासकी १४ लो॰॥ तबगरुडसोबिनयकरि
योतहाँकागमायाकीप्रबलताबनाए केवलश्रीरघुबररूपतेंबाकोंन
रूपतेंनाश्यकियो ॥

जौंनहिंहोतमोहअतिमोही । मिलतेउँतातकवनबिधितोही
सुनतेउँकिमिहरिकथासुहाई । अतिबिचित्रबहुबिधितुमगाई
निगमागमपुरानमतएहा ॥ कहहिंसिद्धमुनिनहिंसंदेहा ।
संतबिसुद्धमिलहिंपरितेही । चितवहिंरामकृपाकरिजेही
रामकृपातवदरसनभएऊ । तवप्रसादसबसंसयगएऊ ।

दो·बाणीसुनीबिहंगपतिसहितबिनयअनुराग ॥
पुलकगातलोचनसजलमनहरषेउअतिकाग ॥
श्रोतासुमतिसुसीलसुचिकथारसिकहरिदास ॥
पाइउमाअतिगोप्यमपिसज्जनकरहिंप्रकास६९

बोलेउकागभसुंडिबहोरी । नभगनाथपरप्रीतिनथोरी ॥
सबबिधिनाथपूज्यतुममेरे । कृपापात्ररघुनायककेरे ॥
तुमहिंनसंसयमोहनमाया मोपरकीन्हनाथतुमदाया
पठैमोहमिसखगपतितोही रघुपतिदीन्हबड़ाईमोही ॥
तुमनिजमोहकहीखगसाँई सोनहिंकछुआश्चर्यगोसाँई
नारदभवबिरंचिसनकादी जेमुनिनायकआतमबादी
मोहनअंधकीन्हकेहिकेही कोजगकामनचावनजेही ॥
तृष्णाकेहिनकीन्हबौराहा केहिकरहृदयक्रोधनहिंदाहा

दो·ज्ञानीतापससूरकविकोबिदगुनआगार ॥
केहिकैलोभबिडंबनाकीन्हिनएहिंसंसार + ॥
श्रीमदबक्रनकीन्हकेहिप्रभुताबधिरनकाहि ।
मृगलोचनलोचनसरकोअसलागनजाहि । ७० ।

पार्वतीमोहकौप्रसंगकह्योजितनहिंकह्योअरुनिर्गुनश्रुतिसगुनज्ञानविवेकछिन्नभिन्ननिजजनकोमोहाभिमानप्रभुनाहिंराखतयातेंअपनेमोहप्रसंगकीकथाकहतहैं ॥ ७४ ॥

गुनकृतसन्निपातनहिंकेही। कोउनमानमदतजेउनिबेही
जोबनज्वरकेहिनहिंबलकावा। ममताकेहिकरजसननसाव
मत्सरकाहिकलंकनलावा। काहिनसोकसमीरडोलाव
चिंतासाँपिनिकोनहिंखाया। कोजगजाहिनब्यापीमाया
कीटमनोरथदारुस ,रीरा। जेहिनलागघुनकोअसधी
सुतबितनारिईषनातीनी। केहिकैमतिइन्हकृतनमलीनी
यहसबमायाकरपरिवारा। अमितप्रबलकोबरनैपारा॥
सिवचतुराननजाहिडेराहीं। अपरजीवकेहिलेषेमाहीं॥

दो॰ ब्यापिरहेउसंसारमहँमायाकटकप्रचंड + ॥
सेनापतिकामादिभटदंभकपटपाषंड + + ॥
सोदासीरघुबीरकैसमुझैमिथ्यासोपि + ॥
छूटनरामकृपाबिनुनाथकहौंपदरोपि ७१॥

जोमायासबजगहिनचावा। जासुचरितलषिकाहुनपाव
सोइप्रभुभ्रूबिलासखगराजा नाचनटीइवसहितसमाजा
सोइसच्चिदानंदघनरामा ॥ अजबिज्ञानरूपबलधामा
ब्यापकब्याप्यअखंडअनंता अखिलअमोघशक्तिभगवंत
अगुनअदभ्रगिरागोतीता। सबदरसीअनवद्यअजीता॥
निर्ममनिराकारनिर्मोहा ॥ नित्यनिरंजनसुषसंदोहा॥
प्रकृतिपारप्रभुसबउरबासी ब्रह्मनिरीहबिरजअबिनासी
इहाँमोहकरकारननाहीं ॥ रबिसन्मुषतमकबहुँकिजाहीं

दो॰ भगतहेतुभगवानप्रभुरामधरेउतनुभूप॥

कियेचरितपावनपरमप्राकृतनरअनुरूप ॥
जथाअनेकबेषधरिनृत्यकरैनटकोइ * ॥
सोइसोइभावदिखावैआपुनहोइनसोइ ॥ ७२॥

असिलीलारघुपतिउरगारी दनुजबिमोहनजनसुखकारी
जेमतिमलिनबिषयबसकामी प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी
नयनदोषजाकहँजबहोई । पीतबरनससिकहँकहुसोई
जबजेहिदिशिभ्रमहोइखगेसा सोकहपच्छिमउयउदिनेसा
नौकारूढचलतजगदेखा ॥ अचलमोहबसआपुहिलेखा
बालकभ्रमहिंनभ्रमहिंगृहादी कहहिंपरस्परमिथ्याबादी ॥
हरिबिषयकअसमोहबिहंगा सपनेहुनहिंअज्ञानप्रसंगा ।
मायाबसमतिमंदअभागी । हृदयजवनिकाबहुबिधिलागी
तेसठहठबससंसयकरहीं । निजअज्ञानरामपरधरहीं ।

दो॰ कामक्रोधमदलोभरतगृहासक्तदुखरूप ॥
तेकिमिजानहिंरघुपतिहिंमूढपरेतमकूप * ॥
निर्गुनरूपसुलभअतिसगुनजाननहिंकोय ॥
सुगमअगमनानाचरितसुनिमुनिमनभ्रमहोय

सुनखगेसरघुपतिप्रभुताई कहौंजथामतिकथासुहाई
जेहिबिधिमोहभएउप्रभुमोही सोउसबकथासुनावौंतोही
रामकृपाभाजनतुमताता । हरिगुनप्रीतिमोहिसुखदाता
तातेंनहिंकछुतुमहिंदुरावौं परमरहस्यमनोहरगावौं ॥
सुनहुरामकरसहजसुभाऊ जनअभिमाननराषहिंकाऊ

नवनवनार
धामैंरहे
तारश्रीअयो
नवजनवअव
८।लौं।
श्रीभगवान
श्रकभावत
श्रीगरुड़ाई
रामकृपाश्रो
१७ हरै
१कै ६उ
१४ उरै
मंगल

कैबाललीला
पाँचबर्षरहिकै
छोटकाकभाको
नृपधारकैलो
एकबारलरिको
१कै

संसृतिमूलसूलप्रदनानां। सकलसोकदायकअभिमा
तातेकरहिंकृपानिधिदूरी। सेवकपरममताअतिभूरी
जिमिसिसुतनब्रनहोइगोसाँईं मातुचिरावकठिनकीनाँईं

दो॰जदपिप्रथमदुषपावैरोवैबालअधीर +॥
व्याधिनासहितजननीगनतनसोसिसुपीर ॥
तिमिरघुपतिनिजदासकरकरहिमानहितलागि
तुलसिदासअैसेप्रभुहिकसनभजउभ्रमत्यागि ।

रामकृपाआपनिजड़ताई +॥ कहौंषगेससुनहुमनलाई
जबजबरामनुजतनुधरहीं भक्तहेतुलीलाबहुकरहीं
तबतबअवधपुरीमैंजाऊँ बालचरितबिलोकिहरषा
जन्ममहोत्सवदेषौंजाई ॥ बरषपाँचतहँरहउँलोभा
इष्टदेवममबालकरामा ॥ सोभावपुषकोटिसतका
निजप्रभुबदननिहारिनिहारी लोचनसफलकरउँउरगा
लघुबायसबपुधरिहरिसंगा देषउँबालचरितबहु

दो॰लरिकाईजहँजहँफिरहिंतहँतहँसंगउड़ाउँ।
जूठनिपरैअजिरमहँसोउठाइकरिषाउँ ++॥
एकबारअतिसयसबचरितकियेरघुबीर॥
सुमिरतप्रभुलीलासोइपुलकितभयउसरीर ७५

कहइभुसुंडिसुनहुखगनायक रामचरितसेवकसुखदा
नृपमंदिरसुंदरसबभाँती। षचितकनकमनिनाना
बरनिनजाइरुचिरअँगनाई जहँषेलहिंनितचारिउभा

चरित्र देखि
पुनि देह अथा कि
ज्ञान प्रभु माषु
कामबिस्तुरानं
कामुत्तकैप
कहराइता
उर्में आवत
प्रभु लत माया
पानी में भापी
पृथी १ अप २
तेज ३ बायु ४
आकाश ५
महतत्व ६ प्र
कृति ७ सातों
आवरन भेदकै
गयो तहाँ दे
श्रीराम भुजा ते
देखे अंगुली को
बीच दो अंगु
प्रंगलाममताना

टी· रा· उत्तर
५८

बालबिनोदकरतरघुराई॥ बिचरतअजिरजननिसुषदाई
मरकतमृदुलकलेवरस्यामा अंगअंगप्रतिछबिबहुकामा
नवराजीवअरुनमृदुचरना पदजरुचिरनषससिदुतिहरना
ललितअंककुलिसादिकचारी नूपुरचारुमधुररवकारी॥
चारुपुरटमनिरचितबनाई। कटिकिंकिनिकलमुखरसुहाई

दो·रेखात्रयसुंदरउदरनाभिरुचिरगंभीर + ॥
उरआयतभ्राजतबिबिधबालबिभूषनचीर ७६॥

अरुनपानिनषकरजमनोहर बाहुबिसालबिभूषनसुंदर॥
कंधबालकेहरिदरग्रीवा। चारुचिबुकआननछबिसींवा
कलबलबचनअधरअरुनारे दुइदुइदसनबिसदबरबारे
ललितकपोलमनोहरनासा सकलसुषदशशिकरसमहासा
नीलकंजलोचनभवमोचन भ्राजतभालतिलकगोरोचन
बिकटभृकुटिसमश्रवनसुहाए कुंचितकचमेचकछबिछाए॥
पीतझीनझगुलीतनसोही॥ किलकनिचितवनिभावतिमोही
रूपरासिनृपअजिरबिहारी नाचहिंनिजप्रतिबिंबनिहारी
मोहिसनकरहिंबिबिधबिधक्रीड़ा बरननहोहिमोहिअतिब्रीड़ा।
किलकतमोहिधरनजबधावहिं चलौंभागितबपूपदेषावहिं

दो·आवतनिकटहसहिंप्रभुभाजतरुदनकराहिं॥
जाउँसमीपगहनपदफिरिफिरिचितैपराहिं + ॥
प्राकृतशिशुइवलीलादेषिभाउमोहिमोह + ॥
कवनचरित्रकरतप्रभुचिदानंदसंदोह॥ ७७॥

एतनामनआनतषगराया। रघुपतिप्रेरितब्यापीमाया
सोमायानदुषदमोहिकाहीं। आनजीवइवसंसृतिनाहीं
नाथइहांकछुकारनआना॥ सुनहुसोसावधानहरिजान
ज्ञानअखंडएकसीताबर। मायाबस्यजीवसचराचर
जौंसबकेरहज्ञानएकरस। ईश्वरजीवहिंभेदकहहुकस
मायाबस्यजीवअभिमानी। ईसबस्यमायागुनषानी
परबसजीवस्वबसभगवंता। जीवअनेकएकश्रीकंता
मुधाभेदजद्यपिकृतमाया। बिनुहरिजाइनकोटिउपाय

दो॰ रामचंद्रकेभजनुबिनुजोचहपदनिर्बान + ॥
ज्ञानवंतअपिसोनरपसुबिनुपुछबिषान + ॥
राकापतिषोडशउअहिंतारागनसमुदाय + ॥
सकलगिरिन्हदवलाइयबिनुरबिरातिनजाय॥

ऐसेहिहरिबिनुभजनषगेसा। मिटैनजीवनकेरकलेसा
हरिसेवकहिनब्यापअबिद्या। प्रभुप्रेरितब्यापैतेहिबिद्या
तातेंनासनहोइदासकर ॥ भेदभक्तिबाढैबिहंगबर।
भ्रमतेंचकितराममोहिदेषा। बिहँसेसोसुनुचरितबिशेषा
तेहिकौतुककरमरमनकाहू। जानाअनुजनमातुपिताहू
जानुपानिधाएमोहिधरना। स्यामलगातअरुनकरच
तबमैंभागचलेउंउरगारी॥ रामगहनकहँभुजापसारी
जिमिजिमिदूरउड़ाउँअकासा। तहँभुजहरिदेषौंनिजपास

दो॰ ब्रह्मलोकलगिगयउँमैंचितयउँउडात ॥

ईश्वर जीव अ
सुखकर पर
लोक इत्यादि
फिर के पुनः
प्रभु समीप
आय पोहूँचे
प्रभु हास्य
उदर भ्रमाया
नहीं अनेक
ब्रह्मांड देखे
अखंड कल्प
सुख जात भ्रमत
एक कल्प ब्रह्मांड में

जुगअंगुलकरबीचसबरामभुजहिमोहितात॥
सप्तावरनबिभेदकरिजहाँलगेंगतिमोर ॥
गयउँतहाँप्रभुभुजनिरखिब्याकुलभयउँबहोरि

मूँदेउँनयनत्रसितजबभयऊँ पुनिचितवतकोसलपुरगयऊँ
मोहिबिलोकिराममुसकाईं बिहँसततुरतगयउँमुखमाहीं
उदरमाँझसुनुअंडजराया ॥ देखेउँबहुब्रह्मांडनिकाया।
अतिबिचित्रतहँलोकअनेका रचनाअधिकएकतेंएका।
कोटिन्हचतुराननगौरीसा अगनितउडुगनरबिरजनीसा
अगनितलोकपालजमकाला अगनितभूधरभूमिबिसाला
सागरसरिसरबिपिनअपारा नानाभाँतिसृष्टिबिस्तारा
सुरमुनिसिद्धनागनरकिंनर चारिप्रकारजीवसचराचर

दो. जोनहिंदेखानहिंसुनाजोमनहूँनसमाइ॥
सोसबअद्भुतदेखेउँबरनिकवनबिधिजाइ॥
एकएकब्रह्मांडमहुँरहौंबरषसतएक ॥
एहिबिधिदेखतफिरउँमैंअंडकटाहअनेक

लोकलोकप्रतिभिन्नबिधाता भिन्नबिष्णुशिवमनुदिसित्राता
नरगंधर्बभूतबेताला ॥ किंनरनिसिचरपसुखगब्याला
देवदनुजगननानाजाती॥ सकलजीवतहँआनहिभाँती
महिसरिसागरसरगिरिनाना सबप्रपंचतहँआनहिंआना
अंडकोशप्रतिनिजनिजरूपा देखेउँजिनसअनेकअनूपा
अवधपुरीप्रतिभुवननिहारी सरजूभिन्नभिन्ननरनारी॥

भ्रमेउँ पुनि
बाहर आइ
प्रभु गुण गाये
तब प्रभु निज
कृपा मोर शीश
पर दीन्ह तब
माया जात रही
अरु देह को
कि अंतर्मात्र पद

टी.
रा. उत्तर.
५०

सब बृत्ति भयो
नहीं काल की
स्थूल सूक्ष्म
उपमा नाहीं
कै सम्मानित
हिनै नव ग्रन्थ
ताम बैठ पूछ्यो
हि कहा नहीं दे

गै
बहुत कुसल
भक्ति मांगी
मैं अनपायनी
ई उबाली नह

बानिब्रह्मग
नवसंतोषण
तैंकामइत्यादि
बाधारहित
अरुबिरागतैं
समताअरु
धर्मकीमूल
त्यागादिजन
प्रभावकीतैं
शोभितयाग्यै
कहौप्रभु
हेतुप्रकास
कोटिन्हतैंअधिक
अरुबलबायुतें
ऐश्वर्यइंद्रआदि
तैंकोटिगुन
अधिकयथा
मानिमुनिबल
करउहैंपारावार
नहींकोईपारइब

दो॰
श॰ उत्तर॰
५३

एवमस्तुकहिरघुकुलनायक बोलेबचनपरमसुषदाय
सुनबायसतैंसहजसयाना काहेनमागसिअसबरदा
सबसुषषानिभगतितैंमांगी नहिंजगकोउतोहिसमबड़भा
जोमुनिकोटिजतननहिंलहहीं जेजपजोगअनलतनदह
रीझेउँदेषितोरिचतुराई मागेउभगतिमोहिअतिभा
सुनबिहंगप्रसादअबमोरे सबसुभगुनबसिहहिंउरतो
भगतिग्यानबिग्यानबिरागा जोगचरित्ररहस्यबिभागा
जानबतैंसबहीकरभेदा। ममप्रसादनहिंसाधनखे

दो॰ मायासंभवभ्रमसकलअबनव्यापिहहिंतोहि
जानेसुब्रह्मअनादिअजअगुनगुनाकरमोहि ॥
मोहिभगतप्रियसंततअसबिचारिसुनकाग ॥
कायबचनमनममपदकरेसुअचलअनुराग ८५

अबसुनपरमबिमलममबानी सत्यसुगमनिगमादिबषा
निजसिद्धांतसुनावौंतोही। सुनिमनधरुसबतजिभज
ममयायासंभवसंसारा जीवचराचरबिबिधप्रकार
सबममप्रियसबममउपजाए सबतेंअधिकमनुजमोहि
तिनमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी तिनमहँनिगमधर्मअनुस
तिनमहँप्रियबिरक्तपुनिग्यानी ग्यानिहितेंअतिप्रियबिग्या
तिन्हतेंपुनिमोहिप्रियनिजदासा जेहिगतिमोरिनदूसरिआ
पुनिपुनिसत्यकहौंतोहिपाहीं मोहिसेवकसमप्रियकोउ
भगतिहीनबिरंचिकिनहोई ॥ सबजीवनसमप्रियमोहि

कतनामभजनतें
कछुमहिमाकहि
सकतुहैंअरु
भावबस्य

जानिममताहि
त्यागिजानकी
रमनको भजन
सारहै ॥ १२ ॥

भगतिवंतअतिनीचौप्रानी मोहिप्रानप्रियअसममबानी

दो· सुचिसुसीलसेवकसुमतिप्रियकहुकाहिनलागु
श्रुतिपुरानकहनीतिअससावधानसुनकाग।८६।

एकपिताकेबिपुलकुमारा होहिंपृथकगुनसीलअचारा
कोउपंडितकोउतापसग्याता। कोउधनवंतसूरकोउदाता।
कोउसर्बज्ञधर्मरतकोई। सबपरपितहिंप्रीतिसमहोई
कोउपितुभगतबचनमनकर्मा सपनेहुजाननदूसरधर्मा॥
सोसुतप्रियपितुप्रानसमाना। जद्यपिसोसबभांतिअयाना
एहिबिधिजीवचराचरजेते। त्रिजगदेवनरअसुरसमेते
अखिलबिस्वयहमोरउपाया। सबपरमोहिबराबरदाया
तिन्हमहँजोपरिहरमदमाया। भजहिंमोहिमनबचअरुकाया

दो· पुरुषनपुंसकनारिवाजीवचराचरकोइ ॥
सर्बभावभजिकपटतजिमोहिपरमप्रियसोइ ॥
सो· सत्यकहौंखगतोहिसुचिसेवकममप्रानप्रिय
असबिचारिभजमोहिपरिहरआसभरोससब ८७

कबहूंकालनब्यापिहितोही सुमरेहुभजेहुनिरंतरमोही
प्रभुबचनामृतसुनिनअघाऊं। तनपुलकितमनअतिहरषाऊँ
सोसुखजानैमनअरुकाना नहिंरसनापहिंजाइबखाना।
प्रभुसोभासुखजानहिंनयना। कहिकिमिसकहिंतिनहिंनाहिंबैना
बहुबिधिमोहिप्रबोधिसुखदेई लगेकरनशिसुकौतुकतेई
सजलनयनकछुमुखकरिरूखा चितैमातुलागीअतिभूखा

मायाछन महदैगीभ्र हैलिन:भ्र हृध्यरन्मा भ्रकृशभाति रोगकैभ्र कैभारश्राहि सर्वतैसैप योगसाधन योगभ्रष्टगा कादैभ्रत सबौपरि भक्तिरुप

प्राधानहीं आपेगीभ्रह संततभ्रबतार कुलभ्रनादिका लम्हुगेभ्रन प्रभुबालभाौरे भ्रकरतलगे भ्र:भैंबहु काल

दसरथकौशल्यासुनताता बिबिधरूपभरतादिकभ्रा
प्रतिब्रह्मांडरामअवतारा॥ देषउंबालबिनोदअपारा॥

दो०भिन्नभिन्नमैंदीषसबअतिबिचित्रहरिजान
अगनितभुवनफिरेउंप्रभुरामनदेषेउंआन *॥
सोइसिसुपनसोइसोभासोइकृपालरघुबीर॥
भुवनभुवनदेषतफिरौंप्रेरितमोहशरीर॥८१॥

भ्रमतफिरतब्रह्मांडअनेका बीतेमनहुंकल्पशतएका
फिरतफिरतनिजआश्रमआएउं तहंपुनिरहकछुकालगवांएउं
निजप्रभुजन्मअवधसुनपाएउं निर्भरप्रेमहरषउठधाएउं॥
देषेउंजन्ममहोत्सवजाई। जेहिबिधिप्रथमकहामैंगाई
रामउदरदेषेउंजगनाना॥ देषतबनैनजाइबषाना॥
तहंपुनिदेषेउंरामसुजाना मायापतिकृपालभगवा
करौंबिचारबहोरिबहोरी मोहकलिलव्यापितमतिमो
उभैघरीमैंमैंसबदेषा॥ भएउंभ्रमितमनमोहबिशे

दो०देषिकृपालबिकलमोहिबिहंसेतबरघुबीर
बिहंसतहीमुखबाहिरआएउंसुनमतिधीर॥
सोइलरकाईमोसनकरनलगेपुनिराम**॥
कोटिभांतिसमुझाएउंमननलहैबिश्राम॥८२॥

देषचरितयहसोप्रभुताई। समुझतदेहदशाबिसराई॥
धरनिपरेउंमुखआवनबाता त्राहित्राहिआरतजनत्राता॥
प्रेमाकुलप्रभुमोहिबिलोकी निजमायाप्रभुतातबरोकी॥

अवोध्यामैं रहेउँकाल चरितदेखि आनांकोतिष जुमानहैं अकिञ्चुमंत कुमहोपृहैं अदानिवास स॰प्रायोन न

करसरोजप्रभुममसिरधरेऊ दीनदयालसकलदुषहरेऊ
कीन्हराममोहिबिगतबिमोहा। सेवकसुषदकृपासंदोहा।
प्रभुताप्रथमबिचारिबिचारी मनमहँहोइहरषअतिभारी
भक्तबछलताप्रभुकैदेषी उपजीममउरप्रीतिबिशेषी
सजलनयनपुलकितकरजोरी कीन्हउँबहुबिधिबिनयबहोरी

दो॰ सुनिसप्रेम ममबानीदेषिदीननिजदास॥
बचनसुषदगंभीरमृदुबोलेरमानिवास ॥
काकभुसुंडिमागुबरअतिप्रसन्नमोहिजान।
अनिमादिकसिधिअपररिधिमोक्षसकलसुषखान

ग्याननिबेकबिरतिबिग्याना मुनिदुर्लभगुनजेजगनाना।
आजुदेउँसबसंसयनाहीं मांगजोतोहिभावमनमाहीं
सुनिप्रभुबचनअधिकअनुरागेउं मनअनुमानकरनतबलागेउं
प्रभुकहदेनसकलसुषसही भगतिआपनीदेननकही॥
भगतिहीनगुनसबसुषकैसे लोनबिनाबहुब्यंजनजैसे॥
भजनहीनसुषकवनेकाजा असबिचारबोलेउँखगराजा
जौप्रभुहोइप्रसन्नबरदेहू मोपरकरहुकृपाअरुनेहू॥
मनभावतबरमांगौस्वामी। तुमउदारउरअंतरजामी॥

दो॰ अबिरलभक्तिबिसुद्धतवश्रुतिपुरानजोगाव॥
जेहिषोजतजोगीसमुनिप्रभुप्रसादकोउपाव॥
भक्तिकल्पतरुप्रनतहितकृपासिंधुसुषधाम॥
सोइनिजभक्तिमोहिप्रभुदेहुदयाकरराम ८४।

वंतमायानहीं व्यापतजबीं रामभावधामी प्रबलज्ञानैं अंगुभवकहतहैं भवनतेंडवरु तातेंहैंसुपर भुजबातेंप्रभु

टी॰

स॰ उत्तर ५२

गर्भेआनपरतहैं मोंसैपुनलिहारै आनिमाति ८८ भक्ति

हृदय प्रकाश
कहौ प्रभु
सो बिनायुक्ति
प्रभाव को है सो
त्यादि ज्ञान
धर्म को मूल
समता श्रद्ध
श्रद्धा बिरागतो
बाधा रहित
तें काम इत्यादि
नव संतोष पण
बानें

कोटिन तें अधिक
श्रुत बल बाधा तें
स्वर्ग इत्यादि
तें कोटिन गुन
अधिक यथा
भक्ति युक्ति बल
करत है पारावार
नहीं कोइ पावत

टी०
श० उ० नर०
५३

करत गाम भजन तें
काहू महिमा को
सकतु है अरु
भव बस

एवमस्तुकहिरघुकुलनायक बोलेबचनपरमसुषदाय
सुनबायसतैंसहजसयाना। काहेनमागसिअसबरदा
सबसुषषानिभगतितैंमांगी नहिंजगकोउतोहिसमबड़
जोमुनिकोटिजतननहिंलहहीं जेजपजोगअनलतनदहही
रीझेउँदेषितोरिचतुराई मागेउभगतिमोहिअतिभा
सुनबिहंगप्रसादअबमोरे सबसुभगुनबसिहहिंउर
भगतिज्ञानबिज्ञानबिरागा जोगचरित्ररहस्यबिभाग
जानबतैंसबहीकरभेदा। ममप्रसादनहिंसाधन

दो० मायासंभवभ्रमसबअबनब्यापिहहिंतोहि
जानेसुब्रह्मअनादिअजअगुनगुनाकरमोहि॥
मोहिभगतप्रियसंततअसबिचारिसुनकाग॥
कायबचनमनममपदकरेसुअचलअनुराग ८५

अबसुनपरमबिमलममबानी सत्यसुगमनिगमादिबषा
निजसिद्धांतसुनावौंतोही। सुनिमनधरुसबतजिभज
ममम‌ायासंभवसंसारा जीवचराचरबिबिधप्रकार
सबममप्रियसबममउपजाए सबतेंअधिकमनुजमोहि
तिनमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी तिनमहँनिगमधर्मअनुस
तिनमहँप्रियबिरक्तपुनिज्ञानी ज्ञानिहितेंअतिप्रियबि
तिन्हतेंपुनिमोहिप्रियनिजदासा जेहिगतिमोरिनदूसरिआ
पुनिपुनिसत्यकहौंतोहिपाहीं मोहिसेवकसमप्रियको
भगतिहीनबिरंचिकिनहोई॥ सबजीवनसमप्रियमोहि

जानिममताहि
त्यागिजानकी
रमनकोभजन
नारहै ॥ १२ ॥

भगतिवंतअतिनीचौप्रानी। मोहिप्रानप्रियअसममबानी

दो·सुचिसुसीलसेवकसुमतिप्रियकहुकाहिनलागु
श्रुतिपुरानकहनीतिअससावधानसुनकाग।८६।

एकपिताकेबिपुलकुमारा। होहिंपृथकगुनसीलअचारा
कोउपंडितकोउतापसग्याना। कोउधनवंतसूरकोउदाना।
कोउसर्बज्ञधर्मरतकोई। सबपरपितहिंप्रीतिसमहोई
कोउपितुभगतबचनमनकर्मा। सपनेहुजाननदूसरधर्मा॥
सोसुतप्रियपितुप्रानसमाना। जद्यपिसोसबभांतिअयाना
एहिबिधिजीवचराचरजेते। त्रिजगदेवनरअसुरसमेते
अखिलबिस्वयहमोरउपाया। सबपरमोहिबराबरदाया
तिन्हमहँजोपरिहरमदमाया। भजहिंमोहिमनबचअरुकाया

दो·पुरुषनपुंसकनारिवाजीवचराचरकोइ ॥
सर्बभावभजिकपटतजिमोहिपरमप्रियसोइ ॥
सो·सत्यकहौंखगतोहिसुचिसेवकममप्रानप्रिय
असबिचारिभजमोहपरिहरआसभरोससब ८७

कबहूँकालनब्यापिहितोही। सुमिरेहुभजेहुनिरंतरमोही
प्रभुबचनामृतसुनिनअघाउं। तनपुलकितमनअतिहरषा ऊँ
सोसुखजानैमनअरुकाना। नहिंरसनापाहिंजाइबखाना
प्रभुसोभासुखजानहिंनयना। कहकिमिसकहिंतिनहिंनाहिं बैना
बहुबिधिमोहिप्रबोधिसुखदेई। लगेकरनशिशुकौतुकतेई
सजलनयनकछुमुखकरिरूखा। चितैमातुलागीअतिभूखा

रिषभमानुभ्रातुरगहिधाँई। कहिमदुबचनलियेउरला
गोदराषिकरावपयपाना। रघुबरचरितललितकरगा

सो॰ जोंहिसुषलागिपुरारिअसुभभेषकृतशिवसुषद
अवधपुरीनरनारितेहिसुषमहँसंततमगन॥ ++॥
सोईसुषलवलेसजिन्हबारकसपनेहुलहेउ+॥
तेनहिंगनहिंअगेयब्रह्मसुषहिंसज्जनसुमति

मैंपुनिअवधरहेउँकछुकाला। देखेउँबालबिनोदरसाला॥
रामप्रसादभगतिबरपाउँ प्रभुपदबंदिनिजाश्रमआ
तबतेंमोहिनब्यापीमाया। जबतेंरघुनायकअपनाया॥
यहसबगुप्तचरितमैंगाया। हरिमायाजिमिमोहिनचावा
निजअनुभवअबकहौंषगेसा। बिनुहरिभजननजाहिंकलेसा
रामकृपाबिनुसुनषगराई॥ जानिनजाइरामप्रभुताई॥
जानेबिनुनहोइपरतीती॥ बिनुपरतीतिहोइनहिंप्री
प्रीतिबिनानहिंभक्तिदृढ़ाई जिमिषगपतिजलकैचिक

सो॰ बिनुगुरुहोइकिज्ञानज्ञानकिहोइबिरागबिनु।
गावहिंबेदपुरानसुषकिलहियहरिभक्तिबिनु।
कोउबिश्रामकिपावताततसहजसंतोषबिनु॥
चलेकिजलबिनुनावकोटिजतनपचिपचिमरिय

बिनुसंतोषनकामनसाहीं काममछतसुषसपनेहुँना
रामभजनबिनुमिटहिंकिकामा थलबिहीनतरुकबहुँकिजा
बिनुबिज्ञानकिसमताआवै। कोउअवकासकिनभबिनुपा

श्रद्धाबिनाधर्मनहिंहोई॥ बिनुमहिगंधकिपावैकोई
बिनुतपतेजकिकरबिस्तारा जलबिनुरसकिहोइसंसारा
सीलकिमिलुबिनुबुधसेवकाई जिमिबिनुतेजनरूपगोसाईं
निजसुखबिनुमनहोइकिथीरा परसकिहोइबिहीनसमीरा
कवनिउँसिद्धिकिबिनुबिस्वासा बिनुहरिभजननभवभयनासा

दो·बिनुबिस्वासभगतिनहिंतेहिबिनुद्रवहिंनराम॥
रामकृपाबिनुसपनेहुँजीवनलहबिश्राम ×× ॥
सो·असबिचारिमतिधीरतजिकुतर्कसंसयसकल
भजहुरामरघुबीरकरुनाकरसुंदरसुखद॥९१॥

निजमतिसरिसनाथमैंगाई। प्रभुप्रतापमहिमाखगराई॥
महिमानामरूपगुनगाथा। सकलअमितअनंतरघुनाथा॥
निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं निगमसेषशिवपारनपावहिं
तुमहिंआदिखगमसकप्रजंता। नभउड़ाहिंनहिंपावहिंअंता।
तिमिरघुपतिमहिमाअवगाहा। तातकबहुंकोउपावकिथाहा
रामकामसतकोटिसुभगतन दुर्गाकोटिअमितअरिमर्दन
सक्रकोटिसतसरिसबिलासा। नभसतकोटिअमितअवकासा

दो·मरुतकोटिसतबिपुलबलरबिसतकोटिप्रकास
ससिसतकोटिसुसीतलसमनसकलभवत्रास॥
कालकोटिसतसरिसअतिदुस्तरदुर्गदुरंत॥
धूमकेतुसतकोटिसमदुराधरषभगवंत९२

प्रभुअगाधसतकोटिपताला समनकोटिसतसरिसकराला

हेतुबिनाव
उरुभाति
भुसुंडिजी
नबागरुडजी
११४ चौ॰।
कारहेउ।
मोहिपाछ
केबचनअरु
मुनिभुसुंडि
७ दो॰
५ सो॰
३ छं॰
१२ चौ॰

तीरथअमितकोटिसतपावन। नामअखिलअघपुंजनसाव
हिमगिरिकोटिअचलरघुबीरा। सिंधुकोटिसतसमगंभीरा॥
कामधेनुसतकोटिसमाना। सकलकामदायकभगवाना
सारदकोटिअमितचतुराई॥ बिधिसतकोटिसृष्टिनिपु
बिस्नुकोटिसतपालनकर्ता। रुद्रकोटिसतसमसंहर्ता॥
धनदकोटिसतसमधनवाना। मायाकोटिप्रपंचनिधाना
धराधरनसतकोटिअहीसा। निरवधिनिरूपमप्रभुजगदीसा

छं॰ निरूपमनउपमाआनरामसमानरामनिगमकहै॥
जिमिकोटिसतखद्योतसमरविकहतअतिलघुतालहै।
एहिभांतिनिजनिजमतिबिलासमुनीसहरिहिंबखानहीं
प्रभुभावगाहकअतिकृपालसप्रेमसुनिसुखमानहीं

दो॰ रामअमितगुनसागरथाहकिपावैकोइ॥
संतन्हसनजसकिछुसुनेउँतुमहिंसुनायउँसोइ॥

सो॰ भावबस्यभगवानसुखनिधानकरुनाभवन॥
तजिममतामदमानभजियसदासीतारमन ९२॥

सुनिभुसुंडिकेबचनसुहाए। हरषितखगपतिपंखफुला
नयननीरमनअतिहरषाना। श्रीरघुपतिप्रभावउरआ
पाछिलमोहसमुझिपछिताना। ब्रह्मअनादिमनुजकरिमा
पुनिपुनिकागचरनसिरुनावा। जानिरामसमप्रेमबढ़ावा
गुरुबिनुभवनिधितरैनकोई जोबिरंचिशंकरसमहोई
संसयसर्पग्रसेउमोहिताता। दुखदलहरिकुतर्कबहुव्राता

ज्ञानिअरुगव
लौंउल्लघत्रुटि
कारिगुरुनहीं
मानतजबलौं
उपदेसहितनहीं
लागतघातेसो
संदेहभयोरहो
बालोहितसाति
टी॰
रा॰ उत्तर॰
५७
अहप्रभुप्रभुता
उरआनिहत
अल्पमानिकाग
दहेहितअरु
जोबिनतूं
सुनरारहो
स्योकिक
संतहुनास
नहींहोतअरु
कालरूपगरुड़
नाथसहित
सोसबहेतु
विनयपूर्वक
पूछतभा

तबकागस्व
रूपयुतहो
बहुतजन्मकी
सुधिहिसुख
उकेबरइतने
भयोअरुता
बैराग्ययादि
ज्ञानगुनकी
फलभक्तिहै
सोयातनमें
पायोयातेंयाको
अतिहिसुख

तबसरूपगारुड़िरघुनायक। मोहिजिआएउजनसुखदायक।
तवप्रसादममोहनसाना। रामरहस्यअनूपमजाना।

दो· ताहिप्रसंसिबिबिधबिधसीसनाइकरजोरि
बचनबिनीतसप्रेममृदुबोलेउगरुड़बहोरि ०॥
प्रभुअपनेअबिबेकतें बूझौंस्वामीतोहि ०० ॥
कृपासिंधुसादरकहहुजानिदासनिजमोहि ९४॥

तुमसर्बग्यतग्यतमपारा। सुमतिसुसीलसरलआचारा।
ग्यानबिरतिबिग्याननिवासा। रघुनायककेतुमप्रियदासा।
कारनकवनदेहयहपाई। तातसकलमोहिकहहुबुझाई।
रामचरितसरसुंदरस्वामी। पाएउकहाँकहहुनभगामी।
नाथसुनामैंअससिवपांही। महाप्रलयहुँनासतवनाहीं।
मुधाबचननहिंईस्वरकहई। सोउमोरेमनसंसयअहई।
अगजगजीवनागनरदेवा॥ नाथसकलजगकालकलेवा।
अंडकटाहअमितलयकारी। कालसदादुरतिक्रमभारी।

सोतुमहिंनब्यापतकालअतिकरालकारनकवन
मोहिसोकहहुकृपालुग्यानप्रभावकिजोगबल।
दो· प्रभुतवआश्रमआएउँमोरमोहभ्रमभाग॥
कारनकवनसोनाथसबकहहुसहितअनुराग।

गरुड़गिरासुनिहरषेउकागा। बोलेउउमापरमअनुरागा।
धन्यधन्यतवमतिउरगारी। प्रस्नतुम्हारिमोहिअतिप्यारी।
सुनितवप्रस्नसप्रेमसुहाई। बहुतजनमकैसुधिमोहिआई।

बाकोअरुतें
रामतेंभ्रम
जन्मकोप्रसंग
श्रीअयोध्यामें
शूद्रतनुपाइ
तहाँशिवसेवा
तथाअरुदेव
निंदाकरयो

टी·
रा·उत्तर
५८

अरुहेमपद्मा
कितिंभ्रष्टहो
सोगुरुमहात्म्य
अबतानरयौ
किकोउजन्म
उहाँजन्मलोमश
महतप्रवण
होउहैसावा
समयकहि
कालरहोघ
गेंगहिहेउका
नहींकालिभय
मेंमूलज्ञान
गोवनयथा
लियोपाइस
लियोरीति
कैलरहे

कोदेखा
औगुनमा
गोबालेउ
अभमानहि
कहेहुँ
पापमहि
सकलीला
अनुभजन
भयनराम
नामस्वारथ
मैंनिपरमुत्व
गानीऔर
कुगनमों
गावहुतस्वमानें
सिद्धहोनुरहो
सोकलिमेंनामें
प्रतापनेंसलका
मोंसलोगुनऔर
समुचताप्रसन्नता
हेतुकहेनामों
सगुनअधिक

।सबनिजकथाकहौंमैंगाई तातसुनहुसादरमनलाई
जपतपमखसमदमब्रतदाना। बिरतिबिबेकजोगबिज्ञाना।
सबकरफलरघुपतिपदप्रेमा तेहिबिनुकोउनपावैछेमा।।
एहितनरामभगतिमैंपाई ।। तातेंमोहिममताअधिकाई
जेहितेंकछुनिजस्वारथहोई तेहिपरममताकरसबकोई

सो॰ पन्नगारिअसनीतिश्रुतिसंमतसज्जनकहहिं
अतिनीचहुसनप्रीतिकरियजानिनिजपरमहित ।।
पाटकीटतेंहोइतेहितेंपाटंबररुचिर * * ।।
कृमिपालैसबकोइपरमअपावनप्रानसम ९६

स्वारथसांचजीवकहँएहा। मनक्रमबचनरामपदनेहा।
सोईपावनसोइसुभगशरीरा जोतनुपाइभजियरघुबीरा।
रामबिमुखलहिबिधिसमदेही कबिकोबिदनप्रशंसहितेही
रामभगतिएहितनउरजामी। तातेंमोहिपरमप्रियस्वामी।
तजौंनतननिजइच्छामरना। तनुबिनुबेदभजननहिंबरना
प्रथममोहमोहिबहुतबिगोवा रामबिमुखसुखकबहुंनसोवा
नानाजन्मकर्मपुनिनाना ।। कियेजोगजपतपमखदाना
कवनजोनिजनमेउँजहँनाहीं मैंखगेशभ्रमिभ्रमिजगमाहीं
देखेउंकरिसबकरमगोसाँई सुखीनभएउँअबहिंकीनाँई
सुधिमोहिनाथजन्मबहुकेरी शिवप्रसादमतिमोहनघेरी

दो॰ प्रथमजन्मकेचरितअबकहौंसुनहुबिहगेस ।।
सुनिप्रभुपदरतिउपजैंजातेंमिटहिंकलेश * ।।

टी॰
रा॰ उत्तर॰
५९

सगुनमिश्रित

पूरब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ॥
नर अरु नारि अधर्म रति सकल निगम प्रतिकूल ९७

हिं कलिजुग कोसलपुर जाई । जनमत भयउँ सूद्र तनु पाई ॥
व सेवक मन क्रम अरु बानी । आन देव निंदक अभिमानी ॥
न मद मत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला ।
दपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपि न कछु महिमा तब जानी
ब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुरान अस गावा ।
वनेहुँ जन्म अवध बस जोई । राम परायन सो परि होई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहिं राम धनुपानी
कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥

दो. कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ॥
दंभिन निज मत कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥
भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ॥
सुन हरिजान ज्ञान निधि कहौं कछुक कलिधर्म ९८

न धरम नहिं आश्रम चारी । श्रुति बिरोध सब नर अरु नारी
श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुशा
ग सोइ जा कहँ जो भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई ॥ ता कैं संत कहै सब कोई + ॥
इ सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी
कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखान
राचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलियुग सोइ ज्ञानी सो बिरागी

वस्थांसो जुन अधिक बतनाम सि कलिमें नाम ब अधिक ताकी कलि कबुध्य ति नानौं नहीं ज्ञानको प्र मनकारको कैसे सतसंगनम मिश्रितजानक सम्बधालिक ध्यानकर्मप्रधा नकरिकै कलि नवलैलगा गालजनुसायतौं निचारिजानौ कैभावनगात है

रा. उत्तर. ६०

हरिशुकै अनुजौ कलश्रवंड पाठ सन हैं बर्ण इत्यादिकाकी लगावतहैं वाहि कैंवाकोलागत है ×

सत १७२८०००
त्रेता १२९६०००
८६४०००
द्वेष्र
४३२०००
कलियुग
मानकीयो
अनुसाप्र
भेतिऐ
पिधर्मोध
उपाधिउ
नागनवृ
जैसेजुग

सो चारुयुगस्या
युगमोवाहि
कालमेंगनागन
जानिकै संत
युगधर्मदेषि
बम्नतपायो
पानेंप्रधर्मलिना
धर्मरत होइ
प्रभुपदलेहि
टी॰
रा॰ उत्तर॰
९१

जाकेनषअरुजटाबिसाला। | सोइतापसप्रसिद्धकलिकाल

दो॰ असुभबेषभूषनधरेंभक्षाभक्षजेषाहिं + ॥
तेइजोगीतेइसिद्धनरपुज्यतेकलियुगमाहिं ॥
सो॰ जेअपकारीचारतिन्हकरगौरवमान्यतेइ ॥
मनक्रमबचनलबारतेइबकताकलिकालमहुँ ॥

नारिबिबसनरसकलगोसाँई | नाचहिंनटमर्कटकीनाईं॥
शूद्रद्विजनउपदेशहिंज्ञाना | मेलिजनेऊलेहिंकुदाना॥
सबनरकामलोभरतक्रोधी | देवविप्रश्रुतिसंतबिरोधी
गुनमंदिरसुंदरपतित्यागी | भजहिंनारिपरपुरुषअभागी
सौभागिनीबिभूषनहीना। | बिधवन्हकेशृंगारनवीना।
गुरसिषबधिरअंधकालेषा | एकनसुनैएकनहिंदेषा॥
हरैशिष्यधनसोकनहरई। | सोगुरुघोरनरकमहँपरई॥
मातुपिताबालकन्हिबुलावहिं उदरभरैसोइधरमसिषावहिं

दो॰ ब्रह्मज्ञानबिनुनारिनरकहहिंनदूसरबात + ॥
कौडीलागिलोभबसकरहिंबिप्रगुरघात + ॥
बादहिंशूद्रद्विजनसनहमतुमतेंकछुघाटि ॥
जानैब्रह्मसोबिप्रबरआँखिदेषावहिंडाटि १००॥

परत्रियलंपटकपटसयाने। | मोहद्रोहममतालपटाने॥
तेइअभेदबादीज्ञानीनर ॥ | देषामैंचरित्रकलियुगकर
आपुगएअरुतिन्हहूंघालहिं। | जेकहुंसतमारगप्रतिपालहिं
कल्पकल्पभरिएकएकनरका परहिंजेदूषहिंश्रुतिकरत

अपस्वार्थकि
उनके स्वार्थ
मायाहतदोष
नलोभ्रष्टज्ञा
कोबिषमतान
मान हायगो
तबदुकालके
तेउज्ञाननगार्म
गयातहाँकछु
कालगार्षपाति
पाईकपटदृति
कुपदेनडाहि
ज्ञानखाकरत
रहीतहाँनहीं
बालनगुरुबल
प्रीततैंसिखा
बत

कपट दंभ तें आसन सें न आवत पुनः शिव मंदिर गुरु आगमन तें उठि के प्रनाम न कियो न आदर तहाँ शंभु की अति शाप दियो कि अजगर हो तब मैं होत है पुनः गुरु दयालु तातें शिव स्तु लहे हु कहति कियन बोचव उ बारह्या

बरनाधम तेलि कुम्भारा। स्वपच किरात कोल कलवारा॥
नारि मुई गृह संपति नासी। मूड़ मुड़ाइ होहिं सन्यासी॥
ते बिप्रन्ह सन आप पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं॥
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी॥
सूद्र करहिं जप तप ब्रत दाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा। जाइ न बरनि अनीति अपारा॥

दो॰ भए बरनसंकर कलि भिन्नसेतु सब लोग॥
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग॥
श्रुति संमत हरिभक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक॥ १०१

बहु दाम सवारहिं धाम जती॥
बिषया हरि लीन्हि रही बिरती।
तपसी धनवंत दरिद्र गृही॥
कलि कौतुक तात न जात कही।
कुलवंति निकारहिं नारि सती॥
गृह आनहिं चेरि निबेरि गती॥
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं।
अबलानन दीख नहीं जब लौं॥
ससुरारि पियारि लगी जब तें।
रिपु रूप कुटुंब भए तब तें॥
नृप पाप परायन धर्म नहीं।

टी॰

रा॰ उत्तर॰ ६२

पूजासंभार पाषानतें सतुष्टिकरी कुधर्मअंग नानाभुजं कोरहैगो अरुत्याग सम्पतिभागी धरतकरी पाकोलत

ब्यवहार हित चाली प्रहरे सज्जन भक्ति में कैसी घाते उनको परलोक अहंता ब्रह्म में

अनितांगाह अपस्वाचारी।

कारंडबिडंबप्रमानितही ॥
धनवंतकुलीनमलीनअपी
द्विजचिन्हजनेउउघारतपी
नहिंमानपुराननबेदहिजो ॥
हरिसेवकसंतसहीकलिसो।
कबिवृंदउदारदुनीनसुनी
गुनदूषकब्रातनकोपिगुनी
कलिबारहिंबारदुकालपरे
बिनुअन्नदुखीसबलोगमरे

दो॰ सुनखगेशकलिकपटहठदंभद्वेषपाखंड ॥
मानमोहमारादिमदव्यापरहेब्रह्मंड ॥
तामसधर्मकरहिंनरजपतपमखब्रतदान ॥
देवनबरषैधरनीबयेनजामहिंधान ॥ १०१ ॥

अबलाकचभूषनभूरिछुधा
धनहीनदुखीममताबहुधा।
सुखचाहहिंमूढ़नधर्मरता।
मतिथोरिकठोरनकोमलता।
नरपीड़ितरोगनभोगकहीं।
अभिमानबिरोधअकारनही
लघुजीवनसंबतपंचदसा।
कलपांतननाशगुमानअसा।

नहिंईस्वर सबजगमय सर्बब्यापक जन्मादिक कालस्वरूप कारनरूप [illegible] बसमैंते सबमेंन माया

कलिकालबिहालकिएमनुजा नहिंमानतकोउअनुजातनुजा
नहिंतोषबिचारुनसीतलता सबजातिकुजातिभएमगता
इरिषापरुषाछरलोलुपता। भरिपूररहीसमताबिगता
सबलोगबियोगबिसोकहये बरनाश्रमधरमअचारगये।
दमदानदयानहिंजानपनी। जड़तापरबंचनतातिघनी
तनपोषकनारिनरासगरे। परनिंदकजेजगमेंबगरे॥

दो· सुनब्यालारिकालकलिमलअवगुनआगार
गुनौंबहुतकलिजुगकरबिनुप्रयासनिस्तार + ॥
कृतजुगत्रेताद्वापरपूजामखअरुजोग + ॥
जोगतिहोइसोकलिहरिनामतेंपावहिंलोग २

कृतजुगसबयोगीसन्यासी करिहरिध्यानतरहिंभवपासी
त्रेताबिबिधजग्यनरकरहीं। प्रभुहिंसमर्पिकर्मभवतरहीं
द्वापरकरिरघुपतिपदपूजा नरभवतरहिंउपावनदूजा॥
कलिजुगकेवलहरिगुनगाहा गावतनरपावहिंभवथाहा।
कलिजुगजोगनजग्यनग्याना एकअधाररामगुनगाना॥
सबभरोसतजिजोभजरामहिं प्रेमसमेतगावगुनग्रामहिं।
सोइभवतरकछुसंशयनाहीं नामप्रतापप्रगटकलिमाहीं
कलिकरएकपुनीतप्रतापा मानसपुन्यहोंहिंनहिंपापा॥

दो· कलिजुगसमजुगआननहिंजोनर करबिस्वास
गाइरामगुनगनबिमलभवतरबिनहिंप्रयास।
प्रगटचारिपदधर्मके कलिमहुँएकप्रधान + ॥

कीनैंश्रवि
बाधींहैबाधस
सुधारिहैना
बिचारतेहर्षिन
८

कोशापदेखो
नवथुनिशोध
श्रीग्रहकीयो
कलौशुकमें
दिबार २
तानगुनऽ४
अनिइश्राम्म
पारसनाबाहि
गाइरामगुन३
बिहंगोबीतें
नवलोमश

जेनकेनबिधिदीन्हेदानकरैकल्यान ४॥

नितयुगधर्महोंहिसबकेरे। हृदयराममायाकेप्रेरे॥
शुद्धसत्वसमताबिज्ञाना कृतप्रभावप्रसन्नमनजाना
सत्वबहुतरजकछुरतिकर्मा सबबिधिसुखत्रेताकरधर्मा
बहुरजसत्वस्वल्पकछुतामस द्वापरधर्महरषभवमानस।
तामसबहुतरजोगुनथोरा कलिप्रभावबिरोधचहुँओरा
बुधजुगधर्मजानमनमाहीं तजअधर्मरतिधर्मकराहीं
कालधर्मनहिंब्यापहिंताही रघुपतिचरनप्रीतिअतिजाही
नटकृतबिकटकपटखगराया नटसेवकहिंनब्यापैमाया।

दो॰
रा॰उत्तर॰
६५
उ

दो॰ हरिमायाकृतदोषगुनबिनहरिभजननजाहिं॥
भजियरामतजिकामसबअसबिचारिमनमाहिं॥
तेहिकलिकालबरषबहुबसेउँअवधबिहगेश॥
परेउँकालबिपतिबसतबमैंगयउँबिदेस १०५॥

गयउँउजैनीसुनुउरगारी॥ दीनमलीनदरिद्रदुखारी॥
गएकालकछुसंपतिपाई। तहँपुनिकरौंशंभुसेवकाई
बिप्रएकबैदिकशिवपूजा करैसदातेहिकाजनदूजा
परमसाधुपरमारथबिंदक शंभुउपासकनहिंहरिनिंदक
तेहिसेवौंमैंकपटसमेता। द्विजदयालअतिनीतिनिकेता
बाहिजनम्रदेखिमोहिसाँई बिप्रपढ़ावपुत्रकीनाँई २॥
शंभुमंत्रमोहिद्विजबरदीन्हा शुभउपदेशबिबिधबिधिकीन्हा
जपौंमंत्रशिवमंदिरजाई॥ हृदयदंभअहमितिअधिकाई

ानवयो पुनः मुनि ग्रन्थ लंकै नगर हिया अग्रकाल पूर उपासना कोउ पैहा कि धौ बापमुनिष् अवस्थातें जानव धौमें रंग मतरखौं अ

दो. मैंखलमलसंकुलमतिनीचजातिबसमोह
हरिजनद्विजदेखेंजरौंकरौंबिष्नुकरद्रोह॥
सो. गुरुनितमोहिप्रबोधदुषितदेखिआचरनमम
मोहिउपजैअतिक्रोधदंभिहिनीतिकिभावई॥

कबारगुरुलीन्हबोलाई। मोहिनीतिबहुभांतिसिषाई
सिवसेवाकरिफलसुतसोई अबिरलभक्तिपरमपदहोई।
रामहिंभजहिंतातशिवधाता नरपावँरकैकेतिकबाता॥
जासुचरनशिवअजअनुरागी तासुद्रोहसुखचहसिअभागी
हरकहुँहरिसेवकगुरुकहेऊ सुनिखगनाथहृदयममदहेऊ
अधमजातिमैंबिद्यापाए भयउँजथाअहिदूधपिलाए
मानीकुटिलकुभाग्यकुजाती गुरकरद्रोहकरौंदिनराती
अतिदयालुगुरुस्वल्पनक्रोधा पुनिपुनिमोहिसिखावसुबोधा
जेहितेंनीचबड़ाईपावा॥ सोप्रथमहिंहतिताहिनसावा
धूमअनलसंभवसुनुभाई॥ तेहिबुझावघनपदवीपाई।
रजमगपरीनिरादररहई॥ सबकरपदप्रहारनितसहई
मरुतउड़ावप्रथमतेहिभरई पुनिनृपनयनकिरीटन्हपरई।
सुनुखगपतिअससमुझिप्रसंगा। बुधनहिंकरहिंअधमकरसंगा
कविकोबिदअसगावहिंनीती खलसनकलहनभलनहिंप्रीती
उदासीननितरहियगोसाँई खलपरिहरियस्वानकीनाँई
मैंखलहृदयकपटकुटिलाई गुरुहितकहैनमोहिसुहाई

दो. एकबारहरमंदिरजपतरहेउँशिवनाम॥

भजनसर्बपर
मनी॥ ॥
॥ १२८ ॥

टी.
रा. उत.
६६

गुरुआएउअभिमानतेंउठनहिंकीन्हप्रनाम ॥
सोदयालनहिंकहेउकछुउरनरोषलवलेस ॥
अतिअघगुरुअपमानतेंसहिनहिंसकेमहेस अ

मंदिरमांझभईनभबानी ॥ रेहतभाग्यअग्यअभिमानी।
जद्यपितवगुरुकेनहिंक्रोधा अतिकृपालुगुरुसम्यकबोधा।
तदपिसापसठदेहौंतोही ॥ नीतिबिरोधसोहाइनमोही
जौनहिंदंडकरौंखलतोरा ॥ भ्रष्टहोइश्रुतिमारगमोरा॥
जोसठगुरुसनइरषाकरहीं रौरवनरककोटिजगपरहीं॥
त्रिजगजोनिपुनिधरहिंसरीरा अयुतजन्मभरिपावहिंपीरा
बैठरहेसिअजगरइवपापी। सर्पहोहिखलमतिमलव्यापी
महाबिटपकोटरमहंजाई ॥ रहुअधमाधमअधोगतिपाईं

दी·
रा·उतर·
६७

दो· हाहाकारकीन्हगुरुदारुनसुनिशिवपाप ॥
कंपितमोहिबिलोकिअतिउरउपजापरिताप ॥
करिदंडवतसप्रेमद्विजशिवसन्मुखकरजोरि ॥
बिनयकरतगदगदस्वरसमुझिघोरगतिमोर ॥ ८ ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं। बिभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं
निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं। चिदाकाशमाकाशवासंभजेहं १
निराकारमोंकारमूलंतुरीयं ॥ गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं
करालंमहाकालकालंकृपालं गुणागारसंसारपारंनतोहं २
तुषाराद्रिसंकाशगौरंगभीरं। मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा। लसतभालबालेंदुकंठेभुजंग ३

लत्कुंडलंभ्रूसुनेत्रंबिसालं प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालं
गाधीशचर्मांबरंमुंडमालं प्रियंशंकरंसर्बनाथंभजामि
चंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशं। अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं
धाशूलनिर्मूलनंशूलपाणिं भजेहंभवानीपतिंभावगम्यं ५
लातीतकल्याणकल्पांतकारी सदासज्जनानंददातापुरारी
चिदानंदसंदोहमोहापकारी प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी ६
यावदुमानाथपादारबिंदं भजंतीहलोकेपरेवानराणां
तावत्सुखंसांतिसंतापनासं प्रसीदप्रभोसर्बभूताधिवासं ७
जानामियोगंजपंनैवपूजां नतोहंसदासर्बदाशंभुतुभ्यं
राजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ८
द्राष्टकमिदंप्रोक्तंबिप्रेणहरतोषये येपठंतिनराभक्त्यातेषांशं
भुःप्रसीदति।

दो॰ सुनिबिनतीसर्बज्ञशिवदेषबिप्रअनुराग
मुनिमंदिरनभवानीभइद्विजबरबरमांग॥
जोप्रसन्नप्रभुमोपरनाथदीनपरनेहु * ॥
निजपदभक्तिदेइप्रभुपुनिदूसरबरदेहु॥
तवमायाबसजीवजडसंततफिरैभुलान॥
तेहिपरक्रोधनकरियप्रभुकृपासिंधुभगवान
शंकरदीनदयालअबएहिपरहोउकृपाल॥
शापअनुग्रहहोइजेहिनाथथोरेहींकाल ४

एहिकरहोइपरमकल्याना। सोइकरहुअबकृपानिधाना।
बिप्रगिरासुनिपरहितसानी एवमस्तुइतिभईनभबानी

जदपिकीन्हएहिंदारुनपापा। मैंपुनिदीन्हक्रोधकरिसापा।
तदपितुम्हारसाधुतादेखी॥ करिहौंएहिपरकृपाबिशेषी
छमासीलजेपरउपकारी। तेद्विजमोहिप्रियजथाखरारी
मोरसापद्विजव्यर्थनजाइहि। जन्मसहस्रअवस्यहपाइहि
जन्मतमरतदुसहदुखहोई एहिस्वल्पौनहिंब्यापिहिसोई
कवनेउजन्ममिटिहिनहिंज्ञाना। सुननहिंसूद्रममबचनप्रमाना
रघुपतिपुरींजन्मतबभएऊ पुनितैंममसेवामनदयेऊ॥
पुरीप्रभावअनुग्रहमोरे॥ ॥ रामभगतिउपजिहिउरतोरे॥
सुनममबचनसत्यअबभाई हरितोषनव्रतद्विजसेवकाई
अबजनिकरहिंबिप्रअपमाना जानेसुसंतअनंतसमाना॥
इंद्रकुलिसममसूलबिसाला। कालदंडहरिचक्रकराला॥
जोइन्हकरमारानहिंमरई ॥ बिप्रद्रोहपावकसोजरई॥
असबिबेकराखेउमनमाहीं तुमकहँजगदुर्लभकछुनाहीं
औरौंएकआसिषामोरी। अप्रतिहतगतिहोइहिंतोरी

दो॰ सुनिशिवबचनहरषिगुरएवमस्तुइहिभाष
मोहिप्रबोधगएउगृहशंभुचरनउरराखि। **।
प्रेरितकालबिंधिगिरिजाइभएउँमैंब्याल **।
बिनुप्रयाससुनिसोतनुतजेउँगएकछुकाल ॥
जोइतनुधरौंतजौंपुनिअनायासहरिज्ञान ॥
जिमिनूतनपटपहिरैनरपरिहरैपुरान * * ॥
शिवराखीश्रुतिनीतिअरुमैंनहिंपावकलेस॥

एहि बिधि धरेउँ बिबिध तनु ग्यान न गयउ गोसाँइ

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ । जहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ
एक सूल मोहि बिसर न काऊ । गुरु कर कोमल सील सुभाऊ
चर्म देह द्विज कै मैं पाई ॥ सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई
खेलौं तहूँ बालकन्ह मीला । करौं सकल रघुनायक लीला
प्रौढ़ भए मोहि पिता पढ़ावा । समझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा
मन तें सकल बासना भागी । केवल राम चरन लय लागी ॥
कहु खगेस अस कवन अभागी । खरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी ॥
प्रेम मगन मोहि कछु न सुहाई । हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई ॥
भए कालबस जब पितु माता । मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावौं । आस्रम जाइ जाइ सिर नावौं ॥
बूझौं तिन्हहिं राम गुन गाहा । कहहिं सुनौं हरषित खगनाहा ।
सुनत फिरौं हरि गुन अनुबादा । अब्याहत गति संभु प्रसादा ।
छूटी त्रिबिध ईषना गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी
राम चरन बारिज जब देखौं । तब निज जन्म सफल करि लेखौं
जेहि पूछौं सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्ब भूतमय अहई ॥
निर्गुन मत नहिं मोहि सुहाई । सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई

दो॰ गुरु के बचन सुरति करि राम चरन मन लागु ।
रघुपति जस गावत फिरौं छन छन नव अनुराग
मेरु सिखर बर छाया मुनि लोमस आसीन ॥
देखि चरन सिर नायउँ बचन कहेउँ अति दीन ॥

टी॰
रा॰ उत्तर
९०

दो॰
रा॰उत्तर॰
११

सुनिमुनिबचनबिनीतमृदुमुनिकृपालषगराज
मोहिसादरपूछतभएद्विजआश्रमकेहिकाज ॥
तबमैंकहाकृपानिधितुमसर्बग्यसुजान ॥
सगुनब्रह्मअवराधनमोहिकहहुभगवान।१११॥

तबमुनीसरघुपतिगुनगाथा कहेकछुकसादरषगनाथा
ब्रह्मग्यानरतमुनिबिग्यानी। मोहिपरमअधिकारीजानी
लागेकरनब्रह्मउपदेसा ॥ अजअद्वैतअगुनहृदयेसा॥
अकलअनीहअनामअरूपा अनुभवगम्यअखंडअनूपा॥
मनगोतीतअमलअबिनासी निर्बिकारनिरवधिसुखरासी
सोतैंताहितोहिनहिंभेदा ॥ बारिबीचिइवगावहिंबेदा ॥
बिबिधभांतिमोहिमुनिसमुझावा निर्गुनमतममहृदयनआवा
पुनिमैंकहेउँनाइपदसीसा ॥ सगुनउपासनकहहुमुनीसा
रामभगतिजलममनमीना। किमिबिलगाइमुनीसप्रबीना
सोइउपदेसकहहुकरिदाया निजनयननदेखौंरघुराया॥
भरिलोचनबिलोकिअवधेसा तबसुनिहौंनिर्गुनउपदेसा॥
मुनिपुनिकहिहरिकथाअनूपा खंडिसगुनमतअगुननिरूपा
तबमैंनिर्गुनमतकरिदूरी ॥ सगुननिरूपौंकरिहठभूरी॥
उत्तरप्रतिउत्तरमैंकीना ॥ मुनितनभएक्रोधकेचीन्हा॥
सुनिप्रभुबहुतअवग्याकीये उपजक्रोधग्यानिहुकेहीये॥
अतिसंघरषनजोकरकोई। अनलप्रगटचंदनतेंहोई ५॥

दो॰ बारंबारसकोपमुनिकरैंनिरूपनग्यान ॥

मैं अपने मन बैठि तब करौं बिबिध अनुमान ॥
क्रोध कि द्वैत बुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अज्ञान ॥
मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ११२

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताके तेहि कि दरिद्र परस मनि जाके
परद्रोही कि होइ निःसंका। कामी पुनि कि रहहिं अकलंका
बंस कि रह द्विज अनहित कीने कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीने
काहू सुमति कि खल संग जामी सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी
भव कि परहिं परमात्म बिंदक सुखी कि होहिं कबहुँ हरिनिंदक
राज कि रहै नीति बिनु जाने ॥ अघ कि रहहिं हरिचरित बषाने
पावन जस कि पुन्य बिनु होई। बिनु अघ अजस कि पावै कोई
लाभ कि कछु हरि भक्ति समाना जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना
हानि कि जग एहि सम कछु भाई भजिय न रामहिं नर तनु पाई॥
अघ कि पिसुनता सम कछु आना धर्म कि दया सरिस हरिजाना॥
एहि बिधि अमित जुक्ति मन गुनऊं मुनि उपदेश न सादर सुनऊं॥
पुनि पुनि सगुन पक्ष मैं रोपा। तब मुनि बोले बचन सकोपा
मूढ़ परम सिष देउँ न मानसि। उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि॥
सत्य बचन बिस्वास न करही बायस इव सब ही ते डरही॥
सठ स्वपक्ष तव हृदय बिसाला। सपदि होहि पक्षी चंडाला॥
लीन्ह साप मैं सीस चढ़ाई ॥ नहिं कछु भय न दीनता आई

दो॰ तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिर नाइ
सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥

उमाजेरामचरनरतिबिगतकाममदक्रोध ॥
निजप्रभमयदेषहिंजगतकेहिसनकरहिंबिरोध ११२

सुनषगेसनहिंकछुरिषिदूषन उरप्रेरकरघुबंशबिभूषन॥
कृपासिंधुमुनिमतिकरिभोरी लीन्हीप्रेमपरीछामोरी ॰ ॥
मनक्रमबचमोहिनिजजनजाना मुनिमतिफिरफेरीभगवाना।
रिषिममहतिसीलतादेषी रामचरनबिस्वासबिशेषी
अतिबिसमयपुनिपुनिपछताहीं॥ सुंदरमुनिमोहिलीन्हबुलाई
ममपरितोषबिबिधबिधिकीन्हा हरषितराममंत्रतबदीन्हा।
बालकरूपरामकरध्याना। कहेउमोहिमुनिकृपानिधाना
सुंदरसुषदमोहिअतिभावा सोप्रथमहिंमैंतुमहिंसुनावा
मुनिमोहिकछुककालतहँराषा रामचरितमानसतबभाषा
सादरमोहियहकथासुनाई पुनिबोलेमुनिगिरासुहाई॥
रामचरितसरगुप्तसोहावा। शंभुप्रसादतातमैंपावा॥
तोहिनिजभक्तिरामकरजानी तातेमैंसबकहेउँबषानी॥
रामभक्तिजिन्हकेउरनाहीं। कबहुनतातकहियतिन्हपाहीं
मुनिमोहिबिबिधभांतिसमुझावा मैंसप्रेममुनिपदसिरनावा
निजकरकमलपरसममसीसा हरषितआसिषदीन्हमुनीसा
रामभगतिअबिरलउरतोरे बसिहिसदाप्रसादअबमोरे

दो॰ सदारामप्रियहोहुतुमसुभगुनभवनअमान
कामरूपइछामरनज्ञानबिरागनिधान ॰॰ ॥
जेहिआश्रमतुमबसबपुनिसुमरतश्रीभगवंत॥

पी॰
रा॰उतर॰
७२

ब्यापिहितोंहिंनअबिद्याजोजनएकप्रजंत २४।

ालकर्मगुनदोषसुभाऊ कछुदुषतुम्हहिंनब्यापिहिकाऊ
ामरहस्यललितबिधिनाना। गुप्तप्रगटइतिहासपुराना।
बिनुश्रमतुम्हजानबसबसोऊ नितनवनेहरामपदहोऊ॥
ोइछाकरिहहुमनमाहीं। हरिप्रसादकछुदुर्लभनाहीं
ुनिमुनिआसिषसुनमतिधीरा ब्रह्मगिराभईगगनगंभीरा॥
एवमस्तुतवबचमुनिग्यानी यहममभक्तकरममनबानी
ुनिनभगिराहरषमोहिभयऊ प्रेममगनसबसंसयगयऊ॥
ारिबिनतीमुनिआयसुपाई पदसरोजपुनपुनसिरुनाई।
रषसहितएहिंआश्रमआयउँ प्रभुप्रसाददुर्लभबरपायउँ
हाँबसतमोहिसुनषगईसा बीतेकल्पसातअरुबीसा
ौंसदारघुपतिगुनगाना सादरसुनहिंबिहंगसुजाना
वजबअवधपुरीरघुबीरा धरहिंभगतहितमनुजशरीरा
वतबजाइरामपुररहऊँ॥ सिसुलीलाबिलोकिसुषलहऊँ
ुनउरराषिरामशिशुरूपा निजआश्रमआवौंषगभूपा
थासकलमैंतुमहिंसुनाई कागदेहजेहिकारणपाई।
हिउँतातसबप्रश्नतुमारी रामभगतिमहिमाअतिभारी

दो॰ तातेंयहतनमोहिप्रियभयउरामपदनेह॥
निजप्रभुदरसनपायउँगयसकलसंदेह॥
भगतिपक्षहठकरिरहेउँदीन्हमहारिषिसाप
मुनिदुर्लभबरपायउँदेषहुभजनप्रताप २२६

गरुड़ प्र. प्रश्न करते बिनाज्ञानके उन:भक्ति १२. लौं. तिज्ञानमें बिलकेधर्मं तिज्ञानमें गुम्भमग १ हे. १ खो. ६ लो. पांडे१

छोडिज्ञानको
आग्रहकर सब
मेंजनायो नाकी
आगुभक्तिसम
नहींआदरेतौल
तेंज्ञानभक्तिमें
कैसोअंतर है
गरुड़कागसे तो
कोअंतरपूछ

जेअसिभक्तिजानिपरिहरहीं केवलज्ञानहेतुश्रमकरहीं।
तेजड़कामधेनुगृहत्यागी । खोजतआकफिरहिंपयलागी।
सुनखगेसहरिभक्तिबिहाई । जेसुखचाहहिंआनउपाई ॥
तेसठमहासिंधुबिनुतरनी । पैरपारचाहहिंजड़करनी ॥
सुनभुसुंडकेबचनभवानी । बोलेउगरुड़हरषिमृदुबानी।
तवप्रसादप्रभुममउरमाहीं संसयसोकमोहभ्रमनाहीं॥
सुनेउपुनीतरामगुनग्रामा ॥ तुम्हरीकृपालहेउँबिश्रामा।
एकबातप्रभुपूछौंतोही ॥ कहहुबुझायकृपानिधिमोही
कहहिंसंतमुनिबेदपुराना। नहिंकछुदुर्लभज्ञानसमाना
सोईमुनितुम्हसनकहेउगोसाईं नहिंआदरेहुभक्तिकीनाईं॥
ज्ञानहिंभक्तहिंअंतरकेता । सकलकहहुप्रभुकृपानिकेता
सुनउरगारिबचनसुखमाना सादरबोलेउकागसुजाना॥
भक्तिहिंज्ञानहिंनहिंकछुभेदा उभयहरहिंभवसंभवखेदा॥
नाथमुनीसकहहिंकछुअंतर। सावधानसोसुनविहंगबर॥
ज्ञानबिरागजोगबिज्ञाना ॥ एसबपुरुषसुनहुहरिजाना।
पुरुषप्रतापप्रबलसबभांती अबलाअबलसहजजड़जाती

दो· पुरुषत्यागसकनारिहिजोबिरक्तमतिधीर ॥
ननुकामीबिषयाबसबिमुखजोपदरघुबीर ॥
सो· सोउमुनिज्ञाननिधानमृगनयनीबिधुमुखनिरखि
बिबसहोइहरिजाननारिबिष्णुमायाप्रगट ॥ १२७॥

इहांनपच्छपातकछुराखौं ॥ बेदपुरानसंतमतभाखौ ×॥

काग्भुसुंडि
न्यायगुनःज्ञान
नायगुनप्रमा
यजानेंकबल
तेंस्वभक्तिके
कातेंमाहिनहीं
हरीग्रहवाय
नाथजीकीभक्ति
प्रीतिप्रिय है
तातेंमायाबिष्णु
बासनांहरती
यातेंमुनिभक्ति
हरिकाजानते हैं
गरुड़पच्छपात
कृपातेंजानी
जाय है प्र
ज्ञानकथन
मनमेंपावनतें
अनुभवकरैला
पकरै

अरुजीवको
तम्मुबुद्धिह
मायाजड़कोह
ग्रन्थितेंबंध्यो
जैसेअग्नाह
चाहकेजैसे
लपटकंदमरक
टपडकि
नकरपालहाट
करलेतेहैं.जड़
पदार्थमोंग्रीव
बंध्योअहंता
रुपतेंअरुपा
केछोड़नेकौ
बहुतउपायकहे
परंतुयहग्रंथका
हतेछूटनाहींप
रंतुईश्वरसंयोग
कोऊतबकबहु

मोहननारिनारिकेरूपा ॥ पन्नगारियहनीतिअनूपा॥
मायाभगतिसुनहुतुमदोऊ। नारिबर्गजानेसबकोऊ॥
पुनिरघुबीरहिंभक्तिपियारी। मायाखलुनर्तकीबिचारी
भक्तिहिंसानुकूलरघुराया। तातेतेहिडरपतिअतिमाया।
रामभगतिनिरुपमनिरुपाधी बसैजासुउरसदाअबाधी॥
तेहिबिलोकिमायासकुचाई करिनसकैकछुनिजप्रभुताई
असबिचारिजेमुनिबिग्यानी जाचहिंभक्तिसकलसुषषानी

दो· यहरहस्यरघुनाथकरबेगिनजानेकोइ ॥
जोजानैरघुपतिकृपासपनेहुमोहनहोइ ॥
औरौंज्ञानभक्तिकरभेदसुनहुसुप्रबीन ॥
सोसुनिहोयरामपदप्रीतिसदाअबछीन ११८।

सुनहुतातयहअकथकहानी। समुझतबनैनजाइबखानी।
ईश्वरजीवअंशअबिनासी। चेतनअमलसहजसुषरासी।
सोमायाबसभयउगोसाँई। बंध्योकीरमरकटकीनाँई।
जड़चेतनहीग्रंथिपरिगई ॥ जदपिमृषाछूटतकठिनई
तबतेंजीवभयउसंसारी ॥ छूटनग्रंथिनहोइसुषारी॥
श्रुतिपुरानबहुकहेउउपाई छूटनअधिकअधिकउरझाई
जीवहृदयतममोहबिशेषी। ग्रंथिछूटकिमिपरैनदेषी।
अससंयोगईसजबकरई। तबहुँकदाचितसोनिरुअरई
सात्विकश्रद्धाधेनुसुहाई ॥ जोहरिकृपाहृदयबसआई
जपतपब्रतजमनियमअपारा। जेश्रुतिकहसुभधर्मअचारा।

कैसेछूटेताकोसा
धनरुपकबरि
कहतेहैंसात्विकी
श्रद्धाधेनुधर्मश्रा
चारस्थादिकतृण
भावबछरागौ
निवृत्तिबिभाव
पात्रमलरहित
मनअहीर
उद्यपरस
धर्मकामना
रहितअग्नि
संतोषबायु
तेंछमासंयु

तेइत्रिनहरितचरैजबगाई । भावबछशिसुपाइपन्हाई
नोइनिवृत्तिपात्रविश्वासा । निर्मलमनअहीरनिजदासा
परमधर्ममयपयदुहिभाई । अवटैअनलअकामबनाई
तोषमरुतजबछमाजुड़ावै । धृतिसमजावनदेइजमावै
मुदितामथैबिचारमथानी । दमअधाररजुसत्यसुबानी
तबमथिकाढ़िलेइनवनीता । बिमलबिरागसुभगसुपुनीता

दो॰ जोगअगिनिकरप्रगटतबकर्मसुभासुभलाइ
बुद्धिसिरावैज्ञानघृतममतामलजरिजाय * ॥
तबबिज्ञानरूपनीबुद्धिबिसदघृतपाइ * ॥
चित्तदियाभरधरैदृढ़समतादिवटबनाय ॥
तीनअवस्थातीनगुनतेहिकपासतेंकाढ़ि ॥
तूलतुरीयसवाँरिपुनबातीकरैसुगाढ़ि ॥
सो॰ एहिबिधिलेसैदीपतेजराशिबिज्ञानमय ॥
जातहिंजासुसमीपजरहिंमदादिकसलभसब ॥११७

सोहमस्मिइतिवृत्तिअखंडा । दीपसिखासोइपरमप्रचंडा
आतमअनुभवसुखसुप्रकासा । तबभवमूलभेदभ्रमनासा
परमअविद्याकरपरिवारा । मोहआदितममिटैअपारा
तबसोइबुद्धिपाइउजियारा । उरगृहबैठिग्रंथिनिरुवारा
छोरनग्रंथिपावजोसोई । तौयहजीवकृतारथहोई
छोरतग्रंथिजानिखगराया । बिघ्नअनेककरैतबमाया
रिद्धिसिद्धिप्रेरैबहुभाई । बुद्धिहिलोभदिखावहिंआई

बद्धे तुरीय
गुनवाद्या
अवस्था सौ
बट गौ नौ
समतादि
बिन दीपक
ताग धृत
कर्म ईंधन
शुभाशुभ
सुद्धा त्र
सत्तै ममता
मानो औ
देबी नस
गौ के क्षीर
बिचार मथ
मानौं मथनी
गावनसु

अवस्था सो ए
बत्ती को अंत
करनाग्रत कै
आदि में जो
निर्विकल्प
संप्रज्ञातो ब
तत्को निष्कर्ष
करि बत्ती गाढ़
टी॰
रा॰ उत्तर
१७
बत्तीयाप्रकार
तौ बिज्ञान दीप
करि मदादिक
पतंग कौ नाश
होतु है यह ज्ञा
नतम गए तब
आदि बहु चोरनको
सकति है प्र
औ बहु नाश
होतु है परंतु
मायाकला ब
चोरनि को उ
बुद्धि के डिगा
दिखावति है जी
लोभ दिखावै
ताबाते दीप
कोबुझाय दे
है ऐसे कठिन
यासो ख्याति है
तातें मुनिः कहत
सो ज्ञान परम है

चलैंजनको
पंथजैसेषड्ग
गकेधारपर
कोचालसकैं
बानिबिघ्न
निर्बहैतऊ
कैवलमोक्ष
पावैपरम
श्रीरामजू
कौभक्तितें
रघुजाकी
परमपदकै
बस्यकरत
हैंबाबिनाजौ
आवतहै
रघुप्रभुजो
चेतन्यकोजड़
करतुहैंतिनको
नमजैसेबांगड़
अबजिनासवक
बासीभावतों
भवसागरतरब
दुर्लभहैसब

कलबलछलकरिजाइसमीपा। अंचलबातबुझावहिंदीपा॥
होइबुद्धिजोपरमसयानी। तिन्हतनचितवनअनहितजानी
जोतेहिबिघ्नबुद्धिनहिंबाधी तोबहोरिसुरकरहिंउपाधी
इंद्रीद्वारझरोषानाना॥ तहँतहँसुरबैठेकरिथाना।
आवतदेषहिंबिषयबयारी। तेहठदेहिंकपाटउघारी॥
जबसोप्रभंजनउरगृहजाई। तबहिंदीपबिज्ञानबुझाई॥
ग्रंथिनछूटिमिटासोप्रकासा। बुद्धिबिकलभइबिषयबतासा।
इंद्रियसुरननज्ञानसुहाई। बिषयभोगपरप्रीतिसदाई।
बिषयसमीरबुद्धिकृतभोरी तेहिबिधिदीपकोबारबहोरी

दो॰ तबफिरिजीवबिबिधबिधिपावैसंसृतिक्लेश
हरिमायाअतिदुस्तरतरिनजायबिहगेश॥
कहतकठिनसमुझतकठिनसाधनकठिनबिबेक।
होइघुनाक्षरन्यायजोंपुनिप्रत्यूहअनेक ११९।

ज्ञानपंथकृपानकैधारा॥ परतषगेशहोइनहिंबारा॥
जोनिर्बिघ्नपंथनिरबहई। सोकैवल्यपरमपदलहई॥
अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद संतपुराननिगमआगमबद
रामभजनसोइमुक्तिगोसाँई अनइछितआवैबरिआई
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई कोटिभांतिकोउकरौउपाई
तथामोक्षसुषसुनषगराई रहिनसकैहरिभक्तिबिहाई
असबिचारिहरिभक्तसयाने मुक्तिनिरादरभक्तिलुभाने
भक्तिकरतबिनुजतनप्रयासा। संसृतिमूलअबिद्यानासा।

दो॰

अबभक्तिमणी
दरलताकहतेहैं
दीपकबारकी
कठिनताजो
तिरबिधाकी

भोजनकरियतृप्तिहितलागी। जिमिसोअसनपचवैजठरागी॥
असहरिभक्तिसुगमसुषदाई। कोअसमूढनजाहिसुहाई॥

दो॰ सेवकसेव्यभावबिनुभवनतरियउरगारि॥
भजहुरामपदपंकजअससिद्धांतबिचारि ॥
जोचेतनकहँजड़करैजड़हिकरैचैतन्य ॥
अससमर्थरघुनायकहिभजहिंजीवतेधन्य २॰

कहेउँग्यानसिद्धांतबुझाई। सुनहुभगतिमनकैप्रभुताई
रामभक्तिचिंतामनिसुंदर। बसैगरुड़जाकेउरअंतर॥
परमप्रकाशरूपदिनराती॥ नहिंकछुचहियदियाघृतबाती
मोहदरिद्रनिकटनहिंआवा। लोभबातनहिंताहिबुझावा॥
प्रबलअबिद्यातममिटिजाई हारहिंसकलसलभसमुदाई
खलकामादिनिकटनहिंजाहीं बसैभक्तिजाकेउरमाहीं॥
गरलसुधासमअरिहितहोई तेहिमनिबिनुसुषपावनकोई
ब्यापनमानसरोगनभारी ॥ जिनकेबससबजीवदुषारी
रामभक्तिमनिउरबसजाके दुषलवलेसनसपनेहुताके
चतुरसिरोमनितेइजगमाहीं जेमनिलागिसुजतनकराहीं
सोमनिजदपिप्रगटजगअहई राममकृपाबिनुनहिंकोउलहई
सुगमउपाइपाइबेकेरे ॥ नरहतभाग्यदेहिंभटभेरे॥
पावनपर्बतबेदपुराना ॥ रामकथारुचिराकरनाना॥
मर्मीसज्जनसुमतिकुदारी। ग्यानबिरागनयनउरगारी॥
भावसहितषोजेसोप्रानी॥ भावभक्तिमनिसबसुषषानी

रिकथा अमलपरबत सज्जातिहैजै अमुलभ्यातांमि प्रगटहैपरंतु लपहैअरुजद्य बिपंप्रकाशरुप कोउनाहिंकहु बिद्युपाछु श्रीरामभक्तिमों अकचिंतामनि

बानिभरेबाधु सुमनिकुपरी कैग्यानबैराग्य बोहिबोभावबु तबोभाव आरि मनेंअरिशुभकरो श्रुबकोजानिबो

टी॰
रा॰ उत्तर॰
७५

जिनकोसतसं गतेंयाउदेम पानिसर्वकस्तु समपूहोतोहै अहंपाके प्रभावतें कामादिखल कोबिजय करिवछ है बिलतहै

१२०

धर्मनि२ २ज्ञौ: २ ॐ: २ ख्लो०। ५हो०॥ पुनःसप्रेम बोलेउषगा राजसुकृपा मोहिनाथनि सप्तप्रश्न सुनहुसर्व प्रभुण्णा १०

मोरेंमनप्रभुअसबिश्वासा। रामतेंअधिकरामकरदासा।
रामसिंधुघनसज्जनधीरा। चंदनतरुहरसंतसमीरा॥
सबकरफलहरिभक्तिसुहाई। सोबिनुसंतनकाहूँपाई॥
असबिचारिजोकरसतसंगा। रामभगतितेहिसुलभबिहंगा।

दो॰ ब्रह्मपयोनिधिमंदरग्यानसंतसुरआहिं॥
कथासुधामथिकाढ़हींभगतिमधुरताजाहिं॥
बिरतिचर्मअसिग्यानमदलोभमोहरिपुमारि॥
जयपाइयसोहरिभगतिदेषुषगेसबिचारि १२१

पुनिसप्रेमबोलेउषगराऊ जौंकृपालुमोहिऊपरभाऊ।
नाथमोहिनिजसेवकजानी सप्तप्रश्नममकहहुबषानी
प्रथमहिंकहहुनाथमतिधीरा सबतेंदुर्लभकवनशरीरा॥
बड़दुखकवनकवनसुषभारी सोउसंक्षेपहिकहहुबिचारी
संतअसंतमरमतुमजानहु तिन्हकरसहजसुभावबषानहु।
कवनपुन्यश्रुतिबिदितबिसाला। कहहुकवनअघपरमकराला।
मानसरोगकहहुसमुझाई॥ तुमसर्बज्ञकृपाअधिकाई
तातसुनहुसादरअतिप्रीती मैंसंक्षेपकहौंयहनीती॥
नरतनसमनहिंकवनिउदेही जीवचराचरजाचततेही॥
नरकस्वर्गअपबर्गनिसेनी ग्यानबिरागभक्तिसुषदेनी
सोतनुधरिहरिभजहिंनजेनर होहिंबिषयरतमंदमंदतर॥
काचकिरचबदलेतेलेही॥ करतेडारिपरसमनिदेहीं।
नहिंदरिद्रसमदुषजगमाहीं संतमिलनसमसुषजगनाहीं

पुनःश्रीगरुड़ जूप्रेमपूर्वक सप्तप्रश्न पूछनाकोउत्तर कागभुसुंडिकौ सर्वतेंदुर्लभ नतु १ न.उ.१म कृपु २ सुख

टी·
रा·उत्तर
८०

बड़ो कंन
मिलन ३
संतअसंत
सुभाउपर
पकारर
संतनबैरि
धीअसंत ४
बिसालदुम्
कौनअहिंसा
परमधरम ५
अघबड़ापर
निंदा ६ भा
नषरोगमो
हरोगनको
नं. ७

टी.
रा. उत्तर
८१

परउपकारबचनमनकाया। संतसहजसुभावषगराया।
संतसहहिंदुषपरहितलागीं। परदुषहेतुअसंतअभागी।
भुर्जतरूसमसंतकृपाला। परहितनितसहबिपतिबिसाला।
सनइवषलपरबंधनकरई। षालकढ़ाइबिपतिसहमरई।
षलबिनुस्वारथपरअपकारी अहिमूषकइवसुनउरगारी॥
परसंपदाबिनासनसांहीं। जिमिससिहतिहिमउपलबिलाहीं
दुष्टउदयजगआरतहेतू॥ जथाप्रसिद्धअधमग्रहकेतू
संतउदयसंततसुषकारी॥ बिस्वसुषदजिमइंदुतमारी
परमधर्मश्रुतिबिदितअहिंसा परनिंदासमअघनगिरीसा
हरिगुरुनिंदकदादुरहोई॥ जन्मसहस्त्रपावतनसोई।
द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि जगजन्मैबायससरीरधरि
सुरश्रुतिनिंदकजेअभिमानी रौरवनरकपरहिंतेप्रानी॥
होहिंउलूकसंतनिंदारत। मोहनिसाप्रियग्यानभानुगत
सबकेनिंदाजेजड़करहीं। तेचमगादुरहोइअवतरहीं
सुनहुतातअबमानसरोग। जिन्हतेंदुषपावहिंसबलोग।
मोहसकलब्याधिनकरमूला। तिनतेंपुनिउपजैंहिंबहुसूल।
कामबातकफलोभअपारा। क्रोधपित्तनितछातीजारा।
प्रीतिकरहिंजोतीनिउभाई। उपजैसन्निपातदुषदाई॥
बिषयमनोरथदुर्गमनाना। तेसबसूलनामकोजाना।
ममतादादुकंडुईरषाई॥ हरषबिषादगरहबहुताई
परदुषदेषिजरनिसोछई। कुष्टदुष्टतामनकुटिलई॥

अहंकारअतिदुखदडमरुवा। दंभकपटमदमाननेहरुवा
तृस्नाउदरवृद्धिअतिभारी। त्रिबिधईषनातरुनतिजारी
जुगबिधिज्वरमत्सरअबिबेका जहँलगिकहौंकुरोगअनेका।

दो० एकब्याधिबसनरमरहिंएअसाधिबहुब्याधि॥
पीड़हिंसंततजीवकहुंसोकिमिलहैसमाधि * ॥
नेमधर्मआचारतपज्ञानजज्ञआचार * * ॥
भेषजपुनिकोटिन्हनहिंरोगजाहिंहरिजान १२२॥

एहिबिधसकलजीवजगरोगी। सोकहर्षभयप्रीतिबियोगी।
मानसरोगकछुकमैंगाए॥ हहिंसबकेलखिबिरलेन्हपाए
जानेतेंछीजहिंकछुपापी। नासनपावहिंजनपरितापी।
बिषयकुपथ्यपाइअंकुरे। मुनिहुहृदयकानरबापुरे
रामकृपानासहिंसबरोगा जौंएहिभांतिबनैसंयोगा।
सद्गुरुबैदबचनबिस्वासा। संजमयहनबिषयकैआस
रघुपतिभक्तिसजीवनमूरी अनूपानश्रद्धामतिपूरी॥
एहिबिधिभलेहौंरोगनसाहीं नाहितजतनकोटिनहिंजाहीं
जानियतबमनबिरुजगुसांई जबउरबलबिरागअधिकाई
सुमतिछुधाबाढैनितनई। बिषयआसदुर्बलतागई
बिमलज्ञानजलजबसोनहाई तबरहरामभक्तिउरछाई॥
शिवअजसुकसनकादिकनारद जेमुनिब्रह्मबिचारबिसारद
सबकरमतखगनायकएहा करियरामपदपंकजनेहा
श्रुतिपुरानसबग्रंथकहाहीं रघुपतिभक्तिबिनासुखनाहीं

अस्महादेव पार्वतीप्रति कथाभई स्पप्रसन्न भुक्रारहैतु कातभा अरुश्रीगु गोसाँईंजू भौतिनामसु हनुमअरु अनेकभांति तातेंउदार कियेनिजश्रुत मनकहौया कीमहिमा।

कमठपीठजामहिंबरुबारा। बंध्यासुतबरुकाहुहिंमारा।
फूलहिंनभबरुबहुबिधिफूला जीवनलहसुखहरिप्रतिकूला
तृषाजाइबरुमृगजलपाना बरुजामहिंससीसबिषाना
अंधकारबरुरबिहिनसावै रामबिमुखनजीवसुखपावै
हिमतेंअनलप्रगटबरुहोई। बिमुखरामसुखपावनकोई

दो· बारिमथेघृतहोइबरुसिकतातेबरुतेल ॥
बिनुहरिभजननभवतरिययहसिद्धांतअपेल ॥
मसकहिकरैबिरंचिप्रभुअजहिमसकतेंहीन ॥
असबिचारतजसंसयरामहिंभजहिंप्रबीन १२३

श्लो· बिनिश्चितंबदामितेनअन्यथाबचांसिमे ॥
हरिंनराभजंतिजेतिदुस्तरंतरंतिते ॥ २ ॥

टी·
रा·उतर·
८३

कहेउँनाथहरिचरितअनूपा। ब्याससमासस्वमतिअनुरूपा
श्रुतिसिद्धांतइहैउरगारी। रामभजियसबकामबिसारी
प्रभुरघुपतितजिसेइयकाही मोहिसेसठपरममताजाही
तुमबिज्ञानरूपनहिंमोहा नाथकीन्हमोपरअतिछोहा
पूछेहुरामकथाअतिपावनि सुकसनकादिसंभुमनभावनि
सतसंगतिदुर्लभसंसारा॥ निमिषदंडभरिएकौबारा।
देखिगरुड़निजहृदयबिचारी मैंरघुबीरभजनअधिकारी।
सकुनाधमसबभांतिअपावनप्रभुमोहिकीन्हबिदितजगपाव

दो· आजुधन्यमैंधन्यअतिजद्यपिसबबिधिहीन।
निजजनजानिराममोहिसंतसमागमदीन्ह ॥

चौपाईयोंमें ज्ञानका सोलहवांउ आदिअन्तमें अंगोंका कौकल्याण स्वस्त्रनपाठ गीभक्ति ज्ञानहेतु गी २३० ॥ इतिउत्तरकांडप्रकरणसमाप्त ॥

नाथजथामतिभाषेउँराखेउँनहिंकछुगोय।
चरितसिंधुरघुनायकथाहकिपावैकोय २४

सुमिरिरामकेगुनगननाना। पुनिपुनिहरषभुसुंडिसुजाना।
महिमानिगमनेतिकरिगाई अतुलितबलप्रतापप्रभुताई
शिव·अजपूज्यचरनरघुराई। मोपरकृपापरममृदुलाई॥
असस्वभावकहुँसुनौनदेखौ केहिखगेसरघुपतिसमलेखौ।
साधकसिद्धबिमुक्तउदासी कविकोबिदकृतज्ञसन्यासी।
जोगीसूरसुतापसज्ञानी॥ धरमनिरतपंडितबिज्ञानी॥
तरहिंनबिनुसेयेममस्वामी रामनमामिनमामिनमामी
सरनगएमोसे·अघरासी॥ होहिंसुद्धनमामिअविनासी

दो· जासुनामभवभेषजहिंहरनघोरत्रयशूल॥
सोकृपालमोहितोहिपरसदारहौअनुकूल॥
सुनभुसुंडिकेबचनसुभदेखिरामपदनेह +॥
बोलेउप्रेमसहितगिरागरुड़बिगतसंदेह २५

मैंकृतकृत्यभएउँतवबानी सुनिरघुबीरभगतिरससानी
रामचरननूतनरतिभई॥ मायाजनितबिपतसबगई
मोहजलधिबोहिततुमभए मोकहँनाथबिबिधसुखदए
मोपहँहोइनप्रतिउपकारा। बंदौंतवपदबारहिंबारा॥
पूरनकामरामअनुरागी॥ तुमसमतातनकोउबड़भागी
संतबिटपसरितागिरिधरनी परहितहेतुसबनकैकरनी
संतहृदयनवनीतसमाना। कहाकबिनपैकहिनजाना।

चौपाईछंददोहादिकोजोड
श्लोक ५
चौपाई १०५०
छंद ४
सोरठा १६
दोहा ३०६

दो·
रा·उत्तर·
८४

सातोंकांडकीचौपाईछंददोहादिककेसंपूर्णकाजोड़
श्लोक २५
चौपाई ४६६८
छंद २१८
सोरठा ८७
दोहा १०७५

निजपरितापद्रवैनवनीता। परदुषद्रवहिंसुसंतपुनीता।
जीवनजन्मसुफलममभएऊ तवप्रसादसंसयसबगएऊ
जानेउसदामोहिनिजकिंकर पुनिपुनिउमाकहइबिहंगवर

दो· तासुचरनसिरुनाइकरिप्रेमसहितमतिधीर
गयउगरुड़बैकुंठतबहृदयराषिरघुबीर २॥
गिरिजासंतसमागमसमनलाभकछुआन॥
बिनुहरिकृपानहोइसोगावहिंबेदपुरान १२६॥

कहेउँपरमपुनीतइतिहासा सुनतश्रवनछूटहिंभवपास
प्रनतकल्पतरुकरुनापुंजा उपजैप्रीतिरामपदकंजा॥
मनक्रमबचनजनितअघजाई सुनहिंजेकथाश्रवनमनलाई
तीर्थाटनसाधनसमुदाई ॥ जोगबिरागज्ञाननिपुनाई॥
नानाकर्मधर्मब्रतदाना ॥ संजमदमजपतपमषनाना।
भूतदयागुरुद्विजसेवकाई। बिद्याबिनयबिबेकबड़ाई॥
जहँलगिसाधनबेदबषानी सबकरफलहरिभक्तिभवानी
सोरघुनाथभक्तिश्रुतिगाई रामकृपाकाहूएकपाई॥

दो· मुनिदुर्लभहरिभक्तिनरपावहिंबिनहिंप्रयास
जोयहकथानिरंतरसुनहिंमानबिश्वास १२७॥

सोइसर्बज्ञगुनीसोइज्ञाता सोइमहिमंडितपंडितदाता।
धर्मपरायनसोइकुलत्राता रामचरनजाकरमनराता॥
नीतिनिपुनसोइपरमसयाना श्रुतिसिद्धांतनीकतेहिजाना
सोकबिकोबिदसोरनधीरा जोछलछाडिजपैरघुबीरा

दो·
रा· उत्तर·
८५

न्यसोदेशजहाँसुरसरी । धन्यनारिपतिब्रतअनुसरी
न्यसोभूपनीतिजोकरई । धन्योद्विजनिजधर्मनटरई।
सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी । धन्यपुन्यरतमतिसोईपाकी
न्यघटीसोइजबसतसंगा। धन्यजन्मद्विजभक्तिअभंगा।

दो·सोकुलधन्यउमासुनुजगत्पूज्यसुपुनीत।
श्रीरघुबीरपरायनजेनरउपजिबिनीत २८

तिअनुरूपकथामैंभाषी । जद्यपिप्रथमगुप्तकरिराषी
नमनप्रीतिदेषिअधिकाई । तबमैंरघुपतिकथासुनाई
हनकहियसठहींहठसीलहिं । जोमनलाइनसुनहरिलीलहि
हियनक्रोधिहिलोभिहिकामिहिं । जोनभजैसचराचरस्वामिहिं
द्विजद्रोहीहिनसुनाइयकबहूँ । सुरपतिसरिसहोइनृपजबहूँ
रामकथाकेतेअधिकारी । जिन्हकेसतसंगतिअतिप्यारी
गुरुपदप्रीतिनीतिरतजेई। द्विजसेवकअधिकारीतेई
ताकहँयहबिशेषसुषदाई । जाहिप्रानप्रियश्रीरघुराई

दो·रामचरनरतिजोचहअथवापदनिर्बान॥
भावसहितसोयहकथाकरौश्रवनपुटपान २९

रामकथागिरिजामैंबरनी । कलिमलसमनिमनोमलहरनी
संसृतिरोगसजीवनमूरी॥ रामकथागावहिंश्रुतिसूरी
एहिमहँरुचिरसप्तसोपाना । रघुपतिभक्तिकेरपंथाना॥
अतिहरिकृपाजाहिपरहोई । पावँदेइएहिमारगसोई॥
मनकामनासिद्धिनरपावा। जेयहकथाकपटतजिगावा।

कहहिंसुनहिंअनुमोदनकरहीं। तेगोपदइवभवनिधितरहीं
सुनिसबकथाहृदयअतिभाई। गिरिजाबोलीगिरासुहाई॥
नाथकृपाममगतसंदेहा। रामकृपाउपजेउनवनेहा॥

दो॰ मैंकृतकृत्यभइउँअबतवप्रसादबिश्वेश॥
उपजीरामभक्तिदृढबीतेसकलकलेश।१३०।

यहशुभशंभुउमासंबादा। सुषसंबादनसमनबिषादा
भवभंजनगंजनसंदेहा॥ जनरंजनसज्जनप्रियएहा
रामउपासकजेजगमाहीं। यहसमप्रियतिन्हकेंकछुनाहीं
रघुपतिकृपाजथामतिपावा। मैंयहपावनचरितसुहावा॥
यहकलिकालनसाधनदूजा। जोगजग्यजपतपब्रतपूजा॥
रामहिसुमिरियगाइयरामहिं। संततसुनियरामगुनग्रामहिं
जासुपतितपावनबड़बाना। गावहिंकबिश्रुतिसंतपुरान
ताहिभजियमनतजिकुटिलाई। रामभजेंगतिकेहिनहिंपाई

छं॰ पाईनगतिकेहिपतितपावनरामभजसुनुसठमना।
गनिकाअजामिलब्याधगीधगजादिखलतारेघना।
आभीरजमनकिरातखसस्वपचादिअतिअघरूपजे।
कहिबारनामकेतेपिपावनहोहिरामनमामिते॥
रघुबंशभूषनचरितयहनरकहहिंसुनहिंजोगावहीं
कालिमलमनोमलधोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं
सतपंचचौपाईमनोहरजानिजोनरउरधरे॥
दारुनअबिद्यापंचजनितबिकारश्रीरघुबरहरे॥

सुंदरसुजानकृपानिधानअनाथपरकरप्रीतिजो
सोएकरामअकामहितनिर्बानप्रदसमआनको
जाकीकृपालवलेसतेमतिमंदतुलसीदासहूँ॥
पायोपरमबिश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूँ।
दो.मोसमदीननदीनहिततुमसमानरघुबीर।
असबिचारिरघुबंशमनिहरहुबिषमभवभीर
कामिहिनारिपियारिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम
तिमिरघुनाथनिरंतरप्रियलागहुमोहिराम।१३१।

इतिश्रीरामचरित्रमानसेसक
लकलिकलुषबिध्वंस
नेअबिरलहरिभ
क्तिसंपादनो
नामसप्त
मः ७
सोपानः
संपूर्णं

आरतीश्रीरामायणजीकी कीरतिकलितललितसियपीकी
गावतब्रह्मादिकमुनिनारद बालमीकिबिज्ञानबिसारद
सुकसनकादिशेषअरुसारद बरनिपवनसुतकीरतनीकी
संततगावतशंभुभवानी। औघटसंभवमुनिबरज्ञानी
व्यासआदिमुनिपुंगवबखानी कागभुसुंडगरुडकेहियकी
चारिउबेदपुराणअष्टदशा। षटशास्त्रसबग्रंथनकोरस।
तनमनधनसंतनकोसर्बस सारअंससंमतसबहीकी
कलिमलहरणिबिषैरसफीकी सुभगसिंगारमुक्तियुवतीकी
हरणिरोगभवभूरिअमीकी तातमातसबबिधितुलसीकी

दिल्लीबासीबिप्रवरजगदीश्वरीकृपालु ॥
कापीलिखसोधनकरीपंडितदीनदयालुः॥

रामायणतुलसीकृतभाषामानसदीपि
काटीकासहित दरमनबख़्श हिंदू
प्रेसकेलालाप्यारेलालके
एहतमामसे बदस्ब़फ
रमायशलालानरा
यनदासवा बि
हारीलाल
के
छपी
॥

अथशंकावली ॥

श्रीजानकीबल्लभोबिजयते॥ गोसाँईजीकोरामायणबिचारतेंसर्बसंकारहितहैजातेंपूर्बपरलगाएतेंइसीग्रंथमोंसमाधानबाहुल्यतेंमिलतहैपरंतुइसग्रंथकाप्रचारबहुतहैयातेंबहुतलोगशंकाकरतहैंतातेंकछुलिखतहैंसंकाभाषाबद्धकरबमेंसोईअतित्तातेंबिरुद्धकांउनकेआदिसंस्कृतकविकाहलिके उत्तरदेनबानी·प्रतिमंगलरूपजानकैवाभाषाकेषट्लछनमोंसंस्कृतहूचाहिए १सं· निजइष्टदेवत्यागिप्रथमगनेसबंदनाकिए उ· गनेशकाप्रथमपूजनसर्बसंमतवाप्रथमपूजियतनामप्रभाऊ २सं· गोसाईंजूअनन्यद्विभुजरघुबरउपासकनारायणजूकोउरमोंबासएकाहेकी उ· दोउकाअभेदजानिप्रमानअगवगएश्रीकंता ३सं· मायाजीवब्रह्मजगदीसाएसबअनादिहैंबिधिनेकैसेबनाएउपजानेमोंतात्पर्यनहीहै गुनऔगुनकाप्रकरणहैवाप्रार्थनातेंबिधिनेउपजाएयथा· जयजयसुरनायकइत्यादिप्रार्थनाऔरतुमहिंलागिधरिहौंनरबेषा ४सं· पूर्बनकेबंदनाकरिआएअबबंदौंप्रथममहीसुरचरनायहकैसेबने उ· चारोंबर्णमोंप्रथमकहीआदिबिप्र ५सं· बंदौंप्रथमभरतकेचरणाकैसेबने उ· तीनोभाइनमोंप्रथमभरतवाश्रीरामभक्तनमोंमुख्य ६सं· नामबंदनामोंचापभंगकहिदंडकबनपावनकथामेंकांडक्रमभंगदोषहोतहै उ· बिबाहादिशेषबालकांडचरित्रचापभंगअंतर्गतहै प्र· इतहीधनुभयोबिबाहू इत्यादिऔसमयअयोध्याकांडआधाअरण्यदंडकबनपावननामेंगतार्थहै प्र· मुनिगनमिलनबिशेषबन इत्यादिवासप्तकांडमोंतात्पर्यनाही किंतुनाकेप्रतापादिबर्णनमोंहै ७सं· गुसाईंजीकाहूकबिनहोउँकहतैंआहींकबितुलसीयामेंकाहेतु उ· कबिनहोउँनिजदीनताकसेकबि संभुप्रसादसुमतिहियहुलसीइत्यादि ८सं· अघनौपसिद्धहै बिनुअघतजीसतीयहकैसे। उ· तहाँअघशब्ददुःखवाचकहै सतीत्यागमोंशिवजूकोकष्टदुःखभयोउ

खोभएउँबियोगप्रभुतोरेयहभक्तिनिरहतेकेहेपत्नीभावतेनहीं ९सं· प्रजासहितरघुबंशमनिनिजधामगएयहप्रश्नकेउत्तरनदियेसोक्याउ· उपासकनकेनित्यअवधबिहारसंमतहैंतेहितेबक्तामौनरहेवाउत्तरमोंगुप्तउत्तरदियोगएजहांसीतलअमराईबागसेफिरगृहआगमनलिखे १०सं· जोप्रभुमैंनहींपूछ्योसोभीकहनासोशिवजूकहाकहेउ· औरौएककहौंनिजचोरीइत्यादि ११सं· सतीमोहतोआरण्यकांडमोंभयोफुलबाटिकामेंगिरिजानामसेपूजनकेसेबनेउ· देवताअनादिहैंतिनमोंसबनामसदाप्रसिद्धहैं प्र· गणपअनादिजियजानि १२सं· निसदिननहिंअवलोकहिंलोका। उभयघरीमोंरातदिनकेसेबनेउ· कोकनिशिहीमेंभोगकरनेलगेदिननाहींदेखनयहअचरजवाकोपुंकास्त्रीयहनिजपत्नीसंबंधकेमर्यादानरही १३सं· कामकोचढ़ाईतोशंकरकेबिजयहेतुहेबिश्वबिजयगाएसोकाहेतु। उ· बिश्वबिजयीकामकेसंहारसेसंकरकेप्रतिबड़ाईमोंतात्पर्यहै १४सं· मनुसतरूपाकेबरदानसमयमोंजुगलप्रगटेबरदानराघवदियोकिसोरीजीनबोलीसोक्याहेतु उ· दोनोंकाअभेदहै प्र· देखियतभिन्नअभिन्न १५सं· भानुप्रतापधर्मात्माज्ञानीसोसापतेंराक्षसभयोयामेंक्याहेतु। जीवकेप्रारब्धकर्ममुख्यहैं प्र· तुलसीजसभवितव्यताइत्यादि १६सं· रावनकेबरदानमोंवानरमनुजदुईऔरमरोएकमनुजराघवहाथसिधूसरबरकाक्याहेतु उ· रावनबधमोंरामजू प्र· आपनबधमानवकरबांचीहंसोरावनबधमोंएसोऊभिन्नभिन्नकारनहैं १७सं· जन्मएकदुइएतीनकल्पकीकथापरलेशिवजूकहेचतुर्थकल्पकेप्रसंगमोंमनुप्रकरणतेंआकासबानीसकोहेकश्यपअदितिमहातपकीन्हापुनःनारदबचनसत्यसबकरिहौंयहपूर्बकल्पकीकथाइहांकहांतेआईउ· ——भेदसेइहांव्यवस्थाहै प्र· कल्पभेदहरिचरितसुहाएभांतिअनेकमुनीसनगाए। इत्यादि १८सं· श्रीरामादिचारोंभाइनकेनामकरनमोंक्रमभंगहैउ· इहांपाठक्रमतेंअर्थक्रमबलीहैवारामतापनीमांडूक्योपनिषद्मोंक्रमबिपर्ययहैवालछमनकेबिशेषगुनकहनेथेयातेंभरतकेसमीपनहिलिखेनहींशत्रुघनकीअपेक्षासेलिखे १९सं· माताकोपहलेअलौकिकबिबेकदियेरहेअबसोभूलीएबिश्वरूपदिखाएयामेंक्याहेतु। उ· बात्सल्यकीअधिकतासेमाताभूलीप्रभुबिश्वरूपदिखाइकैपूर्वबिबेकदृढकराइन्ह २०सं· बिश्वामित्रपहलेहीजानतरहेतो

निगनाथचीन्हेयहकैसेबने उ॰ राहमेंरिषिबालबिनोददेखिभलेतड़काबध
पुनः ईश्वरजाने प्र॰ गीतावली प्र गटचरितसुहायेइत्यादि २१ सं॰ रिषिदोउ
कायतरत्याहेतुल्यायेराजाज्ञाबिनामिथिलाकोक्योलेगये उ॰ अबमुनि
पिताहैं प्र॰ राजाबचनतुमममुनिपिताआननहिंकोई। २२ सं॰ मिथिलेशजू
यमहांबिश्वामित्रसेरामप्रतापजानेरहे तबसभामोंअनादरबचनसबकेसा
क्योंकहें उ॰ रामरूपमोहनींतिंजनकजूराघवकोऐश्वर्यभूलेयहांवात्सल्य
प्रधानहै २३ सं॰ सीयस्वयंबरदेखियजाई यहनाहींबनतजातेंसीयाजूस्वतंत्र
नाहींबरा उ॰ स्वयंबरदुइबिधिहै पनस्वयंबरद्रोपदीआदिकास्वतःस्वयंब
द्रोपदीदमयंतीआदि २४ सं॰ जनकबामदिशिसोहसुनैनाऔरस्मृतिमेंअस
कामोंदक्षिणदिशिपाइयतुहैसोक्याहेतु उ॰ बामकहीशिवशिवकहीकल्यान
र्यतेंकल्यानदिशिआवतहै वाजनककोबामपत्नीसुनैनासोहदिशि
णदिशिअथवाजनककहैंबामदिशाजेहिकेऐसासुनैना २५ सं॰ जबतेंराम
हकेघरआएतबतेंअयोध्यामोंसबआनंदबसेतो आगेक्याआनंदनहींहै
ह्लादिनीशक्तिसीताजूनेहितेआनंदपूर्णभयोयहभावहै॥ २६॥

इतिसंक्षेपतेंबालकांडसंकावली

अयोध्याकांडसंकावली सं॰ पूर्वबालकांडमेंहीश्रीगुरुपदरजतेंबिबेकनेत्र
बिमलकरे पुनः इहांनिजमनमुकरसुधारकाहेलिखे उ॰ भरतमहिमाबर्णनअ
गमजानिपुनः मननिर्मलकीन्ह प्र॰ भरतमहामहिमासुनियेजानहिंरामन
कैंबषानी। अयोध्याकांडमोंमुख्यभरतचरित्र प्र॰ भरतचरितकरिनेमतुल्सी
दिवामहाराजदशरथआदिसबकोमनोरथभंगइसकांडमोंबिचाररजतेंसो
मलदूरकीन्ह २७ सं॰ दशरथजूरामजूकोबिश्वामित्रसाथभेजेतबतनुत्या
नकेबनयात्रामोंकीन्हसोक्याहेतु उ॰ बिश्वामित्रकेसाथगएतहांबासिष्ठ
सतोसंदेहनासऔरमुनिसहायकऔरिषितनुमोंनृपनिजप्राणधारणकरि
बने प्र॰ तुमममुनिपिताआननहिंकोऊ पुनः सुतउरलाइमतकशरीरप्राणजनुभेटे
नमेंसबबिपरीतनेहितेंतनत्याग २८ सं॰ श्रीजानकीजूबनजातारामपथमोंसेवाक
कोबाहाओभयंकारसेवानलिखेसोक्याहेतु उ॰ पिताबचनमोंतात्पर्यअनपतिके
साथजानेकोहैवाथपनसेवाभीलिखे प्र॰ बटछायाबेदिकासुहाईइत्यादि २९ सं॰ रामज
कोकेबरदानतेंतापसबेषबिशेषउदासीहेतोधनुषबानधारतोरूपचढ़िमोमगपा

श्रोसपर

आदिकैसेबने उ· कैकेईकाबरदानब्याजभरिहैअवतारधरिस्वतंत्रलीलाकरिबोमुख्यप्र· रामजनमजगमंगलहेतूवामुनिव्रतऔस्वधर्महूनोनिबाहे ३० सं· प्रयागबासीभरतकीबड़ाईकरतेहैंरामगुनग्रामसुनिबोकैसे उ· निजबड़ाईसुनिमुख्यउपासकस्वामीकेगुनसमुझतहैंवाबेनोकेफलमोंहरिकथासेरामगुनग्रामसुननचले ३१ सं· भरद्वाजकेशिष्यपचासकआयेऔसबरामप्रेमीमुनिचारिबड़ेसंगदियेयामोंकाहेतु उ· सीतारामादिचारिबड़ेभावाचारसबतेंअधिकसदाचारवाचारबेदजथारथभागज्ञाता ३२ सं· श्रीराघवकाशिवपूजनअयोध्याऔलंकामोंलियेऔरमेंनाहींसोक्याहेतु उ· श्रीराघवकेकुलदेवराजूहैंऔरसंकटमोंआराध्यशंकरजूयामेंअनेकप्रमाणहैंप्रथममोंबालउत्तरमोंसंकटहैनहींआरण्यादिमेंसीताबिरहसोंरामजूबिकल ३३ सं· श्रीराघवकेवनयात्रामेंपगमेंछालानगायेभरतकेकहेसोक्याहेतु उ· रामबनगवनहर्षतेंऔबसंतरितुभरतकेयात्राग्रीष्ममेंऔरबिरहसंतपतें ३४ सं· भरद्वाजभरतकेपहुनाईमोंऐश्वर्यदिखायेसोक्याहेतु उ· भरतकेबैराग्यकीपरीक्षाअर्थसोपरीक्षायथारथभई प्र· मुनिआयसुषेलवार ३५ सं· भरद्वाजसेभरतकोभेंटगायेमहामुनिबाल्मीकसोंनाहींसोक्याहेतु उ· भरतजूबिरहीहैंरामदरसनमोंअनिवराहैभरद्वाजपहुनाईबतकराचितबिघ्नकौजानतेंकविभेंटनगाये ३६ निषादराजतोजमुनातीरहीसोंफिराभरतयात्रामोंदेषावतहैंकीयेपयसरितसमीपरघुबरपरनकुटीहैतोएकहूँतेजान्यो उ· निषादफिरतोबीचहीतेंयेबर्षभरकेभीतरकैकबारगयोवासेवकनद्वाराप्रतिदिनकीषबरलगायेरह्योरामजूकेभरतागमनकोपहिलेबिचारपुनःनिश्चयहैषलनकेबलहृदयषभारेलषेयामेंक्याहेतु उ· लछमनरामप्रेमांधहैंराघवकाकलेसनाहींसहसकतुप्र· मातुपितानहिंजानउँकाहू ।३७॥ ॥

॥ इतिअयोध्याकांडसंकावली ॥ अथआरण्यसंका ॥ लछमनजूप्रथमनिषादकोज्ञानबैराग्यभक्तिउपदेशकीन्हफिररामजूसेषट्प्रश्नकियेकोक्याहेतु उ· सबबातकेज्ञाताभीबड़ेनकोप्रश्नकरतेहैंवाआगेरघुपतिललितनरलीलाकरैंगेसबबातपूछराषेंतातेंमोहनहोय ३९ सं· सूपनखातोपरमसुंदरीबनकेआईलछमनजूरिपुभगनीकैसेजानी उ· अगस्तकेबचनसेंवासूपनषाकेबचनतें [illegible]

थिजेउँनाहींमिलानातेंअबलगिकुमारीरहीइत्यादिबचन ४० रामजूसूप
नखातेंलछमनकोकुँआरकहेएतोबिवाहेहैंउ· हास्यरसमैंबिवाहराजनी
तिआदिमों झूठकादोषनाहींकुमारअवस्था ४१ सं· कामलोभादिकोई
रीतसोंजीवसन्मुखजायईश्वरत्यागनहींकरततोसूपनखाकैसेकरित्या
गीबिरूपकरिउ· सीताबिरोधनीअतिदुष्टशत्रुभगनीरही ४२ सं· मारीच
तोकपटमृगरह्यताकोचर्मरामजूकैसेलाये उ· प्रभुसत्यसंकल्प हैं
तातैंमृगैतनुरह्या प्र॰ रामकारूचादैसोहोई ४३ सं· मृगछाला
येकीनाईयहकछुकाहूनलिषेसोक्याहेतुउ· जेहिप्रियाकेअर्थचर्म
लायेसोचोरीगईतातेंकबिचर्मग्रंथमेंप्रगटनकहेअवसरपाइकहेप्र॰
तापररुचिरमृदुलमृगछाला ४४ सं· रावनतोमनमेंहनुमानकोरुगी
धराजसुनतधायोयहकैसेबने।उ· सुनतपरमेंरावनकछुकटुबचन
कहेयहजानव ४५ सं· रामजूगीधराजसोंकहेकिसीताहरनपितासो
नकहनाजोमैंरामतोकुलसहितरावनकहैगोयामैंक्याहेतुउ· सीताहरन
सोंपिताकेस्वर्गमैंअतिदुषहोइगोरावनतोमेरेमरकहैगोतातेंसीताप्राप्ति
शत्रुबधआदिसेंअतिसुषहोइगो ४६ सं· सेवरीकोरामजूनवधाभक्ति
कहेसोभागवतआदिग्रंथसेबिरुद्धहैंउ· यहग्रंथनानापुराणागम
निगमहै॥ ४७॥ इतिआरण्यसंका ॥ अथकिष्किंधासंका॥ ॥
हनूमानबिप्ररूपधरिदुन्नौकोरामकौमाथनायोसोक्याहेतुउ· रामनेज
नसहितकेवानेत्रमुखद्वाराकपटलषिपरैगोतातेंमाथनीचेकीन्ह ४ सं·
लछमनसेदूनाप्रियहनूमानकोकाहेकहेउ· लोकरीतिसोंकिहमारेप्राणहूतें
तुमअधिककहौंवाकपिकेवलदुषमेंसहायकहैलषनसुषदुषमेंबाल
करामकेसेवकहैंएदूनौंकेसेवककवालषनद्वाराप्रियाबियोगइनद्वाराप्रा
प्तिसं· महाबीरनेएप्रभुकैसेपहिचानेउ· उदशरथकेजायेइत्यादिबचननेंए
बेईपंतितहैं ॥५०॥ सं· राघवअरुसुग्रीवअग्नेनकरेवछाइकैपावककेसाषी
कयौंसोउ· मित्रताबचनद्वाराबागेंद्रियकोदेवताअग्निवाअद्भुताओसपथअ
रुसाक्षीयोंअग्निमुख्यप्र॰ तौरुशत्रुसबकैगतिजाना ५१ सं· राघवएकरूप
कोमानलेकहेनिजोमें पशुओमालामेलीलाबमैंक्याहेतुउ· नसाध्यमोंसबबनतैं

५२सं॰ रामजूप्रथमबालीबधकी एकबानसे प्रतिज्ञाकीन्हफेरदूसरबानचढ़एसोक्याहेतु।उ॰ बानरराजबालीतेहिके सहायकनिवारणार्थबाणकीअमोघतारामसंकल्पकेअधीन ५३सं॰ रामजूसरतानिबालिकेहृदयमर्मस्थानमोंमारेउजलहीनमस्यौसोक्याहेतु उ॰ रामरूपदर्शनवोसंभाषणअंगदसौंपवनआदिहेतुरामइच्छा ५४सं॰ जेहिसांयकतेंमैंबालीमारातेहिबानतेंकाहूमूढ़कोंहतौंयामेंसत्यप्रतिज्ञाओसरनागतपालत्वकौसंबंधे उ॰ वोहीदिनसुग्रीवआयमिले ५५सं॰ औरऐसामोंछोटेबानरसानसमुद्रपारगएदच्छिनमेंसबसुभटनहांनिजनिजबलसबकहेअंगदआदिमोंसंसयवानसोक्याहेतु उ॰ अतिबलीरावनकोभयवागुप्तमुद्रिकादेनआदिहनूमानकोजानतहैं॥ ॥

॥ ॥इतिकिष्किंधाशंकावली॥ ॥ अथसुंदर॥

महाबीरअसोकबाटिकामेंसीतारहतसंपातीसेसुनारहामहलमेंखोजेकाहेगये उ॰ असोकबाटिकारहनीनहांजानीयातेंआगेबिभीषनकहेंगे ५७सं॰ महाबीरकेलंकाजातपुर्बाधकनमिलेतीनस्त्रीएमिलीसोक्याहेतु उ॰ भवसागरकेपारजातमुमुक्षुकेतीनोंलोककेस्त्रीबाधकस्वर्गकीसुरसापातालबासनीसिंहिकामृत्युलोककीलंकिनी ५८सं॰ गएउदसाननमंदिरमाहींकुम्भानाकेएकएकसिरयाकेदसक्योंभए उ॰ ब्रह्माबिचारकीन्हबिद्या १४ हमारेमुखचारदसाबिद्याकेअर्थदसाननकीन्हयहभावमुरारीनाटकमेंवापरमार्थरामायनमेंरावनमोहरूपहैदशइंद्रियआननहैं ५९सं॰ रामलछमनतोराक्षसीमायातेंबनगयेऔरमायातेंअसरनिनहिंजाययहकैसे उ॰ मुंदरीमोंरामनामहैनामदूनोंब्रह्मतेंबड़ाहै ६०सं॰ सुग्रीवकोबालिबधकरिराजदीन्हऔरबिभीषनकोरावनजीवततिलकसारेयामेंक्याहेतु उ॰ सीताजीकेधैर्यअर्थवाजीवतशवसमचौदहप्रानीवानिशिचरहीनकरौंमहयहप्रतिज्ञासें ६१ समुद्ररामदूतकेतौमैनाकद्वारासेवाकीन्हऔररामकेतीनदिनबीतेनआयोनसेवायामेंक्याहेतु उ॰ दूतकापराक्रमदेखाऔररामकेनरनाट्यवचनतेंभ्रमभयोवासाठहजारउत्तरतटबासीआभीरोंकेबधमोंतात्पर्यहै ६२

इतिसुंदरकांडसंकावली ५ अथलंकाकांडसंका ॥

समुद्रकेएहिपारशंभुथापनामेंक्याहेतु उ॰ सर्वतीर्थमयसमुद्रऔअवबैकुंठमार्गगतद्विरेशजानकेवारावनशंभुभक्तहैशंभुकेएहिपारराखाजातेउसका।

पछनकों ६३ सं॰ पहिलेसेतुकेहेतुतीनकहेजलधि१ नलनील२ राघव३ सेतु
बांधेपर औरघुबीरप्रतापतें पाषानतरे सोक्याहेतु उ॰ औरउपायसाधारन
मुख्यहेतुसर्वशक्तियुत ईश्वर वा मारतलरत सुभट बिनय मालिकराजा ६४
सं॰ सेतुबांधकेफेर तीनमार्गकहेसोक्याहेतु उ॰ भवसागरपारकेतीनमार्गकर्म
ज्ञानउपासना ३ जलचरकर्मभा॰ आकासनिरालंबज्ञा॰ सेतुसमउपासना॰ सं॰ सुबे
लपररामजूकेसयनऔ सिथलताकहेऔ रावनके नृत्यादिऔराजश्री सोक्या
हेतु उ॰ राघवबिरहीबहराजश्रीयुत वा रामजूदैवीसंपतियुतशांत आसुरी
संपतवालोबहचंचल वारामकेरावनकुछमालनहीं जगमहैसबानिसावाछि
पारकौश्रीरामकहेसो चंद्रवर्णनऔ छत्रभंगसेस्पष्ट ६६ सं॰ फिरैरामसीता
मैंहारी सीताहारनेवारे ए कौन उ॰ रामनिंदासुनिरोषतेंसाहसवारामप्रताप
समुझके ६७ सं॰ लछमनके प्रथमशक्तिलगीनबबड़ोदुखबड़ोउपाय दूसरी
शक्तिमेंकछुनाहींयामें हेतु उ॰ प्रथममेंनरनाट्य दूसरमेंईश्वरता बालपनकी
भूलिऔदीनता यथासंख्य ६८ महाबीर रामकार्यकेअर्थऔषधीलेनेचले त
हांअनेकदुखपाए मरतबचेसोक्याहेतु उ॰ स्वामीकेआगेबलभाषिअभि
मानतेचले ६९ सं॰ मायासरमेंमकरीकहांरही उ॰ सरतोपूर्बकोरहोरचना
बिशेषमायातेंरही हेतुमूलमेंबापरदीन्ह प्र॰ सरमंदरबरबागबनावा ७०
सं॰ राघवलषनकोसहोदरकहेपुनः निजजननीएककुमारायहकैसे उ॰ सहो
दरप्रतापतें प्र॰ प्रभुप्रलापसुनिकानवाचरुतेंवा पितासंबंधतेंवा कौसल्या
उदरमेंलषनभी प्रथमरहे बलदेवकीनांई प्र॰ शेषउपनिषदएककुमाराएक
पदसेंमुख्य। ७१ सं॰ बिभीषनरामसरनभए परकुंभकरनकेपाइजाइपरेसो
क्याहेतु उ॰ भेदकारिमिलावैसोअर्थवानिजवर्णांतकरिशुद्धताअर्थ ७२ सं॰
पुनःहनूमानसुभटसिरोमनिसोमेघनादकेकोपकेमारे वाकोघावनसौं
मरैनलवफिरचलेऔकुंभकरनरावनएकमुष्टिकासेभूमिमेंगिरेयामें
क्याहेतु उ॰ एकैओरकोबिजैकहैतोरनशोभानहोय वा मेघनादकोउ
त्कर्षतेंलषनकेउत्कर्षमेंतात्पर्य ७३ सं॰ रावनकुंभकरनकोवनद्वारलं
कामेंपठायेऔमेघनादकोहनूमानलंकाद्वारपरधरिआए सोक्याहेतु उ॰ लषनके
मेघनादसमस्तकोटिजोधानउठाए औ मेघनादकौएकैदास हनूमान उठाय

लंकाद्वारपरधरेयहउत्कर्ष ७४ सं. बिज्ञानीबिभीषनसमरमोंबिकलहोइकै
रथकीइच्छाकरीसोकाहेतु उ. नरनाट्यदेषभलेरहेरामजूपरमारथउपदेशते
पुनःसावधानकीन्हजैसेअर्जुनप्रतिगीता। ७५ सं. शिवजूआराधेतें ८७
हजारबर्षसमाधमेंरहेहमहूंउमारनचरित्रदेखेयहकैसेबने उ. ईश्वरअनेक
रूपतेंसमर्थ ७६ सं. प्रतिज्ञातोप्रतिबिंबकैनाकोजारिवोकहेतोपतिव्रतकै
सेबने उ. सत्यसीताकेप्रगटेमोंतात्पर्यप्रतिबिंबकोबिंबमोंलय ७७ सं.
बिभीषनपुष्पककुबेरकोनदियेराघवकोदियेसोक्या। उ. बर्ष१४मेंयो
कहिनबाकीरहेभरतदेषवेकोअतिजलदीजानीपुनःराघवकुबेरकोदिये॥

॥इतिलंकासंकावली॥६॥ अथउत्तरसंकावली॥

पहलेमहाबीरकेबचनसुनिभरतबोलेलेसोंदूसरेबचनमेंबोलेसोक्या उ. दूसरेमें
बिशेषरिपुरनजीतसीताअनुजसहितप्रभुआवतपहलेमेंयहनाहीं ७९ सं. जिन्ह
कपिन्हकोनिजदेहगेहआदिसेंअधिकाप्रियकहेतेबिदाकियेजेसामान्यप्रिय
कहेतेरामजूसमीपराषेयहकैसे उ. नीतिबिचारतेंवाप्रीतिमुख्यचाहियेदूर
समीपब्योहारगौण ८० सं. दुईसुतसीताजायेपुनःदुईदुईसुतसबभ्रात
न्हकेरेऔररामजीकोनामलीन्हसोक्या उ. भरतादिकेपुत्रअयोध्यामों
भएतेहितेंपितानामतेंख्यातसीताकेपुत्रवाल्मीकआश्रममेंनैहरकेंपुत्र
कन्यानामसेफलानीकेबेटाभयोहैमुनिकेसीताजीमोंकन्याभावगीता
वलीमोंप्रसिद्ध ८१ सं. अंगदअनेकभांतिदीनताभाषेकृपालराघवपासें
नराषेसोक्याहेतु उ. राजगादीपरंपराइनकीभषनहोने ८२ सं. शंकरजूभुसुंडीसे
कथाप्रत्यक्षरूपतेंनसुनेमरालतनुसेसुनेंसोक्याहेतु उ. सबश्रोतामरालदेषे
वागुप्तरूपतेंकथास्वादअधिकवाशंकरभुसुंडीआचार्यहैंअगरमेंसंकोचवासत
असत्यकानिर्णयमरालसों ८३ सं. गरुड़जूभुसुंडीप्रतिकहेमहाप्रलयमोंभी
तुम्हारेनासनाहींसोकैसे उ. लोमसबरदानतें अ. कामरूपइच्छामरनइ
त्यादिकबहुकालतथापिहिनोहोयरहश्रीराघवबरदानवाउपासना
मतमोंभगवतभागवतादिसबनित्य ८४ सं. रामउदरमेंभुसुंडीकेअने
ककल्पबीतेबाहरदुइघरीसोक्या उ. रामप्रेरितयामेंसबबनतहै॥८५॥
सं. भुसुंडीकेमोहसेभरतादिअनेकरूपदेषेराघवएकैदूसरेंनोभ्राता

नित्यकौसलबनेंगे उ· कौतुकके भरतादिमोंनित्यत्वबिचारनाहीं
८८ सं· लोमसकेप्रकरणमेंबिनाअज्ञानद्वैतहोनेनाहीं·और शिवजूभुशुं
कोप्रमानद्वैतहीकाहेसोक्या उ· भक्तिरहितज्ञानकोअनादरभक्तिस
हितकोआदरदूनोंपक्षमोंयथासंख्य प्र· निजप्रभुमयदेखियजगत इत्या
दि ८१ सं· ज्ञानसिद्धभएपरग्रंथिखोलबलिखेवाकीकौनग्रंथिरही
उ· अभ्यासकोदृढनिवृत्तिमोंतात्पर्य ०० प्र· औरौएकगुप्तमत इत्यादि
८९ सं· पाछेकौनगुप्तमतकहेजाते इहांऔरौंगुप्तमतकहतहैं·और
ध्यजोरेमोंकाभाव अरुशंकरभक्तिसाधनऔररामभक्तिसाध्यकौ
कबारग्रंथकारलिखआए पुनः इहांकाहेलिखे उ· अद्वैतमतमों
ज्ञानबिनामोक्षनाहींयहसिद्धांतवाकोगौणकरिभक्तिसेंमोक्षऔरभ
क्तिकेअधीनज्ञानबिज्ञानयहगुप्तमतपाछेकहेबैठगुरुमुनिअरुद्वि
जसज्जनयाप्रमाणसेंसभामोंमुख्यगुरुतिन्हितेंकरजोरेवारामजूको
सीलहेतुवाधर्मकेअंगीकारनेकोतात्पर्यग्रंथकारवर्तमानसमयमोंपर
सारैवबेहभवनकामहाबिरोधबिचारकैपरमधामयात्राकेअंतसभा
मोंश्रीरामबचनद्वाराशंकरभक्तिमुख्यसाधनऔरश्रीरामभक्तिसाध्य
फलयहसिद्धांतकियेथाकोंकोईबिरलेजानतहैंतातेंगुप्तकहेवारीति
सेंकुछसंदेहनहीहै प्र· बहुतजन्मकेसुधिमोहिभाई इत्यादि ९० सं·
काजन्मांतरस्मृतिरहतीहै।पुराणनमेंनोइतिहासलिखाहै परंतुइतिहा
सनमेंतात्पर्यहैकाजोजलजलमेंमिलिवाथलकाओहीफिरआवेगा
एहीतेंजीवनमेंअनेकबारहैंकालभीएवाहै परंतुकेतनाबिलिनहीन
हैसोचारोंजुगनकीअवस्थामेंख्यातकथाचारोंजुगनमेंधर्मएवीवर्तेहैं
कुंडलिया प्रथमबालारणकेश्लोकहुबिधिबिधिहैगाइयुगइहसमस्म
लसुनसुनाएकैदरसाय·आयगनअंबानरखोएकैनवगनिगायदशा
फिरिसुन्यपरेखोडोलयंत्रश्रुतिबेदजुगकालजहिंअंतरघोलपिताम
हएकमेंकबहुयुगमन्वंतर १ आस्वामाजाकोपदकहै·अभुवारयुगनको
मेरुकावनरूपसेकोजगपगहावारकुमीहउढहेद १ सामयजुबरिण·और
अथर्वनएजुगवारेउवर २ वाबेदकोवारिदबहैसमुजनमिरहैंखैर

सतजुगअलादिकुंमुखचारौंबेदरहेंत्रेताद्वापरविद्युजीवअथानंरलहैं १ रुद्र
आपकलिहैकैचौदहभुवनरहैजीवलहाँबिश्रामनहूँ। असभावअहैं २
मुषतेंबिनुसाधनजेनिरमलज्ञानचहैंसोकलिकेरोषनकोनितमनलाइगहैं
गुणमेंकलिकोरूपलोकबिपरीतकहैंरवस्याबिनुकैसेकेऊगुनाहिंगहैं॥
अबवालियुगआवाघटघटपातकछावाकलिकोप्रथमचरनजिनिजानो।
द्वापरअघकोद्वैचरनबषानोप्रथमहिकोतिसरोकरमानोचौथोदंडबनाव
रुद्रपषंडअकर्मअराध्यापापचरनकोचौषलषायाचरणधरमकोएकाब
चायासोईबीजबनावा २ ज्ञानजोगजिवलेइपरानेधरमचारमकेरूपहैंराने
कलिकेउरसाधनथहरानेनामेंपारलगावा। ३। नामप्रतापसदोदितजागा
जाकेउरकलिकोतमभागाबाढ़तदेवचरनअनुरागाजाकोजसश्रुतिगावा।
४ बहुताजन्मइत्यादिलिखअगाजीवकेजन्मनाहींहोतऔरचारिअव।
स्थामेंजन्मरूपभेदपायाजातहैजैसेबालवृद्धइत्यादिकोईसिर्फलड़का
रहेहोइफेरदूसरीअवस्थामेंजोरहेगा। सोनपाहिचानेगा। औरजन्मसंस्का
रकानामहैऔचारौंजुगकाजोभेदकहतेहैंसोप्रमानतोसमानजानवयाही
तेंधर्मनमेंबिरुद्धभासतहैजैसेसामानऔविशेषसोसबमतनमेंसामान्यवि
सिद्धपायोजातहैऔबिसिषमेंअनेकबिरुद्धदेषोपरहेजैसेमांसभक्षणमेंबिं
ध्यकेदछिनबासीनकोआज्ञाउत्तरबासीपतितहोतहैंहननधातुतोजीवमेंच
रितार्थनहींहोतजैसेघटमठआकासकानासपावतहैयाहीतेंजीवव्यापकजा
नोजातहैऔरजन्मसूक्ष्मस्थूलशरीरकरकेभासतुहैंजैसेचौरासीलक्षयो
निजन्मपरमितकियोसोसंस्कारऔरकालकोधर्मनिकोमुख्यजानवोसा
मआयो दो॰ मानजुक्तमानससुषदसंकारहितउदार बोधरहतनिजमोह
बसशंकाकारतउदार १ मानसमानअनेकजुनमानीम्नगमनाहिंममसाह
ससंकावलीद्धमवसाधुमाहिमाँहिं २॥ ॥ ॥

इतिसप्तकांडसंकावलीसंक्षेपः

संबत१९२४कार्तिकाश्मा११बुधवार॥

अथकोशग्रंथः॥

श्रीगणेशायनमः श्लोकाबरेश्रीजानकीजानिंजगजन्मादिकारणं जाबालिपट्टजेतारंजागरूकजयावहं १ दो॰ कोसकरीसुवरनअसील सीकसीधीयानिरामायनरतनभूजसीभमरिजुसीसहिहानि॥ २॥

अनुग्रह	सदादया	अलौकिक	लोकमेंजैसा दूसरनाहीं॥
अरुण	लालरंगवासूर्यको सारथीवासूर्य।	अछत	रहते
अयन	घर	अनुसरहीअरु अनुहरतअविरोध।	अनुसार
अनुराग	प्रीतिवाअरुनललाई		
अमियमूरि	सजीवनजड़ी	अनहित	शत्रुवाबुरा
अकथ	जोकहिनजाय	अघ	पापवादुष

अनीक	सेनासमूह	अवध	अयोध्या
अरी	बैरी	अवध	हद्द वा करार
अवलीक·अपबाद	अपजस	अवतरेउ	अवतार लीन्ह
अनल	आगि	अनुगामी	आज्ञाकारी वा
अगुन	औगुनवान सवा		पीछे होय चले
	गुनहीन	असुर	दैत्य
अवगाह	अथाह वा·असनान	अतिसय	बहुत वा बड़ा
अमिय	अमृत	अनूपम	उपमारहित
अलछि	अलक्ष्मी	अनादि	जन्मेनाहीं
अवनीस औ अ	राजा	अनुभव	यथार्थज्ञान
अप अवनिप		अनामय	रोगबिना
अगम्य	शास्त्र वा जहाँ गमनाहीं	अनघ	पापबिना
अस	ऐसा	अगाध	अथाह
अभंग	नमिटै	अबिनासी	मरैनहीं
अनिल	पवन	अबिकारी	जन्मादि ६ बिकारबिना
अलंकृति	अलंकार	अनयास	बिनुजतन
अगरु	सुगंधी काठभेद	अमित	अंतनहीं
अहि	सांप	अमंगल	अशुभ
अनुरूप	अनु सारवालायक	अपत	पापी वा प्रतिष्ठाबिना
अनीह	चेष्टारहित वा तृष्णा	अजामिल	पापीब्राह्मणबिशेष
	बिनु वा ब्रह्म ॥	अभिमत	बांछित
अज	जन्मबिना वा ब्रह्मा	अमर्ष	क्रोध वा ईर्षा
	वा बकरा ॥	अघाती	तृप्ति वा घातबिनु
असमंजस	दुबिधा	अपडर	झूठडर वा निज
अनुहर	अनुसार वा लायक		औरदोभयं
अविवेक	अज्ञान	अधिकारी	अधिकारयोग्य
अनुकूल	प्रसन्न वा अनुसार	अरनी	आगमथने की लकड़ी

असुरसेन	गयातीर्थवादैत्यसेना	अवराधे	सेये
अदिति	देवमाता	अन्यथा	कूटवाऔरप्रकारसे
अतिथि	अभ्यागत	अकुल	कुलरहित
अबाधा	सांचवादुखबिनु	अवडेरि	त्यागि
अली	भौंरावासखी	अजर	बुढ़ौतीबिना
अवरेब	उलटिफेरजोरना	अबला	स्त्री
	वाकुपेच ॥	अयं	यह
अमराई	आमकाबागीचा	अकंटक	शत्रुबिना
अनुज	छोटाभाई	अनंगवाअतनु	शरीरबिनु
अगनित	गिनतीनहोय	अवतंस	माथेकाभूषन
अनुकथन	बारबारकहना	अनवद्य	दोषबिना
अद्भुत	अचरज	अशिव	अमंगल
अक्षयऔअखंड	नासनहोय	अनुसासन	आज्ञा
अपि	निश्चयवायहभी	अचल	पर्वतवास्थिर
अखिल	सकल	अरधंग	आधाशरीर
अकल	हाथपांवआदिअंगबिना	अहो	अचरजवाभाववा
			दुखवाहर्ष ॥
अभेद	भेदबिनावानटूटै		
	वाजीवब्रह्मका	अजिर	आंगन
अत	अतानी	असंमत	प्रतिकूल
अनुमान	विचारवाअनुसार	अहमिति	अहंकार
	वाप्रमानवाअंदाज	अधीस	स्वामी
अकथनीय	जोनकहाजाय	असंभावना	अनिश्चय
अहिवात	सुहाग	अतर्क्य	तर्किनजाइ
अप्रमान	प्रमानरहितवाप्रमा	असमसर	कामदेव
	नतेपरे ॥	अधर	होठवालघु
अकाम	कामनाहीन	अस्थिमाल	हाड़भरि
अनीस	जीव	अनन्य	जिनकेदूसरंभरोसनाहीं

अरेयं	जोनहिंरियाजाय	अचंचल	थिर
अमरावति	स्वर्ग	अवसान	नासवाअंत
अवनी	पृथिवी	अनुभवति	जानति
अनुसंधान	कामना	अवचक	औचक
असमय	बिपतसमैवाअनवसर	अहह	बड़ाकष्टहै
अहेर	सिकार	अलिनि	भौंरी
अकिंचन	कुछपासनहीं	अवरेखी	लिखी
असि	तरवारवाहिवाऐसी	अर्भक	बालक
असन	भोजन	अबुध	मूढ
अवशेषित	बाकीरहा	अकरन	बिनाप्रयोजन
अग	पर्वतआदि	अय	लोहा
अवगति	ज्ञान	अचगरी	रिंगी
असेस	संपूरन	अनुचर	दास
अदृश्य	छिपना	अनैसे	कुदृष्टिसैं
अभिजित	मुहूर्तविशेष	अज्ञान	बिनुजाने
अभिराम	सुंदरवासुघर	अपभय	निजओरसेंवानीचभय
अतीत	रहित	अलंकृत	भूषित
अहिराजा	शेषनाग	अकनि	सुनकै
अरुनारे	लाल	अपवर्ग	मोक्ष
अवारी	डुकानवापंगति	अपान	आपनवाअपनपो
अलीकाऔअ }	झूठ	अनुमानी	नैयायिक
नतऔअलीहा }		अटन	अटारीवाघूमना
अपर	और	अमानुष	मनुष्यतेंनहोय
अरुनसिखा }	मुरगा	अनु	आगेवापीछेवाथोड़ा
औअरुनचूड़ }		अभिषेक	जलछिड़कनावास्नान
अवसि	जरूर	अवसेरी	देरवाउत्कंठा
अग्र	आगेवामुख्य	अथाई	बैठक

अनमनि	उदास	अह	अहंकारवाकष्टवानि
अनुसारी	कहीवाअनुकूल	असहाई	सहायबिनु
अगाड़	आगे	अनत	औरजगह
अनहिवात	बिधवपन	अविचल }	थिर
अविद्या	अज्ञान	औअलोला }	
असाधि	जोदूरनहोय	अकाजेउ	मरन
अरंड	रैंडवृक्ष	अवकलित	निश्चित
अवढर	नीचीपरढरे	अरगाईऔ }	चुप वा अलग
आलान	गजबंधन	अरगानी ॥ }	
अनुरोध	रोक वा अनुसार	अनट	अन्याय
अविनय	ढिठाई	अवर्त	जलघूमर
अविरल	निरंतर	अपहरण	दूरकरंत
अविगत	व्यापक	अपनीभांति	निजओरसें
अध	आधा	अनुभाउ	महिमा
अकुलाना	बिकल	असनिकुंके	तरवारके
अगोचर	अविषय	अर्णव	समुद्र
अलखित	जोलखानजाय	अन्वरं	निरंतर
अनी	सेना वा समूह	अत्र	इसबिषै
अत्रिप्रिया	अनुसूया	अवघट	अड़बड़
अहेरी	सिकारी	अहिनी	नागनी
अनइस	बुरा	अकालके	रितुबिना
अघटित	अयोग्य वा अगम	अकसर	अकेल
अभिनंदन	सराहे	अवराधक	सेवक
अवास	मंदिर	अघात	चोट
अनुदिन	सदा	अर्क	मंदारवृक्ष
अजिन	मृगचर्म	अनपायनी	नासरहित
अतुलित	बड़े	अजित	जीतानजाय

अनिर्बाच्य	जोकहानजाय	अवलोकय	देषहु॰
अनुचरी	दासी	अभ्र	पूरण वा बद्दल
अमोघ	सफल	अनुजा	बहिनछोटी
अट्टहास	ठठायहँसना	अयुत	दसहजार
अवज्ञा	अपमान	अध	नीच वा तरें
अपेल	अचल	अहं	हम
अषारा	नाँच	अद्रि	पर्बत
अष्टादश	१८भारबनास्पती	अपहारी	नासकरैया
अक्षगो	दसेंद्रिय	अधिबास	निवास
असौच	अपवित्रता	अप्रतिहत वा }	रोकनाहीं
अकुंठ	नासरहित वा तीछन	अव्याहत }	
असनि	बज्र	अनुवाद	बेर बेर कहना
अनिप	सेनापति	अबाधी	सुषरूप
अवशेष	बाकी	अनुमोदन	प्रसंसा
अर्थी	दीन	अविच्छीन	निरंतर
अर्द्धजल	मरतीबार	अविद्यापंच	अबिद्यादिपंचक्लेस
अरुझि	लागत वा उरझत	शब्द	२६७
अभि	सबओरतें	आ॰	
अव्यक्त	प्रकृति वा ईश्वर वा गुप्त	आन	और वा सौगंद
अद्वैत	भेदरहित	आकर	खानि
अज	अजय	आखर	अछर
अनिरिता	निरजोग नाहीं	आगार औ आय }	घर
अनेक	बहुरूप	तन औ आलय }	
अरता	मूढ़ता	आदिकवि	बालमीकि
अभीष्ट	बांछित	आरत	दुखीजन
अभूतरिपु	शत्रुरहित	आमलक	आँवला
अभिअंतर	भीतरका	आतप	घाम

आरति	पीडावाअतिप्रीति	आव	आयुष्य
आयसु	आज्ञा	आचरहीं	करहीं
आसीन	बैठा	आसावसन	नंगावानग्नारहन
आराती	बैरी	आवरनी	करतूति
आसु	जलदी	आत्महन	आत्मघाती
आराम	सुखदातावाबाग	आसक्त	अतिलगन
आवलि	पंक्ति	आपन्न	बिपत्तिसहित
आनन	मुख	आभीर	गोपवाभील
आकृति	सूरत	आँक	निश्चय
आचरत	करतूतिवाआचार	आँकुरे	अंकुर
आरी	आहट	शब्द	४१
आयुध	शस्त्र	इ०	
आगर	मुख्यमुखजुवानीवाघर	इतिहास	महाभारतादि वापुरानीकथा
आयु	जीवन		
आगरी	कोठरी	इव	जैसें
आयत	बिसाल	इष्टदेव	पूज्यदेवता
आलबाल	थाँवला	इच्छित	बांछित
आगिल	होनहार	इदमित्थं	एकैहेतु
आर्य	ससुरवाश्रेष्ठ	इत	इधर
आवाहन	बुलावना	इतराई	ऐंठकेचलना
आतुर	जलदीवादुखी	इकअंग	एकपलरा
आश्रित	अवलंबलियें	इहं	यह
आश्रमी	ब्रह्मचारीआदि४	इह	इसलोकविषैं
आरूढ़	चढ़ना	इंदु	चंद्रमा
आकुल	बिकलवादुखी	इंदिरा	लक्ष्मी
आनवी	लेआवना	इंद्रजीत	मेघनाद
आशा	दिशावातृष्णा	इंद्री	नेत्रादि १०

इंद्रीद्वार	नेत्रादिकेगोलक	उपवन	क्रीड़ाबाग़
इंद्रजाल	बाजीगरी	उपवीत	जनेऊ
ईश	ईश्वरवाशिववाराजा	उकसहिं	ऊंचेहोंहिं
ईति	अतिवर्षादि६वा७	उदर	पेट
ईषना	बासना	उदासा	बेपरवाह
ईशान	ईश्वरवाशिव	उद्भव	उत्पति
ईंधन	लकड़ी	उत्कंठा	अभिलाष
शब्द	२१	उयेसु	उदय
उ.		उदघाटी	(कौघाटी प्रगटनावाउदयाचल
उर	हृदय	उदैगिरि	उदयाचल
उदासीन	शत्रुमित्रभावरहित	उलूक	घुघुआ
उभय औ उभौ	दुइ	उबारा	बचाया
उदधि	समुद्र	उघरे	खुले
उमा	पार्बती	उपहार	भेंटपूजा
उपासक	भक्त	उद्धार	उद्धार
उपाधी	समीप प्राप्ति वा }	उकठि	उकठाकाठ
	मायावा उपद्रव }	उपबर्हन औ }	तकिया
उजागर	प्रसिद्धवाउज्जल	उपधान ॥ }	
उपल	पत्थर	उपचार	उपाय
उडु	तारा	उद्बेग	क्षोभ
उतपात	उपद्रव	उपपातक	छोटेपाप
उपनिषद	वेदकारहस्यभाग	उदासी	सन्यासी
उचित	जोग्य	उचाड़	उच्चाटन
उत्सव	उछाह	उपाये	उत्पन्नकिये
उछंग	गोदी	उर्बिजा	सीताजू
उपवासा·उपासा	भूषारहना	उरगाद औ }	गरुड़
उबरे	बचे	उरगारी ॥ }	

उपराग	ग्रहण	शब्द	१
उतंग	ऊँचा	और	नौरी
उरग	साँप	ओस	भात
उपारे	उषारे	ओर	अंत वा तरफ़
उदार	दाता वा बड़ा	ओगनषांडे	पखवाज़
उत्कर्ष	बड़ाई	ओड़ियहि	आड़
उक्ति	बचन	ओधे	लगे
उपारी	उषाड़ना	ओघ	समूह
उग्र	भयानक	शब्द	१
उरु	आधिक	अं०	
उदक	जल	अंबा	आँबा
पराजा औ उपया	उपजाया	अंगवनि	सहना
जैनी	उज्जैन नगरी	अंतावरि	आंत समूह
पासन	भक्ति	अंगरी	नषतर
दरवृद्धि	जलोदर रोग	आँगि	आँजवै
ऊमरि	गूलर वृक्ष	अंजुली	अंजुरी
ऊँच	पर्वतादि वा उत्कृष्ट	अंकित	चिन्हजुत
ऊँना	कमती	अंग	शरीर वा प्रिय वा हाथ आदि वा राज्य के अंग
शब्द	६५		
ए०		अंब औ अंबा	माता
एक	एकै वा मुख्य वा अकेला	अंतरजामी	मन के जनैया
एकाकिरु	अकेला	अंतर	भेद वा भीतर
एवमस्तु	ऐसहिं होउ	अंतरधान औ अंतरहित	छिपना
एकरस	षट् विकार रहित		
एतादृश	ऐसा	अंबुधि	समुद्र
एकाकी	अकेला	अंक	अक्षर वा गोद वा चिन्ह वा अङ्कादि गनना कि
एक	एकार		

अंबक	आंषि
अंभोज	कमल
अंचल	आंचल
अंबु	जल
अंबरीष	राजाबिशेष
अंड	ब्रह्मांडवाअंडा
अंबुपति	बरुण
अंगदादि	अंगदआदिबानर
अंबर	बस्त्रवाआकाश
अंबुधर	बादर
अंडकटाह	ब्रह्मांड
शबशब्द	४२२
क	
करि	हाथी
कलिमल	कलियुगकेपातक
करुणा	दया
कर	कीरनिवाहाथवा सुंडवामहसूल
कवि	काव्यकर्त्ता
कलिमलसरिऔ कविनासा॥	कर्मनासा नदी
कलेस	दुषवाअविद्या दिपवाचंद्रमा
कवित	काव्य
कलकंठ	कोइल
कला	जलतरणादि६४वाअंश
कराल	कठोरवाभयंकर
कलेवर	शरीर
कलिकवि	कालदासादि
कलुष	पाप
कर्म्म	सुभासुभवाशरीर
कपि	बानर
कल	सुंदरवामीठा
कमठऔकच्छप	कछुवा
करतल	हाथमें
कहानी	कथा
कलि	कलिजुगवाकलह वाबहेड़ाकावृक्ष।
कटक	सेनावाकड़ा
कल्पतरु	कल्पवृक्ष
कनककशिपु	हिरण्याक्षदैत्य
कलप	ब्रह्माकादिनवाप्रलय वामनोरथवासमर्थ वाकल्पनावारचना
कपाल	षोपरी
कलहंस	राजहंस
करुनाकरनि	गुनकथनपूर्बककाबिलाप
कटि	कमर
कड़औकरुई	कड़ईबस्तु
करतारी	हाथकोतारी
कल्पित	झूठवाझूठतर्क
करन	इन्द्रियवाकानवासाधन वाकारणवाकर्ता
कश्यप	रिषिबिशेष

कमला	लछ्मी	कर्नधार	पतवारी
करखी	खैंचना	कलपना	तर्कवालालसावा }
कपिल	मुनिबिशेष		कष्टवा रचना }
कपोल	गाल	करारा	भयंकर वा तट
कलस	गगरी	कईकइ	कैकेई
कच	बार	कत	काहे
कपाट	किवाड़	कषाओ करष	ईरषावाबैर वा रिस
कलभ	हाथीकाबच्चा	कलंक	सिद्धपारा वा लांछन
कथनीय	कहैजोग्य	कलापि	रूहीतर्कना
कलित	पहेरे वा सुंदर वा रचित	कनकलोचन	हिरण्याक्षदैत्य
कमनीय	सुंदर	कसे	घिसे कसौटी पर
कढिहारु	मलाह	कज्जलगिरि	अंजनपर्बत
कलमले	चंचलभए	कपोत	कबूतर
कवल	गिरास	कबंध	दैत्यबिशेष वा धड़
कदली	केला	काति	कातिक
कटिसूत्र	करधनी	कपिकुंजर }	कपिश्रेष्ठ
कदंब	कदम्बवृक्ष वा समूह	औ कपिंद }	
कवरे	बिपरा	कनी औ कान	बूंद वा कनका
कद्रू	नागमाता	कपटभू	मायाभूमि
कबुली	कबूलकराई वा पक्षीभेद	करवाल	तरवार
करेनी	हथनी	करज	अंगुरी
करुन	करुना	कलबल	स्पष्टनाहीं
करक	पीड़ा	कराह	कराह
कलप	समूह	कलिल	पंक
करीला	वृक्षबिशेषपत्राहीन	कल्पित	मनभावन
कर्तव्यकरनीया	करैजोग्य	कल्लोलिनी	तरंगसैन
कवारु	कुंवर	कृतकृत्य	कृतार्थ

कृपिन	सूम	कारक	करैया
कृष	दूबर	कानन	बन
कृशानु	आगी	कारनकरन	महत्तत्वादिकेकारन
कृषी	षेती	काढ़ि	बनाये
कृमि	किरीना	काली	काल्हवास्याम
कृतांत	यम	काकपक्ष	पट्टा
कृपान	तरवार	काषासोनी	दूनोंकंधापरकांधलेकी
कृतनिंस्क	कृतघ्न	कारि	काली
कृत	कियावाकर्म,कर्तृनि	कालराति	प्रलयकीराति
कृतज्ञ	उपकारमानैवाला	काकू	व्यंगबचन
शब्द	१०३	कार्मुक	धनुष
का·		कारज	पंचभूतादि
काक	कौआ	कांधी	मानिकै (राईका
काल	समयवामौतवा यमवास्यामरंगवानेम	कांजी	सिरकावाषट्टापानी
		शब्द	२६
कारन	प्रयोजनवापितावा निमित्तवाप्रकृतिआद	कि·	
		किरीट	मुकटभेद
काम	कामनावाकामदेव वाविषय,धंधा,सुंदर	किसु	किसुका
		किमपि	कुछहूं
कालकूट	बिष	किसोर	अवस्थाभेद
कामना	बासना	किरातिनि	भीलनी
कामदुगई	कामधेनु	किसलय	नयेपत्ता
कामद	मनोरथदाता	किलकिला	बानरशब्द
काऊ	कबहूं	किन	घाव
कालिका	देवी	किरिच	टुकड़ा
कानी	मर्यादावासंकोच	कियन्त	व्यौहार१यज्ञादि२ प्रीति३भक्ति४॥
कामरूप	इछाचारीरूप कामरू		

रूप

किंनर	देवजाति	कुसकेतु	जनकके भाई
किंकर	दास	कुबिहग	बाज़
किंकरी	दासी	कुलह	टोपी
किंकिनी	तरागड़ी	कुमुद	कोंईवाजानरबिशेष
किंवा	अथवा	कुशली	सुषी
किंसुक	पलास	कुरुचि	नीचबासना
कीरति	जस	कुचाह	बुरीषबर
कील	षिरवा	कुटिलरानि	कैकेई
कीर	सुग्गा	कुराई	पाँवपाँसनेकाबिल
कीर्ती	कीरति	कुधीर	कुधी
शब्द	२०	कुजोगी	बिषई
कु॰		कुरी	पक्षीकुंजनामपक्षि
कुधातु	लोहा		मर्मेंप्रसिद्ध ॥
कुतरक	नीचबिचार	कुदृष्टि	पापदृष्टि
कुल	बंसवासमूहवाघर	कुवलय	कमल
कुलि	सब	कुठाहर	नीचजगह
कुसल	चतुरवाकल्यान	कुरी	सबजाति
कुमारी	कन्यावाबिनव्याही	कु	भूमिवानीच
कुरंग	हरिन	कुँवर	राजकुमार
कुसमउ	(दिन अनवसरवाअभागी	कुंत	भाला
कुसमित	प्रफुलित	कुंभ	घड़ावाहाथीकामाँथा
कुम्हड़	कौंहड़ाफल	कुंकुम	केसर
कुमार	बालकवाबिनव्याहा	कुंद	फूलबिशेष
कुलिस	बज्रवाहीरा	कुंभज	अगस्तऋषि
कुपथ	कुपथ्यवानीचमग	कुंचित	घुंघुरो
कुठारी	टाँगी	कुंजर	हाथी
कुमुदबंधु	चंद्रमा	कुंठित	धाररहित

कूजहिं	बोलहिं	कोह	क्रोध
		कोसल	देश
कूलद्रुम	नदीतटवृक्ष	कोका	चकई चकवा कोपुरुष वा स्त्री॥
कूरी	ब्यंगबचन		
कूल	किनारा	कोल	सूअर
कूप	कूआ	कोसलपुरी	अयोध्या
क्रूर	कठोर वा कपटी टेढ़ा	औ कोसला	
कूट	पर्वतशिखरवा निहाय	कोरी	करोर
कूँड़ि	लोहेकी टोपी	कोदंड	धनुष
शब्द	४६	कोही	क्रोधी
को०		कोरि	खोदकै
केतु	नीचग्रहवा ध्वजा	कोपर	पात्रविशेष
केसरी	सिंहवाहनमानकेपित	कोहबर	कौतुकघर
केहरी	सिंह	कोहाव	रूठना
केकी	मोर	कोया	कोना
केवट	मल्लाह	कोस	कमलका मध्यवा घरवा खजाना॥
केलि	क्रीड़ा		
केर	का	कोद्व	कोदोंअन्न
कैटभ	दैत्यविशेष	कोपी	कोईभी वा क्रोधी
कैवल्य	मोक्ष	कोछ	गोदी
कैकय	राजा वा देश	कोटर	खोदरा
कैरव	कोंई	कौल	बाममार्गी
शब्द	१२	कौतूहल	कौतुक
को०		कौशिक	बिश्वामित्र
कोबिद	पंडित	कौमुदी	चाँदनी
कोटि	करोरवापक्षसाधनुषका गोसा	कौ	पृथवीमें

कौतुक	नमासा वा ऽनयास
शब्द	२७
कं०	
कंज	कमल
कंचन	सोना
कंप	काँपना
कंत	पति
कंदरा	गुफा
कंधरा	गला
कंद	कमलादिकी जड़ वा मेघ
कंबु कं ध	शंख कांधा वा मोटीडार
कंदुक	गेंद
कंबल	पसमीना को
कंकन	कड़ा वा कंगना
कंटक	काँटा वा शत्रु
कंक	कुही
कंपति	समुद्र
कंडू	खुजली
शब्द	२६
सबशब्द	२५३
ष०	
षल	दुष्ट वा षरल
षग	पक्षी
षर	राक्षस दूषन का भाई वा तीक्ष्ण. गधा. तृन
षराई	थिर रहना

षरभर औ षभारू	छोभ
षट्	६ की गिनती
षचित औ षची	जड़ाऊ
षसी	गिरी
षर्ब	छोटा वा तुच्छ
षस	नीचजाति नैपाल मैं प्रसिद्ध ॥
षगहा	गैंडा
षरो	तृन
षनि	षोरकैं
षद्योत	जुगुनु
षप्पर	षोपरी
षगेस वा षगकेतु	गरुड़
षलु	निश्चय
षर्पर	पीढ वा शिर
षसेड़	गिरेउ
षड्ग	तलवार
षरी	गधी
शब्द	२४
षा०	
षानि	षानि वा घर
षानिक	षानि मैं भए
षालि	नीचे गड़ा
षांगे	कमती
शब्द	४
षि०	
षिन्न	दुषी

षीस	नास
षीन	दूबर
शब्द	३
षे.	
षेर	दुष
षेत	छेत्रवासमरभूमिवाअन्नबोनेका
षेलवार	षेलाड़ी
षरे	षुरा
शब्द	४
षो.	
षोरी	रोषवागलीवाचंदनादिखौर।
षोह	गुफा
षोरे	लंगड़े
षोई	नासवात्याग
षोड़स	सोलह
शब्द	५
षं.	
षंड	टुकड़ा
षंजन	षंडरिच
शब्द	२
सबशब्द	४२
ग.	
गन	शिवकेप्रमथादिवाविघ्नकेबासमूह
गहन	बिकटथाबनवापकड़ना

गति	मुक्तिवारस्तावाचलनावास्वरूपवाज्ञानवाआधारवादशावाउपाय॥
गत	प्राप्तवागयावाज्ञातवानिकृष्टवाबिनावाअप्रिय॥
गरल	बिष
गनि	बिचारकेवागनिके
गवासा	कसाई
गगन	आकास
गई	प्रतिष्ठादि
गजाननऔगनराउ औगनराज	गनेशजी
गनिका	बेश्या
गनी	धनीवाबिचारवागिन(ती
गद्दार	बोलिनजाइ
गजऔगयऔगयंद।	हाथी
गहरु	देरु
गहगहे	बजेवानगाराकेशब्दकेनकल।
गलित	नास
गभुवारे	बालककेनएबार
गम्य	जानेयोग्य
गवहिँ	गौंसैं
गहना	गहबाई

गणिक	ज्योतिषि
गर्बित	मानजुत
गह्बर	सघनवाससोच.
गनेस	आरंभवारस
गनै	गिनतांके
गमु	गमन
गर्द	धूरि
गथ्य	दाम
गरह	गँठियाबात
ग्रह	सूर्यादि ९
ग्रहै	संघेवाग्रहणकरै
ग्रहदसा	सनीचरी
गरहीत	पकड़ा
गरही	गरहस्थ
गरहारि	घरआरि
	४०
शब्द गा०	
गाहाऔगाथा	कथा
गाडुर	चमगिदरा
गाना	कथन
गाथ	शरीर वा अंग
गाढ़ा	कठिन वा दृढ़
गाधि	राजाबिशेष
गालबजाइ	बकबादकरि
गाद्दो	गूँदे
गाल	बतूनी
गाजन	नासकरता

गाबव	रिषिबिशेष.
गाइगोठ	गोसाला
गामी	चलैया
गाड़	गड़हा
गारुड़ी	बिषहरैया
गाँडर	घासबिशेषषसकाभेद
ग्राही	संग्रही
ग्राँम	गँवार वा गाँउ वा समूह
	२९
शब्द गि०	
गिरि	पर्बत
गिरा	सरस्वती वा कबित्त ई वा बचन ॥
गिरिजा	पार्बती
गिरिनाथ	महादेव
गिरीश	हिमाचल वा शिव वा बड़ा
गिलई हि	लीलजाइ
गिरिराजऔगिरिं	सुमेरु
गीध	जटायु
ग्रीवा	गला
ग्रीषम	गरमी की रितु
	११
शब्द गु०	
गुनि	बिचारकै वा गुनबान
गुसाँई	स्वामी वा सन्यासी
गुहा	गुफा वा निसार

गुरु	उपदेशकरैया वा बृह	गोलक	चक्षुइंद्रियकास्थान
	स्पति वा बड़े वा भारी	गोदावरी	नदीविशेष
गुन	ज्ञानादिवा डोरा वा	गोबिंद	बेदलभ्य
	सत्वरजतम ॥	गौर	गोरारंग
गुदरत	जनावत	गौरीश	शिव
गुरुजन	बड़ेलोग	गौतम	रिषिविशेष
गुहारी	रक्षक	गौतमनारि	अहिल्या
गुनिय	बिचारिय	गौतमशाप	सहस्रभगहोइके
गुनज्ञ	गुनज्ञता		हजारनेत्र ॥
गुनहु	अपराधवा बिचारहु	गौरव	बड़ाई
गुंजा	घूँघची	गौन	गमन
गूढ़	गुप्त	शब्द	२६
शब्द	१३	गं॰	
गे॰		गंभीर	गहरा
गे	गये	गंजन औ गंजा	नास
गेह	घर	ग्रंथ	पुस्तक
गेरु	गेरू	ग्रंथि	गाँठ
शब्द	३	शब्द	५
गो॰		सबशब्द	२०७
गोई	छिपी	घ॰	
गोपद	गैयाकेखुर	घट	गगरी वा हृदय
गोप्य	गुप्तवस्तु	घन	मूरति वा बादर वा
गो	गैयावा बैलवा पृथ्वी		सघनवा लोहे का
	वा इंद्री वा प्रान ॥	घवरि	गुच्छ
गोए	छिपाए	घरनी	स्त्री
गोचर	विषय	घटि	घटियावा कमती
		घटिहि	करहि

घटज	अगस्त्य	चउंजुग	सतजुग १ त्रेता २ द्वा
घटा	समूह		पर ३ कलियुग ४।
घटे	करब	चष	आंखि
घमोई	भड़भांड़ वांसजैसापेड़	चराचर	चल अचल
घृत	घीव	चतुरंग	हाथीघोड़ारथप्यादा
शब्द	२१	चपरि	तुरत
घा॰		चकवा औचकवै	चक्रवर्ती राजा
घालक	नासकरैया	चरु	खीर
घाला	नास	चतुरानन	ब्रह्मा
घाउ	चोटवाघाव	चपल	चंचल
घात	दावपेचवाघावचोट	चकित	अचरजजुत
घातनी	नासकरनेवाली	चरम	बाघंबरादिवाअंतकाल
घाली	डारि	चवँई	वहै
घालि	अस्त्रमारि	चरफराहिं	हेहडोलत
घ्रान	नाक	चरनपीठ	खड़ाऊं
शब्द	८	चक्र	सुदर्शन वा पहिया
घु॰		शब्द	१८
घुम्मरहिं	नगारे की आवा ज की नकल ॥	चा॰	
		चारु	सुंदर
घुनाच्छर	घुनकृतअक्षरलक ड़ीमोंआपुकरअक्षर हुहै	चाप	धनुष वा दबना
		चाही	देखना वा चाह
घूर्मित	घूमके	चारखानि	अंडज १ पिंडज २ स्वेदज ३ उद्भिज ४
शब्द	३		
सबशब्द	२२	चारी	चारिवाचलैया
च॰		चौमर	चमर
चरित	चरित्र	चार	दूत वा चुगल
चर	भक्षणवाचलनवादूत	चाका	पहिया

चामुंडा	योगनीभेद	चुनौती	तलाक वा रुखी
चारिपद	सत्य सौच २ दान ३ दया ४	चुंबन	छुवन
चापन	पगचंपी वा दबावना	चूड़ामनि	चोटीकीमनि
चाहि	देषकै वा उसकी ओरसै	चूड़ाकरण	मुंडन
चाउ	चोर वा चाह	शब्द	४०
चाष	नीलकंठपंछी	चे०	
चारिअवस्था	जाग्रत स्वप्न २ }	चेरा	चाकर वा दास
	सुषुप्ति ३ तुरीया ४ }	चेरी	दासी
चालनि	डुलावति	चेना	चित
चारभांति	भक्षभोज्यलेस्यचोस्य	शब्द	३
चाँपी	दबाई	चो०	
चाँकी	रासिको गोड़देना	चोषा	अच्छावस्तु वा जलदी
शब्द	२९	चोप	उछाह
चि०		चोरनारि	परावस्त्री
चित	चेतना वा ज्ञान वा मन	चौथपन	बुढ़ौती
चितव	देषना	चौहट	चौराहा
चितेरा	चित्रकार	चौतनी	चारिगोसाटोपी
चिराना	पुराना	शब्द	६
चित्रकेतु	राजाबिशेष	चं०	
चिबुक	ढोड़ी	चंद्रमौलि	शिवजू
चितचेता	सावधान	चंद्रनिशो }	चांदिनी
चिरजीवी	मार्कंडेयऋषि	चंद्रिका }	
चिदाकाश	चैतन्य आकास परमात्मा	चंग	गुड्डी
चिंतामनि	मनिबिशेष	चंचरीक	भ्रमर
चीर	चीरना वा वस्त्र	चंड	तेजस्वी
शब्द	११	चंद्रमामुनि	निशाकरनाम
चु०		चंद्रहास	तलवार

शब्द	८	छि०	
सबशब्द	६९	छिती	पृथवी
छ०		छिद्र	छेद
छवि	शोभा	छीनै	काटै
छत	फोड़ावाघाव	छीजहिँ	घटहिँ
छमि	छमाकारि	छीना	रहितवादूबर
छई	रोगविशेष	छीर	दूध
छमा	पृथिवीवासहना	शब्द	६
छहै	छह	छु०	
छत्रबंधु	छत्रीजातिमैंनीच	छुधित	भूषा
छत्रक	भुईफोड़	छुरे	चित्रित
छति	हानि	छुद्र	छोयवातुछ
छरे	छटे	छूछे	षाली
छबीले	सुंदर	शब्द	४
छत्र	छपाँ	छे०	
छरस	मधुरआदिछ	छेमकरी	पछीविशेष
शब्द	१३	छेत्र	छेत्रभूमि
छा०		छेकी	रोकी
छाछी	मठा	छेका	घेरा
छाला	चरम	छेमा	सुष
छारा	राष	छेल	बाँके
छाया	छांहवाअंश	शब्द	६
छाके	मतवारे	छो०	
छाजा	सोहत	छोनिप	राजा
छाड़ा	राषवात्याग	छोभा	मनथिरनाहीं
छाँह	परिछाहीं	शब्द	२
शब्द	८	छं०	

छंद	गायत्री आदि वा रचना वा स्वतंत्र	जथातिथि	पहले जैसे
		जथोचित	जथाजोग
पाद	१	जल्पहिं	कहहिं
सबशब्द	४०	जलंधर	दैत्य बिशेष
ज०		जठर	पेट
जन	भक्तलोग वा साधान्यलोग वा दास	जमुन	जमुना
		जती	सन्यासी
जथा	जैसे	जक्षपति	कुबेर
जनित	पैदा भया	जग	जंगम वा संसार
जनि	नहीं	जयति	जय होय
जलचर	मछरी आदि	जठर	बूढ़े
जनक	पिता वा राजा	जज्ञउपवीत	जनेऊ
जलधि	समुद्र	जनेत	बरात
जगदीस	ईश्वर वा राजा	जटित	जड़ाऊ
जलद औ जलधर	बादर	जगति	पृथिवी
जत	जेतिक वा जतन	जनेस	राजा
जड़	मूरख वा पर्बतादि	जरि	मूल
जलजात औ जलज औ जलरुह	कवल	जठेरी	बड़ी बूढ़ी
		जर	जुर
जसोमति	जसोदा	जयंत	इंद्रपुत्र
जलजान	जहाज वा नाव	जजाति	राजा बिशेष
जस	जैसा वा कीर्ति	जयेऊ	जीतेऊ
जलबिहंग	जलपक्षी	जलासय	तलाव
जम	जमराज वा अहिंसादि ५	जमीसे	संजमी जैसे
जलमल	फेन आदि	जनेषु	मनुष्यन बिषैं
जटिल	जटाधारी	जलअलि	जलभौंरा
जगदंबा	जगत माता	जलकुक्कुट	जलमुरगा

जलरासी	समुद्र	जागी	जाहिर
जनकौरा	जनकऔजनकसंबंधी	जानु	घुटना
जगजोनी	ब्रह्मा	जाम	पहर
जतन	रक्षावाउपाय	जामाता	दमाद
जपंति	जपतेहैं	जावक	महावर
जवकर	जौका	जामिनि	राति
जल्पसि	बकहिं	जातना	पीड़ा
जल्पक	बोलनेवाला	जाप	वृथा
जल्पत	बकत	जामिक	पाहरू
जर्जर	चीरफारे	जाबाली	रिषिविशेष
जपामि	जपताहौं	जातरूप	सोना
जहि	जेहि वा त्याग	जानपनी	स्वरूपज्ञान
जनयित्री	जननी	जाचत	मांगत
जवनिका	कनात	जारा	समूह वा जराया
शब्द	६४	ज्याये	पाले
जा॰		ज्यौंचा	मांगा
जाल	समूहवाझरोखा वा फंदा ॥	शब्द	२६
		जि॰	
जान	ज्ञानवाजीवअसवारी		
जानि	ज्ञानीवास्त्री	जिमि	जैसें
जापक	जपकरैया	जिनस	जाति
जाग	जग्य	जियाये	पाले
जाई	पैदाभई वा बेटी	जीवन	आजीवका वा जीवना वा जल।
जाया	स्त्रीवाउत्पन्न		
जाचक	मंगन	जीह	जीभ
		जीव	सदाजीवरु वा जीवात्मा।
जातुधान	राक्षस	शब्द	६
जातकर्म	बालकके जन्मसमय के नांदीमुखश्राद्धादि		

जुग	दुईवासतजुगादि४
जुगल	दुइ
जुवा	जवान
जुड़ाने	सीतलभए
जुझाये	लड़वैया
जुवार	जुवारी
जुवती	जवानस्त्री
जुवान	जवानपुरुष
जुवराज	नाइब
जुटत	लड़त
जुगविधि	सीतउष्नजुर
जूरी	समूहवाजोरिके
जूह	समूह
जूथप	सेनापति
जूझ	लराई
जूथ	समूह
जून	पुराना
शब्द	११
जे·	
जेंई	भोजनकिया
शब्द	१
जो·	
जोती	प्रकासवासूर्य
जोनी	कारनवाजाति
जोग	अष्टांगवाजोग्यवा। मिलापवासंबंध।
जोड़	देखना
जोषिता	स्त्री
जोजन	चारकोस
जोड़ा	जोड़ी
जोहारे	सलाम
जोगवत	परिषत
जोवा	देखा
जोई	देखी
जोही	देखीवाषोजिकै
शब्द	१२
जं·	
जंगम	चलैवाला
जंतु	छुद्रजीव
जंबू	जामुन
जंत्री	बसकरी
जंत्रित	तालेसेबंद
जंबुक	सियार
शब्द	६
सबशब्द	१३२
झ·	
झषकेतु	कामदेव
झगुलिया	चोलना
झटति	जलदी
झँई	घुमरी
शब्द	५
झा·	
झारी	समूह
झांषा	झंषना

झाँई	परिछाँई	ठट्ठा	समूह
शब्द	३	शब्द	५
झो॰		ठा.	
झोटिंग	प्रेतभेद	ठाना	निश्चय वा किया
झोंटी	चोटी.	ठानी	करी
झपेउ	ढंपा	ठाहरु	जगह
शब्द	३	ठाठ	समूह वा रचना
सबशब्द	१०	ठाँउ	घर
ट.		शब्द	५
टकोर	धुनि	ठि.	
शब्द	१	ठिका	निश्चय
टा.		शब्द	२
टाँकी	लोहे की प्रसिद्ध	सबश.	११
शब्द	१	ड.	
टे		डहकि	ठगना
टेकी	लगकै वा निश्चय युन वा याणी	डगै	चलना
		डसि	काटि (बिशेष
टेक	बिश्वास वा अवलंब	डमरुवा	घुटना की गांठ का रोग
टेर	पुकारे	शब्द	४
टेइ	निषीकारी	डा.	
शब्द	४	डाबर	गड़हा
सबशब्द	६	डासी	बिछाइकै
ठ		डाटै	डेर
ठवान	चाल वा उठने की रीत	डाढ़ा	आगि
ठकुर	ठाकुर	डासन	बिछौना
ठएउ	किएउ	शब्द	५
ठहकि	रुकिकै	डि.	

डिंडिमी	बाजाभेद	ढोय	बेय
डीठी	दृष्टिवा देखी	शब्द	२
डीठा	देखा	सबशब्द	७
शब्द	३	त॰	
डेवढ़ डे॰		तरुन	जवान
डेवढ	दिवढ़	तनु	शरीरवाअल्पवाबिस्तार
शब्द	२	तरुणी	जवानस्त्री
डो॰		तदपिऔतथापि	तौभी
डोली	गई वा डोला	तरु	वृक्ष
डोल	डोलना वा तलाव	तर	तेर वा अत्यंत
शब्द	२	तरंग	लहरि
सबशब्द	१५	तडाग	तलाव
ढ॰		तत्व	२५ सारवस्तुवाप्रकृतिआदि
ढनमनी	लुढकिगई	तम	अज्ञानवाअंधेरावान मोगुन वा अन्यंत।
ढंढोरी	खोजो		
शब्द	२	तनकाऊ	थोरिहु
ढा॰		तनय	पुत्र
ढाबर	मैला	तरंगी	बहुरंगीवाउछाहवाले
शब्द	१	त॰	और
ढि॰		तपोधन	तपस्वी
ढिग	समीप	तडित	बिजुरी
ढिंडिभ	टटीहरीपक्षी	तनुजाऔतनया	बेटी
शब्द	२	तमाल	वृक्षविशेष
ढे॰		तमकि	सरोषह्वै
ढेक	सारस	तर्जनी	अंगूठकेपासकीअंगुरी
शब्द	१	तरंगिनी	नदी
ढो॰		तरनिऔगभाए	सूर्य

तरनि	नाव
तरनतारन	आपतरैऔरहूकेतारे
तरुनाई	जवानी
तर्जन	झिझिकारन
तनोतु	बिस्तारकरो
तर्जत	तडपत
तर्जो	कूदा
तर्कैउ	कूदेउ
तरक	बिचार
तमी	राति
तरल	चंचल वा तीछन
तर्पहिं	तडपहिं
तत्त	स्वरूपज्ञता
तमीचर	राक्षस
तट	तरवा निकट
तथा	तैसहिँ
तनोरुह	शरीरमेंभये
तृषित	पियासा
तृन	तिनुका
त्रजग	पसुपक्षीआदि
त्वदंघ्रि	तवचरन
त्वदीय	तुम्हारी
त्वच	तुकला वा इंद्रियभेद
शब्द	४८
ता०	
तारक	तारकमंत्र वा दैत्य वा तारैलाला वा आकाश

	तारा वा आंख के तारा
तापस	तपस्वी
ताल	तलाव वा बजावने का ताल
तात	भ्रात वा पिता वा गुरु वा भाई वा सखा ॥
तामस	तमोगुनी
तालू	तालस्थल
तामरस	कमल
तापे	तपे
ताडन	पीडन
ताजी	घोड़ाबिशेष
तारा	बाली की स्त्री वा तरैया
ताकर	तेहिका
ताग	डोरा (फूल
ताटंक	तरकी वा बिरिया वा करनफूल
शब्द	२५
ति०	
तिय	स्त्री
तिहुंलोक	स्वर्गमृत्युपाताल
तिमुहानी	तीनमुखवाली
तिमिर	अंधकार
तिलक	भेद वा टीका
तिरहुति	देशबिशेष
तिष्ठै	रहै
तीनकाल	भूतभविष्यवर्तमान
तीर्थराज औ तीर्थपति	प्रयागराज
तीछ्न औ तीव्र	तीछन

शब्द	१२
तु·	
तुषारऔरतुहिन	पाला
तुराई	तोसकवाबेगसेंतोसै
तुरग	घोड़ा
तुला	तराजू
तुभ्यं	तुमको
तूल	रुईवातुल्यवातोलना
तूनीर	तर्कस
तूंबरि	तुंबड़ि
तूरी	तुल्य
शब्द	१०
ते०	
तेज	आंचवाप्रताप
ते	वेतुम्हारेवातुमको
तेति	वेअति
शब्द	३
तो·	
तोष	तृप्तिवासंतोष
तोरावति	बेगवाली
तोमर	द शस्त्रबिशेषवाछंदभी
तोप्यो	ढँप्यो
तोषये	प्रसन्नतानिमित
शब्द	५
सबशब्द	९२
थ·	
थल	भूमिवास्थान
थलचर	मनुष्यादि
थकित	न गद्गदकंठवाअचरजनु
शब्द	३
था·	
थाना	ठिकाना
शब्द·	१
थि·	
थिति	थिरता
थीरा	अचल
शब्द	२
सबश·	६
द·	
दनुज	दैत्य
दल	नासवापत्तावासेना
दहन	आगिवाजलानेवाला
दलनऔरदमन	नास
दक्ष	प्रजापतिवाचतुर
दक्षसुता	सती
दक्षसुत	प्रचेता
दसी	देवैया
दर	संखवाभयवाछिद्र
दसन	दांत
दमनीय	तोड़नहार
दमक	चमक
दधि	दही
दलकि	फटना
दम	इंद्रियोंकारोकना

दधीचि	ऋषिविशेष	दारा	इस्त्री
दवश्रोरदवारि	बनश्रागि	दामिनि	बिजुरी
दसन	रदवारसन	दाप	बलवागर्ब
दलित	टूटे	दारिका	लकड़ी
दर्भ	कुशा	दाम	मालावारस्सीवारुपया
दहेउ	जरायेज	दाडिम	श्रनार
द	दाता	दारन	फाड़ना
दरबार	स्वर्गसभा	दारय	नासकरिये
दर्पी	श्रभिमानी	द्वादस	बारह
दत्त	दीन्ही	शब्द	२९
दलमले	पीसडारे	दि·	
दृगंचल	पलक	दिव्यदृष्टि	श्रलौकिकग्यान
दृग	श्रांषि	दिसि	श्रोरवादिसा
द्रवौ	कृपाकरहु	दिनदानी	श्रतिउदार
द्रवहिं	टघरहिं	दिनकरश्रोदिनेस	सूर्य
द्रव्य	बस्तु	श्रोदिनमनि ॥	
शब्द	३२	दिवस	दिन
दा·		दिगंबर	नंगा
दारु	लकड़ी	दिसिराजश्रो	इंद्रकुवेरादि
दारुन	घोर	दिसिप ॥	
दारिद्र	दरिद्र	दिश्रासे	दीपक
दायकश्रो	देनेवाला	दितिसुत	हिरण्यकशिपुश्रादि
दाता·दातार		दिव्यतन	श्रप्सरा
दाक	नास	द्विजराज	चंद्रमा
दाह	जरना	दीनता	गरीबी
दारुनारि	काठकीपुतरी	दीसा	देखा
दादुर	भिंजुका	दीछा	मंत्रउपदेस

शब्द	१७	दूना	दुगुना
दु॰		शब्द	२६
		दे॰	
दुख	अध्यात्मआधिदैव अधिभूत॥	देवतरु	कल्पवृक्ष
दुराव	छिपावना वा कपट	देवधुनि	गंगा
दुरासा	नीचआसा	देवऋषि	नारद
दुसह	नसहिंजाय	देस	स्थान वा परगना
दुरित	पाप वा छिपा	देवसर	मानसआदि
दुराराध्य	दुखसे सेवेयोग्य	देव	देवता वा मेघ वा राजा
दुराधर्ष	शत्रुसे नदबै		
दुर्गम	अजय	देवक	देवता
दुर्वचअरुदुर्वाद	दुष्टवचन	देखहिं	देख
दुष्टजंतु	सर्पादि	द्वैत	भेद
दुकूल	रेशमीवस्त्र	शब्द	९
दुहि	कामना	दो॰	
दुहाई	द्रोहवासौगंद	दोष	कामक्रोधादि
दुर्वासा	रिषिविशेष	शब्द	१
दुर्घट	अगम	दं॰	
दुर्ग	किलावाअगम	दंड	लकड़ीवाराजदंडवाघड़ी
दुरंत	अंतबिनु	दंडक	राजा
दुरतिक्रम	दुस्तर	दंभ	पाखंड
दुनी	संसार	दंपती	स्त्रीपुरुष
द्रुम	वृक्ष	दंस	बनमाछी
दुंदुभी	नगारा वा दैत्यविशेष	द्वंद	रागद्वेषादि दुई
दूषन	राक्षसविशेषवादोष	शब्द	६
दूधमुख	लरिका	सबशब्द	१८१
दूत	हलकारा	ध॰	

धनेसाऔधनद	कुबेर
धर्मध्वज	पाषंडी
धरनीऔधरा	पृथिवी
धनु	धनुष
धनी	धनवालावास्वामी
धनिक	धनवाला
धवल	सपेद
धन	द्रव्यवाअर्थवाधन्य
धन्या	नदीविशेष
धवलिहंइ	सपेदकरिहैं
धर	धड़वाभूमि
धन्वी	धनुषधारी
धरबौ	रखाइबौ
धरासुर	बिप्र
धृति	धीरज
शब्द	७
धा·	
धाम	घरवातेजवाबैकुठादि
धारि	फौज
धावन	दूत
धारी	फौजवाधरैया
धाता	ब्रह्मा
शब्द	५
धि·	
धिग	धिक्कार
शब्द	१
धु·	
धूम्रां	मुरदावाअरक्त
धुर	बोझवामुख्य
धुनि	कंपावनावाअवाजवाध्वनि
धुनेउ	कंपायेउ
धुरीन	बोझधरैया
ध्रुव	भक्तवानिश्चै
धूर्त	छल
धूमकेतु	आगि
शब्द	८
धे·	
धेनु	गैया
धेनुमती	गोमतीनदी
शब्द	२
धो·	
धोरी	मुख्यबैल
धौं	किधौं
शब्द	२
धं·	
धंधक	धंधा
शब्द	१
सबशब्द	३६
न·	
नरहरि	नरहरिदासवानृसिंह
नयनअभिय	नयनामृत
नभचर	पछीआदि
नमामिऔनमामहे	प्रनामकरतहौं
नयन	आँखि

नति	नवानेवाप्रनाम	नफीरी	बाजाभेद
नसाय	बिगाड़वानास	नस्वर	बिनासी
नवरस	शृंगारादि९	नभगेस	गरुड़
नव	नया	नभग	पछी
नलिन	कमल	नर्तकी	नटनी (निकारौ
नयनपट	पलक	नहरुवा	जांघमों सूतसा रोग
नमत	नमस्कारकरत	नवनीता	माँखन
नटत	नाँचत	नर्नक	नचनियाँ
नषत्त	नत्त्र	नृपऔरनरपति	राजा
नवल	जवानवानया	शब्द	४३
नवसप्त	सोलहसिंगार	ना॰	
नकुल	निउर	नायक	स्वामी
नई	नईवानवीन	नाना	अनेक
नए	झुकेवानवीन	नाइ	झुका
नहारू	चर्मकाडुकड़ावाबाघ	नामी	नामवाला
नमित	नाचेकिये	नागर	चतुर
नय	नीति	नाह	पति
ननरू	नहींतो	नाग	हाथीवासांप
नसावा	नुकसानवानास	नागरिपु	सिंह
नवजल	वर्षाकापानी	नाठी	नासभई
नर्मर	सुषर	नाल	डांडी
नवभक्ति	नवधाभक्ति	नाक	स्वर्गवानासिका
नवधा	नौतरहकी	नाकनटी	अप्सरा
नम्र	झुके	नारकी	नरकबासी
नलिनी	कमलनी	नाद	शब्द
नक्र	जलजंतुबिशेष	नायो	झुकायो
नस	नाड़ी	नावरि	नावघुँमावना

नानाकार	बासदंतत्तुरग }	निकेतनऔनिकेत	)
	अर्द्धचंद्रादिभेदवारे }	निसोन	निराला
नामानी	नामसमूह	निकाई	भलाईवाशोभा
नाराच	बाण	निजगुरु	नरहरिदास
न्याउ	उचित	निकाय	समूह
नाउँ	नाम	निजतंत्रऔ }	स्वतंत्र
नाँइ	राहितरै	निरंकुश॥ }	
नाँघि	लाँघि	निरबाहा	निरबाह
शब्द	२३	निधन	मरन
नि॰	×	निपुनाई	चतुराई
निकर	समूह	निसाना	नगारा
निधान	धनवाआधार	निपाता	नाशकिया
निरस	बिन रसबिनावाबिषय	निगूढ	अतिगुप्त
निज	आपनवाउत्कृष्ट	नियराई	निकट
निहारा	देखना	निजानंद	स्वरूपानंद
निरामिष	मांसबिना	निषंग	तरकस
निगम	वेद	नित्य	नित्यकर्मवासदा
निरत	अतिप्रीतिजुत	निबाहि	करकै
निहोर	बिनतीवाउपकार	निमि	राजाबिशेष
निर्मयेउ	रचेउ	निर्भर	पूरन
निरुपाधि	बिनाप्रयोजन	निजसंधि	आपनछिद्रवाऔसर
निरूपन	बिस्तारसेकहना	निपट	अति
निसि	राति	निबेरी	चुकाईवाजवानखी
निसिचर	राक्षस	निर्गम	निकसना
निकंदनऔ }	नाश	निदान	अंतवाकारन
निकंदऔ }		निवारन	दूरकरना
निर्मूल॥ }		निषाद	मलाह
निवास	{ घर		

निरषि	देषि	निभ	तुल्य
निधि	बहुतधनवाआधार	निबहा	बीतगया
	वामहापद्मादि ९	निबाही	चुकाई
निबेदित	अर्पित	निहार	कुहिरा
निर्झर	झरना	निकेवल	एकै
निघरित	अतिकमती	निवारि	दूरिकरि
निर्जास	निश्चय	निसैनी	सीढी
निकाम	अतिवाकामनारहित	निरुवारे	षोले
निर्बान	मोक्ष	निर्बहे	छूटिगया
नियोगा	आज्ञा	निर्गता	निकरी
निजगति	चंचलता	निवारक	दूरकरता
निरंबु	जलबिन्दु	निदेसा	आज्ञा
निरीस	बिनामालिकका	निग्रह	रोषवादंड
निसागम	रात्रिआयें	निबेही	निरंतरवानिबाह
निर्लेप	बेलाग	निजसुष	आत्मसुष
निजरूप	देवरूप	निर्बिकल्प	भेदरहित
निरस्त	त्यागिकै	निवृत्ति	संसारसैं
निशेस	चंद्रमा	निरबहई	निवाह
निसित	तीषे	निदरि	निरादरकरि
निरंजन	अबिद्यारहित	निःपापा	पापरहित
निजधर्म	मुख्यधर्मब्रह्मण्यता	नील	स्यामरंग
निबिड़	सघन	नीक	अच्छा
निसरी	निकली	नीच	गदहावानीचजाति
निशिचरी	सिंहका	नीर	जल
निबुकि	छुड़ायकै	नीरधर	बादल
निसरत	निकरत (बिशेष	नीड़	षोंता
निमेष	पलकमूंदनावाकाल	नीलकंठ	मोर

नीलोत्पल	नीलमणि	परसि	छुइकै
नीरज	कमल	पर	औरवाशत्रुवासिरोम
शब्द	१०१		निपरैंवातत्परवाउपरांत
ने०		पय	दूधवापनीवापयस्वनीगंगा
नीति	अंतबिना	पट	कपड़ा
नेम	सौचसंतोषादि	परिहास	व्यंगवचनजुगनिंदा
नेग	पुरोहितादिककोकर	परम	बड़ेवाअतिवाउत्तम
नेव	नाइव	पटोरे	रेशमीवस्त्र
नेकु	थोरिक	पसाउ	प्रसन्नतावाकृपा
नेड़	नेव	पताका	ध्वजाभेद
नैहर	मातुघर	पति	भर्तावाराजावाप्रतिष्ठा
शब्द	७	पगु	पाँववालग्न
नो॰		परितोष	प्रसन्नतावासंतोष
नोई	गैयापगबंधनकीरस्सी	पयोनिधिवापयोधी	समुद्र
नौमी	तिथिवानमस्कारकर्ताहौं	परमिति	अवधिवामर्य्यादा
नौमि	स्तुतिकरतुहौं	परस	छुवनवाआचमनादि
शब्द	३	पटु	चतुरवासुंदर
नं॰		पथिक	राहगीर
नंदिनि	बेटी	परब	पूर्णिमादिवागाँठि
नांदीमुख	श्राद्धविशेष	परिताप	संताप
नचहिं	नाचहिं	पखारे	धोये
सबशब्द	१८०	पराई	भागना
प०	(कार	परना	पत्ता
पदम	पाँववास्वरूपवाअवधि	परिहरि	छोड़िकै
पदुम	कमल	परमान	जथारथवाप्रत्यक्षादि
पराग	धूरिवाकमलकैरज	पल्लव	नयापत्ता
परछिद्र	इंद्रीछिद्रवापरायेमर्म	पतंग	सूर्यवाछुद्रजीववागेंद वालालरी

परिधन	पहिरें	पनव	ढोल
परमारथ	तत्वबस्त	पवारे	डारे
परेस	परमेश्वर	पयाना	यात्रा
परावर	ब्रह्मादिसेमनुष्यादि	पहुनई	मिजमानी
परिधान	पहरना	पदारथ	धर्मअर्थकाममोक्ष
पटल	समूहवाढंपना	परिचारिका	दासी
परिक	जराऊचौकी	परसत	छुवत
परंतु	उपरांत	पवि	वज्र
परित्राना	रक्षक	परिपाका	अंतमोंवाफल
पत्र	चिट्ठीवापत्ता	परिनाम	अवस्थावाअंतवाफल
पयनिधि	छीरसमुद्र	पयर	घनवाबादर
पठ	पढ़ना	परज्ञान	जूना
पतिलोक	हिमाचल	पदपीठा	पाउधरैकीचौकीवाषराऊं
परिकर	कमर	पचन	अत्यंचारोसप्रसिद्ध
पटतर	बराबर	पल्लवित	नयेवापत्तायुतवारोमांचित
पन	प्रतिज्ञावाअवस्था	परधाना	मुख्य
पलोटत	धीरेसोपगदाबत	पथ्य	गुनकारी
पराभव	प्रलयवानिरादर	पतिनिहि	इस्त्री
पतिरिव्रता	पतिव्रता	पतंतिनो	गिरतनाहीं
परिपाटी	परंपराकीरीति	पनस	कटहर
परशुधर	परशुराम	परिघ	घोंडा
परशु	फरसा	पश्यंति	देखतेहैं
परिचारक	सेवक	परुष	कठोर
पद्मराग	लालमणि	पटली	पंगति
पक्षि	पक्षीवाअधमसें	पखवारा	पक्ष१५दिनका
परस्परऔपर	प्यारे	पदसार	प्रवेश
चारीऔपयाति		परमानु	कालविशेष

परवाउज	मृदंग	प्रबंध	रचनाबिशेष
पश्यामि	देषताहों	प्रथम	पहलेवामुख्य
परभा	परमशोभा	प्रनत	सर्वांगतवाअतिनम्र
परात्पि	परसेभी	प्रभु	स्वामीवाराजावासमर्थ
परिचर्या	सेवा	प्रति	पासवासन्मुख
पनिघट	पानीभरैकाघाट	प्रबोधक	जगाइदेइ (रूठल
परि	अति	प्रसाद	प्रसन्नतावाकृपावा
परायन	तत्पर	प्रकार	रीति
परत्र	परलोकमें	प्रजेस	रुद्र
परस	पारस	प्रबोध	उपदेशवाज्ञान
परमेसा	परमेश्वर	प्रसंसा	स्तुति
परज	पाउँकीअंगुरी	प्रसव	उत्पत्ति
परे	परलोकबिषैं	प्रलंब	बिसाल
परिछिन्न	अव्यापक	प्रकास्य	प्रकासैजोग
परितापी	दुषद	प्रकाशक	प्रकासकरैया
पृथुराज	राजाबिशेष	प्रतिभट	बराबरकाबीर
पृथक	जुदा	प्रचारी	ललकारकै
पृष्ठ	पीठ	प्रसून	फूल
प्रसूती	उत्पति	प्रतिमा	मूरति
प्रचार	बिस्तार	प्रसंसक	स्तुतिकरैया
प्रभाउ	प्रताप	प्रतिछाहींसो }	परिछाहीं
प्रनवौं	प्रनामकरतहौं	प्रतिबिंब॥ }	
प्रद	दिवैया	प्रतिमूरति	प्रतिबिंब
प्रपंच	संसारवाकपट	प्रवाह	धारा
प्रकृति	मायावासुभाउवा स्व (स्का	प्रलाप	अर्थरहितबचन
प्रसंग	संबंधवाकथावार्ता	प्रधान	मुख्यवा मंत्री
प्रवीन	चतुर	प्रभा	प्रकास

प्रमाद	असावधान	पाथ	जल
प्रेस	रंगभूमि	पान	पीवन वा पत्ता
प्रतिपक्षी	शत्रु	पाई	पाइकै
प्रयांति	प्राप्तहोतुहैं	पावक	आगि
प्रसीद	प्रसीदन्नहोउ	पाहीं	पास
प्रहार	मारना	पाथोज	कमल
प्रनय	प्रेम	पाहि	रत्नाकरहू
प्रभंजन	पवन	पागे	साने
प्रतिउपकार	बदलाउपकार	पाक	रसोई वा असुर वा पका
प्रस्थिति	कीरति	पाइक	पियादा वा मल्ल
प्रजारी	जलाई	पाटमहिषी	पटरानी
प्रमदा	स्त्री	पाकारिपु	इंद्र
प्रदोष	रातिकाआवना	पातक	पाप
प्रजंत	तक	पाठीन	हजारडाढवालामत्स्य
प्रत्यूह	बिघ्न	परा	सामर्थ्य वा पार वा गिराया
प्रतिपाद्य	बर्णनकरैजोग्य	पालव	डार वा पत्ता
प्रजासन	प्रजाकोभोजनकरैया	पावस	बर्षाऋतु
प्रसन्न	निर्मल वा हर्षित	पाहन	पत्थर
प्रकुष्ट	क्रोध	पार्थिव	शिव
प्रगल्भ	शास्त्रमेंबिजयी	पात्र	बरतन
प्रथमगति	ज्ञान	पाठ	पढना
प्रतिकूला	बिमुख	पाठक	पढ़ावनेवाला
शब्द	१६२	पानतें	मद्यपीनेतें
पा॰		पादप	वृक्ष
पानि	हाथ	पास	फांसी
पाष	पत्र	पाट	रेशम
पावन	पवित्र वा पावैनहीं	पायोद	बादर

पारावत	कबूतर
पायोधि	समुद्र
पारी	घरी
पाले	आधीन
पाटल	वृक्षविशेषवागुलाब
पारहिं	समर्थ
पाट	भरीहीन्द्र
पाकी	परिपक्व
पाँवर	नीचवामूढ
पाँवड़े	पाँवधारनवस्त्र
पाँउरी	पादुका
प्राकृत	अयोग्यवागायाविकारवासाधारनजन
प्राकृतकवि	सूरआदि
प्राची	पूर्वदिशा
प्रात	भोर
प्राननाथ	पति
प्रातकृत्य औ प्रातक्रिया	स्नानसंध्यादि
प्रावृट्	वर्षाऋतु
	४९
शब्द पि·	
पिक	कोइल
पिपीलिका	चिँउटी
पिनासमेत	हरसमेत
पिनाक	शिवधनुष
पिरोजा	नंगालीमनिप्रसिद्ध
पिरीते	प्रीतमवाप्रीतजुत
पिसुन	चुगल
प्रियतम	अतिप्यारो
पी	पति
पीयूष	अमृत
पीठ	आसनवापीठ
पीनऔपीवर	पुष्ट
प्रीता	मित्र
	२४
शब्द पु·	
पुरान	अठारहोंवापुरानीवस्तु
पुरारी	शिवजू
पुनीत	पवित्र
पुर	नगरवापुरा
पुरंदर	इंद्र
पुलक	रोमांच
पुलस्ति	रिषिविशेष
पुराकृत	पहलेजन्मके
पुरोधा	पुरोहित
पुरुष	मनुष्यवापुरुषा
पुरट	सोना
पुटऔपुटी	दोना
पुनी	पवित्र
पुहुमि	पृथिवी
पुरोडाश	जज्ञकाहव्य
पुंज	समूह
पुंगव	श्रेष्ठ

पूर	संपूरनवाउतर वा कर्णभूषन	प्रोक्त	कहा
पूषन	सूर्य	प्रौढि	साभिमानबतकही
पूज्य	पूजाजोग	प्रौढ	बड़ा
पूजिहि	पूरनहोइ	शब्द	८
पूतरि	काठकीवाआंषकी	पं·	
पूजी	पूरीभई	पंगु	लँगड़ा
पूग	सुपारीवासमूह	पंथ	रस्ता
पूय	पीय	पंकरुह	कमल
पूरुष	पुरुष	पंचदस	पंद्रह १५
पूप	मालपूवा	पंचसबद	पांचबाजानरागादि
पूजनीय	सेवेयोग्य	पंचकवल	पंचग्रास
शब्द	२९	पंजर	पिंजरा
पे·		शब्द	७
पेलहिंऔपेली	त्याग	सबशब्द	२११
पेषिय	देषिय	फ·	(वृक्षके
पेषन	तमासा वा देषना	फल	धर्मअर्थकाममोक्षवा
प्रेतनिवास	मसान	फनिकऔफनि	सर्प
प्रेरक	आज्ञाकरैया	फहराई	फूरहिं
प्रेरित	आज्ञामानके	फलित	फलसमेत
प्रेरे	सुझाए वा पठाए	फटिक	बिल्लौर
शब्द	८	शब्द	६
पो·		फा·	
पोत	जहाज वा बालक	फाबी	मजबूत
पोच	नीचवाबुरे	शब्द	१
पोतक	बालक	फु·	
पोसो	पाल्यो	फुलवाई	फूलकाबाग
पोषत	पुष्ट	फुर	सांच

शब्द	२	बहुति	पुकारति
सबशब्द	५	बपु	शरीर
ब.		बसह	बैल
बदन	मुख	बहु	बहुतवास्त्री
बर	श्रेष्ठवापतिवा	बछल	दयायुत
	बरनिवाजलनावा	बच	बचन
	बलवाबटबृक्ष॥	बराह	सूअर
बट	बड़कापेड़	बरिआर	बली
बकऔबलाक	बगुला	बरिबंड	तेजस्वीवाबली
बहुरि	फिरि	बरूथ	समूह
बज्र	इंद्रकाशस्त्र	बसवर्त्ती	स्वाधीन
बरियाँई	जोरावरी	बरी	ब्याही
औबरबस	(त	बनचर	बनचरवाबनवासी
बतकही	बातकाकहैयावाब	बनमाला	फूलपत्रकीवापांवतक
बसन	कपड़ावाबसनाहीं	बनिक	बनियाँ
बहोरी	बनावबापुनः	बरिआँ	बेरावाबगिया
	(ना		
बल	सरीरकाजोरवासैं	बनाई	नास
बषाना	कहावास्तुति	बलि	बषरावापूजावावलि
बरन	अक्षरवाब्राह्मणादि		दानवाराजावानौछावर
	वारंगवावर्णन	बनिया	छोटाफल
बसुधा	पृथ्वी	बक्र	टेढ़ा
बकता	कहैया	बदि	कहिकै
			(करबौ
बनज	कमल	बगमेल	बागमिलाइकैंवाइकट्ठा।
बरिष्ठ	श्रेष्ठ	बरही	मोर
बधूऔबधूटी	स्त्री	बल्ली	लता
बतासा	बायु	बत्स	पुत्रवाबछरू
बरेखी	दुलहाठहरावना	बकुल	मौलसरी

बहुरे	फिरे	बदरी	बेरकावृक्ष
बोरू	सुंदरजांघवाली	बमन	छांड़त
बरु	बल्क	बहरावां	महरिया वा सुनी अनसुनकरी
वलकल	बुकला		
वर्बासन	बोरहुबर्षनकका भोजन	बड़वानल	समुद्रआगि
बनो	रुन्नूरीकाधन	बारे	बाँहकै
बटु	ब्रह्मचारि	बन	जंगल वा जल
बखना	गारी	बर	काहहु
बरनी	कही	बर्बर	अधम वा बकवादी
बरी	बनाइकै	बहहिं	उठावहिं
बटोही	राहगीर	बन	बानैं
बदर	बेरकाफल	बलीमुख	बानर
बराई	दूरहांकना	बलाहक	बादर
बलित	वेष्टित	बलकावा	ऐंठजुतबातैं
बयस	अवस्था वा बनियाँ	बपुओबपुष	सरीर
बरीसा	बर्ष	बहुकालीना	बहुतदिनके
बह	चलना वा बहना	बससि	बसतहौं
बधिक	ब्याधा	बहुधा	बहुप्रकारकी
बहुराहिं	फिरहिं	बगरे	फैले
बमन	छांड़ना	बर्ग	जाति वा समूह
बधिर	बहरा	बयारी	पवन
बर्म	बखतर	बचसि	बचन
बसतु	बसहु	बृषकेतु	शिवजू
बसीठी	दूत	बृषऔबृषभ	बैल
बहुबाहु	रावन	बक	ढूंढ़ार
बरुन	देवताबिशेष	बाति	चित्तकी लगन
बस	अधीन	बारि	बर्षा

वृसली	मूढी	बारिचरकेतु	कामदेव
ब्रह्मभवनऔ	ब्रह्मलोक	बाहन	असवारी
ब्रह्मधाम॥		बारी	कहैवाला
ब्रह्मगिरा	ब्रह्मबानी	बातुल	बाईचढी
ब्रह्मानंद	स्वरूपानंद	बाला·औबाम	इस्त्री
ब्रजंति	प्राप्तहोतेहैं	बाधा	बंधनवापीड़ावारूक
ब्रन	घाववाफोड़ा	बायन	नेवता
ब्यलीक	कपट	बाजि	घोड़ा
ब्यथा	दुष	बारे	छोटकेवाबालक
ब्यग्र	बिकल	बारिदनाद	मेघनाद
ब्यजन	पंखा	बासर	दिन
ब्यसनी	जुआरीआदि	बाऊऔबात	पवनवाबाई
शब्द	१२७	बारहितें	लरकापनतें
बा·		बापुरो	छईरोगवालावातुच्छ
बाचाल	पंडितवाबकवादी	बान	बानासुरवातीरवा
बारिज	कमल		रंगवासुभाउवाबाना
बाल	बालकवामूर्खवाकेस	बारि	वृथावावास्ता
बाँ	बाम	बारी	जलवाफुलवारीवा
बारि	जल		छोटीवानेछावर॥
बारिधिऔबारीस	समुद्र	बाट	रस्ता
बारुनी	मदिरा	बादिनी	बोलैवारी
बायस	कौउवा	बाग	बानी
बाटिका	फुलवारीवासामान्यबगिया	बाति	बत्ती
बार	बारंबारवादुआर	बागुर	फंदा
	वासमूहवादेरवा	बारयौ	रुजगारजाय
	केसवाबाल॥	बासव	इंद्र
बागीसा	ब्रह्मबानी	बारहबाट	तहसनहसवामोहारि

बारहरस्ता)

बाधक	दुखवाविघ्न	बिभंजन	नासकरैया
बासन	बरतनवासुगंध	बिबेक	ज्ञानवासतासतबिचार
	वानिवास ॥	बिसद	सपेदवास्पष्ट
बाहिज	बाहिरसैं	बिधि	बेदकीवाब्रह्मावा
बानैत	बीर		कर्मवाबिधान·रीत
बाजा	लराई	बिराजति	सोहति
बादलऔ	बादर	बिदित	जानावाप्रसिद्ध
बारिधर॥		बिधु	चंद्रमा
बाहिनी	सेना	बिद्या	शिक्षाआदि१४
बाय	पसारि	बिहाइ	छोड़कै
बारन	हाथी	बिश्वरूप	सर्वरूप
बारये	दूरकरिये	बिषाद	सोक
बाजमेध	अश्वमेधजग्य	बिलग	न्यारावाबुरा
बापिका	बावड़ी	बिराग	बैराग्यवाबैर
वा	अथवा	बिभाग	जुदागीवाबाँटवा
व्रात	समूह		भाग्यबिनुवाखंड
ब्याधू	बहेलिया	बिश्व	संसारवासब
ब्याधि	रोग	बिकार	औगुनवाजन्मादि
ब्याल	सांपवाहाथी		६ वा कारज॥
ब्याली	सर्पधारी	बिधाताऔबिरंचि	ब्रह्मा
ब्याप्य	जगत	बिबुध	देवता
ब्यास	बिस्तारवामुनि	बिलोकि	देखि
ब्याज	बहाना	बिभाती	प्रकासति
शब्द	६१	बिदेह	राजाजनकवादेहबिनु
बि·		बिसारद	चतुर
बिभूति	ऐश्वर्यवासंपदावामुक्ति	बिरति	बैराग्यवाअतिप्रीति
बिमलबिलोचन	ज्ञानबैराग्य	बियोगी	अलग

बिहीना	बिनावाअतिनीच	बिपरीत	उलटा
बिशेष	कोईवाअधिकवाभेद	बिधात्री	ब्रह्माणी
बिवाकीओबिलाहीं	नास	बिधिवत	जथाजोग्यवाबिहित
बिरद	जसवाबीरखकेबाना	बिमुष	बिरोधी
बिसोक	सोकरहित	बिसमित	आचरजजुत
बिनय	बिनतीवाबिशेषनीत	बिगत	रहित
बिभंजनि	तोड़नेवाली	बिचरहिं	फिरहिं
बिहारओबिनो	क्रीड़ा	बिस्तर	बिस्तार
दओबिहरन		बिरक्त	बैराग्यवान
बिबुधबैद्य	अश्विनीकुमार२	बिटप	वृच्छ
बिषय	शब्दरूपरसगं	बिसिष	बान
	धस्पर्श।५॥	बिडरि	बिशेषभयवाछितरान
बिलास	क्रीड़ावाचमत्कार	बिकट	भयंकरवाटेढा
	वासुषवाकार्य।	बिनीत	बिशेषनीतिवानम्र
बिज्ञान	अनुभव	बिबस	बिकल,निरोषबस
बिचित्र	अनेकबिधिवा	बिभु	व्यापकवासमर्थ
	आश्चर्यरूप॥	बित्तानबिहाना।	ज्ञानरूपभोर
बितान	बिस्तारवाचंदो	बिषयक	बिषै
	आवामंडप॥	बिख्यात	प्रसिद्ध
बिहग	पछी	बिभव	आश्चर्यवापालन
बिषम	शत्रुमित्रभावजुत	बिमात्र	भैमा मातासे बेटा
	वाभयंकरवापांच५	बिदिसि	दिसाकेकोना
बिपुल	बहुतवाबिस्तार	बिप्रचरन	भृगुलातचिन्ह
बिगोए	नासकिये	बिथकहिं	चाकित
बिसाल	बड़ावापीड़ाबिनु	बिसूरति	चिंताकरति
बिपिन	बन	बिघटन	तोड़ना
बिरज	निर्मल	बिदुषन	पंडितोंने

विराट	बिश्वरूप	विविक्त	एकांतवात्याग
बिद्यमान	होत	बिभचारी	परतियगामी
बिलखाई	बिखाद	बिकरारा	भयंकर
बित्त	मजदूरवाधन	बिलपाना	बिलापकरति
बिदूषहिं	निंदहिं	बिदारे	फाड़े
बिदूषक	भाँड़वानिंदक	बिलास	ऊंचेनीचेकरना
बिभुक्त	बिश्वतेजसप्राज्ञतुरीय	बिरथ	रथकेबिना
बिलासिनि	इस्त्री	बिबर	बिल
बिरत्न	छोयरत्न	बिजयी	बिशेषजयवाला
बिस्मय	अचरज	बिनयी	अतिनीतिवाला
बिनता	गरुड़माता	बिषानाँ	सींग
बिबरन	बेरंगवाजुर्द	बिथुरे	फैले
बिलष	उदास	बिहरु	फटो
बिहाइ	छोड़कै	बि हरति	फटति
बिहान	भोरवाबीतजाना	बिभेद	फूटकरनावाशत्रु
बिरहित	अतिछोड़कै		मित्रभाव॰ ॥
बिबुधबन	नंदनबागस्वर्गमें	बिरुद्ध	बैरयुत
बिद	ज्ञाता	बिष्ठा	मलगंदगी
बिसेख	फटेउ	बिडारी	भगाई
बिढई	कमाई	बिरुदैत	बानावालेबीर
बिरचि	बिनायकै	बिदारहिं	फारहिं
बिधवा	मृतपतिस्त्री	बिधुंतुद	राहु
बिग्रह	बिरोधवासरीरवाहठ	बिवर्ध	अतिबढ़त
बिषई	संसारी	बिरत	मुमुक्षु
बिषक्ति	लीनरति	बिरुज	रोगहीन
बिधिअंड	ब्रह्मांड	बिषमता	रागद्वेष
बिक्रम	पराक्रम	बिद्रुम	मूँगा

बिचत्तन	चतुर	बेसर	षच्चर
बिंब	बंचन	बैभव	ऐश्वर्यवापालन
बिकसे	फूले	बैस	अवस्था
बिंदक	लाभयुत	बैननेय	गरुड़
बीरभद्र	शिवगण	बैदिक	बेदोंनसेवाबेदपाठी
बीथी	गली	बैषानस	बानप्रस्थ
बीर	भाईवाबीररसयुत	बैदेही	सीताजी
ब्रीड़	लज्जा	बैना	बचन
शब्द	२३९	बैतरनी	यमपुरनदी
बु०		बैसा	बैठ
बुध	चंद्रपुत्रवापंडित	शब्द	२१
बुझाइ	समुझाइबौ	बो·	
बूता	बल	बोहित	जहाज
शब्द	३	ब्योम	आकास
बे·		बौड़	लता
बेधऔ·बेहू	छेद	शब्द	२
बेनी	त्रिबेनीवाचोटी	बं·	
बेदशिरा	मुनिबिशेष	वंद्यऔबंदनीय	नमस्कारयोग्य
बेदीऔबेदिका	स्थण्डिलनामप्रसिद्ध	बंचक	ठग
	धर्मकांडकाचौंतरा	बंधु	भाईवानांधनावासंबंधी
बेनु	बांसवामुरली	वंचन	ठगना
	वाराजाबिशेष	वंस	बाँसवाकुल
बेरे	जहाज	बंगा	लुच्चा
बेद	ऋग१यजु२साम	बंदन	प्रनाम
	३अथर्वन४।	वंत	वाला
बेहड़	बिकटस्थान	वंदारका	देवता
बेत	आकासवाछड़ी	वंद	समूह

शब्द	११	भयानहां	भयदाई
सबशब्द	४५२	भड़ियाई	चोरीवा भांगचाटको
भ.		भंजन	भक्ति
भट	जोधा	भनु	कहतहों
भनिति	कविता	भयानक	रसविशेषवा भयंकर
भगवान	षट्ऐश्वर्ययुत	भजामहे	सेवतहैं
भरनी	नक्षत्रवा सर्पकुल	भने	कहे
	बर्नन.गील.मूषव्रज रसप्रसिद्ध।।	भवदंघ्रि	तुम्हारेचरन
भर	धारनावाबोझावापोषन	भवंत	आपकी
भरिऔभरता	पूरन	भजे	सेवतहों
भनता	कहतेहैं	भभेरे	धक्काखातफिरतहैं
भरन	धारनपोषन	भृगुनाथ	परशुराम
भजई	रखनावाभजन	भ्रकुटि	भौंह
भभरि	घबराइके	भ्रम	भूलना
भवन	घर	भंवर	नदीकाचक्कोहवाभौंरा
भदेश	प्रकृति प्रत्यय	शब्द	३६
	रहितवानिंद्य	भा.	
भगनी	बहनी	भाषा	कहा
भव	संसारवाशिव	भाल	माँथा
	वा भस्म २॥	भावन	सहात
भनी	कहिके	भाग	बखरा वा भाग्य
भद्र	कल्यान	भामा	स्त्री
भनई	कहतेहैं	भाजन	बरतन
भजामि	भजताहों	भाखे	कहे
भवाम्बुनाथ	संसार समुद्र	भारती	सरस्वती
भजी	अंगीकारकीन्ह	भाये	भाव वा सुंदर
		भावऔभाउ	प्रेमवाभावनावासना

भानु	सूर्य
भायप	भाईपना
भाथा	तरकस
भामिनि	स्त्रीवाभ्रमवाली
भावी	होनेवाली
भ्राजा	शोभित
भांडे	बरतन
शब्द	१८
भि.	
भिन्न	जुदावाफूटगया
भिंडिपाल	ढेलबाँस
भीम	भयंकर
भीरा	बाकावाभीरवाडर
भीती	भयवादीवार
भीरु	डरी
शब्द	६
भुअंगनि	साँपनि
भुजंग,भुवंग	साँप
भुआल	राजा
भुवन	ब्रह्मांड
भुवि	पृथिवी
भुंजब	भोग
भूषित	भूषनजुत
भूरि	बहुत
भूधर	पर्वतवाशेषादि
भूमिनाग	साधारनसाँप
भूपपद	राजपद

भूतल	जमीनमें
भूति	संपदावाभुक्तिवाराष
भूसुर	ब्राह्मन
भूत	जीव
भूर्जतरु	भोजपत्रवृक्ष
भ्रू	भौंह
शब्द	१८
भे.	
भेदओभेव	जुगारीवानीतिकै
ओभेऊ	चरनफूटकरना वा
	तोड़ना वामर्म ॥
भेक	मिंजुका
भेरी	बरानगारा वा बिगुल
	मुषपीतरकाबाजा
भेषज	औषद
भेंट	मिलनावाभेंटपूजा
भेई	गीली
शब्द	८
भौ.	
भोगावती	सर्पनगरी
भौंरा	धोषा
भोग	सुगंधआदि८
भोरे	भूलिकुके
भोरि	भोली
भोजनषानी	रसोईकाघर
भौम	मंगलग्रहबिशेष
शब्द	७

भं॰		मलय	चंदन
भंजन	नासकरना	महेश	महादेव
भंग	नासवाढिठाई·रचना	मनोरथ	अभिलाष
भृंगी	शिवगण	महा	बड़ा
भृंग	भौंरा	मगन	डूबना वा लयलीन
शब्द	४	मषजज्ञ	जज्ञ
सबशब्द	९१	महिपाल	राजा
म॰		महामनि	जहरमोहरादि
मम	मेरा वा ममता	मधु	चैत वा मकरंद वा
मर्दन	नासकरैया		सहत वा जल वा ब
महामोह	अज्ञान		संत वा दैत्यविशेष
मध्य	करत वा बकत वा प्र	महोत्सव	बड़ा उत्सव
	धान॰ स्वरविशेष।	मनोरम	सुंदर
मल	मैल वा पाप	मकरंद	फूल का रस
मनि	सर्पशिरकी आदि	मकर	राशि वा मच्छ वा मगर
	है वा शिरोमनि	मरम	भेद वा हृदयादि अंग
महीसुर औ	ब्राह्मण	मयन औ मनोज	काम
महिदेव ॥		औ मदन औ मन	
मज्जहिं	नहाँई	सिज औ मनो	
मराल	हंस	भव औ मनमथ	
मति	बुद्धि	औ मनजात	
महिषेस	जमराज वा महिषासुर	औ मनोभूत	
मगह	मगहदेश वा रस्ता	मनुज	मनुष्य
मरु	निर्जलदेश	मद	अभिमान वा म
मधुर	मीठा वा सुंदर		दिरा
मधुकर औ	भँवर	मरजाद	हद्द वा रीति
मधुप ॥		मर्कट	बानर

मनाग	थोरिक
मयंक	चंद्र
महीधर	पर्वत
मध्यदिवस	दोपहर
मनियारा	मनियुत्त
मनसा	इच्छा वा मन
मसि	स्याही
मष्ट	चुप
मरकत	नीलमनि
मनसाहिँ	मनबिषैं
मधुपर्क	दधिमधुघृतकांस्यपात्रमें मिलाहुवा
महिषी	भैंस वा पटरानी
मनमारे	उदास
मलान औ मलिन॥	मैला वा उदास
मध्यम औ मध्यगति	उदासीन
मइके	माताकोघर
मक	बरुक
मसक	मछर वा बिलार
मघवा औ मघवान।	इंद्र
महोष	पछीबिशेष
मत्सर	ईर्षा
मयत्री	मित्रता
मत	सलाह

मर्दि	मलिकै
मझारी	भीतर
महान	महत्तत्व
मनुसाई	पुरुषारथ
मनुजाद	राक्षस
मकरी	मछरी
मज्जा	चरबी
महागद	बड़ारोग
मयूख	किरन
महति	बड़ी
मृगाधीस औ मृगराज औ मृगपति	सिंह
मर्मी	भेदी
मृगया	सिकार
मृदु औ मृदुल	कोमल
मृगमद	कस्तूरी
मृषा	झूठ
मृगजल	मृगतृष्णाकोजल
मृनाल	कमलकीजड़

९०

शब्द
मा·

मानिक	सामान्यसें जवाहिर वा लाल॥
माषी	पछी वा सहत
माहुर	बिष
माया	त्रिगुणाशक्ति वा कपट

	वास्या)	माँ	मोकहँ
मालव	सजलमालवादेश	शब्द	३०
मारुत	पवन	मि॰	(रिक
मानस	तलाबवामन	मिति	अंतवामर्यादावायो
माल	समूहवाकुश्ती }	मिथिला	नगरी
	वाजवामाला }	मिस	बहाना
मासा	महीना	मिलित	जुक्त
माला	पंगतिवाफूलआदकी	मिथिलेस	जनककीरानी
मानसमूल	सरजू	मिच	मौन
माधुरी	मिठाई	मीन	मछरी
मारीच	राच्छसबिशेष	मीला	मिलके
माष	क्रोध	शब्द	८
मान्यता	पूज्यता	मु॰	
मार	कामवामारना	मुकुर	दर्पन
मात्र	ओहाभर	मुदित	हर्षयुत
मानसिक	मनद्वारा	मुक्ताओ }	मोती
माजा	नया वर्षाजलकाफेन	मुक्ताहल }	
माषी	मतवारी	मुनिंद	मुनिमुख्य
माया	व्यापा	मुनिपट	वलकलके कपड़ा
मातहिं	मतवार	मुकुंद	मुक्तिदाता
मायिक	मिथ्या	मुखर	शब्दवाचकवादी
मान	अहंकार	मुद्रिका	मुंदरी
मायापति	रामजू	मुठभेरी	नगीचसे
मारुति	हनूमान	मुनिराज	बसिष्ठ
मातलि	इंद्रकोसारथी	मुधा	झूठ
मारगन	बान	मुनिबर	शुकाचार्य
माँझ	बीच	मुखागर	जुबानी

मूक	गूंगा
मूल	जड़वाकारनवापूंजी
मूलक	मूली
मूरि	जड़ीवामूलजमा
मूषक	मूषा
शब्द	१९
मे·	
मेरु	सुमेरुपर्बत
मेकलसैलसुता	नर्मदानदी
मेधा	बुद्धि
मेली	डारी
मेचका	स्याम
मेदनी	पृथिवी
मेघडंबर	छत्रबिशेष
मेष	मेड़
मेषला	करधनी
मेंडुकनि	भिंजुका
मेना	पार्बतीकैमाता
मैनाक	पर्बतबिशेष
शब्द	१२
मो·	
मोद	हर्ष
मोह	अग्यान
मोचन	छोरना
मोरपंछ	मोरकीपांष
मोदक	लड्डुवा
मोहमय	रूठौं
मोई	मोही
मोरछुति	हमरीओरसे
मोलि	मौंथा
शब्द	९
मं·	
मंजुल	सुंदर
मंद	नीचवाधीरेवाअभागीवामूढ़ ॥
मंदाकिनि	गंगाजू
मंडलीक	मंडलेश्वरराजा
मंत्र	रामतारकआदिवासलाहवाउपदेश
मंदर	मंदिराचल
मंच	तषतपोष
मंडली	समूह
मंडल	चौरसवातेज
मंगलद्रव्य	दुग्धादि
मंजीर	पाँवकाभूषनपायजेबादि ॥
मंत्रराज	रामतारक
मंडन	भूषन
मंदतर	अतिनीच
मंडित	भूषित
शब्द	१५
सबशब्द	१८३
य·	
यदु	यदुसमय

यावत्	जबतक	रवनि	स्त्री
ये	येवायह	रतनारे	लाल
यं	जेहिकों	रदपट	ओंठ
सबशब्द	४	रनिवास	स्थान रानीआदिवाजननाना
र॰		रघुनाथऔ	दशरथजू रामजू
रमन	पतिवाव्यापकवाक्रीड़ा	रघुराज ॥	
रवि	सूर्य	रजायसऔ	आज्ञा
रजनि	राति	रजाई	
रज	धूरि	रहसि	हर्षवा एकांत
रविनंदनि	जमुना	रसना	जीभ
रति	प्रीतिवाकामकीस्त्री	रट	बोलना
रसिक	रसज्ञाता	रथांग	चकई चकवा
रजधानी	राजस्थान	रसा	पृथिवी
रमा	लक्ष्मी	रवनु	पति
रम्य	सुंदर	रविमनि	सूर्यकांतमनि
रन	जुद्ध	रंग	रंग
रसाल	मीठवाआमकावृक्ष	रच्छक	रखवारे
रहस्य	गुप्ततत्व	रहा	रहगया
रस	बिषयवासार	रथी	रथयुत
	वाबलवामधुरादि	शब्द	३८
	६ वा शृंगारादि	रा॰	
	८ वा प्रेम ॥	राशि	ढेरवासमूह
रज्जु	डोरी	राहु	ग्रहविशेष
रजत	चाँदी	राता	प्रीतियुत
रद	दाँत	राऊ	राजा
रव	शब्द	राजीव	कमल
रय	बेग	रार	झगरा

राय	राजा वा धन	रु॰	
राजन	सोहत	रुज	रोग
राकेस	पूर्णचंद्र	रुह	उत्पन्न
राना	लगा	रुष	सन्मुख वा क्रोध वास्याकोनगर
राजे	प्रसन्न		
राजी	पंगति वा शोभित वा प्रसन्न ॥	रुंड	धड़
		रूरी	सुंदर
राजति	सोहति	रूंभरु	काग के षाँवाँ
राउर	राजमंदिर वा आपका	शब्द	६
राउत	सरदार	रे॰	
राजनय	राजनीति	रेख	गिनती वा लकीर
राका	पूर्णमासी की राति	रेनु	धूरि
रासभ	गधा	रेस	ईरषा
रामायुध	धनुषबान	रेना	बालू
रायमुनी	लालनाम पछी	रेंगाई	चलाई
शब्द	२०	शब्द	५
रि॰		रो॰	
रिपु	बैरी	रोष	क्रोध
रिपुसूदन	शत्रुघन	रोदति	रोवति
रिसानी	क्रोध	रोदन	रोवना
रितुराज	बसंत	रोचन	गोरोचन वा रुरदी।
रिषि	सूक्ष्मदरसी	रोमपाट	कंबलादि
रिझ	हरषित	रोहिनि	चंद्रस्त्री
रिषिनायक	अत्रि	रोरु	रोकना
रिछेस	जामवंत	रोनाई	राउतपना।
रीते	खाली	शब्द	८
शब्द	९	रं॰	

रंक	निर्धन	लकुट	लकड़ी
रंजनि	हर्षदेनहार	लवनसिंधु	षारीसमुद्र
रंध्र	छेद	लघुतापस	लछमन
रंगभूमि	धनुषयज्ञभूमि	लटत	मुरत
रंतिदेव	राजाविशेष	लच्छ	लाष
शब्द	५	शब्द	२४
सबशब्द	९५	ला॰	
ल॰		लाहू	लाभ
लषहिं	देषहिं	लावन्य	शोभा
लगि	वास्तेवातकवाअवलंब	लालसा	इच्छा
लछि	लछमी	लाघव	शीघ्रवाहलका
लघु	छोटवाहलकावथोड़ा	लाधे	पाए
लय	चितवतिकानास	लाजा	लावावालज्जा
लघुता	हलुकाई	लाई	वास्ते
ललित	सुंदर	लाली	दुलारी
ललाट	माँथा	लाटी	तारुआदिस्थै
लव	अंसवाअल्पवाकाल	लागू	आधार
लषाउ	चीन्हवाजानना	लावक	लवा
ललाम	श्रेष्ठवारतन	शब्द	२१
लवा	पक्षीविशेष	लि॰	
ललना	स्त्री	लिलार	माँथा
लहकौरि	लघुगिरास (कौ	लिलहिं	बिनाश्रम (नती
लवाई	नईव्याईगौवालिवाइ	लीका	मर्यादावारेषावागि
लछ	निसानावालछनवाव्र	शब्द	३
लवन	नोन (षना	लु॰	
लषन	लछनवालक्ष्मणवादे	लुब्ध	लोभी
लसत	सोहत	लुठत	लोटत

लूक	तारा	सरोरुहओसरो	कमल
शब्द	३	जओसरसी	
ले॰		रुह ॥	(कारंद
लेषा	रेषावास्वतावा	सरस	सप्रेमवासहितवाम
	रेषावाहिसाब।	समन	नासवायम
		समाज	सभावासमूह
लेप	घोरिक		
लेषई	देषई	सरसई	सरस्वतीनदी
लेषति	षोदति	सद्य	जलदीवातुरतका
शब्द	४	सत	साधुवाअविनाषी
			वासौ१००वाश्रष्ठ
लो॰			
लोक	संतानिकआरवाजगत	सठ	मूरख
लोलुप	लंपट	समान	बराबरवाप्रवेश
लोई	लोग	सरिस	बराबर
लोगाई	स्त्री	सरल	सूधावासग
लोनाई	सुंदरता	सति	सूधा
लोला	चंचलता	सहसबाहु	सहस्रभुजराजा
लोबा	लूंबरी	सहसाषी	हजारआँषिवा
			गवाहसहित॥
लोना	सुंदर		
लोकप	इंद्रादि	सहस	हजार
लोचन	आंष	सक्र	इंद्र
लोह	लोहावाशस्त्र	सजीव	सुषसेजीनावा
			प्रानसहित ॥
लौका	तूमड़ी		
		ससि॰	चंद्रमावाषेती
शब्द	१२		
		सदन	घर (ता
सबशब्द	५१		
		सर	तलाववाबाणवाचि
स॰			
सकल	सबवाविद्यायुक्त	सरिओसरित	नदी
	वासावयव॥	सकृत	एकबारवाएक

सहज	सुभावतैं	सही ९ल	निश्चय
सखर	खरात्तससहित	सर्बदाऔसर्बदा	सबदिन
सचेता	सावधान	सचु	आनंद
सहित	हितसमेतवासंग	शव	मुरदा
सनकादि	सनकआदि४	सपदि	जलदी
	ब्रह्माकेबेटा॥	सत्यलोक	ब्रह्मलोक॰
सगलानि	निरादरसेवाहर्षबिनु	सतरूपा	मनुकीस्त्री
सचिव	मंत्री	समीर	पवन
सहम	डरवाबेसुध	समीती	मिताई
समसील	बराबरसुभाउ	समय	कालवाआछेदिन
समदरसी	बराबरसबकोदेखना	सनाथ	स्वामीसहितवाकृतार्थ
सद	श्रेष्ठवाबैठेवाले।	सहरोषा	उत्साहवारोषसहता
सरद	रितुबिशेष	सहाया	साथवासहायक
समस्तऔसर्बे	सब	सतानंद	पुरोहितजनकजीके
औसगरे॥		सक	संदेहवासमर्थ
सकिलि	बटुरिकै	सरासन	धनुष
सप्त	सात७	सयन	सोवनावासय्यावाइसारा
सलिल	जल	सजग	सावधान
समुहानी	सन्मुख	सनाह	बखतरवापतिसहित
सती	पतिव्रतावादक्षकीपुत्री	सलभ	पतंग
सर्बज्ञ	सबजनैया	सरुष	क्रोधसहित
सभीत	डरजुत	ससऔससक	ससा
शक्ति	बलवास्त्रीवाबरछी	सकाती	सकुचाती
समीप	नेरे	सरबरि	बराबरि
सगर्भ	तात्पर्यजुत	समिध	लकड़ी
सदाचार	श्रेष्ठवाआचार	सम	बराबरवातासरात्या
समुदाई	समूह		गवारागद्वेषरहित

सकाना	डरा	सजीवन	तयारी
सयरव	गाँठसहित	सनकारे	इसारे
सरासुर	बानासुर	सरीसाखो }	ऐसा वा समान
सरौंकरैं	डंडकरैं	सरिसा। }	
सरुजा	जलदीवा हठवा }	सकेलि	बटोरि
	बिचारबिनु॥ }	सलोक	जस
सची	इंद्राणी	ससिरस	अमृत
सदेव	हमेस	समर्पै	सौंपना
सह	समेत	सहसानन	सेसनाग
सरपि	घीव	सरितमूल	हृदवापर्बत
सकुनि	पछी	समीहा	कायादि३काव्यौहार
सपरि	पूजकै	सःसिन्ह	सनसी
सजनी	सखी (चरी	सन्निपात	त्रिदोष
सहेली	उपालंभादीबिनासह	सपेला	साँपकाबच्चा
सपथ	सौगंद	समास	संक्षेप
सत	सैं	सहोदर	एकपेटको
सजाई	दंडवासाजना	सकरुन	दीनतासहित
सचान	सिकरा	समररस	बीररस
सहगामिनि	सती	सपच्छ	पाँखसहित
सगाई	नाता	सरेन	बानकरकै
सरुय	रुयासहित	सच्चरित	अच्छीरहनि
सलोने	सुंदर	सर्ब	सबरूप
सरवरी	राति	समागम	सभा
सरुज	रोगजुत	सम्यक	अच्छीभांति
सय	सौ १००	सप्तावरन	प्रकृतिआदिकै७आवरन
सबीज	बीजादारसहित	सर्माधि	सुषवाथिरता
सई	नदीबिशेष	सतपंच	सातवापाँच

स्रम	मिहनतवाथकजाना	साबर	किरातबेषमेंशिव कृतामंत्रादि ॥
स्रमित	थका		
स्रवन	कानवासुनना	सायक	बान
स्रवत	गिरतवाबहत	साली	धानवासोभायुत वासंयुक्त ॥
स्रजत	रचत		
स्रग	फूलमाला	साज	सामग्रीवासजब
स्रमबिंदु	पसीनाकेबूंद	साल	डुखवासोभावाघर
सुकाल	सिग्रार	साबक	बच्चा
सृषि	संसारवाउत्पत्ति	सागर	समुद्र
स्वच्छता	निर्मलता	सानी	मिली
स्व	आपन	साध्य	साधैजोग
स्वयंभूमनु	मनुराजाबिशेष	सारंग	धनुषवाभ्रमर
स्वयं	आपइवास्वतंत्र	साधु	सज्जनवाअच्छा वामुमुक्षु ॥
स्वपच	चांडाल		
स्ववसऔस्वछंद	पराधीननहीं	सोरुजी	दरोगा
स्वल्प॥	छोटवाथोड़ा	सावकरन	स्यामकानयुत
स्वसेव्य	आत्मरूपसेव्य	सामध	समधीमिलन
स्मरामहे	ध्यानकरतेहैं	साषोचार	बंसपरंपराकहना
शब्द	२५३	साढ़साती	सनीचरीदसा
सा·		सारा	पालनपोषनवाकिया
साधक	साधनयुक्त	सान	बाढ़धरैकीवा मिलनावामान
सादर	आदरसमेत		
साधन	उपाय	सारस	पछीबिशेष
साकबनिक	कुंजड़ावाबिसाती	साउज	मृगा
सारी	मैना (हार	साधुमत	सिष्टचार
सारद	सरस्वतीवासारदनि	सावकास	कामसेंछुट्टी
साषा	डारवाबहुबिधिबिचा	सास्वतं	अमरं

सालक	डुमदाई	सिरजा	रचा
सापत	सरापदेत	सिवा	पार्वती
सारदी	सर्दरितुमेंजोहोवस्त	सिसिर	रितुबिशेष
साथरी	आसनी	सिराहिं	बीतत
साखामृग	बानर	शिव	महादेववाकल्यान
सायुज्य	ब्रह्मलीन	सिद्ध	अणिमादिसिद्धवा लावासाँधावायु क्तवारसोईका।
सारेकू	कोरेकू		
स्वाती	नक्षत्रबिशेष		
स्वामी	मालिकवाराजा	सिसु	लड़का
स्वान	कुत्ता	सिधारी	गई
स्वारथ	सेवा	सिरनी	बीती
स्वागत	कुसलसेआये	सिषा	चोटीवादियेकीलौ
स्वामिधर्म	राज्यपालन	सिन	सफेद
स्यामल	स्यामरंग	सिरस	सरीसवृक्ष
स्यामा	चिड़ियाबिशेष वा१६वर्षकीस्त्री	सिमिटे	इकट्ठे
		सिवसैल	कैलास
सासति	दंडवापीड़ा	सिखनी	मोरनी
सांई	स्वामी	सिविका	पालकी
सांधा	मिलाया	सिहाहीं	देषकेराजीहोना वाअभिलाषयुत।
सांति	ग्रहशांतिआदि वाचित्तकी॥	सिथिल	ढीले
शब्द	४९	सिवि	राजाबिशेष
सि·		सियरे	जूड़े
सिद्धि	अनिमादि८वा कार्यकीसिद्धि	सिष	सिष्यावासिष्य
		सिल्पि	कारीगरी
सियनि	सीवना	सिलीमुष	बानवाभ्रमर
सिय	सीताजू	सिस्न	लिंग

सिखवै	ठढाकरै	सुअंजन	सिद्धांजन
सिकता	बालू	सुजान	चतुर
सिगरौर	शृंगबेरपुर	सुजन	साधु
सिंधु	समुद्र	सुरसरिश्री	गंगाजीवामंदाकिनी
सिंधुर	हाथी	सुरसरिता	
सिसुपा।	सीसोवच्छवा	सुलभ	सुगम
	सरीफातरु ॥	सुहाई	सुंदर
सिंघल	उपद्वीपविशेष	सुमन	फूलवासुंदरशोभा
सीयी	सुनही	सुरा	मदिरा
सीदहिं	दुखीसोंहि	सुधा	अमृतवाजल
सीकर	बूंदछोरी	सुधाकर	चंद्रमा
सीत	पालावाठंढा	सुभाउ	संसकारवासुंदरभाउ
श्रीफल	नारियलवाबेलफल	सुक	सुगावाशुकदेवमुनि
श्रीपति	बिष्नु	सुरभि	गैयावासुगंध
श्रीरंग	लक्ष्मीपति	[illegible]	बेरा
श्रीबत्स	लक्ष्मीकाचिह्न	सुभग	सुंदरवाऐश्वर्य
श्री	सीतावालक्ष्मीवा	सुठि	अति
	धनवाशोभा ॥	सुकेतु	जच्छविशेष
सींव	हद्द	सुकंठ	सुग्रीव
शब्द	४५	सुकृती	धर्मात्मा
सु०		शुक्र	बीर्यवाशुक्राचार्य
सुमिरत	ध्यानकरत	शुचि	पवित्र
सुभगुन	ज्ञानबैराग्यादि	सुचाई	सुधाई
सु रुचि	सुंदररुचि	सुआर	रसोइया
सुबास	सुगंधवाजस	सुनासीर	इंद्र
सुकृत	पुन्यवासुंदरकरनी	सुपास	सुषवासुविस्ता

सड़ुकि	कोड़ामारिकै	सुबह	सड़क
सुघटित	सुंदररचे	स्रुवा	होममेंकाष्ठपात्रबिशेष
सुदेस	सुंगवासुंदरदेश	स्रुति	वेदवाकानवासुनना
सुषमा	परमशोभा	स्फुरत	प्रकाशत
सुभुज	सुबाहुदैत्य	सुंदरी	स्त्री
सुररूप	मंदारआदि ५	सूकरखेत	बाराहक्षेत्र
सुराई	सूरता	सूचक	जनावत
सुषेन	सुषसे	सूप	दालवाछाज
सुषासन	सुषपाल	सूत्रधर	पुतलीनचैया
सुबेल	समुद्रतटवापर्वत]	सूल	दुखवात्रिशूल
	वासुंदरकाल।)	सूचवओसूचत	जनावत
सुबासिनि	सुहागिनि	सूपकारक	रसोइया
सुरंगा	पीतवालाल	सूनु	पुत्र
सुरसेनप	कार्तिकेय	सूत	सारथीवापुरान }
सुनयना	जनककीस्त्री		सस्कृतिकरैया }
सुमंत्र	मंत्रीवासलाह	शब्द	१२
सुवन	पुत्र	से०	
सुरसर	मानसर	सेष	नागवाघोरिकवाबाकी
सुहृद	मित्र	सेतु	पुलवा बांधवामर्याद
सुरमनि	चिंतामनि	सेनप	सेनापति
सुदेसे	सुवस्तुप्रतिपादक	सेवी	सेवाकरैया
सुस्मृति	स्मृतिग्रंथ	सेला	बरछी
सुगाइ	लगाइ	स्रेनी	पंगतिवासमूह
सुरवीथी	देवमार्ग	स्वेद	पसीना
सुकर्कश	अतिकठोर	सैल	पर्बत
सुचिंतित	अतिबिचारित	सैलराज	हिमाचल
सुभ्र	सुपेद	सैलजा	पार्बती

शब्द	२०	संबुक	घोंघा
सो·		संबल	राहखरचा
सोपान	सीढी	संभव	जन्म
सोन	सोनभद्रनदवा	संपन्न	जुक्तवाधनी
	लालवासोना।	संभूतऔसंजात	उत्पन्न
सोह	सोभा	संयुग	जुद्ध
सोपी	सोभी	संधाने	जोरे
सोनित	लोहू	संकुल	पूरन
सोचनीय	सोचैजोग	संभ्रम	बेगवाभ्रमवाउत्साह
सोधेउ	खोजेउ	संदोह	समूह
सोधा	शुद्धकिया	संयोगा	उपाय
सोवत	सुषुप्ति	संघट	संयोग
सोम	चंद्रमा	संमत	सलाहसें
सोर	अवाज	संपुट	जोरकैवाउच्चा
सोपि	मिथ्याभी	संसृति	संसार
सोहमस्मि	सोब्रह्ममैंहौं	संभावित	बहुमान्य
सौमित्रि	सुमित्राकाबेटा	संग	संबंधवाराग
सौरभ	आँबकारस	सं	कल्यानवानीक
सौच	दंतधावनादिवाशुद्धता	संकट	मूर्छावाबिपत्ति
सौध	मंदिर	संसर्ग	संगति
सौरज	सूरता	संकर	मिलवाँवाशिव
सौधाँई	सुकाल	संकाश	तुल्य
शब्द	२९	संघर्षन	रगर
सं·		संजम	नेमलेना
संतत	निरंतर	शृंग	सिखर
संग्रह	अंगीकार	स्यंदन	रथ
संपात	समूहवासंबंध	शब्द	३०

सबशब्द	३१८
ह०	
हरि	बिस्नुवारुद्रवा बानरवाघोड़ा
हर	संघारकाशिववा चोरीवाकाटनो
हलधर	बलदेवजी
हस्त	हाथ
हर्ष	रोमांचयुत
हरु	हलका
हते	मारवानष्ट
हय	घोड़ा
हयगृह	घुड़साल
हकारवा	बुलावा
हवि	घीरवासा[illegible]
हरित	हरारंगयुत
हरद	हरदी
हने	मारवाबजाए
हरिचंद	राजाबिशेष
हरास	दुषवासोक
हरति	संहारति
हव्यवासक	अगि
ह	कष
हरगिरि	कैलास
हहरि	घबराइवौ
हरी	बुराई
हरियाना	गरुड़
हह	प्रकास

हरुवाई	हलुकाई
हनत	मारत
हई	नास
हए	मारे
हयो	मास्यो
हृच्यानकेत	काम
हनू	हनुमान
हृद	अगाधजलावाहृदय
हृदयेशा	अंतर्जामी
शब्द	३३
हानि	नुकसानवानास
हाटक	सोना
हा	दुषवानास
हांनी	नास
शब्द	४
हि०	
हिय	हृदयं
हित	मित्रवाभला
हिमउपल	बनौरी
हिमका	चंद
हिम	रितुबिशेषवापाला
हिमशैलश्री हिमवंत॥	हिमांचल
हिसिषा	बराबरी
हि	निश्चय
हिहिनाह	गांगयान
हिस	[illegible]
हिंसा	[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिये	हृदयको	क्षतज	लोहू
हीवे	हवके	शब्द	१
शब्द	१४	त्रसित	डरयुत
हु॰		त्रयरेखा	त्रवली
हुलसी	सखीवातुलसीदासकै माता	शब्द	२
हुलासु	आनंद	त्राता	रक्षक
हुमगि	कूदकै	त्रासक	भयदेनहार
हुते	होते	त्रास	डर
हुनर	चतुराई	त्राहिऔत्रातु	रक्षाकीजै
शब्द	५	शब्द	५
हे॰		त्रि॰	
हेतु	कारनवाप्रेमवाप्रयोजन	त्रिविध	सात्विकादि३वामनक्रमवचन
हेरि	देखवाषोजवाबिचार	त्रिपुर	दैत्यविशेष
हेला	क्रीड़ावाअनायास	त्रिय	स्त्री
हेम	सोना	त्रिपुंड	तीनरेखाकातिलक
होति	होती	त्रिकाल	भूतभविष्यवर्तमान
शब्द	५	त्रिशंकु	राजाविशेष
हं॰		त्रिविक्रम	विराटस्वरूप
हंकारी	बुलाइकै	त्रिधा	तीनविधि
हंस	पक्षीवासूर्य	त्रोन	तर्कस
शब्द	२	सबशब्द	१६
सबशब्द	६३	ज्ञान	शास्त्रसमया
ज्ञ॰		ज्ञाति	जातिकेलोग

दो॰ संस्कृतभाषापारसीदिसिदेसकेबोलसमुझि सुनाथयामतिनिर्मित
कोशअलोल १ आखरथोरकबरदपदअर्थघनराखैचोर।तौरज्ञोरतःहित
कलितकोसकोसंसिरमोर २ द्वैहजारअरुसातसैतापरसैंतालीस। शब्दधरे
याकोसमेंपायकृपाजगदीस ॥ ३॥ इतिकोशअंगसमाप्त ॥राम

श्रीगणेशायनमः॥

अथबिश्रामप्रसंग प्रारंभः॥*॥

बिश्रामप्रसंगनामधरयोताकोहेतुयेहैबिषयकआपकेआकाशमहँमनभट।
कानिमित्त।याहिमूउत्तरबिचारमगप्रेरककरथिरप्रसंग १ अथरामायनके
परमार्थपक्षकोबिचारयेहै।रामायनद्रुममोक्षफलगायत्रीगउबीचरामसुर
त्नाअंकुरिनबेदमूलसुभबीज।२।बेदबेद्यपरपुरुषमोदशरथतनयकुमार।
बालमीकतेंबेदभोरामायनअवतार ३ कुंभजमुनिनिजसंहितामाहींकह्यो
अनूपरामायनअ बेदकोभिन्ननजानोरूप ३ भक्तमालबरग्रंथमोंकीन्हेय
हनिर्धार बालमीकतुलसीभएकलिजीवनिस्तार ४ बेदमूलहद्दतेंचलीकथा
भूमिकेद्वार।आनमत्तानतरंगिनीपानकरतसुषसार ५ बार्ता यातेंगूढाशयबेद
रूपयहरामायनकथाभागतेंसगुणलीलाप्रतिपादनकरतुहै।अरुअंतस्था
सयतेंपरमारथपक्षरेश्वर्यदृष्टिपाइकैकहतहै यथा मानुषदेहब्रह्मांडजानोप्र
वनमार्गसोइलंकदुर्गसोमनरूपमयासुरनेरच्योहैनानामनोरथतालंकामोंसुंदर
मंदिरसमूहजानोअबिद्यासमुद्रहैसोरागद्वेषआदिमकरनक्रसर्पनतेंपू
र्णभयंकरबिनीर्णअथाहआति [illegible] हैअनेकसंकल्पबिकल्पतामेंभवर
हैबिषयआसाअंबकतरंगहैंमोहरावनहैअहंकारवाकोभाईकुंभकर्नहै
काममेघनादहैक्रोधदेवांतकगर्बनरांतकलोभमहोदरदुष्टमत्सरअतिका
यबीरहैकपटअकंपनद्वेषदुर्मुखबीरमदशूलपाणीदंभमहापार्श्वअधर्म
दूषनअसत्यकुंभहैपाषंडनिकुंभहैअसत्संग१आलस्य२बिक्षेप३आदिमोह
रायकेमंत्रीजानोसतरजतमगुणसेनापतिजानोअजसअनर्थभ्रमसंसयधू
म्राक्षयूपाक्षशोणिताक्षइत्यादिमुख्यबीरयथायोग्यजानोबिद्यामदधनमद
आदिअनेकमोहरावनकेराक्षससेनाहैममतासूपनखाअसतबासनालोलुप
ताईर्षाहिंसातृष्णाअश्रद्धाआदिअनेकमोहभूपतिकीरानीहैंअषनाधृष
नाचिंताकृपणताकामनाअनेकबिषयआसाआदिअनंतराक्षसीजा
नोजीवबिभीषणहैसोदुषनकेसमूहमोंचिंताग्रसितबसतुहैरहांवि
बेकरामजूबिचारलक्ष्मणवस्लबिद्यासीताजूज्ञानदशरथभक्तिको
शिल्पाबिषयबनभंजनिहारअरुअक्षहंतालंका

इहूनमें प्रवीन जो बैराग्य सो हनूमान जानो धर्म सुग्रीव १ सत्य अंगद २ सत्तसंग जांबवान ३ सील नील ४ संतोष नल ५ धीरज केसरी ६ अभ्यास गंधमादन ७ जपतप संजम श्रवन निदिध्यासना आदि को मोह के सब सावधान कुमुद १ द्विविद २ मैंद ३ सरभ ४ गंज ५ गवाक्ष ६ गवय ७ ऋषभ ८ सुषेन ९ बेगदर्शी १० आदि बानरा भानु बीर यथायोग्य जानो यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारना ६ ध्यान ७ समाधि ८ आदि रिछ जानो मोह लंके शतें सब समीन अरु दुषी। इति संक्षेपः दो॰ चल्यो महादल साजकैं नृप बिबेक रतिबीर॥ पहिर कवच अध्यात्म शास्त्र को अचल महा रनधीर १ सैन साज इत मोह नृप अघोरन भू धाय। आनि बिचित्र सब सुभट सुन मंत्री बंधु सहाय २ ठाढो भयो बिबेक नृप मनसा भूमि मझार बहुत सुभट झूझे जहाँ चली रुधिर की धार ३ बार्ता तब असत्संग मंत्री के मंत्र तें मोह नृप अहंकार को जगाइ कै रनभूमि में पठायो सिंहनाद करत महासेना लेइ चढ्यो ता समय महा कोलाहल भयो बैराग्य सत्य धर्म आदि सब बीरन को घायल करि बिबेक राय सों महा युद्ध करत भयो तब बिबेक राय आत्मचिंतन सर तें अहंकार को सिर काट गिरायो तब सेना में महा हाहाकार भयो दोहा समाचार सुनि मोह नृप झुर्यो निपट उदास। सोक अगनि उर में जरत दीरघ लेत उसास १ बार्ता। उततें मोह को सुत महाबली अति धूर्त मदन बीर महासेना लेइ चढ्यो इततें बिबेक राय की आज्ञा तें बिचार कुंवर बैराग्य सत सील आदि बीर सेना ले चढ्यो परस्पर महा युद्ध भयो मदन सोषन उच्चाटन आदि अनेक बानन तें बिचार कुंवर को मार्यो ता पीछे असत बासना बरछी उर में मार के बिचार को मूर्छित कियो दोहा तब बैराग्य बिचार को दीनो मतो अनूप अहो बंधु सोचन कहा बोध शुद्ध स्वरूप १ जग मिथ्या रज्जु सर्पवत सत्य ब्रह्म निर्धार छुद्र अनंग न चित धरो हरो अनंग बिकार २ बार्ता तब बिचार बीर सावधान होइ कै मदन को ललकार्यो दोहा रे निलज्ज पापी कुटिल दुरबुद्धि धिक तोहि कहा बसत लै बस करन लेत कृपन जन मोहि १ बार्ता या रीति तें परस्पर प्रचारत पुनः महा युद्ध भयो तब बिचार बीर ने मदन महाभट को मार गिरायो दोहा समाचार सुन मोह नृप भयो सु निपट अधीर हृदय दाह अतिसय भयो बिलपत कंप शरीर। गई आस मोहि राज्य की मरो पुत्र बर बीर कुल मंडन अति काम सो दूजो बीर न धीर २ बार्ता तब अधर्म अरु असत्संग आदि मंत्रिन के मंत्र तें सजगाइ कै मोह नृप नें

रायसोंमहायुद्धकरतभयो दो॰ उभयजुद्धभोपरस्परसोबरन्यौनहिजात ॥ क्रोब
हरनताबिबेकनरपकानहूमोहसकात ।५ राजामोहबिबेककोयुद्धभयोब
हुकालनृपबिबेकबलअधिकलहिभोअनमोहबिहाल २ अंतकमननिध्यास
बरनिजआयुधलैरायगुरवाक्तिबचनप्रमानसरहनेमोहकेमाथ ३ मरोदेषिन
पमोहकोबहुतेककरकपराइ बहुतसुभटजूझेतहाँपाछेंधरयोनपाय ४ बार्त्ता
मोहनृपतिकोरनभूमिमोंमरोदेषि ममताचिंतातृष्णाईरषाआशानारिअरुसोक
जुतबिलापकरतभईंयहाँ दोहा सत्यसीलबैराग्यलौंमुक्तिसकलपरिवार ।
सुरनरमुनिजयजयकियोबाढेमोहअपार १ बार्त्ता जीवस्वराज्यपायो तब
धर्मसत्यबैराग्यादिबीरनसहितअरुविचारबंधुसहितबिबेकरायब्रह्मबिद्या
लैकेनिजराजधानीमोंअकंटकराज्यकरतभयोबिबेकचक्रवर्तीभूपतिकोज
बतेंप्रतापरबिउदयभयोतबतेंकालकर्मगुनस्वभावकृतदोषदुषकाहूकोनभयो
तीनोंलोकमोंप्रकासभयोतमकहूंनरह्योअबिद्यानिसानासभईअघउलूकछिपग
एक्रोधादिकैरवसकुचेमत्सरमानादिचोरनकोअभावभयोसुषसंतोषादिको
कगराबिगतसोकभए प्रबोधचंद्रोदयनाटकआदिसद्ग्रंथनकेसंमतसेयहप्र
मारथपच्चअतिदृढ परमप्रमाणिकजानो औरनाटकअनेकदोषगुणकेप्रधा
नताकरके यथाबिबेकमोहादिकरकेनामअनेकतानाममेंशंकानचाही ।
॥ ॥ इतिप्रमाणश्रीतुलसीकृतबिनयपत्रिका ॥ ॥ यथादेवदेह
अवलंबककरकामलकमलारमनदमनदुषसमनसंतापभारीज्ञानराकेशग्रास
नबिधुंतुदस्लनकामकरिमत्तहरिदूषनारी १ देववपुषब्रह्मांडसुप्रवृत्तिलं
कादुर्गरचितमनदनुजमयरूपधारी बिबिधकोसौघअतिरुचिरमंद
रनिकरसत्वगुनप्रमुखत्रयकटककारी २ देवकुनयअभिमानसागरभयंकर
घोरबिपुलअवगाहदुस्तरअपारंनक्ररागादिसंकुलमनोरथसकलसंगसंक
ल्पबीचीबिकारं ३ देवमोहदशमौलितद्भ्रातअहंकारपाकारिजितकामवि
श्रामहारी लोभअतिकायमत्सरमहोदरदुष्टक्रोधपापिष्टबिबुधांतकारी
४ देवद्वेषदुर्मुखदंभषरअकंपनपरदर्पमनुजादमदशूलपानीअमितबल
परमदुर्जयनिशाचरचमूसहितषड्वर्गजोजातुधानी ५ देवजीवभवअंघ्रिसेवक
बिभीषनबसतमध्यदुष्टाटवीग्रसितचिंतानियमजमसकलसुरलोकलोकेश

लंकेसबसनाथअत्यंतभीता ६ देवदीनउद्धारनरघुबर्यकरुनाभवनसमनसंताप
पापौघहारीबिमलबिज्ञानबिग्रहअनुग्रहरूपभूपबरबिबुधनर्मदखरारी देव बिस्व
बिख्यातबिस्वेशबिस्वायतनबिस्वमर्यादब्यालारिगामीब्रह्मबरदेवबागीस
ब्यापकबिमलबिपुलबलवाननिर्बानस्वामी २ देव सर्बमेवात्रत्वद्रूपभूपाल
मनिव्यक्तमव्यक्तगतभेदबिस्नोभुवनभवदंसकामारिबंदितपदद्वंद्वमंदा
किनीजनककृजिह्मो ३ देव प्रकृतिमहत्तत्वशब्दादिगुणदेवताव्योममरुदग्नि
अमलांबुउर्बीबुद्धिमनइंद्रियप्रानचिंतातमाकालपरमानुचिच्छक्तिगुर्बी ४
देवआदिमध्यांतभगवंतत्वंसर्बगतमीशपश्यंतिजेब्रह्मबादी जथापटतं
तुघट मृत्तिकासर्पस्रगदारुकरिकनककटकांगदादी ५ देव गूढगंभीरग
र्बघ्नगूढार्थबितगुह्यगोतीतगुरुज्ञानदाताज्ञेयज्ञानप्रियप्रचुरगरिमागारघो
रसंसारपरपारदाता ६ देव सत्यसंकल्पअतिकल्पकल्पांतकृतकल्पनाती
तअहितल्पबासी।बनजलोचनबनजनाभबनदाभबपुबनचरध्वजकोटिलाव
ण्यरासी ७ देव सुकरदुष्करदुराराध्यदुर्व्यसनहरदुर्गदुर्द्धर्षदुर्गार्तिहर्ता बेद
गर्भार्भकादभ्रगुणगर्बसर्बोकपरगर्बनिर्बापकर्ता ८ देव भक्तअनुकूल
भवसूलनिर्मूलकरतूलअघनामपावकसमानं तरलतृष्णातमीतरनिधर
नीधरनसरनभयहरनकरुनानिधानं। ९ देव बहुलबृंदारकाबृंदवंदारुप
द्वंदमंदारमालोरधारी पाहिमामीशसंतापसंकुलसदादासतुलसीप्रनत
रावनारी १० देव संसारकांतारअतिघोरगंभीरघनगहनतरुकर्मसंकुलमुरारी
बासनाबल्लिखरकंटकाकुलबिपुलनिबिडबिटपाटवीकठिनभारी ११ देव
बिबिधचितवृत्तिखगनिकरसेनोलूककाकबकगृध्रआमिषअहारीअखिल
खलनिपुनछलछिद्रनिरखतसदाजीवजनपथिकमनखेदकारी। २ देव क्रोध
करिमत्तमृगराजकंदर्पमददर्पबृकभालुअतिउग्रकर्मामहिषमत्सरक्रोधसूकररू
फेरुछलदंभमार्जारधर्मा ३ देव कपटमर्कटबिकटव्याघ्रपाखंडदुखदमृग
ब्रातउत्पातकर्ता।हृदयअवलोकियहसोकसरनागतंपाहिमांपाहिभोबिस्वभ
र्ता ४ प्रबलअहंकारदुर्घटमहीधरमहामोहगिरिगुहानिबिडांधकारं चित्त
बैतालमनुजादमनप्रेतगणरोगभोगौघबृश्चिकबिकारं ५ देवबि [illegible]
षसुखलालसादंसमसकादिखल [illegible]

बिषममायानाथअंधमयमंख्यालदगामी ६ स्व घोरअवगाहभयआप
गापापजलपूरदुःअेत्तदुस्तरअपारापकर्षडबर्गगोनक्रचक्राकुलंकलशुभ
शुभतीव्रधारा। ७ स्व सकलसंघदृपोचसोचबससर्बदादासतुलसीबि
षमगरलग्रसतंचापिरघुबंशभूषनहूगाकारिकठिनकालबिकरालकलिका
लत्रस्तं ८ प्रमाणश्रीस्वामीजूरामचरितकउकाहिलिगायमुनिमतिहिंभरम
यत्रिभुवनभावैप्रगटहोईसेसदेवजन्मकहायभावलहूंकोरामप्रकार [illegible] प्रतीप
रठहूराय १ कामसु[illegible]कोसियारूपधरि[illegible]जनकपुरआयरामांग्रभाव
नकाजसाधि[illegible]आयसमाय २ रामसियाकोभ्रमकरमनहिंन
नहींउरि[illegible]तजैनिहितमादरपअंचैरहैंबैराग्य स्वभावबानर
भावनधारिकै[illegible]हायत्रिभुवनभावैत्रिभुवनधनीबनरहाअब मैंछाय
कुंभकनअघ[illegible]ाररामगर्बअहारीजाकोछुवतगिरतब्रह्मादिकज्ञानसोतअ
र[illegible]नर्गुन[illegible]सालातअकारहुकार १ सीसउचाईभुजबलअरू
दपदगा[illegible]हिछचारसबकोदुखदायकअतिनिर्भयअंगअंगअपकार २ राम
प्र[illegible]ताकोभुजकाटेनवरिसकाटपवारपरकाटेनबहूधरदौरतडारीसिंधु
मझार ३ तजैउचाईमानगरैत्रूधारिसिरीनबिहार स्वमुदितश्रीरामचंद्रपर
बर्षतसुमनअपार ४ इंद्रजीतजोकामहैसबहींसत्तावतछलकैमारतपर
गरमारतबीरनमैंसरनामजावोनामसुनतहीकांपैब्रह्मादिकसुरधाममुनिव्रत
हिंनसावत ५ ज्ञानीजोगीबैरागीनकोमोललेनबिनुरामज्ञानध्यानसबबिसर
जातहैचमकतआछौचा[illegible]नाचनचावत लषनज[illegible]हिरहुमनोब्रह्म
चरनबिश्रामकामशत्रुसदीपपरवाकामहननकोरामतबैंआमनभावत ३
इंद्रजीतछलबलकरिहारालक्ष्मनएकबानतेमाराबाजरहाहैस्वनगारामि
राजगतकोधामलागेगुणावत ४ इत्यादिदोहा बेदरटतमुनिशास्त्र
सबआगमसकलपुरानएकबाक्यतासबनकेबेधएकभगवान ५ अत्र
[illegible]रामहैंबिसमताबिरसमैंबिरोधतहैंदुबिधाकहैंपाइयतुजहँनिजप्रत
[illegible] जैसेसरितासमुद्रमैंअ[illegible]भावरसायपलटमिलतजबसिंधुमों
[illegible]कैनाते जैसे[illegible]सकलकाहैबैरकोहैप्रीतिकठिनपरैजब
[illegible]ताकैशोत [illegible]कापितांकेअनकहूकारनपर[illegible]परपारिसुनिनि

दानिजनातकेएकहिहोंहिंबिचार ।५। एकनगरकेबहुतपथसबकरकुटिल
चलजात। अंतप्राप्तएकैनगरनहिंबिरोधकछुतात ६ जैसेनानाश्रोतेंचली
नदीबहुभांतिभइअभेदमिलसिंधुमोंतैसेंमतिकीपांति ७ आदिमध्यअरुअं
तलौंज्यौंतरुबीजसरूपलघुदीरघत्यौंग्रंथसबव्यापकवेदअनूप ८ निगमा
गमबहुमतकहतयदपिकांडत्रयभेद एकवाक्यताकेभएएकैप्राप्यअखेद
९ अनगीदेषतेंमोहतमध्योभनिसंसारजनि[illegible]कल्पितभेदबहुमतन
दिखावतवार १० गुरुज्ञानिबचनबिचार[illegible]निर्मलएकवाक्यता
ज्ञानलहिमिटतमोहमयभूल ११ वार्तापहलेसमा[illegible]एकसत्यत्व
दूसरोप्रसंग[illegible]मोंलिखासोसत्यत्वमांन। [illegible]प्रसंगकाल
युगादिकीएकवाक्यताकरकेकल्पभेदऔरवनमें[illegible]संशयनहींजा
नोगा। सोरठा रामायनसिद्धांतज्ञानभक्तिसंघटकियोनामरतनबिख्यात
[illegible]भक्तिमणिलेसत्तेवार्ताप्रथमप्रकासमेंज्ञानभक्ति[illegible]नामो
स्थापनकियो दोहा स्थानसर्गबिसर्गपुनिपोषनआदिबिचार दसल
छनपुरानकेप्रथमहिंकहेउदार २ बेदअर्थकेबोधकहैंअंगसार अनु
मान शास्त्रआगमोंसबनकोभाष्योअर्थसुजान ३ पूरबमीमांसाविषैधर्म
तत्वप्रतिपाद्यस्वर्गादिकफलधर्मकोज्ञानप्रयोजनसाध्य ४ बैशेषिकशा
स्त्रहिकियोसुमुनिकणादअनूप सप्तपदारथज्ञानफलभावाभावसरूप॥
न्यायशास्त्रगौतमऋषिभाष्योनवेंप्रधान प्रमाणादिकषोडशअरथबोध
प्रयोजनजानि [illegible]शास्त्रपातंजलीमुनिकीनोसुष[illegible]जावतवृत्ति
निरोधतेंछूटतभवकोफंद ७ सांख्यशास्त्रकोविषयसुषप्रकृतिसुपुरुष
बिवेक हनित्रिबिधदुषमुक्तिसुषकपिलमुनिभाषेक ८ बेदव्यासबेदांतको
आचारजबरलेखुजीवब्रह्मकेएकताबिषयमोक्षफलदेखु ९ बहुशाखासाषी
सुषदबेदअपौरुषबाकचारभेदत्रयकांडफलमोक्षअवांतरनाक १० तंत्रभाव
मेंशिवकियोयंत्रमंत्रप्रतिपाद्यशंभुशक्तिकेज्ञानतेंमोक्षआदिफलसाध्य॥
११ वार्ता द्वितीयप्रकाशमेंपुरानशास्त्रबेदतंत्रकोसिद्धांतअर्थलिख्यो ॥
दोहा। भरतआदिसाहित्यकेआचारजमतिचारु कथिनतासुदशकर्मफ
लरामायनसिंगारु १२ वार्तातृतीयप्रकाशमोंयन्त्रकाव्यांगनिरूपनकियो

सनसिंह ग

। मंहिरगिरि

ंत्रबिहार ध

ायत्तिपितुकं

पन्नाखरब

नमबिधुत्रि

नाथदासकृतमानस

प्रकाशः मानसदीपिका॥

९२४ कार्त्तिककृष्णासप्तमी १ शनिवार को

[illegible]

यहरप्रतिअतिअर्थहैंसबकैंमतिअनुसा

अल्पबुद्धिमतिहीनसे पड़े जो चूक अजान

छमाकरोअपराधमम पंडित कवि सुजान

निम्नलम्हारामुक्त हमप्रभुदीनदयाल।

होकहोतुमलाल

स्तभवकीफरं

ने दोहा ॥

बफ़रमायश
लाला बिहारी ला
ल वा लाला न
रायनदास के

مطبع ۱۲۹۸